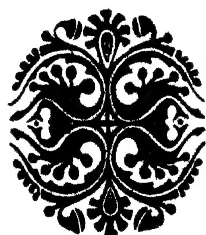
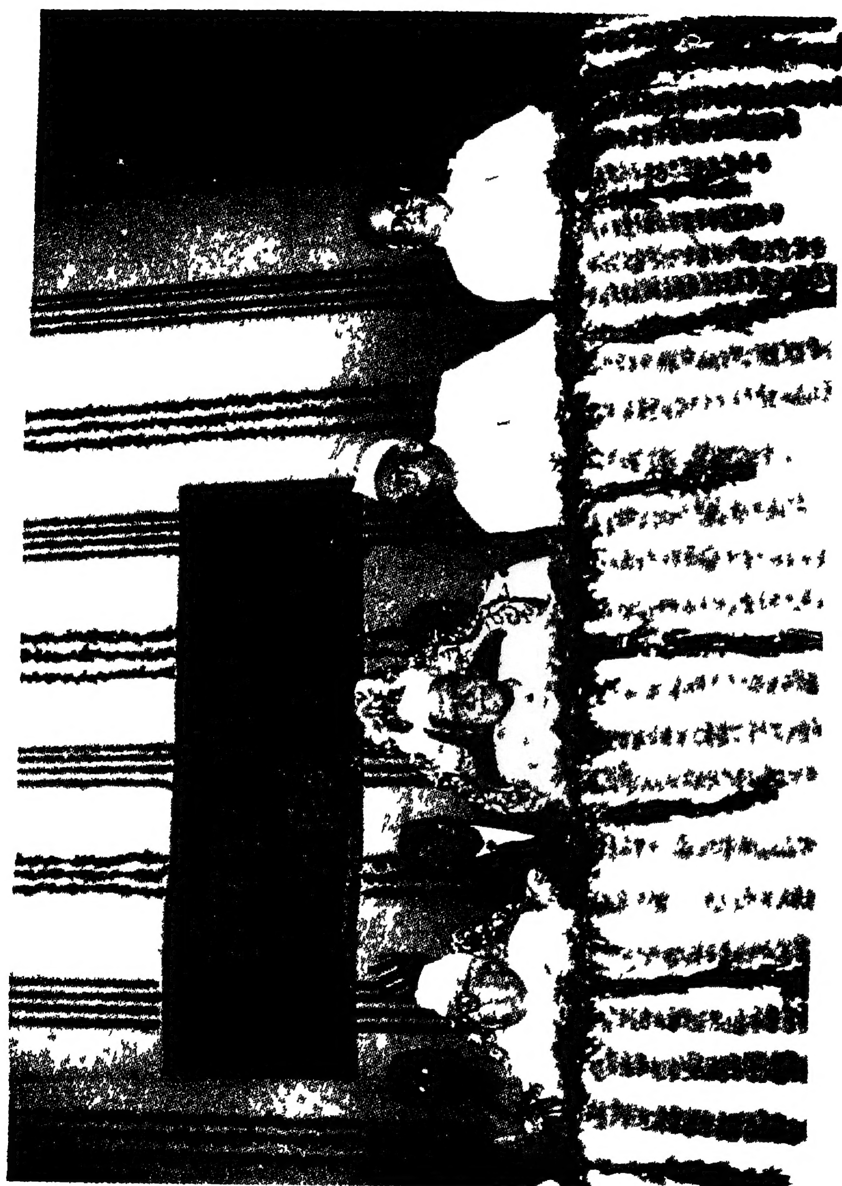
सीताराम सेकसरिया वाङ्मय



गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा







जन्मशताब्दी के शुभावसर पर प्रकाशित

सीताराम सेकसरिया वाङ्मय

प्रकाशक

गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा

सन्निधि, राजघाट, नई दिल्ली–110002



सलाहकार मण्डल : श्री रामेश
श्री रामकृ
श्री यशप
[illegible]
श्री हसमु
श्रीमती चि

सम्पादक : डा० रमेश

प्रकाशक : कु० कुसुम
मन्त्री, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा,
1, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, सन्निधि,
राजघाट, नई दिल्ली-110002

प्रथम 1963

मूल्य : पुस्तकाल्य संस्करण 160/– रुपये
जन संस्करण 125/– रुपये

आंशिक आर्थिक सहयोग : हिन्दी अकादमी, दिल्ली

मुद्रक : श्री राजीव अग्रवाल,
संजय प्रिन्टर्स,
मानसरोवर पार्क,
शाहदरा, दिल्ली-110032

प्राक्कथन

स्वतन्त्रता आन्दोलन के वरिष्ठ सेनानी, समाज सुधारक, नारी शिक्षा के प्रणेता, भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं कला के उन्नायक, हिन्दी के प्रचारक, भारतीय भाषाओं के समन्वयकर्ता और स्वाभाविक साहित्य के प्रणेता स्वनामधन्य श्री सीतारामजी सेकसरिया जी का तपस्वी जीवन एवं भारत के नवनिर्माण में उनका योगदान इतिहास में सुवर्णाक्षरों में अंकित रहेगा ।

सीतारामजी का जन्म राजस्थान के ऐतिहासिक शेखावटी अंचल के नवलगढ़ कस्बे के एक मध्यमवर्गीय परिवार में 1 मई, 1892 को हुआ । अल्पायु में माता पिता विहीन होकर साधारण शिक्षा प्राप्त की और जीविका की तलाश में 1911 में कलकत्ता आये । एक मामूली सी मुनीमी की नौकरी से उन्होंने शुरूआत की । शीघ्र ही उन्होंने अपना शेयर व्यवसाय प्रारम्भ किया और अच्छी सफलता प्राप्त की । यह वह समय था जब पूरे देश में आजादी पाने की ललक प्रत्येक युवामन में उमड़ रही थी ।

उन दिनों कलकत्ता में हिन्दी भाषी समाज श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार (गीताप्रेस, गोरखपुर के संस्थापक) जैसे युवकों के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम में रत था । बड़ा बाजार कांग्रेस का गढ़ था । श्री सेकसरियाजी अपने मित्रों श्री बसन्तलाल मुरारका, श्री रामकुमार भुवालका, श्री प्रभुदयाल हिमंतसिहका, श्री घनश्याम दास बिरला और श्री भागीरथ कनोड़िया के साथ तन-मन-धन से राष्ट्रीय आन्दोलन मे कूद पड़े । अपने व्यापार से अलग होकर वे 1930, 32, 40, 42 मे जेल गये । जेल में नाना प्रकार की यातनाएं सहीं और अपमान झेले । इस दौरान श्री जमनालाल बजाज के सहयोग से उनका राष्ट्र के सभी शिखर पुरूषों-महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, महामना मालवीय, नेताजी इत्यादि से निकट का सम्पर्क बना । 1918 से वे कांग्रेस के साथ जुड़े रहे । अनेक बार अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य चुने गये । पश्चिम बंगाल कांग्रेस कमेटी और संसदीय दल के कोषाध्यक्ष रहे । 1940 में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के पुनर्वास हेतु श्री शरत बोस की अध्यक्षता में गठित समिति के वे मन्त्री चुने गये इस दायित्व को उन्होंने बड़ी निष्ठा से पूरा किया ।

उन्होंने न केवल राजनैतिक आन्दोलनो का नेतृत्व किया बल्कि बसन्तलाल मुरारका जैसे अपने साथियों के साथ जड़ता में जकड़े मारवाड़ी समाज में समाज-सुधार के अनेक आन्दोलन चलाये । बाल-विवाह विरोध, विधवा-विवाह, मृतक बिरादरी भोज पिकेटिंग, पर्दा-प्रथा का निषेध इत्यादि आन्दोलनों से त्रस्त पुरातनपंथी पंचायत ने उन्हें कई बार समाज से बहिष्कृत किया । मगर हर बार इन्हें अपने समाज के नवयुवकों से अपार सहयोग मिला और वे शीघ्र इन सुधार कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने – सम्पूर्ण पूर्वभारत – बंगाल, असम, बिहार और उड़ीसा तक-फैल गये ।

राजस्थान में देशी रियासतों, अंग्रेजी अफसरों और स्थानीय ठाकुरों की तिहरी गुलामी से त्रस्त समाज के कल्याण के लिये श्री जमनालाल बजाज व हीरालाल शास्त्री के साथ उन्होंने अनेक समाज सुधार के सम्पेलन किये और शिक्षा-संस्थानों को स्थापित किया। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के संस्थापक सदस्यों में से एक सीतारामजी का यह उपकार राष्ट्र कभी नहीं भूल सकता।

महात्मा गांधी की प्रेरणा से श्री सीताराम सेकसरिया ने कलकत्ते में 1929 में शुद्ध खादी भण्डार की स्थापना की। जिसका उद्घाटन स्वयं गांधीजी ने किया। बंगाल के श्री सतीशचन्द्र दासगुप्ता, अभय आश्रम, डायमण्ड हार्बर खादी आश्रम के सहयोग से उन्होंने खादी उत्पादन और वितरक संस्थाओं का बंगाल, बिहार, यू०पी० तक में विस्तार किया। अपने जन्मस्थान नवलगढ़ में भी 1939 में राजस्थान चर्खा संघ की शाखा के रूप में खादी आश्रम और खादी भण्डार शुरू किये। जिनका उद्घाटन श्री जमनालालजी ने किया था।

मातृशक्ति के उपासक बंगाल से उन्होंने मातृशक्ति की उपासना की सीख ली और नारी शिक्षा को समाज के उद्धार का एक महामन्त्र मानकर, महर्षि कर्वे (महाराष्ट्र) और लाला देवराज (पंजाब) की तरह उन्होंने नारी शिक्षा संस्थानों की स्थापना की तथा संचालन किया। उन्हीं के द्वारा कलकत्ता में "श्री शिक्षायतन" कन्या विद्यालय तथा कालेज की स्थापना हुई। मारवाड़ी बालिका विद्यालय, अभिनव भारती, संगीत श्यामला, मातृसेवा सदन आदि की स्थापना एवं संचालन में उनका विशेष हाथ रहा। देश में अन्य स्थानों पर जहां-कहीं भी नारी शिक्षा संस्थानों की स्थापना एवं संचालन में किसी मित्र ने सहयोग मांगा तो उन्होंने उसमें पूर्ण योगदान दिया। वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान), प्रयाग महिला विद्यापीठ एवं बिहार महिला विद्यापीठ उसके अप्रतिम उदाहरण है।

समाज में साहित्यकारों की दुरवस्था को देखकर उन्होंने साहित्यकार संसद का अनेक बार आह्वान किया। बीमार और जरूरतमन्द साहित्यकारों को उनके घर तक आर्थिक सहायता पहुंचाने का अनुष्ठान किया। 1930 से ही उनका गुरूदेव रवीन्द्र टैगोर से घनिष्ठ सम्पर्क बना। शान्ति निकेतन में हिन्दी भवन बनवाने में उन्होंने गुरूदेव को पूर्ण सहयोग दिया। महात्मा गांधी द्वारा अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार के लिये स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार सभा की शाखा पूर्व भारत के लिये कलकत्ता में खोली। जिसके द्वारा बंगाल, उड़ीसा व आसाम में अनेक हिन्दी विद्यालय चलाये जाते थे। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये सीतारामजी ने भारतीय सस्कृति संसद का शुभारम्भ किया। जो आज भी सजग रूप से कार्यरत है।

हिन्दी प्रचार के साथ-साथ भारतीय भाषाओं के विकास के लिये वे सतत् प्रयत्नशील रहे। अपने दृढ़ संकल्प के फलस्वरूप उन्होंने 84 वर्ष की आयु में अपने अनन्य मित्र श्री भागीरथ कनोड़िया के सहयोग से कलकत्ता में "भारतीय भाषा परिषद" जैसी सशक्त संस्था की स्थापना की। देश के मूर्धन्य साहित्यकारों, कवियों और विचारकों जैसे—आचार्य काकासाहेब कालेलकर, श्रीमती महादेवी वर्मा, पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी,

डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्री गंगा शरण सिंह, तथा अन्य विद्वानों से उनका घनिष्ठ समबन्ध था और उन्हें हर प्रकार का सहयोग सीतारामजी द्वारा उपलब्ध होता था।

1946 के प्रारम्भ में मुझे आदरणीय सीतारामजी सेकसरिया से सर्वप्रथम परिचय का अवसर मिला। तत्कालीन राष्ट्रीय कमिश्नर पंडित श्रीराम वाजपेयी जी ने मुझे हिन्दुस्तान स्काउट के बंगाल प्रान्त के सहायक कमिश्नर के रूप में कलकत्ता भेजा। तब से 36 वर्षों तक उनसे निकट सर्म्पक रहा। विशेषकर एक छात्र, अध्यापक तथा चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट के रूप में लगभग 14 साल अपने कलकत्ता प्रवास के दौरान उनके मार्गदर्शन में मुझे सार्वजनिक काम में सक्रिय रूप से भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बंधित सबसे बड़े छात्रावास-राजेन्द्र छात्र भवन की निर्माण समिति के वे अध्यक्ष तथा मैं मन्त्री था। छात्र सहायता समिति के भी वे अध्यक्ष तथा मैं मन्त्री था।

आदरणीय सीतारामजी अपनी सरलता, सौम्यता, स्वच्छता, विनम्रता, उदारता तथा कर्त्तव्यपरायणता से सभी को आकर्षित करते थे। सादा जीवन, उच्च विचार तथा आजीवन कर्मठ समाजसेवा उनका अन्त तक लक्ष्य रहा। कलकत्ता महानगरी में सार्वजनिक जीवन के तो वे प्राण थे तथा लगभग छ दशक तक सभी साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं रचनात्मक संस्थाओं के लिये उनका सान्निध्य अनिवार्य सा हो गया था। यह उल्लेखनीय है कि उनकी विशिष्ट सेवाओ के लिये प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न राजेन्द्र प्रसादजी से उन्हें राष्ट्रीय सम्मान "पद्म-भूषण" से 1962 में सम्मानति किया था तथा उनकी राष्ट्रीय जन्म शताब्दी समारोह का उद्घाटन वर्तमान राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा जी ने गत 14 मार्च को कलकत्ते के श्री शिक्षायतन के सभागार में किया।

ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी सीतारामजी ने जो साहित्यिक रचना की है वह उनके अनुभवमूलक विचारों की सहज उद्भावना है। यह साहित्य हमारे स्वतन्त्रता-आन्दोलन के आन्तरिक पक्ष को ही प्रकट नहीं करता बल्कि उस समय के राष्ट्रपुरूषों द्वारा जिन स्वप्नों को इस देश के लिये देखा गया था उनसे साक्षात्कार भी कराता है। इस साहित्य में हमारे सनातन जीवन मूल्यों की गुज भी सुनाई देती है जैसा कि उन्होंने अपने एक मित्र श्री भंवरमल सिंघी को लिखे एक पत्र मे 47 वर्ष पूर्व कहा था— "क्या ऐसा समय नहीं आयेगा, जब मनुष्य इन धर्मो और क्षेत्रों की परिधि से बाहर आकर आदमी को आदमी की दृष्टि से देखेगा। मुझे ऐसा लगता है कि एक दिन यह जरूर आना चाहिए।" (11-8-1944)

पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी ने उनकी पुस्तक "स्मृतिकण" को पढ़कर कहा था ... श्री सेकसरिया अपने को लेखक नहीं मानते पर उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह उच्चकोटि का है। सीधी-सादी जबान में अपने हृदय के भाव प्रकट कर देने की असाधारण क्षमता उनमें मौजूद है।

प्रस्तुत "सीताराम सेकसरिया वाङ्मय" में उनकी तीनों पुस्तकों–बीता युग : नई याद, मन की बात एवं स्मृतिकण को एक साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। ये तीनों पुस्तकें

कई दशकों से पाठकों को अप्राप्य थीं। इस शताब्दी वर्ष में उनका पुनर्प्रकाशन करना और एक जिल्द में आज की युवा पीढ़ी के सामने प्रस्तुत करना हमारा परम कर्तव्य था। शताब्दी कार्यक्रमों की श्रृंखला में कलकत्ता, नवलगढ़, नई दिल्ली एवं जयपुर में शताब्दी समारोहों का आयोजन तो हुआ ही मगर उनके साहित्य को पुनः राष्ट्र के समक्ष उपलब्ध करवाना ज्यादा सार्थक कार्य था। इस कार्य को अच्छी तरह से पूरा करने में मेरे युवा सहयोगी तथा राष्ट्रीय शताब्दी समिति के सचिव डा० रमेश भारद्वाज ने जो परिश्रम किया है उसके लिये मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। वाङ्मय का प्रकाशन आचार्य काकासाहेब कालेलकर द्वारा स्थापित राष्ट्रीय संस्था "गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा" राजघाट, नई दिल्ली कर रही है, इसके लिये मै उनके संचालकों का आभार प्रकट करता हूँ।

श्री रामेश्वर ठाकुर
अध्यक्ष
श्री सीताराम सेकसरिया
राष्ट्रीय जन्मशताब्दी समारोह समिति
एवं
ग्रामीण विकास राज्यमंत्री,
भारत सरकार

सम्पादकीय

राष्ट्रीय चारित्र्य के प्रतीक पद्मभूषण श्री सीताराम सेकसरिया ने न केवल अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता हेतु अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया, अपितु आजाद भारत के नवनिर्माण हेतु, गांधी-दृष्टि से, राष्ट्र को सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक रचनात्मक कार्यों के द्वारा समृद्ध भी किया। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन की साधना को (समाज-सेवा > समाज-सुधार > स्वतन्त्रता आन्दोलन > राजनैतिक गतिविधियो > साहित्य-साधना > गाधीजी के रचनात्मक कार्यों (खादी-प्रचार, हरिजन सेवा, दलित-उद्धार, हिन्दी-प्रचार, कौमी एकता, नारी-शिक्षा इत्यादि) के द्वारा साधने में जिस प्रकार अपना तन-मन-धन अर्पित किया, उसका दूसरा उदाहरण मिलना दुर्लभ है।

कर्मयोगी श्री जमनालाल बजाज की प्रेरणा से तथा महात्मा गांधी के सानिध्य में जो बीज सेकसरियाजी में बोया गया, उसे गुरूदेव टैगोर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, श्री शरत चन्द्र बोस, आचार्य काकासाहब कालेलकर, डा० राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण और आचार्य जे. बी. कृपलानी जैसे असंख्य आधुनिक राष्ट्रनिर्माताओं के सम्पर्क ने सींचा। उन्हे पुष्पित एव पल्लवित करने में श्रद्धेय भागीरथ कनोडिया जैसे अभिन्न मित्रों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। देशभर में व्याप्त अधिकांश हिन्दी एव अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों, रचनात्मक कार्यकर्ताओं व संस्कृतिकर्मियों ने उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व की महक का सुवास प्राप्त कर अपने को धन्य माना।

हम भारती-पुत्रों का यह परम कर्तव्य था कि उस गांधीयुगीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक नवचेतना और राष्ट्रीय भावात्मक एकता के अग्रदूत की जन्मशती में राष्ट्र की ओर से विनम्र श्रद्धाजलि एवं कृतज्ञता प्रकट करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम आयोजित हों। उसी दिशा मे राष्ट्र के गणमान्य नागरिकों के द्वारा राष्ट्रीय जन्मशताब्दी समिति का गठन किया गया। राष्ट्रीय समिति ने इस अवधि में देश में विभिन्न स्थानों पर गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली जैसी राष्ट्रीय संस्था के द्वारा अनेक गरिमापूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया। जिससे वर्तमान

और भावी पीढ़ियाँ सेकसरियाजी के योगदान से प्रेरणा प्राप्त करती रहें।

चूंकि शताब्दी समारोहों की स्मृति अस्थायी होती है। अतः यह निश्चय किया गया है कि इस अवसर पर सेकसरियाजी द्वारा साहित्य में से कुछ चुना हुआ साहित्य "सीताराम सेकसरिया वाङ्मय" के रूप में पुनः प्रकाशित किया जाए।

जीवनयोग की साधना में रत श्रद्धेय सीताराम सेकसरिया के जीवन में विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों एव समाज के विभिन्न क्षेत्रों के शिखरपुरुषों के सम्पर्क का प्रभाव पड़ा। आत्मनिरीक्षण और आत्मचिन्तन से मथकर जो चिन्तन प्रसूत हुआ, उसे उन्होंने अपने सरल तथा स्वाभाविक लेखन के माध्यम से राष्ट्र के सामने प्रस्तुत किया। स्मृतिकण (१९५०), मन की बात (१९५२), बीता युग : नई याद, एक कार्यकर्ता की डायरी (१९७२) भाग –१-२ ये चार पुस्तके उनका प्रकाशित साहित्य है।

इनमे से "कार्यकर्ता की डायरी" को छोड़कर अन्य तीन ग्रंथ पाठकों को कई दशकों से अप्राप्य है। अत प्रस्तुत वाङ्मय मे उन्ही का परिवर्धित रूप में प्रकाशन किया जा रहा है। 'बीता युग नई याद' यह ग्रथ १९७३ में आदरणीय श्री यशपाल जैन ने सस्ता साहित्य मण्डल के द्वारा प्रकाशित किया था। इसमे स्मृतिकण का अधिकाश भाग (गांधीजी, महादेव भाई, रामलाल, घूरे का घर, दो लड़कियां, दो दृश्य इत्यादि) भी शामिल किया गया। अत उसे ही यहाँ सबसे पहले लिया है।

"मन की बात" सन् १९५२ मे नवभारत ग्रथमाला मे दरभंगा, बिहार से छपी थी। इसमें कुल ९६ पृष्ठो मे सीतारामजी की डायरी का ३ जनवरी, १९४२ से लेकर ९ अगस्त, १९४३ तक का हिस्सा सकलित था। जिनमे वर्धा कांग्रेस कार्य समिति की बैठक, भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पास करने वाली बम्बई कांग्रेस एवं अगस्त क्रान्ति के प्रसग पर प्राप्त सीतारामजी के जेल-जीवन का वर्णन था। अत यह विचार आया कि क्यो न इसका परिवर्धन किया जाए।

सेकसरियाजी की डायरी, गाधीयुग के स्वतन्त्रता आन्दोलन का अतरंग एवं प्रामाणिक दस्तावेज है। कांग्रेस के उपलब्ध इतिहासो मे भी जो जानकारी उपलब्ध नही है वह इसमे मिलती है। साथ ही साथ-कलकत्ता के सर्वप्रमुख कांग्रेस चेतना केन्द्र–बड़ा बाजार, पूज्य जमनालाल बजाज, और उनकी प्रेरणा से जिस तरह मारवाड़ी समाज आजादी की लड़ाई मे जुड़ा तथा गाधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमो के संचालन, संवर्धन एवं सरक्षण मे यह समाज समर्पित हुआ– इन सबका प्रामाणिक विवरण भी हमें इसमे मिलता है। अत सन् १९२९ से १९४२ तक की प्रकाशित कार्यकर्ता की डायरी से – कालक्रम के अनुसार – कांग्रेस अधिवेशन, जेल जीवन, जयपुर राज्य प्रजामण्डल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस इन चार अध्यायों का निर्माण हुआ।

यद्यपि सन् १९३१ मे हीरालाल शास्त्री ने अपने कुछ मित्रों के साथ जयपुर में प्रजामण्डल की अनौपचारिक स्थापना की थी। मगर उसमें प्राणों का संचार तभी हुआ जब सन् १९३८ मे जयपुर शहर मे आयोजित प्रजामण्डल के प्रथम अधिवेशन मे श्री जमनालाल बजाज को उसका सभापति बनाया गया। जयपुर

राज्य, अंग्रजी हुक्मरानों एवं स्थानीय ठिकानेदारों – ठाकुरों की तिहरी गुलामी से त्रस्त समाज में – प्रजामण्डल आन्दोलन किन परिस्थितियों में जन्मा, किन अवस्थाओं से उसे संवर्धन मिला, किन व्यवस्थाओं से उसे टक्कर लेनी पड़ी, जयपुर स्टेट की स्थानीय एवं प्रवासी जनता ने उसमें किस तरह का योगदान दिया, महात्मा गांधी का इस आन्दोलन के प्रति क्या रुख था ? और श्रद्धेय जमनालालजी और हीरालालजी के नेतृत्व का दर्शन – इन सब तथ्यों का दस्तावेजी अंतरंग दर्शन ऐतिहासिक काल-क्रम से इस अध्याय में सुलभ है। यह विवरण पाठकों को अन्यत्र दुर्लभ है ऐसा सम्पादक को लगता है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान, उनका और कांग्रेस का सम्बन्ध, गांधीजी के साथ का उनका सम्बन्ध, नेताजी की कार्यपद्धति – इन सब विषयों में जनसामान्य में अनेक गलत धारणाएं प्रचलित हैं। उन सबका समाधान इस अध्याय के द्वारा सम्भव है। चूंकि सीतारामजी बंगाल कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ता थे। उनका नेताजी के साथ बहुत निकट का सम्पर्क रहा, और उनकी दृष्टि में नेताजी का बहुत आदर रहा। अतः उनकी लेखनी से नेताजी के विषय में जो लिखा गया है। उसे ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक माना जा सकता है।

जैसा पहले ही कहा गया है कि "स्मृतिकण" के अनेक लेख "बीता युग : नई याद" में संकलित हैं। अतः अवशिष्ट लेखों के साथ प्रकीर्ण लेख शीर्षक से सात अन्य महत्त्व के लेख डायरी से संकलित करके यहां दिये गये हैं। इन लेखों में श्रद्धेय सीतारामजी की साहित्यिकता का दर्शन तो होगा ही, पर साथ में प्राकृतिक वर्णन की विशेषता तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता का उपायदर्शन (मुस्लिम माता) भी दृष्टिगत होता है।

श्रद्धेय सीताराम सेकसरिया जैसे समर्पित एवं निष्ठावान सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता की संवेदनात्मक, सौम्य अवं परिष्कृत लेखनी से प्रसूत यह सत्साहित्य न केवल भारतीय समाज के सुवर्णकाल (गांधीयुगीन स्वतन्त्रता आन्दोलन की अवधि) का अंतरंग एव प्रामाणिक दस्तावेज है अपितु उस सुवर्णकाल की विभूतियों के द्वारा राष्ट्र के लिए जिस भविष्यदृष्टि को देखा गया, उससे भी पाठक को परिचित कराता है। विश्वास है कि आज जब हमारा राष्ट्र उन आदर्शों एवं भारतीय सनातन जीवन मूल्यों से विमुख होता जा रहा है, इस "सीताराम सेकसरिया वाङ्मय" में निबद्ध चिन्तनदृष्टि से हम प्रेरणादायी सत्संग पाकर, अन्तर्मुख हो, अपनी उन्ननि का उचित मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

— डा. रमेश भारद्वाज

प्रकाशकीय

हमारे लिए यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पूर्वभारत में गांधीजी के रचनात्मक कार्यो (विशेष रूप से हिन्दी प्रचार के कार्य) मे आचार्य काकासाहब कालेलकर के सहकर्मी श्री सीतारामजी की जन्मशताब्दी-समारोहो का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन, काकासाहब द्वारा स्थापिन गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली कर रही है। तथा उसी शृखला मे सीनाराम सेकसरिया वाङ्मय का प्रकाशन भी हो रहा है। इस प्रकल्प को सफल बनाने हेतु आर्थिक सहायना देने के लिए मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के शताब्दी कक्ष, अन्य सस्थाओ एव व्यक्तियों के हम आभारी है ।

वाङ्मय का प्राक्कथन राष्ट्रीय जन्मशताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष एवं ग्रामीण विकास मन्त्री श्री रामेश्वर ठाकुर ने लिखने का कष्ट किया है । उनके प्रति हम कृतज्ञता का ज्ञापन करते है ।

प्रस्तुत ग्रथ के स्वरूप निर्धारण मे डा रमेश भारद्वाज को राष्ट्रीय जन्मशताब्दी समिति के उपाध्यक्ष श्री रामकृष्ण बजाज, श्रीमती विद्या सेकसरिया एवं श्री यशपाल जैन का मार्गदर्शन मिला । प्रूफ सशोधन के कार्य मे श्रीमती कृष्णा शर्मा, श्री जे. पी शर्मा ने बहुत परिश्रम किया तथा समय पर इसको छाप कर तैयार करने के लिए श्री राजीव अगवाल, (सजय प्रेस)– इन सबका हम हृदय से आभार प्रकट करते है । आशा है पाठक गाधीयुग के इस नवनीत का भरपूर स्वाद लेंगे।

कुसुम शाह
मन्त्री
गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा

अनुक्रमणिका

बीता युग : नई याद

मन की बात

स्मृतिकण

बीता युग
नई याद

राष्ट्र और समाज की विभूतियों के
संस्मरण तथा अन्य प्रसंग

दो शब्द

बीस साल पहले मेरे कुछ लेखों का संग्रह 'स्मृतिकण' के नाम से प्रकाशित हुआ था। समय-समय पर मैं जो कुछ लिखता रहा, उसकी कोई कतरन आदि मैंने नहीं रखी, इसलिए उनका संग्रह प्रकाशित करने में बड़ी कठिनाई थी। अपनी रचनाओं को मैंने कभी महत्व नहीं दिया। इसलिए उनका संग्रह प्रकाशित करने की कल्पना भी नहीं आई। फिर भी कुछ मित्रों के आग्रह और प्रयत्न से 'स्मृति कण' की भूमिका पूज्य काकासाहब कालेलकर ने लिखने की कृपा की तो वह अच्छा लगने लगा। उसके प्रकाशन के बाद इन बीस वर्षों में भी समय-समय पर लिखता रहा और फिर बात चली कि इनका संग्रह प्रकाशित किया जाय। मुझे फिर लगा कि मैंने कुछ ऐसा लिखा कहां है, जिसे संग्रह के रूप में प्रकाशित किया जाय! पर साथ ही इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अपना लिखा प्रकाशित होता है तो खुशी ही होती है। इसलिए जब चि० सत्यनारायण ने मेरे पुराने और हाल के लेखों का संग्रह करने की कोशिश की तो मैं उसका विरोध न कर सका। उसके प्रयत्न से ही नये-पुराने लेखों में से कुछ चुनकर यह संग्रह तैयार हुआ है।

मुझे झिझक है कि यह कैसा, क्या है! मैंने कभी लिखने के लिए नहीं लिखा। जो लिखा, वह किसी-न-किसी प्रकार की बाध्यता और दबाव के कारण लिखा। इसलिए इन लेखों में मेरे मन की बात है। भाषा-शैली और साहित्यिकता का दावा तो हो ही नहीं सकता, क्योंकि इनमें मेरी कोई गति नहीं। मैंने इनमें अपने मन की बात, अपनी बोलचाल की भाषा मे लिखकर, अपने आपको संतोष कराने का प्रयत्न किया है। एक बात यह है कि परिस्थिति-जन्य विचार मन में आये और उस स्थिति में क्या करना चाहिए, यह सब मैंने लिख दिया, जो एक तरह से प्राणों की बात है—मन की उथल-पुथल का सही ताना-बाना है। हो सकता है, ऐसा ही स्पंदन किसी के मन में हो तो उसको ये लेख अच्छे लग जायं।

संग्रह के कुछ लेख हमारे देश के कतिपय महान लोगों के बारे में हैं, जिनकी कृपा मुझे प्राप्त हुई और जिनको नजदीक से देखने और सुनने का मुझे अवसर मिला। इन महापुरुषों की अनेक बातें हैं और अनेकों ने उन्हें लिखा भी है और मैंने भी 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी' के अनुसार ही लिखा है। मैंने लिखा, उनसे उन महापुरुषों का जीवन कहीं अधिक महान है, पर मैं अपने पात्र के अनुसार ही उस समुद्र से जल भर सका हूं।

यह संग्रह हिन्दी जगत के सामने रखने में संकोच है तब भी रख रहा हूं।

'छमिहहिं सज्जन मोर ढिठाई ।' इस बात की थोड़ी खुशी है कि संग्रह 'सस्ता साहित्य मंडल' प्रकाशित कर रहा है, जिसकी स्थापना पूज्य जमनालालजी ने की थी । गांधी-साहित्य के प्रकाशन में 'मंडल' का महत्वपूर्ण स्थान है । गांधीजी और स्वतंत्रता-संग्राम पर मंडल की प्रकाशित पुस्तकों को एक समय बहुत लोगों ने पढ़ा । उसके मधुर और सुगंधमय पुष्पों में यह संग्रह, जैसा भी वह है, मिलकर शायद किसी के कुछ काम का हो जाय ।

—सीताराम सेकसरिया

१६, लार्ड सिनहा रोड
कलकत्ता-१६

गांधीजी और उनके सहकर्मी

१ : गांधीजी के प्रथम दर्शन

गांधीजी जब दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह चला रहे थे, तब 'प्रताप' साप्ताहिक में एक कविता पढ़ी :

"धन्य धर्मवीर गांधी !
धीरों में धीर तू है,
धन्य कर्मवीर गांधी,
वीरों में वीर तू है ।"

इस कविता से गांधीजी के बारे में जानने की मेरी इच्छा जागृत हुई । इसके बाद सन् १९१५ में गांधीजी हिन्दुस्तान आये तो माडरेट पार्टी ने, जो उन दिनों हिन्दुस्तान की मुख्य राजनैतिक पार्टी थी, उन्हें कलकत्ता बुलाया । हजारों लोग हावड़ा स्टेशन पर उनके स्वागत और दर्शनों के लिए गये । गांधीजी तीसरे दर्जे से उतरे। काठियावाड़ी पगड़ी, लम्बा अंगरखा, दुपट्टा, किन्तु पैर नंगे । कस्तूरबा भी साथ थी! वह एक मामूली-सी मोटी रंगीन साड़ी पहने हुए थीं ।

उन दिनों मोटर का बहुत चलन नहीं था और मोटर की सवारी बहुत सम्मान की भी नहीं मानी जाती थी । जमींदारो, रईसों के यहां दो घोड़ों की जोड़ी गाड़ी रहती थी, जिसपर वे शाम को हवाखोरी के लिए निकलते थे। वैसी ही एक जोड़ी गाड़ी में गांधीजी और कस्तूरबा को बिठाया गया । गांधीजी के इंकार करने पर भी लोगों ने एक न सुनी । गाड़ी के घोड़े खोल दिए गए । जनता ने गाड़ी को खींचा। प्रथम दर्शन का दृश्य आज भी आंखों के सामने ज्यों-का-त्यों है । शाम को एक सभा थी, जिसमें गांधीजी का व्याख्यान था । यह सभा शायद युनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट में थी । महाराज कासिम बाजार मणीन्द्रनाथ नन्दी सभापति थे । इस सभा में माडरेट पार्टी के सभी नेता आये थे । गांधीजी जब बोलने के लिए उठे तो उनके व्याख्यान को सुनने की लोगों में बड़ी उत्सुकता थी, पर जब वह बोलने लगे तो बहुत-से लोगों को लगा कि यह आदमी देखने में जैसा साधारण है, वैसा ही बोलने में भी साधारण; न कोई जोश है, न कोई प्रभावशाली बात कहता है। जैसे किसी मूर्ति में से आवाज आती हो, वैसा लगता है, शरीर तक भी नहीं हिलता।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और विपिनचन्द्र पाल की जोशीली बुलन्द आवाज में व्याख्यान सुननेवाले लोगों को कुछ लगा ही नहीं। लाउड स्पीकर की तो उन दिनों कल्पना भी नहीं थी। व्याख्यान में ऊंचा गला जितना काम करता था, दूसरी बातें उसकी तुलना में कम रहती थीं। फिर भी कुल मिलाकर ऐसा आभास हो रहा था कि जो कुछ कहा जा रहा है, उसमें दिखावट या लोगों पर प्रभाव डालने की कोशिश नहीं, बल्कि बोलनेवाले के दिल की सचाई है।

इसके बाद दूसरी बार गांधीजी कलकत्ता आये और टाउन हाल में कुली-प्रथा के विरुद्ध उनका व्याख्यान हुआ। वह भी मैं सुनने गया। व्याख्यान समाप्त होने पर गांधीजी पैदल ही चल पड़े, तो पहले-पहल उनके चरण-स्पर्श का मौका मिला। टाउन हाल से वह अपने सबसे बड़े लड़के हरिभाई (हरिलाल गांधी) के यहां, जो राधाबाजार के एक मकान में रहते थे, गये। सैकड़ों आदमी उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। गांधीजी की तेज चाल के साथ न चल सकनेवाले लोगों का साथ छूटता जाता था। ऐसे लोगों की संख्या काफी थी।

तीसरी बार सन् १९१७ में कलकत्ता-कांग्रेस के मौके पर, जो श्रीमती ऐनी बेसेंट के सभापतित्व में हुई थी, गांधीजी को देखने का मौका मिला। इस कांग्रेस तक माडरेट पार्टी का कांग्रेस पर पूरा-पूरा अधिकार था। इस कांग्रेस में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भी आये। लोकमान्य ही उन दिनों भारत के सबसे बड़े राजनैतिक नेता थे। उनकी भी गाड़ी के घोड़े खोल दिये गए और जनता ने उसे खींचा। गांधीजी जमनालालजी के अतिथि थे। इसलिए सारा प्रबन्ध हम लोगों के हाथ में ही था। लोकमान्य को भी बड़ाबाजार के एक मुहल्ले में ठहराया गया था और उसका प्रबन्ध भी बड़ाबाजार के लोगों ने ही किया था। इस प्रकार भारत के दो बड़े नेताओं को, जिनमें एक वर्तमान का सबसे बड़ा नेता था और दूसरा भविष्य का, हम लोगों को देखने और सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लोकमान्य बहुत ही तेजस्वी और महान् लगते थे, समुद्र जैसी गम्भीरता और गहराई के सामने जाने या उनकी सेवा करने का साहस नहीं होता था। इसके विपरीत गांधीजी की सरलता, निर्मलता, सादगी, मितव्ययिता, हर चीज के समय का हिसाब, आदि बातों के कारण उनके निकट जाने में भय नहीं लगता था।

उन्हीं दिनों कांग्रेस के साथ राष्ट्रभाषा सम्मेलन का भी प्रारम्भ हुआ। लोकमान्य इसके सभापति थे। यह सम्मेलन का शायद दूसरा अधिवेशन था। इस सम्मेलन में कांग्रेस तथा बंगाल के सभी नेताओं ने भाग लिया। प्रायः लोग अंग्रेजी में बोले। सरोजिनी देवी भी अंग्रेजी में बोलीं। लोकमान्य का सभापति का भाषण भी अंग्रेजी में हुआ। गांधीजी जब बोलने खड़े हुए तो उन दिनों जैसी उनकी हिन्दी थी उसमें बोले। उन्होंने कहा कि लोकमान्य हमारे सबसे बड़े नेता हैं और वह जो चाहें, करें, वह महत्व का है, पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन का सभापति यदि विदेशी भाषा

में बोले तो वह राष्ट्रभाषा सम्मेलन कैसा ? लोकमान्य ने तुरन्त कहा, "आप ठीक कहते हैं, पर मेरी तो लाचारी है कि मैं ज़रा भी हिन्दी नहीं जानता ।" गांधीजी ने बड़ी नम्रता से कहा, "आप मराठी जानते हैं, संस्कृत जानते हैं, जो हमारे देश की भाषाएं हैं ।" फिर कहा, "यह सरोजिनी देवी (हिन्दूस्तान की बुलबुल), जो बहुत अच्छी उर्दू जानती हैं, यह भी क्या अंग्रेजी में ही बोल सकती हैं ?" इस प्रकार इस सम्मेलन में गांधीजी ने हवा ही बदल दी । इसके बाद बोलनेवालों में एक भी आदमी अंग्रेजी में नहीं बोला । सब अपनी भाषा या हिन्दी में बोले । शाम को लोकमान्य का सार्वजनिक भाषण था, जिसमें उन्होंने कहा कि आज मैं पहले-पहल हिन्दी में बोल रहा हूं । मेरी भाषा-सम्बन्धी कितनी गलतियां होंगी, यह मै नहीं जानता, पर मैं मानता हूं कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है और हमें इसमें ही अपना काम करना चाहिए । लोकमान्य का व्यक्तित्व और प्रभाव अद्भुत था। सभा में ज्यादा संख्या बंगालियों की थी, पर सबने शान्तिपूर्वक उनके व्याख्यान को सुना और बहुत धीरे-धीरे, घरेलू शब्दों मे, सरल भाषा में काफी प्रभावशाली व्याख्यान हुआ ।

इसके पश्चात् सन् १९१८ में गांधीजी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति बने। राष्ट्रभाषा के लिए जीवन-भर उन्होंने जो काम किया, वह एक अलग प्रसंग है और बहुत बड़ा है । इसी बीच चम्पारन सत्याग्रह, खेड़ा जिला सत्याग्रह तथा अहमदाबाद मिल मजदूर झगड़े का अनशन, इन तीन आन्दोलनों में गांधीजी ने जो सफलता प्राप्त की तथा उन्होंने जो नई दिशा दी, उससे उनके प्रभाव में काफी वृद्धि हुई । गांधीजी के प्रति देश हृदय से श्रद्धान्वित हो रहा था। इसी बीच रौलट एक्ट का आन्दोलन आ गया और इसके विरोध में सारे देश में प्रदर्शन हुए, जो अपने ढंग के निराले थे । इन सबका नेतृत्व गांधीजी ने किया । इस सिलसिले मे अमृतसर के जलियांवाला बाग की सभा मे जनरल डायर ने गोलियां चलाकर भयकर हत्याकांड कर दिया, जिससे देश में ऐसी आग लगी, जो स्वाधीनता-प्राप्ति तक नाना रूपो मे जलती रही ।

इस कांड के कुछ ही दिनों बाद १९१९ के दिसम्बर में अमृतसर में कांग्रेस हुई, जिसके सभापति पं. मोतीलालजी थे । इस कांग्रेस में लोकमान्य तिलक आदि सभी नेता सम्मानित हुए, पर मांटेगू-चेम्सफ़ोर्ड-सुधार पर जो प्रस्ताव आया, उसमें कांग्रेस के सभी नये-पुराने नेताओं को गांधीजी के प्रभाव का पता चल गया । सन् १९२० के सितम्बर में लाला लाजपतराय के सभापतित्व में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ, जिसमें गांधीजी ने असहयोग का प्रस्ताव रखा और स्कूल कालेज, अदालत-कचहरी तथा विदेशी माल का बहिष्कार, सरकारी उपाधियों का त्याग, आदि का कार्यक्रम बताया । इस प्रस्ताव का सभी पुराने नेताओं ने विरोध किया, यहां तक कि लालाजी ने भी अपने सभापति के व्याख्यान में

इसका विरोध किया । इस कांग्रेस तक मि. जिन्ना भी कांग्रेस में थे । इसके बाद सदा के लिए उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी । उनका तो विरोध होना ही था । समर्थन में केवल मोतीलालजी और अली-बन्धु थे । जहां तक मुझे याद है, नेताओं में प्रस्ताव के पक्ष में कोई नहीं बोला पर प्रस्ताव बड़े बहुमत से स्वीकार किया गया । चार महीने बाद नागपुर-कांग्रेस में यह प्रस्ताव, जो कलकत्ता की विशेष कांग्रेस में स्वीकृत हुआ था, सारे नेताओं के समर्थन के साथ एक प्रकार से सर्वसम्मत रूप से पास हो गया।

इस प्रकार सन् १९२० के दिसम्बर में देश ने सर्वमान्य नेता के रूप में गांधीजी को स्वीकार कर लिया और कांग्रेस पूर्णरूप से गांधीजी की सलाह से चलने लगी। सन् १९१५ में गांधीजी भारत में आये थे । सन् १९२० में वह कांग्रेस के सर्वोच्च श्रद्धेय नेता स्वीकार कर लिये गए और 'महात्मा' के नाम से पुकारे जाने लगे । तब से सन् १९४७ तक स्वाधीनता प्राप्ति का इतिहास, गांधी-युग का इतिहास है जो महान्, अनोखा एवं प्राणवान तो है ही, विश्व के स्वाधीनता-इतिहास में भी एक नया अध्याय जोड़ता है ।

बुद्ध और ईसा जैसे महापुरुषों ने अहिंसा के प्रभाव पर काफी जोर दिया, पर अहिंसक प्रतिकार की बात गांधीजी ने बतायी और उसको सामूहिक रूप दिया। उसका अनेक क्षेत्रों में अनेक बार प्रयोग किया और सफलता प्राप्त की । सबसे बड़ी बात यह है कि जिसका उन्होंने प्रतिकार किया, उसका भी प्रेम वह प्राप्त कर सके। यह उनके जीवन की महान सफलता और चरम साधना है । राजनैतिक उपलब्धियों से भी बहुत बड़ा, बहुत सच्चा, बहुत निर्मल और बहुत उदार रूप उनकी जीवन-साधना का है । उनके व्यक्तित्व की, उनके व्यवहार की और सम्बन्धों की छाप अनेकों के ह्रदयों मे अंकित है ।

गांधीजी के सम्पर्क का ज़रा-सा-स्पर्श, जो भावना, जो संस्कार दे गया, वह आगे भी मिटा नहीं । जिसे वह सत्य मानते थे, उसे करने की उनमें अचूक श्रद्धा और हिम्मत थी । शायद १९२८ की बात है । एक बार घनश्यामदासजी बिड़ला ने उनसे पूछा कि आपके अनेक कामों मे कौन-सा ऐसा काम है, जिसे आप बड़ा काम मानते हैं ? उन्होंने कहा, "मै तो बड़ा-छोटा सोचता नहीं, जो काम ईश्वर मुझसे कराता है, वह करता हूं, पर तुम मुझे देख रहे हो, समझ रहे हो, मेरे कामों में तुम्हें सबसे बड़ा कौन सा लगता है ?" घनश्यामदासजी ने कहा, "आपके सभी काम बड़े हैं, पर बछड़े को जहर की सूई दिलवाने में आप पर बहुत जोर पड़ा होगा, या बहुत हिम्मत की आपने ।" गांधीजी ने कहा, "इस काम का विरोध तो बहुत हुआ और आज इतने दिनों बाद भी मेरे पास अनेकों पत्र आते हैं, पर यह काम करने में मुझे न तो बहुत सोचना पड़ा, न कोई ज्यादा समय लगा । मैंने बछड़े की पीड़ा देखी और डाक्टर से कहा कि इसकी पीड़ा कम करने का

उपाय करो । डाक्टर ने कहा कि इसकी पीड़ा तो इसकी मृत्यु से ही मिट सकती है, नहीं तो यह ऐसे ही तड़पेगा और मर जायेगा । मैंने सोचा कि क्या मैं इसे मृत्यु दे सकता हूं ? लगा कि, हाँ, काका कालेलकर मेरे पास थे । उनको देखने के लिए कहा और उनकी राय ली तो उन्होंने मेरी राय का समर्थन किया । मैंने डाक्टर से सूई देने के लिए कह दिया, उसको कष्ट से छुटकारा मिल गया । यह एक साधारण घटना है, पर इसने निश्चय ही बड़ा तूल पकड़ा । मुझपर जोर पड़ा था चौरी-चौरा कांड के समय, बारडोली सत्याग्रह बन्द करने में और उसके बारे में मैंने तीन दिन तक सोचा था । उसकी जो प्रतिक्रियाएँ हुईं वे बहुत थीं ।''

हो सकता है, इसकी भाषा और शब्दों में बहुत-कुछ फर्क रह गया हो, पर भाव-विचार जहां तक याद हैं, यही थे । उनके व्यक्तिगत सम्पर्क की अनेक बातें याद आती है । भारत के हर प्रांत में गांधीजी ने अपने व्यवहार और कार्यों से आदमी बनाये, जो गांधी-युग के विशेष आदमी बने । बिहार में पूज्य राजेन्द्रबाबू, गुजरात में सरदार पटेल, मद्रास में राजाजी, सिंध में जयरामदास दौलतराम और आचार्य कृपलानी, आसाम में बारदोलोई, कर्नाटक मे गंगाधरराव देशपांडे, संयुक्त प्रांत में मोतीलालजी और जवाहरलालजी, उड़ीसा में गोपबन्धु चौधरी, बंगाल में सतीश दासगुप्ता, प्रफुल्लचन्द्र घोष, हरदयाल नाग आदि ।

पजाब और बंगाल मे वह चोटी के नेताओ को अपना पूर्ण अनुयायी नही बना पाये, फिर भी उनके कार्यों का प्रभाव वहां भी कम नही हुआ । इसके अलावा साधारण कार्यकर्ताओं को नई प्रेरणा, नई दिशा और देश-समाज की सेवा करने के लिए प्रेरित करने मे गांधीजी की जो देन है, वह इस युग की सबसे बड़ी देन है ।

रचनात्मक कार्यो द्वारा देश के हर कोने से उनका तथा उनके कार्यकर्ताओं का अटूट सम्बन्ध स्थापित हो गया था । प्रत्येक कार्यकर्ता के सुख-दुःख में वह व्यक्तिगत रुचि ही नही रखते थे, उसकी पूरी संभाल भी करते थे । कार्यकर्ता उनके पास जाकर उनके सामने अपना सुख-दुःख अपनी समस्याएं रखता और वहां से समाधान पाकर संतोष और नये बल का अनुभव करता । गांधीजी बहुत छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देते और उन बातों को जीवन की बुनियाद मानकर चलते। हर क्षण सावधान और जागरूक रहकर जीवन की पवित्रता और सत्य का आग्रह रखते तथा अपने साथ रहनेवाले आश्रमवासियों के जीवन को उन्नत बनाने के प्रयत्न करते ।

दक्षिण अफ्रीका में ही उन्होंने इस प्रकार का कार्य आरंभ कर दिया था और फिनिक्स-आश्रम में मगनभाइ जैसे लोग तैयार हो चुके थे ! भारत में आने के बाद उन्होंने अपने आश्रम में ऐसे कार्यकर्ता तैयार किये, जीवन-साधक और शोधक बनाये, जैसे किशोरलालभाई, महादेवभाई, विनोबाजी, काकासाहब कालेलकर आदि, जो उनके दर्शन के प्रमुख व्याख्याता बने ।

जमनालालजी जैसे व्यवहारकुशल लोगों को उन्होंने अपना बना लिया । एक बार उन्होंने कहा था कि मैं तो आटा पीसता हूं, रोटी तो जमनालाल ही बनाता है। देश की सेवा करने के लिए उन्होंने अनेक लोगों को प्रेरणा दी और शायद कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा, जिसपर उनकी छाप न हो । उनका उद्देश्य मानव-कल्याण था। वह राजनीति में पड़ने के लिए बाध्य हुए। वास्तव में जिसको लोग राजनीति कहते और मानते हैं वह उनकी राजनीति नहीं थी । जमनालालजी की मृत्यु पर श्राद्ध-दिवस के दिन प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा था, "जमनालालजी के जीवन में राजनीति नहीं थी । मैं राजनीति में नहीं पड़ता तो जमनालाल राजनीति में नहीं आते, पर पराधीन देश के लोगों को कुछ भी करना हो तो सबसे पहले स्वाधीनता प्राप्त करनी पड़ती है, इसलिए बरबस राजनीति में पड़ना पड़ता है ।"

राजनैतिक आंदोलनों का पूरा नेतृत्व करने के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों द्वारा देश की हर समस्या को उन्होंने क्रांतिकारी ढंग से सुलझाने की दिशा दी । सबसे पहले चर्खा संघ बना, फिर गांधी सेवा संघ, हरिजन सेवक संघ बना । ग्राम उद्योग संघ, तालीमी संघ, आदि संघों द्वारा आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक दृष्टि से हजारों कार्यकर्ता तैयार किये, जो देश के कोने-कोने में नाना रूपों में काम करते थे ।

२ : गांधीजी : सत्य और सत्याग्रह

गांधीजी के जीवन का आधार सत्य था । इस सत्य का सूक्ष्म दर्शन उन्हें सात वर्ष की अवस्था में अपने पिताजी के साथ हरिश्चन्द्र नाटक देखते समय हुआ था। सत्य की खोज में जो बातें उनके सामने आईं उनको वह अपनी सत्य-प्राप्ति का साधन बनाते गये । अपने सत्य के प्रयोगों के सम्बन्ध में वह एक वैज्ञानिक जैसा मनोभाव रखते थे । आत्मकथा में उन्होंने लिखा है, "जैसे एक वैज्ञानिक अपने प्रयोग अत्यन्त नियमानुसार, विचार-सहित और सूक्ष्मतापूर्वक करता है, फिर भी उससे उत्पन्न हुए परिणामों को अंतिम नहीं मानता, अथवा यह नहीं कहता कि यही सच्चे परिणाम हैं, वैसे ही अपने परिणामों के विषय में मेरा मानना है ।" गांधीजी का सत्य क्रियात्मक सत्य है और इसी सत्य के आधार पर उनका जीवन संचालित हुआ । आगे जाकर इस सत्य के प्राप्त करने के साधनों में अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि आते गये ।

गांधीजी के जीवन के विकास का एक क्रम है । बाल्यकाल से लेकर दक्षिण अफ्रीका में वकालत करने जाने तक का जीवन एक साधारण जीवन है । इसव.

बाद क्या अचानक किसी चमत्कार से वह बड़े बन गए ? चमत्कार नहीं, उनकी सत्यनिष्ठा मूर्त्त रूप ग्रहण करने लगी। चमत्कारों में उनका विश्वास नहीं था। उन्होंने बहुत बार कहा, "मैं एक साधारण आप जैसा आदमी हूं। आप जो कुछ करें, अपनी बुद्धि के आधार पर करें, मेरे कहने से नहीं।" फिर भी ऐसे बहुत से लोग थे, जो यह मानते थे कि अमुक बात गांधीजी ने कही है, इसलिए हमें करनी ही चाहिए। गांधीजी ने जब कहा, "यह काम तो होना ही चाहिए, यदि देश के नेता मेरा साथ न देंगे तो मैं अकेला ही इस काम को शुरू कर दूंगा ऐसे अवसर पर देश के सारे नेता उनके साथ हो गये। ऐसे बहुत-से उदाहरण हैं जब गांधीजी के कारण ही आंदोलन शुरू हुआ और त्यनिष्ठा इतनी तीव्र थी कि वह दूसरे आदमियों को भी उनके कहे अनुसार सोचने को बाध्य करती थी।

गांधीजी के जीवन की प्रत्येक क्रिया सत्यरूप हो गई। एक बार प्रसिद्ध साधक ने उनसे पूछा, "बापू, हम लोग जो चाहते हैं कि जीवन को सत्य बनायें, सो चेष्टा करने पर भी सफल नहीं होते और बिना कारण हमसे असत्य आचरण हो जाता है या असत्य बोल दिया जाता है। हम जब सोचते हैं तो अपने अन्दर सुख-भोग की इच्छा ही नहीं दीखती, साथ ही लालच भी नहीं दिखाई देता; पर हम काम करते हुए इसलिए डरते हैं कि कहीं हम से झूठ आचरण तो नहीं हो जाएगा। आप इतना काम करते हैं, इतनी चीजों का, इतने कार्यों को संभालते हैं उसमे आपसे यह सत्य कैसे निभता है ?"

इस सवाल के उत्तर में गांधीजी ने कहा था, "आज तो मेरी यह स्थिति है कि मैं जो करूं, वही मुझे सत्य जान पड़ता है, जो असत्य है वह मुझसे होगा ही नहीं; मैं जो कुछ करता हूं, जो कहता हूं, वह सब सत्य के लिए है यानी परमात्मा के लिए है और सत्य ही परमात्मा है।'

सत्य एक पद्धति बन गया, शायद इसी पद्धति को वह देश के जीवन में, हरेक मनुष्य के जीवन में, उतारना चाहते थे। बछड़े को जहर की सूई दिलाते समय भी यही सत्य था और यही पद्धति–बन्दरों को मरवाते समय भी और शरीर पर से गुजरने वाले सांप को न मारने में भी। कागज के छोटे से टुकड़े को भी संभाल कर रखने, पानी पीते या हाथ धोते समय एक बूंद पानी भी व्यर्थ न चला जाय, इसका ख्याल रखने में और जरूरत पड़ने पर पानी का टब भराकर उसमें पन्द्रह-बीस मिनट बैठकर लेटने में सब कामों में सत्य और उसका प्रयोग था। कुष्ठ-पीड़ित परचुरे शास्त्री को मालिस करना और वायसराय से बात करना उनके लिए समान सत्य था।

दक्षिणी अफ्रीका में घोड़ागाड़ी के एक कोचवान से मार खाते हुए उन्हें सत्याग्रह का दर्शन सहज-सत्य के रूप में हुआ था। किसीको कष्ट दिये बिना, किसी का बुरा चाहे बिना अन्याय का प्रतिकार कैसे किया जा सकता है, अपने अधिकार

की रक्षा कैसे की जा सकती है और मानव के अन्दर भलाई को कैसे जागृत किया जा सकता है, यह गांधी जी ने देखा । जैसे किसी शुष्क वट बीज में विशाल वट वृक्ष छिपा रहता है उसी तरह एक छोटी सी घटना में महान सत्याग्रह छिपा हुआ उन्हें दिखाई दिया । उनके जीवन की हर छोटी से छोटी घटना इसलिए उनके जीवन की किसी महान घटना से कम नहीं थी । उन्होंने अपने जीवन के कार्यों में छोटे-बड़े का विचार नहीं किया। वह कहा करते थे कि प्रभु के काम में छोटा बड़ा मानने वाला मैं कौन ? जिस समय जो काम वह मुझसे लेना चाहते हैं, वही मेरे लिए बड़ा है । हाँ, हम लोग बराबर यही सोचा करते थे कि गांधीजी ने इस बार जो काम किया वह महान काम था, अथवा यह काम उनके जीवन का सबसे बड़ा काम था । पर कुछ ही दिनों के बाद वह फिर इतना बड़ा काम कर डालते थे कि पिछले कुल काम उस काम के सामने छोटे दिखाई देने लगते । दरअसल उनके जीवन में अपने कार्यों में कोई छोटा-बड़ा काम था ही नहीं । यही वजह है कि वह हमारे जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर सके । मानव जीवन के जितने क्षेत्र हो सकते हैं, सबमें उन्होंने काम किया ! हमारे देश की जितनी समस्याएं थीं, सबको सुलझाने में उन्होंने दिशा-दर्शन किया ।

दक्षिण अफ्रीका के 'इण्डियन ओपिनियन' में उन्होंने पहले-पहल लिखना शुरू किया और 'हिन्द स्वराज्य' के रूप में उनकी पहली रचना हमारे सामने आई । 'हिन्द स्वराज्य' में जो विचार उन्होंने व्यक्त किए, वे ही उनकी विचारधारा की भित्ति थे । रामराज्य, स्वराज्य की परिकल्पना 'हिन्द स्वराज्य' में मिलती है ।

देश में जो समस्याएं थीं उनको वह पूरी तरह समझ गये थे और उन्हें सुलझाने के जितने प्रयत्न हो सकते थे, उन्होंने किए । रचनात्मक कार्य उनके सिद्धांतों का आधार था । उन्होंने एक बार कहा था, "हमें कहा जाता है कि हम विनाश करते हैं; हमें सृजन करने का. रचना करने का, मौका ही कहां दिया जाता है, हम तो रचना ही करना चाहते हैं ।" वह तो रचनात्मक कार्यों द्वारा ही स्वराज्य प्राप्त करने की बात कहते थे । खादी या चरखा प्रतीक था -असली स्वराज्य की रचनात्मक शक्ति में छिपे होने का प्रतीक ।

३ : कस्तूरब

पूज्य बापू जी दक्षिण अफ्रीका में थे और वहां सत्याग्रह में सफलता प्राप्त करने के समय भारत में वह प्रसिद्ध हो गये थे । सन् १९१५ में वह भारत आये

तब कलकत्ते के हावड़ा स्टेशन पर हजारों आदमियों ने उनका स्वागत किया। उस समय उनके साथ कस्तूरबा थीं। तब उनको बहुत कम लोग जानते थे। बापू जी की गाड़ी के घोड़े खोल दिए गए और नवयुवको ने उनकी गाड़ी खींची। उस गाड़ी में कस्तूरबा भी बैठी थीं। उस समय बापूजी की वेशभूषा में काठियावाड़ी पगड़ी, अंगरखा, और धोती तथा दुपट्टा था। कस्तूरबा एक रंगीन साड़ी पहने थीं। हम लोगों ने पूछा कि ये कौन हैं तो बताया गया कि ये गांधीजी की पत्नी हैं। कस्तूरबा का यह मेरा प्रथम दर्शन था। इसके बाद बापूजी के दर्शन करने तथा नजदीक से देखने के मौके आते रहे, पर बा का दर्शन करने और मिलने का मौका बहुत देरी से आया।

बा मूक तपस्विनी थीं और बापूजी के प्राणों में अपने प्राण डालकर अपने को धन्य मानती थीं। वह कभी किसी काम में सामने आने की बात सोचती ही नहीं थीं, न उन्हें अखबारों में नाम तथा फोटू का पता था। जहां तक मैं जानता हूं, उनका मानस, विचार, चेष्टा और सब कुछ एक ही था कि बापूजी को सन्तुष्ट कर सकूं। बा की बापूजी की सेवा करने की इच्छा बहुत रहती थी, पर बापू जी के पास मीराबहन, प्रभावती बहन आदि कई बहनें थीं, जिनमें बापू की सेवा करने की प्रतिस्पर्धा रहती थी। इसलिए बा बीच में न पड़ती कि इन बहनों को अवसर मिले और उनके मन को मेरी वजह से कोई ठेस न लगे। लेकिन उनका मन चाहता था कि मौका मिले तो मैं भी कुछ करूं। एक बार मैंने देखा कि बापूजी के झूठे बर्तन कस्तूरबा धोने के लिए ले गई। पानी दूर था। वहा जाकर बर्तन धोये और जब लौटीं तब थकावट थी और साथ ही उनके चेहरे पर एक संतोष भी था।

बापूजी जितने कोमल थे उतने ही कठोर भी थे। वह अपने नजदीक के लोगों को जिस रूप मे कसते थे और उनकी जो कठिन परीक्षा करते थे उसको वही जानते है, जो इस मार्ग से गुजरे हैं। बा को तो इस कठिन परीक्षा में से बहुत बार गुजरना पड़ा। बा संस्कार और स्वभाव से भारतीय नारी की प्रतिमूर्ति थीं, जो पतिपरायण, सद्गृहस्थी और कुटुम्ब की मर्यादाओं का पालन करने वाली होती हैं। लेकिन बापूजी की कठिन तपश्चर्या के सामने उनका, साथ देने के लिए बा की एक ही साध रह गई थी कि वह बापूजी को सन्तुष्ट रख सकें। बापू जी के सारे नियम, व्रत और कार्यों में उन्होंने इसी भावना से पूरा-पूरा सहयोग दिया। बापूजी की इच्छा ही उनकी इच्छा रही। सन १९४२ में पुलिस बापू को बम्बई के बिड़ला हाऊस में गिरफ्तार करने गई तो बापू, महादेवभाई और मीराबहन तीन के नाम वारण्ट थे, लेकिन पुलिस ने कहा कि बापू किसी को साथ लेना चाहें तो हम साथ ले जा सकते हैं। बापू ने कस्तूरबा से पूछा, "तुम चलोगी क्या?" कस्तूरबा ने कहा, "जो आप कहें। मैं तो जाना चाहती ही हूं।" बापू ने कहा

"तुम चल सकती हो, पर अच्छा यह होता कि शिवाजी पार्क की मीटिंग में जहां मैं बोलने वाला था, वहां तुम जाओ और बोलो। इसका अर्थ तो यह हो सकता है कि पुलिस तुम्हें गिरफ्तार करके ले जाय और हो सकता है, वह मेरे साथ न रख कर अलग भी रखे।" कस्तूरबा ने कहा, "ठीक है मैं शिवाजी पार्क की मीटिंग में जाऊंगी।" और शाम को शिवाजी पार्क की मीटिंग में बा भाषण करेंगी, यह सूचना भूमिपत्रों (जमीन पर खड़िया से लिखना) द्वारा जगह-जगह, रास्ते-रास्ते में लिख दी गई और बा शाम को बिड़ला हाऊस से शिवाजी पार्क में भाषण देने के लिए चलीं तो बाहर निकलते ही गिरफ्तार कर ली गईं। दीर्घकाल तक बापू जी की सेवा में रहीं और बापूजी की गोद में ही उन्होंने प्राण त्यागा, जो एक पतिपरायण स्त्री की चाह होती है।

बापू तो अस्वाद वृत्ति के व्रती थे। बा ने भी इसको अपनाने की कोशिश की। इसका एक उदाहरण याद आ रहा है। एक बार घूमते समय बात चली तो बापू ने कहा, "मैंने दाल खाना कैसे छोड़ा यह बा से पूछो।" बात कैसे चली थी मुझे याद नहीं आ रहा है। बापू ने कहा, "बा अदरख बहुत खाती थी। मैंने उसे अदरक छोड़ने के लिए कहा। कई दिन कहता रहा। उन दिनों मैं दाल खाना पसन्द करता था। एक दिन बा ने तैश में आकर कह दिया, 'तुम दाल खाना छोड़ दो?' मैंने दाल खाना छोड़ दिया कहा, आज से दाल नहीं खाऊंगा। बा तो बेचारी हैरत में पड़ गई और भौंचक्की हो गई। यह मैंने क्या किया! हाथ जोड़े मिन्नत की, माफी मांगी और कहा, 'मैंने तो यूं ही कह दिया था। तुम दाल खाओ, इससे मुझे खुशी होगी।' पर मैंने तो दाल छोड़ दी वह छोड़ ही दी।" इस प्रकार के बा और बापू के अनेक प्रसंग मिलते हैं।

एक बार की बात है जब गांधी जी जुहू (बम्बई) में ठहरे थे। कस्तूरबा बम्बई के अपने किसी रिश्तेदार के यहां मिलने गई थीं। वहां से लौटने पर दूसरे दिन उनको बुखार आ गया। इसपर गांधीजी ने उनसे कहा, "तुमने कल अपने रिश्तेदार के यहां खाने में असंयम किया होगा!" यह सुनकर कस्तूरबा एक दम सहम गई। उन्होंने जानकी देवी बजाज से कहा, "जानकी बेन, बापू अपने लोगों को कभी भी सराहने वाले नहीं हैं। अपने लोग सूली पर भी चढ़ जायं और बापू को मालूम रहे कि जीते हैं, तब तक वह यही कहेंगे कि तुम सूली पर तो चढ़ीं पर तुम्हारे में ये-ये कमियां हैं; जब सूली से लाश उतर जायगी तभी बापू को सन्तोष मिलेगा, तो अपने को तो वही करना है। बताओ जानकीबेन, ७० वर्ष की उम्र में और इतने दिनों बापू के साथ रहकर मैं क्या असंयम कर सकती थी?"

बापूजी के उपवासों के समय जब-जब चिन्ता का अवसर आता था तब देखा गया कि कस्तूरबा का अडिग विश्वास बना हुआ था कि बापू मेरे पहले जा नहीं सकते। वह किसी भी स्थिति में विचलित न होतीं। आगाखां महल के प्रसिद्ध

उपवास के समय जब डाक्टर निराश हो चले थे और बापू की अवस्था निहायत नाज़ुक हो गई थी तब भी कस्तूरबा का धीरज टूटा नहीं। मेरी लड़की पन्ना आगाखां महल में बापूजी के दर्शन करने गई तब उन्होंने बातों में कहा कि बापू सदा कष्ट देते रहे हैं, वह दे रहे हैं। जा कैसे सकते हैं ? इस परीक्षा में भी निश्चय ही पूरे उतरेंगे ।

बा कभी दुःखी होती थीं तो हरिलालभाई के लिए । हरिलालभाई का बापूजी से चाहे जितना विरोध रहा हो, लेकिन बा के प्रति उनके मन में असीम श्रद्धा थी । इसको गांधी परिवार के, जो भारत के कोने-कोने में बिखरा हुआ था और है, कुछ लोग जानते हैं और इसके कई उदाहरण आंखों के सामने से गुजरे हैं जब हरिलालभाई की श्रद्धा और बा का दुःख प्रकट होता था । एक बार की बात है कि बापूजी यात्रा कर रहे थे, तो स्टेशन की भीड़ 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगा रही थी । उसमें से एक आवाज आयी 'कस्तूरबा की जय' और लोगों का ध्यान उस तरफ गया । कस्तूरबा ने भी देखा कि हरिलालभाई आ रहे हैं । हरिलाल भाई की वेशभूषा और शरीर देखकर बा बहुत दुःखी हुईं । मैले और फटे कपड़े, दांत गिर गये, बाल सफेद हो गए, शरीर कृष हो गया । यह देखकर बा को महान् कष्ट हुआ । हरिलाल भाई ने बा को मौसम्बी दी, प्रणाम किया और कहा कि मैं यह तुम्हारे लिए लाया हूँ । इसे तुम ही खाना । तुम न खाओ तो मुझे लौटा दो । मैं बहुत मुश्किल से लाया हूँ । बापू ने कहा, "मेरे लिए कुछ नहीं लाए ?" हरिलाल भाई ने कहा, "हा, आपके लिए कुछ नहीं लाया । आप यह सुन लीजिए कि आप जो बड़े बने हैं, बा के ही पुण्य प्रताप से बने हैं ।" बापूजी ने कहा, "अच्छा हमारे साथ चल ।" बा ने बहुत आग्रह से कहा, "हरि, मेरे साथ चल ।" हरिलालभाई ने करुण स्वर में कहा, "बा अब मैं बहुत दूर चला गया । तेरे साथ कैसे चलूं !" इस प्रकार बा का वात्सल्य और हरिलालभाई की श्रद्धा अक्षुण्ण थी ।

बा के वात्सल्य की और आतिथ्य की अनुभूति बापू के पास जाने-आने वाले लोगों में बहुतों को हुई है । उनमें आज जो जीवित हैं, वे बा को जिस रूप में याद करते हैं, वह बताया नहीं जा सकता । सौभाग्य से जमनालाल जी के यहां वर्धा में रहते समय, सेवाग्राम बनने के पहले और बाद में भी मुझे और मेरी पत्नी भगवान देवी को वहां जाने और रहने का बहुत मौका मिला । जमनालाल जी के यहां रात-दिन अतिथियों का जमघट लगा रहता था और रसोई के काम में भगवान देवी काफी मदद करती थी । बा वहां आतीं तब कुछ-न कुछ बनाकर बा को खिलाने का प्रयत्न करती और बा वृद्ध तो थीं ही, बहुत प्रेम से सराहना के साथ कुछ खा लेती थीं । इस प्रकार बा एक बहुत ही साधारण स्त्री की तरह अपने आप को रखती थीं, मानती थीं और व्यवहार करती थीं। मैंने कभी ऐसा

नहीं देखा कि बा को यह भान भी हो कि मैं संसार के एक महापुरुष की पत्नी हूं। वे तो एक साधारण महिला की तरह रहतीं, आश्रमवासियों की तरह अपना जीवन बितातीं और सबके साथ बहुत ही सहृदयता का व्यवहार करतीं।

एक बार भाई महाबीर जी पोद्दार के साथ भगवानदेवी और दो-तीन बच्चे सेवाग्राम तांगे में गये। बापू घूमने निकले थे। आश्रम के नजदीक उन सबको उन्होंने तांगे में आते हुए देखा ! उन दिनों गो सेवा संघ की स्थापना हुई ही थी। बापू लौटकर आये तब पोद्दार जी से विनोद में बोले, "गौ की रक्षा करने का अर्थ घोड़े को मारना है क्या ?" पोद्दार जी ने कहा, 'हम लोग दो ही आदमी थे और तो बच्चे हैं।" भगवानदेवी मोटी अधिक थीं तो कहने लगे, "क्या यह भी एक ही आदमी है ?" सब हँसने लगे। बापू ने पोद्दार जी से कहा, "जाते समय पैदल जाओ और तांग को खाली ले जाओ। आते समय घोड़े को कष्ट दिया, जाते समय आराम दो।" पोद्दारजी ने कहा, "ठीक है।" बा वहीं बैठी सुन रही थीं। तुरन्त बोलीं "यह बेचारी मोटी स्त्री इतनी दूर पैदल कैसे जायेगी और ये बच्चे कैसे जाएंगे ?" भगवानदेवी से बोलीं "बापूजी तो ऐसे ही 'गैली' बातें करते हैं। तुम बात मत मानना, तांगे में बैठकर जाना।" बापूजी ने सुधार किया, "मेरी बात भी माना और बा की भी मानो। जितनी दूर पैदल चल सकती हो पैदल जाओ, न चल सको तो तांगे में बैठ जाना।"

४ : जमनालालजी

शायद सन् १९१७ की बात है। जमनालालजी कुछ मित्रों के साथ कलकत्ते के बोटानिकल बाग में घूमने गये थे। वहां साइकिल की दौड़ लगाने की बात चली, तो जमनालालजी सबसे पहले तैयार। लोगों ने कहा, "आप इतने मोटे आदमी हैं, साइकिल पर से गिर पड़ेंगे !" वह बोले, "मैं तो देहाती आदमी ठहरा। वहां तुम्हारे कलकत्ते-जैसी मोटरें थोड़े ही हैं ! जल्दी का काम होता है, तो साइकिल ही काम आती है।" जो हो, जमनालालजी साइकिल पर चढ़े। देर तक घूमते रहे। कई लोग जो अपने को साइकिल चलाने में बड़े तेज मानते थे, उनसे भी जमनालाल जी मीर निकले। परन्तु अन्त में सामने से एक मोटर गाड़ी आई और वह अपना तौल नहीं सम्भाल सके, गिर ही पड़े। लोग सहम गये। उन्होंने समझा, मोटर का धक्का लग गया। मगर जमनालाल जी तुरन्त खड़े हो गये और बोले, "कुछ नहीं हुआ।" लेकिन दाहिने घुटने से बराबर खून बह रहा था। योंही पोंछ-

पाछ कर घर आये ।

दर्द सख्त था, लेकिन मुँह से कहते नहीं थे । डाक्टर को बुलाया गया। उसने कहा, चोट मामूली नहीं है । तब उस समय के सबसे बड़े सर्जन डाक्टर सुरेश सर्वाधिकारी को बुलाया गया । उन्होंने कहा, "मांस के भीतर कंकड़ घुस गये हैं। आपरेशन करना होगा । आपरेशन के लिए क्लोरोफार्म भी देना पड़ेगा ।" जमनालाल जी ने कहा, "इसकी क्या जरूरत है ?" डाक्टर बोला, "बिना क्लोरोफार्म के आपरेशन नहीं हो सकेगा ।" जमनालाल जी ने कहा, "अच्छी बात है, आप क्लोरोफार्म का इन्तजाम रखिये और आपरेशन बगैर क्लोरोफार्म के शुरू कर दीजिए । अगर मैं न सह सका, तो आप बेशक क्लोरोफार्म दे दीजिएगा ।" डाक्टर को यह बात पसन्द तो नहीं थी; लेकिन उसने सोचा कि यह अपने आप ही क्लोरोफार्म मांगने लगेंगे । इतना दर्द सहना कोई खेल थोड़े ही है ।

बिना क्लोरोफार्म के आपरेशन शुरू हुआ । आपरेशन के वक्त जो लोग मौजूद थे, वे कहते थे कि मांस के अन्दर से डाक्टर जब कंकर चिमटे से खींच-खींचकर बाहर निकालता था, उस दृश्य को देखना भी मुश्किल था । लेकिन जमनालाल जी ने चूं भी नहीं किया । डाक्टर दंग रह गया । बोला, " ऐसा सहने वाला आज तक नहीं देखा । मुझे तो विश्वास नहीं था कि यह आपरेशन क्लोरोफार्म के बिना भी हो सकता है । "ऐसी थी जमनालालजी की सहनशक्ति और धीरज।

इसी तरह दूसरा प्रसंग उस समय का है, जब वह जयपुर में नजरबंद थे। उनके पैर में जोरों का दर्द हुआ । बिजली का इलाज किया गया । डाक्टर ने कहा, "मैं बिजली का प्रवाह तेज करता जाऊंगा । यदि आप कुछ अधिक बर्दाश्त कर सकें तो असर अच्छा होगा ।" डाक्टर प्रवाह बढ़ाता ही गया, मगर जमनालाल जी कुछ नहीं बोले । पैर जलता रहा, यहां तक कि घाव हो गया । तब डाक्टर को पता चला कि इनका तो पैर ही जल गया । मगर जमनालाल जी तो बर्दाश्त ही करते रहे ।

ऊपर जिस आपरेशन की चर्चा आई है, जमनालाल जी से पहले पहल मैं उसी समय मिला । उस समय उनकी उम्र कुल सत्ताईस साल की थी । पर उसके पहले ही वह कई सार्वजनिक कार्य शुरू कर चुके थे और देश के अच्छे-अच्छे लोगों के सम्पर्क में आ चुके थे । जहां कहीं जाते या किसी से मिलते तो बराबर यह कोशिश करते रहते कि किसी कार्यकर्ता से परिचय हो जाय। कोई नया कार्यकर्ता तैयार हो, इसी की तलाश मे रहते । आपरेशन के वक्त उन्हें कई दिन कलकत्ते में रहना पड़ा । शाम को उनके पास कलकत्ते के मारवाड़ी युवकों का जमघट लगता और अन्य लोग भी आते जिनमें श्री अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी, स्व० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी आदि प्रमुख थे । समाज-सुधार और राजनैतिक विषयों पर बातें होती रहतीं। बीच-बीच में चतुर्वेदीजी के हास्य-विनोद के फव्वारे सबकी तबियत को तर कर

देते और कलकत्ते के बागबाजार वाले नामी रसगुल्लों का स्वाद भी मिल जाता। थोड़े ही दिनों के बाद उन्नीस सौ सत्रह के बड़े दिनों की छुट्टियों में श्रीमती एनी बेसेण्ट की अध्यक्षता में कांग्रेस का अठाइसवां अधिवेशन हुआ। उसमें उस समय के 'कर्मवीर' गांधी भी आने वाले थे। लोकमान्य के नाम की धूम थी। गांधीजी तो जमनालालजी के ही अतिथि थे। उन दिनों वह काठियावाड़ी वेश-भूषा में रहते थे। वही बलदार पगड़ी और लम्बा अंगरखा; लेकिन जूते नदारद। हम लोगों को जमनालालजी ने गांधीजी से मिलाया। वैसे तो वहां का सारा काम हमीं लोगों के जिम्मे था।उस समय जिन्होंने जमनालालजी को गांधीजी का आतिथ्य करते देखा है, उन्हें याद है कि उस समय भी गांधीजी के साथ उनका सम्बन्ध कितना गहरा था और गांधीजी के प्रति उनकी श्रद्धा कितनी गहरी थी। बाद में तो गांधीजी 'महात्मा' हो गये और सारे देश के 'बापू' बन गये। जमनालालजी की विशेषता यह थी कि उन्होने गांधीजी को पहले ही पहचान लिया था और अपने को उन्हें सौंप दिया।

सन् १९२० में लाला लाजपतरायजी के सभापतित्व में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ, जिसमें गांधीजी ने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया। कांग्रेस के सभी पुराने महारथियों ने उस प्रस्ताव का जमकर विरोध किया, तो भी जमनालालजी गांधीजी के साथ थे। उनके कारण बड़ाबाजार के सभी लोग गांधीजी के पक्ष में रहे। उन दिनों आजकल की तरह प्रतिनिधियों का चुनाव तो होता नहीं था। इसलिए हम लोग बहुत बड़ी संख्या में प्रतिनिधि बन गए थे। हम लोग तो यही मानते रहे कि हमारे वोटों की बदौलत ही महात्माजी की जीत हुई। बंगाल के मुख्य नेता देशबन्धु चित्तरंजन दास, विपिनचन्द्र पाल, व्योमकेश चक्रवर्ती तथा महामना मालवीयजी महाराज और अन्य सभी धुरंधर नेताओं ने गांधीजी के प्रस्ताव का घोर विरोध किया। प्रस्ताव का एक अंश यह भी था कि सरकारी उपाधियां लौटा दी जायं। जमनालालजी ने तुरन्त अपनी 'रायबहादुर' की उपाधि छोड़ दी।

१९२० की नागपुर कांग्रेस के बाद आन्दोलन का जोर बढ़ा। कई कार्यकर्ता, कालेजों के प्रोफेसर, वकील-बैरिस्टर और बड़े-बड़े लोग आन्दोलन में योग देने लगे। देशबन्धु दास और पण्डित मोतीलाल जी अपनी बड़ी बड़ी वकालतें छोड़कर मैदान में कूद पड़े। पूज्य राजेन्द्रबाबू भी अपनी वकालत छोड़कर देशकार्य में जुट गये। इसका परिणाम यह हुआ कि सैंकड़ों और हजारों की तादाद में लोग अच्छी कमाई का धन्धा छोड़कर आन्दोलन में शामिल हुए। जमनालालजी ने सोचा कि इतने लोग जो देश के काम के लिए आगे आये हैं, उनके पास कमाई का कोई जरिया नहीं। न जाने इनके परिवार के लोगों पर क्या-क्या बीत रही होगी। इनके सिवा और भी कितने ही ऐसे लोग होंगे, जो अपनी कमाई छोड़कर आन्दोलन में शरीक होना चाहते होंगे। लेकिन उनके सामने उनके स्त्री-बच्चों का सवाल होगा। उन्होंने

झट एक निधि खोली। दो लाख रुपये अपने पास से दिए और जो लोग अपना धन्धा छोड़कर आंदोलन में पड़े थे और जिनके परिवार के लोगों के लिए दूसरा कोई इन्तजाम नहीं था, उनकी सहायता की। उनको बराबर यह चिन्ता रहती थी कि देश और समाज के सेवकों की तकलीफें किस तरह दूर हो सकती हैं और उनके कार्य के लिए सुविधाएं किस तरह प्रस्तुत की जा सकती हैं। इसी विचार में से बाद में गांधी-सेवा-संघ की स्थापना हुई।

जमनालालजी के जिस विशेष गुण का मेरे मन पर गहरा असर पड़ा, वह है कार्यकर्ताओं के प्रति उनकी आस्था। १९३१ के गांधी-इर्विन-समझौते के बाद की बात है। देश में चारों तरफ एक तरह से उल्लास, उत्साह और जोश की लहर-सी उठ रही थी। कांग्रेस की जीत हुई हमारा आन्दोलन सफल हो गया। इसी खुशी में लोग मगन थे। लेकिन जमनालालजी को यह फिकर थी कि आन्दोलन की वजह से कितने कार्यकर्ता बीमार हो गए हैं? सरकार की दमन-नीति के प्रहार से कितनी संस्थाएं नष्ट हो गई हैं? मार-पीट और गोलाबारी की बदौलत कितने आदमी अपंग और अपाहिज हो गए हैं?उन सबसे मिलना चाहिए। उन्हें दिलासा देकर उनकी मदद करनी चाहिए। गुजरात, बम्बई और वर्धा के आसपास के कार्यकर्ताओं से मिलने के बाद उन्होंने बंगाल आने का विचार किया। मुझे पत्र लिखा, 'फलां तारीख को पहुंच रहा हूँ। डाक्टर सुरेश बनर्जी और डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष से, जो अभय आश्रम के सभापति और मंत्री है, मिलना है। सुरेश बाबू को जेल में टी० बी० हो गई है, उनसे मिलने के लिए कुमिल्ला चलना है। दूसरे कार्यकर्ताओं से भी मिलना है। तुम्हें साथ चलना होगा।'

वह कलकत्ते आए। यहां के लोगों से मिले। जिन मारवाड़ी युवकों ने आन्दोलन में भाग लिया था, उनसे वह बहुत प्रेम से मिले। उन्हें इस बात की विशेष चाह थी कि मारवाड़ी-समाज के लोग देश-सेवा में ज्यादा से ज्यादा हिस्सा लें। वे कोरे व्यापारी ही न बने रहें। जमनालालजी युवकों को बराबर यह प्रेरणा देते रहे।

हम डा० सुरेश बनर्जी से मिलने कुमिल्ला गये। सुरेशबाबू को तो प्लास्टर आफ पैरिस में सुला रखा गया था। उठना बैठना तो दूर, वह करवट भी नहीं बदल सकते थे। जमनालालजी सीधे उनके पास गए और उसी हालत में उनके गले लिपट गए। सुरेश बाबू बोले, "जमनालालजी मैं क्या कहूं! आप इतनी दूर से खासकर मुझ से मिलने आये और जिस प्रेम से मुझे गले लगाया, उससे तो बीमारी दूर हुई सी मालूम होती है। मैं अपने में एक नया बल और स्फूर्ति अनुभव करता हूँ।"

जमनालालजी कार्यकर्ताओं की तकलीफ समझ सकते थे। उनके त्याग और देश-प्रेम की कद्र करते थे। वह कार्यकर्ताओं के प्रशंसक ही नहीं, बल्कि उनके भक्त थे। वह जब उनकी सहायता करते थे तो यह नहीं मानते थे कि मैंने

कोई एहसान किया है, बल्कि यह मानते थे कि ऐसे पुण्यवान व्यक्तियों की सेवा का सुअवसर मुझे मिला, यह मेरा अहोभाग्य है । उनकी निगाह में कार्यकर्ताओं का स्थान बहुत ऊँचा था । वह उनको अपने घर के लोगों से ज्यादा प्रेम करते थे । अपने साथ काम करने वाले या अपने सम्पर्क में आने वाले देशसेवकों के दिल में अपने बर्ताव से, अपनी भावना से और अपने कामों से उन्होंने यह विश्वास पैदा कर दिया था कि यदि किसी कार्यकर्ता को कोई शारीरिक, आर्थिक, पारिवारिक या सामाजिक तकलीफ हो, तो जमनालालजी उसकी हर तरह से मदद करेंगे । और यही कारण है कि जमनालालजी के चले जाने से हजारों लोगों ने यह अनुभव किया कि उनका एक जबरदस्त सहारा जाता रहा । कुमिल्ला में ही मैंने जमनालालजी से पूछा कि आप डाक्टर सुरेश बनर्जी से मिलने इतनी दूर से क्यों आये ? यद्यपि मैं सुरेशबाबू और प्रफुल्लबाबू का परिचय १९३० की जेल में ही प्राप्त कर चुका था, तो भी इनकी संस्थाओं से मेरा सम्बन्ध नहीं था । जमनालालजी ने वहां के कार्यकर्ताओं तथा अभय आश्रम के आजीवन सदस्यों के बारे में जो कुछ वहां बताया गया, वह अद्भुत था । उनका चरित्र इतना उज्ज्वल था, इतना त्यागमय था कि आज भी वह दृश्य मेरी आंखों के सामने से नहीं हटता ।

थोड़े में उनके कहने का आशय यह था कि यह संस्था १९२१ के आन्दोलन के बाद स्थापित हुई । डा० सुरेश बनर्जी और डा० प्रफुल्ल घोष ने उसकी स्थापना की । इसके उनतीस आजीवन सदस्य हैं, जिनमें से अट्ठाईस अविवाहित हैं । देश के आजाद होने के पहले विवाह न करने का उनका प्रण है । जो कुंवारे हैं, वे केवल अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए पन्द्रह रुपये मासिक लेते हैं । इसमें भोजन, वस्त्र, डाक तथा अन्य खर्च जो उनका अपना खर्च कहा जा सकता है, शामिल है । एक सदस्य, जो विवाहित हैं, वह पचास रुपया लेते हैं । वह एक कालेज में एक अच्छे प्रोफेसर थे । वेतन भी अच्छा पाते थे । सुरेशबाबू और प्रफुल्लबाबू तो हजार-हजार, आठ-आठ सौ की सरकारी नौकरियां छोड़कर संस्था में आये हैं। अन्य सभी सदस्य डाक्टर, वकील या वैज्ञानिक हैं और विश्वविद्यालयों की उच्च परीक्षाएं पास की हैं । डा० नृपेन बोस, जो एक अच्छे डाक्टर हैं आश्रम के दवाखाने और अस्पताल में वहां के एक सौ दस कार्यकर्ताओं की सेवा करते हैं। उसके बाद डाक्टरी का पेशा करते हैं, जिसमें करीब बारह सौ रुपया मासिक की आमदनी होती है । वह सब आश्रम को ही जाती है । वह आश्रम के सदस्यों का नियत वेतन केवल पन्द्रह रुपया ही लेते हैं ।

जमनालालजी बोले, "[illegible], अगर ऐसे लोगों से मिलने या उनके दर्शन करने न आऊं तो किससे मिलने आऊं ? यही लोग तो आज गांधीजी की भावना और विचारों के अनुसार उनके कामों को चला रहे हैं । तुम्हारे बंगाल में आज जो खादी का काम हो रहा है, इस आन्दोलन में जितना कुछ काम हो सका है,

वह इन सबकी या ऐसे ही दूसरे लोगों की मेहनत का फल है ।"

इसी तरह वह दूसरी जगह के कार्यकर्ताओं से, जिन्हें उस आन्दोलन में तकलीफ हुई थी, उन सबसे मिलने गए । श्रीहट्ट के श्री धीरेन्द्रनाथ दास तथा ढाका की आशालता सेन के बारे में सुना था कि उन्हें बड़ी तकलीफ सहनी पड़ी । आशालता का आश्रम जला दिया गया था । धीरेन्द्रबाबू पर पुलिस की लाठियों की बहुत मार पड़ी थी । उन्हें तुरन्त तार देकर बुलाया। उनसे बड़े प्रेम और आदर से मिले और उनके आश्रम के लिए रूपयों का इन्तजाम करने का भार मुझपर सौपा ।

ऐसे ऐसे न मालूम कितने उदाहरण आज मेरी आंखो के सामने नाच रहे हैं। उनके परिवार की बातें, उनकी व्यक्तिगत बातें, उनका रहन-सहन, तौर-तरीका, कर्मनिष्ठा, त्याग, जानकीबहन के साथ उनका सम्बन्ध, वर्धा में आने वाले हजारों मेहमानों की आवभगत, आत्मीयता आदि, उनके जीवन के सभी पहलुओं पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है ।

एक बार नागपुर जेल में वह बीमार हुए और अवधि से पहले छोड़ दिये गए, तो स्वभावतः उनसे मिलने की इच्छा हुई । पर मैं कभी उनसे बिना पूछे या बिना बुलाये उनके पास नहीं गया क्योंकि वह बराबर हर बार याद कर लिया करते थे । तो भी आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक के पहले मैं उनके दर्शन नहीं कर सका । जनवरी में जब मैं वर्धा पहुंचा, तो वह सामने ही मिले। उन्हें इतना दुबला-पतला पहले नहीं देखा था । उनके शरीर की हालत देखकर मै सहम गया। मैने कहा, "आप तो बहुत कमजोर हो गए है ।" उन्होंने कहा, "कमजोर नहीं, दुबला हो गया हूँ । कमजोर तो दूर, मैं पहले से भी ज्यादा शक्ति महसूस करता हूं ।"

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक के बाद पूरे बीस दिन में उनके पास रहा । गांधीजी की आज्ञा से जमनालालजी ने गो-सेवा-संघ का काम अपने ऊपर लिया । उसी समय 'गोपुरी' का नामकरण हुआ और यहीं एक टीले पर एक सुन्दर घास-फूस की झोपड़ी में वह रहने लगे । मेरा अधिक समय उनके साथ ही बीतता था । मित्रवर महाबीर प्रसादजी पोद्दार भी हम लोगों के साथ सोते थे । कई तरह की बातें होती रहतीं ।

एक दिन कुछ जोर की वर्षा होने लगी । मैंने कहा कि झोपड़ी में तो बौछार आयेगी । शायद पानी चूने भी लगेगा । उन्होंने मारवाड़ी बोली में कहा, "मैं तो जाट जन्मा था और जाट ही मरना चाहता हूँ । मुझे वर्षा का क्या डर है ! यहां तो तुम जैसे नवाबों को तकलीफ हो सकती है ।"(मुझे वह मजाक में नवाब कहा करते थे ।)

मुझे क्या पता था कि पांच-दस दिन में ही यह निधि यों लुट जाएगी! इन बीस दिनों में कितनी बातें हुईं । हम लोग चार बजे से पहले उठ जाते थे । प्रार्थना

के बाद आपस की चर्चा होती थी, जिसमें अपनी-अपनी गलतियां सोची जाती थीं। उन्होंने कई बातें बताईं, जिनका वर्णन इस समय नहीं किया जा सकता। मैंने पोद्दारजी से कहा, "पोद्दारजी ! जमनालालजी में परिवर्तन मालूम पड़ता है। अब वह निरन्तर अन्तर्मुख होकर आत्म-निरीक्षण में रत रहते हैं। महाबीरप्रसादजी बोले, "सीताराम! क्या कहूं, इनके प्रति मेरी श्रद्धा तो वेग से बढ़ रही है।" हमें क्या मालूम था कि वह इतनी जल्दी से इस तरह अचानक हम लोगो से विदा हो जायेंगे ! मैं और पोद्दारजी पांच फरवरी को ही तो वर्धा से गये थे। यदि उनके कुछ भी तकलीफ होती, हमें ज़रा-सा भी अन्देशा होता, तो हम क्यों इस तरह अलग रह जाते ?

पर जमनालालजी का तो कहना था कि मैं किसी की भी सेवा लिये बिना मरना चाहता हूँ। मेरे एक घनिष्ठ मित्र की जब हृदय-गति रुकने से मृत्यु हो गई थी, उस वक्त जमनालालजी ने मुझे लिखा था, "ऐसी मृत्यु तो भाग्यशाली व्यक्तियों की होती है। वह ईश्वर की कृपा का लक्षण है। आदमी इस कमरे में मरे, तो बगल के कमरेवाले को बाद में पता चले, ऐसी मृत्यु होनी चाहिए।"

जमनालाल जी की मुराद पूरी हुई। उनके जैसी मृत्यु तो सचमुच ईश्वर की कृपा का ही लक्षण है। वह तो अमर हो गये। हजारों हृदय में उनकी स्मृतियां सदा हरी-भरी रहेंगी।

जमनालालजी बीस वर्ष पहले से कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर थे तथा उन्होने देश की बड़ी-बड़ी संस्थाओं का – जैसे चर्खा-संघ, गांधी सेवा-संघ आदि का –संगठन और संचालन किया। ये बातें जमनालालजी की महत्ता की सूचक हो सकती हैं पर उनकी सच्ची महत्ता का पता तो उनके नजदीक जाने पर ही मिल सकता था और उनका प्रेमी-हृदय, उनकी विशालता, उनकी कार्य-शक्ति तथा विचार और आचार की एकता का पता तो उनको नजदीक से देखने से ही मिल सकता था। एक दिन की बात है। वर्धा के गांधी-चौक में सभा थी। जमनालालजी सभापति थे। जानकीबहन ने भी व्याख्यान दिया और सभापतिजी को तो देना ही था। लौटते समय रास्ते में मैंने कहा, "आपसे तो जानकीबहन का व्याख्यान ज्यादा अच्छा हुआ।" वह बोले, "यह तो ठीक है, तुम्हारा और उनका तो अच्छा होगा ही। मुझे तो इस बात की चिन्ता थी कि मैं कोई ऐसी बात न कह जाऊं जिसको जीवन में उतार नहीं सकूं या कर नहीं पाऊं; और तुम लोग शायद यह सोचते होंगे कि हमारा व्याख्यान सुनने वालों को अच्छा लगना चाहिए।" वह हर समय यह सोचते थे कि मेरा जीवन, बाहरी और भीतरी, एक हो। वह समाज-सुधार की वही बातें कहते, जो वह खुद अपने घर में करते। जानकी बहन के पर्दा छोड़ने के पहले उन्होंने पर्दे के विरुद्ध कुछ नहीं कहा। जानकीबहन तथा अपने परिवार के अन्य लोगों की राष्ट्रीय जीवन की तैयारी कराने के लिए वह पूज्य गांधीजी के पास

साबरमती के सत्याग्रह-आश्रम में सपरिवार जाकर रहे और बड़ी लड़की कमला का विवाह आश्रम में ही किया। सन् १९२७ में उन्होंने अपना प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर हरिजनों के लिए खोला। वह क्रान्तिकारी मनोवृत्ति के आदमी थे; पर वह उस क्रान्ति को अपने घर से, अपने जीवन से शुरू करते थे। सचमुच उन्होंने अपने जीवन में क्रान्ति-मूलक सुधार किए थे।

वह उग्र थे अपने प्रति और कोमल थे दूसरों के प्रति। वह अपनी छोटी-सी कमजोरी को खोजते थे और उसको हटाने का जोरदार प्रयत्न करते थे। पर दूसरों के गुणों को ही देखते थे उनके गुणों की प्रशंसा करते थे। उन्होंने किसी के अवगुणों को देखा तो उनकी अवहेलना की। मैंने उनके मुंह से किसी की निन्दा नहीं सुनी। वह केवल बड़ी-बड़ी बातों में ही नहीं उलझते थे। वह तो हर चीज में आनन्द लेते थे। उनके पास कितने आदमी आते और उन सबके नाना प्रकार के सवाल रहते, जिनमें से कई-कई तो बहुत ही जटिल हुआ करते, जिनका सुलझाना तो दूर, सुनने से घबराहट होती; पर वह अपने सहज धीरज से उन्हें सुनते और उन आने वाले सज्जनों की सहायता करते। यह सहायता केवल आर्थिक नहीं, बहुत तरह की होती थी। उन्होंने न मालूम कितने परिवारों को डूबने से बचाया है; कितने कार्यकर्ताओं की कितनी समस्याएं हल की हैं। आर्थिक समस्या तो रुपये देकर हल की जा सकती है, देने वाला उदार और भला कहला सकता है, पर कहीं स्त्री-पुरूष का झगड़ा है, कहीं सैद्धान्तिक कारणों से परस्पर झगड़ा है, तो कहीं बाप-बेटी में विवाह की समस्या या अन्य चीज को लेकर ठीक नहीं हो रहा है। साबरमती-आश्रम टूटने के पहले महात्माजी कांग्रेस के समय से पन्द्रह-बीस दिन पहले वर्धा-सत्याग्रह आश्रम में आ जाया करते थे और वहीं से कांग्रेस में जाते। उन दिनों वहां अन्य कार्यकर्ता भी आ जाते। गांधी-सेवा-संघ, चर्खा-संघ आदि की मीटिंगें भी हो जातीं। इतने बड़े सत्संग के लालच में वर्धा चला जाता या जमनालालजी बुला लेते थे। सन् १९२९ की लाहौर कांग्रेस के बीस दिन पहले जब मैं वर्धा गया, उस समय की एक घटना है। रात में ग्यारह बजे करीब पन्द्रह-सोलह वर्ष की एक लड़की उनके पास आई। पूज्य बापूजी ने उसे भेजा था। सुबह की गाड़ी से लड़की के माता-पिता भी आये। बात यह थी कि माता-पिता लड़की का विवाह करना चाहते थे। लड़की विवाह नहीं करना चाहती थी। वह महात्माजी का 'नवजीवन' तथा अन्य पुस्तके पढ़ा करती और सेवा करना या पढ़ना चाहती थी। माता-पिता जबर्दस्ती विवाह की बातें करने लगे, तो लड़की गांधीजी के पास भाग आयी। जवान लड़की, रात में गांधीजी उसे कहां रखते और फिर यह समस्या तो आखिर जमनालालजी को ही हल करनी थी। इसलिए महात्माजी ने रात में ही उसे जमनालालजी के पास भेज दिया। लड़की के माता-पिता सख्त नाराज थे। वे गुस्से में भरे पड़े थे। लड़की कहती थी, "मैं आपके

घर नहीं जाऊंगी, मैं गांधीजी के पास आश्रम में रहूंगी और अपना सारा जीवन वहीं बिताऊंगी।" पर गांधीजी इस तरह माता-पिता को नाराज करके लड़की को कैसे रखें! मामला बहुत जटिल था, पर जमनालालजी ने इस मामले को ऐसी चतुराई से सुलझाया कि लड़की के माता-पिता बाग-बाग हो गये और स्वयं आकर लड़की को साबरमती-आश्रम में भर्ती कर आये। लड़की वहां कई वर्षों रही। १९३० के आन्दोलन में उसने खूब काम किया। जेल गई, आश्रम के नियमों का अच्छी तरह से पालन किया। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं। जमनालालजी ने अपने स्नेह-भरे हृदय से कई लोगों को मोह लिया और उनकी बुराई को भलाई में बदल दिया। जिनका पतन होनेवाला था, उनका उत्थान हो गया, वे सच्चे देश-सेवक बन गये। ऐसे कितने ही काम जमनालालजी से होते रहते थे।

गांधीजी के विचारों को जमनालालजी ने बड़ी श्रद्धा से अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। वह बराबर अन्तर्मुख होकर सोचा करते थे। कुछ समय पहले की बात है। वर्धा में चक्षु-सुधार यज्ञ था। जमनालालजी इसे अपने सीधे-सादे शब्दों में 'आंखों का मेला' कहते थे, जिससे वे देहाती लोग, जिनकी आंखें ठीक करनी थी और जिनकी चिन्ता उनको थी, इस यज्ञ का मतलब समझ सकें। इस समय एक घटना हुई। मैंने, भाई महाबीरप्रसादजी पोद्दार और श्रीरामकुमारजी भुवालका ने इस विषय में जमनालालजी से कुछ बातें कहीं। उस समय तो वह कुछ नहीं बोले। गोपुरी की झोपड़ी में हम लोगों ने सुबह चार बजे प्रार्थना की। इसके बाद बराबर कुछ आपसी चर्चा होती, तो जमनालालजी पोद्दारजी से और मुझसे कहा करते कि आप लोगों की जो विचार-धारा है, वह ठीक नहीं है। सार्वजनिक सेवक को यदि सेवा करनी है और उसे अपना सेवा-क्षेत्र बढ़ाना है, तो उसको शक्तिशाली नये-नये सेवकों को लाना होगा और उन सेवकों की खोज करनी होगी, जो किसी भी अच्छे इल्म की ताकत रखते हैं। उन ताकत वाले लोगों में चाहे कितने भी अवगुण हों, लेकिन सेवक को तो उन्हें प्यार और आदर से अपने सेवा-क्षेत्र की ओर आकर्षित करना होगा। उनके अवगुणों की वजह से हमें उनसे नाराज नहीं होना चाहिए। हमारे दिल में उनकी भलाई करने की भावना हो और उनके द्वारा देश-समाज की जो भी सेवा बन सके, वह लेनी हो, तो उनको आदर से और प्रेम से ही अपनी ओर खींच सकेंगे। निन्दा करके तो हम उन्हें खो भले ही दें। उस बात का खुलासा लिखा नहीं जा सकता, क्योंकि वह व्यक्तिगत बात थी, पर सचमुच हम पर उनकी बात का बहुत असर हुआ था और हमने उसे अच्छी तरह से सोचा तो मालूम हुआ कि दरअसल हमारी भूल थी। वह हर चीज में गहरे उतरते थे और यही कारण है कि वह इतनी सेवा कर सके और हजारों के हृदय का प्यार पा सके।

५ : महादेवभाई

पूज्य गांधीजी के हिन्दुस्तान में आने के बाद शायद सबसे पुराने और सबसे ज्यादा उनके साथ रहनेवाले श्री महादेवभाई थे। इस विषय में एक मनोरंजक घटना मुझे याद आ रही है। सन् १९३७ के दिसम्बर की बात है। गांधीजी की तबीयत खराब थी–यानी ब्लड-प्रेशर की शिकायत दूर नहीं हो रही थी। सेवाग्राम की सर्दी उन्हें बर्दाश्त नहीं हो रही थी, पर वह सेवाग्राम छोड़ना नहीं चाहते थे। डा. जीवराज मेहता ने उन्हें किसी तरह बम्बई आने के लिए राजी किया, और वह जुहू पर श्री रामेश्वरजी बिड़ला के मकान में आकर रहने लगे। बगल में श्री जमनालालजी की झोंपड़ी थी, जिसमें हम लोग रहते थे। श्री पेरिनबेन कैप्टन (दादाभाई नौरोजी की पोती) ने एक दिन गांधीजी से कहा, "बापूजी, आपको एक मजा दिखाऊं, यदि आप आज्ञा दें।" गांधीजी ने कहा, "हां-हां, जरूर दिखाओ।" वह बोलीं, "भोलानाथ नाम का एक बैल आया है, वह आपसे मिलना चाहता है।" बापूजी ने कहा, "जरूर मिलाओ।"

गांधीजी जहां रहते थे, वहीं वर्किंग कमेटी की मीटिंग उनके साथ-साथ चलती थी। इसलिए उन दिनों भी वर्किंग कमेटी की मीटिंग चल रही थी। पेरिनबेन ने पूछा, "भोलानाथ को किस समय लाऊं?" बापूजी बोले, "वर्किंग कमेटी की मीटिंग खत्म होने के बाद चार बजे।" पेरिनबेन ने कहा कि तब तो सबसे मुलाकात हो जायगी। भोलानाथ आयेगा, इसकी खबर तुरंत हमारी झोंपड़ी में भी आ गई। गांधीजी से उसके मिलने का समय चार बजे का था, पर उसकी सवारी तो दो बजे ही पहुंच गई। जब हम लोगों को मालूम हुआ कि भोलानाथ आ रहा है, तो मैं जानकी बहन के साथ उसे देखने गया। एक सुन्दर-सा बैल था, जो कद का थोड़ा-सा नाटा, रंग सफेद, छोटे-छोटे सींग, चमकीली आंखें, कौड़ियों का गलपटिया और छोटी घण्टियों का हार पहने बड़े ठाठ से मोटर-लारी में आ रहा था। साथ में था उसका मालिक तथा एक और आदमी। हम लोग कोई दस-पन्द्रह आदमी जुट गये, जिनमें एक महादेवभाई भी थे। सबसे ज्यादा विनोद तो महादेवभाई ने ही किया भोलानाथ से, क्योंकि वह स्वभाव से विनोदी थे। पहले-पहल भोलानाथ की हम लोगों से ही मुलाकात हुई। हमारी उसकी क्या बातें हुईं, उन्हें लिख कर पाठकों का समय लेना उचित नहीं होगा।

चार बजे गांधीजी के साथ वर्किंग कमेटी के सभी उपस्थित सदस्य भोलानाथ का विनोद देखने के लिए बाहर आये। सबसे पहले श्रीशरत्‌बाबू ने भोलानाथ से प्रश्न किया कि भोलानाथ, कांग्रेस सभापति कौन है? भोलानाथ ने अपना सींग

जवाहरलालजी के लगाया । सभी लोग जोर से हँसने लगे । ऐसे ही कई प्रश्न भोलानाथ से कभी किसीने, तो कभी किसी ने किये, जिनका वह ठीक-ठीक उत्तर देता रहा । गांधीजी ने भोलानाथ से पूछा कि बताओ भोलानाथ, मेरे सबसे पुराने साथी यहां कौन हैं ? भोलानाथ मौलानासाहब (अबुल कलाम आजाद) के पास गया । बापूजी ने कहा कि भोलानाथ, अबकी बार तो तुमने भूल की । मेरा सबसे पुराना साथी तो महादेव है ।

महादेवभाई तो उनके ऐसे ही साथी थे । बापूजी को बहुत लोग मिले, जिनमें महादेवभाई का अपना खास स्थान था । बापूजी को महादेवभाई पर अपने किसी भी काम का भार सौंपने में झिझक नहीं होती थी । बापूजी का काम करना सहज नहीं था । उनके काम करनेवाले को उनकी भावनाओं, उनके विचारों और उनके काम करने की पद्धति का पूरा-पूरा ज्ञान न हो, तो वह बापूजी को सन्तोष नहीं करा सकता था । महादेवभाई इतने वर्षों के सहवास से इस काम में ऐसे पटु हो गये थे कि उनके जैसे वही थे । फिर भी बहुत बार बापूजी की फटकार उन्हें भी सुनने पड़ती थी । गांधीजी लिखने में, बोलने में और प्रत्येक कामों में बहुत संयम से काम लेते थे । उनके मन्त्री को भी वैसा ही होना चाहिए था । वह केवल उनके लिखने-पढ़ने का काम ही नहीं करते थे । दरअसल गांधीजी के पास लिखने-पढ़नेका काम तो गौण काम था, असल काम तो उनके पास अपना और साथियों का विकास करना ही था । महादेवभाई उनके ऐसे सेक्रेटरी थे, हमाल (बोझा ढोनेवाले) से लेकर उनके बड़े से बड़े बौद्धिक काम खूबी के साथ सम्भाला करते थे । गांधीजी अपनी भाषा में कामा या फुलस्टाप की भूल भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे । पर वह अपने बड़े-बड़े मजमून भी महादेवभाई पर छोड़ देते थे। महादेवभाई की भाषा और शैली नो ऐसी हो गई थी कि कई बार लोग समझ ही नहीं पाते थे कि महादेवभाई का लिखा है या गांधीजी का । बापूजी के व्याख्यानों को महादेवभाई जिस तरह लिख लिया करते थे, उनको पढ़ने से ऐसा मालूम होता कि गांधीजी बोल रहे हैं ।

८ अगस्त १९४२ को रात में पूज्य बापूजी कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में व्याख्यान दे रहे थे । बापूजी का यह व्याख्यान कितना महत्वपूर्ण, कितना प्रभावशाली, कितना जिम्मेदारी से पूर्ण था, उसका ठीक-ठीक प्रकाशित होना भी उतना ही महत्त्व रखता था । इस काम को महादेवभाई से ज्यादा अच्छा तो कोई कर ही नहीं सकता था। महादेव भाई बैठे-बैठे नोट ले रहे थे । पर उनको वहां सुभीता नहीं था । कारण, वह बापूजी के पीछे बैठे थे । इसलिए वह जल्दी से मंच से नीचे उतरकर मेरे पास मेज पर आ बैठे और नोट लेने लगे । मैं ध्यानपूर्वक गांधीजी का व्याख्यान सुन रहा था, पर अपने मन में सोच रहा था कि जब 'हरिजन' में महादेवभाई का लिखा नोट छपेगा, इसपर अच्छी तरह विचार करने का मौका मिलेगा । लेकिन

संयोग दूसरा ही था । सुबह ही सब गिरफ्तार कर लिए गए ।

१६ अगस्त को जब मैंने प्रेसीडेन्सी जेल में सुना कि महादेवभाई अब इस नश्वर लोक को छोड़कर परलोक चले गये तो मुझे विश्वास नहीं हुआ।

महादेवभाई की चर्चा होते ही आज भी अनेक स्मृतियां जाग्रत हो उठती हैं। वर्षों से मैं महादेवभाई को अच्छी तरह से जानता था । उनका लम्बा कद, ऊंचा ललाट, गौर वर्ण, प्रतिभाशाली मस्तिष्क और स्नेह-भरा स्वभाव कौन भूल सकता है ?

६ : किशोरलालभाई

पूज्य किशोरलालभाई के अवसान से एक ऐसी वेदना का अनुभव हो रहा है, जो चिरस्थाई-सी लगती है । आज किशोरलाल भाई जितने आत्मीय, जितने शान्त, जितने चिन्तक, जितने बुद्धिमान और जितने श्रद्धेय लग रहे हैं, उतने अपने जीवन काल में शायद कभी नहीं लगते थे । यह स्वाभाविक ही है कि जब मनुष्य नहीं रहता है तब उसका अभाव उसकी खूबियों को उघाड़कर सामने रख देता है । पूज्य गांधीजी के कुटुम्ब के जो असख्य सदस्य देश के कोने-कोने में बिखरे हुए है, वे एक अजीब सी दु.ख-भरी निराशा की स्थिति का अनुभव करते है । ऐसे लोगों के लिए किशोरलालभाई एक सहारा थे, एक पथ-प्रदर्शक थे, एक मित्र थे और थे एक सच्चे सलाहकार ।

किशोरलालभाई के साथ क्या बातचीत करते समय और क्या पत्र-व्यवहार करते समय, ऐसा लगता था कि किसी अपने ही घर के आदमी के साथ बातें हो रही है । अपने पत्रों में किशोरलालभाई साधारण सबंधों को भी जिस आत्मीयता के साथ याद करते थे, वह मानों उनकी एक विरल हार्दिकता थी । उनका मन और मस्तिष्क जैसे हर बात मे अपनी एक विशिष्टता और निरालापन लिये था । उनके ठिगने कद और कृश शरीर पर एक बड़ा-सा सिर शरीर के अनुपात से कुछ अजीब सा लगता था, पर इस बड़े मस्तिष्क में जो संयत, सुलझे हुए, परिष्कृत और परिपक्व विचार रहते थे वे किशोरलालभाई की असाधारण मेधाशक्ति के परिचायक थे । यदि हम किशोरलालभाई के जीवन की साधना, तपस्या, सरलता आदि को एक बार अलग रखकर केवल उनकी निर्मल बुद्धि और स्वच्छ विचारों का ही पारायण करें तो भी उनका व्यक्तित्व विरल ही ठहरता है । उनकी जैसी निर्मल बुद्धि के आदमी खोजने पर भी शायद मुश्किल से ही मिलेंगे ।

एक बार पूज्य बापूजी ने मालीकंदा गांधी सेवा संघ की बैठक में कहा था कि किशोरलाल भाई को कुदरत ने जो कुशाग्र और निर्मल बुद्धि दी है वह कम लोगों को ही मिलती है। बापूजी जब कोई बड़ा कदम उठाने का विचार करते तो वैसा करने से पहले किशोरलालभाई की राय जरूर लिया करते थे और उनकी राय को बौद्धिक विचार की दृष्टि से सबसे ज्यादा महत्त्व की मानते थे। बापूजी की कई बातों से किशोरलालभाई का गहरा मतभेद रहा और उन्होंने सदा केवल अपनी आत्मा की ईमानदारी का पक्ष ही बापूजी के सामने रखा है। किशोरलालभाई का यह स्वभाव हो गया कि जब तक उनका मानस किसी विचार अथवा कार्यपद्धति को पूरी तरह अंगीकार नहीं करता था तब तक वह उसे स्वीकार नहीं करते थे। ऐसे अवसर उनके जीवन में अनेक बार आये थे।

किशोरलालभाई के बड़े भाई श्री नानाभाई, उनकी भाभी श्रीमती विजयलक्ष्मी तथा उनकी पुत्री ताराबहन और किशोरलालभाई की पत्नी श्रीमती गोमतीबहन को लेकर जो मशरूवाला परिवार था, उसे गुजरात का एक विशिष्ट और सुसंस्कृत परिवार कहा जा सकता है। इस परिवार के सब-के सब लोग त्यागमय, सेवाव्रती, विनम्र और प्रखर बुद्धि के रहे हैं। इस परिवार के सभी सदस्यों ने देश के लिए अपने सर्वस्व की आहुति दे दी। इसी परिवार के सदस्य के नाते किशोरलालभाई ने देश के लिए जो कुछ किया और दिया, उसपर सहज ही गर्व और गौरव का बोध होता है। जवानी के निकट पहुंचने के बाद ही किशोरलालभाई गांधीजी के साथ चले आये थे। कानून की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने वकालत शुरू तो जरूर की, पर वहां उनका मन रमा नहीं और केवल पच्चीस वर्ष की अवस्था में ही सब कुछ त्यागकर वह बापूजी के पास चले आये और उन्हीं की सदारत में सारा जीवन देश और समाज की सेवा में लगा दिया। बापूजी की सन्त भावना का प्रतिनिधित्व विनोबाजी करते थे, सांस्कृतिक और कला भावना का प्रतिनिधित्व काकासाहब करते हैं, पर बापू के बौद्धिक विचारों और भावनाओं का प्रतिनिधित्व तो एकमात्र किशोरलालभाई ही करते थे। बापूजी की हत्या के बाद उनके द्वारा संस्थापित हरिजन पत्रों का जिस योग्यता, जिम्मेदारी और निर्भीकता के साथ उन्होंने सम्पादन किया और गांधीवादी विचारधारा की पूरी-पूरी रक्षा की वह किशोरलालभाई जैसे साधक और चिंतक का ही काम था।

अस्वस्थ और दुर्बल शरीर के रहते हुए भी किशोरलालभाई जीवन की अन्तिम घड़ी तक बराबर काम करते रहे। पूज्य जाजूजी बम्बई जा रहे थे, जिनके हाथ उन्होंने बम्बई के दो सज्जनों के नाम दो पत्र लिखवा कर दिये। पर दुर्भाग्यवश जब जाजूजी वर्धा स्टेशन पर पहुंचे तब तक किशोरलालभाई इस लोक से कूच कर गये। इसके कुछ ही घण्टे पहले उन्होंने बाहर से आये दो सज्जनों से मुलाकात भी की और उनकी बातें सुनकर अपनी राय दी तथा 'हरिजन' के लिए लेख भी

लिखवाया जिसके अन्तिम शब्द ध्यान देने लायक थे "भारत के जागे हुए देहात अब किसी को अपना खून ज्यादा दिन तक नहीं पीने देंगे ।" ये किशोरलालभाई के अन्तिम शब्द थे, जिनसे प्रकट है कि उनके जागरूक और चिन्तनशील मानस में अन्तिम क्षण तक किस तरह की प्रतिक्रिया हो रही थी । इस प्रकार लगातार बीमार रहने के बावजूद पूर्णरूप से सेवा, त्याग और संयम का जीवन जीते हुए उन्होंने अपना शरीर छोड़ा । आज वह अचानक हमारे बीच से चले गये हैं । उसका अभाव ऐसा है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती । अपने कार्यों और साहित्य के रूप में किशोरलालभाई उन लोगों के लिए, जो सत्य, न्याय और कर्तव्यनिष्ठा का जीवन जीना चाहते हैं, एक बहुत बड़ी विरासत छोड़ गये हैं ।

किशोरलालभाई गुजराती के बड़े ही उच्चकोटि के लेखक थे । गांधीजी के विचारों के तो वह एक अद्वितीय और सही भाष्यकार माने जाते हैं । गांधीजी के जीवित रहते भी न सिर्फ किशोरलालभाई उनको समझाने में सबसे आगे थे, बल्कि कई बार तो गांधीजी की उपस्थिति में भी उनके विचारों को भलीभांति समझाने का काम किशोरलालभाई को ही करना पड़ा है ।

'गांधी-विचार दोहन' में उन्होने गांधीजी के विचारों का बड़ा ही सरल और सुबोध विवेचन किया है । (यह पुस्तक गांधीजी के जीवनकाल में बहुत पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी और स्वयं गांधीजी ने इसे खूब पसन्द किया था) गांधीजी के सभी बुनियादी सूत्रों और आदर्शों को लेकर किशोरलालभाई ने विस्तारपूर्वक व्याख्या की है । गांधीजी के विचारों और उद्देश्यो की तह तक उनकी निर्मल बुद्धि और पैनी दृष्टि किस सुगमता के साथ जा सकती थी और कितनी गहराई से वह उन पर विचार करते थे, यह विवेचन को पढ़ने पर ही मालूम होता है ।

७ : काकासाहब कालेलकर

पूज्य काकासाहब का जीवन सदा सार्वजनिक जीवन रहा है । शिक्षा समाप्त करके वह विश्वविद्यालय से बाहर आये, तब से उनका जीवन सदा जन कल्याण की भावना से प्रेरित रहा । तरुणाई के उषाकाल में वह हिमालय की यात्रा पर नाना प्रकार की भावनाओं से प्रेरित हो निकल पड़े थे । इसके बाद गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की विश्व-प्रेम की भावना और साहित्य-साधना से आकर्षित हो वह विश्वभारती, शांतिनिकेतन आ गये । इस बीच पूज्य गांधीजी दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में सफल होकर स्वदेश लौट आये । गांधीजी भी गुरुदेव और शांतिनिकेतन आश्रम

के प्रति आकर्षित थे। काकासाहब को तो काम करना था। सोचा, गुरुदेव के आश्रम में ही काम करें। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका के अपने साथियों के संग शांतिनिकेतन में आकर रहे और उन्होंने वहां के कामों को देखा।

शान्तिनिकेतन में काकासाहब का गांधीजी से प्रत्यक्ष परिचय हुआ। गांधीजी के विचारों और कामों के बारे में उनके मन में श्रद्धा जगी और वह गांधीजी के साथ हो गए। गांधीजी ने तय किया कि स्वतंत्र आश्रम बनाकर ही काम करना ठीक होगा। तब से काकासाहब गांधीजी के साथ ही रहे। यह शायद १९१६ की बात है। पचास वर्ष से ऊपर का लम्बा समय गुज़र गया, काकासाहब अपनी निष्ठा के साथ गांधीजी के विचारों और कार्यों को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर देश ही नहीं, बिदेशों में भी घूमते रहे हैं। गांधीजी की बातें और उनका जीवन-दर्शन उन्होंने लोगों को समझाया। गांधीजी कहा करते थे "काका और बापा (ठक्कर बापा) के पैरों में चक्कर है।" वह फिरते ही रहते हैं। ठक्कर बापा विदेशों में नहीं गये, पर काकासाहब यूरोप, अमरीका, दक्षिण अफ्रीका, जापान आदि दुनिया के अनेक देशों में गये और गांधीजी की बातें लोगों को समझाईं। काकासाहब का जीवन, ज्ञान और कर्म अत्यन्त व्यापक है।

जिस कुल में उनका जन्म हुआ था, जिन माता-पिता से उन्होंने संस्कार प्राप्त किए थे तथा उस समय महाराष्ट्र का जीवन क्या था, इन सब बातों को उन्होंने 'स्मरण-यात्रा' नाम की अपनी पुस्तक में दिया है। काकासाहब ने अपने बचपन के प्रसंग इतने सत्यनिष्ठ और आत्मीय भाव से लिखे है कि पढ़ते हुए मन तल्लीन हो जाता है। बचपन के बारे में बहुत से लोगों ने लिखा है और अच्छा लिखा है, पर 'स्मरण-यात्रा' और साने गुरुजी की 'श्यामची आई' दो किताबें हैं, जिन्हें पढ़ने पर आदमी डूब जाता है। महाराष्ट्र का आचार-व्यवहार, संस्कृति और जीवन में घुलीमिली भारतीयता आंखों के आगे ऐसी तैरती है कि आंखें बन्द कर पुराने जीवन को लौट जाने की इच्छा होती है। पर समय तो आगे बढ़ता है, पुराने जमाने में लौटा नहीं जा सकता। उसमें जो सहज और मंगलमय हैं, उसे सोच-परख कर संजोया ही जा सकता है। आज इस सहज और मंगलमय को संजोकर रखना और कृत्रिम जीवन से बचना बड़ा मुश्किल है, पर काकासाहब जैसे लोग हमारे बीच हैं जो हमें अपनी मिट्टी की सौंधी महक और गमक को भूलने नहीं देते।

काकासाहब सत्यनिष्ठा के साथ जीवन के इतने लम्बे समय तक एक ही साधना में लगे हुए हैं। यह साधना भारत की सेवा की, लोकमाता की, भारत''गता की, जो चाहें कह लीजिए, सेवा करना है।

सन् १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह में गांधीजी ने सबसे पहले दो सत्याग्रही चुने थे। जवाहरलालजी को राजनैतिक प्रतिनिधि के रूप में और विनोबा को

आध्यात्मिक प्रतिनिधि के रूप में। पर काकासाहब तो उनकी साहित्यिक और कलात्मक प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि ठहरे। जीवन में श्रद्धा से ही सौंदर्य-बोध और कलात्मक प्रवृत्ति बढ़ती है। काकासाहब ने अपने साहित्य में सौंदर्य-बोध का हमें जो दर्शन कराया है, वह अपूर्व है। जीवन का सहज सौंदर्य, उसका आनन्द, उन्होंने हमें बताया है। हमारी नदियों, तीर्थों और संस्कृति का आत्मीय महात्म्य उन्होंने हमें बड़ी सहजता के साथ उजागर किया है। 'हिमालय की यात्रा' इसी सौंदर्य-बोध की अभिव्यक्ति है। प्रेरणाप्रद और सौंदर्यबोध वाले साहित्य की रचना करने वाले सच्चे साहित्यकार हमारे देश में इने-गिने ही हैं। इन इने-गिनों में काकासाहब का विशेष स्थान है। काकासाहब के सम्पर्क में जो लोग आये है, उनके ज्ञान और कार्यों से प्रभावित होकर उनके साथ रहे हैं, वे हमेशा यह अनुभव करते हैं कि किसी विशेष व्यक्ति से हमारा सम्बन्ध है।

काकासाहब संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती और हिन्दी का अच्छे से अच्छा ज्ञान रखते है। उनका हिन्दी गद्य हिन्दी के संकीर्ण समर्थकों को नहीं भा सकता, पर जो रसज्ञ हैं, वे जानते हैं कि उनका हिन्दी गद्य कितना सरस और प्रेमल है। उनकी मातृभाषा मराठी है, पर उन्होंने अपने साहित्य के लिए गुजराती को चुना और अच्छे से अच्छे ग्रंथों से उसके साहित्य-भंडार को भरा है। जबसे बापू ने उनको राष्ट्रभाषा प्रचार का काम सौंपा, तबसे वह हिन्दी में खूब लिखने लगे हैं। काकासाहब के जीवन के अनेक अंगों में पिछले तीस वर्षों से राष्ट्रभाषा का काम प्रमुख रहा है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की तरह काकासाहब के प्रयत्न से पूर्व भारत में राष्ट्रभाषा प्रचार सभा की स्थापना हुई और उसने बंगाल, असम और उड़ीसा में हिन्दी प्रचार का बहुत काम किया। पर बाद में नाना प्रकार के मत-मतान्तरों के कारण काकासाहब इस सभा या राष्ट्रभाषा प्रचार सभा से अलग हो गये और हिन्दुस्तानी के प्रचार का काम पूज्य बापूजी की राय से करने लगे। काकासाहब जो भाषा लिखते हैं, जिस भाषा का प्रचार करते हैं, उसको चाहे कुछ कहें, वह हमारी राष्ट्रभाषा ही है। इतने वर्ष स्वाधीनता का उपभोग करने के बाद भी परायी भाषा के प्रति आसक्ति को देखकर काकासाहब निश्चय ही कुछ क्षणों के लिए दुखित होते हैं, पर मैंने देखा है कि इतनी बड़ी उम्र में भी उनको निराशा छू तक नहीं गई है। पिछले दिनों उन्होंने बातचीत में कहा कि "मैंने सोचा, अब एक ही जगह पर बैठकर लिखने-पढ़ने का काम करूंगा और जिस दिन मेरा जन्मदिन था, उस दिन इस निश्चय की घोषणा करनेवाला था, पर जन्म के दिन अचानक ऐसा लगा कि यह निश्चय क्यों न करूं कि जब तक जीना है तब तक बैठूंगा नहीं, विश्राम नहीं करूंगा। घूमूंगा-फिरूंगा, लिखता रहूंगा, काम करता रहूंगा। मैं आज भी किसी दिन से अपनी जिम्मेदारी कम नहीं मानता, काम करने के दायित्व से डरता नहीं, भागता नहीं। यही मुझे अच्छा लगता है।"

उसी दिन एक सभा में उन्होंने यह सब कहा। नये कार्यकर्ताओं से कहा— आप लोग मामूली खर्च लेकर देश के लिए काम करने के लिए तैयार रहें। काकासाहब से प्रेरित अनेक कार्यकर्ता आज भी कई स्थानों में निष्ठापूर्वक काम कर रहे हैं।

काकासाहब के जीवन में कला, साहित्य और सौंदर्य रमा हुआ है। उनकी भव्य आकृति, साफ-सुथरा रहन-सहन तथा व्यवस्था, सभी चीजें एक कलाविद् के दर्शन कराती हैं। उनके हर काम में सहज सुथरी कला होती है। गांधीजी लिफ़ाफों को काटकर उनपर लिखते थे। उनमें उपयोगिता की वणिक वृत्ति थी, पर काकासाहब इस मामले में बापू से थोड़ा आगे जाते हैं। वह उपयोगिता तक ही सीमित नहीं रहते, उसमें सौंदर्य की चाशनी भी डाल देते हैं। उनमें सौंदर्य-बोध बहुत गहरा है, जो छोटी से छोटी चीज के प्रति महत्व और वात्सल्य अनुभव करने से पैदा हुआ है। उनको संतरा और केला छीलते हुए देखना भी एक अनुभव है। छीलने के ढंग में भी उनकी आंतरिक कोमलता और कलात्मकता छिपी नहीं रहती।

८ : कृष्णदास जाजू

भारतीय समाज में शिक्षा और सुधार का कार्य राजा राममोहनराय से शुरू हुआ। ब्रह्मसमाज की स्थापना को बंगाल में समाज-सुधार का प्रथम प्रयास माना जाता है। इसी प्रकार भारत के अन्यान्य समाजों में समाज-सुधार के आन्दोलन धीरे-धीरे शुरू हुए। वास्तव में ये सुधार केवल समाज-सुधार नहीं थे, उनके पीछे राष्ट्रीय उत्थान की भावना थी, जो अनेक रूपों में परिस्थिति की अनुकूलता-प्रतिकूलता में पल्लवित हो रही थी। इसी संदर्भ में बहुत विलम्ब से मारवाड़ी समाज में भी सुधार की भावना जगी और वह अनेक संघर्षों से गुजरते हुए उन्नत होती गई। इस प्रक्रिया में हम पूज्य कृष्णदासजी जाजू और जमनालालजी को बहुत आदर और श्रद्धा भाव से स्मरण करते हैं। जमनालालजी ने भी प्रथम प्रेरणा जाजूजी के सहवास, सहयोग और एक प्रकार से पथ-प्रदर्शन में प्राप्त की। जमनालालजी से मैंने बहुत पहले अनेक बार सुना कि जाजू जैसे संत पुरुष विरले ही होते हैं। माहेश्वरी समाज में सुधार का आरम्भ करने वाले जाजूजी ही थे। उनकी प्रेरणा से अनेक युवकों ने शिक्षा प्राप्त की और देश-समाज के काम में रस लेने लगे। श्री जाजूजी काम्पटी में वकालत करते थे और सारे बरार में नवयुवकों के प्रेरणा-स्रोत थे। १९२१ में पूज्य गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया, तब उन्होने वकीलों से वकालत और विद्यार्थियों से कालेज छोड़ने को कहा। जाजूजी ने तुरन्त

वकालत छोड़कर सारा समय देश-सेवा में लगाने का निश्चय किया। वकालत करते हुए भी वह प्रामाणिकता से काम करने के कारण बहुत धन नहीं इकट्ठा कर सके। उनका जीवन इतना नियमित, सरल, सादा और मितव्ययितापूर्ण था कि उनको कभी आर्थिक चिन्ता हुई ही नहीं। जितना कुछ होता उसको बहुत किफायतशिआरी के साथ, संतोष के साथ खर्च कर जीवन-यापन करने में वह मेरी निगाह में एक अद्वितीय पुरुष थे। वह कलकत्ता आते तब प्रायः मेरे साथ रहने की कृपा करते। एक दिन कहने लगे, "यह गद्दे आदि बिछाने से क्या लाभ है ? ये साफ नहीं होते, धोये नहीं जा सकते और खर्च भी बहुत होता है। उठाने और बिछाने में दिक्कत आती है। इनसे तो चटाई अच्छी, जो आसानी से बिछाई जा सकती है, उठाई जा सकती है और जगह को साफ-सुथरा रखा जा सकता है। ऐसा लगता है कि व्यर्थ के आडम्बरों में फंसकर हम व्यर्थ समय, शक्ति और धन का अपव्यय करते हैं। गांधीजी के रास्ते चलनेवालों को इन सब चीजों से बचना चाहिए। इसी प्रकार स्नान करने जाते तो अपने कपड़े खुद अपने हाथ से धो लेते। वृद्धावस्था में भी आग्रह करने पर उन्होंने अपने कपड़े किसी दूसरे से नहीं धुलवाये। खाने-पीने, मोटर आदि की सवारी में हमेशा इस बात का ख्याल करते कि कहीं हम मोहवश व्यर्थ की सुख-सुविधा तो नहीं ले रहे हैं। १५ अगस्त १९४७ के बाद पाकिस्तान से शरणार्थी आये तो उन्होंने कहा कि वह शरणार्थियों के काम देखने वाले अधिकारी से मिलना चाहते हैं। मैं उनको अधिकारी के यहां लेकर गया, अधिकारी का नाम मुझे याद नहीं पर जाजूजी के नाम की चिट भेजी तो कोई उत्तर नहीं आया। काफी देर बैठने और बार-बार कहलाने के बाद भीतर बुलाया गया तो अधिकारी का बर्ताव निहायत हल्का था। उसने सोचा, हम सरकार से सुख-सुविधा लेने आये हैं या कुछ मांग रहे हैं। मैंने तीखे स्वर में कहा, "हम आपसे कुछ लेने नहीं आये हैं और न कुछ मांग रहे हैं, आपकी मदद करना चाहते हैं और क्या आप जानते हैं कि ये कौन हैं ?" इस पर अधिकारी कुछ ढीला पड़ा, पर लौटते समय जाजूजी ने मुझसे कहा, "तुमने यह अच्छा नहीं किया। यह सेवक की वृत्ति नहीं है। यह हमारा अभिमान है, जो मौके पर सेवा से च्युत हो प्रकट हो जाता है। सेवक को सामने-वाले की दिक्कतों का ख्याल करना चाहिए। उस अधिकारी की दिक्कतों का अन्दाज आप नहीं कर सकते। उसके पास तो अधिकांश लोग कुछ न कुछ मांगने के लिए ही आते हैं, इसलिए ऐसा समझना गलत नहीं था।"

जाजूजी अपने को साधारण से साधारण स्थिति में रखकर सामने वाले की स्थिति को समझने की कोशिश करते थे और इसके लिए उन्हें विशेष प्रकार का कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता था। उन्होंने साधना के द्वारा ऐसा स्वभाव प्राप्त कर लिया था। मान-सम्मान, पद, अधिकार की कभी इच्छा ही उन्हें नहीं हुई।

१९२८ की बात है । मैं वर्धा गया था । उस समय नागपुर म्युनिस्पैलिटी के चेयरमैन का चुनाव हो रहा था । डा० मुन्जे, अभ्यंकर और श्री तांबे, सी. पी. के बड़े नेता थे । तांबे तो सरकार के साथ हो गये, इसलिए उनका सार्वजनिक महत्त्व घट गया पर डा० मुन्जे और अभ्यंकर में बहुत संघर्ष था। सभी जानते हैं कि डा० मुन्जे हिन्दू भावापन्न थे और अभ्यंकर कांग्रेस के नेता थे । चेयरमैन के संघर्ष में कांग्रेस के पास ऐसा कोई भी आदमी नहीं था, जो डा० मुन्जे की पार्टी को हरा सके । जहां तक मुझे याद है, ऐसा कहा गया कि यदि जाजूजी खड़े हों तो वह निर्विरोध हो जायंगे । डा० मुन्जे भी शायद उम्मीदवार खड़ा न करें, इसलिए अभ्यंकर जाजूजी के पास आये और उनसे आग्रह किया, पर जाजूजी राजी नहीं हुए । उन्होंने कहा, "मुझे तो अधिकारों और पदों की राजनीति में पड़ना ही नहीं है ।" फिर बापूजी के पास बात गई और उनसे कहा गया कि वह जाजूजी को राजी करें। बापूजी ने जाजूजी से बात की । संयोग से मैं पास बैठा था। मुझे पूरे शब्द याद नहीं, पर यह पक्का याद है कि बापूजी ने कहा कि कांटो का ताज तुम पहन लो । जाजूजी ने कहा, "आपकी आज्ञा को टाल नहीं सकता, पर मेरी इस काम में रूचि नहीं है और मैं इसको कर नहीं सकूंगा । प्रयत्न करने पर भी मेरी पूरी शक्ति इस काम में नहीं लग सकेगी । इसलिए न तो मैं अपने साथ ईमानदार रहूंगा और न पद के साथ और मुझे मानसिक क्लेश होता रहेगा।" इस पर बापूजी ने कहा, "ठीक है, तब मैं तुमको इसके लिए नहीं कहूंगा ।"

आगे जाकर गांधीजी ने 'ग्रामोद्योग संघ' की स्थापना की तो उन्होंने गांधीजी की आज्ञा से 'ग्रामोद्योग संघ' का अध्यक्ष होना सहर्ष स्वीकार किया । इसके बाद 'चर्खा संघ' के सभापति बने और जीवनपर्यन्त रहे । हजारों खादी कार्यकर्ताओं के साथ उनका पारिवारिक सम्बन्ध जुड़ा । अधिकार, पद, प्रशंसा आदि बातों से दूर रहकर सेवा के कामों में जिस प्रकार से हो सका, पद-ग्रहण करके या ऐसे ही, वे काम करते रहे ।

समाज-सुधार के कामों को उन दिनों विलायत-यात्रा सुधार माना जाता था। वह विलायत-यात्रा के पक्ष में रहे और उसके विरोध में होने वाले आन्दोलन का उन्होंने सामना किया । बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह का आन्दोलन उन दिनों बहुत जोरों से चला था, उसमें उनका खास हाथ और प्रेरणा थी । मारवाड़ी समाज में पहला विधवा-विवाह सन् १९२६ में हुआ और उसके विरोध में प्रचंड आन्दोलन में लोगों को जात बाहर कर दिया गया तो जाजूजी ने विधवा विवाह कराने वालों को बराबर पथ-निर्देश दिया और भारी मदद की । माहेश्वरी समाज में डीडू माहेश्वरी-कोलवाल आन्दोलन बहुत ही बृहद् रूप में चला था । इस आन्दोलन में जाजूजी का समर्थन प्रगतिशील पार्टी को था और इससे माहेश्वरी समाज में काफी हलचल

के बाद डीडू और कोलवाल का प्रश्न सदा के लिए खत्म हो गया ।

रचनात्मक कार्यक्रम के साथ-साथ देश की आजादी के आन्दोलन में उन्होंने गांधीजी के आदेशानुसार भाग लिया और जेल जाते रहे । अन्तिम समय में महान शारीरिक संकट के समय भी उन्होंने अपरिग्रहवादी जीवन का आग्रह कायम रखा। किसी प्रकार की ऐसी सुख-सुविधा वह नहीं ले सकते थे, जो सर्वसाधारण को नहीं मिलती हो। जयपुर के मेडिकल कालेज अस्पताल में उनका आपरेशन हुआ तो उन्हें एक बहुत अच्छे कमरे में रखा गया । आपरेशन के बाद होश में आने पर उन्होंने पूछा, "मैं कहां हूं ?" उन्हें बताया गया कि वह एक केबिन में हैं तो उन्होंने कहा, "मैं यहां नहीं रह सकता । मुझे सर्वसाधारण की तरह रखो, उसी में मुझे सुख मिलेगा।" उनके आग्रह पर उन्हें वहां से हटाना पड़ा । यह उनकी त्याग की, अभोग की और अपरिग्रह की अंतिम साधना थी ।

९ : ठक्करबापा

सन् १९३२ ई० में पूज्य गांधीजी के प्रसिद्ध यरवदा जेल के उपवास के बाद हरिजनों की स्थिति सुधारने के उद्देश्य से 'हरिजन सेवक सघ' की स्थापना हुई। इसके सभापति श्री घनश्यामदासजी बिरला बनाये गए और मंत्री ठक्करबापा । इसके पहले ठक्करबापा का नाम मेरे सामने नहीं आया था । स्वभावतः ठक्करबापा के बारे में जानने की इच्छा हुई । मालूम हुआ कि वह बहुत वर्षों से आदिम जातियों मे काम कर रहे हैं और मूक सेवक है, बापूजी के सिद्धान्तो और विचारों से प्रभावित है । कुछ ही दिनों बाद ठक्करबापा से साक्षात्कार भी हुआ । प्रथम दर्शन में ही उनके प्रति श्रद्धा जगी और उनकी प्रामाणिकता, कार्यपटुता, परिश्रमशीलता और सादगीपूर्ण जीवन का मन पर गहरा प्रभाव पड़ा ।

वह मेरे मित्र भागीरथजी कानोड़िया के यहां ठहरे थे । उन्होंने कुछ तार भेजने के लिए दिये । तार लगा दिये गए तो उन्होंने पूछा, "कितने पैसे लगे ?" हमने कहा, "पैसे तो लग गए । अब उसका हिसाब क्या ?" कहने लगे, "उसके पैसे लो । कितने लगे ?" हम लोगों ने कहा, "ठीक है ।' तो बोले, "मैं ऐसा नहीं कर सकता । पैसे पूरे लो । मैं उसे अपने हिसाब में लिखूंगा और उसकी रसीद साथ जोडूंगा । यह सार्वजनिक काम है, सार्वजनिक पैसा है, एक-एक पैसे का हिसाब संस्था के पास ही नहीं देना है, भगवान के पास भी देना है । तुम लोग संस्था को जितनी इच्छा हो, सहायता कर सकते हो । मैं उसकी रसीद दूंगा, पैसा जमा

करूंगा । मैं ऐसा नहीं करता कि इधर से दो रूपये खर्च हो गए उधर से पांच और उनका कोई हिसाब न रहा ।" यह उनकी कार्य-पटुता और व्यवस्था का उदाहरण है । वह बहुत यात्राएं करते थे और यात्राओं का खर्च भी कम से कम करते और नियमित रखते थे । उन्होंने अपना जीवन इतना सादा और सरल बना लिया था कि उन्हें किसी प्रकार की विशेष व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती थी । जैसा मिलता था, वैसा ही सरकारी खाना खाकर अपना काम मजे में चला लेते थे । उनका अपना निजी खर्च साधारण से साधारण कार्यकर्ता से कभी अधिक नहीं हुआ ।

एक बार की बात है । वह मेरे घर ठहरे । भोजन करके बाहर गये तो कह गये कि शाम को छः बजे तक लौटूंगा । हम लोग भी बाहर चले गये, घर में एक नौकरानी, जो कपड़ा धोने का काम करती थी, वही रही । ठक्करबापा का काम जल्दी हो गया, इसलिए वह जल्दी लौट आये । नौकरानी से पूछा, "कपड़े कहां सूखते हैं ?" नौकरानी ने बताया छत पर । वह कपड़े लाने छत पर गये। हम लोग छत पर कभी नहीं जाते थे, इसलिए सीढ़ियों पर जाले लगे हुए थे । उन्होंने सीढ़ियों के जाले साफ किए और कपड़े उतार कर लाये । उन दिनों हमारे घरों में कपड़ों पर इस्तरी नहीं होती थी । यों ही हाथ से कपड़ों की सलवट निकालकर घड़ी (तह) कर लेते थे । ठक्करबापा ने जाले साफ करने के बाद अपने कपड़ों की हाथ से सलवट निकालकर घड़ी की । हम लोग शाम को लौटे तो कपड़े ठीक किये हुए मिले । हमने पूछा, कपड़ों को घड़ी किसने की ? उन्होंने यह सुना तो बोले, "मैंने की । वहां का काम जल्दी हो गया । जल्दी लौट आया तुम्हारी सीढ़ियों के जाले साफ किये, कपड़ों की घड़ी की, समय था, बैठा क्या करता !" हमने कहा, "सीढ़ियों के जाले कौन से ?" सीढ़ियों पर जाले थे, इसका हमको पता नहीं था । हमें लज्जा आई और कहा कि आपने ठीक नहीं किया, तो वह समझ ही नहीं पाये कि उन्होंने कुछ किया भी है ! कहने लगे, "इसमें क्या बात है ! अपने कपड़ों की घड़ी की, तो तुम्हारे कपड़ों की भी कर दी, जाले दीखे तो साफ कर दिये ।" हम लोगों पर उनके चरित्र की अद्‌भुत छाप पड़ी, जो तीस पैंतीस वर्ष के बाद भी अमिट है ।

एक बार घनश्यामदासजी ने बताया कि ठक्करबापा का कोट जगह-जगह से फटा हुआ था । उनसे कहा गया कि नया कोट बनवा लीजिए, फटा कोट बहुत बुरा लगता है । इस पर ठक्करबापा बोले, "इसका क्या बिगड़ा है ? यह अभी तो कई वर्ष चल सकता है ।" कई बार कहने पर भी उन्होंने नया कोट नही बनवाया । एक दिन घनश्यामदासजी ने उनकी अनुपस्थिति में दर्जी को बुलाकर पुराने कोट के माप का नया कोट बनवा दिया । कोट बनकर आया तो रात में वह रख दिया गया और पुराना कोट हटा दिया गया । ठक्करबापा उठे । स्नान

आदि करके कोट पहनने के लिए कोट खोजा तो नया कोट मिला। 'मेरा कोट कहां है ?" और वह उसकी खोज में लग गये। कुछ देर खोज करने पर कोट नहीं मिला तो उनके ध्यान में आया कि यह काम घनश्यामदासजी ने किया है। अब तो इसे ही पहनना होगा, क्योंकि दूसरा कोट तो था नहीं। वह कम से कम कपड़े रखते थे। किसी भी प्रकार की संग्रहवृत्ति उनमें न थी।

एक बार बात करते हुए मैंने उनसे कहा, "ठक्करबापा, आपकी सेवाओं से हरिजन और दूसरे उपेक्षित लोगों की जो सेवा हुई है, उससे भी अधिक पूज्य बापूजी की सेवा हुई है, क्योंकि इस प्रकार की लगन और निष्ठा से बापूजी का काम करने वाले लोग कहां हैं !" ठक्करबापा की आंखें गीली हो गईं, हृदय भर आया और आर्द्र स्वर में बोले, "मैं बापूजी की क्या सेवा कर सकता हूं ! बापूजी के उपकार और ऋण मुझपर अनन्त हैं। हम बापूजी को कुछ भी सतोष करा सकें तो सेवा नहीं, अपने आपको संतोष दे सकते हैं। हमारा सौभाग्य है कि बापूजी की कृपा मुझे मिली।"

ठक्करबापा की छवि ओझल नहीं होती। अनेक लोग ठक्करबापा के सम्पर्क मे आये हैं और वे इसी प्रकार किसी न किसी रूप मे उनसे प्रभावित हुए और प्रभावित हैं।

स्वतंत्रता के सेनानी

१ : देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद

सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन के दिन थे। प्रायः रोज सभाएं रहतीं। इन सभाओं में बंगाल के नेता देशबन्धु चितरंजन दास, विपिनचन्द्र पाल, श्यामसुन्दर चक्रवर्ती आदि अनेक लोगों के व्याख्यान होते थे। वे जनता को विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, विद्यार्थियों को स्कूल, कालेज का बहिष्कार, वकीलों को अदालत, कचहरियों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित करते। इन सभाओं में बड़ी उपस्थिति रहती और जोश का तो क्या कहना! नेताओं के व्याख्यान बड़े उत्तेजनापूर्ण होते।

इस सिलसिले में चितरंजन एवेन्यू के मुहम्मद अली पार्क (जो उन दिनों हालीडे पार्क के नाम से जाना जाता था) एक सभा में खादी का साधारण कुर्ता और गांधी टोपी पहने, कन्धे पर एक खादी की मोटी सी चादर रखे, निहायत सरल देहाती से आदमी को मंच पर बैठे देखा। सोचा, यह आदमी कौन है, जिसको देशबन्धु जैसे बड़े नेता के पास बैठाया गया है? फिर उनको व्याख्यान देने के लिए कहा गया और उन्होंने अपना व्याख्यान हिन्दी में दिया। साधारण शब्दावली, न कोई जोशफरोश की बातें। साधारण भाव से उन्होंने अपनी बातें कहीं, पर उन बातों को सुननेवालों पर ऐसा प्रभाव नजर आ रहा था कि वे उन मनोभावों, विचारों के साथ जैसे बहे जा रहे हों। मैंने वहां के लोगों से पूछा कि यह देहाती सा कौन आदमी इतना अच्छा बोलनेवाला है? बताया गया कि यह राजेन्द्रबाबू हैं और बिहार के बहुत बड़े वकील हैं। इन्होंने महात्माजी के प्रभाव में आकर अपनी बहुत बड़ी वकालत छोड़ दी और असहयोग आन्दोलन में शरीक हो गये।

मैंने राजेन्द्रबाबू को पहले-पहल इसी मीटिंग में देखा था और उनका व्याख्यान सुना था। उनकी साफगोई और सच्चाई की बातों से मैं इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उनकी मूर्ति आज भी मेरी आंखों में ज्यों की त्यों तैर रही है। इसके बाद की बातें बहुत हैं, पर मुझे वह मूर्ति बिसरती नहीं। इसके बाद मैं उनके बारे में अधिक जानने की कोशिश करता रहा और ज्यों-ज्यों उनके जीवन की झांकियों के दर्शन होते गए त्यों त्यों उनके प्रति अगाध श्रद्धा बढ़ती गई। सौभाग्य और संयोग की बात कि बहुत जल्दी ही उनसे परिचय और सम्बन्ध भी हो गया.

जमनालालजी के कारण उनको बहुत नजदीक से देखने-सुनने का मौका मिला। प्रायः ऐसा हुआ करता है कि बड़े लोग दूर से जितने बड़े अच्छे लगते हैं उतने अच्छे नजदीक जाने पर नहीं लगते। पर राजेन्द्रबाबू को कोई जितना नजदीक से देखे, उतना ही उस पर ज्यादा प्रभाव पड़े। उनके जीवन की विधियों और प्रवृतियों का, उनकी सादगी, सरलता, सच्चाई और देशभक्ति का, सबका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता था।

सन् १९३४ में बिहार में भयंकर भूकम्प हुआ, जिसमें बिहार की खास कर उत्तर बिहार की, अपरिमित क्षति हुई। उन दिनों आंदोलन चल रहा था। राजेन्द्रबाबू तथा बिहार के सारे नेता और कार्यकर्ता जेलों में थे। सरकार ने महसूस किया कि बिहार की इस दैवी विपत्ति के समय नेताओं को जेल में रखकर इस संकट का सामना नहीं किया जा सकता। सब लोगों को मुक्त कर दिया गया। राजेन्द्रबाबू पुराने दमे के रोगी थे। जेल में यह रोग और भी बढ़ गया था। हम लोग उनसे मिलने गये तो उनके कृश शरीर और दमे के उठाव को देखकर बड़ा कष्ट हुआ। पर उनको अपने शरीर की कोई चिन्ता नहीं थी। वह आतुर हो रहे थे कि आर्त्त और पीड़ित जनता को सहायता कैसे पहुंचाई जाय। एक रिलीफ कमेटी बनी जिसका सभापति राजेन्द्रबाबू को बनाया गया। सारे देश में बिहार के इन दुर्दिनों के लिए राजेन्द्रबाबू की अपील का जादू का सा असर हुआ। जगह-जगह से सहायता आने लगी। राजेन्द्रबाबू रात-दिन इस रिलीफ कमेटी में अपना सारा समय लगाते रहे। इसका यह प्रभाव हुआ कि बिहार के तथा बाहर के हजारों कार्यकर्ता उस काम में उत्साह, लगन और परिश्रम के साथ जुट गए और लाखों रूपये की सहायता और सामान का ढेर लग गया। राजेन्द्रबाबू को जिन्होंने सदाकत आश्रम में यह सब काम करते देखा है, कार्यकर्ताओं को जो प्रेरणा उनके द्वारा मिली है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वे कार्यकर्ता जो उनके निजी सम्पर्क में आये हैं, वे ही इसका अनुभव कर सकते हैं।

इसके बाद बम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। सारे देश ने सर्वसम्मति से उनको उस समय के राष्ट्रपति के पद पर बैठाया। राजेन्द्रबाबू जेल से निकल कर बिहार के कामों में लग गये थे फिर कांग्रेस के सभापति बने। इस प्रकार उनको ज़रा भी विश्राम नहीं मिला। कांग्रेस के सभापति बनते ही उन्होंने सारे देश का दौरा किया। कांग्रेस के सभापति देश के हर हिस्से में जाएं, यह प्रथा राजेन्द्रबाबू ने प्रारम्भ की।

एक बार सीकर में जमनालालजी के बंगले पर विश्राम करने के लिए वह कुछ दिन को गए। प्रायः ऐसे मौकों पर कई बार मैं साथ रहा करता। एक दिन राजेन्द्रबाबू एक खद्दर का कोट पहनकर बाहर घूमने के लिए चले। रास्ते में मैंने कहा कि यह कोट कैसा पहन लिया आपने ? खादी का दोहरा कोट तो

बहुत ही भद्दा लगता है । उन्होंने कहा, "इसकी बात सुनोगे । सन् १९२६ में डुमरांव का मुकदमा लड़ने के लिए मुझे लंदन जाना पड़ा । पं० मोतीलाल के साथ जाने के पहले मैंने सोचा कि वहां सरदी ज्यादा पड़ती है । एक खादी का दोहरा कोट सिला लें । जब यह कोट वहां मैंने पहना तो पंडितजी ने कहा कि 'राजेन्द्र, यह तुमने क्या पहन लिया ?' मैंने कहा कि "महाराज, कोट पहना है, तो वह बोले, क्या कोट पहना ? बहुत भद्दा लगता है । तुम तो कपड़े सिर्फ शरीर ढकने के लिए पहनते हो । मैंने सोचा कि कपड़ा शरीर ढकने के लिए ही तो पहना जाता है । यही बात मैंने पण्डितजी से भी कही । वह तो कपड़ों के बहुत शौकीन थे, बोले, 'कपड़े सिर्फ तन ढांकने के लिए ही नहीं पहने जाते, आदमी अच्छा दिख सके, इसके लिए भी पहने जाते हैं ।' आज बारह-तेरह वर्ष से यह कोट मेरे पास है और इसका अपना एक इतिहास है ।" यह थी राजेन्द्र बाबू की सादगी।

एक बार हम लोग पिलानी से शायद सीकर लौट रहे थे । चिड़ावा रास्ते में पड़ा, जो पिलानी से शायद आठेक मील है । राजेन्द्रबाबू ने पूछा कि मातादीन यहां के रहने वाले हैं न ? मैंने कहा, जी यहीं के हैं । बोले, उनकी माता और स्त्री से मिलना अच्छा रहेगा । मातादीन तो जेल में हैं । वह किसी आंदोलन के कारण जेल में थे । हम लोग खोजते-खोजते उनके घर पहुंचे । राजेन्द्रबाबू के साथ थे उनके निजी सचिव और साथी मथुराबाबू । वे दोनों महिलाएं इन लोगों को आया देखकर बाग-बाग हो गईं । राजेन्द्रबाबू ने उनको धीरज बंधाया तथा मातादीन के काम की सराहना करके उनको संतोष कराया । इसी प्रकार न जाने सारे भारत में उन्होंने कितने कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों के दुःख-सुख में शामिल होकर उनको धीरज, साहस देकर उनका उत्साह बढ़ाया ।

राजेन्द्रबाबू जैसे वही थे । उनकी तुलना किससे की जाय, वह हमारे देश के गौरव थे । सादगी, सरलता, सहृदयता के प्रतीक थे । वह देश के और कांग्रेस के अनन्य सेवक थे । सारी उम्र उन्होंने देश की सेवा की । ऐसे लोगों से देश पवित्र होता है ।

२ : लोकनेता जवाहरलाल

सन १९१९ की अप्रैल में अमृतसर में जलियांवाला बाग की दुःखद दुर्घटना के कारण सारे भारत में अंग्रेजी राज्य के प्रति एक भयंकर रोष और घृणा पैदा हो गई । इस घटना के बाद अंग्रेजों ने पंजाब में बुरी तरह दमन किया । हर

देश-भक्त के दिल में पीड़ा थी । इस स्थिति का प्रतिकार करने की भावना प्रबल होती जा रही थी ।

कांग्रेस का अगला अधिवेशन पहले से ही अमृतसर में होना तय हो चुका था । लेकिन जो स्थिति बन गई थी उसमें वहां अधिवेशन करना मुश्किल हो रहा था । नाना प्रकार के भय और शंकाएं थीं । इस स्थिति में पं० मोतीलाल नेहरू तथा श्री चितरंजनदास के तत्त्वावधान में एक जांच कमेटी बनी। दोनों ही देश के बड़े बैरिस्टर और उच्चकोटि के कानून ज्ञाता थे । इस कमेटी की रिपोर्ट पं० मोतीलालजी और दास साहब ने बहुत परिश्रम करके तैयार की। इस रिपोर्ट में उस समय के शासन के अत्याचार की कहानी जिस रूप में सामने आई वह हृदयद्रावक तो थी ही, इससे देश में एक ऐसी प्रतिक्रिया पैदा हुई कि एक वर्ष के भीतर ही १९२१ में असहयोग आन्दोलन शुरू हो गया । इस आन्दोलन में जवाहरलाल नेहरू का भाग बहुत ही महत्त्वपूर्ण था । यों तो पं० मोतीलाल ही उस समय बड़े नेताओं में थे, पर मोतीलालजी को इस आन्दोलन में लाने का श्रेय भी वास्तव में जवाहरलालजी को ही दिया जा सकता है । इसके बाद तो नेहरू परिवार के बलिदान की कहानी अपनी सानी नहीं रखती । इस कुटुम्ब के छोटे-बड़े, पुरुष और स्त्री जब तक देश स्वाधीन नहीं हुआ तब तक के लिए स्वाधीनता-संग्राम के सैनिक हो गये ।

सन् १९२९ की ३१ दिसम्बर की रात को बारह बजे लाहौर में रावी के किनारे कांग्रेस के सभापति की हैसियत से जवाहरलालजी ने पूर्ण स्वाधीनता के प्रस्ताव की घोषणा की । इस घोषणा से उनके मन और तन में जो खुशी और प्रसन्नता पैदा हुई, वह उस दिन जिन लोगों ने देखी वह जवाहरलालजी के उस रूप को भुला नहीं सकते । लाहौर की भीषण सर्दी में रावी के किनारे आग जलाकर वह अन्य लोगों के साथ चार पांच घण्टे नाचे । उनके उत्साह से सारे लोगों का मन उत्साह से भर गया ।

सिखों का चिमटा बजा-बजाकर यह गाना 'नहीं रखनी सरकार, जालिम नहीं रखनी' और लाल कुरतीधारी खान अब्दुल गफ्फार साहब के दल का यह गान 'लग गई लगन आजादी दी जाहैं दिल दे बीच, वे मजनू होकर फिरते हैं, हर शहरा हर मुलके बीच' और इन गानों के साथ जवाहरलालजी का नाचना एक अद्भुत जोश और देशभक्ति पैदा कर रहा था । इसके बाद ही सन् १९३१ की जनवरी को वह स्वाधीनता संकल्प कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने सारे देश में प्रचारित किया । लाखों-लाखों लोगों ने उस संकल्प को पढ़ा और प्रतिज्ञाएं कीं तथा ६ अप्रैल को गांधीजी ने डांडी में समुद्र-किनारे नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह शुरू किया।

सन् १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह में गांधीजी ने अपने दो प्रतिनिधि चुनकर उन्हें सबसे पहला सत्याग्रही घोषित किया, राजनैतिक रूप में जवाहरलाल जी को

और आध्यात्मिक रूप में विनोबाजी को । इसके बाद सन् १९४२ का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन हुआ । देश की स्वाधीनता के इन चारों प्रमुख आन्दोलनों में जवाहलालजी की वीरता, त्याग, कष्टसहन करने की शक्ति और देश-भक्ति दिन-दिन निखरती गई और वह हमारे सबसे बड़े सेनानी सिद्ध होते गये ।

जवाहरलालजी का लालन-पालन, शिक्षा और रहन-सहन बहुत ही उच्च आभिजात्य ढंग पर हुआ था, लेकिन उनके मानस पर इसका अधिक असर नहीं रहा । वह जन-साधारण का जीवन जीना पसन्द करते थे । एक बार की बात है । माता स्वरूपरानीजी खादी भंडार आईं तो उनको बढ़िया से बढ़िया खादी दिखाई गई । उन्होंने कहा, "मुझे जवाहर के लिए खादी लेनी है ।" उनसे कहा गया कि इससे बढ़िया खादी तो आती ही नहीं तो उनका गला भर आया, "यह तो ठीक है, पर वह बढ़िया कहां पहनता है ! वह तो मोटी खादी पसन्द करता है, इसलिए मोटी खादी दिखाओ ।" इसी प्रकार एक दिन उन्होंने एक कविता सुनाई, जो सीधी-सादी भाषा में तुकबंदी-जैसी थी, पर मातृत्व और वात्सल्य की करुणा में बेजोड़ थी । उन्होंने कहा कि लखनऊ जेल में जवाहर से मिलकर लौटते समय ट्रेन में मैं बहुत दुखित हो गई थी और यह सब लिख गई ।

साइमन-कमीशन का लखनऊ में बायकाट करते समय जवाहरलालजी पर लाठी का प्रहार हुआ था तथा नाभा जैसी छोटी रियासत ने उनको हथकड़ी पहनाकर अपनी जेल में बन्द कर दिया था । सन् १९३७ की बात है । गांधीजी को रक्त के दबाब के कारण बम्बई-जुहू में लाया गया । वर्किंग कमेटी या अन्य सभाएं गांधीजी जहां जाते, उनके पीछे-पीछे जातीं । यहां भी वर्किंग कमेटी की मीटिंग थी । मीटिंग शाम को चार बजे के करीब अगले दिन के लिए स्थगित हुई, तो दादाभाई नारौजी की पोती पेरिनबेन कैप्टन ने एक प्रोग्राम बनाया, गांधी जी के स्थान पर नेताओं का मनोरंजन करने के लिए । संयोगवश यों ही बात चली कि गांधीजी और जवाहरलाल में कौन ज्यादा दिन जेल में रहा । मनोरंजन के रूप में ही यह सवाल आ गया। हिसाब लगाकर देखा गया, तो पता चला कि जवाहरलालजी जेल में ज्यादा रहे, यद्यपि सजा ज्यादा लम्बी गांधीजी को मिली । ये सब तथा और अनेक बातें हैं, जो जवाहरलाल जी के कष्ट-सहन, त्याग, तप को स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में प्रकट करती है ।

इसके सिवा उनमें नेतृत्व की शक्ति थी, देश की स्थिति समझने जानने का ज्ञान था, जनसाधारण में जाकर मिलकर काम करने की इच्छा, भावना और कार्य-शक्ति थी । गांधीजी के विचारों के साथ विरोध होते हुए भी वह गांधीजी के इतने नजदीक थे जितना दूसरा कोई नहीं था । गांधीजी ने सन् १९४२ की जनवरी में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में कहा था, "लोग मुझसे पूछते हैं कि राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई या अन्य आपके विचारों को अधिक मानते हैं या और

ज्यादा साथ हैं, पर उनकी अपेक्षा आप जवाहरजी को ही अपना उत्तराधिकारी क्यों मानते हैं ? यह सब ठीक है, मैं जानता हूं। तब भी मैं यही कहता हूं कि सचमुच मेरा वारिस तो जवाहरलाल ही है।''

जवाहरलालजी ऐसा तपा हुआ सोना थे, जो शत-प्रतिशत सच्चा कुंदन कहा जा सकता है। गांधीजी ने कहा था, ''जवाहर शुभ्र स्फटिक-है, देश उसके हाथ में सुरक्षित है।'' उन्होंने कांग्रेस का नाना रूपों में, वालंटियर से लेकर सभापति के पद तक नेतृत्व किया। कांग्रेस के जितने भी प्रस्ताव होते, उनमें जवाहरलालजी का विशेष हाथ होता था। राजाजी, जवाहरलालजी और गांधीजी ही विशेषकर प्रस्तावों का मसविदा बनाया करते और उन पर विचार होता। कांग्रेस की नीतियां निर्धारित करने में गांधीजी के बाद किसीका बड़ा हाथ था तो वह जवाहरलालजी का ही था। कहा जा सकता है कि दो विचारधाराएं चलतीं थी : एक गांधीजी की और दूसरी जवाहरलाल जी की। वर्किंग कमेटी में ऐसे-ऐसे विवाद भी आये हैं जब कांग्रेस के भीतर ही भीतर बड़ी गड़बड़ मालूम होने लगती, पर गांधीजी की दूरदर्शिता और जवाहरलालजी की गांधीजी के प्रति आस्था से सब बातें ठीक हो जाती थीं।

३ : तेजस्वी सरदार

लोग सरदार पटेल को 'लौह पुरुष' कहते हैं। यह नाम प्यारा और प्रसिद्ध भी हो गया है, पर मै सोचता हूं तो ऐसा लगता है कि यह नाम उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को व्यक्त नहीं करता। लौह पुरुष नाम, ऐसा लगता है कि योंही चल पड़ा। मुझे उनके दर्शन और कार्य को लौह पुरुष की अपेक्षा यदि कोई नाम ही देना होता तो 'दृढ़ पुरुष' ज्यादा अच्छा लगता। सरदार पटेल के जीवन में, हर जगह हर मौके पर ऐसी दृढ़ता के दर्शन होते है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। त्रिपुरा कांग्रेस जब आरम्भ हुई उसी समय चारों ओर से हो-हल्ला होने लगा और पत्थर बरसने लगे। बंगाल के प्रतिनिधि काफी हल्ला कर रहे थे, पत्थर आकर गिर रहे थे। मैं सरदार के पास ही बैठा था। मैंने कहा, ''अब क्या होगा, कैसे होगा ?'' तो हँसे और बोले, ''डरते हो ?'' मैंने कहा, ''डरने की बात नहीं। कांग्रेस का इस हालत में अधिवेशन कैसे होगा ?'' कहने लगे, ''अरे, कांग्रेस को चलाने के अनेक रास्ते हैं। यह तो योंही घंटे दो घंटे में चुप हो जायंगे।'' हर हालत में, चाहे कितनी भी विपरीत स्थिति हो, सरदार का न तो धीरज टूटता था, न वह

चिंतित होते थे, । उनकी दृढ़ता वैसे ही अडिग रहती जैसे कुछ हुआ ही नहीं । वह साधारणतः सहज ही बड़ी-बड़ी बातों से प्रभावित नहीं होते थे । यदि वह प्रभावित होते थे तो आदमी की कार्यक्षमता, सत्यता, प्रामाणिकता से । शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि गांधीजी जब दक्षिण अफ्रीका से लौटकर आये तो अहमदाबाद की बार एसोशियेशन ने उन्हें मानपत्र दिया । सरदार उन दिनों बैरिस्टरी करते थे। गांधीजी आये और उनका अभिनन्दन हुआ, पर सरदार अपने मित्रों से बैठे बात करते रहे और गांधीजी से जरा भी प्रभावित नहीं हुए, न उनको कोई खास आदमी ही माना, पर कुछ ही वर्षों बाद वह गांधीजी के कार्यों से इतने प्रभावित हुए कि अपनी अच्छी चलती वकालत को छोड़कर सम्पूर्ण रूप से गांधीजी के साथ हो गये ।

सरदार पटेल, उनके बड़े भाई प्रेसीडेन्ट पटेल और उनके छोटे भाई नरसिंहभाई पटेल तीनों ही अपने-अपने स्थानों पर विशेष आदमी थे । विट्ठलभाई के जीवन की विशेषताओं का यहां उल्लेख नहीं करना है । वे सर्वविदित है और अपने ढंग की अनोखी हैं । सरदार की तो बात ही दूसरी है । वह अद्‌भुत संगठनकर्त्ता थे। बारडोली आन्दोलन में सरदार ने जो संगठन किया था और आंदोलन का जिस तरह संचालन किया, वह भारत की स्वतंत्रता के इतिहास में अपने ढंग क़ा एक निराला आंदोलन ही नहीं, एक ज्वलंत उदाहरण भी है । बारडोली के आंदोलन के समय ही वल्लभभाई को सरदार के नाम से पुकारा गया और सरदार की सरदारी में वह आन्दोलन जिस तीव्रता, निर्भीकता, बहादुरी और त्याग की भावना से चला, वह अपने ढंग की एक नई बात थी । उस महान आंदोलन का अपना इतिहास है और बड़ा ही प्रेरणाप्रद है । वास्तव में वह आंदोलन ही गांधीजी के अहिंसक आंदोलन की भूमिका था और सरदार उस आंदोलन के एकमात्र नेता थे । इसमें कोई शक नहीं कि सरदार ने अपने त्याग और प्रभाव से गुजरात में अनेक कार्यकर्ता तैयार किये थे और बापू जी को ऐसे लोगों ने ही भारत का नेतृत्व करने का बल दिया था । सरदार सम्पूर्ण बम्बई और गुजरात के एकमात्र नेता थे । सरदार गांधीजी के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा से समर्पित थे । ऐसे-ऐसे महान लोगों को पाकर गांधीजी ने स्वतंत्रता की लड़ाई में सफलता प्राप्त की थी ।

सरदार का कार्यकताओं पर ऐसा प्रभाव था, जो अन्य किसी नेता का अपने साथियों पर कम देखने को मिलता है । हरिपुरा-कांग्रेस की बात है । इस कांग्रेस की स्वागत समिति के सभापति थे दरबार गोपालदास, जो गुजरात के एक बड़े जमींदार थे, पर बापूजी और सरदार के प्रभाव में आकर आजादी की लड़ाई के एक प्रभावशाली लड़वैये बन गए । सरकारी कोप के कारण उनकी जमीन और सब अधिकार छीन लिये गये, जेलों की यातना, सम्पत्ति की जब्ती और आए दिनों के अनेक कष्टों ने दरबार गोपालदास को अपने तालुका का विशेष आदमी बना

दिया और देश उस समय दरबार गोपालदास को खूब जानता था। ऐसे व्यक्ति को ही इस कांग्रेस की स्वागत समिति का सभापति बनाया गया था। जो लोग कांग्रेस के इतिहास को जानते हैं और कांग्रेस अधिवेशनों में शरीक होते रहे हैं, उनको पता है कि कांग्रेस के सारे इतिहास में हरिपुरा-कांग्रेस की जैसी व्यवस्था कहीं भी शायद उसके पहले और बाद में कभी नहीं हुई। दस हजार स्वयंसेवक और तीन हजार स्वयंसेविकाएं चौबीसों घंटे जिस तरह काम में जुटी रहती थीं और उनकी लगन, तत्परता, काम के प्रति दायित्व की भावना ऐसी थी कि गुजरात की विशेषता, कार्यक्षमता, सफाई-प्रियता के जो दर्शन हुए, उसकी याद आज भी ताजा है। ऐसी स्वागत समिति के सभापति दरबार गोपालदास जब कांग्रेस प्रतिनिधियों का स्वागत करने मंच पर आये तो लोगों ने करतल ध्वनि से उनका बहुत ही भावभरा स्वागत किया और सोचने लगे कि देखें दरबारसाहब अपने व्याख्यान में क्या कहते हैं। पर उनका व्याख्यान भी कांग्रेस स्वागत समिति के सभापतियों के व्याख्यानों में लाजबाव था। उन्होंने अपनी जेब से एक छपा हुआ कागज निकाला और कहा कि गुजरात की बात, गुजरात का काम, गुजरात की कमी या विशेषता तथा देश की समस्याओं पर मुझे कुछ नहीं कहना है। हमारे यहां कहने का अधिकार वल्लभभाई पटेल को है, हम सब उनके सिपाही हैं। सिपाही को सरदार जो हुक्म देते हैं, उसका कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उस हुक्म का पालन करे। मुझे उन्होंने कह दिया कि तुमको स्वागत-समिति का सभापति बनना है। मैं इसके योग्य हूँ या नहीं, यह सवाल नहीं उठता, सरदार की आज्ञा का पालन करना हम सबका काम है। अतः यहां आप लोगों को हमारी स्वागत-व्यवस्था में जो कष्ट और आराम हुआ है, उसकी प्रशंसा या निन्दा सरदार की है, इसका सारा श्रेय किसी को है तो वह सरदार को है। हम सब उनकी आज्ञा पर चलने वाले लोग हैं। इस तरह की निष्ठा, निरभिमानता गुजरात के कार्यकर्ताओं और नेताओं में प्रकट हुई है, सो बापू जी और सरदार के नेतृत्व के कारण।

सरदार वल्लभभाई गुजरात के नहीं, सारे भारत के एक विशेष नेता बन गये। बारडोली-सत्याग्रह के बाद ही कांग्रेस संगठन की बागडोर वल्लभभाई के हाथ में थी, हर प्रांत के कार्यकर्ताओं का सरदार से सीधा संबन्ध था। वह हर प्रांत की स्थिति का पूरा-पूरा ज्ञान रखते थे, वहां के सच्चे कार्यकर्ताओं को पहचानते थे। उनके स्वभाव की एक विशेषता थी कि वह आदमी को परखना जानते थे और जो आदमी उनको सही लगता उस पर पूरा विश्वास करते। उनका विश्वास पाने के बाद अगर दुनिया का कोई बड़े से बड़ा आदमी भी उसके विरूद्ध कुछ कहता या करता तो वह सब अपने ऊपर ले लेते और कार्यकर्ताओं को निर्भीक होकर काम करने के लिए छोड़ देते। उसे किसी से डरना नहीं होता। सरदार स्वयं उसके जिम्मेदार बनते। अनजाने हुई भूलों को माफ करते। उनकी दृढ़ता

का कार्यकर्त्ता पर इतना प्रभाव पड़ता था कि वह उनके साथ सत्यनिष्ठ बन जाता और सत्यनिष्ठ रहता था। जहां कहीं उनको यह संदेह होता था कि कार्यकर्त्ता लोभ से किसी भी प्रकार की भ्रष्टता में पड़ गया है, तो वह उस कार्यकर्ता को कांग्रेस से खत्म कर देते, और कह देते, 'तुम कांग्रेस में रहने योग्य नहीं हो, अपना काम अन्य जगह, करो।' पार्लामेंटरी बोर्ड में, आई० एन० ए० के मामले में तथा अन्य कामों पर जब जब उनको देखने का मुझे मौका मिला तब-तब यह आभास हुआ कि हम एक निहायत योग्य शासक और संगठनकर्ता के समीप बैठे हैं। मंत्री बनने के पहले जैसे वह रहते थे और जिस तरह उनका जीवन था उसके बाद उसमें मैंने कोई अन्तर नहीं देखा। और मंत्रियों की कोठियों में काश्मीर और मिर्जापुर के कालीन बिछे हुए थे, पर सरदार की कोठी में ऊट के बालों के कालीन थे। उन्होंने जीवन-पर्यन्त अपने और मणिबहन के हाथ के कते सूत के कपड़े पहने। केवल सर्दी के समय एक जाकट पहनते थे और एक चद्दर इस्तेमाल करते थे।

उनमें विनोद भी अद्भुत था। एक बार जुहू में मैं जमनालालजी के पास बैठा बात कर रहा था। जमनालालजी चर्खा कात रहे थे और जानकीदेवी बगल के कमरे में प्रार्थना कर रही थी। सरदार आये तो जमनालाल जी ने अंगुली से इशारा किया कि जानकीदेवी प्रार्थना कर रही हैं। इसपर सरदार बोले, "यह बेचारी तो यह प्रार्थना करती है कि इस जन्म में यह निखट्टू पति मिला तो मिला, अगले जन्म में न मिले।" सबको बहुत हंसी आई। इसी प्रकार जब क्रिप्स-मिशन हिन्दुस्तान आया था तो उससे बहुत आशाएं थीं। वह हिन्दुस्तान के मुख्य-मुख्य राजनैतिक दलों से मिला। कांग्रेस से मिलना तो सबसे ज्यादा जरूरी था ही। इस समय मौलाना आजाद कांग्रेस के सभापति थे। मौलाना आजाद क्रिप्स मिशन से मिलने गये, तो कांग्रेस वर्किंग कमेटी के प्रमुख लोग, जो उस समय दिल्ली में उपस्थित थे, मौलाना की प्रतीक्षा कर रहे थे। मौलाना जब लौटकर आये तो उनसे पूछा, "मौलाना क्या खबर लाये ?" मौलाना ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "खबर तसल्लीबख्श है।" सरदार बोले, "मौलाना, हमने रहीमबख्श भी सुना, खुदाबख्श भी सुना, हनुमानबख्श भी सुना, यह तसल्लीबख्श कौन है ?"

४ : शालीन मौलाना आजाद

सन् १९२० की बात है। पहली अगस्त को गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन की योजना देश के सामने रखी और उसपर विचार करने के लिए सितम्बर में लाला

लाजपतराय की अध्यक्षता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। उस समय देश में एक ऐसी हवा चल रही थी, जिसमें स्वतंत्रता के लिए तड़प थी और लोग कुछ कर गुजरने के लिए आतुर थे। मौलाना शौकत अली और मोहम्मद अली जेल से बाहर आये थे और उनका बहुत प्रभाव था। इस कांग्रेस अधिवेशन में क्या होगा, इस पर सारे देश की आंख लगी थी। इसी अधिवेशन में एक नौजवान मुसलमान आया, जिसके साथ तीस-चालीस आदमी होंगे और उसकी वेशभूषा अजीब-सी लग रही थी। दो आदमी उसके पीछे उसका कंधों पर लटका हुआ कपड़ा लिये हुए चल रहे थे और सिर पर एक विचित्र तरह की पगड़ी थी, जिसके दोनों ओर कानों तक कुछ लगा हुआ था। निहायत सुन्दर, गौरवर्ण, तेजस्वी तथा आंखों में गहरी चमक, मुंह पर छोटी-छोटी दाढ़ी-मूंछ। बहुत ही गम्भीर चाल से यह व्यक्ति मंच पर आकर बैठा। मैंने पूछा, "यह कौन हैं ? " पता लगा कि ये मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब हैं और मुसलमानों के बहुत बड़े मौलाना हैं। उनके मुरीदों की संख्या हजारों है और अरबी, फारसी के बहुत बड़े विद्वान हैं।

मौलाना को पहले-पहल मैंने इसी रूप में जाना और पहचाना। आज लगभग ५० वर्ष के पश्चात् भी वह सूरत, वह रूप, मन से बिसरता नहीं। पता लगाने पर मालूम हुआ कि मौलाना को भारत सरकार ने खतरनाक आदमी समझकर भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत रांची में बहुत वर्षों तक नजरबंद कर दिया था। स्वभावतः उन दिनों ऐसे आदमियों पर गहरी श्रद्धा जगती थी। सभी जानते हैं, इस कांग्रेस में असहयोग का प्रस्ताव पास हुआ और देश में एक प्रचण्ड आंदोलन चला, जिसमें इच्छा-अनिच्छा सभी लोगों को योगदान करना पड़ा और जो विरोधी लोग थे वे भी चार ही महीने बाद नागपुर कांग्रेस में आंदोलन के समर्थक हो गये। कलकत्ता कांग्रेस में असहयोग का प्रस्ताव तो पास हुआ, पर बड़े नेताओ में से किसीने उसका समर्थन नहीं किया। लेकिन चार महीने बाद नागपुर कांग्रेस में यह प्रस्ताव बहुत बड़े बहुमत से पास हुआ और देशबन्धु चितरंजन दास, लाला लाजपतराय आदि बड़े नेताओं ने आंदोलन का समर्थन किया। इस आन्दोलन का लम्बा इतिहास है। कहना यह है कि मौलाना अबुल कलाम आजाद की तकरीरों ने इस आंदोलन में जान फूंक दी थी। मुझे इन्हीं दिनों मौलाना साहब की तकरीर सुनने का मौका मिला और ऐसा मन बन गया कि मौलाना साहब की तकरीर कहीं भी हो, सुने बिना न रहता। मौलाना जेल चले गये और कुछ ही दिनों के बाद गांधीजी ने चौरी-चौरा के कारण आन्दोलन को स्थगित कर दिया।

जेल से मुक्त होने के बाद आहिस्ते-आहिस्ते मौलानासाहब से परिचय बढ़ने लगा और वह इतने सुसंस्कृत और सुलझे हुए विचारों के आदमी लगे कि उनके प्रति एक विशेष आदर का भाव सदा के लिए बन गया। मौलाना के पिता भी बंगाल के बहुत बड़े मौलाना थे। हर साल उनके मकबरे पर मेला लगता था और

लाखों मुसलमान उस मेले में जाते थे। कलकत्ता में ईद की नमाज सदा मौलाना आजाद साहब ही पढ़ाते थे। बाद में मुस्लिम लीग का जोर बहुत बढ़ जाने के कारण कुछ मुसलमानों ने कहा कि हम मौलाना से नमाज नहीं पढ़ेंगे, लेकिन मौलाना के साथ नमाज पढ़ने वालों की संख्या बहुत बड़ी थी, तब कलकत्ते के मोनुमेंट मैदान में दो जगह नमाज पढ़ने की व्यवस्था की गई। मौलाना को यह मालूम हुआ तो उन्होंने नमाज पढ़ना अस्वीकार कर दिया और कहा कि खुदा की इबादत में मैं सियासत नहीं घुसेड़ना चाहता और नमाज पढ़ाने नहीं आऊंगा। बहुत कहने सुनने पर भी वह नहीं गये। मौलाना के मुरीदों की संख्या बहुत बड़ी थी। वे मौलाना को भेंट के रूप में बहुत कुछ देते थे, जो शायद साल में बहुत बड़ी राशि हो जाती थी। मौलाना ने बहुत दिन पहले ही इसे लेना नामंजूर कर दिया और मुरीदों से कहा कि तुम खुदा को माननेवाले लोग इंसान को क्यों भेंट देते हो। इस तरह मौलाना धार्मिक क्रांतिकारी भी थे, जिसका गलत लाभ मुस्लिम लीग ने उठाया।

मौलाना बहुत छोटी उम्र में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर चुने गये और जीवन पर्यन्त रहे। वह केवल मेम्बर ही नहीं रहे, कांग्रेस और देश के एक विशेष नेता भी रहे। फैजपुर-कांग्रेस के खुले अधिवेशन में बापूजी शरीक नहीं हुए थे। अधिवेशन समाप्त होने के बाद जब हम लोग लौटे तो बापू जी ने पूछा कि कौन कैसा बोला। कुछ नाम बताने के बाद जमनालालजी ने कहा कि मौलाना बहुत अच्छा बोले। बापूजी ने कहा कि मौलाना तो सदा ही अच्छे बोलते हैं और उनके विचार बहुत सुलझे हुए हैं। इस प्रकार मौलाना के व्यक्तित्व की बापूजी के मन पर एक छाप थी और वह उनके सुझाये विचारों पर गंभीरता से सोचा करते थे।

सन् १९४२ में चुनाव हो रहा था। उस समय का एक उदाहरण है कि नेशनलिस्ट मुसलमानों को जिताने के लिए कांग्रेस संसदीय बोर्ड बहुत खर्च कर रहा था। मुझे बंगाल बोर्ड का कोषाध्यक्ष बनाया गया था। संयोग ऐसा हुआ कि मैंने ८४००० रूपये बैंक से मंगाये और सुबह के अखबारों में खबर आई कि हजार पांच सौ-सौ के नोट कैंसिल कर दिए गए। मुझे बड़ी चिन्ता हुई कि इन रूपयों का कैसे क्या करें। मौलाना उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। मैं उनके पास गया और कहा कि यह स्थिति है, क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा, "मेरे नाम से बैंक में जमा कर दो। मेरा हिसाब पार्क स्ट्रीट स्टेट बैंक की ब्रांच में है।" रूपया बैंक में जमा करने के लिए जो फार्म था, उसमें पेशे का खाना भरना था। मैंने मौलाना से कहा, "आपका पेशा तो देशभक्ति है, वह लिख दें। आपके पास कोई सम्पति या व्यापार तो है नहीं। वह बोले, "नहीं, यह गलत होगा। मैं कुछ लिखकर कमाता हूं, इसलिए देश-भक्ति कैसे लिखा जा सकता है! अदीब (लेखक) लिखो।"

स्वाधीनता से पहले मौलाना का निवास-स्थान कलकत्ता ही था, इसलिए उनके सम्पर्क में आने का, नजदीक से उन्हें देखने का, काफी मौका मिला। जहां तक मैं जानता हूं, मौलाना बहुत अध्ययनशील आदमी थे। वह सुबह जल्दी उठ जाते थे और तीन-चार घंटे अकेले लिखने-पढ़ने का काम करते थे। उनका घरेलू पुस्तकालय भी मैंने देखा, जिसमें अरबी, फारसी और उर्दू की किताबों की संख्या बहुत बड़ी थी और वे कितनी ही अलमारियों में लगी हुई थीं। मैंने कई बार देखा कि राजनैतिक झंझावात में फंसे हुए रहने पर भी वह अपने सेक्रेटरी श्री अजमल खां साहब के साथ साहित्यिक चर्चा कर रहे हैं और दुनिया में अरबी पर लिखे हुए लेखों और पुस्तकों पर बहस-मुबाहिसा कर रहे हैं। मैं विशेष कुछ समझा नहीं तो अजमल खां साहब से एक दिन पूछा। उन्होंने कहा कि अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी आदि में जो कुछ पत्रों, किताबों में निकलता है उसपर मौलाना मौका मिलते ही चर्चा करना पसन्द करते हैं। आज इसी प्रकार की चर्चा हम लोग कर रहे थे।

मौलाना स्वभाव से रईस थे, अमीर थे, लेकिन वह अपने मातहतों और दोस्तों के साथ इस तरह रहते और मिलते थे कि वे उन्हें अपना ही अनुभव करें। उनके घर के नौकर-चाकरों को देखकर ऐसा लगता था कि वे बहुत ही खुश हैं। मौलाना बहुत कम उम्र में दिल्ली में विशेष कांग्रेस के सभापति बने थे, पर १९४० में रामगढ़ कांग्रेस के सभापति बने तो देश की स्वाधीनता प्राप्ति तक रहे। उनके सभापतित्व काल में ही देश स्वाधीन हुआ। यह गौरव उन्हें प्राप्त हुआ। दुःख है कि पाकिस्तान के घोर विरोधी होते हुए भी उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा और यह घटना भी उनके सभापतित्व काल मे ही हुई।

मौलाना का सारा जीवन विशेष प्रकार का जीवन था, जो अनेक घटनाओं, अनेक उतार-चढ़ावों और बहुत बड़ी घाटियों और मंजिलों से गुजरा। स्वाधीनता के पहले भी वह देश के एक महान् नेता और देश और कांग्रेस के बड़े से बड़े लोगों में रहे और स्वाधीनता के बाद भी देश के शासन-संचालन मे उनका बहुत बड़ा स्थान रहा।

अहमदनगर के किले में जब वह कैद थे तब उनकी बेगमसाहिबा बहुत बीमार हुईं। उन्होंने सरकार से दरख्वास्त नहीं की कि मुझे उनको देखने की इजाजत दी जाय। बेगमसाहिबा ने सोचा कि शायद मौलाना को सरकार मिलने की अपने-आप इजाजत देगी और वह चाहती रहीं कि अन्तिम समय में मौलाना को देख सकूं। मौलाना इस बात को जानते थे। बेगमसाहिबा बार-बार पूछती रहीं कि क्या मौलाना आये, क्या मौलाना आये ? अन्त में उनको जब मालूम हुआ कि मौलाना नहीं आ सकेंगे तब उन्होंने इत्र दिया और कहा कि मौलाना जब भी आयें तब मेरी ओर से यह इत्र उन्हें भेंट करना और कहना कि नमाज पढ़ते समय इसको लगा लें। यह बड़ा करुण प्रसंग है, पर ऐसे सदमो से देश-सेवा करने वालों को गुजरना पड़ता है।

५ : अमर सेनानी सुभाषचंद्र बोस

आज के लोग सुभाषचन्द्र बोस को 'नेताजी' के नाम से जानते हैं और इसी नाम से पुकारते हैं। यह नाम उनको भारत से बाहर जाने और आजाद हिन्द फौज का संगठन करने पर दिया गया और यह नाम उनके जीवन का अन्तिम नाम भी है। यह नाम प्रभावशाली और शक्तिशाली भी है, तब भी उनकी उम्र के लोग या उनसे कुछ बड़े और उनके पुराने साथियों का प्यारा नाम सुभाष या सुभाषबाबू ही है। और इस नाम के साथ कितनी बातें जुड़ी हुई हैं– सुभाषबाबू के त्याग की, वीरता की, देश-भक्ति की, संगठन-शक्ति की, साथियों के प्रति सहृदयता की, प्रेम की, आदर की, जिन्हें उनके साथी या उनके साथ काम करने वाले कभी नहीं भूलते।

सुभाषबाबू का बचपन और उनकी धार्मिक वृत्ति उनके पत्रों में, जो उन्होंने अपनी मां के नाम तथा बंधु-बांधवों के नाम लिखे हैं, बहुत गहराई से प्रकट होती है। शायद उनकी इस धार्मिक वृत्ति ने ही आगे जाकर देश-भक्ति का रूप धारण किया, खासकर बंगाल में जितने क्रांतिकारी हुए उनके जीवन में धार्मिकता का प्रभाव रहा। यहां धर्म के बारे में कुछ नहीं कहना है। अन्धा धर्म तो कभी किसी काम का नहीं रहा।

सुभाषबाबू पढ़ने-लिखने में सदा बहुत तेज थे और सभी परीक्षाओं में उन्होंने प्रशंसनीय सफलता प्राप्त की। आई० सी० एस० की परीक्षा देने का मन न होने पर भी और किसी सरकारी नौकरी की इच्छा न होने पर भी उन्होंने वह परीक्षा दे दी, जबकि उनको बहुत थोड़े दिन पढ़ने का मौका मिला। उन्होंने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। लेकिन उनका निर्माण सरकारी नौकरी करने के लिए हुआ ही नहीं था। उन दिनों आई० सी० एस० परीक्षा पास करना और सरकारी नौकरियों में जाना बहुत गौरवपूर्ण माना जाता था। शायद उनके पिताजी भी उनसे यही आशा रखते थे। उनके पिता जानकीनाथ बोस कटक के नामी वकील थे। बोस-परिवार बंगाल में बहुत प्रसिद्ध परिवार था। सुभाषबाबू के सभी भाई अपने-अपने कामों में बहुत योग्य और सफल रहे हैं। सुभाषबाबू के बड़े भाई श्री शरत्चन्द्र बोस ने तो इंग्लैंड में पढ़ते समय ही सुभाषबाबू की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। सुभाषबाबू के स्वभाव, विचार और कामों के प्रति एक प्रकार का प्रेम भरा आदर उनके मन में पैदा हो गया था, जो हमेशा बढ़ता ही गया। सुभाषबाबू से वह इतने प्रभावित थे कि वह लाखों रुपयों की बैरिस्टरी की आय छोड़कर जेल की यातनाएं भोगते रहे और सुभाषबाबू का साथ देते रहे। मुझे सौभाग्य से दोनों

भाइयों को देखने और उनके साथ काम करने का अवसर मिला। सुभाषबाबू के बारे में सोचते समय शरत्‌बाबू सहज रूप से मेरे सामने आ जाते हैं। इसमें शक नहीं कि सुभाषबाबू का त्याग और तप, उनकी देशभक्ति और वीरत्व अदभुत है, पर शरत्‌बाबू का वरदहस्त या एक प्रकार का भरोसा, आश्वासन, जो कह लीजिए, वह सदा सुभाषबाबू को मिलता रहा और शरतबाबू की लाखों रुपयों की आय हरदम सुभाषबाबू के लिए न्योछावर होती रही। इसका कारण सुभाषबाबू की देश-सेवा ही है, जो शरतबाबू को प्रभावित करती रही। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि शरत्‌बाबू की पत्नी विभावती देवी इस में सुभाषबाबू और शरत्‌बाबू की सबसे बड़ी सहायक रहीं।

सुभाषबाबू के आई० सी० एस० पास करके इंग्लैंड से लौटने के कुछ ही दिन बाद देश में असहयोग का आन्दोलन आरम्भ हो गया। देशबन्धु चित्तरंजन दास और पंडित मोतीलाल नेहरू अपनी लाखों रूपयों की आमदनी छोड़कर इस आन्दोलन मे शरीक हुए और इस आन्दोलन में गांधीजी के बाद उनका ही स्थान था। देशबन्धु चित्तरंजन दास ने इस आन्दोलन को बंगाल में बहुत बड़ा रूप दिया। सुभाषचन्द्र बोस भी कार्यकर्त्ता के रूप में चित्तरंजन दास के कृपाभाजन बने और आन्दोलन मे हिस्सा लेने लगे। इसके पहले से ही बंगाल के क्रांतिकारियों से उनका सम्बन्ध और सहयोग था ही। चितरंजन दास के साथ काम करते हुए वह उनके इतने नजदीक आ गये कि वह उनको अपना पुत्र जैसा ही मानने लगे।

सन् १९२३ में कलकत्ता कारपोरेशन का नया विधान बना और चितरंजन दास उसके प्रथम मेयर बने तो उन्होंने सुभाषबाबू को ही एक्जीक्यूटिव आफिसर बनाया। इस पद पर सुभाषबाबू को जो वेतन मिलता था, वह प्रायः सब का सब देश के क्रांतिकारियों की सहायता में दे देते। क्रांतिकारियों से उनका संबंध दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा था, जिससे कुछ ही दिनों बाद वह गिरफ्तार हो गए और उनको माण्डले जेल भेज दिया गया, जहां वह बहुत दिनों तक निर्वासित रहे। इसी बीच देशबन्धु का स्वर्गवास हो गया। सुभाषबाबू जेल से छूटे तब बंगाल का नेतृत्व एक प्रकार से जे० एम० सेनगुप्त के हाथ में था। सुभाषबाबू आते ही अपने काम में जुट गये। उनका व्यक्तित्व, प्रतिभा और संगठन-शक्ति तो बहुत बड़ी थी ही, देश उनको प्यार भी करता था। वह निहायत सुन्दर, गौरवर्ण और प्रभावशाली व्यक्ति थे। सन् १९२८ में कलकत्ते में कांग्रेस होने वाली थी। पंडित मोतीलाल नेहरू इस कांग्रेस के सभापति थे। सुभाषबाबू कांग्रेस के स्वयंसेवकों के 'जनरल आफ कमान्ड' बनाये गये थे। 'ज० आ० क०' की वर्दी में स्वयंसेवकों की रैली में जब वह शरीक हुए तब वह कितने सुन्दर और प्रभावशाली लगते थे, उसको जिन्होंने देखा है वही जानते हैं। और आज बहुत बरसों बाद भी आजाद हिन्द फौज के नेताजी की शक्ल 'ज० आ० क० की याद दिलाती है। उन दिनों किसीने

कल्पना भी नहीं की थी कि यही उनका अंतिम वेश होगा । सुभाषबाबू से मेरा पहला परिचय इसी समय हुआ और आहिस्ते-आहिस्ते वह बहुत घना बनता गया।

कांग्रेस के साथ राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी हुआ करता था । इस साल राष्ट्रभाषा सम्मेलन के सभापति के लिए हमने सुभाषबाबू से प्रार्थना की और उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया । सभापति पद से उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए जो भाषण दिया वह आज उपलब्ध नहीं हो रहा है, पर उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी के सिवा कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती और हर प्रांत के लोगों को हिंदी सीखनी चाहिए । सुभाषबाबू का हिन्दी प्रेम प्रख्यात है । इसका एकाध उदाहरण मैं आगे दूंगा । इस कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता के विचार पर काफी संघर्ष हुआ था । पंडित जवाहरलाल नेहरू और सुभाषबाबू इसी कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव करना चाहते थे और गांधीजी और मोतीलालजी आदि नेता अंग्रेजो को कुछ और समय देना चाहते थे । सर्वदल सम्मेलन में, सभापति पंडित मोतीलालजी ही थे, औपनिवेशिक स्वराज्य का प्रस्ताव पास हुआ था । लेकिन बहुत संघर्ष के बाद रात मे करीब १०-११ बजे विषय निर्वाचिनी समिति में सर्व-सम्मत प्रस्ताव रखा गया कि एक वर्ष के भीतर यदि सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य की हमारी मांग स्वीकार न करे, तो अगली कांग्रेस में हम पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव करने के लिए स्वतंत्र होगे । पंडित जवाहरलाल ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था । सुभाषबाबू ने भी इसको स्वीकार तो किया. पर एक प्रकार के असतोष के साथ, क्योकि वह अपने विचारों में सदा उग्र रहे ।

सुभाषबाबू आन्दोलन में लगे रहे और सरकार की कड़ी निगाह उनके ऊपर बनी रही । लाहौर काग्रेस में जब पूर्ण स्वतत्रता का प्रस्ताव पास हुआ तो उनको बहुत ही प्रसन्नता हुई और वह आन्दोलन करने लगे । फलस्वरूप सरकार ने उन पर मुकदमा चलाया और नमक-सत्याग्रह के पहले ही उन्हें जेल भेज दिया ।

सन् १९३० की ६ अप्रैल को राष्ट्रीय सप्ताह के प्रथम दिन गांधीजी ने डाडी मे नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह किया । देश के बहुत से लोग जेलो मे गये। महिलाएं भी बहुत बड़ी संख्या में जेल गई । सुभाषबाबू तो पहले से ही जेल मे थे । दुर्भाग्य से इसके पहले जे० एम० सेनगुप्त तथा सुभाषबाबू के बीच मतभेद चलने लग गया था । सुभाषबाबू जेल में रहने के कारण आंदोलन में प्रत्यक्ष भाग नहीं ले सके, लेकिन शायद अक्तूबर के महीने में सुभाषबाबू जेल से मुक्त हुए, उस समय देश के सभी नेता जेलों में थे । सुभाषबाबू के बाहर आने से एक नये उत्साह की लहर दौड़ गई और खासकर बगाल में फिर जोरों से काम होने लगा ।

सन् १९३१ की २६ जनवरी को कानून तोड़कर कलकत्ता के मोनुमेंट मैदान में स्वाधीनता का झडा फहराया गया । उस दिन के सत्याग्रह की बात सारे भारत

में बंगाल की अपनी शान की बात है। सरकार ने आंदोलन के मुख्य-मुख्य नेताओं को पहले से ही गिरफ्तार कर लिया था। सुभाषबाबू कारपोरेशन के मेयर थे, इसलिए वह एक दो दिन पहले से ही मेयर के कमरे मे जाकर बैठ गये। उन्हे गिरफ्तार नहीं किया जा सका और ऐन वक्त पर वह जुलूस के साथ मोनुमेंट पर झंडा फहराने के लिए निकले और बाद में यह जुलूस बहुत ही बड़ा हो गया।

इस जुलूस पर भयंकर लाठी चार्ज हुआ। सुभाषबाबू को गिरफ्तार करते समय तथा लाठी चार्ज में उनके हाथ की उगली टूट गई। सैकड़ो आदमी घायल हो गये, बहुत बड़ी संख्या मे लोग गिरफ्तार हुए। पुलिस के लाठी चार्ज और घुड़सवारों के प्रहार के बीच जाकर महिलाओ ने मोनुमेंट पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया और सैकड़ो की संख्या मे गिरफ्तार हुई। इस प्रकार वह स्वाधीनता-दिवस अपने ढग का अपूर्व, अनोखा था। प० मोतीलाल, जोकि उन दिनो बहुत बीमार थे और कांग्रेस के डिक्टेटर भी थे, जब बंगाल के इस दिवस की खबरे मिली तो बहुत प्रसन्न हुए, कारण इसकी योजना उनके परामर्श से बनाई गई थी। वह उस समय कलकत्ते मे इलाज करा रहे थे। यह सब सुभाषबाबू के नेतृत्व और लोक-प्रियता के कारण सम्भव हो सका। इसके बाद बहुत शीघ्र ही गाधी-इर्विन समझौता हो गया और उसके अनुसार सत्याग्रह के सारे कैदी छोड़ दिये गए। सुभाषबाबू भी जेल से बाहर आ गये। अब यह सवाल पैदा हुआ कि सुभाष बाबू गाधी-इर्विन समझौते को स्वीकार करते है या उसका विरोध करते है। सारा देश सुभाष की ओर देख रहा था।

उस समय बगाल काग्रेस की दो पार्टियो मे सेनगुप्त की पार्टी तो समझौते का समर्थन करती ही थी, इसलिए सुभाषबाबू का जो रवैया रहा था, उससे लोगो ने ऐसा माना कि शायद सुभाषबाबू समझौते का विरोध करेंगे। यह लम्बा किस्सा है और इसके भीतर बहुत बाते है।

सुभाषबाबू काग्रेस की विषय निर्वाचनी समिति मे बोलने को खड़े हुए तबतक कोई यह नहीं जानता था कि सुभाषबाबू समझौते का समर्थन करेगे, पर उन्होने व्यक्तिगत रूप से समझौते का विरोध करते हुए भी जब यह कहा कि देश की एक आवाज हो, काग्रेस का एक निश्चय हो और गोलमेज परिषद में हमारे एक प्रतिनिधि गांधीजी ही हो और उनकी आवाज ही काग्रेस की आवाज मानी जाय, तो सारा पंडाल तालियों से गूज उठा और लोग चकित रह गये, खासकर जो लोग भीतर-भीतर समझौते के विरोधी थे और किसीके नेतृत्व की खोज कर रहे थे, वे सब निराश हो गए और सर्वसम्मति से समझौते का प्रस्ताव पास हुआ। सेनगुप्त तथा उनकी पार्टी के लोग बड़े निराश हुए, क्योंकि वे यह मानते और दिखाना चाहते थे कि बंगाल मे वे लोग ही गाधीजी के तथा काग्रेस के समर्थक है और

नगण्य-सा जो विरोध है, उसपर वे विजय प्राप्त कर सकते हैं। सुभाषबाबू ने समझौते का समर्थन करके ये सब बातें व्यर्थ कर दीं। इस कांग्रेस के सभापति वल्लभभाई पटेल थे। जब वर्किंग कमेटी का चुनाव हुआ तो वर्किंग कमेटी में उन्होंने सुभाषबाबू को न लेकर सेनगुप्त को ही लिया। इससे इस समझौते के भीतर जो लोग थे, जिन्होंने इस बात का प्रयत्न किया था कि सुभाषबाबू गांधीजी का समर्थन करें, जो सुभाषबाबू को वर्किंग कमेटी में भी देखना चाहते थे, उनको बड़ी निराशा और दुःख हुआ, सुभाषबाबू भी इससे संतुष्ट तो नहीं थे। जो हो, सच कहा जाय तो सुभाषबाबू के साथ तो इस तरह का व्यवहार चाहे किसी कारण से हो, बराबर होता रहा। यह लम्बा प्रकरण है और इसकी बहुत सी बातें हैं, पर इतना तो निःसंदेह कहा जा सकता है कि सुभाषबाबू में किसीसे कम देश-भक्ति नहीं थी और उनका त्याग, उनकी योग्यता, उनकी कर्मशक्ति भी किसी से कम न थी। उनको हरिपुरा-कांग्रेस का सभापति बनाया गया। कांग्रेस के करांची अधिवेशन और हरिपुरा के बीच सात वर्ष का फर्क है। इस दौरान सुभाषबाबू का अधिकतर समय जेलों में और विदेश में बीमारी का इलाज कराने में बीता।

सुभाषबाबू के हिन्दी-प्रेम की एक बात यहां लिखना आवश्यक है। सुभाषबाबू हिन्दी लिख-पढ़ सकते थे, बोल सकते थे, पर वह इसमें बराबर हिचकते और कमी महसूस करते। वह चाहते थे कि हिन्दी में वह हिन्दीभाषी लोगों की तरह ही सब काम कर सकें। एक दिन उन्होंने कहा कि यदि देश में जनता के साथ राजनीति करनी है, तो उसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है। बंगाल के बाहर मैं जनता में जाऊं तो किस भाषा में बोलूं? इसलिए कांग्रेस का सभापति बनकर मैं हिन्दी खूब अच्छी न जानूं तो काम नहीं चलेगा। तुम एक मास्टर मुझे दो, जो मेरे साथ रहे और मेरा हिन्दी का सारा काम कर दे तथा जब मैं चाहूं और मुझे समय मिले तब मैं उससे हिन्दी सीखता रहूं। श्री जगदीशनारायणजी तिवारी को, जो मूक कांग्रेसकर्मी थे और हिन्दी के अच्छे शिक्षक थे, सुभाषबाबू के साथ रखा गया। हरिपुरा-कांग्रेस में तथा सभापति के दौरे के समय वह बराबर सुभाषबाबू के साथ रहे और बड़ी लगन से सुभाष बाबू ने हिन्दी सीखी और वह सचमुच बहुत अच्छी हिन्दी लिखने, पढ़ने और बोलने लगे। आजाद हिंद फौज का काम और सुभाषबाबू के भाषण प्रायः हिन्दी में ही होते रहे। यह सुभाषबाबू का एक ऐसा काम था, जो देश के लिए उचित है, और जिससे देश का सच्चे अर्थों में लाभ हो सकता है। सुभाषबाबू के जीवन की अनेक घटनाएं हैं, जिनको बहुत नजदीक से देखने का मौका मुझे मिला है। उन सब पर इस छोटे से लेख में प्रकाश डालना सम्भव नहीं हो सकता। यह कहा जा सकता है कि वह इस देश के एक बहुत ही प्रभावशाली सच्चे नेता थे।

दुःख इस बात का है कि वह गांधीजी को राजी नहीं कर सके। जो लोग

राजनीति के भीतर की बात जानते हैं, उन्हें पता है कि सुभाषबाबू को गांधीजी कितना प्यार करते थे और वह भी गांधीजी को कितना मानते थे। पर सुभाषबाबू कभी किसी के आगे समर्पण नहीं कर सके। वह 'अकेला चलो' के मूर्त्त रूप थे और अपने मन की बात करने के लिए उन्होंने कितना दुःख और कष्ट सहा, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। वह पुलिस के पहरे के बीच से गायब होकर देश की स्वाधीनता प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत के बाहर चले गये। कितना कष्ट, कितनी परेशानी और जोखिम उठाया उन्होंने अपनी मान्यताओं के लिए और बाहर जाकर कैसा अद्भुत संगठन किया आजाद हिन्द फौज का ! देश की स्वाधीनता के लिए इस बहादुर आदमी ने क्या नहीं किया; कौन से ऐसे कष्ट थे, जो उन्होंने नहीं सहे; कौन सी ऐसी जोखिम थी जो उन्होंने देश के लिए नहीं उठाई। होश संभालने के पहले दिन से तरुणाई की सारी हविस, घर का सारा सुख, सारा आराम, मां, भाई, बहनों का सारा दुलार, सारी आशाएं, सब कुछ छोड़कर जीवनपर्यंत इस तरुण तपस्वी ने देश-विदेश की खाक छानी, नाना प्रकार की यातनाएं सहीं और मान अपमान भी सहा। मुझे ऐसा लगता है कि सुभाष्वबाबू का नाम, नेताजी का नाम, शायद देश के सब सेनानियो से अधिक दिन जीवित रहेगा।

६ : धुन के धनी-राममनोहर लोहिया

डाक्टर लोहिया की मृत्यु से देश की राजनीति से स्वतंत्रता-संग्राम की जीवंत कड़ी टूट गई। स्वतंत्रता-संग्राम के बड़े योद्धा एक के बाद एक जा रहे हैं। केन्द्र के आज के कई बड़े वजीरों का स्वतंत्रता-संग्राम में हिस्सा रहा है, पर वे अग्रणी योद्धाओं में न थे। इसलिए आज एक पुराने आदमी को डा० लोहिया की मृत्यु से जो दुःख हुआ है, वह आज की नई राजनीति वाले व्यक्ति के दुःख से भिन्न है। पुराना आदमी डा० लोहिया को, स्वतंत्रता-संग्राम के आदर्शों को, नई राजनीति में प्रतिष्ठित करने वाले अग्रणी नेता के रूप में देखता है, जबकि नया आदमी उन्हें जड़मूल से क्रांति पैदा करने वाला मानता है। इन दोनों धारणाओं में साम्य है, क्योंकि स्वतंत्रता-संग्राम की लड़ाई को गांधीजी ने केवल अंग्रेज से लड़ने तक ही सीमित नहीं रखा था, उनका उद्देश्य भारतीय जीवन की जड़ता को भी समाप्त करना था।

स्वतंत्र होने बाद अंग्रेज से लड़ाई की बात खत्म हो गई, पर जड़ता की बात बनी रही। इस जड़ता को खत्म करने और भारतीय जीवन को चलायमान करने

के लिए डाक्टर लोहिया ने देश को बुनियादी समस्याओं के प्रति जागरुक किया। उनके तरीकों से मेरे जैसे लोग अपने खास किस्म के संस्कारों की वजह से पूरी तरह एकात्म नहीं हो सकते थे, उनके आदर्शों में गांधीजी की जो भनक मिलती थी, उसे नजरंदाज भी नहीं कर सकते थे। इसलिए मेरे जैसे लोगों का डा० लोहिया के प्रति रुख दूर से ही मुग्ध या आकर्षित होने का था। आज जब वह इतनी कम उमर में चले गये, तब यह आकर्षण और भी प्रबल हो उठता है और मन में गहरा अवसाद उमड़ता है कि एक ऐसा व्यक्ति, जो देश को स्वधर्म की ओर बढ़ा सकता था, चला गया।

गांधीजी ने एक बार कहा था जवाहरलाल चाहता है कि अंग्रेज चले जायं, पर अंग्रेजियत रहे, लेकिन मैं चाहता हूं कि अंग्रेज रहें और अंग्रेजियत चली जाय। आजादी के बाद रह-रहकर लगता है कि स्वतंत्रता का क्या यही अर्थ था कि अंग्रेजों के जाने के बाद हम उनके जैसे बन जायं। अंग्रेजियत और अंग्रेजी के प्रति मोह की भी एक हद हो सकती थी!

अंग्रेजियत और विदेशी सहायता के माहौल में डा० लोहिया ने स्वदेशी भाषा के सवाल को उसी परिप्रेक्ष्य में रखा, जिसमें गांधी जी ने रखा था। इस मामले में वह गांधीजी से एक कदम आगे ही रहे, क्योकि गांधीजी का दृष्टिकोण कहीं संत-महात्मा का भी होता था, जबकि लोहिया का दृष्टिकोण व्यावहारिक आदर्शवादी का था। डाक्टर लोहिया ने भाषा को जिन्दगी से जोड़ा, इसीलिए हिन्दी साहित्य में आगे जाकर वह उत्कृष्ट गद्य लेखकों मे भी गिने जायंगे। हिन्दी के नये लेखकों पर डाक्टर लोहिया की भाषा का असर दीखने लगा है।

डा० लोहिया का भाषा-सबंधी दृष्टिकोण उनके चिंतनशील व्यक्तित्व की खोज और उपज था। हमारे यहां समाजवादी और साम्यवादी विदेशी पोथियो और सिद्धांतो से इतने आक्रांत रहते हैं कि वे हमारे देश के अनुरूप सोच नहीं पाते। डा० लोहिया ने हिंदी से कहीं ज्यादा जर्मन और अंग्रेजी पढ़ी होगी। लेकिन उन्होंने इस पठन के दौरान हमारी जिन्दगी से विदेशी भाषाओं की दूरियों को नापा और जाना कि हमारे लिए ज्ञान और विकास अपनी ही भाषा से संभव है। भाषा के बारे में उन्होंने हमारे विचारों में गहरा परिवर्तन किया है। आज शायद अंग्रेजी-प्रेमियों के शोर-शराबे और देश की भ्रष्ट राजनैतिक स्वार्थपरता की वजह से भाषा का सवाल पेचीदा क्यों न हो जाय, पर स्थिति एक दिन स्पष्ट होकर रहेगी। अंग्रेजी के समर्थन की तरह-तरह की बातें आज वैसी ही लगती है जैसी कि 'होमरूल' और 'डोमिनियन स्टेटस' आदि की बातें पहले लगा करती थीं। लगता है, अभी भी हमारे देश में गुलामी की गहरी तलछट रह गई है। एक दिन हिन्दुस्तान ने पूरी आजादी का संकल्प किया था और एक दिन वह निश्चय ही पूर्ण रूप से अपनी भाषा को स्थापित करने का भी संकल्प करेगा। आज अंग्रेजी के हिमायती

डाक्टर लोहिया की भाषा-संबंधी मान्यताओं को चुनौती देने में असमर्थ हैं और वे उसपर पीछे से तथा बगल से प्रहार करते हैं, जनसंघ की साम्प्रदायिकता तथा देश में फूट का हौवा खड़ा करके । पर डा० लोहिया की हिन्दी-भक्ति और जनसंघ की हिन्दी-भक्ति का फर्क वैसा ही है, जैसा कि कृष्ण मूर्ति के प्रति मीरा की भक्ति में और चढावा पाने वाले पुजारी की भक्ति में है ।

यह एक मजे की बात है कि भक्ति के मामले में डाक्टर लोहिया के व्यक्तित्व में सगुण और निर्गुण दोनों बातें मिलती हैं । उनका औघड़ जीवन निर्गुण था, जबकि राजनीति सगुण । औघड़ जीवन उन्होंने पिता श्री हीरालालजी से विरासत में पाया था । हीरालालजी का राष्ट्रीय आन्दोलन में बड़ा हिस्सा रहा । नमक-सत्याग्रह के समय धरासणा के नमक-धावे में उनकी सक्रिय भूमिका थी । हीरालाल जी जैसे निस्पृह और औघड़ व्यक्तियों को तो हमारा समाज अनायास ही कभी मौके बेमौके याद करता है, पर उनके जैसे ही लोगो के बूते पर आजादी की यह इमारत खड़ी है ।

१९४२ से पहले डा० लोहिया की देश की राजनीति में भूमिका पृष्ठभूमि में रही । १९४२ में वह केवल बत्तीस वर्ष के ही थे, पर इससे पहले कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के भीतर वह आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण और मेहरअली जैसे लोगों के साथ स्वातंत्र्य आंदोलन को तर्कसंगत, बुद्धिवादी और वैज्ञानिक आधार प्रदान करने की चेष्टा में जुटे रहे । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के विदेश विभाग के वह सचिव बने । उन दिनों की याद आने पर लगता है कि घोर साधनहीनता के बावजूद कांग्रेस का विदेश विभाग आज के हमारे विदेश मन्त्रालय से कहीं अधिक सक्रिय और जागरूक था । १९४२ की लड़ाई के दौरान डा० लोहिया की भूमिका चिंतक और बुद्धिवादी के अलावा कर्मवीर की भी थी । चिंतन से कर्म की ओर उनका रुझान बढ़ता ही गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि १९४८ की बाद की राजनीति में उनके जैसा सक्रिय नेता विरला ही हुआ है । देश के बुद्धिजीवियों और चिंतकों के लिए डा० लोहिया का जीवन अनुकरणीय है, क्योंकि हमारे देश में कर्म के बिना चिंतन एकदम अर्थहीन और निःसार है । लगता है, देश में आज भ्रष्टाचार, आदर्शहीनता और मूल्यहीनता का जो बोलबाला है, उसमे राजनीति किसी दिशा में नहीं चल पा रही है । वह गड़बड़ाती हुई चलती है और ऐसा लगता है कि वह हमें गर्त में ले जायगी । विदेशी सिद्धांतों के किताबी आधार पर हमने इन वर्षों मे जो किया, उसका नतीजा आज सामने है । ऐसे में डा० लोहिया देश को दिशा प्रदान कर रहे थे । अगर हम उस दिशा मे चले, तो इतिहास में उनका क्या स्थान होगा, यह कहने की जरूरत नहीं ।

संस्कृति और साहित्य की विभूतियां

१: साधु वैज्ञानिक प्रफुल्लचंद्र राय

पिछली सदी ने हमें अनेक महापुरुष दिये। हर दिशा में, देश के हर प्रांत में अनेक ऐसे लोग पैदा हुए जिनकी तुलना सहज ही दूसरो से नहीं की जा सकती। बंगाल में तो विज्ञान, शिक्षा, साहित्य, कला, इतिहास, न्याय, कानून आदि अनेक विषयों में विशेष-विशेष लोग पैदा हुए। इन विशेष लोगों में से कई की शताब्दियां हमने मनाई हैं और आगे मनाई जायंगी। इन्हीं महापुरुषों में आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय का नाम विशेष भाव से लिया जा सकता है। आचार्य पी० सी० राय ने विज्ञान में बहुत बड़ा काम किया, यही उनकी विशेषता नहीं है। वह बहुत बड़े वैज्ञानिक तो थे ही, विज्ञान की उन्होंने बड़ी सेवा की है, इस सर्वमान्य बात के अलावा वह एक साधु पुरुष थे, देश-सेवक थे, बहुत बड़े शिक्षाविद् थे। वह सरल, सादे-सच्चे, निरभिमानी और भोले स्वभाव के आदमी थे। जिन लोगों ने उन्हें नजदीक से देखा है, वे जानते हैं कि उनका बच्चों जैसा स्वभाव था। उन्होंने जो कमाया, उसका इतना कम हिस्सा अपने लिए खर्च किया कि देश का साधारण से साधारण आदमी भी उससे कुछ ज्यादा ही करता होगा। मैंने सुना है कि वह अपने लिए केवल पच्चीस रुपये महीने लेते थे, बाकी सब का सब विद्यार्थियों और देश के काम में लगाते रहे। उन्होने कभी अच्छे कपड़े नहीं पहने, गाड़ी, मोटर आदि कोई वाहन अपने लिए नहीं रखा, यहां तक कि बहुत वृद्ध हो जाने पर अपनी सेवा या अपने खुद के काम के लिए कोई नौकर नहीं रखा। इस का एक उदाहरण देना उपयुक्त होगा। वह काफी वृद्ध हो गये थे। आंखों से कम दिखाई देने लगा था और रात में थोड़ी घबराहट सी भी होती थी। उनके पास कोई आदमी था नहीं, विवाह उन्होंने किया ही नहीं था। उनके अनेक शिष्य थे, जिन्होंने विज्ञान की शिक्षा उनके चरणों में बैठकर प्राप्त की थी। उनमें से कई तो बहुत बड़े-बड़े लोग भी थे। श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त उनके बहुत प्रिय शिष्यों में थे। सतीशबाबू के त्याग, तप और काम के बारे में कहा या लिखा जाय तो वह एक बहुत बड़ा लेख या पुस्तक हो सकती है, पर यहां तो केवल इतना कहना पर्याप्त होगा कि बंगाल में गांधीजी के सबसे बड़े अनुयायी वही हैं। श्री सतीशबाबू से उन्होंने कहा,

"सतीश, आमा के एकटी लोक दावो जे रात्री ते आमार काछे थाकते पारे।"[1]

सतीश बाबू ने एक अपना परखा हुआ आदमी उनके पास भेज दिया। वह आदमी रात में उनके पास सोया। सुबह उठे तो उस आदमी से कहा, "तुम जाओ।" उसने बड़ी नम्रता से कहा कि सतीशबाबू ने मुझे आपकी सेवा करने को भेजा है, तो कहने लगे, "दिने तो आमार किछु कष्टों नाई दिने तोमाके केनो राखबों।"[2]

इसी प्रकार एक दिन मैं जमनालालजी को लेकर उनके पास गया तो नारियल की रस्सी की खाट पर दरी बिछाकर लेटे हुए थे। तीन कुरसियां पड़ी थीं, जिनमें एक काठ की थी, दो लोहे की। वह कुरसियां बहुत ही घटिया थीं। जमनालालजी का हाथ पकड़कर कहने लगे, "तुमी ओई काठेर चेयरे ते बोसो एई आमार ड्राइंग रूम।"[3] मुझे तो हाथ पकड़कर अपनी उस खाट पर ही बैठा लिया और कहा, तुमी तो घरेर लोग एखाने बोसों[4]। फिर एक कोने में स्टोव पड़ा था। कहने लगे, "एइ आमार किचन।"[5]

सन १९२८ की बात है। नागपुर विश्वविद्यालय ने उनको दीक्षांत भाषण देने के लिए बुलाया था। वह यहां गये तो उनको मालूम हुआ कि गांधीजी वर्धा में हैं। उन्होंने गांधीजी से मिलने की इच्छा प्रकट की और बापूजी ने उनको बुला लिया। संयोग से मैं भी वहीं था। सुना आचार्य राय वहां आने वाले हैं, तो जमनालालजी के साथ बापूजी के पास चला गया। बापूजी तो नीचे जमीन पर एक छोटी सी गद्दी पर बैठते थे, उसपर ही बैठे रहे। लेकिन आचार्य राय के लिए एक चौकी अपने पास रखवाई, तो जमनालाल जी ने पूछा, यह क्यों रखवाते हैं? बापूजी हँसे और बोले कि आचार्य राय तो सम्माननीय है न, उनको ऊंचा बैठाना चाहिए, पर वह बात करते समय इतने भावमय हो जाते हैं कि सामने वाले के शरीर पर हाथ मारकर बात करने लगते हैं। आचार्य राय आये, बापूजी ने खड़े होकर उनका स्वागत किया और उस चौकी पर उनको बैठाया। बातचीत होने लगी, तो वही हुआ जो बापूजी ने कहा था। आचार्य राय ने जब अपना हाथ मारने के लिए बापूजी की तरफ किया तो बापूजी ने कहा कि आप चाहें जितना हाथ मेरी ओर करें, वह मेरे तक पहुंच नहीं पायगा। इसका इन्तजाम मैंने पहले से आपको चौकी पर बैठाकर कर लिया है और चौकी को इतनी दूर रखा है कि आपका हाथ मुझ तक नहीं पहुंच पावे। आचार्य राय बहुत हँसे और बापूजी तो मुक्त हँसी हँसने के आचार्य ही थे। बड़ा अच्छा विनोद रहा। इसी प्रकार

---

१. सतीश, मुझे एक ऐसा आदमी दो, जो रात को भी पास रह सके।

२. दिन में तो मुझे कोई कष्ट नहीं, सो मैं दिन में तुम्हें क्यों रखूं?

३. तुम काठ की कुर्सी पर बैठो, यही मेरा ड्राइंग रूम है।

४. तुम तो घर के ही आदमी हो।

५. यही मेरा रसोई घर है।

की अनेक घटनाएं हैं । एक मीटिंग का हम लोगों ने उनको सभापति बनाया । मैंने कहा, "मैं आपको लेने के लिए गाड़ी लेकर आ जाऊंगा ।" बोले, "आमी कि जमाई जाके गाड़ी पठाते होय निए जेते होय ।"[1]

फिर बोले, "आमार एकटी बन्धु विकाले आमार जोने गाडी पाठाय ओई गाडी ते आमी समय मोतो नीजे ही एसे जावो ।"[2]

इसी प्रकार एक दिन उनसे मैंने और स्वर्गीय भाई बसंतलाल मुरारका ने कुछ बातें करने के लिए समय मांगा तो बोले कि, रेड रोड स्टेच्यू पर मैं शाम को सात बजे एक बन्धु की घोड़ा-गाड़ी में जाता हूं, वहां आ जाओ। हम लोग गये एक खादी का दुपट्टा, जो वह रखते थे, उसको बिछाकर लेटे हुए मिले । एक-दो आदमी पास बैठे थे । आचार्य राय के कपड़े साधारण होते थे। एक खादी की धोती, जो घुटनों से बहुत थोड़ी सी ही नीची रहती और एक खादी का कोट और एक दुपट्टा या चादर, जो कह लीजिये । ये तीनों कपड़े सदा एक से नहीं रहते थे । दुपट्टा धोया हुआ है, तो धोती मैली है, धोती साफ है, तो कोट मैला है । शायद ही सब कपड़े वे एक साथ कभी बदलते थे । उनको कपड़ों का या अन्य ऐसी बातों का ख्याल नहीं रहता था । दाढ़ी अपने आप कैंची से काट लेते थे। नाई को शायद ही कभी बुलाते । रंग उनका हमारे राजेन्द्रबाबू जैसा था। लम्बे तो थे, पर दुबले-पतले थे । दाढ़ी रखते थे, पर बहुत छोटी और बेतरतीब। सिर के बाल वैसे ही, सफेदी में कुछ कालीं लिए हुए, यानी उनको देखकर कोई भी आदमी कल्पना नहीं कर सकता कि यह आदमी आचार्य पी० सी० राय हैं।

एक बार हम लोगों ने उनसे हावड़ा में एक पुस्तकालय का उद्घाटन कराया तो उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा-- मैं पुस्तकालय की उपयोगिता को जानता हूं, इसलिए पुस्तकालय का उद्घाटन करने आ गया । आज जो 'नेशनल लाइब्रेरी' है, उसका नाम उन दिनों 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' था । कहने लगे कि इस लाइब्रेरी की ओर से यदि यह इनाम घोषित किया जाय कि इसकी सबसे अधिक किताबें पढ़ने वाले को प्रथम पुरस्कार दिया जाएगा तो वह मुझे मिलेगा। मैं वर्षों से इस लाइब्रेरी की पुस्तकों का बहुत बड़ा स्थायी पाठक रहा हूं। इसलिए मुझे मालूम है कि पुस्तकालय कितना उपयोगी है और उससे कितने लोग कितना ज्ञान बढ़ा सकते हैं । वे इतने भोले थे कि कुछ कहते नहीं बनता । एक दिन की बात है मैं और भाई बंसतलालजी उनके पास गये । वह साइंस कालेज की सीढ़ियों पर मिल गये। कहीं बाहर जा रहे थे । प्रणाम किया । हम लोगों के साथ-साथ कुछ

---

[1] क्या मै जगाई हूं जिसके लिए गाड़ी भेजने की जरूरत होती है ।

[2] मेरा एक दोस्त शाम को मेरे लिए गााड़ी भेजता है, उसी गाड़ी में मै समय पर अपने-आप आ जाऊंगा ।

लड़कियां भी सीढ़ियों पर चल रहीं थीं। रुक गये और उन लड़कियों की ओर हाथ करके याने उनके हाथ को पकड़कर कहने लगे, "आजकल कार मेयरा छेले चायना"[1] और भी कुछ कहा। लड़कियां हँसने लगीं। वह इतने निर्दोष थे कि वह क्या कहते हैं, इसका कोई आदमी बुरा नहीं मानता था। एक बार कहने लगे कि लोग कहते हैं कि मैं मारवाड़ियों का विरोधी हूं। मैं कहता हूं कि मैं मारवाड़ियों का प्रशंसक हूं। बंगालियों से कहता हूं कि तुम इनके जैसे बनो, नहीं तो इनके सामने बच नहीं सकोगे। एक बंगाली नौजवान पास ही खड़ा था। उसके पेट में हाथ का घूंसा-जैसा मारकर कहने लगे कि इसका पेट खाली है। यह भरना नहीं जानता। यह बचेगा नहीं। इसको एक हजार रुपया उधार दे दिया जाय और कह दिया जाए कि इस रुपये से व्यापार करो और कमाओ तो जानते हो यह क्या करेगा? दो कप चाय पीता था तो चार पीने लगेगा इसके पास दो चार दोस्त है, तो दस पांच आने लगेंगे। एक खबर का कागज पढ़ता था, दो पढ़ने लगेगा। जब तक वे रुपये रहेंगे, इसका ऐसा ही चलेगा। तुमको एक हजार रुपया दे दिया जाय और कह दिया जाय कि इन रुपयों से व्यापार करो तो तुम शाम को हिसाब करके देखोगे कि एक हजार एक है कि नौ सौ निन्यानवे है यदि नौ सौ निन्यानवे है, तो तुम रात मे अच्छी रोटी नहीं खाओगे। दूसरे दिन अधिक परिश्रम करने और अधिक बचाने की कोशिश करोगे, जिससे वे नौ सो निन्यानवे न हो, एक हजार एक हों। मैं इस कंगाल भूखे बंगाली से कहता हूं कि तुम मारवाड़ी से बचो और इसका अनुकरण करो। तुम्हारी जातिवाले कहते हैं कि मै मारवाड़ी का विरोधी हूं। इसी प्रकार की अनेक बातें मौके-मौके पर उनसे हो जाती। सारी बातें प्रायः व्यक्तिगत ही हैं और ऐसे संस्मरण व्यक्तिगत ही होते हैं।

सन् १९३६ की बात है। मेरी लड़की का विवाह था। मेरी इच्छा थी कि आचार्य राय उसमें अवश्य आयें और सबसे पहला आशीर्वाद लड़के-लड़की को वह दें। उनसे ऐसा कहने में संकोच होता था। वह वृद्ध तो थे ही, साथ ही ऐसे कामों में कम जाते थे। मैंने सतीशबाबू से कहा कि आप मेरी ओर से उचित समझें तो कहे। उन्होंने कहा और वह खुशी-खुशी आये। उनको ही सबसे पहले लड़की-लड़के ने प्रणाम किया, तो उन्होंने जो आशीर्वाद दिया वह अपने आप में इतना महान है कि आज भी वह दृश्य और वे वाक्य मै भूल नहीं पाता। उन्होंने सिर पर हाथ रखकर दो वाक्य कहे 'धर्मे थाको, सुखे थाको।'[2]

आचार्य राय अपने जीवन में स्वदेशी भावना और परदुःखकातरता के मूर्तिमान स्वरूप थे। उन्होंने अनुभव किया कि देश में सभी चीजें परदेश से आती हैं, उनके

---

१. आजकल की लड़कियां लड़के नहीं चाहती।

२. धर्म में रहो, सुख से रहो।

स्थान पर स्वदेश की बनी चीजें काम में लाई जायं । एक वैज्ञानिक के नाते पहली प्रतिक्रिया विदेशी दवाओं के बारे में हुई । इसलिए उन्होंने बंगाल केमिकल की स्थापना की । शायद बंगाल केमिकल भारत में दवाओं तथा केमिकल का सबसे पुराना प्रतिष्ठान है । इसके अलावा वह प्रत्येक भारतीय वस्तु के प्रचार-प्रसार का प्रयत्न करते थे । दुर्भाग्य से बंगाल बाढ़ का क्रीड़ा-स्थल रहा है । यहां बाढ़ और अकाल अनेक बार आते हैं । मुझे जहां तक याद है, आचार्य राय के जीवन में ऐसा एक भी मौका नहीं आया जबकि अकाल और बाढ़ के समय उन्होंने बड़े से बड़ा संगठन करके लाखों रूपयों के सामान से सहायता न की हो । ऐसा हो गया था कि बहुत से गलत लोग भी आचार्य राय का चित्र तथा उनके नाम की अपील लेकर बाढ़ और अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए रास्तों में खड़े हो जाते थे । एक बार की बात है कि श्री घनश्यामदासजी बिड़ला आफिस से बाहर जा रहे थे । रास्ते में आचार्य राय के नाम से लोग गाना गाते हुए अकाल के लिए चन्दा मांग रहे थे । श्री घनश्यामदासजी की गाड़ी के पास वे आये तो उन्होंने सोचा कि इनको क्या दें, पाकेट में रुपये नहीं थे । अपनी घड़ी खोलकर उनको दे दी । दूसरे दिन रु० १००१ के साथ एक पत्र लिखा कि कल शाम को आपकी ओर से चन्दा मांगने वाले लोग मुझे रास्ते के मोड़ पर मिले । मैंने अपनी घड़ी उनको दे दी । यह एक हजार रुपये भेज रहा हूँ । वह घड़ी भिजवा दीजिए । आचार्य राय ने लिखा कि मैंने तो कोई ऐसे लोग नहीं भेजे हैं, जो रास्ते में चन्दा मांगे और मैं इस बात का सार्वजनिक रूप से खण्डन भी कर रहा हूं। इस प्रकार आचार्य राय का नाम ही संकट-त्राण हो गया था ।

आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय से मानवता सुन्दर होती थीं, उनकी सेवाएं और उनकी देन तथा सबसे बड़ी उनकी सरलता, साधुता, हर आदमी को पवित्रता की ओर ले जाती थी ।

२ : प्रो० कर्वे-दम्पति

प्रोफेसर कर्वे के दर्शनों की तथा उनका आश्रम और कालेज देखने की मेरी कई वर्षों से इच्छा थी । इस बार (१९३८ में) पूना जाने का मौका मिला, तो वहां पहुंचते ही मैं सबसे पहले अपनी लड़की पन्ना के साथ उनके दर्शनों के लिए गया । पूना से चार पांच मील पर हिंगणे नामक गांव में सन् १९०० ई० में कर्वेजी ने इस आश्रम की स्थापना की थी । उस समय जिस छोटी सी कच्ची झोंपड़ी

में इसकी स्थापना हुई थी वह भी हम लोगों ने देखी । आज तो इस स्थान पर एक विशाल भवन, कई बोर्डिंग-हाउस, बालिकाओं के खेलने के लिए बहुत बड़ा उद्यान तथा सभा-हाल आदि कई आकर्षक इमारतें तथा नाना तरह की दूसरी चीजें बनी हुई हैं । जिस समय यह प्रयत्न शुरू किया गया था, उस समय चारों ओर अन्धकार था और उसमें प्रकाश फैलाना बहुत ही दुष्कर कार्य था; लेकिन महापुरूषों की तपश्चर्या का फल बिना हुए नहीं रहता । साधारण लोग तो चीज का स्थूल रूप सामने आने पर ही उसे पहचानते है; परन्तु त्यागी और सच्चा काम करने वाला आदमी किस इच्छा और भावना के साथ काम शुरू करता है, उसमें किस लगन के साथ जुट जाता है, मुसीबते उठाता हुआ किस तरह उस चीज को अपने लक्ष्य तक ले जाता है तथा किस तरह मुसीबतों और विघ्न-बाधाओं के समय भी अपने मन में कल्पना द्वारा सुखद और सुन्दर स्वप्न देखा करता है, इसको वही जानता है । छोटे से बीज के अन्दर जिस तरह एक वट वृक्ष और सारे फल समाये हुए रहते है, उसी तरह उस तपस्वी कर्मयोगी के मन मे ये चीजे समाई हुई रहती हैं । वह अपनी कल्पनाओं द्वारा छोटे से बीज में बड़े से वृक्ष की शीतल छाया और सुन्दर फल देखा करता है और उसमे सुखी रहता है । अपनी कल्पनाओं द्वारा आकाश में विचरण करता हुआ वह बल प्राप्त करता है और उसी बल से वह अपने मार्ग की कठिनाइयो को धैर्यपूर्वक सहता हुआ अपने लक्ष्य स्थान पर जा पहुंचता है ।

स्वर्गीय लाला देवराजजी की तरह श्री कर्वेजी को भी बहुत से विरोधो का सामना करना पड़ा है । कितनी कठिनाइयां आई, लेकिन ये लोग अपनी आशा और श्रद्धा के बल पर साहस और धैर्यपूर्वक डटे रहे और उसी के फलस्वरूप आज जालन्धर और पूना मे संस्थाओ के रूप मे मातृ-जाति उन्नति के लिए दो महान् अनुष्ठान खड़े कर दिये है । जिस तरह बंगाल मे सती-प्रथा के विरूद्ध कानून बनाकर राजा राममोहन राय और विधवा-विवाह के बारे मे कानून बनाकर पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने मातृ-जाति का बहुत बड़ा उपकार किया और आज मातृ-जाति के भक्तो के उपास्य देव बन गये है, उसी तरह, बल्कि उससे भी अधिक पंजाब के लाला देवराजजी और महाराष्ट्र के कर्वे महाराज प्रत्येक मातृ-सेवक के उपास्य देव बने हुए हैं ।

हिंगणे का आश्रम हम लोगों ने देखा । हमें वह बहुत ही अच्छा लगा । उसका पूरा विवरण लिखने के लिए बहुत समय और श्रम चाहिए । हमें तो यहां कर्वे महाराज के दर्शन का ही संस्मरण लिखना है, इसलिए उसे छोड़ देते हैं। वहां से महिला-कालेज में आये, जो हिंगणे जाते समय रास्ते में ही पड़ता है । यहीं कर्वे-दम्पति रहते हैं । हमें उनके दर्शनों की बड़ी तीव्र इच्छा थी। इसलिए कालेज के अहाते में प्रवेश करते ही हमने यह जानने की कोशिश की कि वे कहां है । कालेज

तो बन्द था, लेकिन वहां चपरासी ने हमें इशारे से बताया कि वह उस जगह हैं। चपरासी के बताये हुए छोटे से टीन के घर के पास पहुंचे, तो सामने ही एक बहुत सादी-सी बूढ़ी स्त्री, जिसके सब बाल सफेद हो गये थे, कमर झुक गई थी, चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं, बैठी मिली। हमने अनुमान से समझ लिया कि ये श्रीमती कर्वे होंगी। हमारा अनुमान सच निकला। हमारे प्रणाम करने पर उन्होंने मराठी में पूछा– कहिए क्या काम है ? हम लोगों ने कर्वे महाराज के दर्शन की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने कहा कि वे सोये हैं। तुम लोग एक दो मिनट ठहरो, मैं उन्हें जगाती हूं। जब हमने कहा कि नहीं माता जी, उन्हें जगाइए नहीं, हम लोग थोड़ी देर ठहर जाएंगे, उनको तकलीफ नहीं होनी चाहिए, तो उन्होने बड़ी सरलता से कहा–तकलीफ किस बात की, यह तो हम लोगों का काम ही है। भीतर जाते ही उन्होंने हमें तुरन्त बुला लिया। इस घर में ये दम्पति निवास करते हैं, केवल दो कमरे हैं। रसोई आदि सब काम उसी में होता है। वहां पर एक बेंत की कुर्सी, दो लोहे की पुरानी खाट, रसोई के थोड़े बर्तन और कुछ कपड़ों के सिवा हमने कुछ नहीं देखा। शायद एक-दो किताबें भी थीं। खाटों पर जो कपड़े बिछे हुए थे, वे पांच-सात वर्ष पहले के बनाये हुए जरूर होंगे। शायद इससे भी ज्यादा पहले के हों। कर्वे महाराज एक खाट पर बैठे थे। बहुत दुबले नाटे कद के इतने सरल और सीधे हैं कि अपने आपको तो कुछ भी नहीं समझते, यानी पूरे-पूरे निरभिमानी हैं। ऐसे महापुरुष को तथा इनके रहन-सहन को देखकर हम चकित से हो गये और हमारा हृदय और मन बार-बार इनके चरणों पर झुकने लगा। मन में कल्पना हुई कि कितना सादा और सरल कोई दूसरा महापुरुष भी हमने देखा है या नहीं ? तो बंगाल के आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय याद आये। कुछ देर तक उनसे बात होती रही। हिंगणे के आश्रम के बारे में, महिला कालेज के बारे में तथा वहां की शिक्षा के बारे में बातें हुईं। इतने में माताजी ने पन्ना और मेरी छोटी बच्ची विजय को कुंकुम लगाया और हम सब को नारियल के खोपड़े का चीनी मिलाया हुआ चूरा प्रसाद के रूप में दिया। न मालूम श्रद्धा का कारण था या उन पवित्र हाथों की खास बात थी, यह प्रसाद हमे इतना स्वादिष्ट लगा कि कुछ कहते नहीं बनता।

कर्वे महाराज ने कहा कि कालेज तो बन्द है और सब लोग बाहर चले गये हैं, पर तुम लोगों को यहां की सब चीजें दिखाता हूं। मैंने कहा कि महाराज, आप कष्ट न करें तो वे ही शब्द, जो माता जी ने कहे थे, फिर निकले कि तकलीफ किस बात की यह तो हमारा काम है। इन अस्सी वर्ष के बूढ़े दम्पति का उत्साह, इनकी सेवा का संकल्प कितना दीर्घ, कितना महान् तथा शिक्षाप्रद है। कर्वे महाराज उठे और अपनी चप्पल पहनी, जो कम-से-कम चार-पांच जगह सिलाई की हुई थी न मालूम वह कितने दिनों से चल रही है। मैं यह सब बातें सच लिख रहा हूं,

इसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है। इस दम्पति ने सचमुच में महात्मा गांधी के दरिद्र-नारायण की पूजा करना सीखा है। सब साधनों का जोगाड़ करते हुए एक महान् संस्था का निर्माण करते हुए कितना सादा और कितना सरल जीवन यापन करने का व्रत ले रखा है। उनके साथ महिला कालेज देखने गये। प्रत्येक चीज उन्होंने दिखाई तथा समझाई। कालेज की बातों का विवरण हम यहां नहीं देंगे। हमारा उद्देश्य तो कर्वे महाराज के दर्शन का वर्णन करना है।

वहां से लौटने के बाद फिर उस टीन के घर में आकर हम लोग बैठे, तो माताजी ने कहा कि मुझे बाहर जाना है, क्या तुम लोगों के साथ चल सकती हूं? हम लोगों को तो गुड़ में गोविन्द मिल गये। कर्वे महाराज को प्रणाम करके माताजी के साथ वहां से विदा हुए और रास्ते में उनसे बातें होती रहीं। माताजी ने कहा कि मैंने आज से चालीस वर्ष पहले नर्सिंग पास किया था और नर्स का काम करती थी। मैंने उनसे प्रार्थना की कि आप और कर्वे महाराज एक बार कलकत्ता आयें तो उन्होंने कहा कि हम लोगों के पास पैसे कहा हैं? मैंने अपनी मूर्खता से कह दिया कि इसका प्रबन्ध तो हम लोग कर लेंगे, तो उन्होंने कहा कि हम तो दूसरों का पैसा संस्था के लिए ही लेते हैं। इस प्रकार यह यात्रा समाप्त हुई। इस महान अवसर की स्मृति मन पर सदा अंकित रहेगी।

३ : विश्वकवि रवीन्द्रनाथ

गुरुदेव के प्रथम दर्शन

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दर्शन मैं सन् १९३४ के पहले न कर सका। सन् १९३४ की ६ अक्तूबर को बनारसीदासजी चतुर्वेदी के साथ मारवाड़ी बालिका विद्यालय की कुछ लड़कियों और अध्यापिकाओं को लेकर गुरुदेव के दर्शनों को गया और ७ तारीख को गुरुदेव के दर्शन हुए। गुरुदेव के प्रथम दर्शन से, बातचीत से, मेरे दिल पर जो प्रभाव पड़ा, वह उस दिन की डायरी से यहां दे रहा हूं :

शान्तिनिकेतन की अन्य चीजें देखने के बाद ३ बजे बनारसीदासजी और लड़कियां तथा मैं गुरुदेव के कमरे में ले जाये गए। जिस कमरे में गुरुदेव बैठे थे, उसकी दीवारों पर गुरुदेव के हाथ के बनाये हुए चित्र अंकित थे। फर्श से चार-पांच फुट ऊंचे तक शीतलपट्टी काठ के फ्रेम में लगी हुई थी। गुरुदेव जिस आसन पर बैठे थे, उसपर हाथ की कारीगरी का काम किया हुआ था और सामने सुन्दर फूलों का गुलदस्ता था। जितनी चीजें वहां थीं, वे सब की सब कला की द्योतक

थीं । गुरुदेव रेशमी कुर्ता पहने, दूध की तरह सफेद बाल और सुन्दर चेहरा, बड़ी-बड़ी आंखें, विशद ललाट और लम्बी सफेद दाढ़ी-ऐसी उस सौम्य मूर्ति को देखकर किसी प्राचीन ऋषि का स्वाभाविक रूप से स्मरण हो आता था ।

हम लोगों ने चरण छूकर गुरुदेव को प्रणाम किया । उन्होंने प्रेम-भरी दृष्टि से देखते हुए कहा- "बोसुन ।" उनकी दृष्टि में आकर्षण था और स्वर में माधुर्य। कुशल-समाचार पूछने के बाद शांतिनिकेतन के बारे में कहने लगे -"यह संस्था ही मेरा जीवन है, मेरा सब कुछ यही है । इसकी उन्नति के लिए मैं जीता हूं । मैंने अपना सब कुछ शांतिनिकेतन को दे दिया । नोबेल पुरस्कार के रुपये शांतिनिकेतन को दिये । मेरी पुस्तकों से जो आय होती है, वह शांतिनिकेतन की ही है । जमींदारी की आय का बहुत-सा हिस्सा भी शांतिनिकेतन में चला जाता है । आजकल जमींदारी की आय कम हो गई है । पुस्तकों की आय भी कम होने लगी है; इसीलिए शांतिनिकेतन पर कर्ज हो गया है । इस संस्था के बोझ से मैं दबा जा रहा हूं । जो हो, मुझे यह बोझ लेकर चलना है । मैं मद्रास जा रहा हूं । इस तिहत्तर वर्ष की उम्र में मैं बाहर नहीं जाना चाहता । आज मुझमे न तो शक्ति है और न इच्छा है कि नाच-गान की पार्टी लेकर फिरूं । पर क्या करूं ? शांतिनिकेतन के लिए धन चाहिए। देशवासी मुझे यहां बैठे -बैठे धन नहीं देते । वे मेरा नाच-गान और कविता सुनना चाहते है । मै वही करूंगा । शांतिनिकेतन पर सत्तर हजार का कर्ज है । उस कर्ज को चुकाना चाहता हूं । मै शांतिनिकेतन, विश्वभारती को बंगाल की नहीं, भारतवर्ष की नहीं, संसार की संस्था मानता हूं और चाहता हूं कि यह संस्था संसार के तमाम लोगों की संस्कृति का आदर करे और भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करे । यहां पर सभी संस्कृतियों और भाषाओं के विद्वान रहें और अपनी-अपनी संस्कृतियों का अन्वेषण और उन्नति करें । आज से कई वर्ष पूर्व यहां हिंदी की पढ़ाई शुरू की गई थी । इसके लिए हमें मद्रास से सहायता मिला करती थी । उसके बन्द होने पर श्री शिवप्रसाद गुप्त छः सौ रुपये साल सहायता दिया करते थे । आजकल वह भी बंद है । पर मैं हिन्दी की पढ़ाई कैसे वन्द कर सकता हूं ? हिन्दी के अच्छे विद्वान हजारीप्रसादजी द्विवेदी हमें मिल गये हैं । उनको मै कैसे छोड़ सकता हूं ? यहां हिन्दी के लिए अच्छी से अच्छी व्यवस्था हो, हिन्दी की स्थायी सीट हो, एक हिन्दी-भवन हो और सुन्दर पुस्तकालय हो । तुम्हारी जाति धनी है । यदि ठीक समझो और कर सकते हो, तो इस काम को करना ।"

कवि के हृदय में दर्द था, वेदना थी और था हिन्दी के लिए प्रेम । फिर वह लड़कियों को सम्बोधन कर कहने लगे–"तुम तो जननी हो । तुम्हारे हृदय में प्रेम, दया और सेवा भरी हुई है । तुम्हारे लिए सभी अपने हैं । तुम किसी की बुराई नही कर सकतीं । तुम सबको प्यार करती हो, भेद-भाव रहित सेवा करती हो, क्योंकि तुम जननी हो ।" कवि ने और भी बहुत-कुछ कहा । पर मै तो उनकी

भावना और स्वर-लालित्य में अपने को इतना खो चुका था कि कुछ पता ही नहीं चला ।

इतना बड़ा महापुरुष, जिसने हमारे इस गिरे हुए देश का स्थान संसार में ऊंचा किया, जिसकी लिखी पुस्तकों का, कविताओं का संसार के बड़े-बड़े विद्वान आदर करते हैं, जिसकी वाणी सुनने के लिए अमेरिका आदि देशों के लोग भी लालायित रहते हैं, वह इतनी बड़ी संस्था के लिए रुपये मांगता भटकता फिरे, क्या यह हम लोगों के लिए लज्जा की बात नहीं है ? इच्छा हुई और दर्द भी हुआ कि गुरुदेव के शांतिनिकेतन का आर्थिक संकट किस तरह कटे । सोचा, अपनी सामर्थ्य ही कितनी है ? एक छोटी-सी भेंट गुरुदेव के चरणों पर रखने की बात बनारसीदासजी से कही और उन्होंने गुरुदेव से कहा । वह तो कवि थे, हृदय के भाव को जानते थे, पहचानते थे । उनके सामने वस्तु का मूल्य नहीं, भावना का मूल्य था । कहा, "बहुत अच्छा ।" यहां तक कि उसी समय से मुझ जैसे साधारण आदमी को वह कभी नहीं भूले । अपने परिवार का जैसा सम्बन्ध मानने लगे । जब वह धन-संग्रह के लिए निकले और उनका पहला व्याख्यान पटना में हुआ, तब उस सभा में मेरी उस छोटी सी भेंट का जिक्र तक किया ।

वह बहुत ही भावुक थे । मेरे दिल पर भी इस बात का गहरा असर रहा कि शांतिनिकेतन का ऋण कैसे चुकाया जाय । मैंने एक बड़े धनी सज्जन से जिक्र किया कि इतना बड़ा आदमी पैसा मांगने के लिए भटके, यह ठीक नहीं । हम लोगों को इन्हें एक अच्छी रकम देनी चाहिए । सभी जानते है, बाद में तो पूज्य गांधीजी की प्रेरणा से शांतिनिकेतन का सम्पूर्ण ऋण चुका दिया गया । गुरुदेव बहुत जल्द ही इस यात्रा से वापस आ गये । एक ही स्थान पर यात्रा पूर्ण हो गई । गुरुदेव के मन पर भी इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा । एक दिन बात करते हुए कहने लगे– "देशवासियों ने मुझे चाहा तो निरासी या छियासी वर्ष तक मैं जी सकता हूं ।" मैंने कहा, "गुरुदेव, देशवासी तो चाहते है कि आप बराबर हमारे बीच रहें ।" उन्होंने कहा, "मुझे उत्साह मिलना चाहिए न ?" इसके बाद तो कई बार शांतिनिकेतन जाने का, गुरुदेव के दर्शन करने का मौका, मिलता रहा

गुरुदेव कलकत्ता आते, तब कभी कभी कुछ लोगों को बुलाकर अपनी कविता सुनाया करते । एक छोटा-सा साहित्यिक समारोह-सा होता । एक बार ऐसे समारोह में शामिल होने के लिए गुरुदेव के सेक्रेटरी ने फोन किया । शाम को मै, भाई भागीरथजी और मेरी पुत्री पन्ना उसमे गये । एक हाल मे पचास-साठ-स्त्री पुरूष । धूपबत्तियां जल रहीं थीं । पिलसौत में चिराग जल रहे थे और गुलाब आदि फूलों से गुरुदेव के बैठने के समीप का स्थान सजा हुआ था । निहायत सुन्दर, सात्विक और कलापूर्ण वातावरण था । गुरुदेव आये । लोगो ने खड़े होकर उनको नमस्कार किया । बहनों ने आरती उतारी । एक पीढ़े पर गुरुदेव विराजे । हल्के रंग की

खादी का कुर्ता पहने वह कितने सुन्दर लगते थे ! वह बूढ़े थे, कमर झुक गई थी; तो भी देखने में सुन्दर मालूम होते थे और उनका रौब सम्राटों जैसा था । पांच-सात मिनट आवभगत की बातें करने के बाद गुरुदेव ने पूछा—"कहो, कौन-सी कविता सुनना चाहते हो ?" उपस्थित लोगों ने उनकी पुस्तकों में से, जो ढ़ेर की ढ़ेर सामने रखी थीं, कहा "अमुक, अमुक ।" पहले उन्होंने थोड़ी देर गद्यकाव्य सुनाया, बाद में कविताएं । एक के बाद एक कविता का नाम लोग बोलते रहे और वह सुनाते रहे । इस प्रकार पौने दो घंटे बिना सहारे पीढ़े पर बैठे वह अपनी स्वरचित कविताएं सुनाते रहे । एक असीम आनन्द-सागर उमड़ रहा था । लोग सुधबुध खोये से उस सागर की हिलोरों का आनन्द ले रहे थे । सुनने वालों का मन ही नहीं भरता था और सुनाने वाले की बात तो प्रभु ही जाने । वह तो आया ही इसीलिए था । उसकी तो साधना ही साहित्य और कला थी । एक सज्जन ने कहा, "गुरुदेव, गीत सुनाइए । उन्होंने कहा, "अब गाता नहीं ।" बहनें हठ करने लगी, "गुरुदेव, जरूर सुनाइए । आप तो बहुत अच्छा गाते हैं न ? वह बोले, "किसी समय अच्छा गाता था, अब नहीं।" फिर भी उन्होंने गीत सुनाया। उनके मुंह के गीत का आज क्या बखान किया जाए ! वह तो ऋषि की वाणी थी, सरस्वती की वीणा थी ।

मेरी लड़की पन्ना का विवाह था । मैंने गुरुदेव को पत्र लिखा कि आपका आशीर्वाद चाहिए । उत्तर नहीं आया । तब मैंने उनके सेक्रेटरी को लिखा । उत्तर आया, "गुरुदेव एक कविता उस अवसर के लिए लिखकर भेज रहे हैं । ठीक समय पर लड़के और लड़की के नाम एक सुन्दर उपदेशपूर्ण कविता उनके निज के अक्षरों में लिखी आई । मैंने गुरुदेव के अक्षर उसी दिन देखे । जैसे गुरुदेव सुन्दर थे, वैसे ही उनके अक्षर भी । वास्तव में वह सौंदर्य के पुजारी थे । सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के उपासक थे ।

एक दिन गुरुदेव के सेक्रेटरी का फोन आया कि गुरुदेव बुला रहे है । फुरसत हो, तब आ जाना । थोड़ी देर में हम लोग उनके पास पहुंचे। वह बोले, "तुमको इसलिए बुलाया था कि यह जो मकान है, वह मैंने विश्वभारती को दे दिया है। इसको भाड़े पर दे देना चाहिए । ठाकुर-कुटुम्ब के मकान भाड़े पर नहीं दिये गए है। मेरे चले जाने के बाद शायद यह मकान भी भाड़े पर नहीं दिया जा सकेगा। इसलिए मै चाहता हूं कि मेरे सामने ही मकान भाड़े दे दिया जाय, जिससे विश्वभारती को कुछ आय होने लगे । मेरे पास अब कोई सम्पत्ति चीज नहीं रह गई, जो विश्वभारती की न हो । इसमें मुझे सन्तोष है ।"

वह स्वयं विश्वभारती थे । वह विश्वप्रेमी थे । देश, जाति और साम्प्रदायिक भावों से ऊपर थे । बोले, "इस बगल के मकान में मैं जन्मा हूं । इसी में खेला हूं और यहीं पर मै मनुष्य बना (एइ बाड़ी ते आमि मानुष हये ची) । इसी मकान

की छत की दीवारों पर व छत पर मैंने खड़िया से, कोयले से, पहले-पहल कविता लिखी ।'' उनके मन में इस बात का दुःख-सा ही था कि उनका बाहर के लोगों ने तो बहुत आदर किया, पर अपने देश के लोगों ने वैसा नहीं किया । वह विश्वभारती को अमर कर जाना चाहते थे । विश्वभारती की जिम्मेदारी किन्हीं मजबूत हाथों में देकर जाना चाहते थे । अपनी सबसे प्रिय चीज-विश्वभारती के लिए उनके मन में आशंका थी कि उनके बाद विश्वभारती चल सकेगी या नहीं । अब तो उसकी सारी जिम्मेदारी देश के लोगों पर ही है । गुरुदेव तो ऊपर रहेंगे ही, पर हमारा कर्त्तव्य है कि जिस चीज को उन्होंने खून से सींचा, उसे हम मृत न होने दें ।

गुरुदेव की बीमारी बढ़ती जा रही थी । शांतिनिकेतन से जो खबरें आती थीं, वे भय पैदा करतीं । इसलिए इच्छा थी कि एक बार गुरुदेव की उपस्थिति में फिर शांतिनिकेतन हो आवें । इतने में मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने कहा, ''मंत्रीजी, शांतिनिकेतन दिखा लाइए ।'' मैं लड़कियों को लेकर भाई भागीरथजी के साथ १७ जुलाई को शांतिनिकेतन गया । गुरुदेव बिस्तर पर लेटे हुए थे । उनके सेक्रेटरी ने उनके कान के पास ज़रा तेज आवाज में हम लोगों का नाम बताया, तो उन्होंने आंखें खोलीं, देखकर बोले, ''भालो आछो ।'' गुरुदेव को करीब दो वर्ष के बाद देखा था । वह बहुत कमजोर दीखते थे । ऐसा लगता कि वह अब बहुत दिनों के मेहमान नहीं हैं । बहुत थक गये थे । सुनाई भी कम पड़ता था और होश भी कम रहने लगा था । शाम की गाड़ी से शांतिनिकेतन से रवाना होते समय मन में नाना तरह के भाव उमड़ रहे थे । क्या गुरुदेव नहीं रहेंगे ? उनके बाद क्या यही भावना, यही दृश्य, विद्वानों का और कलाप्रिय लोगों का यही जमघट रहेगा ? उनके बाद भी क्या दूर-दूर देशों के लोग शांतिनिकेतन देखने आयेंगे ?ईश्वर गुरुदेव की कृति शांतिनिकेतन को चिरायु रखे, यही इच्छा मन में थी ।

गुरुदेव को कलकत्ता लाया गया और उनका आपरेशन हुआ । दो-चार रोज तो हालत ठीक रही, पर बाद में बिगड़ने लगी । ७ अगस्त को ९ बजे गुरूदेव के सेक्रेटरी का फोन आया कि गुरुदेव ज्यादा बीमार है । अब वह घंटे-दो-घंटे के ही हैं । मैं तथा भाई भागीरथजी तुरंत गुरुदेव के निवासस्थान पर गये । मकान के आसपास हजारों आदमियों की भीड़ थी । हम भीतर गये । कलकत्ता के मुख्य-मुख्य सभी व्यक्ति उपस्थित थे । गुरुदेव की सेवा-सुश्रूषा करने वाले भाई-बहनों की आंखों से अश्रुधारा बह रही थी । गुरुदेव को आक्सीजन दिया जा रहा था। मैंने हृदय को थामकर संसार के उस महान पुरुष को अन्तिम प्रणाम किया । उनके प्रस्थान का दुःख असह्य था । हृदय भरा आ रहा था । पर उस विश्वविभूति के अन्त समय में दर्शन हो गये, इस बात का संतोष था ।

ऐतिहासिक पुरूष

कविगुरु, गुरुदेव, विश्वकवि आदि अनेक नामों से संबोधित महापुरुष गुरुदेव

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की शतवार्षिकी के शुभ अवसर पर संपूर्ण भारत ही नहीं, विदेशों की अनेक संस्थाएं भी उनकी अनेक प्रकार की विशेषताओं को नाना रूपों में प्रदर्शित कर रही हैं। भारत में यह उत्सव वर्ष-भर लगातार मनाया जा रहा है। यह सब करके हम अपने-आपको संतोष कराते हैं, गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं, साथ ही, उनके साहित्य, संगीत, कला आदि के प्रचार का यह अच्छा सा मौका भी मिल रहा है।

गुरुदेव की प्रतिभा इतनी व्यापक, विशाल और बहुमुखी थी कि उसको पूरा-पूरा समझना, आंकना, मुश्किल ही नहीं, लगभग असंभव-सा है। उन्होंने कविता को नये छंद दिये, संगीत को नये स्वर, चित्रों को नई आकृतियां और मानव को अनेक प्रेरणाएं दीं। वह साधक, चिंतक और महान प्रेरक थे। एक बार स्वर्गीय रामानन्द चटर्जी महोदय ने एक प्रवचन में कहा था, "शांतिनिकेतन के प्रारम्भ के दिनों में मैं वहां बहुत समय तक रहा हूं। मेरा और गुरुदेव का सोने का कमरा आमने-सामने था। मैंनें एक दिन भी ऐसा नहीं देखा कि वह मुझ से पहले सोकर न उठ गए हों। मैं प्रातः शीघ्र उठने वाला रहा हूं, पर शांतिनिकेतन में मैंने देखा कि मैं जब उठता हूं तब गुरुदेव या तो बीच के दालान में प्रार्थना कर रहे, लिख रहे या घूम रहे होते हैं।

चित्रांकन उन्होंने बहुत समय बाद शुरू किया। मैं समझता हूं कि सत्तर वर्ष की उम्र के आसपास चित्रकला की ओर उनका अधिक ध्यान गया। उन्नासी वर्ष में उनका तिरोधान हुआ। इतने कम समय में उनके चित्रों की संख्या सोलह सौ अस्सी के करीब हो गई। वह विश्वभारती में सुरक्षित हैं। ब्रिटिश म्यूजियम ने कई लाख रुपये देकर इन्हें लेना चाहा था। इसके अलावा कितने चित्र कितने लोगों को उन्होंने दे दिये, उनकी संख्या भी कम नहीं है। एक उदाहरण दूं उनकी मानसिक स्थिति का, जब उन्होंने चित्रांकन में ही अपने आपको लगा रखा था। वह विश्वभारती के लिए कलकत्ता आये और लगातार सात दिन तक अपने नृत्य-नाट्यों का प्रदर्शन किया। गुरुदेव स्वयं इन नृत्य-नाट्यों के समय मंच पर बैठते तथा सब स्वर, तालों और मुद्राओं का निरीक्षण करते। यह उत्सव समाप्त होने पर वह शांतिनिकेतन चले गये। पर उनका शरीर इस परिश्रम को बर्दाश्त न कर सका और वह बहुत बीमार हो गये। कलकत्ता के उस समय के सबसे बड़े चिकित्सक स्वर्गीय डा० नीलरतन सरकार, जो गुरुदेव के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे, शांतिनिकेतन चले गये और जब तक गुरुदेव स्वस्थ न हुए, वहीं रहे। गुरुदेव अचेत अवस्था में बहुत ही अधिक बीमार थे और सारे देश में, खासकर बंगाल में, उनकी अस्वस्थता की बड़ी चिन्ता थी। तीन-चार दिन बाद गुरुदेव की चेतना लौटी और वह बोलने लगे, तो उस अवस्था में एक बड़ा विनोद हुआ। इस स्थिति में ऐसा विनोद शायद वह ही कर सकते थे। उन्होंने होश में आते ही जब अपने मुंह पर हाथ रखा,

तब उनकी बड़ी-बड़ी दाढ़ी, जिसके लम्बे-लम्बे बाल रेशम से भी नरम थे, गायब थी । उन्होंने बंगला में कहा, "आमार दाढ़ी कोथाए गैलो ।" डाक्टर सरकार ने बहुत ही नम्र होकर हाथ जोड़े और क्षमा मांगते हुए कहा, "गुरुदेव आमार हाते ई एई अपराध होय छे ।" उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया, "बूझे ची ! जम आमाके घोरे छिलो, आमाके घोरे निए जेते लागलो, तुमी आमा के ऐदिके टेने निले । भालोई कोरेचे ।" सब लोग हँसने लगे और डाक्टर सरकार तो धन्य हो गये । फिर डाक्टर सरकार ने विनयपूर्वक पूछा, "क्या लेंगे, खाने के लिए ? आपकी किसी चीज पर इच्छा है ?" उन्होंने कहा, "आगे आमाके तूलिका और रंग दावो ।" फिर तो चित्रांकन के सब उपकरण उपस्थित किये गए और सबसे पहले उन्होंने एक चित्र आंका । जरा सोचिए, इतनी बड़ी लम्बी अचेतन अवस्था के बाद चेतना का उदय होते ही सबसे पहले चित्र आंकना क्या प्रकट करता है ।

उन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना साहित्य,संगीत और कला के लिए की, पर उनको इससे संतोष नहीं हुआ । तुरन्त ग्रामीण जनता में प्रवेश करने और उसके दु:ख-दर्द में सहायक होने के लिए श्रीनिकेतन की स्थापना की । श्रीनिकेतन के द्वारा वह ग्रामीण-श्री की वृद्धि करना चाहते थे । इसी प्रकार उनका सारा दृष्टिकोण मानव-कल्याण की प्रेरणा से ही प्रेरित होता था । विश्वभारती को वह विश्व-संस्कृति की संस्था बनाना चाहते थे । वह चाहते थे कि वहां अनेक संस्कृतियों के उपासक आयें, रहें और विश्वसंस्कृति की साधना करें । विश्वभारती में चीन-भवन स्थापित होने की बातचीत चल रही थी । इसके पहले ही गुरुदेव के मन में हिन्दी-भवन की बात थी । ये भवन बने । इसी प्रकार उन्होंने एक बार अपने घर पर राजस्थानी साहित्य के बारे में गोष्ठी की थी । राजस्थानी साहित्य को, जो हिन्दी का ही एक अंग है, सुनकर वह मुग्ध हो गये । उन्होंने कहा, "आज के दस वर्ष पहले मैं इसको सुनता तो इसका बंगला में अनुवाद करता ।" यह थी उनकी विश्वबंधुत्व की भावना और सब भाषाओं के प्रति उनका प्रेम और आदर ।

४: लेडी अबला बोस

सन् १९२७ में जब मैं मारवाड़ी बालिका विद्यालय का मंत्री चुना गया, तो स्वभावतया मेरी इच्छा कलकत्ता के अच्छे-अच्छे सभी बालिका विद्यालय देखने की हुई । इसी सिलसिले में स्थानीय ब्राह्म बालिका विद्यालय भी देखने गया । इस संस्था की प्रधानाध्यापिका एक अपटूडेट महिला थीं. जिन्होंने इंग्लैंड में किण्डरगार्टेन

तथा शिक्षा-संबंधी अन्य ट्रेनिंग पाई थी। उन्हींके पास मैंने एक दुबली-पतली सांवली, नाटी-सी वृद्धा को भी देखा, जो बहुत सादी पोशाक में थी और बड़े उत्साह, तत्परता, सौजन्य एवं अपनत्व के साथ सारी चीजें दिखा और समझा रही थीं। मैंने पास खड़े एक व्यक्ति से जब उनका परिचय पूछा, तो मुझे बताया गया कि यही लेडी अबला बोस हैं। मुझे उनकी बात और अपनी आंखों पर जैसे विश्वास नहीं हुआ। सर जगदीशचन्द्र बसु जैसे विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ता की पत्नी और इतनी सरल, निराडम्बर, निरभिमानी और इतनी घुल-मिलकर बातें करनेवाली ! यही था मेरा लेडी बोस से प्रथम साक्षात्कार।

इसके बाद स्वभावतया लेडी बोस के बारे में अधिक जानने, उनके अधिक सम्पर्क में आने की मेरी उत्सुकता हुई। कुछ दिनों बाद बंगाल के गवर्नर द्वारा उनकी प्रिय संस्था नारी शिक्षा समिति के उद्घाटन का अवसर आया। लेडी बोस का निमंत्रण पाकर मैं भी उस अनुष्ठान में शरीक हुआ—वैसे गवर्नरों के आयोजनों मे जाने की उन दिनों इच्छा या प्रेरणा ही नहीं होती थी। लेकिन इस अवसर पर मातृ-जाति के दुःख-दर्दों के प्रति लेडी बोस में जो गहरी सहानुभूति और उसकी शिक्षा, सुख और हित के प्रति उनका जो अनुराग और लगन देखी, उसका मुझ पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा। इस संस्था के द्वारा जिसमें सामान्य ग्रामीण बहनों से लेकर अच्छी सभ्य शिक्षिता बहनों की सेवा, सहायता, शिक्षा होती है, उन्होंने केवल स्त्री-जाति की सेवा और सहायता ही नहीं की, उनमें अपने पावों पर खड़ा होने का आत्मविश्वास और आत्मबल भी भरा है। इसके अलावा संस्था की महिलाओं द्वारा तैयार की हुई चीजों में से रूपये आठ-आने तक की चीजों को मैंने स्वयं लेडी बोस को कार्नवालिस स्ट्रीट में तथा दूसरी जगहों पर खड़े होकर निःसंकोच बिक्री करते देखा है।

एक बार जमनालालजी बजाज कलकत्ता आये हुए थे। लेडी बोस की चर्चा चली तो बोले कि मेरा तो उनसे और डा० बोस से बड़ा गहरा सम्बन्ध रहा है। उनसे जरूर मिलेंगे। उस दिन हम लोग सौभाग्य से बोस-दम्पति के अलावा आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय और श्री रामानन्द चट्टोपाध्याय महोदय से मिले। बोस-दम्पति की बैठक की सादगी और उनकी मिलनसारी, सरल स्वभाव आदि कभी भुलाये नहीं भूलेंगे। जिस प्रेम, अपनत्व और विनम्रता के साथ बोस-दम्पति हम लोगों से मिले वह दृश्य मानों आज भी आंखों के सामने ज्यों-का-त्यों है। इसके बाद जब-जब लेडी बोस से मिलने का मौका मिला, मैंने अनुभव किया कि वह ऊंचे और संवेदनशील मानस की मानवी थीं और किसीके दुःख-कष्ट की उपेक्षा बरदाश्त ही नहीं कर सकती थीं।

एक बार उन्होंने मुझे और भागीरथजी को अपनी प्रिय संस्था के सम्बन्ध में बातचीत करने को बुलाया था। उस बार भी हम उनकी सादगी और कलापूर्ण

ढंग से सजी बैठक में ही बैठे, पर उस दिन विज्ञानाचार्य सर जगदीश के अभाव में जैसे वह बिना प्राण के देह जैसी लग रही थीं। सामने दीवार पर वही अवनींद्रनाथ ठाकुर का भारतमाता का चित्र टंगा था, जो उस दिन हम लोगों ने देखा था। पर उस दिन की भारतमाता में हमें जो बल और मुक्ति की प्रेरणा तथा छटपटाहट नज़र आई थी, आज स्वाधीन भारतमाता के चेहरे पर स्वतंत्रता की वैसी प्राणमय आभा का अभाव-सा लगा। जब लेडी बोस आयीं तब उन्हें देखकर भी लगा, मानों सर जगदीश के वियोग ने उन्हे झकझोर डाला है। पर बातचीत में मैंने पाया कि नारी-जाति के दुःख-कष्ट दूर करने की वही चिन्ता, वहा तत्परता, वही-आकुलता और हार्दिकता ८७ वर्ष की उम्र में भी उनमें है, जो कि ५०-६० वर्ष पहले थी। उनकी बातों का सारांश यही था कि उपेक्षित, उत्पीड़ित और अशिक्षित नारी-जाति की उन्नति और स्वावलम्बन का जो कार्य उन्होंने आरम्भ किया, वह कायम और फलता-फूलता रहे। उनका शरीर अवश्य जर्जर हो गया था, पर उनका मस्तिष्क पूर्ण रूप से सजग और स्वस्थ था। वह सारी बातें स्पष्ट रूप से सोचती और सबसे नियमानुसार काम लेती थीं। उनका यह कार्य एक अखण्ड दीप की तरह आज भी जारी है और उसे जारी रखना तथा आगे बढ़ाना हम सबका पुनीत कर्तव्य है।

५ : बालमुकुन्द गुप्त

जिस समय श्री बालमुकुन्द गुप्त का जन्म हुआ था और उनका लालन-पालन, शिक्षण और संस्कार हुए थे वह युग भारत का विशेष युग था। उस युग ने हमें हर दिशा में अनेक विशेष पुरूष दिये।

इन बड़े लोगों की अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष देन है। इन लोगों ने जिस क्षेत्र में भी काम किया उसी क्षेत्र में भारत के गौरव को इतना बढ़ा दिया कि इतना लम्बा समय गुजर जाने पर भी इन महापुरुषों की याद बनी हुई है और देश कृतज्ञता के साथ उनकी याद करता है।

जब गुप्तजी कलकत्ता से 'भारतमित्र' का सम्पादन करते थे, वह समय हिन्दी के लिए प्रयत्न करने का समय था। उन दिनों कलकत्ता हिन्दी का विशेष केन्द्र बन गया था। हिन्दी के अनेक साधक, चिन्तक और साहित्यकार उन दिनों कलकत्ता में थे और बाहर के लोग कलकत्ते की ओर देखा करते थे। आज कलकत्ता उस समय से कम-से-कम आठ-दस गुना बड़ा है और यहां हिन्दी भाषी लोगों की संख्या

भी हिन्दुस्तान के किसी एक नगर के हिन्दीभाषियों की संख्या से बहुत अधिक है। इसके अलावा यहां साधन तथा सुविधाएं भी दूसरी जगहों से बहुत अधिक हैं। उन दिनों का आज किसी बात से मुकाबला नहीं किया जा सकता। तब 'भारतमित्र' को लोगों के घर जाकर पढ़कर सुनाना पड़ता था, बिना पैसे के। पाठकों का ऐसा अभाव साधकों के लिए चुनौती थी और वे हिन्दी के अनन्य सेवक, साधक और चिंतक तथा साहित्यकार इस तप में तप रहे थे कि किस प्रकार हिन्दी उन्नत हो, फले-फूले, फैले पनपे। गुप्तजी ने उस समय जो तप किया था, जिस प्रकार हिन्दी को संवारा, सिंगारा, सजाया और हिन्दी-पत्रकारिता की जो सेवा की, गहन विषयों को अपनी प्रवाहमय भाषा द्वारा सरल, सहज बनाकर उपस्थित किया, वह सदा स्मरणीय है। गुप्तजी की हिन्दी सेवा या हिन्दी-पत्रकारिता हिन्दी जगत में सदा आदरणीय रहेगी। आज एक सौ वर्ष बाद ही नहीं, जब कभी हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास पर विचार होगा तब गुप्तजी को आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करना पड़ेगा। गुप्तजी और उनके साथी उस समय जो कार्य करते थे, उससे कलकत्ता हिन्दी-जगत में सम्मान तथा महत्त्व का स्थान रखता था। आज आदमी तो बहुत हैं, साधन भी प्रचुर हैं, पर कोई तपस्वी नहीं दीखता, जो हिन्दी की सेवा करना अपना जीवनोद्देश्य बनाये। मैं मानता हूं कि जिस स्वाधीन देश की अपनी भाषा न हो –ऐसी भाषा, जिसे गौरव के साथ अपनी राष्ट्रभाषा कह न सकें, वह देश स्वाधीन देशों की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता, इसकी स्वाधीनता अधूरी है, उसका विकास असम्भव है। पराई भाषा के आश्रय से सोचने और चलने वाला देश स्वाधीन कैसा? भारत के कोटि-कोटि लोगों का विकास करना है, उनको शिक्षित करना है तो वह किसी भी पराई भाषा के द्वारा या उसके आधार पर हो नहीं सकता। करोड़ों लोगों के लिए अपनी भाषा चाहिए। कुछ लोग जिस भाषा को समझ सकें या उससे लाभ उठा सकें, ऐसी भाषा ही हमारे लिखे-पढ़े लोगों की भाषा बनी रहे या मानी जाय, तो फिर देश ज्ञान के क्षेत्र में कभी विकसित नहीं हो सकता, देश के विकास के लिए तो उसकी अपनी भाषा होगी तभी वह विकासमान होगा। आज गुप्तजी की शतवार्षिकी पर हर आदमी का, जो गुप्तजी के प्रति श्रद्धा निवेदन करना चाहता है, प्रयत्न होना चाहिए कि जिस भाषा को उन्नत करने के लिए गुप्तजी ने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय, शक्ति और श्रम दिया, उसका ऋण हमारे ऊपर है और उनको तथा ऐसे महापुरुषों की स्वर्गीय आत्मा को श्रद्धा प्रदान करने के लिए हम प्रण करें कि जिस भाषा की उपासना करने में उन महान आत्माओं ने अपने आपको न्यौछावर किया है, हम उसको देश की उन्नतशील और गौरवशील राष्ट्रभाषा बनायेंगे। यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी गुप्तजी के प्रति। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह हमें सही मार्ग पर चलने का, भारत को विकासमान देश बनाने का, बल दे, जिससे भारत गौरव के साथ हिन्दी को अपनी राष्ट्रभाषा

कहने में समर्थ हो। ऐसी हमारी हिन्दी है, हिन्दी हो सकती है, हिन्दी ही होगी। हमारा मानस इसे स्वीकार करे और हिन्दी विकसित हो, इसमें भारत का विकास निहित है।

६ : मैथिलीशरण गुप्त

कला निर्धूम यज्ञाग्नि की तरह उस संपूर्ण समिधा को ग्रहण कर लेती है, जो यज्ञ-काल में सहधर्मियों के हाथों होमी जाती है। कलाकार की कला या कृति का यज्ञकाल तो उतने दीर्घ समय तक चलता रहता है जबतक वह कला या कृति जन-मन-रंजक रूप में जीवित रहती है। कलाकार की कृति ही एक ऐसा चिरकालिक यज्ञ है, जिसमें कलाकार की आत्मा का निवेदन ही नहीं, उसके पाठकों की प्रशंसा-श्रद्धा भी उस यज्ञाग्नि में घृताहुति का कार्य निरंतर करती रहती है। यही कारण है कि कलाकार का वास्तविक परिचय उसकी ऐसी कृतियों के द्वारा होता है जो दीखने में रत्नाचल की तरह है, लेकिन जिसका महान उद्देश्य तो दान की महत कामना है। कलाकार का प्रत्यक्ष दर्शन या उसके संसर्ग में आने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिल पाता है, उसकी कृतियां तो नाहनेवालों को इस तरह प्राप्त हो सकती है, मानो तीर्थयात्री को अपरिचित तीर्थों की पगडडी अपने आप बढ़ाये ले चले। यही कारण है कि सच्चे कलाकार की कृतियां प्रभाव किये बिना नहीं रहतीं।

सन् १९०९-१० की बात होगी। 'सरस्वती' मे मैने गुप्तजी की कविता पढ़ी। उस समय मेरी उम्र बहुत कम थी। गुप्तजी कौन है इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था। मैने कविता पढ़ी, तो जिनके पास से मैने 'सरस्वती' ली थी, उनके पास जाकर अपनी जिज्ञासा का केवल यही समाधान पाया कि वह महावीरप्रसाद द्विवेदीजी के शिष्य है और द्विवेदीजी ही 'सरस्वती' के सम्पादक है। मेरे मन मे भी चाह उत्पन्न हुई कि मै भी 'सरस्वती' का ग्राहक बनूं। उसका वार्षिक मूल्य चार रुपये था, जो उस समय मेरे लिए खर्च करना कठिन था। उन दिनों मैं अपने गांव नवलगढ़ में था। जो हो, किसी तरह मैंने चार रुपये खर्च किये और 'सरस्वती' का ग्राहक बना। इस तरह गुप्तजी की कविताएं पढ़ने लगा। इसके कुछ ही दिनों बाद 'भारत-भारती' निकली। उस समय तक कलकत्ता चला आया था और २५-३० रुपये की नौकरी करने लगा था। मेरे एक दूसरे मित्र बसंतलालजी मुरारका ने 'भारत-भारती' की कुछ पंक्तियां लिखकर भेजीं और इस कृति को पढ़ने का

आग्रह किया। अब तक गुप्तजी के प्रति आकर्षण प्रबल हो ही चला था, उनकी यह कृति भी खरीदी और संपूर्ण पढ़ गया। बार-बार पढ़ता रहा और उसकी अनेक पंक्तियां कंठस्थ कर लीं। इस प्रकार गुप्तजी के साहित्य के प्रति मेरा अनुराग व श्रद्धा बढ़ती गई।

जब 'यशोधरा' आई और उसको पढ़ा तो ऐसा लगा कि यह तो अपूर्व चीज है। 'यशोधरा' के कथानक का गुप्तजी ने जिस मार्मिकता से वर्णन किया है वह बहुत ही अनूठा और अनुपम है। 'यशोधरा' पढ़े हुए मुझे आज अनेक वर्ष हो गये हैं, पर उसकी एक पंक्ति मेरे कानों में गूंजती है और यह कहूं तो अत्युक्ति न होगी कि मौके-मौके पर यह पंक्ति मुझे सहारा और बल देती है—"रुदन का हँसना ही तो गान।" यह बात कितनी गहरी है!

शायद सन् १९३५ में मैंने गुप्तजी के प्रथम दर्शन किये। वह कलकत्ता आये थे। एक साहित्यिक गोष्ठी में पहुंचे थे। जिस वेशभूषा में गुप्तजी को देखा, वह मेरी कल्पना का न था—बुन्देलखंडी पगड़ी, अंगरखा और दाढ़ी, जिसके बालों का कुछ हिस्सा पक गया था। मैंने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने मेरी आशा से बहुत ही अधिक स्नेहभाव से नमस्कार के रूप में उसका उत्तर दिया। पर परिचय और बातें न हो सकीं। लोगों ने गुप्तजी से कविता सुनाने का आग्रह किया। मेरे मन में गुप्तजी की कविता सुनने की इच्छा थी। मुझे याद नहीं है, उस समय उन्होंने कुछ कहा तो सही, पर कविता नहीं सुनाई। उनके कहने में बहुत ही नम्रता थी। उन्होंने अपनी अकिंचनता बतलाई थी।

इसके बाद 'साकेत' प्रकाशित हुआ। बाहरी जीवन में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण उसे मैं १९४२ की जेलयात्रा में ही पूरा पढ़ सका। उससे एक वर्ष पहले गुप्तजी भी जेल यात्रा कर चुके थे और उनके प्रति जो साहित्यिक श्रद्धा थी वह देशभक्ति का पुट पाकर द्विगुणित हो चुकी थी। मैं 'रामचरितमानस' का नित्य का पाठक हूं। यह कहने की धृष्टता तो नहीं कर सकता कि 'साकेत' रामचरितमानस से बढ़िया है, पर कई स्थलों पर तो वह निश्चय ही बहुत उत्तम है।

बहन महादेवी कहा करती हैं कि गुप्तजी हमारे पितामह हैं। प्रयाग की साहित्यकार संसद में सरस्वती मन्दिर का शिलान्यास करने राष्ट्रपति आये थे, उस अवसर पर दो-तीन दिन गुप्तजी के साथ रहने का सुअवसर मिला। वहां रायकृष्णदासजी और वृन्दावनलाल वर्मा भी थे। उस उम्र में भी इन तीनों मित्रों को जिस तरह का विनोद करते देखा, वह आज के शिष्टाचार और सभ्यता के अभिशाप से पीड़ित लोगों में नहीं मिल सकता। उनके विनोद में गहरी आत्मीयता और निःसंकोच सरलता के दर्शन होते हैं, वे बड़े प्रिय लगते हैं और ऐसा लगता है जैसे अनपढ़ ग्रामीण अपने खेतों और खलिहानों में काम करते, बातें करते, विनोद में झगड़ रहे हों।

वहीं एक दिन वृन्दावनलालजी बाहर कुछ देर करके आए। गुप्तजी बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें देखते ही गुप्तजी ने रायसाहब से कहा कि तुम्हारी वह लाठी कहां है ? उन्होंने पूछा—क्या करोगे ? बोले कि इस वृन्दा का सर फोड़ूंगा, यह इतनी देर करके क्यों आया ! इस पर वर्माजी ने भी बहुत ही विनोदभरा उत्तर दिया और उपस्थित मित्रों में एक अट्टहास गूंज गया।

जो छंद रचता है, वह कवि कहलाता ही है। जिसका हृदय कवि है, वह छंद रचना न करने पर भी कवि कहलाता है। कवि हृदय का मतलब है सहृदयता, सहानुभूति, उदारता, स्नेहशीलता, संवेदना। जिसके अन्दर जितनी गहरी संवेदना है, वह उतना ही बड़ा कवि है। दूसरे का दुःख-सुनकर हृदय में वेदना का संचार होता है, तो कवि की कविताएं अपने आप फूट पड़ती हैं और छंद बनते हैं। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारे की चर्चा चल रही थी। बंटवारा होकर रहेगा, ऐसी स्थिति बन चुकी थी। कांग्रेस के बड़े लोगों ने पूज्य गांधीजी की इच्छा-अनिच्छा का विचार किये बिना उसे स्वीकार कर लिया था। मातृभूमि के अंगभंग की गुप्तजी के हृदय में कितनी वेदना थी, वह उनकी उस कविता से व्यक्त होती है, जो उन्होंने उन्हीं दिनों लिखी थी। उसकी पंक्तियां हैं :

कहो तुम्हारी मातृभूमि का है कितना विस्तार
अवनी को तुम काटो-छांटो, तो क्या व्योम को भी बांटोगे ?

आज के इस वैज्ञानिक युग में कवि का यह प्रश्न हल हो गया है। अवनी तो बंटती ही थी, व्योम भी बंट गया। हमारे व्योम में किसी के हवाई जहाज हमारी आज्ञा के बिना नहीं घुस सकते। वह आगे कहते हैं :

एक देश के विविध अंग हम, दुःखे-सुखे एक संग हम,
लगे एक के क्षत पर सबके स्नेह लेप सौ बार ॥

वह एक के क्षत पर सबके स्नेह का लेप करना चाहते हैं, सबकी वेदना, सबका दुःख मेरा बन जाय और मैं अपना सुख सबको दूं।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ।

एक दिन गुप्तजी ने बातें करते हुए कहा कि हमारे पिताजी ने रामचरितमानस का एक सहस्र पाठ करने का विचार किया और करने लगे। उनके स्वर्गवास के समय तक यह संकल्प पूरा नहीं हुआ था। हम सब भाइयों ने मिलकर बाकी के पाठों को पूरा किया। पिताजी की रामभक्ति ने हमें वरदान दिया है, उससे ही हम फूलते-फलते रहे हैं। हमारे परिवार की तेरह कन्याओं का विवाह हुआ, इतनी बड़ी गृहस्थी बड़े आनन्द से चलती है, हिन्दी-जगत का आदर और प्यार प्राप्त है, यह सब हिन्दी माता की सेवा, पिताजी की राम-भक्ति और लोगों की शुभकामना का ही कारण है। हिन्दी ने हमें सब कुछ दिया है। हम उसके ऋण से उऋण नहीं हो सकते। गुप्तजी के इन शब्दों में राष्ट्र की संवेदना का जागरूक प्रहरी ही बोलता है।

विछुड़े साथी

१ : बसंतलाल मुरारका

उस समय मैं १७ वर्ष का था और बसंतलालजी भी प्रायः इतनी ही उम्र के थे। हम लोग राजस्थान के अपने गांव नवलगढ़ में पहले पहल मिले। बसंतलालजी के एक दूर के भाई मेरे मित्र थे। २० वर्ष की उम्र में ही उनकी मृत्यु हो गई। उनमें देश और समाज की उन्नति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। हिन्दी की उन्नति के लिए वह बहुत ही प्रयत्नशील थे। एक प्रकार से सार्वजनिक कार्य के लिए उन्होंने ही मुझे दीक्षित किया। मेरी धार्मिक भावनाओं को उन्होंने जगाया और देश तथा समाज की सेवा करने की अभिरुचि पैदा की। हम दोनों मित्रों के प्रयत्न से नवलगढ़ में सन् १९०८ में 'नवलगढ़ विद्या विवर्धन पुस्तकालय' की स्थापना हुई। उस समय की स्थिति को याद करता हूं और युग के आज के परिवर्तित रूप को देखता हूं तो ऐसा लगता है कि वह सब जैसे स्वप्न था। वास्तव में रात और दिन में जितना अन्तर है उतना ही अन्तर उस समय की स्थिति और आज की स्थिति में है।

एक दिन उसी मित्र, भाई मोहनलालजी मुरारका ने, एक समवयस्क युवक को मेरे सामने लाकर खड़ा किया और कहा, "यह मेरे भाई हैं बसंतलाल मुरारका। मुकुन्दगढ़ के हैं। इनकी इच्छा भी अपने गांव में पुस्तकालय खोलने की है।" इस घटना के दो-चार महीने बाद ही भाई भागीरथजी और बसंतलालजी ने मुकुन्दगढ़ में पुस्तकालय स्थापित कर लिया। यही बसंतलालजी के साथ मेरा पहला परिचय था।

सन् १९११ में मैं कलकत्ता आया। यहां पहुंचने के कुछ दिन बाद भाई मोहनलालजी के यहां बसन्तलालजी से मुलाकात हुई। उन दिनों कलकत्ता में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा था। इस अधिवेशन के सभापति थे बदरीनारायण प्रेमघन। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सभापति होने की बात थी, पर कई कारणों से वह सभापति नहीं हो पाये। मुझे उस समय की स्थिति का ज्ञान नहीं था, पर भाई बसंतलालजी ने, जिन्होंने सम्मेलन में भाग लिया था, मुझे बताया कि द्विवेदीजी सभापति न चुने जाने के कारण असन्तुष्ट हो गये।

हम लोगों की उम्र उस समय बहुत कम थी और हम बहुत-सी बातों को सोच-समझ नहीं सकते थे। आज की तरह विकास के साधन भी उस समय उपलब्ध नहीं थे, पर बसंतलालजी ने उसी समय से सार्वजनिक क्षेत्र में काम करना शुरू कर दिया था।

भाई बसंतलालजी विड़ला-बन्धुओं के यहां बलदेवदास जुगलकिशोर फर्म में तीस रूपये महीने पर काम करने लगे और मैं सूरजमल शिवप्रसाद के यहां पच्चीस रुपये महीने पर। दोनों को काम इतना अधिक रहता था कि बहुत इच्छा रहने पर भी हम लोग आपस में नहीं मिल पाते थे। उन दिनों टेलीफोन की सहूलियत भी नहीं थी। हम पत्रों के जरिये ही आपस में मिला करते।

जब मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' प्रकाशित हुई, तो बसंतलालजी ने पत्र द्वारा मुझे ये पंक्तियां लिखकर भेजीं :

हम कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी;
आओ, विचारें आज मिलकर यह समस्याएं सभी।

उन दिनों गद्दियों में रात में काम करना पड़ता था। बसंतलालजी को दस बजे छुट्टी मिल जाती, पर रोकड़ का काम होने के कारण मुझे अधिक समय तक काम करना पड़ता था। जिस दिन मुझे जल्दी छुट्टी मिलने की संभावना मालूम होती, उस दिन हम लोग मिलने की व्यवस्था करते और बड़तल्ला की मोड़ पर कोठी के पास बैठकर घंटों बातें करते। हमारी चर्चा का विषय होती थीं देश और समाज की समस्याएं। इन कामों को कैसे करें, हम इस सम्बन्ध में सोचते-विचारते थे। कभी-कभी देश के गणमान्य नेताओं के सम्बन्ध में भी चर्चा कर लेते थे, जिनमें लोकमान्य तिलक, विपिनचंद्र पाल, गोखले, लाला लाजपतराय, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गांधीजी और बंगाल के क्रातिकारियों की बातें होती थीं। हमारे साथियों में ऐसे युवक भी थे, जो जेल की सरकारी दमन की स्थिति के लिए अपने को तैयार करने के लिए जमीन पर सोते थे, ईंट का तकिया लगाते थे और खिचड़ी खाते थे। उन दिनों भावनाएं इतनी तीव्र थीं कि हर आदमी, जो जरा भी देश और समाज की सेवा के बारे में सोचता था, हर तरह से अपने आपको कष्टों में डालना चाहता था। कुछ को छोड़कर ऐसी विचारधारा रखनेवालों की आर्थिक अवस्था शोचनीय थी। फिर भी अपनी आमदनी का एक हिस्सा वे सार्वजनिक कार्यों में देने के लिए बाध्य थे। संयोग से इसी समय एक स्वामीजी आये, जिन्होंने नवयुवकों को सादगी, सेवा, सत्यनिष्ठा और देश-प्रेम का पाठ पढ़ाया। उन्होंने सात जीवनोपयोगी व्रत दिलाये : (१) सूर्योदय से पहले उठना, (२) उपासना करना, (३) व्यायाम करना, (४) स्वाध्याय करना, (५) स्वदेशी वस्त्र पहनना, (६) स्त्री-सम्बन्धी चारित्रिक पवित्रता बरतना और (७) आमदनी का कम से कम १० प्रतिशत हिस्सा देश के कार्यों में देना। इसके अलावा उन्होंने राजनैतिक तथा सामाजिक

चेतना भी जागृत की और सार्वजनिक कार्य करने के तरीके भी बताये ।

मैं और भाई बसंतलालजी उन दिनों कार्यकर्ताओं की दूसरी पंक्ति में थे, इसलिए सारी बातों की पूरी जानकारी हमें नहीं मिलती थी । पर इस गतिविधि से हम सम्बन्धित थे और आकर्षित भी । स्वदेशी आंदोलन ने बंगाल में ही नहीं, समस्त भारतवर्ष में राजनैतिक जागृति और स्वाधीनता की प्रबल भावना पैदा कर दी थी । सामाजिक कार्य उन दिनों कम होते थे, पर समाज-सुधार की चेतना लोगों में जग चुकी थी । समाज-सुधार कार्यों का पंचों से, घर पर बड़े-बूढ़ों से और समाज से सीधा विरोध होने के कारण यह आंदोलन मारवाड़ी समाज में बहुत धीमा चल रहा था । सुधार की बात अगर कभी आती भी, तो पंचों की मार्फत ही आती ।

नवयुवक विचारों की दृष्टि से आगे थे, पर काम करते समय उन्हें बड़ों की ओर देखकर ही आगे बढ़ना पड़ता था । समय-समय पर इस नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में समाज-सुधार कार्यों को लेकर परस्पर संघर्ष भी होता था । कई बार संघर्ष काफी गहरा और उग्र हो उठता था, जैसे आर्य-समाज और सनातन धर्म में संघर्ष हुआ । वास्तव में यह नये और पुराने विचारों का ही संघर्ष था।

उन दिनों 'देश की बात' नामक एक पुस्तक की चर्चा हम लोगों में खूब थी। इस पुस्तक ने अंग्रेजी राज्य के विरोध में बहुत अच्छा वातावरण पैदा किया था। इस पुस्तक को पढ़कर हर भारतीय अंग्रेजों का कट्टर विरोधी बन जाता था । पुस्तक जब्त थी । ऐसी स्थिति में उसका किसीके पास मिल जाना खतरे से खाली नहीं था । सरकारी दमन का डर बहुत था । ऐसी बात नहीं थी कि हम डरते नहीं थे, हम डरते थे, किन्तु इस प्रकार की पुस्तक पढ़ने, नेताओं के बारे में जानने की जिज्ञासा रखते थे और समय आने पर कुछ करने-धरने का साहस भी ।

सन् १९१४ में प्रथम महायुद्ध आरम्भ हुआ । इसकी प्रतिक्रिया चारों तरफ दिखाई दी । सरकार भारत-रक्षा कानून बनाकर आतंकवादियों को गिरफ्तार करने लगी । अंग्रेजी राज्य के पिट्ठू लोग युद्ध में सहायता करने के लिए आंदोलन और प्रचार करने लगे । मारवाड़ी समाज व्यापारी समाज होने के कारण राजभक्त माना जाता था । विदेशी कपड़े का व्यापार मारवाड़ी समाज का मुख्य व्यापार था । विदेशी कपड़े का आयात अंग्रेजी आफिसों के द्वारा होता था । मारवाड़ी समाज के बड़े नेता या पंच इन आफिसों के दलाल या मुसद्दी थे । पर मारवाड़ी समाज के कुछ युवक थे, जो अंग्रेजी राज्य के खिलाफ विचार रखते थे और आतंकवादी क्रांतिकारियों के साथ उनका सम्बन्ध था। डा० कैलाशचंद्र बोस का मारवाड़ी समाज के धनी और प्रभावशाली लोगों पर उन दिनों काफी दबदबा था । ये सब लोग नवयुवकों के रवैये से सख्त नाराज थे । इसी समय एक घटना में पांच-सात युवक भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार हो गये, जिनमें भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार,

प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, कन्हैयालालजी चितलांगिया, ओंकारमलजी सर्राफ, ज्वालाप्रसाद कानोड़िया एवं फूलचन्दजी चौधरी थे। श्री घनश्यामदास बिड़ला पर भी वारंट था, पर वह कलकत्ता से बाहर होने के कारण गिरफ्तार नहीं हो सके। इस घटना का समाज पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि सारा नवयुवक समाज कांपने लगा। साथ ही कैलाशबाबू के नेतृत्व में पंच लोग सरकार के पास अपनी राजभक्ति के संदेश भेजने लगे। वर्तमान मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का नाम उन दिनों मारवाड़ी सहायक समिति था। इस संस्था का संचालन नवयुवकों द्वारा ही होता था। बंगाल में आतंकवादी भावना रखनेवाली दो समितियां थीं—एक, युगान्तर समिति और दूसरी, अनुशीलन समिति। मारवाड़ी सहायक समिति नाम होने के कारण और नवयुवकों की संस्था होने के कारण कैलाशबाबू ने राय दी कि यदि इस संस्था का नाम न बदला गया, तो सरकार की निगाह में मारवाड़ी समाज शंका की दृष्टि से देखा जायगा। एक तो गिरफ्तारियों के कारण और दूसरे पहले के दो तीन सामाजिक आंदोलनों के कारण (जिनमें विलायत-यात्रा का आंदोलन मुख्य था) युवक लोग पंचों से मुठभेड़ लेने की स्थिति में नहीं रह गये थे। इसलिए इच्छा न रहते हुए भी मारवाड़ी सहायक समिति का नाम बदलकर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी रखा जाना स्वीकार कर लिया गया। इन सब बातों का ऐसा व्यापक प्रभाव हुआ कि युवक-समाज उससे त्रस्त हो गया और सार्वजनिक काम की चर्चा बन्द-सी हो गई। परस्पर मिलना-जुलना और विचार करना भी छूट गया।

कानपुर से प्रकाशित 'प्रताप' उन दिनों हिन्दी के पत्रों में नवयुवकों का पथप्रदर्शक था। स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी के लेखों को युवक-समाज आदर की दृष्टि से देखता था। मारवाड़ी सहायक समिति का नाम बदलने पर जो स्थिति हो गई थी, उस पर विद्यार्थीजी ने 'प्रताप' में एक बहुत ही प्रभावशाली लेख लिखा। विद्यार्थीजी की कलम में वह शक्ति थी, वह जादू था, जिसका प्रभाव सर्वसाधारण पर पड़े बिना नहीं रह सकता था और खासकर युवक-वर्ग पर तो उनके लेखों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता था।

भाई बसंतलालजी की पत्नी बहुत बीमार थीं। वह उनको लेकर जसीडीह गये हुए थे। 'प्रताप' के लेख को पढ़कर मेरे मन में जो प्रतिक्रिया हुई, उसको विद्यार्थीजी के लेखों के साथ मैंने भाई बसंतलालजी के पास जसीडीह भेजा। मैंने उन्हें लिखा—आप विचार करें, हम लोग क्या कर रहे हैं और जितना जल्दी हो सके, आप कलकत्ता आ जायं। बसंतलालजी पर उस लेख की प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक ही थी। उन्होंने मुझे लिखा—चाहे जो हो, हम चुप नहीं बैठ सकते, हमें कुछ न कुछ करना ही होगा। आप लोगों से मिलना-जुलना शुरू करें। मैं जल्दी से जल्दी आ रहा हूं। एक सप्ताह में ही वह आ भी गये। इस समय जो स्थिति थी उसमें पहली पंक्ति के लोगों के साथ मिलना-जुलना या काम करना संभव नहीं

था। दूसरी पंक्ति के लोगों में संगठन मुश्किल हो रहा था। कई दिनों की कोशिश के बाद कुछ मित्रों को इकट्ठा किया गया और एक संस्था 'ज्ञानवर्द्धिनी मित्र मंडली' के नाम से स्थापित की गई। इस संस्था के उद्देश्य में यह साफ तौर से लिखना पड़ा था कि राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक कामों से इस संस्था का कोई सम्बंध नहीं होगा। यह संस्था ज्ञानवर्द्धन के कामों तक अपना कार्यक्रम सीमित रखेगी। ऊपर का संकेत उस समय की स्थिति को साफ करता है कि राजनैतिक काम में सरकारी भय, धार्मिक काम में ब्राह्मणों की बाधा, सामाजिक कार्यों में पंचों का आतंक पूर्ण रूप से नवयुवकों में व्याप्त था। यदि ऐसा न किया जाता तो संस्था का आरम्भ करना ही मुश्किल हो जाता । आज वे सब बातें कल्पना के बाहर की चीज हो गई हैं। मुझे उस दिन की और आज की स्थिति की तुलना करने पर स्वयं भी आश्चर्य होता है। 'ज्ञानवर्द्धिनी मित्र-मंडली' तो एक साधारण बहाना था। जो काम आगे करना था वह काम आगे इस मंडली के द्वारा हो नहीं सकता था। ऐसी स्थिति में एक और संस्था की जरूरत महसूस होने लगी। आहिस्ते-आहिस्ते वातावरण भी बदल रहा था। पुराने लोगों के साथ संघर्ष था ही। पुराने लोगों की संस्था थी 'मारवाड़ी ऐसोसिएशन'। सरकार में इसी संस्था और उसके संचालकों का प्रभाव था। कई दिनों के सोच-विचार के बाद 'मारवाड़ी ट्रेडर्स एसोसिएशन' नाम से एक नई संस्था की स्थापना की गई, जिसके सभापति स्वर्गीय देवीप्रसादजी खेतान और मंत्री श्री जगन्नाथप्रसादजी अग्रवाल चुने गये। सवाल था, इस संस्था के द्वारा वे सब काम कैसे हों, जो नवयुवक करना चाहते थे अथवा जो उन्हें करना उचित था? केवल व्यापार की बातों से तो नवयुवकों को संतोष हो नहीं सकता था। इस लिए इस संस्था के अन्तर्गत कई विभाग खोले गये, जैसे ज्ञानवर्द्धक विभाग, जिसमें 'ज्ञानवर्द्धिनी मित्र-मंडली' अन्तरभुक्त कर दी गई। सेवा-विभाग का मंत्री भाई बसंतलालजी को बनाया गया और इस विभाग के द्वारा बहुत काम हुआ। 'मारवाड़ी एसोसिएशन' की सारी धाक और महत्त्व को इस संस्था ने खत्म कर दिया, फिर भी समाज पर बड़े आदमियों का जो प्रभाव था, वह तो था ही।

इसी बीच पूज्य जमनालालजी बजाज ने समाज-सुधार की दृष्टि से 'अग्रवाल महासभा' की स्थापना की बात सोची। कलकत्ता मारवाड़ी समाज का खास केन्द्र था और जमनालालजी का यहां के युवकों से संबंध भी था। इसलिए वह अग्रवाल महासभा की चर्चा के लिए कलकत्ता आये। नवयुवकों का तो पूरा सहयोग उन्हें प्राप्त था ही, पर वह चाहते थे कि पुराने विचारवाले या पंच पंचायतवाले लोगों का भी सहयोग प्राप्त किया जाय। बहुत कोशिश करने पर भी जमनालालजी उनका सहयोग प्राप्त न कर सके। पर बम्बई तथा दूसरे प्रांतों में उन्हें सहयोग मिला। वर्धा में अग्रवाल महासभा का प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसमें श्री देवीप्रसादजी खेतान

और भाई बसंतलाल जी कलकत्ता के प्रतिनिधि के रूप में सम्मलित हुए। लेकिन उसी समय जमनालालजी के परिवार में एक दुःखद मृत्यु हो जाने के कारण अधिवेशन विशाल रूप में नहीं हो सका। महासभा का दूसरा अधिवेशन बम्बई में बड़ी धूमधाम से हुआ। प्रसिद्ध सनातनी और समाज के पुराने घराने के वयोवृद्ध श्री रामलाल गनेड़ीवाल को सभापति चुना गया। इस अधिवेशन में कलकत्ता के नवयुवकों ने काफी संख्या में भाग लिया। ताराचन्द घनश्यामदास' की ओर से जयनारायणजी पोद्दार भी इस अधिवेशन में सम्मलित हुए और उन्होंने कार्यवाहीं में उत्साह-पूर्ण हिस्सा लिया। यह सम्मेलन बहुत ही सफल रहा। कर्मवीर गांधी भी इस सम्मेलन में एक दिन के लिए आये और बोले। पचास हजार रूपये का चन्दा तत्काल इकट्ठा करके उनको दिया गया।

इसी अधिवेशन में छः लाख रुपयों से अग्रवाल कोष की स्थापना हुई। समाज-सुधार के प्रस्तावों में बाल-विवाह के प्रस्ताव पर काफी वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि बारह वर्ष से पहले लड़की और सोलह वर्ष से पहले लड़के का विवाह न किया जाय। इसके साथ ही संशोधन के रूप में यह छूट दे दी गई कि अगर किसी को इस संबंध में आपत्ति हो, तो वह स्थानीय पंचायत की अनुमति लेकर बारह वर्ष से कम उम्र की लड़की और सोलह वर्ष से कम उम्र के लड़के के विवाह में सम्मिलित नहीं होंगे। कहना नहीं होगा कि भाई बसंतलालजी प्रतिज्ञा करनेवालों में से थे। इसके बाद तो प्रतिज्ञा करने का एक अभियान-सा चल पड़ा, जिसमें भाई बसंतलालजी ने काफी काम किया। आज ये सब बातें साधारण और बहुत हल्की लगती हैं, पर उस समय ये बहुत बड़ी-बड़ी बातें थीं : इस प्रतिज्ञा करनेवालों को अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। ऐसे अवसर भी आये, जब भाई अपनी बहन को चुनरी उढ़ाने तक नहीं जाते थे। बाल-विवाह के आन्दोलन ने एक विशेष आन्दोलन का रूप लिया और भाई बसन्तलालजी को अपने साथियों के साथ काले झण्डों का प्रदर्शन भी करना पड़ा। महासभा का तीसरा अधिवेशन कलकत्ता में हुआ, जो बहुत ही प्रभावशाली और बृहत् रूप में था। पंचायत के लोग इस अधिवेशन में सम्मिलित नहीं हुए। अधिवेशन के बाद महासभा का कार्यालय कलकत्ता में ही रहा। भाई बसंतलालजी महासभा के प्रधान-मंत्री चुने गये। भाई पद्मराजजी जैन के सहयोग से महासभा का काम और प्रभाव मारवाड़ी समाज में खूब बढ़ा। हजारों शाखाएं भारत के बड़े-बड़े शहरों और ग्रामों में स्थापित हुईं, जिनके द्वारा बाल-विवाह आदि का विरोध किया गया। इन सारे अभियानों में बसन्तलालजी का प्रमुख स्थान था। इस सामाजिक आन्दोलन के बराबर -बराबर राष्ट्रीय आन्दोलन भी जोर पकड़ता जा रहा था। पूज्य जमनालालजी के प्रयत्नों से कांग्रेस कमेटी की स्थापना करके बड़ा बाजार में कांग्रेस का काम आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया गया। भाई पद्मराजजी जैन मंत्री और बसन्तलालजी सहायक मंत्री

बनाये गए । इस प्रकार सामाजिक और राजनैतिक कार्य साथ-साथ होने लगे ।

पूज्य महात्माजी के आह्वान पर सन् १९२१ का आन्दोलन शुरू हुआ । बसन्तलालजी ने प्रमुख भाग लिया । फलतः वह गिरफ्तार किये जाकर प्रेसीडेंसी जेल में भेज दिये गए । उन दिनों जेल जाना मामूली बात नहीं थी, फिर बसन्तलालजी का तो परिवार भी काफी बड़ा था । उनका विवाह हुए भी चार-पांच वर्ष ही हुए थे । इन सब कठिनाइयों की परवा किये बिना ही बसन्तलालजी ने आन्दोलन में पूरा भाग लिया । बसन्तलालजी को डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई । मेरा ख्याल है कि मारवाड़ी समाज में देश के लिए जेल जाने का यह पहला उदाहरण था । बसन्तलालजी की मां उनके जेल-जीवन की बातों से बहुत ही दुःखी हो गई थीं, पर अन्त में उन्होंने हम लोगों से कहा—"बसंतियो शिवरात्रि के दिन जनम्यो है, वो भोलो शंभु है, ऊं की रक्षा भगवान शिवजी महाराज ही करेगा ।" इस आन्दोलन में देशबन्धुदास, सुभाषचन्द्र बोस तथा बंगाल के अनेक दूसरे नेता जेल गये । मौलाना अबुल कलाम आजाद, मौलाना अकरम खां (जो बाद में मुस्लिम लीगी बन गये), बड़ा बाजार से पद्मराजजी जैन, अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी, भाई मूलचन्दजी अग्रवाल, भोलानाथ जी बर्मन, माधवजी शुक्ल, लक्ष्मणनारायणजी गर्दे आदि अनेक लोग जेल में बसन्तलालजी के साथी हो गये । बाद में महात्माजी ने चौरीचौरा काण्ड होने पर आन्दोलन बन्द कर दिया और यह एलान कर दिया कि जो जेल गये हैं वे वहां न रहना चाहें, तो सरकार से अनुरोध करके बाहर आ सकते हैं । बसन्तलालजी ने ऐसा नहीं किया । जो लोग जेल गये हैं, वे समझ सकते है कि आन्दोलन की गति धीमी पड़ जाने पर जेल में रहने वालों की मनोदशा क्या होती है । जेल के अधिकारियों का व्यवहार कितना क्रूर और यातनामय बन जाता है । फिर आन्दोलन का अनिश्चित काल तक बंद हो जाना कितना दुःखद होता है । जिन लोगों की सजा कम थी, वे तथा दूसरे लोग भी आहिस्ते-आहिस्ते बाहर आने लगे । पर बसन्तलालजी की सजा तो बहुत थी । उनके साथ जेल में बहुत कम आदमी रह गये थे, पर वह अपने आनन्दी स्वभाव के कारण दुःख-सुख की परवा किये बिना जेल की अवधि पूरी कर रहे थे ।

जेल से बाहर आने पर वह फिर अपने सामाजिक कार्यो में लग गये । अग्रवाल महासभा का काम तथा दूसरे सामाजिक काम करने लगे—बाल-विवाह और वृद्ध-विवाहों को रोकने के आन्दोलनों तथा उनके परिणामों से हम तंग आने लगे थे और ऐसा सोचने लगे थे कि हमें समाज-सुधार का कोई क्रांतिकारी कदम उठाना चाहिए, जिससे समाज में क्रांति की भूमिका तैयार हो सके । इसी समय हमने सुना, एक बाल-विधवा जानकीदेवी साह वैधव्य-दुःख से तंग आ गई हैं और पुनर्विवाह करना चाहती हैं । पर पुनर्विवाह हो कैसे ? यह एक बड़ा सवाल था । काम तो बड़ा भारी था, पर जोश और उत्साहवश इसकी कौन परवाह करता था ! जानकीदेवी

को उसके घर से तो ले आये, पर अब उसके विवाह की व्यवस्था कैसे हो, यह एक समस्या थी। पुराने आर्यसमाजी भाई नागरमलजी लील्हा विवाह करने के लिए तैयार हो गये। नागरमलजी की उम्र करीब छतीस साल की थी, जानकीदेवी की बाईस वर्ष की। दोनों को एक दूसरे को दिखाकर विवाह तय हो गया। विवाह के लिए स्थान का सवाल था। आर्य समाज मंदिर तो मिल सकता था, पर वहां विवाह हो, यह हम पसंद नहीं करते थे। भाई नागरमलजी मोदी अपना मकान देने के लिए तैयार थे। जानकीदेवी को उनके घर पर ही छिपाकर रखा गया था, किन्तु वह मकान छोटा था। इसलिए छाजूरामजी चौधरी का मकान ठीक किया गया। यह मकान बहुत सुन्दर और बड़ा था। साथ ही, यह बड़ाबाजार के बीच में था। छाजूरामजी से बात करने पर वह सहर्ष राजी हो गये। यह विवाह अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है। इसका इतिहास लिखने के लिए अलग लेख लिखा जा सकता है। इस कार्य में बसन्तलालजी का महत्वपूर्ण हाथ रहा। परिणाम-स्वरूप पंचायत की सभा में बारह समाज-सुधारकों को इस विवाह में भाग लेने के लिए अलग-अलग इल्जाम लगाकर जाति से बाहर कर दिया गया। भाई बसन्तलालजी को भी जाति से बाहर किया गया। जाति-बाहर का भी एक आन्दोलन बन गया। बसन्तलालजी का निजी कुटुम्ब बड़ा होने के कारण और भाइयों आदि में विचारों की भिन्नता होने के कारण उनको तथा उनकी पत्नी को काफी परेशानियां उठानी पड़ीं, परन्तु बसन्तलालजी के पिता पूज्य रामदेवजी ने उनके कामों का पूरा समर्थन किया और उनके भाइयों ने भी साथ दिया।

बसन्तलालजी के छोटे भाई शुभकरण का विवाह था। इस विवाह के समय राष्ट्रीय आन्दोलन और खिलाफत-आन्दोलन चल रहा था। खिलाफत-आन्दोलन के कारण बसन्तलालजी का मुसलमान भाइयों से गहरा सम्बन्ध था, इसलिए उस विवाह में उनको भी निमंत्रित किया गया। स्वर्गीय देशबन्धु दास भी इस विवाह में पधारे। उनके साथ मौलाना आजाद, अकरम खां और पचासों अन्य मुसलमान आये। मुसलमानों को भोजन कराते समय समाज के कुछ लोगों को नाराजगी रही। उनके भोजन करने के बाद झूठी पत्तल उठाने के लिए नौकरों ने इन्कार कर दिया। कुछ मिनटों में ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि भाई बसन्तलालजी ने उन मुसलमानों को बुलाकर और भोजन कराकर एक हंगामा-सा कर दिया है। लेकिन बसन्तलालजी ने अपने मुसलमान दोस्तों की झूठी पत्तलों को उठाकर सारे लोगों को चकित कर दिया। मुसलमानों को बुलाकर घर पर भोजन कराना और फिर उनकी झूठी पत्तलों को उठाना साधारण बात नहीं थी। इसकी चर्चा और विरोध बहुत रहा, पर बसन्तलालजी का उत्साह और उनकी दृढ़ता ऐसी थी कि उनके घर के लोग और दूसरे विरोधी भी उनसे नाराज नहीं होते थे।

सन् १९३० तक अग्रवाल महासभा के द्वारा जो भी सामाजिक काम हुए, उनका बहुत कुछ श्रेय भाई बसंतलालजी और पद्मराजजी को था। कांग्रेस के द्वारा

जो राजनैतिक काम होते थे उनमें भाई बसंतलालजी पूरा-पूरा हिस्सा लिया करते थे। सन् १९३० में गांधीजी ने नमक सत्याग्रह का देशव्यापी आंदोलन चलाया। गांधीजी की डांडी-यात्रा के दिनों में बंगाल में एक आईन-अमान्य कमेटी की स्थापना की गई। उसके संचालन में भाई बसंतलालजी ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया। वह बड़ा बाजार से संगठन करके नमक सत्याग्रह करने के लिए कलकत्ता से ७-८ मील दूर महिषाथान में सत्याग्रहियों के जत्थे भेजने लगे। फलस्वरूप उनको गिरफ्तार कर लिया गया और बंगाल के कई नेताओं के साथ उनको डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई। जेल में कलकत्ता के तथा बंगाल के अनेक नेताओं और कार्यकताओं से भाई बसंतलालजी का सम्बन्ध हो गया और वह आंदोलन के खास आदमी माने जाने लगे। अपने विनोदी और सरल स्वभाव के कारण वह जेल में बहुत ही प्रिय रहे। कोई घटना होने पर बसंनलालजी कहा करते थे—आनन्द हो गया। जेल में सब लोगों को एक-एक कांच का गिलास मिलता था। संयोगवश किसीके हाथ से गिलास गिरकर टूट जाता तो टूटने की आवाज सुनकर जिस सज्जन का गिलास टूटता, उनको सम्बोधन करके बसंतलालजी तुरन्त कहते—आनन्द हो गया क्या ? वह इस तरह दुःख को स्वभावतः सुख का रूप दे दिया करते थे। उनके इस स्वभाव के सम्बन्ध में एक घटना और याद आती है। सन् १९३२ में जेल से छूटने के बाद हम लोग स्वास्थ्य-सुधार की दृष्टि से राजस्थान गये। बसंतलालजी के मुकुन्दगढ़ स्थित मकान में एक ब्राह्मण-परिवार रहता था। उनके लड़के की नाक में तकलीफ थी। इसलिए उसका आपरेशन कराने के लिए उस लड़के को और उसकी मां को पिलानी ले गये। संयोग से उस लड़के की मां ऊंट से गिर पड़ी और उसे चोट लगी। वह गर्भवती थी। बसंतलालजी ने मुझे सूचना दी—"भाईसाहब, आज तो आनन्द जोर को होगो।" कहने का मतलब यह कि वह किसी घटना से घबराते नहीं थे और उसको अपनी सरलता के कारण विनोद में बदल दिया करते थे। जेल के कष्टों और मानसिक आंदोलन की तीव्रता के समय जब-जब निराशा, दुःख और असफलता सामने आती, वह अपनी भाषा में कहते थे, "आंटो-सांटा लागकर सुख होबा हालो है" यानी जो दुख आता है, या असफलता आती है, वह सुख और सफलता देने के लिए आती है।

उन दिनों समाज में मृतक बिरादरी भोज हुआ करता था। साधारण स्थिति के आदमी को अपना घर या जो भी सम्पति होती, वह बेचकर अथवा ऋण लेकर मृतक बिरादरी-भोज करना पड़ता था, इसका दुःखद अनुभव नवयुवक समाज किया करता था।

अन्त में इसके लिए पिकेटिंग करने का निश्चय किया गया और पिकेटिंग का संगठन करने में भाई बसंतलालजी ने बहुत ही उत्साहपूर्ण काम किया। मृतक बिरादरी भोज के स्थानों पर जाकर जोरदार पिकेटिंग की गई। कई जगहों पर भोजन करने

वालों के सामने लेटना भी पड़ा । विरोधियों की ओर से इस आन्दोलन का जोरदार विरोध किया गया और सत्याग्रहियों पर झूठी पतल और गन्दा पानी भी गिराया गया, पर इसका कुछ दिनों में इतना व्यापक और गहरा प्रभाव हुआ कि बिहार मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में भी यह पिकेटिंग शुरू हुई और मृतक बिरादरी भोज बन्द हो गया ।

मारवाड़ी समाज में पर्दा-प्रथा भी बहुत जोरों से प्रचलित थी । नवयुवक समाज को इस प्रथा को तोड़ने के लिए काफी आंदोलन करना पड़ा । भाई बसंतलालजी के नेतृत्व में सन् १९२९ में एक शिष्टमंडल पर्दा-प्रथा के विरोध में आन्दोलन करने के लिए बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश आदि स्थानों में गया और जगह-जगह सभाएं आदि करके पर्दा-प्रथा के विरोध में आन्दोलन शुरू किया गया । इस आंदोलन को स्थायी बनाने के लिये सन् १९२९ की कार्तिक शुक्ल ११ (देवोत्थान एकादशी) के दिन सारे भारतवर्ष के नगरों में 'पर्दा-निवारक-दिवस' मनाया गया, जिसका अधिकांश श्रेय भाई बसंतलालजी को दिया जा सकता है । मतलब यह कि विलायत-यात्रा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, मृतक बिरादरी भोज और पर्दा-निवारण आदि कोई भी आंदोलन सन् १९२० से सन् १९५६ तक, उनकी मृत्युपर्यन्त नहीं हुआ, जिसमें उन्होंने हिस्सा न लिया हो । इसी प्रकार राजनैतिक आंदोलन में सन् १९२० से लेकर सन् १९४२ के 'करेंगे या मरेंगे' आंदोलन तक ऐसा एक भी आंदोलन नहीं हुआ, जिसमें वह जेल न गये हों और अधिक से अधिक भाग न लिया हो । सेवा और शिक्षा के काम में भी वह सदा आगे रहते थे । सन् १९३४ में बिहार में जो भयंकर भूकंप हुआ था, उस समय की बात है । उनकी स्त्री के बच्चा होने वाला था और पीड़ा हो रही थी । ऐसी हालत में वह उसे छोड़कर भूकम्प-पीड़ितों की सेवा करने चले गये । बसंतलालजी एक ऐसे बहादुर समाज-सुधारक और देश-भक्त थे, जिन्होंने अपने घर की, अर्थ की और परिवार की जरा भी परवा किये बिना देश और समाज की सेवा की ।

सन् १९४५-४६ मे ऐसा लगा था कि देश निश्चय ही स्वाधीन होगा और तब जो विधान सभाएं बनेंगी, वे स्वाधीन देश की विधान-सभाएं होंगी । इसलिए उनकी इच्छा हुई कि वह विधान-सभा में जायं । सन् १९४६ की फरवरी में जो चुनाव हुए, उनमें वह चुनाव लड़ने के लिए खड़े हुए और प्रबल बहुमत से निर्वाचित हुए । तबसे बराबर पश्चिम बंगाल विधान-सभा के सदस्य रहे । जिस प्रकार स्वाधीनता-आंदोलन में उन्होंने काम किया उसी प्रकार देश के शासन-संचालन और निर्माण-कार्य में भी उत्साह और जोश से काम करते रहे । सन् १९५२ में जो चुनाव हुए उनमें वह बंगाल के वीरभूम जिले से विधान-सभा के सदस्य चुने गये, जहां बंगाली भाइयों के सिवा अन्य किसी के वोट नहीं थे । इस चुनाव में सफलता बसंतलालजी की बंगाल में लोकप्रियता का एक प्रमाण थी ।

बसंतलालजी अपने जीवन में सफल रहे। वह अपने विचारों और सिद्धांतों को बराबर अमल में लाते रहे। उन्होंने अपने बड़े पुत्र का विवाह माहेश्वरी समाज में किया और द्वितीय पुत्र का विवाह एक बाल-विधवा से किया। उनकी स्त्री रमादेवी ने उस जमाने में पर्दा छोड़ा और सामाजिक कार्य में हिस्सा लिया जब मारवाड़ी समाज की इनी-गिनी महिलाएं ही पर्दा-प्रथा से मुक्त हुई थीं। इस प्रकार बसंतलालजी का जीवन करीब ४० वर्ष तक निरन्तर देश और समाज की सेवा में लगा रहा। वह हृदय से, स्वभाव से सरल और कोमल, व्यवहार से उदार और समाज की सेवा से प्रेरित, बहुत ही सच्चे साथी थे। व्यक्तिगत दृष्टि से भी ऐसे मित्र और साथी का वियोग बड़ा ही दुःखद होता है।

अंतिम कुछ वर्षों में मेरा उनके साथ मतभेद रहा, पर आखिर में उनकी बीमारी ने मतभेद को भी इस तरह धो डाला कि आज उसका कोई चिह्न भी नहीं। मृत्यु से कुछ ही दिन पहले हम दोनों ने हृदय की एकता का सुख अनुभव किया। यदि यह न होता तो आज मेरे दुःख का अंत कहां था! यह ईश्वर की कृपा थी और उनके हृदय की सरलता एवं सहृदयता।

२ : श्रीमती गंगादेवी मोहता

सन् १९२१ में कलकत्ता प्रेसीडेंसी जेल में स्वर्गीय भाई बसंतलालजी मुरारका से मुलाकात के वक्त गंगादेवी मोहता से परिचय हुआ था। उस समय सारे मारवाड़ी समाज के अग्रवाल, ओसवाल, माहेश्वरी आदि किसी समाज में किसी ऐसी महिला को मैं नहीं जानता था या थी ही नहीं, जो घूंघट निकाले बिना पुरुषों में आये-जाये और बातचीत कर सके। इस महिला का साहस, निर्भीकता और उत्साह मुझे उस दिन अद्भुत लगा था। इसके बाद तो परिचय बढ़ता गया। कितने ही स्थानों और मौकों पर साथ-साथ काम करने का अवसर मिला। उन दिनों भाई बालकृष्णजी मोहता और गंगादेवी मारवाड़ी समाज में समाज-सुधार के आंदोलन के एक खास अंग ही नहीं, बल्कि अगुवा माने जाने लगे थे। गंगादेवी ने न मालूम कितने घरों में जाकर अनेक महिलाओं को पर्दे के पाप से मुक्त किया था। सार्वजनिक रूप से पर्दा-प्रथा के विरूद्ध आंदोलन करने की बात सोची गई तो क्या किया जाय, कैसे किया जाय, यह सवाल विकटता के साथ सामने आया, जिसको आज याद करने पर आश्चर्यजनक हंसी आती है। कुछ भी नहीं किया जा सकता, ऐसा लगने पर अंत में यह तय किया गया कि जो दस पांच मित्र अपनी स्त्रियों का पर्दा

छुड़ा सकें वे सब साथ-साथ विक्टोरिया मेमोरियल में मारवाड़ी समाज के लोगों के सामने से निकलें या घूमते रहें। कहना नहीं होगा कि इसमें गंगा देवी और बालकृष्णजी तो विशेष थे ही। शायद यह सन् १९२६ की बात है। इसके बाद ही निश्चय किया गया कि पर्दा-प्रथा के विरूद्ध एक शिष्टमंडल अनेक स्थानों पर जाय और इस बात की कोशिश करे कि प्रत्येक स्थान पर कार्तिक शुक्ल एकादशी को पर्दा-निवारक दिवस की सभा आदि कर पर्दे के विरूद्ध प्रस्ताव पास किया जाय। कलकत्ता में पर्दा निवारक दिवस की सभा का नजारा शायद पहले की सब सभाओं से अपने ढंग का अलग था। सभा में कार्ड द्वारा प्रवेश का प्रतिबंध लगाने पर स्वयंसेवकों के सिवा पुलिस की सहायता लेना जरूरी हो गया। सभानेत्री का मिलना कितना मुश्किल था, इसकी आज किसी तरह भी कल्पना नहीं की जा सकती। अन्त में स्वर्गीय भाई देवीप्रसाद खेतान आदि से बात करके श्रीमती• जानकीदेवी मुसद्दी (खेतान बन्धुओं की बहन) को राजी किया। लम्बी कहानी है यह और आज के लोगों के लिए आश्चर्यजनक और विश्वास करने लायक भी शायद न हो। इतना कहना ही है कि इन सब स्थितियों को बदलने में तथा आज को सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, उसको लाने में गंगादेवी का बहुत बड़ा हिस्सा रहा है। मैं जिस मकान में रहता था वहां गंगादेवी आतीं तो पास के लोग उनको अपने कमरे में आने देना पसन्द न करते। पर गंगादेवी मान-अपमान का ख्याल किये बिना अपना काम करतीं रहतीं। स्वर्गीय भाई मूलचन्दजी उनको मजाक में आराकाटी कहा करते। 'आराकाटी' लोगों को बहकाकर मारीशस, फीजी आदि देशों में जाने के लिए भरती के हेतु ले जाने वालों को कहते थे। इस प्रकार गंगादेवी ने सामाजिक क्रांनि के कदमों को आगे बढ़ाने में अपने जीवन का वह हिस्सा दिया जब लोग राग-रंग, सुख-स्वप्न में भूले रहते हैं। अपने एकमात्र लड़के चिरंजीवी ब्रह्मदेव का विवाह एक अनजान कुल में बिना किसी रीति-रिवाज के (दहेज तो कल्पनातीत बात है, जिसका जिक्र करना बालकृष्ण और गंगादेवी जी का अपमान करना है) आज से २५-२६ वर्ष पहले किया था। यह विवाह इस तरह का शायद पहला ही था। गंगादेवी ने बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, परदा-प्रथा के विरोधी तथा विधवा-विवाह आदि सुधार आंदोलनों में अधिक से अधिक भाग लिया।

स्वाधीनता का आंदोलन चल रहा था तब भी वह चुप नहीं बैठीं। एक जुलूस में भाग लेने के कारण उनको गिरफ्तार किया गया और जुर्माने की सजा हुई। जुर्माना न देने पर जेल जाना अनिवार्य था। उन दिनों न तो कोई जुर्माना देता था और न अदालत की कार्रवाही में किसी प्रकार का हिस्सा लेता था। बहन गंगादेवी का जुर्माना दूसरे सज्जन देने लगे तो उन्होंने कहा कि मेरा जुर्माना यदि अदा कर दिया जाएगा तो इस अन्याय को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं कर सकूंगी। इस प्रकार न मालूम अपने जीवन के कितने प्रसंगों में उन्होंने अपनी

तेजस्विता एवं निर्भीकता का परिचय दिया था ।

गंगादेवी की बीमारी में श्री बालकृष्णजी ने जो सेवा की, वह साधारण आदमियों का काम नहीं है । शायद ही कोई पुरुष स्त्री की इतनी सेवा कर सकता है । पांच-सात दिन पहले भगवानदेवी, जो किसी समय उनकी रंगरूट रही थीं, उनसे मिलने गईं और जिस स्थिति का वर्णन किया, वह अजब है । गंगादेवी ने कहा कि मैं जीना नहीं चाहती, पर उनकी सेवा मुझे मरने नहीं दे रही है ।

३ : 'दीदी' सुशीलादेवी

सन् १९२८ की बात है । चार पंजाबी बहनों से परिचय हुआ । एक थीं शांतादेवी, जो हमारे स्कूल में पढ़ाती थीं । दूसरी थीं कौशल्या देवी, जो आर्य कन्या महाविद्यालय की थीं । तीसरी थीं लीलादेवी, जो कलकत्ता के डेन्टल कालेज की विद्यार्थी थीं । चौथी थीं सुभद्रादेवी, जो बड़ा बाजार की राजनैतिक गतिविधियों में प्रमुख भाग लेती थीं । इन चार बहनों से परिचय हुआ । देश समाज के बारे में बातें हुईं । इन बहनों में देश-सेवा की विशेष लगन थी।

लीलादेवी तो काफी उग्र विचारों की थीं और वह चाहती थीं कि देश में कोई विशेष क्रांतिकारी आंदोलन हो, जिसमें योग दिया जाय । एक दिन उन्होंने कहा कि हमारी एक बहन जी हैं, उनसे आपको मिलाना है । मैं स्वर्गीय सेठ छज्जूराम चौधरी के यहां गया । वहां शांता देवी ने एक बहन से मेरा परिचय कराया, जिनका नाम था सुशीलादेवी । बहुत दुबली-पतली, निहायत गौर वर्ण और बड़ी-बड़ी आंखें, जिनमें एक विशेष प्रकार की सात्विक ज्योति के दर्शन होते थे और गम्भीर शांत मुद्रा । दोनों हाथ जोड़कर दोनों ओर से प्रणाम-नमस्कार के बाद सुशीलाजी ने कहा, "मैं शांता से कई दिनों से कह रही थी कि आपसे मिलना है ।" उन बहन में शालीनता और स्नेहशीलता के विशेष दर्शन हुए । उस समय के बाद तो अनेक बार हम लोग मिले ।

साइमन-कमीशन के बहिष्कार के दिन थे । चारों ओर देश में उग्रता का वातावरण था,बड़ी उत्तेजना थी और थी कुछ कर गुजरने की तीव्र उत्कंठा । ऐसे मौके पर साइमन-कमीशन के बहिष्कार के जुलूस का नेतृत्व करते हुए स्वर्गीय लाला लाजपतरायजी पर पुलिस की लाठी का प्रहार हुआ । जवाहरलालजी पर लखनऊ में पुलिस की लाठी पड़ी । क्रांतिकारी नवयुवकों ने इन सबको देश का भीषण अपमान माना और उसका बदला लेना तय किया । इन युवकों में भगतसिंह, आजाद

और राजगुरू आदि अनेक युवक थे। इनको सुशीलाबहन अनेक तरह से सहयोग देती थीं। सुशीलाजी शांत-गम्भीर भाव से चुप रहकर काम करती थीं। विशेष बातचीत, मिलना-जुलना पसंद नहीं करती थीं, पर जो उनके सम्पर्क में आता, उनके प्रति सहज ही एक आदर की भावना पैदा हो जाती। उन्हीं दिनों सांडर्स की लाहौर में हत्या हुई। उसके बाद सेन्ट्रल असेम्बली में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बमकांड किया। उन्हीं दिनों लाहौर जेल में जतीन्द्रनाथ दास का भूख-हड़ताल में प्राणान्त हुआ। देश में चारों ओर उथल-पुथल के दिन थे वे। जरा भी सोचनेवाला देश के लिए कुछ करने की तमन्ना लिये फिरता था। सुशीलाबहन से इन घटनाओं पर विचार चलता, पर वह अपनी बात बहुत कम कहतीं। तब भी ऐसा लगता था कि उस छोटे से दुबले-पतले हड्डियों के ढांचे में एक भीषण आग जल रही है, देशप्रेम की मानों पर्वत के गर्भ में ज्वालामुखी धधक रहा है। उन्होंने बड़ा बाजार की कुछ महिलाओं और लड़कियों की एक मंडली बटोरकर भगतसिंह डिफेन्स फंड के लिए रकम जमा करने के उद्देश्य से महिला नाटक का आयोजन जिस साहस से किया था, उसको मै कभी भूलता नहीं। बड़ा बाजार का क्षेत्र तब सामाजिक प्रगति और महिला-जागृति की दृष्टि से बहुत पिछड़ा था। सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाली कोई महिला दीख न पड़ती थी। तब भी सुशीलाजी ने अपनी पंजाबी बहनों के सहयोग से यह जो साहसपूर्ण कार्य किया था, वह उनके ही बल बूते का था।

देश मे ऐसा वातावरण तैयार हो रहा था कि बूढ़े-जवान, स्त्री-पुरुष सब देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा से प्रेरित थे। सुशीलाबहन तो पहले से ही शपथ ले चुकी थीं देश की स्वतंत्रता के लिए अपने को होमने की। सुशीलाजी में एक विशेषता थी कि वह अपनेको अधिक सामने नहीं आने देती थीं और भीतर ही भीतर बहुत काम करके काम करनेवालों को सहयोग देती थीं। भयंकर क्रांतिकारी विचार रखते हुए भी वह ऊपर से बड़ी शात नजर आती थीं। वह उत्तेजना या उग्रता से बातें नहीं करती थीं।

वह बहुत अच्छी वक्ता थीं। इसका एक उदाहरण देना अच्छा होगा। १९३० में कलकत्ता की दमदम जेल में बीस वर्ष का नवयुवक सजा पाकर आया। वह बीमार हो गया। मैं उसके पास गया और हाल-चाल पूछा तो उसने बताया कि कलकत्ते से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, मैं यहां किसीको नहीं जानता। मैं तो योंही घूमने कलकत्ता आया था। एक पार्क में मीटिंग हो रही थी। मैं संयोगवश वहां चला गया, तो देखा कि एक बहनजी, जो देवी जैसी लगती थीं, बहुत ही उज्ज्वल खादी की साड़ी पहने व्याख्यान दे रही है। मै क्या कहूं, उनके व्याख्यान में जादू था, जादू। मैं पागल हो गया। अपनी सोलह वर्ष की युवा स्त्री, बूढ़ी मां और छोटी सी बच्ची सबकी याद और जिम्मेदारी भुलाकर मैंने निश्चय कर लिया कि

अब देश पर मर, मिटने का यह समय है और आंदोलन में शरीक हो गया। मुझे उन बहनजी के व्याख्यान ने जेल में ला पटका। वह दुःखी था। घबरा गया था। मैंने उससे कहा कि तुम घबराते हो तो जेल से छुटकारा मिल सकता है। माफी मांगने पर तुरन्त बाहर जा सकते हो। वह रोने लगा। माफी किस बात की, मैंने गुनाह थोड़े ही किया है। बहनजी ने कहा था, जैसे अपनी मां सबको प्यारी है, भारतमाता आज भी विदेशियों के हाथों अपमानित हो रही है। मां की सेवा करने के अपराध में हमारे भाई फांसियों पर लटकाये जाते हैं। जेलों में ठूंस दिये जाते हैं, इस स्थिति को कोई मां का सच्चा पुत्र बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसका प्रतिकार करना और देश को स्वतंत्र कराना मां के प्रत्येक बेटे का परम कर्तव्य है। इसलिए मैंने सरकारी कानून की अवज्ञा करके विदेशी कपड़े की दुकानों पर पिकेटिंग किया और सरकार ने सजा दे दी। मैं नहीं समझता कि मैं अपने देशवासियों से यह कहूं कि आप विदेशी कपड़ा न लें और आज से स्वदेशी वस्त्र ही पहनें तो उसमें क्या अपराध है। इसलिए माफी मांगने जैसा अपमानभरा कार्य करना उस देवी के प्रति अन्याय होगा। मैं उसके मानस को टटोल रहा था, पर उस पर तो सुशीलाजी का व्याख्यान जादू कर चुका था।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण सुशीलाजी के बारे में दिये जा सकते हैं। अप्रैल सन् १९३० में चटगांव में शस्त्रों के कारखानों पर आक्रमण हुआ और उसकी लूट की गई। उसके नेता श्री अनन्तसिंह और लोकनाथपाल आदि अनेक युवक गिरफ्तार हुए और उन पर मुकदमा चला। पैरवी के लिए रुपया इकट्ठा करने के लिए अनन्तसिंह की बहन श्रीमती इन्दुमती आईं। सुशीलाजी और हम लोगों से वह मिलीं। सुशीलाजी ने उनकी बहुत मदद की। इसी प्रकार अनेक फरार लोगों को छिपाने में सहायता करने में सुशीलाजी का पूरा हाथ रहता था।

एक बार फरार क्रांतिकारी अपने को छिपा सकने में असमर्थ हो गया और गिरफ्तार होने की स्थिति आ गई। गिरफ्तार होने पर बहुत तरह के गुप्त रहस्य खुलने का अंदेशा रहता है। इसलिए यह निश्चय किया गया कि गिरफ्तार होने पर फांसी की सजा होगी ही, इसलिए किसी अंग्रेज अफसर को मारकर वहीं मर जाना अच्छा है और ऐसा ही किया गया। वे सब बातें सुशीलाजी की सलाह और सुझ-बूझ की थी और उनकी सलाह का क्रांतिकारी दल के लोग बहुत आदर करते थे। उनके जीवन का एक क्रांतिकारी पहलू है। लेकिन यह अप्रकट था, गुप्त था। बाहर से वह समाज-सुधार और शिक्षा-प्रसार आदि के काम में लगी रहतीं थीं। सुशीलाजी का बाहरी रूप क्रांतिकारी नहीं था। वह अधिक परिश्रम के कारण अस्वस्थ रहने लगी थीं। उन्होंने कलकत्ता से बाहर जाना उचित समझा। इसीलिए वह शायद दिल्ली चली गईं। वहां वह गांधीजी से मिलीं और अपनी सब बातें उनसे कहीं।

अनेक लोगों ने उनके संस्मरण लिखे होंगे, पर मुझे तो उनके कलकत्ता के आपबीते संस्मरण और उनका थोड़े दिनों का साथ बहुत ही महत्त्वपूर्ण और प्राणवान लगता है।

४ : मोतीलाल तेजावत

मोतीलालजी तेजावत उस युग के आदमी थे जब देश अंग्रेजी शासन के अधीन ही नहीं था, उसके बहुत बड़े हिस्से पर अंग्रेजों के गुलाम देशी राज्यों के अत्याचार वहां की जनता पर, खासकर पिछड़े वर्ग के लोगों पर, नाना रूपों में हो रहे थे। लेकिन इस युग में देश एक करवट बदलने लगा था। अत्याचारों का, शोषण का, उत्पीड़न का, उसे भान होने लगा था और ऐसा सोचा जाने लगा था कि इस स्थिति का प्रतिकार भी हो सकता है क्या ? वेदनाएं सीमा पार करके एक ऐसी कराह पैदा करने लगी थीं, उनमें टीस उठने लगी थी कि जो आदमी का दिल दहला दे। सारे देश में यह हालत किसी न किसी रूप में थी, पर देशी राज्यों में इनकी भयकरता पिछड़े वर्ग के लोगों पर भयानक रूप में ढहती थी। तरुण मोतीलाल ने वे दृश्य आंखो देखे और उनका मन, हृदय, विचार इस स्थिति का प्रतिकार करने का बन गया। वह किसी बात की भी परवा किये बिना उस आग में कूद पड़े। आर्त्त भील तथा वैसे ही लोगों को नेता मिल गया और काम आगे बढ़ने लगा।

मोतीलालजी के जीवन पर हम विचार करें, तो यह स्पष्ट पता लग जाएगा कि उनके सामने किसी प्रकार का कोई आकर्षण नहीं था। उन्होंने अपने लिए कुछ सोचा ही नहीं कि मेरे इस कदम उठाने का क्या परिणाम हो सकता है। उन्होंने एक आर्त और पीड़ित समाज की आवाज सुनी और उनका संगठन करके प्रतिकार करने की कोशिश की। थोड़े ही समय में भील जनता पर उनका अद्‌भुत प्रभाव हो गया और मोतीलालजी की वाणी भीलों की वाणी बन गई। स्थानीय राजाओं पर इसका असर पड़ा। पर वे स्थिति का सामना करने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। इधर मोतीलालजी ने घोषणा कर दी कि "हुक्म और हासिल (कर) नहीं।" इस प्रकार यह आन्दोलन बड़े रूप में आगे बढ़ने लगा। एक बड़ी सभा में गोलियां चलीं और बारह सौ भीलों की नृशंस हत्या की गई। मोतीलालजी को भीलों ने बचा लिया और वह सात-आठ वर्ष फरार रहे। इसके बाद देश स्वाधीन हुआ तब तक का समय उन्होंने प्रायः जेलों में ही बिताया।

इस प्रकार तरुण मोतीलाल साठ वर्ष का बूढ़ा बन गया। जवानी की सारी हविस तथा सुख-सुविधा प्राप्त करने के सारे साधन इस तपस्वी तरुण ने देशभक्ति की आग में होम कर दिये। लगातार तीस वर्षों तक यह आदमी या तो इधर-से-उधर भटकता रहा या जेलों में बन्द रहा। पर इस वीर तपस्वी के मन में कभी किसी प्रकार की कमजोरी नहीं आई। वह सचमुच तेजावत थे। उनकी वृत्ति में सच्ची तपस्विता थी, वाणी में तेज था और वह आन-बान के आदमी थे।

ऐसे देशभक्त का दर्शन सन् १९४० में उदयपुर में पूज्य जमनालालजी के साथ किया और उनके बारे में जाना और समझा एवं उस दिन से उनके प्रति एक सम्मानभरी श्रद्धा पैदा हुई। मोतीलालजी प्रचार से दूर रहते थे। वह तो आर्त और अत्याचार से पीड़ित लोगों के नेता थे। उनके सुख-दुःख में शरीक होने में तथा उनके प्रति होने वाले अन्यायों का प्रतिकार करने में ही उनको सुख मिलता था।

गांधी-युग के पहले राजस्थान में जिन लोगों ने जागृति का काम किया, उनमें श्री अर्जुनलालजी सेठी, विजयसिंहजी पथिक, बाबा नृसिंहदास, जयनारायणजी व्यास, केशरीसिंहजी बारहठ, चूरू के स्वामी गोपालदासजी आदि लोगों से मिलने और परिचय का मौका मिला था। डरवा के महाराज श्री गोपालसिंहजी का नाम भी सुना था। इन लोगों को लोकमान्य तिलक तथा अन्य उग्र नेताओं से प्रेरणा मिली थी। हो सकता है कि तेजावतजी ने भी इस युग से प्रेरणा प्राप्त की हो, पर तेजावतजी का पथ ऐसा था, जिसमें केवल शूल ही बिछे थे। तेजावतजी ने न फूल के दर्शन किये और न कल्पना की।

कुछ वर्ष पहले वह कलकत्ता आये थे, तब उनका स्वागत करके हमने एक सच्चे देशभक्त के स्वागत के सुख का अनुभव किया था। जब उनके निधन का समाचार पढ़ा तो ऐसा लगा कि एक ऐसा आदमी उठ गया, जिसने देश भक्ति में तपते-तपते अपने आपको गला दिया था और कुछ भी बदले में प्राप्त करने की इच्छा नहीं की। न वह एम० एल० ए०, एम० एल० सी० या एम० पी० बने और न उन्हें कोई राजकीय पद मिला। रहने के लिए घर नहीं और कोई दूसरा साधन नहीं। इस स्थिति में सारी उम्र जवानी से बुढ़ापे तक वह तपते रहे और "सुमन माल जिमी कण्ठ ते, गिरत न जानहि नाग," की भांति चले गये।

५ : जुगलकिशोर बिड़ला

सन् १९११ में मैं कलकत्ता आया था। १८ मल्लिक स्ट्रीट, काली-गोदाम में ठहरा और वहां बहुत दिन रहा। उन बातों को आज आधी शताब्दी से अधिक हो गये। उन दिनों काली गोदाम में बलदेवदास जुगलकिशोर के नाम से आज के बिड़ला ब्रादर्स की फर्म थी। श्री जुगलकिशोरजी अपनी उस गद्दी का संचालन करते थे और काली-गोदाम में ही रहते थे। मुझे पहले-पहल वहीं उनके दर्शन का सौभाग्य मिला। परिचय उस समय नहीं हो सका, क्योंकि उस समय भी वह अपने-आप में एक विशेष आदमी थे। उनकी चर्चा रहती थी काली-गोदाम में तथा समाज में। उन दिनों वह मारवाड़ी समाज के बड़े व्यापारियों में नहीं थे, पर उनके विचार, उदारता, नम्रता, सरलता, सादगी और स्नेहशीलता की चर्चा रहती।

काली-गोदाम में जो गद्दियां थीं, उनके साथ बासा याने खाने-पीने का प्रबन्ध रहता। उस बासे में भोजन करने का दस से बारह रुपया महीना खर्च लगता। उस समय बिड़लों की गद्दी का जो बासा था वह काली-गोदाम में सबसे अच्छा माना जाता था। बासे में जीमनेवालों के लिए एक क्यारी होती थी। उसमें जीमते समय उस क्यारी को ग्वाला,[1] जो वहां बरतन मांजने आदि का काम करता था, छू नहीं सकता था। जीमनेवाले को कोई चीज दी जाय तो वह बिना छुए हल्के हाथ से ऊंचे से गिरा दी जाती, पर बाबू जुगलकिशोरजी ऐसा न करते। वह उस ग्वाले को न तो अछूत मानते और न उसके साथ इस तरह का बर्ताव करते। वह कटोरी उसके हाथ से थाली में रखवाते या उसके हाथ से अपने हाथ में ले लेते। इस बात की चर्चा काली-गोदाम में हुआ करती कि जुगलकिशोरजी ग्वाले का परहेज नहीं करते, यानी उसका छुआ खाते हैं। बात आज हँसी की-सी लगती है, पर उनके जीवन की झांकियों में झांकें तो उस समय की इस बहुत छोटी-सी बात में वे विचार नजर आते हैं, जो आगे जाकर हरिजन-आंदोलन या छुआछूत या सवर्ण-अवर्ण के विचारों में प्रकट हुए।

उस समय तक बंगाली समाज में ब्रह्म-समाज की स्थापना हो चुकी थी और उसका प्रभाव बंगाल में काफी बढ़ रहा था। ऐसे ही आर्य समाज के विचारों का भी प्रभाव पंजाब तथा उत्तर भारत में बढ़ रहा था। श्री जुगलकिशोरजी पर आर्य समाज की समाज-सुधार की बात का प्रभाव पड़ा था, पर आर्य-समाज की मूर्ति-पूजा-निषेध तथा अन्य बातों का प्रभाव उन पर नहीं था। उस समय बड़ा

---

१. बंगाल में मारवाड़ी परिवारों के घरेलू नौकर को ग्वाला कहते हैं।

संघर्ष था—आर्य समाज और सनातन धर्म का। श्री जुगलकिशोरजी हर अच्छी बात का, हर अच्छे आदमी का आदर करते थे।

उदारता और नम्रता की तो वह साक्षात् मूर्ति ही थे। मैंने उनके दादाजी की उदारता की बात सुनी है और उनकी तो सुनी भी और देखी भी। हो सकता है, उन्होंने अपने दादाजी, पिताजी से संस्कार लिये हों, पर उनमें एक ऐसी विचित्रता थी, देने की, कि न देने पर अकुलाहट होती। जिस समय उनके सट्टे में रुपया आता तो अकुला कर रुपये देते। ऐसे दो-चार उदाहरण तो मेरे सामने हैं कि मांगने वाले ने कल्पना ही नहीं की कि इतना अधिक मिलेगा। वह चन्दा मांगनेवाले से या व्यक्तिगत सहायता चाहनेवाले से पूछते कि कितने से काम चलेगा तो जितना वह बताता वह कहते, इतने से कैसे चलेगा, ज्यादा चाहिए? यह सब उनके व्यक्तिगत गुण या स्वभाव की बातें हैं। एक लम्बे अर्से तक वह हमारे बीच रहे और अपनी उदारता और सद्भावना से समाज का हित-साधन करते रहे।

बिड़ला मंदिर या और अनेक मंदिर या मंदिरों का जीर्णोद्धार आदि बातें तो प्रायः सबके सामने हैं और ये सब चीजें उनकी दानशीलता आदि बातों को प्रकट करती हैं। पर व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन की छोटी बातों से ही अन्तरजीवन में सच्चा जीवन जीता है। उसका अंतर-जीवन, जिसको बाहर के लोग प्रायः नहीं जानते या जान नहीं सकते, वही उसका वास्तविक जीवन है। श्री जुगलकिशोरजी के उस जीवन की थोड़ी-बहुत झांकी जिनको मिली है वे जानते हैं कि वे अपने जीवन में कितने महान् थे। उनके दान का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा भी होता था, जिसको दाहिना हाथ दे तो बांया हाथ न जाने। हजारों आदमियों को आपद-विपद में उन्होंने सहायता की है, जिसको वे ही जानते हैं। ऐसे अनेक लोग है, जो उनके चले जाने से एक सहारा खो बैठे हैं।

६ : हकीमसाहब

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में इधर जो घटनाएं घटीं और हिन्दू-मुसलमानों ने जिस तरह पागलपन और अमानुषिकता का परिचय दिया उसके हजारों उदाहरण हैं। पाकिस्तान के हिन्दुओं पर जो बीती या जिन तकलीफों और विपत्तियों का सामना उन्हें करना पड़ा, उन्हें या तो हम अखबारों के द्वारा जानते हैं या वहां से आये हुए लोगों की जबानी या वहां से आई हुई गलत या सही चिट्ठी-पत्री के द्वारा। पर हिन्दुस्तान में जो कुछ हुआ यदि उसे हम देखना या समझना चाहते

हों तो आसानी से ऐसा कर सकते हैं, क्योंकि वे हमारी आंखों के सामने से ही गुजरी हैं। हम उन्हें देख सकते हैं, समझ सकते है और अगर सही रास्ते पर चलें तो उन्हें रोका भी जा सकता है। जो कुछ हुआ, उसके लिए हम पश्चात्ताप तो कर ही सकते हैं। पर दुःख है कि ऐसा होता नहीं, हुआ भी नहीं। यहां तो होड़ इस बात की लगी थी कि पाकिस्तान में हिन्दुओं पर जो कुछ बीती उससे ज्यादा हमें यहां के मुसलमानों पर बितानी है। पाकिस्तान में अगर एक लाख आदमी बेघर-बार और बेरोजगार हो गये हैं, तो हिन्दुस्तान में उसके बदले में दो लाख मुसलमानों को वैसा ही बना दें, तब तो बहादुरी है।

ऐसी स्थिति में जमीयत-उल-उलेमा के सेक्रेटरी मौलाना हिफजुर-रहमान का एक तार कलकत्ते की उलेमा की शाखा के मन्त्री के पास आया, जिसमें लिखा था कि ढकुरिया के हकीम साहब बड़ी मुश्किल में पड़ गये हैं, आप जाकर उनकी खबर लें और उन्हें तसल्ली दें। जमीयत की कलकत्ता-शाखा वाले उस मुसीबत में क्या करें, जबकि वे खुद ही मुसीबत में थे! उनके आफिस में दिन भर फोन पर फोन और आदमी आते ही रहते थे और फरियाद करते थे कि अमुक बस्ती में आग लगी है, हमें बचाइए; अमुक जगह बम पड़ रहे हैं, हमें बचाइए; अमुक जगह से भागकर पांच हजार मुसलमान अमुक जगह आ गये हैं और वहां वे दो दिन से भूख के मारे बिल बिला रहे हैं, उनके साथ बूढ़े हैं, औरतें हैं और छोटे-छोटे मासूम बच्चे, खुदा के नाम पर इन सबके लिए जो कुछ हो सकता हो, जल्द कीजिए, और कुछ न हो, तो फिलहाल खोई-चना ही भेजिए। हजारों आदमी जकरिया स्ट्रीट के उनके दफ्तर के नीचे खड़े थे और बराबर आने वालों का तांता टूटता ही नहीं था, मानों विपद और आफत का एक विकट तूफान -सा आया हुआ था। जिन लोगों ने इन दृश्यों को देखा है, वे ही उनकी गहराई को जान सकते हैं। शायद ही कोई कवि या लेखक इनका सही चित्रण कर सके।

जब मै उलेमा के दफ्तर में पहुंचा तो सेक्रेटरी साहब ने वह तार मुझे दिखाया और कहा, "ये निहायत नेक आदमी है और सारी उम्र कांग्रेस की खिदमत में ही गुजारी। पर आज तो ये भी सिर्फ मुसलमान हैं और पाकिस्तान में मुसलमानों ने जो बदगुमानी की है, उसका बदला यहां के ऐसे मुसलमानों तक से लिया जा रहा है, इसके लिए आज मुसलमान होना भर ही काफी है, फिर चाहे उसका पिछला रिकार्ड कैसा भी क्यों न रहा हो, और साहब, रिकार्ड को कौन जानता है! आप ही बताइये कि हम क्या करें?

"ऐसे नेक आदमी को बचाना बहुत जरूरी है, पर हमारी ताकत के तो यह बाहर की बात है; उन्हे बचाना तो दूर रहा, अगर वहां जायं तो खुद भी मारे जायं। आज तो किसीको मारने के लिए दाढ़ी और पाजामा ही काफी है।"

मैंने कहा कि यह तार और हकीमसाहब का पता आप मुझे दीजिए। मैं जाऊंगा

और जो कुछ होगा, आपसे आकर कह दूंगा। वह बोले, "पता तो बस यह तार ही है, रास्ता या मकान का नम्बर हम कोई भी नहीं जानते। हां, वह उस मुहल्ले के एक मशहूर आदमी जरूर हैं, शायद इससे पता आसानी से लग सके।"

मैंने तार ले लिया और अपने मित्र महाबीरप्रसादजी पोद्दार के पास आया। वह तीन-चार दिन पहले ही भागलपुर से कलकत्ता आये थे। रास्ते में श्रीरामपुर से बेलूर तक उनके सामने ही पांच मुसलमानों को काट डाला गया था और बीच के लगभग हर स्टेशन पर मुसलमानों की लाशें पड़ी उन्होंने देखी थीं। इससे उनको इतना दुःख हुआ कि उन्होंने कलकत्ता पहुंचकर इसके प्रायश्चित-स्वरूप अनशन कर दिया और भगवान से प्रार्थना की कि वह इस बर्बरता का शीघ्र से शीघ्र अन्त करे। मैंने पोद्दारजी से कहा कि भाईसाहब, आप ही एक आदमी मिले हैं, जो मुसलमानों के दुःख-दर्द को भी आदमी का ही दुःख-दर्द समझते हैं। आज तो सबसे ज्यादा काम करने की जरूरत है। ऐसी हालत में उपवास करने से क्या होगा! यह कहकर वह तार उन्हें दिखाया और सारा किस्सा भी बताया। वह बोले–"चलो, चलें उस आदमी की खोज में।"

उनको उपवास के समय कहीं ले जाना मुझे ठीक तो नहीं लगा, पर उनका उत्साह और भावना खूब तीव्र थे। मैं उन्हें खूब जानता हूं, इसलिए कुछ न बोला। एक बार मेरे घर पर उन्होंने इक्कीस दिन का उपवास किया था और उस दौरान में बीस दिन तक बराबर काम करते रहे थे। हम दोनों ढकुरिया गये और वहां कई लोगों से हकीमसाहब का पता ठिकाना जानने की कोशिश की, पर कोई फल न निकला। हम लोग भटकते-भटकते हैरान हो गये। वहां कहीं किसी मुसलमान का नाम निशान भी न दिखा और किसी हिन्दू से पूछते तो वह चौकन्ना होकर हमारी ओर देखने लगता और यही हालत दूसरे सुनने वालों की भी होती।

फिरते-फिरते हमें एक भला हिन्दू मिला। उसने कहा, "चलिए, मैं बताता हूं। पहले तो हम ज़रा सहमे, पर फिर उसके साथ हो लिये। हम लोग एक जगह गए, जहां एक मैदान में कुछ झोंपड़ियां बनी दिखाई दीं। किनारे पर एक नया साईनबोर्ड लगा था, जिस पर लिखा था–"आदर्श नगर।" जब हम उस आदर्श नगर में पहुंचे, तो वहां के लोगों की शक्लों पर गुस्सा, क्षोभ और घृणा के भाव स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। पहले तो हम ज़रा हिचके, पर फिर वह रास्ता पार किया और एक मकान के सामने आकर खड़े हुए। उस भले भाई ने कहा, "यही है हकीम साहब का मकान।" दरवाजा बन्द था। हमने उस पर आहिस्ता-आहिस्ता दस्तक दी। दरवाजा खुला और एक सज्जन सामने आते हुए बोले, "कहिए, क्या काम है ?"

हम सोच में पड़ गये कि क्या काम बताएं। फिर पूछा, "क्या यहां हकीमसाहब रहते हैं ?"

उन्होंने कहा, "रहते थे ।"

पोद्दारजी ने पूछा, "अब कहां चले गये ?"

उन सज्जन ने रूखे स्वर में कहा, "ढाका ।"

हमने सारी स्थिति भांप ली और वहां से सरक गये । इन शरणार्थी भाई ने इस मकान पर दखल कर लिया था और अब कोई इस मकान के बारे में बात करे, यह वह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे । हमें काफी निराशा हुई कि हकीम साहब तो चले ही गये, अब क्या पता लग सकता है ! फिर भी सोचा कि अगर कोई मुसलमान सज्जन मिलें तो उनसे भी पूछ देखें, पर वहां तो आस-पास कहीं भी किसी मुसलमान की शक्ल दिखाई नहीं दी । हमने साथ आनेवाले भाई से पूछा कि यहां का मुसलमान मोहल्ला किधर है, शायद वहां कुछ पता लग सके । उन भाई ने कहा, "यही तो है यहां का मुसलमान मुहल्ला, पर सब मुसलमान भाग जो गये हैं और उनके खाली मकानों पर शरणार्थियों ने कब्जा जमा लिया है, कुछ दस-पांच घर बचे होंगे, तो उनमें रहनेवालों का हौसला ही नहीं होता कि बाहर आवें ।"

पिछली तरफ हमें एक मुसलमान की-सी सूरत नजर आई और हम उसी ओर बढ़े । पास जाकर हमने उस भाई से पूछा कि क्या हाल-चाल है, तो वह डरा। जब हमने उसे समझाया तो तसल्ली हुई और वह अपनी बातें कहने लगा । हकीमसाहब का घर पास ही था । जो उसने हमें इशारे से बताया । मकान का दरवाजा बन्द था । हमने दस्तक दी तो किवाड़ खुले और एक सहमी-सी, डरी-सी, घबराई-सी शक्ल हमारे सामने आई, जिसको देखकर थोड़ी देर के लिए हम भी चकित से रह गये । बहुत ही ज़ईफ, शरीर पर फटा-सा कुरता और तहमद, मुंह में एक-आध दांत, सामने छोटी-सी दाढ़ी जिसके बाल सफेद होने के बाद ज़र्द हो चुके थे, झुर्रियों से भरा मुंह और झुकी हुई कमर । बड़े अदब से उन्होंने कहा, "आदाब अर्ज । कहिए, कैसे मेहरबानी की ?"

हमने कहा कि हम हकीमसाहब से मिलने आये हैं । उन्होंने कहा, "खादिम ही को कहते हैं । आइए, आइए , तशरीफ रखिए ।"

हम लोग भीतर गये और तार उन्हें दिखाकर सारे हालात बयान किये । वह बागबाग होकर बोले, "आपने बड़ी तकलीफ उठाई इस नाचीज के लिए । मैं तो आपका शुक्रिया अदा करने लायक भी नहीं । मैंने ही घबराकर मौलाना को तार कर दिया था । वह पुराने दोस्त हैं ।"

बातों के सिलसिले में उन्होने स्वदेशी युग की घटनाओं का जिक्र किया और बड़े गद्‌गद् स्वर में कहा,"वे भी दिन थे जब हमने राखी बांधी थी और कहा था, भाई-भाई भेद नाई ।" कई अन्य बातें बताने के बाद उन्होंने कहा, "आपने शायद मौलवी लियाकत हुसेन साहब का नाम सुना होगा, मैं उन्हीं का शागिर्द हूं।

उन्होंने ही मुझ जैसे न जाने कितने नौजवानों को उन दिनों स्वदेशी की दीक्षा दी थी, पर दुनिया अपने मतलब की बातें याद रखती है, बाकी भुला देती है। आज मौलवी साहब का नाम लोग भूल गये हैं, उनकी सेवा और कुर्बानी भी भूल गये हैं पर वह सच्चे देशभक्त थे और अपने मादरे-वतन को आज़ाद देखने के लिए किसी से कम ख्वाहिशमन्द नहीं थे। अंग्रेजों के तो वह पक्के दुश्मन ही थे और इसीलिए अंग्रेज सरकार उन्हें बार-बार जेल में डाल देती थी।"

मुझे भी मौलवी लियाकत हुसेन साहब की याद हो आई। जब लोकमान्य तिलक जेल में थे और देश लाल-बाल-पाल के नामों से प्रभावित था, तभी मैंने मौलवीसाहब का नाम सुना था और उनको देखने की इच्छा भी होती थी। पर मौलवी साहब के नाम के साथ ही एक भय लगा हुआ था कि मौलवी साहब से जो कोई मिलेगा तो खुफिया पुलिसवाले उसका नाम लिख लेंगे। उन दिनों खुफिया पुलिस का भय यमराज से भी ज्यादा था। बंगाल के जो आतंकवादी एक बार भी इलीशम रोड वाले हेडक्वाटर में जा आये हैं वही उन दिनों की खुफिया पुलिस के कारनामों और संदिग्ध व्यक्तियों को दी जाने वाली यातनाओं का कुछ परिचय दे सकते हैं। इसके बावजूद मौलवीसाहब से मिलने को तो जी ललचाता ही रहा। १९१७ में यह सुयोग मिल गया। उस वर्ष कांग्रेस का अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था और श्रीमती एनी बेसेन्ट ने सभापति का आसन सुशोभित किया था। लोकमान्य तिलक और कर्मवीर गांधी भी इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। कई मित्रों के साथ मैं भी कांग्रेस का स्वयंसेवक बना। आगन्तुकों में हमने एक ऐसे मुसलमान सज्जन को देखा, जो पाजामा और हरी कमीज पहने थे और जिन्हें लोगों ने बड़े आदर से मंच पर बिठाया। मैंने जब पूछा तो पता लगा कि यही मौलवी लियाकत हुसेनसाहब हैं। फिर तो मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। एक साथ ही दो मुरादें पूरी हुईं —लोकमान्य तिलक और मौलवी साहब के दर्शनों की। इसी अवसर पर मौलवी साहब से थोड़ा परिचय भी हो गया और उनसे दो-चार बार मिलने और बातें करने का मौका भी मिला। जो कोई भी मौलवीसाहब के सम्पर्क में आता, वही अंग्रेजों का कट्टर दुश्मन बन जाता। अंग्रेजी शासन और शोषण की वह ऐसी-ऐसी बातें बताते कि सुननेवाला उनसे प्रभावित हुए बिना न रहता। हमारे हकीमसाहब ऐसे ही मौलवी के शागिर्द हैं। पर आज तो वह सिर्फ एक मुसलमान हैं, इसलिए हिन्दुस्तान में चैन आराम कैसे और क्यों रहें ? पाकिस्तान के लोगों ने हमारे हजारों-लाखों भाइयों को मुसीबत में डाल दिया है, फिर हम इनका बदला क्यों न लें? पर बदले से ज्यादा तो यह एक आर्थिक सवाल है। जब लाखों हिन्दू पाकिस्तान से यहां आ रहे हैं, तब अगर बदले में मुसलमानों को नहीं निकाला जाएगा, तो आनेवाले लोगों को हम कहां रखेगे ? और फिर बिना बदले के हमारे देश का आर्थिक ढांचा जो गड़बड़ा जायगा ! देश के आर्थिक

ढांचे की बात सोचने वालों की निगाह में बेचारे हकीमसाहब के फटे कुर्ते, सफेद दाढ़ी और चालीस वर्ष की कांग्रेस या देश की खिदमत का क्या मूल्य और महत्व हो सकता है ?

हकीमसाहब ने हमसे पूछा, "आप क्या राय देते हैं ? हम यहां रहें या क्या करें ? हम अपना घर और वतन छोड़ना नहीं चाहते, पर बीवी-बच्चे सब कांप रहे हैं यहां के हालात देख-सुनकर । आसपास के लोग चले गये है, जो दस-पांच घर बचे हैं, उनके लोग भी चले जाना चाह रहे है ।"

हम लोगों ने कहा, "हकीमसाहब, पागलपन की जो हवा इस समय बह रही है, उसे देखते हुए कोई भी यह नहीं कहेगा कि आप यहां रहें और आप पर कोई आंच नहीं आयेगी ।" हकीमसाहब बीच में ही बोल उठे, "यहां के जो हिन्दू भाई हैं उनसे हमें कोई डर नहीं है । मैं आज भी यहां की कांग्रेस का वाइस-प्रेसिडेन्ट हूं । हमारे मंत्री मुझे यहीं रहने के लिए कह रहे हैं, पर वे भी आने वाले शरणार्थियों से डर रहे हैं । हमारे एक भले हिन्दू साथी ने कहा कि अगर हमारा बस चले तो हम हकीमसाहब को ही न जाने दें । पर इन शरणार्थियों से डर लग रहा है कि कहीं ये हमारे घरों पर ही हमला न कर दें । अगर हम किसी मुसलमान को बचाने की कोशिश करें, तो हमारे भाई ही हमारे दुश्मन हो जायंगे ।"

हकीमजी जिस हालत में थे, उसमें न मालूम दूसरे कितने और व्यक्ति भी होंगे और ऐसा ही पाकिस्तान में भी होगा । पर आज दोनों ही जगह कोई आदमी किसीको बचाना और रखना चाहे तो भी रख नहीं सकता । अन्त में हमने हकीमसाहब से कहा कि अगर आप यहां रहकर मरने के लिए तैयार हों तभी आपको यहां रहना चाहिए । हो सकता है कि आप जैसे पाक लोगों की कुर्बानी से ही इन पागलों और अंधों की आंखें खुलें । आपको यहां की हिन्दू और मुस्लिम जनता प्यार और आदर की दृष्टि से देखती है। अगर आपको भी साम्प्रदायिक दीवानें मार डालें तो, दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो इस ज़हर से मुक्त हों । उनको कुछ करने का मौका तो मिलेगा ही । आप तो ७५ वर्ष से ज्यादा के हो ही चुके हैं। आपका जीवन भी कुर्बानी का रहा है । अगर देश आपसे यह आखिरी कुर्बानी चाहता है, तो यह भी दीजिए ।

उन्होंने कहा, "आप बजा फर्माते हैं, मैं यहीं रहूंगा । यहां जनमा हूं, यहीं मर भी जाना है । मेरे लिए यह वतन ही जन्नत है । दूसरी जगह जाना तो जीते जी मरना है । और फिर बीवी-बच्चों, दवाइयों और सारे सामान को लेकर जाऊंगा भी कहां ?"

पोद्दारजी की तरफ मुखातिब होकर मैंने कहा, "इन्होंने हावड़ा में अपनी आँखों से जो कुछ देखा, उससे इनके दिल को ऐसा सदमा पहुंचा कि ये पिछले चार दिनों से फाका कर रहे हैं और खुदा से दुआ मांग रहे हैं कि लोगों की अकल ठिकाने आए । गांधीजी ने नोआखाली की प्रार्थना में नई धुन शुरू की थी, वह

तो आप जानते ही हैं : ईश्वर-अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान। वही धुन ये अपने मन में दुहरा रहे हैं।"

यह सब सुनकर हकीम साहब गद्-गद् हो गये और उन्हें गले लगा लिया। बोलने की कोशिश करने पर भी वह कुछ न बोल सके और उनकी आंखों से झरझर आंसू बहने लगे। ये पवित्र बूंदें कैसी थीं और हमें क्या कह रहीं थीं, उसे कौन सुने और कौन समझे ? संभलने के बाद हकीमसाहब के मुंह से निकला, "या अल्लाह , तू भी खूब है ! क्या-क्या कुदरत है तेरी !"

हम लोगों ने कहा, "हकीमसाहब, हम अपना पता-ठिकाना और टेलीफोन नम्बर आपके पास छोड़े जाते हैं। कोई बात हो, तो किसी तरह भी हमें खबर दीजिएगा। हमसे जो कुछ बन पड़ेगा उसमें कमी नहीं रखेंगे। अच्छा, तो अब हमें इजाजत दीजिए। फिर मिलेंगे।"

उन्होंने कहा "बड़ी तसल्ली मिली आपके यहां आने से। अगर मैं मरा तो भी बच गया, और बचा तो भी बच गया।"

विदा होते समय दोनों हाथ जोड़कर मैंने कहा, "खुदा हाफिज़ !" उन्होंने भी दोनों हाथ जोड़कर उसी तरह कहा, "खुदा हाफिज़ !"

कुछ अविस्मरणीय प्रसंग

१ : दो लड़कियां

सन् १९३४ की बात है। हम लोग जमनालालजी के पास वर्धा गये हुए थे। पूज्य बापूजी सत्याग्रह-आश्रम में रह रहे थे। अब तक मगनवाड़ी और सेवाग्राम की स्थापना नहीं हुई थी। बापूजी के यहां रहने से जमनालालजी का अतिथिगृह मेहमानों से भरा रहता। देश के हर क्षेत्र के लोग बापूजी के पास अपने-अपने काम से आते ही रहते। इस तरह देश के विशिष्ट लोगों और कार्यकर्ताओं से मिलने का मौका मिलता तथा देश की नाना तरह की समस्याओं से जानकारी होती। फिर जमनालालजी के स्नेहशील स्वभाव का भी आकर्षण था। इसलिए मैं तथा मेरे परिवार के लोग वर्ष में एक-आध महीने वहां जाकर रहते थे। एक बार की एक घटना का वर्णन मैं करना चाहता हूं।

सुबह चार बजे हम लोग प्रार्थना करते। कुछ चुने हुए श्लोक और नामोच्चारण के बाद एक भजन गाया जाता। एक दिन भजन के समय जमनालालजी ने किसी को सम्बोधन करके कहा कि रामेश्वरी, तुम एक भजन गाओ न, तो उस बहन ने मीरा का एक भजन गाया। शायद भजन की टेक थी—सुनी री मैंने हरि आवन की आवाज। इस बहन का गला निहायत सुन्दर था और गाने का ज्ञान भी उन्हें अच्छा था। इसके साथ गाने वाली की तन्मयता ने एक समा बांध दिया और उस दिन की प्रार्थना आजतक स्मरण है। प्रार्थना समाप्त होने पर सब कोई अपने अपने काम में लग गये। मेरे मन में रहा कि यह बहन कौन है और यहां किस काम से आई है? मैने जमनालालजी से उन बहन का परिचय पूछा। वह बोले कि इनसे तो मैं तुम्हारा परिचय कराने वाला ही था। ये कल ही आई हैं। इनकी मां और दो-तीन बहनें भी आई हैं। उन सबसे भी तुम परिचय करो इनका नाम रामेश्वरी गोयल है। एम० ए० हैं, लेखिका है, कवयित्री हैं, और गाना तो अभी सुना ही है। इलाहाबाद में एक स्कूल की प्रधानाध्यापिका हैं। और बातें तुम स्वयं कर सकते हो। मेरा नाम और परिचय भी उन्होने बता दिया। सब सुनने के बाद मेरी उत्सुकता बढ़ी, उनसे बात करने की। पर किसी अनजान महिला से बातें करने में स्वाभाविक संकोच तो होता ही है। उन बहन ने कहा कि आपका

नाम मै जानती हूं। खैर, दो एक दिन में ही हम लोगों की अच्छी घनिष्टता हो गई। रामेश्वरी बहन की माताजी तथा बहनों से भी अच्छा परिचय हो गया।

श्री रामेश्वरीदेवी से संबंधित और बातों को छोड़कर मैं एक खास बात, जो इस लेख में लिखने का उद्देश्य है, लिख रहा हूं। रामेश्वरी जी की मां उनको लेकर यहां इसलिए आई थी कि सेठ जी (जमनालालजी) से परिचय हो जाने पर किसी योग्य आदमी से उनका विवाह कराने में वह मदद करें। जमनालालजी के पास नाना तरह की समस्याएं लेकर लोग आते थे और कुछ को बापूजी भी भेजते थे। उन समस्याओं में इन विवाह-शादियों की समस्याओ का भी काफी हिस्सा था। इस बारे में जमनालालजी के जीवन के बारे में लिखना हो, तो उनके जीवन के इस विषय को छोड़ा नहीं जा सकता। एक व्यंग्यात्मक बात तो कह ही दूं। प्रभावतीबहन (श्री जयप्रकाश जी की पत्नी) उन दिनों ज्यादातर बापूजी के पास रहती थीं। एक दिन बापू से बातें करके हम लोग वहां से उठे, तो प्रभावतीबहन साथ-साथ आईं और जमनालालजी से कहने लगीं कि काकाजी, अब आपको जमनालालजी न कहकर शादीलालजी कहना चाहिए; क्योंकि आजकल आप बहुत शादियां कराते है। शायद उस समय सोफिया खान की शादी की बाबत बापूजी से बात चल रही थी, जो बम्बई की एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री (उस समय की सोफिया सोमजी) थीं और जिनकी शादी जमनालालजी ने ही डा० खान के बड़े लड़के सादुल्ला खान से कराई थी। इस सम्बन्ध को बापूजी ने बहुत पसन्द किया था। और भी लोगों ने इस सम्बन्ध के लिए जमनालाल जी को बहुत शाबाशी दी थी। यह सब लम्बी बाते हैं।

रामेश्वरीजी से जमनालालजी ने विवाह के बारे में बातें कीं तथा जानना चाहा कि कैसे क्या वह सोच रही है ? इसपर उन्होंने एक ही शब्द में कह दिया कि मैं अपनी मां के कहने से विवाह कर रही हूं, इसलिए इस बारे में मुझे कुछ भी कहना या सोचना नहीं है। जिसको मेरी मां पसन्द करे, वह मुझे पसन्द है, क्योंकि मैं मां को सन्तुष्ट करना चाहती हूं। मेरी मां का मुझ पर बहुत उपकार है। उसने बहुत तकलीफ सहकर, बड़ी कठिनाइयों का मुकाबला करके मुझे लिखाया-पढ़ाया तथा आदमी बनाया है। अब मां मेरा विवाह करना चाहती है, तो मैं उसकी आज्ञा का पालन कर रही हूं। आज्ञा-पालन में अपना सवाल नहीं रहता। इसलिए मुझे कुछ नहीं कहना है, कुछ नहीं सोचना है।

बातें तो बहुत हुईं, पर उन्होंने एक ही बात कही कि जिसमें मेरी मां राजी हो, वही मुझे करना है। इन सब बातों का कम-ज्यादा रूप में वहां हम सबको पता लग ही गया। रामेश्वरीजी के हमउम्र लोगों में से, जो जमनालालजी के कुटुम्ब के थे, बहुत से व्यंग्य भी करने लगे। श्रीमती जानकीबहन (जमनालालजी की पत्नी) ने मुझसे कहा कि यह लड़की तो खूब है ! इतनी पढ़ी-लिखी, सब बातों

को जाननेवाली, कहती है कि मुझे अपने विवाह के बारे में कुछ नहीं सोचना है; जो मेरी मां करे वही मुझे मंजूर है ! मैंने कहा कि जानकी बहन, मुझसे उसकी बहुत बातें होती हैं । उसकी विवाह करने की ही इच्छा नहीं है । वह तो समाज-सेवा, देश-सेवा, करना चाहती है, पर वह यह मानती है कि मुझे अपनी मां को सन्तोष कराना है । उसकी इच्छा में अपनी इच्छा का समर्पण करना है । इसलिए वह कहती है कि मां जो करे, जो सोचे, उसमें मैं उज्र कैसे कर सकती हूं ? जानकीबहन ने कहा कि अपनी ओम् तो बहुत बाते करने वाली है ही । उसने रामेश्वरी को बहुत तंग किया, तो उसने यहां तक कह डाला कि मां मुझे किसी पत्थर के गले में भी बांध दे तो भी मुझे कोई उज्र नहीं होगा । आज के जमाने में इतनी पढ़ी-लिखी, इतनी स्वतंत्र रहने वाली और स्कूल चलाने वाली लड़की इस तरह सोचे, यह तो आश्चर्य ही है ।

रामेश्वरीदेवी का विवाह हुआ और उसके कुछ ही दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई । उन्होने अपनी मां की इच्छा को पूरा किया, पर उनकी अपनी इच्छा उनके साथ ही चली गई ।

एक दूसरी लड़की का चित्र देखिए, जो इसके बिल्कुल विपरीत है । एक माता-पिता ने अपनी लड़की को जमनालालजी के पास भेजा कि इस लड़की को समझाइए कि यह क्या करने जा रही है । यह जिस लड़के से विवाह करना चाहती है, उसे हम लोग पसन्द नहीं करते । वह हमारे धर्म का नहीं, हमारी जाति का नहीं और हमारी बराबरी का नहीं । इस लड़के के साथ यदि इसका सम्बन्ध होगा, तो हम अपनी जाति में, समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रह जाएंगे । यदि आप इस लड़की को समझाकर इस लड़के से इसका मन हटा सकें, तो हमारा और इस लड़की का बड़ा उपकार होगा । आप हमारे पुराने मित्र हैं और देशसेवक हैं। हमे उम्मीद है कि लड़की आपकी बात मान लेगी ।

लड़की वर्धा आई । हम लोग भी वर्धा में ही थे । जमनालालजी ने उस लड़की से मेरा परिचय कराया और उसकी सब बाते कहीं । बम्बई के उपनगर सान्ताक्रूज़ के आनन्दीलाल पोद्दार हाईस्कूल में लड़की पढ़ती थी । उस स्कूल में सहशिक्षा है। एक लड़के से लड़की की विवाह के बारे मे बात हो गई और दोनों ने निश्चय कर लिया कि यदि विवाह करेंगे तो हम दोनों करेंगे, नहीं तो आजीवन क्वारे रहेंगे। लड़की जैनधर्मावलम्बी है, लड़का वैष्णव । लड़की के माता-पिता धनी हैं, लड़का साधारण स्थिति का । लड़की वैश्य है, लड़का शायद और जाति का । लड़की ने आई० ए० में पढ़ना छोड़ दिया, लड़का एम० ए० है । लड़की के माता-पिता बिल्कुल नाराज हैं, इस लड़के से विवाह करने में । लड़की किसी तरह राजी नहीं होती । वह कहती है कि मैं तो इसी लड़के से विवाह करूंगी ।

जमनालालजी ने लड़की से बातें कीं और कहा कि तुम्हें अपने माता-पिता की

बात माननी चाहिए । वे जो कुछ करेंगे, तुम्हारे भले के लिए ही करेंगे । फिर वह लड़का तो तुम्हारे धर्म और जाति का भी नहीं है तथा गरीब भी है । तुमने धनी घर में जन्म लिया है । तुम बहुत लाड़-प्यार से पाली पोसी गई हो । तुम्हे धनी घर का लड़का मिल सकता है, जिसके साथ तुम आराम से रह सकोगी, आदि आदि बहुत सी बातें उन्होंने लड़की को समझाई । लड़की चुप रही और उसकी आकृति से प्रकट हो रहा था कि वह जमनालालजी की बातों से बहुत दुखी हो रही है । जमनालालजी ने कहा कि मेरी बातों पर विचार करो । उस लड़के से तुम्हारा प्रेम है; पर उसके घर में जाकर तुम्हे न रहने को बंगला मिलेगा, न चढ़ने के लिए मोटर मिलेगी, न पहनने को अच्छे कपड़े और जेवर भी नहीं मिलेंगे । काम भी सारा हाथ से ही करना होगा । इससे तुम्हें तकलीफ होगी । आज तुम्हें इन सब बातों का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है । हो सकता है, वस्तुस्थिति का सामना करना पड़े तो तुम अपने मन में निराश और दुःखी होओ । फिर तुम्हारा सम्बन्ध मधुर नहीं रह सकता, जिसकी आज तुम कल्पना कर रही हो । लड़की चुपचाप ज़मीन कुरेदती सब सुनती रही । जमनालालजी ने फिर कहा कि ये सब बातें मैं तुम्हारे पिता की तरफ से नहीं कह रहा हूं, अपनी तरफ से कह रहा हूं और तुम्हारे लिए कह रहा हूं ।

अब लड़की का मौन भंग हुआ । उसने कहा, "ताऊजी, आपने मुझे बचपन से देखा है । मैं समझने लगी तबसे आप पर श्रद्धा करती आ रही हूं । आप क्या कह रहे हैं, मैं समझ नहीं पाती । आप कहते कि लड़का मूर्ख है, पढ़ा-लिखा नहीं है, स्वस्थ नहीं है या चरित्र का अच्छा नहीं हैं, तो मैं सोचती और आपकी आज्ञा से तथा माता-पिता की आज्ञा से ही चलती । पर आप लोग तो कहते हैं, वह तुम्हारे धर्म का नहीं है, तुम्हारी जाति का नहीं है, गरीब है । ताऊजी, इसकी क्या गारंटी है कि अन्य धनी लड़के के साथ आप मेरा विवाह कर देंगे, तो वह बराबर धनी ही रहेगा और यह लड़का सदा गरीब ही रहेगा । फिर यह भी सोचने की बात है कि बहुत धन से धनी का क्या लाभ हो रहा है ? धनी जिस विलास का, प्रमाद का जीवन जीता है, वह तो मेरी निगाह में समाज के लिए घातक ही है । यदि मोटर और बंगले की चाह होती तो मैं ऐसे लड़के को पसन्द ही क्यों करती ? मैं तो मानती हूं कि आदमी की साधारण जरूरत पूरी हो जाए, तो उसे समाज में विषमता क्यों फैलानी चाहिए । एक तरफ बहुत-सा ढेर लगेगा, तो दूसरी तरफ गड्ढे का होना स्वाभाविक है । गड्ढे और ढेर का रास्ता कोई अच्छा रास्ता नहीं । इस रास्ते चलने वाले को कोई आराम या सुख नहीं मिलता। समतल रास्ते पर ही चलने में सुख मिलता है । ताऊजी, मुझे माफ करें, मेरी धृष्टता बहुत बढ़ गई । मुझे आपको ये सब बातें नहीं कहनी चाहिए थीं। मै आपसे यह प्रार्थना करती हूं कि आप पिताजी को समझा दें । मझे आपका और

उनका आशीर्वाद चाहिए ।"

जमनालालजी ने कहा, "तुम्हारी बातें मुझे अच्छी लगीं । मैं तो तुम्हारे मन की हालत जानना चाहता था । तुम्हारी दृढ़ता का पता लगाए बिना मैं तुम्हारे पिता को क्या राय देता ?"

उन्होंने लड़की के पिता को लिख दिया कि मैंने सुलोचना से बातें कीं और उसको समझाने-बुझाने की चेष्टा भी की । मेरी सलाह है कि लड़की जिस लड़के से विवाह करना चाहती है, उसीके साथ विवाह करने में भलाई है । हमें यह सोचना चाहिए कि हम लड़कियों को स्कूल कालेजों में पढ़ायेंगे और बड़ी उम्र में उनकी शादी करेंगे तो फिर वे बिल्कुल हमारी ही इच्छा से शादी करे, यह न तो सम्भव है और न उचित ही ।

लड़की बम्बई चली गई । माता-पिता ने लाचार होकर लड़की की इच्छानुसार विवाह करना मंजूर किया । पर लड़की से उन्होंने कहा कि हम तुम्हें एक पैसा भी नहीं देंगे और विवाह के बाद तुम्हारा हम लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। तुम इस घर में बिल्कुल आ भी नहीं सकोगी । लड़की ने विनय के साथ कहा कि आपकी पहली बात तो बिल्कुल सही है । जब मैं आपकी आज्ञा नहीं मान रही हूं, तो आपसे पैसा या किसी तरह की सहूलियत कैसे चाह सकती हू ? पर आपसे मेरा सम्बन्ध कैसे छूट सकता है ? मै आपके घर मे जन्मी हूं । आपके रक्त-मास से बनी हू । आप सबको मै कैसे भूल सकती हूं ? आप मुझे आज्ञा दीजिए कि मै घर आकर आपके दर्शन कर सकू । मां और भाई-बहनों से मिल सकूं । पिताजी, मैने अपनी जान में कोई अन्याय नहीं किया है । मैं किसी लोभ और प्रलोभन की इच्छा से यह नहीं कर रही हू । क्या इसके लिए आप मुझे क्षमा नहीं करेंगे ? क्या आप मेरा यह अधिकार भी छीन लेंगे कि मै आपको तथा घर के और लोगों को देख भी न सकूं ? पर पिता का क्रोध शान्त नहीं हुआ । विवाह हो गया । पिता ने सख्त मनाही कर दी कि सुलोचना अब से घर मे न आने पावे ।

लड़की बम्बई के उपनगर दादर मे दो कमरो का एक छोटा-सा फ्लैट लेकर रहने लगी । उसका पति लिखा-पढ़ा, स्वस्थ, मेहनती और ईमानदार था । इसलिए तुरन्त उसको काम मिल गया और पति-पत्नी दोनों आनन्द से रहने लगे ।

ए० आई० सी० सी० की मीटिंग में शमिल होने के लिए मै बम्बई गया। वहां देखा कि सुलोचना देश-सेविका बनी केसरियां साड़ी और हरा ब्लाउज पहने काम कर रही है । बहुत ही खुश, स्वस्थ, प्रसन्न दिखाई पड़ती थी वह । बड़ी खुशी हुई उसे देखकर । उससे मिलने की, बातें करने की इच्छा का होना तो स्वाभाविक ही था । पहला प्रश्न मैंने उससे यह किया कि पिताजी के दिल को तुम जीत सकीं या नहीं ? उसने कहा कि जीत तो सकी पर बहुत तपश्चर्या करनी पडी

उनको राजी करने के लिए। सारी बातें बताने के लिए कहने पर उसने घर आने का निमन्त्रण दिया और वहीं पर बातें करना तय किया।

दूसरे दिन शाम को मीटिंग खत्म होने पर मैं उसके साथ ही उसके घर गया। छोटा सा घर था, पर बहुत साफ-सुथरा, सुन्दर, व्यवस्थित मालूम हो रहा था। उसके पति भी आ गये। उनसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। थोड़ी देर की बातचीत से ही वह एक अच्छे विचार के युवक हैं, यह मालूम होने लगा। यह भी पता लगा कि दम्पति बड़े प्रेम से रहते हैं तथा अपनी सामाजिक और सार्वजनिक जिम्मेदारियों का ज्ञान रखते हैं। सुलोचना भगिनी-समाज की मन्त्रिणी है। ए० आइ० सी० सी० की मीटिंग के लिए भगिनी-समाज से बीस देशसेविकाएं काम करने के लिए जाती हैं, आदि-आदि बातें भी हुई। पर मेरी इच्छा सुलोचना के पिताजी के समाचर जानने की ज्यादा थी।

सुलोचना ने बताया कि मैं मां और भाइयों से मिलती थी। वे भी कभी-कभी मेरे पास आ जाया करते थे। पर पिताजी के पास जाने और उनसे मिलने की मेरी हिम्मत नहीं होती थी। मां से मुझे मालूम होता था कि पिताजी का क्र ोध अभी शान्त नहीं हुआ। मां पहले तो नाराज़ थीं, पर बाद में आहिस्ता-आहिस्ता राजी हो गईं। भैया तो मेरे विचारों के ही थे, पर वह पिताजी को कुछ कह नहीं सकते थे। पिताजी की नाराजगी का असर हमारे सारे कामों पर रहता था। हम लोग अपने-आपमें सुखी हैं, आप देख ही रहे हैं। पर पिताजी को राजी न कर सकने की वेदना मेरे दिल में बनी रहती थी। अचानक वह बीमार पड़े और अपने जुहू के बंगले पर जाकर रहने लगे। जब यह समाचार मिला तो मुझे बड़ी चिन्ता हुई और मैं सोचने लगी कि क्या ऐसी हालत में भी जब वह बीमार हों तब भी, मुझे उनके क्रोध या नाराजगी के डर से उनके पास नहीं जाना चाहिए? मैंने तय किया कि चाहे जो हो, मै उनके पास जाऊंगी और उनकी सेवा करूंगी। पिताजी मेरा यह अधिकार नहीं छीन सकते कि मैं बीमारी में उनकी सेवा भी न कर सकूं। मैं जुहू गई और पिताजी के पैरों से चिपट गई। मैं बोल तो नहीं सकी, पर मेरे लाख कोशिश करने पर भी मेरे आंसू नहीं रुक सके। पिताजी भी चुप रहे। कुछ देर में मेरे दुःख का आवेग कम हुआ, तो मैंने कहा, "पिताजी, मुझे क्षमा कर दीजिए।" उनका भी गला भर आया और उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा। न मालूम पिताजी ने कितनी बार मेरे सिर पर हाथ रखा था, कितने प्यार से, कितने दुलार से उन्होंने मुझे पुचकारा था, पर सच कहती हूं पिताजी के आज के सिर पर हाथ रखने मे जिस सुख, जिस शान्ति और जिस प्यार का अनुभव हुआ वैसा पहले कभी नहीं हुआ था। मां भी पास ही थीं। उनकी आंखों में भी आंसू थे। भैया भी आ गए। भाभी भी आ गईं मेरे सारे परिवार के लोग आज करीब दो वर्ष के बाद इस तरह मिले। इसकी खुशी का वर्णन मैं

आपसे नहीं कर सकती । उस दृश्य को याद करने में, आपसे कहने में जो खुशी हो रही है उसका तो आप स्वयं अनुभव करते होंगे । मैंने इनको फोन से खबर की, तो ये भी बहुत खुश हुए । पिताजी तीन-चार महीने बीमार रहे । मैं बराबर उनके पलंग से लगी रही । रात-दिन बराबर उनकी सेवा करती रही । मैं भगवान से प्रार्थना करती थी कि मैंने पिताजी की आत्मा को जो कष्ट दिया है उसका प्रायश्चित मैं अपनी सेवा द्वारा कर सकूं । इन तीन-चार महीनों में पिताजी से काफी बात करने का मौका मिला । वह विचारों से तो कम-ज्यादा रूप में हम लोगों के विचारों के कायल थे, पर उनमें वह साहस नहीं था, जो एक युवक में, एक युवती में होता है । यह स्वाभाविक भी है । जब पिताजी अच्छे होकर बम्बई जाने-आने लगे तब मैं घर आई । आज हम लोगों का पिताजी के साथ मधुर सम्बन्ध है । अब पिताजी के विचारों में काफी परिवर्तन भी हो गया और वह मुझे पहले से भी ज्यादा प्यार करते हैं ।

सचमुच आज मुझे भी ज्यादा खुशी हो रही है । सुलोचना के यहां से लौटते समय मैं रास्ते में सोच रहा था कि सच्चाई एक ऐसी चीज़ है, जो अपने-आप प्रकट होती है । सुलोचना ने अपनी सच्चाई से, अपने त्याग से पिता का दिल जीता है । आज जो युवक और युवती समाज में क्रांति करना चाहते हैं, उनके लिए सुलोचना की कहानी एक अच्छा उदारहण है, जिसकी आज निहायत जरूरत है । आज के युवक जात-पांत के, धर्म के और रूढ़ि के बन्धन मान नहीं सकते, मानना चाहिए भी नहीं; पर उनको अपनी विनय, अपना शील नहीं छोड़ना है । सिद्धान्तों की रक्षा के लिए हमें सब कुछ सहना होगा । हमारे कष्ट, हमारी वेदना, हमारा त्याग, हमारे कार्यों में बोलना चाहिए । हमें किसी भी हालत में समर्पण नहीं करना है, उद्दण्ड भी नहीं होना है । यह सोचते-सोचते मैं अपने-आप में खो-सा गया । सुलोचना सुखी रहे, यह प्रार्थना है ।

२ : निर्मला की मां

हमारे विद्यालय में महिलाओं की सभा थी । अनेक महिलाएं आई थीं सभा में । यह सभा शायद शारदा कानून का समर्थन करने के लिए उसके समर्थकों ने आयोजित की थी । सभा समाप्त होने पर एक बहन मुझसे मिलने आई । निहायत सुन्दर, उम्र लगभग २५ की, गौर वर्ण, पुष्ट शरीर, हँसीभरा मुख । मैंने उसको नमस्कार किया और पूछा, "कहो, बहन ?"

वह बोली, "मेरी लड़की आपके स्कूल में पढ़ती है ।"

मैंने पूछा, "क्या नाम है ?"

"निर्मला ।"

"आप निर्मला की माताजी हैं ?"

"जी हां ।"

"निर्मला तो बहुत अच्छी लड़की है ।"

"मैंने सोचा, यहां आई हूं तो आपसे मिलती चलूं । निर्मला आपके बारे में कहा करती है कि हमारे मंत्रीजी हमें बहुत बातें बताया करते हैं ।"

उन दिनों हिन्दी भाषा-भाषी लड़कियां पांचवें दर्जे से ज्यादा नहीं पढ़ा करती थीं । मैं कोशिश किया करता था कि लड़कियों के अभिभावक अपनी लड़कियों को ज्यादा पढ़ायें । इसीके अनुसार मैंने उस बहन से भी जब यह कहा कि आप निर्मला को ज्यादा दिन तक पढ़ाइयेगा तो उसके चेहरे पर मैंने जो भाव पढ़े, वे मुझे आज भी याद हैं ।

उसने कहा, "देखिये ।"

मैंने कहा, "देखिये नहीं, उसको हम स्कूल नहीं छोड़ने देंगे ।"

"अच्छी बात है, यह आपकी बड़ी कृपा है ।" कहकर वह चली गई।

दूसरे दिन निर्मला से मैंने कहा, "कल तुम्हारी मां मिली थीं । मैंने उनसे कह दिया कि वह तुम्हें खूब पढ़ावें ।"

निर्मला ने कहा, "मां ने मुझे बताया था, मंत्रीजी ।"

निर्मला सुन्दर मां की सुन्दर लड़की थी । बड़े अच्छे स्वभाव की, क्लास में तेज, मिलनसार और स्कूल के सारे कामों में उत्साह से भाग लिया करती थी, इसलिए वह हमारी विशेष प्यारी लड़कियों में से थी । जब वह पांचवीं से छठी श्रेणी में गई तो उसमे पहले वाली स्फूर्ति नहीं दिखाई दी । मैंने कई बार उससे पूछा, पर उसने कुछ नहीं बताया । अन्त में मैंने उससे कहा कि तुम अपनी मां से कहना, एक बार वह मुझ से मिल लें । पर निर्मला की मां मुझसे मिलने नहीं आई । दो एक दिन बाद मैंने निर्मला से पूछा, "तुम्हारी मां आई नही, क्या तुमने उनसे कहा नहीं था ?"

"कहा तो था, मंत्रीजी ।"

"तो फिर क्यों नहीं आई ? पहले तो वह स्वयं मुझसे मिला करती थीं ।"

निर्मला ने कोई उत्तर नहीं दिया मैने कुछ ज्यादा पूछना कहना ठीक नहीं समझा ।

लेकिन निर्मला की मां तो आई नहीं और वह दिन-पर-दिन कमजोर, सुस्त और ढीली दिखाई देने लगी । उसका फूल सा मुंह कुम्हलाया-कुम्हलाया रहने लगा । दो एक बार फिर पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बतलाया । अन्त में एक दिन मैं निर्मला के साथ उसके घर गया । वह बड़ी डरती-डरती मुझे अपने घर ले जा

रही थी। मुझे एक जगह खड़ा करके उसने कमरे में जाकर मां से कहा कि मन्त्री जी आये हैं। यह सुनकर वह बाहर आईं और नमस्कार करके मुझे भीतर चलने के लिए कहा। मैं उनके चेहरे की ओर आश्चर्य से देख रहा था। वह बोलीं, "आपने क्यों तकलीफ की ? निर्मला ने तो कहा ही था कि आपने मुझे बुलाया है।" मैंने बीच ही में रोककर कहा, "यह मैं क्या देख रहा हूं, आप इतनी कमजोर कैसे हो गईं ?"

एक कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए उन्होंने भर्राई हुई आवाज़ में कहा, "मन्त्रीजी, हमारा भाग्य ही ऐसा है।" इसके बाद तो वह सिसकियां भरकर रोने लगीं। मैं कुछ समझ तो न सका, पर उनकी हालत से मेरा भी दुखित होना स्वाभाविक ही था। दो-चार मिनट बाद दुःख का आवेग कुछ कम हुआ और उनकी हालत कुछ बोलने लायक हुई। मैं सोच ही रहा था कि कोई-न-कोई ऐसी बात हुई है, जिसे कहने में इनको संकोच हो रहा है। वह बोलीं, "निर्मला के बाबूजी पकड़े गये और जेल में हैं। उनकी तबीयत भी अच्छी नहीं है।"

मुझे संकोच तो बहुत हुआ, फिर भी मैंने पूछा, "क्या बात हुई, क्यों पकड़े गये ?"

"यह तो मैं नहीं जानती, वह बैंक में काम करते थे, वहां कुछ गोलमाल हुआ बताते हैं; वह ऐसे आदमी नहीं है, मन्त्रीजी, पर हमारा नसीब खोटा है।" मैंने उनको धीरज रखने और छूट जाने आदि की बात कही। वह बोलीं, "यदि आप लोगों और ईश्वर की कृपा रही, तो वह छूट जायेंगे।"

मैंने कहा, "बहन, इन सब बाधाओं से निर्मला की शिक्षा में बाधा नहीं पड़ने देनी चाहिए।"

वह बोलीं, "अब तो निर्मला ही मेरा सहारा है, आपके हाथ है इसकी शिक्षा; मेरा जो कुछ होनेवाला है, वह तो होगा ही, पर निर्मला को आप आदमी बना दें तो मैं आपका उपकार कभी नहीं भूलूंगी; मेरे भाग्य तो ऐसे ही थे, इस लड़की को भगवान् सुखी रखे और वह अपने पैरों पर खड़ी होने लायक बन जाय, यही मेरी चाह है।"

"मेरे लायक कोई काम हो, तो निर्मला द्वारा मुझे कहला देने में संकोच न करें; विपत्ति में तो हिम्मत से ही काम चलता है, निर्मला के पिताजी आ जायंगे"—यह कहकर मैं बहुत ही दुखित मन से खड़ा हुआ। मेरा मन तो भारी था ही, पैर भी इतने भारी हो गये थे कि वहां से चलने में उठ ही नहीं रहे थे।

प्रणाम करते हुए उन्होंने कहा, "हम किसीको मुंह दिखाने लायक नहीं रहे।"

फिर वह खड़े होने की कोशिश करने लगीं। मैं देख रहा था उनके शैथिल्य को। वह गुलाब के फूल-सी बहन आज निस्तेज, क्लान्त, क्षीण और झड़े हुए पत्तों की डाल-सी लग रही थीं।

मैं निर्मला से बराबर उनका हाल-चाल पूछता रहता। मुकदमा चल रहा था। काफी रुपये खर्च हो गये। निर्मला की मां के पास जो थोड़ा-बहुत जेवर था, वह भी खतम हो गये। अन्त में आठ महीने के बाद निर्मला के पिता उस मामले में निर्दोष साबित हुए। पर अब वह इतने थक गये थे कि कहीं काम करना नहीं चाहते थे। पहले भी उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, अब तो बिल्कुल ही खराब हो गया था। आर्थिक दशा शोचनीय हो गई थी। अन्त में निर्मला की मां ने एक स्कूल में नौकरी करना तय किया। वह ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थीं, पर सिलाई अच्छी जानती थीं। बहुत ही कठिनाई से काम चल रहा था। अब निर्मला किसी तरह स्कूल में पास हो जाती थी, पहले की तरह क्लास में फर्स्ट नहीं होती थी। जब कभी मैं निर्मला की मां से मिलता तो वह कहतीं कि अब तो मेरी यदि कोई इच्छा है और जो कुछ मैं कर रही हूं, वह निर्मला को लिखा-पढ़ाकर अपने पैरों पर खड़ी करने के लिए ही कर रही हूं।

एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा, "निर्मला को डाक्टरी पढ़ाना कैसा रहेगा?"

मैंने कहा, "अच्छा तो है, पर रुपया बहुत लगेगा, क्योंकि डाक्टरी पढ़ने में खर्च अधिक होता है और समय भी ज्यादा लगता है।"

"मैं किसी कष्ट की परवा नहीं करती। मैं चाहती हूं कि निर्मला किसीकी मोहताज न रहे। वह सम्मान का, स्वावलम्बन का और सेवा का जीवन जीये। मैं ट्यूशन आदि करके किसी तरह काम चला लूंगी, पर निर्मला को सफल देखना चाहती हूं। उसके पिताजी तो अब शायद ही कुछ कर सकें।"

निर्मला मैट्रिक पास करके कालेज में आई. एस. सी. में भर्ती हो गई। स्कूल में तो खर्च साधारण था, अब किताबों का, फीस का तथा अन्य खर्च भी बढ़ा। निर्मला की मां स्कूल के काम के बाद ट्यूशन करती थीं। अब वह अक्सर मुझे आते-जाते अपना सिलाई का झोला लिये मिल जाया करतीं। वह बड़ी कठिनाई से अपना काम चला रही थीं, फिर भी उन्हें दीनता का भाव छू तक नहीं गया था। वह न तो किसीसे सहायता मांगती थीं और न यही चाहती थीं कि कोई उनकी आर्थिक सहायता करे। वह यदि कुछ चाहती थीं तो बस सहानुभूति, जिससे वह इस दुःख की नाव को खेकर पार-उतार सकें। निर्मला किसी तरह आई. एस. सी. में पास हुई, पर डिवीजन अच्छा नहीं ला सकी, इसलिए डाक्टरी में भर्ती होने में कठिनाई होने लगी। यों भी मेडिकल के छात्रों के लिए जगह की कमी का सवाल रहता ही है। निर्मला डाक्टरी में भर्ती न हो सकेगी, यह उसकी मां ने सोचा ही नहीं था। इसलिए वह इतनी दुःखी और निराश दिखाई दीं, जैसी पहले कभी नहीं हुई थीं। उन्हें रोती देख मैं कांप उठा। मैंने बड़ी कोशिश की और बड़ी मुश्किल से निर्मला मेडिकल कालेज में प्रवेश पा सकी। अभी तो ६ वर्ष पड़े थे डाक्टरी पास करने के लिए। फिर भी उसकी मां किसी तरह यह बोझा

ढोये जा रही थी । पर इस बोझ से वह ऐसी दब गई थीं कि पैंतीस वर्ष की उम्र में पचास की-सी लगने लगीं । बाल-सफेद होने लगे । दो-एक दांत भी गिर गये । वह सुबह ५ बजे से रात १०-११ बजे तक अथक परिश्रम कर रही थीं। उनके सामने सिर्फ एक ही लक्ष्य था निर्मला को डाक्टर बनाना । बीमार पति की तीमारदारी, घर का काम, स्कूल में पढ़ाना, ट्यूशन पर जाना, जो कुछ मिले उसमें से निर्मला का खर्च निकालकर बचे हुए में काम चलाना– इस तरह वह बहुत मूक तपश्चर्या कर रही थीं, समाज के एक घर में एक कोने में जिसको शायद बहुत कम लोग जानते थे ।

निर्मला मेडिकल फाइनल वर्ष में थी । एक आपरेशन में वह सहायक के रूप में लगी थी । वह कुछ सामान लाने नीचे जा रही थी कि सीढ़ी पर पैर फिसल जाने से गिर पड़ी और घुटने के बीच की हड्डी टूट गई । हड्डी जोड़कर प्लास्टर किया गया । दो महीने तो बिछौने पर बीते ही, पर जब एक्स-रे करके देखा गया, तो मालूम हुआ कि पैर के साथ की हड्डी में बोन टी बी. हो गई है । यह बात निर्मला की मां से कुछ दिन छिपाने की कोशिश की गई । इस बीमारी में तो लम्बा समय लगनेवाला था । मरे को मारे शाह मदार । इस बार निर्मला की मां मिली । मैंने उनको उदास देखकर पूछा, "बहन, अब तो दो-चार महीने की बात है निर्मला पास कर लेगी तो तुमको इतना संकट नहीं रहेगा ।"

वह बोलीं, "भाईजी, यह होगा ? भगवान न जाने हमारे भाग्य में क्या-क्या लिखा है !" यह कहते हुए वह बहुत ही अस्थिर लगी । मैने जब उनसे सहायता की बात की तो बोलीं, "आपकी कृपा से किसी तरह निभ रहा है। जब जरूरत होगी, तो कहूंगी ।"

मैने कहा, "निर्मला, आपकी जैसी ही मेरी भी लड़की है । क्या मेरा उसके लिए कोई अधिकार या कर्तव्य नही !"

इस पर वह कहने लगीं, "आप हमें आर्शीवाद दीजिये, हमारे लिए प्रार्थना कीजिये कि हम अपना मार्ग तय कर सकें ।"

मैं सोचने लगा कि मैं किसी मानवी से बात कर रहा हूं या किसी देवी से ! मैंने मन-ही-मन उस बहन को नमस्कार किया । निर्मला आहिस्ता-आहिस्ता अच्छी हो रही थी । उसके सरल स्वभाव तथा निर्दोष व्यवहार से कालेज के डाक्टर आदि प्रभावित थे । वे पूरी तरह उसके इलाज की व्यवस्था कर रहे थे ।

निर्मला कालेज जाने लगी । उसका एक वर्ष तो नष्ट हो ही चुका था । इस वर्ष भी वह सर्जरी व्यावहारिक ज्ञान में कुछ नम्बरों से फेल हो गई । इसका सभी लोगों को बहुत दुःख हुआ । पर उपाय क्या था ? निर्मला को तो इतनी निराशा हुई कि वह पढ़ना ही छोड़ देना चाहती थी । उसके साथ की लड़कियां प्रेक्टिस कर रही थीं, और वह योंही अपनी मां का भार बनकर पढ़े, यह उसे बर्दाश्त

न था । पर उसकी मां निराश नहीं थी । उसने निर्मला को प्रोत्साहन देते हुए कहा, "मुझे किसी भी दुःख की परवा नहीं है । यदि तुम पास न कर सकीं या डाक्टरनी न बन सकीं, तो मैं जी न सकूंगी । क्या तुम मेरे सारे जीवन की साध नष्ट करना चाहती हो ? चाहे जितना भी रुपया लगे, चाहे फिर फेल हो जाओ, पर तुम्हें डाक्टरनी बनना ही होगा ।"

निर्मला ने फिर पढ़ना शुरू किया और उसकी मां एक घर से दूसरे, दूसरे से तीसरे घर में ट्यूशन करती रही । उसे न अपने शरीर का ख्याल था, न किसी सुख-दुःख का । उसके सामने तो बस एक ही लक्ष्य था निर्मला को डाक्टरनी बनाना । वह चाहती थी कि निर्मला समाज के सामने इज्जत का, स्वावलम्बन का और सेवा का भला जीवन बितावे ।

इस वर्ष निर्मला सभी विषयों में पास हुई और उसे छः महीने के लिए अपने कालेज में हाउस सर्जन का काम मिला । निर्मला को लेकर वह बहन मेरे पास आई । मैं महिलाओं का एक अस्पताल चलाता था । उन्होंने कहा, "भाईसाहब, आपकी निर्मला ने एम. बी. पास कर लिया है । मेरी जिम्मेदारी तो पूरी हो गई, अब मैं इसे आपको सौंप रही हूं ।" यह कहते हुए उनका गला रुंधा जा रहा था ।

मैंने कहा, "बहन, आपकी तपश्चर्या पूरी हुई । आपको तो प्रसन्न होना चाहिए ।"

उन्होंने कहा, मैं प्रसन्न तो हूं, पर अब मैं ऐसी थकावट अनुभव कर रही हूं, जो मिट नहीं सकती । मैं चली जा रही थी, मेरे सामने सिर्फ एक ही लक्ष्य था । मैंने जीवन के सुख-दुःखों को भुलाकर अपना तन-मन एक चीज के लिए लगाया । ईश्वर ने मुझे जो काम सौंपा था, उसे पूरा करने में मैंने कुछ उठा नहीं रखा । आज मैं मंजिल के पास सोच रही हूं, पिछले पन्द्रह वर्षों के संघर्ष की घड़ियों को । भाईजी, लक्ष्य की पूर्ति में जीवन कहां है ? लक्ष्य के लिए साधना करते-करते मिट जाने की इच्छा या संकल्प में जो बल है, वह कितना बड़ा बल है, उसके अभाव का मुझे अनुभव हो रहा है । इसलिए अब मैं आप सबसे विदा लेना चाहती हूं ।"

जब यह बहन पहले-पहल मुझसे मिली थीं, तब इनके चेहरे पर एक भाव पड़ा था, आज बिल्कुल दूसरा भाव मैं देख रहा हूं । उस समय इनकी उम्र पच्चीस वर्ष की थी और लावण्य, आभा, उत्साह, उमंग थी । आज यह बहन चालीस वर्ष की है, पर इनकी हालत साठ वर्ष की बुढ़िया जैसी है । पन्द्रह वर्ष के निरन्तर संघर्ष में इनके सारे मनसूबों, सारी इच्छाओं और सारे उत्साह को एक ही दिशा मिली । यह बहन तिल-तिल अपने-आपको मिटाकर सच्चाई और नेकी का जीवन जीकर, संसार की अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करती रहीं, सिर्फ इसलिए कि वह हमें एक सुयोग्य नागरिक प्रदान कर सकें ।

अब निर्मला माताओं–बहनों की सेवा कर रही थी। निर्मला की मां बीमार रहने लगी। एक दिन मैं उससे मिलने गया, तो मालूम हुआ कि अब वह पूर्ण रूप से शान्त है। उसे न किसीसे कुछ कहना है, न कुछ करना। पर उसके चरित्र से जो सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी, उसकी गन्ध से कोई भी आदमी मुग्ध हो सकता है। एक दिन मालूम हुआ कि निर्मला बिना मां की हो गई है। पर ऐसी मां तो सबकी मां है। वह क्या मर सकती है!

मैंने निर्मला से कहा, "तुम्हारी मां ने जो जीवन की पवित्रता, अच्छाई और आदर्श रखा है, वही तुम्हारी सच्ची मां है और उसी मां की पूजा करो। पार्थिव मां तो आज नहीं तो कल जानेवाली ही थी। पर तुम्हें जो विरासत मिली है, वह किस भाग्यवान बेटी को मिल सकती है।"

निर्मला बूढ़े बाप की सेवा करते हुए मां के आदर्श को सामने रखकर चलने की कोशिश कर रही है। निर्मला की मां बेटी के रूप में आज भी मेरे सामने है, और जो लोग इस स्थिति से कुछ भी सम्बन्धित रहे हैं, उन सबके सामने रहनी चाहिए। स्व सुभद्राकुमारी चौहान ने कहा था, "बचपन बेटी बन आया।" बेटी में मा और मां में बेटी समायी हुई है।

३ : दो चित्र

सम्भल (मुरादाबाद) में हम लोगो का एक खादी उत्पत्ति केन्द्र था। कभी-कभी मै उसे देखने जाया करता था। एक बार का जिक्र है, वहां काम करते हुए मैंने एक औरत को देखा। दुबली, पतली, ठिगना-सी थी वह। गेंहुआ रंग, बड़ी-बड़ी आंखे, चिपके गाल और लम्बी-सी ठुड्डी। एक फटा-सा पाजामा और कुरती पहने तथा जगह-जगह से सिली हुई ओढ़नी ओढ़े वह अपना काम कर रही थी। मेरी निगाह उस पर पड़ी, तो न मालूम क्यों, वह मुझे नेक और भली औरत मालूम हुई। मैने अपने कार्यकर्ताओं से दरियाफ्त किया, "यह बहन यहां कितने दिनों से काम करती है?" उन्होंने बताया, कोई बारह-एक महीने हो रहे होंगे।

"क्या देते हो इसे?"

"जितना काम करती है, उतना पाती है। काम होता है, तो चार आने, छः आने और कभी-कभी आठ आने तक पा जाती है। जब काम नहीं रहता, तब कुछ नहीं पाती।"

मेरी दिलचस्पी कुछ बढ़ गई। मैंने उस बहन को बुलाया और पूछा, "क्या

कमा लेती हो ?"

"कमा क्या लेती हूं, किसी तरह पेट पालते हैं, लालाजी !"

मैंने पूछा, 'घर में कमानेवाले कौन हैं ?"

"बस, मैं जो दाल-दलिया ले जाती हूं, उसीपर पांच प्राणी गुजर करते हैं। एक बूढ़ा अन्धा ससुर है, एक ननद है, दो बच्चे हैं, एक आठ साल का, एक पांच साल का।"

"और खाविन्द ?" मैंने पूछा।

"खाविन्द को तो खुदा के घर गये चार साल हो रहे हैं ?"

"इन चार सालों से कुनबे को तुम्हीं संभाले हुए हो ?"

"खुदा सबको संभालता है, लालाजी ! जितना मुझसे हो पाता है, अपना फर्ज अदा करने की कोशिश करती हूं। जब काम कम होता है, हमे मजदूरी कम मिलती है, उस हालत में हम सब-के-सब आदमी पूरा खाना नहीं पा सकते; पर मैं भरसक अपने बूढ़े ससुर को कभी भूखा नहीं सुलाती। उनके बाद बच्चों और ननद का नम्बर आता है, फिर मेरा। आप लोगों की मेहरबानी से गुजर हो रही है।"

उसके एक-एक शब्द से सच्चाई और कर्तव्यनिष्ठा प्रकट हो रही थी। मैं मन-ही-मन सोच रहा था कि हम समाज-सेवा, देश-सेवा का दम भरनेवालों में और इस बहन मे कितना अन्तर है ! इतने में हमारे एक कार्यकर्ता ने आकर कहा कि हाट में चलने के लिए कहते थे आप। समय तो हो गया है। उस बहन से बातें तो और करनी थीं, पर वह कल पर छोड़ मै हाट चला गया, जो वहां से चार-पाच मील दूर देहात में लगती थी। वहां हम लोग सूत खरीदा करते थे। जो कत्तिनें सूत लातीं उनको हम सूत के बराबर धुनी हुई रूई देते और कताई के पैसे दे देते। बहुत-से भाई-बहन वहां सूत सरा रहे थे। मै ध्यानपूर्वक सब देखता रहा। भीड़ कम होने पर मैंने एक बुड्ढी औरत से, जो देखने में साठ वर्ष की मालूम होती थी, पूछा, "माताजी, क्या मिला कताई का ?"

"साढ़े पांच आने पैसे मिले है।"

"कितने दिन की कताई है यह ?"

"लाला, इतवार को हाट लगती है, तब कभी पांच आने, कभी चार आने और कभी तीन आने के करीब मिल जाते है। सूत तो हम रोज ही कातते है।"

"आपका गांव यहां से कितनी दूर है ?"

"होगा ढाई-तीन कोस।"

मैं सोचने लगा कि दो-तीन पैसे रोज़ की मज़दूरी, चार-पांच कोस पैदल चलकर आना तथा रोज़ तीन-चार घण्टे कातना ! यह है हिन्दुस्तान की गरीबी का असली रूप ! हमारा देश कितना कंगाल है, यहां के देहातों के लोगों के लिए दो-तीन पैसे की कितनी कीमत है, उसको हम कलकत्ता, बम्बई आदि शहरों के रहनेवाले

कैसे समझ सकते हैं ? भारतमाता की सूखी हुड्डियों का ढांचा, रूखे-बिखरे सादे बाल, फटे चिथड़ों से ढका तन, झुर्रियों से भरा मुंह, मुझे इस माता में दिखाई दिया और आंखें सजल हो आईं । उस बहन के फटे कपड़ों को देखकर मैंने अपने कार्यकर्ता से कहा, "इस माता को दो पाजामे, दो ओढ़नी, दो कुरती भंडार की तरफ से दे देना ।"

उस सूखे पोपले, झुर्रियों से भरे मुंह पर लाली छा गई, आंखों में सुर्खी आ गई, भौहें तन गई और वह तमककर बोली, "भिखारी समझा है हमको, लाला ने । हम गरीब है, मज़दूरी करके पेट पालते हैं, हमें आपकी दया नहीं चाहिए। आपके कारिन्दे हमारा सूत खरीद लिया करे, तो हम इसीको आपका बहुत बड़ा अहमान मानेंगी । हम रोज सूत कातते वक्त हाट के दिन गिना करती हैं, तीन कोस से चलकर आती है· पर कभी-कभी जब ये लोग कह दिया करते है कि हमारे पास सूत और कपड़ों का स्टाक ज्यादा हो गया है, उसके बिके बिना हम सूत नही खरीद सकेंगे, नो हमारे ऊपर जैमे वज्र गिर पड़ता है । आप मेहरबानी करना चाहते है, नो बस इतनी कर दीजिये कि हमारा सूत बिक जाया करे । लाला, हम गरीब है नो क्या हुआ । खुदा ने हाथ-पाव दिये है, मेहनत करके खाते है, हम खैरात नही लेते ।"

मेरे अभिमान को चूर कर दिया इस बहन ने । हम रात-दिन गरीबों के श्रम पर पलनेवाले दया करने चले है इन स्वाभिमानी आदमियो पर । हमे शर्म आनी चाहिए इस ढोंग, दया, धर्म और पाखण्ड-भरे जीवन पर ! दूसरे दिन वह कल वाली बहन काम करने आई, नो मेरी फिर इच्छा हुई कि उससे बातें करू । मैंने कहा कि तुम लोग तकलीफ मे हो, भण्डार की नरफ से तुमको बीस-तीस रुपये की मदद दी जा सकनी है ।

"लालाजी, काम करनी हू, इसकी मज़दूरी पानी हूं । फिर ये रुपये मै किस बात के लू ? यदि आप यह प्रबन्ध कर दे कि मुझे बराबर काम मिलता रहे नो आपकी बड़ी मेहरबानी हो ।"

"तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

"होगी कोई पच्चीसेक की ।"

"नो तुम निकाह क्यो नही कर लेती ? तुम लोगो मे तो निकाह होता ही है ।"

"हा, होना तो है, पर मै निकाह कैसे कर सकती हूं ? इन अन्धे बुड्ढे ससुर को यो छोड़कर मै निकाह करूं, नो क्या खुदा मेरा भला करेगा ? मेरा फर्ज है कि मै अपने मन को काबू मे रखूं और खुदा ने जो काम मुझे सौंपा है, उसे करनी रहूं । यदि मेरे नसीब में सुख बदा होता, नो शादी की थी न, वह क्यों चले जाते ? अब निकाह करने से ही क्या होगा ? मद्यमे जहा नक बन पड़े

इन बुड्ढे की सेवा करती रहूं और इन बच्चों को आदमी बनाने की कोशिश करूं। खुदा की मेहरबानी होगी, ये बच्चे आदमी बन जायेंगे, तो सब हो जायेगा।"

आज से करीब बारह-चौदह वर्ष पहले के इन दो बहनों के दो चित्र आज भी मेरी आंखों के सामने घूम रहे हैं। ये चित्र ऐसे हैं, जो कभी भुलाये नहीं जा सकते। ये चित्र हिन्दुस्तान की भयंकर गरीबी को और गरीबी में भी स्वाभिमान, कुल-मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और कष्टसहन तथा सच्चाई को छिपाये हैं। हम सभ्य और पढ़े-लिखे सुसंस्कृत कहे और समझे जाने वाले लोग यदि छाती पर हाथ रखकर सोचें, तो जो हालत ऊपर वर्णन की गई है, उसकी जिम्मेदारी हम पर ही है।

४ : घूरे का घर

सन् १९३४ की जनवरी में उत्तर बिहार में भीषण भूकम्प हुआ। इस भूकम्प ने बिहार के लोगों को तो हिला ही दिया, साथ ही सारे भारत के लोग भी बिहार की दैवी विपत्ति से व्याकुल हो उठे। उन दिनों आन्दोलन चल रहा था। देशरत्न राजेन्द्रबाबू से लेकर बिहार कांग्रेस के सारे कार्यकर्ता जेल में बन्द थे। सरकार ने भूकम्प की तकलीफों को महसूस किया और कार्यकर्ता मुक्त कर दिये गये। राजेन्द्रबाबू की सदारत में भूकम्प-अंचलों में सहायता पहुंचाने के लिए एक कमेटी बनी। इस कमेटी को अपनी-अपनी संस्थाओं की तरफ से सहायता पहुंचाने के लिए हिन्दुस्तान के हर प्रान्त के लोग आये थे। मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मुंगेर–ये तीन जिले भूकम्प से अधिक पीड़ित थे। इन तीनों जगह में सहायता करनेवालों की बाढ़-सी आ गई। कलकत्ता तो बिहार के बहुत नजदीक ठहरा, फिर बिहार के लोग यहां रहते भी बहुत हैं। इसलिए कलकत्ता से इतने ज्यादा लोग और संस्थाएं गई कि उनके खेमे लगाने तथा रहने का प्रबन्ध करना भी एक सवाल जैसा ही बन गया।

मैं भी पांच सवारों में नाम लिखाने वहां जा पहुंचा। सभी जगह घूम-फिर कर भूकम्प के दृश्य देखे, सहायता करने वाली संस्थाओं तथा कार्यकर्ताओं को भी देखा। भूकम्प से धराशायी होनेवाले मकानों का मलबा हटाना काफी बड़ा काम था। आशंका हो रही थी कि इस मलबे के नीचे शायद आदमी दबे पड़े हैं। ऐसी दर्द-भरी हालत थी वहां की। ऐसे मौके पर भी देखा कि हमारे प्रचारक अपना काम कर रहे है। एक जुलूस निकला कार्यकर्ताओ का–नेताओं का–जिनके हाथों में कुदालियां और झुड़ियां थीं मलबा हटाने के लिए। जुलूस सजाकर खड़ा किया

गया और फोटो उतारे गये । मैंने एक नेता से पूछा कि ये फोटो क्यों उतारे जा रहे हैं ? मलबा हटाने के काम में तो इससे देर ही हो रही है । इसपर नेता महोदय ने कहा कि इनका बहुत प्रभाव पड़ेगा। जब ये फोटो अखबार में छपेंगे तो लोग समझेंगे कि कितना काम हो रहा है । मैं कुछ समझ न सका । सोचा, अच्छी बात है, प्रभाव पड़ सकता है। पर देखा कि फोटो उतर जाने के बाद वे कुदालियां और झुड़ियां वहीं रह गई । यदि मलबा हटाया गया, तो उसे हटानेवाले लोग दूसरे ही थे ।

मुजफ्फरपुर के एक गांव की तकलीफ की बात सुनकर हम लोग उस गांव को देखने और वहां के लोगों से मिलकर बातें करने के लिए चल पड़े। कुछ दूर तक तो मोटर से गये, पर आगे पानी भरा था और उसमें एक छोटी-सी नाव चल रही थी । उस नाव पर कुछ दूर गये, पर नाव किनारे तक नहीं जा सकती थी; क्योंकि आगे पानी बहुत कम था । उस पानी को पार कर हम लोग समतल जमीन पर पहुंचे । यह पानी भूकम्प के कारण फटी जमीन से निकला था और एक छोटी-मोटी नदी-जैसा बन गया था । आगे जाकर देखा, तो जमीन में इतनी बड़ी दरार फटी पड़ी है कि यदि उसमें हाथी भी समा जाय, तो कुछ पता न चले। मै सोचने लगा कि पृथ्वीमाता का पेट इतनी भयंकरता से क्यो फट गया ? गांधीजी ने कहा था कि हरिजनों के साथ हमने जो अन्याय किया है, उसके पाप का यह परिणाम है । कुछ समझ में नही आया कि इस पृथ्वी के फटने का कोई ऐसा भी कारण हो सकता है, जिसका हमारे जीवन से, हमारे आचरण से सम्बन्ध हो। तुलसीदास की एक चौपाई याद आई–"अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी । परम सभीत धरा अकुलानी ।" क्या सचमुच धरा हमारे पापों से अकुला गई है ?

यह सब सोचते तथा रास्ते मे भूकम्प के दृश्य देखते हुए कोई दो मील पैदल चलकर हम लोग एक गांव में पहुंचे । यह गांव राजपूतों का था । भूकम्प ने बुरा हाल कर दिया था इस गांव का । एक घर में गये । घर के हाल देखे, सारे छप्पर जमीन पर लोट रहे थे । कुआं बालू से भर गया था । खेतों की जमीन पानी से भर गई थी । ये लोग दस-पांच दिन पहले तक खुशहाल किसान थे । आज इनके पास न खाने के लिए अन्न है, न रहने के लिए घर है और न पानी पीने का कुआं है । ये लोग करीब-करीब भूखे ही रह जाते हैं । एक जगह दस-बीस आदमियों को इकट्ठा किया, बातें कीं, तो उन्होंने कहा कि हम लोग राजपूत है । हम धर्म यानी खैरात लेकर नही खा सकते और न खैरात का कपड़ा ही ले सकते हैं । मज़दूरी करने की बात कही, तो कहने लगे कि हमने मज़दूरी कराई है, की नहीं । यदि मज़दूरी की है, तो धरती माता की की है । आज धरती माता ही जब फट पड़ीं, तो फिर हम क्या करे ? जिस दिन धरती माता राजी होंगी, उसी दिन सब कुछ होगा, नहीं तो फिर कोई उपाय नहीं । इस भूख में, कष्ट

में भी यह स्वाभिमान, यह आत्मविश्वास हमें चकित करने वाला था। अन्त में हमने उनको उधार लेने पर राजी किया और साथ के स्वयंसेवकों से कहा कि वे पास के केन्द्र से इनकी सारी व्यवस्था करें।

घूमते-घामते गांव के बाहर निकले, तो थोड़ी दूर पर एक टूटी-सी घास की झोंपड़ी दिखाई दी। वहां गये, तो देखा कि यह जगह गांव का कूड़ा फेंकने की है। वहीपर दो-एक लकड़ियों के सहारे थोड़ी-सी घास डालकर एक झोंपड़ी खड़ी की गई है। हवा और शीत को रोकने के लिए चारो ओर टूटी चटाई लगाने की व्यर्थ-सी चेष्टा की गई है। नज़दीक गये, तो इस घूरे के घर के अन्दर आदमी की आंखें-सी दिखाई दी। इन आंखों मे ऐसी चमक थी कि हमें याद आया, उस राजकुमारी को भी उस मिट्टी के टीले के अन्दर इसी तरह कही च्यवन ऋषि की आंखो की चमक तो नहीं दिखाई दी थी!

उस झोंपड़ी के पिछले हिस्से में जब यह देखा, तो सामने जाकर सारी स्थिति समझने की इच्छा हुई। वहा जाकर जो देखा, उसका वर्णन करना हमारी बुद्धि के वश का नहीं। एक स्त्री, जिसकी उम्र कोई तीस के करीब होगी, भयंकर काली, सूखा मुंह, उलझी-रूखी लटे, दुबला शरीर, एक चिथड़े-जैसी मैली साड़ी पहने दो बच्चो को छाती से चिपकाये बैठी थी, वहा। एक बच्चा जो सात आठ वर्ष का होगा, पास में बैठा था। दो मिट्टी की हाड़िया और थोड़ी सी घास, जिसे उन लोगो ने बिछा रखा था, यही सारी सामग्री थी उस घर की या उस गृहस्थी की। बच्चे तो तीनो नंगे थे ही। हम देखकर वह बहन खड़ी हो गई, तो वह फटी साड़ी उसकी लाज ढोने के लिए तैयार! वह उसको कभी इधर खीचती, कभी उधर खीचती। हमे वहा खड़े रहने मे भी संकोच होने लगा। इस यात्रा में अभी तक ऐसी हालत कहो नहीं देखी थी। भूकम्प के जो दृश्य देखे, उनसे ऐसा लगता था कि जिनके मकान थे, वे गिर गये हैं। बाढ़ में जैसे गरीबों के घर बह जाते है, पशु बह जाते हैं, घर नष्ट हो जाते है, खेती-बिगड़ जाती है, ऐसी हालत यहां नही देखी थी। यहा के दृश्य भी काफी कष्टदायक थे, पर बाढ़ मे जिन लोगो की हानि होती है उसकी अपेक्षा यहा सम्पन्न लोगो की हानि हुई-सी लगती रही, इसलिए ऐसा दर्द नहीं हुआ जो विकल कर दे। पर जब इस बहन को देखा, तो वहा खड़ा रहना भी मुश्किल हो गया। जो हो उससे बात करना जरूरी था। हमने पूछा, "इस कूड़े के पास तुमने घर क्यो बनाया? ज़रा आगे गांव में बनाती।"

"बाबूजी, हम लोग हरिजन (डोम) है। हम लोग घूरे पर ही रहते है, गाव में नही रह सकते।"

"तो क्या बराबर ऐसे ही घर मे रहती हो?"

"नही बाबूजी, पहलेवाला घर तो गिर गया। अब यही जगल से घास-फूस

इकट्ठा करके यह खड़ा किया है। सामान खरीदकर हम घर नहीं बना सकते।"

"ये बच्चे तुम्हारे ही है, फिर खाने-पीने का क्या करती हो ?"

इसपर वह कुछ बोली नही। मैने फिर पूछा, "खाने पीने का क्या इन्तजाम करती हो ?"

"इन्तजाम क्या बाबूजी, कल से तो ये ऐसे ही हैं। इन बच्चो के पिता मजदूरी करने गये है। उनको मजदूरी मिलेगी और वे कुछ लायगे, तो खाएंगे, नही तो भगवान मालिक है ही।"

"तो क्या कल वह कुछ लाये नही ?"

"नही बाबूजी! दिन-भर खटकर वह योही लौटे थे। थोड़ा-सा बचा हुआ सत्तू खिलाकर आज सुबह उनको भेजा है। आशा है, आज तो वह जरूर लाएगे।"

"यहा तुम्हारे पास सहायक समिति के लोग नही आये ? यहा तो बहुत से लोग आये है, गरीबो की सहायता करने।"

"नही, बाबूजी, यहा तो कोई नही आया। जिनको भगवान ने ही नीच बना दिया, उनके पास बड़े लोग कैसे आ सकते है ?"

"गाव के लोग भी तुम्हारी कोई मदद नही करते ?"

"हम नीच जो है, हमारे घर वे कैसे आ सकते है ? और फिर वे बेचारे तो खुद तकलीफ मे हैं।"

"क्या तुम्हारे पति को रोज मजदूरी नही मिलती ?"

"रोज मिल जाय तब तो फिर कष्ट किस बात का ?"

शाम को सात बजे के करीब हम लोग लौटकर अपने खेमे मे आ गये। पर इस घूरे के घर का दृश्य और इस हरिजन बहन की हालत पर मन मे नाना तरह के विचार चलते रहे। कैसी हालत है हमारे देश मे मानवता की! हमने अपने लोगो की कितनी भयकर अवहेलना की है और कितनी पीड़ा पहुचाई है, हमारी भ्रान्त धार्मिक भावना ने इस बहन जैसी अनेको को! एक तरफ है हमारी धार्मिकता, हमारा अभिमान और हमारा ऊचे बनने का दावा! एक यह बहन है, जो कहती है कि गाव के लोग बहुत कष्ट मे हैं, वे हमारी सहायता कैसे कर सकते है! इस पीड़ा मे इस अपमान मे, भी गाव के लोगो का दु खदर्द है उसके मन मे। कोई उसकी सहायता नही करता। वह भूखी है, नगी है, उसके बच्चे शीत से काप और भूख मे बिलबिला रहे है, पर वह किसी अड़ोसी-पड़ोसी पर, सहायता करने के लिए यहा आई हुई सभा-समितियो पर–किसी पर रोष नही करती। वह स्वत कहती है, हम नीच जो है!

शायद यह अवस्था दुनिया मे और कही नही है। यह सब तो हमारे इस धर्म-प्रधान देश की ही विडम्बना है। आज भी वह घूरे का घर आखो मे ज्यो-का-त्यो फिर रहा है। क्या स्वतन्त्र भारत मे भी ऐसे घर और ऐसी अवस्था हम बर्दाश्त करेगे ?

५ : डायमण्ड हारबर का खादी-मन्दिर

कलकत्ता से करीब ३० मील पर डायमण्ड हारबर एक गांव है। इस जगह का महत्व इसलिए ज्यादा बढ़ गया है कि बंगाल सरकार ने यहां पर एक विशेष प्रकार से प्रबन्ध कर रखा है। यहीं से होकर सब बड़े-बड़े जहाज़ भी गुजरते हैं। यहां पर पलटन भी काफी संख्या में रहती है। जिस जगह पर पलटन रहती है उसको आजकल 'सुरक्षित क्षेत्र' घोषित किया गया है और इसीलिए लोग उधर से आ-जा नहीं सकते। कलकत्ता के बाबू लोग छुट्टी के दिन यहां मन बहलाने के लिए आया करते हैं। गंगा का पाट बहुत चौड़ा हो गया है। एक प्रकार से समुद्र जैसा ही लगता है। यह जगह बहुत सुन्दर है और इसके आस-पास बहुत-से छोटे-छोटे गांव हैं। यहां की जनता अत्यन्त गरीब है। यहां पर साल में केवल एक धान की फसल होती है। जनता के पास दूसरा कोई धन्धा नहीं है, इसलिए यहां की गरीबी नित्य बढ़ती जा रही है। अन्य जगहों की अपेक्षा यहां की जनता पिछड़ी हुई भी अधिक है। यहीं के कमारपोल नामक एक गांव में गत २० जनवरी (१९४०) को ८ बजकर ३० मिनट पर मैंने सत्याग्रह किया था। तब से उसका क्रम जारी है। प्रतिदिन किसी-न-किसी गांव या हाट-बाजार में सत्याग्रह होता है। मैंने सत्याग्रह करने के लिए यही जगह क्यों चुनी, यह बताने के लिए ही यह लेख लिख रहा हूं।

यहां पर खादी-मन्दिर नाम की एक संस्था आठ-नौ वर्ष से लोक-सेवा का काम कर रही है। इस संस्था को यहां के वकील श्री चारुचन्द्र भंडारी ने सन् १९३१ में शुरू किया था; पर शीघ्र ही सन् १९३२ का आन्दोलन प्रारंभ हो जाने के कारण वह जेल चले गये। जेल से छूटने के बाद उन्होंने अपनी वकालत छोड़ दी। मन में देश-सेवा की लगन, मां के बन्धनों का दर्द और गरीब जनता के दुःखों का अनुभव था, इसीलिए उन्होंने सोचा कि सम्पूर्ण शक्ति और समय दिये बिना कार्य नहीं हो सकता। चारुबाबू को दो साथी और मिले, जो दो भाई हैं। एक तो एम. ए. तक पढ़े हैं और एक आई. ए. तक। अच्छे परिवार के हैं। इनके पिता प्रोफेसर हैं। पिता से विचारों का मेल न होने के कारण ये दोनों भाई चारुबाबू के साथी बन गये। पर इन लोगों के पास न तो कोई साधन था, न कोई सहायक। ऐसी परिस्थिति में काम करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। कुछ दिनों के बाद एक सज्जन ने आठ बीघा जमीन एक वर्ष खेती करने के लिए मुफ्त दी। इन लोगों ने स्वयं खेती की, जिससे थोड़ी बचत हुई। किन्तु फिर भी थोड़े दिन के अन्दर चारुबाबू की स्त्री के गहने, जो बहुत ही सामान्य थे, एक-

एक करके सब बिक गये, यहां तक कि चारुबाबू की एक घड़ी थी, वह भी बेच देनी पड़ी। अन्त में यहां तक नौबत पहुंची कि दाल-भात दो चीज़ों में से दाल छोड़कर केवल भात पर ही लोगों को गुज़र करनी पड़ी। ज़रा सोचिए तो सही कि जो आदमी दो-तीन सौ रुपया महीना कमा सकता हो, जिसका पिता प्रोफेसर हो और जो उससे कहे कि घर में आनन्द से रहो, दस-बारह रुपया महीना जेब-खर्च के लिए लो, अच्छा खाओ अच्छा पहनो, अच्छे मकान में रहो, वही व्यक्ति दाल न मिलने के कारण केवल भात पर ही गुज़र करे, यह कैसी बात है ? इसके पीछे कितना महान् आदर्शवाद है ! देश-सेवा की कितनी प्रबल भावना है ! यदि ऐसा त्याग, ऐसी लगन हमारे कार्यकर्ताओं में आ जाय, तो इस पराधीन देश को स्वाधीन होने में देर न लगे। इन सब कठिनाइयों का सामना करते हुए ये लोग अपना कार्य बराबर करते रहे। आज इनके साथ चौदह कार्यकर्ता हैं, जिनमें आठ रुपये स ज्यादा कोई भी नहीं लेता। दो तो ऐसे भी हैं, जो अपने घर से ही खाते-पीते हैं और दिन-रात इनके साथ कार्य करते हैं। गांवों में इनके केन्द्र हैं। खादी-मन्दिर का मुख्य उद्देश्य तो जनता के अन्दर राजनैतिक जागरण तथा स्वावलम्बन की भावना पैदा करना है। इन लोगों ने इसके लिए मुख्य साधन चुना है वस्त्र-स्वावलम्बन का काम। वैसे तो ये लोग गांवों में हरिजन-सेवा तथा शराबबन्दी करना, आपसी झगड़ों को आपस में ही तय करा देना तथा गांव के स्वास्थ्य, सफाई और सामान्य औषध-वितरण करने का काम भी करते हैं; पर मुख्य काम वस्त्र-स्वावलम्बन का ही है।

इस समय इनके कई केन्द्र गांवों में खुले हुए हैं, जिनमें ४७० चर्खे चल रहे हैं। जो सूत तैयार होता है, उसका कपड़ा बुनवाकर जिनका सूत होता है उनको दे देते हैं। यहां लोगों के पास नकद एक रुपया भी मिलना मुश्किल है और इसलिए उनको धान बेचकर सब चीजें लेनी पड़ती हैं। कपड़ा भी लोग धान बेचकर ही लेते है। पर जिन घरों में चर्खों का प्रचार हुआ है उनमें से मैंने कई घरों को देखा है और उन लोगों से बातें की हैं। उनके कपड़े का सवाल तय-सा हो रहा है। वे अपने सूत को बुनवा लेते हैं। ऐसे अपने सूत के बने कपड़ों को पहने हुए कुछ लोगों को मैंने तथा भाई भागीरथजी ने देखा है।

एक बहन तो इतना सूत कातती हैं कि उसके घर के पांच आदमियों के साधारण कपड़े उससे बन जाते हैं, और एक अन्य बहन ने वर्ष में करीब अट्ठारह रुपये सूत कातकर ही कमाये हैं। इन गरीबों के लिए डेढ़ रुपये महीने की सहायता सामान्य बात नहीं है। चर्खों की मांग बहुत है, पर ये चर्खे दे नहीं सकते; क्योंकि इनके पास जो कुछ पूंजी है, वह कुल चारसौ रुपयों की है। यह भी अभी हुई है, पहले तो कर्ज ही था। इसीमें चर्खे देना, रुई देना और सूत का कपड़ा बुनवाना, ये सब करना असम्भव है। मुझे तो आश्चर्य हुआ कि ये लोग इतनी कम पूंजी

में और इतने कम साधनों में कैसे काम चलाते हैं ! मुझे मालूम है कि वस्त्र-स्वावलम्बन के लिए दूसरी जगहों पर हजारों रुपयों का खर्चा और हज़ारों की पूंजी लगी रही, तब कहीं थोड़ी सफलता मिली है । पिछले दिनों यहां अकाल पड़ा था तब भी इस संस्था ने अच्छी सेवा की थी । इन्होंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी और पश्चिम बंगाल अकाल बाढ़ सेवा समिति से सहायता पाकर यहां की बिल्कुल ही निरन्न प्रजा को अन्न पहुंचाया तथा उनको धीरज और साहस दिलाया था । हरिजन पाठशाला तो चलती ही है । गांव के अन्य प्रश्न, जैसे बीमारों की दवा आदि भी करते हैं । ये गांव के सुख-दुःख के साथी बन गये हैं, इसलिए गांव के लोगों में इनका अच्छा आदर और प्रेम है । ये लोग बिलकुल महात्मा गांधी की विचारधारा के अनुसार चलने का प्रयत्न करते हैं । पिछले कुत्सित प्रचार के कारण बंगाल में महात्मा गांधी का थोड़ा-बहुत विरोध हुआ, उसका इनके कामों पर कुछ असर नहीं पड़ा। जो लोग विरोधी हैं, वे भी इनकी सच्चाई में विश्वास करते हैं । गांधी सेवा संघ की मीटिंग के समय इन्होंने करीब एक हजार रुपया चन्दा जमा करके गांधीजी को दी जानेवाली थैली में भेंट दिया था ।

आज इस सत्याग्रह-संग्राम में इनके रचनात्मक कामों के असर की वजह से चौदह सज्जन, जो बिल्कुल गांधीजी की शर्तों को पूरा करने वाले है, सत्याग्रह करने के लिए चुने गये हैं । इनके प्रधान श्री चारुबाबू तो सत्याग्रह करके एक वर्ष के लिए जेल चले गये । ऐसी संस्था और ऐसे कार्यकर्ताओं का सहयोग तथा आग्रह मुझे यहां सत्याग्रह करने को ले आया। मुझे उसमें इनके सहयोग से बहुत सुविधाएं मिलीं । मुझे खुशी है कि ऐसे लोगों का सहयोग मिला, जिसका मिलना सौभाग्य की बात है ।

६ : एक दिन की बात

मेरे एक मित्र हैं जो स्वभाव से सहानुभूतिशील हैं । देश और समाज की सेवा का भाव रखते है और जितनी बन सके उतनी सेवा करते भी है। पर इनकी कितनी ही मुश्किलें हैं, जो प्रायः हर आदमी का रहा करती है । फिर भी अलग अलग आदमियों की अलग-अलग स्थितियां होती हैं– मानसिक आर्थिक और सामाजिक। मेरे ये मित्र बहुत सोच-विचार करने वाले आदमी है । ये मेरे बहुत नजदीक के मित्र हैं और इनके बारे में मैं प्रायः सभी बातें जानता हूं । इनके लिए मेरे मन में काफी सहानुभूति और श्रद्धा भी है । यहां इन मित्र के बारे में

लिखना मेरा कोई उद्देश्य नहीं, यहां तो एक स्थिति का, एक घटना, का वर्णन करना है। पर वह घटना इन्हींसे सम्बन्धित है। मेरे मित्र जरा नाजुक तबीयत के हैं, दिल-दिमाग से अमीर और रईस भी। अनजान लोग इन्हें धनी भी मानते हैं और इसकी सजा भी इन्हें देते हैं। जो भी हो, इनके बारे में तो मुझे अपना लोभ संवरण करना ही होगा,नहीं तो जिस घटना का मैं वर्णन करना चाहता हूं, वह इनके बारे मैं सोचने और लिखने में ही खो जाएगी।

चार-पांच दिन पहले शाम को मै उनसे मिला तो वह बहुत उदास, थके और दु:खी से दिखलाई पड़े। मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं थी। बहुत बार ऐसा होता है और मैं उनको इसी तरह की स्थिति मे देखा करता हूं। हां, इसका कोई न कोई कारण अवश्य होता है और वह कारण ज्यादातर सामाजिक, राजनैतिक या इसी तरह की कोई घटना होती है। आज भी उनको देखते ही मैंने समझ लिया कि वह कहीं चोट खा गये है। मै तो व्यावहारिक आदमी हूं। इसीलिए इस भावुक आदमी के प्रति आदर का भाव रखते हुए भी मै उनकी भावनाओं के लिए उनसे रोज झगड़ता हूं। जो हो, मैने पूछा, "कहिए, आज कहां क्या देख आये ?"

वह जरा चौंके और बोले, "यो ही संसार मे न जाने कहां-कहां क्या-क्या हो रहा है, उसे देखने से भी क्या होता है और सोचने से भी क्या होता है।"

मैने कहा, "तुम्हारे जैसे बेवकूफों को दुःख होता है और उसको अपना दुख बनाकर घिर रहते है, सोचते रहते है। जो कुछ करने की शक्ति है, वह भी उसी दुःख मे यो ही नष्ट होती रहती है।"

उन्होने कहा, "अच्छा, फिलहाल कोई दूसरी बात करे।"

"दूसरी बात कैसे करे? क्या हम इतने गये-बीते है कि जिस घटना से तुम इतना विकल हो जाते हो, उसे हम सुने और समझे तक नहीं ?"

अन्त मे मैने उन्हे सारी कहानी कहने के लिए राजी कर लिया। उन्होने कहा, "तुम जानते हो, मुझे फलो का कितना शौक है और मै उन्हें तन्दुरुस्ती के लिए कितना जरूरी मानता हू। फिर आमो की तो बात ही क्या, आजकल तो आमों का मौसम है। तुम यह भी जानते हो कि मै आमो का विशेष रूप से शौकीन हूं और जब रुपये का एक आम आता था, तब भी अपने दोस्तों के यहां आम भेजा करता था। आज जब मै आम लाने गया, तो बढ़िया आम मिल गये। सोचा, ज्यादा ले लूं, दो-चार मित्रों के यहा भेज दूगा।"

मैने बीच में ही रोककर कहा, "रोटी की बात क्यों नहीं करते, जिसका मिलना कठिन हो रहा है। फलो की बात करते हो और स्वास्थ्य के लिए उन्हें जरूरी बताते हो, यही तो तुम्हारी भावुकता है !"

वह बोले, "देखो, ऐसा करोगे तो मैं कुछ भी कह नहीं सकूंगा।" फिर उन्होंने

कहा, "मेरे एक रिश्तेदार बहुत गरीब हैं। उनके छोटे बड़े आठ बच्चे हैं। अचानक मुझे उनकी याद आई। मैं सोचने लगा, जिन मित्रों के यहां मैं आम भेजता हूं, उनके यहां आमों की कोई कमी तो नहीं। वह स्नेहवश आम ले लेते हैं। उस रिश्तेदार के बच्चों को तो शायद आम के मौसम भर भी आम न मिले हों और मिले भी हों तो एक-आध बार और वह भी बहुत ही घटिया। और मैंने भी उनके यहां कभी आम नहीं भेजे ! इस विचार ने मेरे मस्तिष्क में ऐसी उथल-पुथल पैदा की कि इसके मनोवैज्ञानिक तथा दूसरे कारणों पर सोचता रहा। मोटर अपनी रफ्तार से चली जा रही थी। बहुत दूर जाने के बाद मैंने ड्राइवर से कहा कि मोटर लौटाओ, अमुक आदमी के यहां चलना है।

"थोड़ी देर में मोटर बड़ाबाजार की एक संकरी गली में घुसी और एक पुराने मकान के दरवाजे पर जा खड़ी हुई। तीन-चार अधनंगे, कृशकाय बच्चे दरवाजे के बाहर खड़े थे। उन्होने कौतूहल की दृष्टि से मोटर को और मुझको देखा। दो एक ने भीतर जाकर अपने पिता को खबर दी कि अमुकजी आये हैं। संयोगवश वह घर पर ही थे और मुझे लेने बाहर आये। उनके साथ जब मैं कोठरी में गया तो देखा कि उनकी स्त्री टाट का एक टुकड़ा बिछाकर मेरे लिए बैठने की जगह तैयार कर रही है। स्त्री बेचारी टाट बिछाने में जल्दी कर रही थी कि कहीं मैं उसकी फटी साड़ी न देख लूं। उन्होंने बड़े आदर के साथ मुझे उस टाट के आसन पर बैठाया। कोठरी में सील की बू तो थी ही, आसपास की कोठरियों से आकर धुआं भी भर गया था। मकान के सहन में जैसे सूर्य भगवान का प्रवेश-निषेध था। वहीं आइसक्रीम बेचने की गाड़ियों का कारखाना भी था। गाड़ियां जहां-तहां अस्त-व्यस्त पड़ी हुई थीं। उनके बच्चे भी आ गये। जो बाहर गये थे, वे नहीं आ सके।

"कोठरी का किराया पूछने पर उन्होने बताया कि तैंतीस रुपये लगता है। बातों ही बातों में पता चला कि वे एक जगह डेढ़ सौ रूपये मासिक पर नौकरी करते हैं। सुबह ७ बजे जाते हैं और ११ बजे लौटते हैं। भोजन करके १२ बजे फिर चले जाते हैं और शाम को ७ बजे लौटते हैं। भोजन करने के बाद रात में फिर जाते हैं और १० बजे लौटते हैं। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में बात करने पर कहा कि एक लड़का स्कूल जाता है, जिसकी फीस सात रुपये महीना लगती है। बाकी बच्चे यहां मटरगश्ती करते फिरते हैं। उन्हें स्कूल भेजने की बात हुई तो कहने लगे कि स्कूल की फीस और किताबों के दाम कहां से आयें ? तैंतीस रुपये भाड़े का, सात रुपया एक लड़के की फीस का, पचपन रुपये राशन के अन्न का, फिर दाल, मसाला, लकड़ी आदि में जो खर्च होता, वह सब पूरा नहीं पड़ता। कपड़ा, जूता, तेल, साबुन आदि से हमारा कोई संबंध नहीं। देश से आये सात महीने हुए तबसे हमने कपड़ा या दूसरी कोई चीज नहीं खरीदी,

सिवा खाने की चीजों के । हमारे सामने तो सबसे बड़ा सवाल पेट का है । लिखाई-पढ़ाई तथा दूसरी चीजों के बारे में सोचने-करने का हमारा अधिकार ही नहीं है। इस एक लड़के ने देश में निःशुल्क थोड़ा पढ़ लिया था सो यहां भी स्कूल जाने का आग्रह करने लगा । हमने किसी तरह उसे स्कूल भेज दिया है, पर हमारी कोशिश रहती है कि यह भी कुछ काम करे और बीस-तीस रुपये भी लाने लगे तो हम भर-पेट खा सकें । मैंने कहा कि आप इन बच्चों को देश में क्यों नहीं रखते तो उनकी स्त्री कहने लगी कि हमारी तो देश में भी यही हालत है । इसीलिए सोचा कि दुःख-सुख जो है सो तो है ही, साथ ही रहकर बिताने से कुछ तो सहारा रहेगा ।

डेढ़ सौ रुपये में तैंतीस रुपये किराया और सात रुपया फीस देने के बाद एक सौ दस रुपये में दस आदमी कैसे गुजर करते हैं, यह देखकर मैं स्तम्भित रह गया । हम समाज में शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य आदि की बात करने वाले लोग सोच नहीं सकते कि वस्तुस्थिति क्या है, क्योंकि हमारा उस स्थिति से वास्तविक संबंध नहीं है । उपर्युक्त स्थिति के परिवार के बच्चे कैसे स्वस्थ रह सकते हैं, कैसे उन्हें शिक्षित किया जा सकता है और कैसे उन्हें नागरिकता की प्रारंभिक बातें बताई जा सकती हैं ? वे जैसे तपेदिक के कीड़े हैं, समाज में अनायास फैलते जाते हैं। ऐसे लोग तपेदिक जैसी बीमारी हो जाने पर भी सुबह सात बजे से रात दस बजे तक काम करने के लिए बाध्य हैं, ताकि आठ-दस प्राणियों को जिला सकें। वे बीमारी को भी छिपाते हैं कि कहीं मालिक को पता न लग जाय और उन्हें निकाल न दे ।"

मित्र की उपर्युक्त बातें मुझे दुःखित कर रहीं थीं । मैंने प्रश्न किया, "सबसे छोटे बच्चे की उम्र क्या होगी ?"

"तीन वर्ष ।"

"स्त्री की क्या उम्र है ?"

"होगी कोई पैंतीस वर्ष । बच्चे तो और भी हो सकते हैं, क्योंकि गरीब के पास अपने मनोरंजन के लिए आज सेक्स के सिवा और कोई चीज है ही नहीं।"

"तुमने उनसे जन्म-निरोध की बात क्यों नहीं कही ?"

मेरे मित्र एक व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ बोले, "रे पगले, यह सब तो हमारे-तुम्हारे लिए है । जिनके बीमारी है, उनकी दवा कौन करता है ? मैं उनसे जन्म-निरोध की बात कहता ! पहले तो वह यह मानने को तैयार ही नहीं कि ऐसा भी कोई उपाय हो सकता है, जिससे बच्चा होना रुक जाए । वह तो यह मानते हैं कि ईश्वर ने जिसके नसीब में जितने बच्चे लिखे हैं, लाख प्रयत्न करने पर भी उतने अवश्य होंगे । फिर बच्चों का होना तो बुरा नहीं । जब भगवान कृपा करते हैं, तो बच्चे होते हैं । मेरे एक मुसलमान मित्र हैं, जो अपने बच्चों की

संख्या गिनकर बताया करते हैं, क्योंकि उनके तेरह बच्चे तो जीवित हैं । इनके अलावा होते रहते हैं और मरते भी रहते हैं । जन्म निरोध की बात करने पर एक दिन उन्होंने कहा कि भाईसाहब, जब खुदा भेजता है, तो हम कौन होते हैं रोकने वाले ? सच पूछो तो यह बीमारी इतनी गहरी है कि इसका इलाज नहीं सूझ रहा है । जबसे मैं उस परिवार से मिलकर आया हूं, तबसे मेरे मन में एक अजीब हलचल मची हुई है । मेरा मन और मस्तिष्क दोनों अनेकानेक प्रश्नों और समस्याओं से घिरे हुए हैं । मैं सोचता हूँ, ऐसे अनेक परिवारों की इससे भी अधिक जटिल समस्याओं का समाधान हो और कैसे हो ? उन बच्चों की शक्ल और उस कोठरी का दृश्य मेरी आंखों के सामने बराबर घूम रहा है ।''

मैंने कहा, ''तुम ठीक कहते हो, और आज हमारे देश में ऐसी स्थिति न जाने कितनों की है, पर इसका यदि कोई उपाय है, तो क्रांति ही है । यों व्यक्ति-विशेष या एक-एक व्यक्ति के लिए चिन्ता करने से क्या हो सकता है ? तुमने जिस परिवार का वर्णन किया है, ऐसे परिवारों की सृष्टि यहां रोज होती जा रही है । समस्या का इलाज तो दूर रहा, आज तो समस्या और भी उलझती जा रही है । तुम देखते हो कि आज की स्थिति और व्यवस्था में धनी का धन बढ़ रहा है और गरीब की गरीबी बढ़ रही है । एक तरफ तो ढेर लगता जा रहा है और दूसरी तरफ का गढ़ा और भी गहरा होता जा रहा है । समता का स्थान विषमता ले रही है । ऐसी स्थिति मे ज्यादा काम करने की जरूरत है, जिससे हम समाज को सुखी और समृद्ध बना सकें, समता ला सकें । यों दु:खी होने या चिन्ता करने से तो काम नहीं चलेगा। आज समाज की रचना और संचालन जिन सिद्धान्तो से, जिस नीति से, जिन तत्त्वों और विचारों से हो रहा है, उनको ही शायद बदलने की जरूरत है और उनको बदलने के लिए हमें कार्यशील, योग्य, ईमानदार, परिश्रमी आदमी चाहिए । जहां-जहां ऐसे आदमी मिले, उनकी खोज होनी चाहिए, संगठन होना चाहिए, कार्यक्रम होना चाहिए । तभी इस स्थिति को बदल कर नये समाज की रचना की जा सकती है । व्यक्ति की स्थिति से हम समाज की स्थिति का अंदाज कर सकते है, पर उस एक के सुधार से समस्या का समाधान नहीं हो सकता ।''

मित्र बोले, ''भई, यह तो ठीक ही है । तुम कहते हो, वैसा हम तथा हमारे जैसे दूसरे लोग सोचते रहे ही हैं, पर हालत तो यह है कि मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की ।''

''यह कैसे कहते हो ? आज के विचारशील व्यक्ति, चाहे वे किसी भी विचार के हों, यहां तक कि धनी वर्ग के भी समझने-सोचने वाले आदमी, यह मानने लगे कि आज की हालत में बड़ा परिवर्तन होकर रहेगा, यह व्यवस्था जो आज कायम है, टिक नहीं सकती ।''

इसपर मित्र बोले, "फिर भी एक बड़ा भाग ऐसा है, जो अपने साधनों द्वारा इस व्यवस्था को कायम रखने की कोशिश कर रहा है और सोच रहा है कि कम-से-कम कुछ दिन तो हम इसे बचाये रख ही सकेंगे ।"

मैंने कहा, "इसमें अधीर होने से काम नहीं चलता । हमारी लगन और हमारे साधन जितने साधन ज्यादा होंगे, सफलता उतनी ही नजदीक आती जायगी । साथ ही, यह निश्चय मानना चाहिए कि समय बड़ी तेजी से बदल रहा है । देखते-देखते राजे-महाराजे और जमींदार मिट गये, मिट रहे हैं, तो अब यह सेठ साहूकार भी मिटने वाले हैं और तुम जिस परिवार को देख आये हो इससे भी ज्यादा जो सर्वहारा है, जिसके पास कुछ नहीं है, उसका उद्धार होने वाला है । हमें काम वही करना चाहिए –साहित्य के द्वारा, संगठनों के द्वारा–कि वह ऐसे समाज की रचना में सहायक हो सके, जिसमें वैसे दृश्य रह न जायं, जैसा कि तुम देख आये हो ।"

अंधेरे के कैदी

१ : अंधेरे का कैदी

भाद्र का महीना था। रात के करीब ११ बजे होंगे। प्रेसिडेन्सी जेल के यूरोपियन वार्ड में मैं अपनी कोठरी में बन्द था। खिड़की से मुझे आकाश अच्छी तरह तो नहीं दिखलाई पड़ता था; पर जितना भी दिखलाई पड़ता था, काले बादलों से घिरा था। थोड़ी देर में बूंदें पड़ने लगीं। किसी अस्थिरचित्त मनुष्य के विचारों या क्षण-क्षण में होने और टूटनेवाली मित्रता की तरह विद्युत् अपना प्रकाश मेरी इस अंधेरी कोठरी में फैलाने लगी। मैं पड़ा-पड़ा तरह-तरह के विचारों में निमग्न था, क्योंकि नींद नहीं आ रही थी।

सहसा एक सुन्दर गाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। यह गान कविवर रवीन्द्रनाथ का निम्न पद था :

मेघेर पर मेघ जमेछे आंधार करे आसे,

आमाय केनो बसिए राखो एका द्वारेर पासे।

यह गाना मुझे इतना सुन्दर लगा कि मैं अपने विचारो की उलझन से निकलकर इसके राग और भावों में अपने-आपको भूल गया। गान समाप्त होने पर मैं सोचने लगा कि जेल में इस आधी रात को गाने वाला कौन है ? इस वार्ड में हम दस राजनैतिक कैदी है। उनमें से तो कोई गा नहीं रहा और दूसरा वार्ड यहां से काफी दूर है। तब फिर आखिर यह कौन गा रहा है ?

पास ही में एक हाजत थी, जिसमें करीब तीन-साढ़े तीन सौ आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह शाम को छः बजे बन्द कर दिया जाता था। मै जब कभी किसी काम से बाहर निकलता था, तो इन मनुष्य-तनधारी पशुओं को देखता था। उनकी हालत देखकर सहसा यह विश्वास कर लेने को जी नहीं चाहता था कि हाजत के इन बनमानुषों में किसीने यह गाना गाया है। वर्षा से थोड़ी ठंडक-सी हो गई थी, अत. गानेवाले की बात सोचते-सोचते ही न जाने कब मुझे नींद आ गई।

सुबह उठते ही मेरे मन मे यह प्रश्न जग उठा कि रात मे वह गान किसने गाया था ? बगल की कोठरी के भाई से बात की तो उत्तर मिला कि वे तो

रात-भर खर्राटे लेते रहे। उन्हें तो यह भी पता नहीं कि कब बादल छाये और कब वर्षा हुई। किसी काम के बहाने मैं वार्ड से बाहर निकला। देखा कि पास में ही सैंकड़ों अधनंगे मैले-कुचैले लोग सुबह का नाश्ता कर रहे हैं। नाश्ता भी उनका बस था, सो ही था। जेल में सुबह के नाश्ते में कैदियों को एक लपसी दी जाती है, जिसमें चावल, नमक और कुछ मसाले मिले होते हैं तथा पानी की बहुतायत रहती है। मैंने एक से पूछा, "भाई, तुम लोगों में से किसने रात को इतना अच्छा गाना गाया था ?"

वह बोला, "बाबूजी, कौन-सा गाना ? हम गाने की बात क्या जानें !"

मैं सोचने लगा, मैं भी कैसा पागल हूं, जो इस तरह की बात करता हूं !

दस-पांच दिन गुजर गये, पर मेरे मन में यह चाह बनी रही कि उस गानेवाले का पता लगता तो अच्छा था। एक दिन शाम को पांच बजे मेरी मुलाकात थी। हम लोगों को पन्द्रह दिन में एक बार घर के लोगों से या जिनसे हमारा खास सम्बन्ध हो और पुलिस को उनसे मिलने देने में कोई आपत्ति न हो उनसे हमारी मुलाकात कराई जाती थी। मैं जब मुलाकात करके लौट रहा था, तो उसी हाजत के पास एक आदमी बैठा अपनी थाली पर हाथ से कुछ बजाने का-सा प्रयत्न करता हुआ दिखलाई पड़ा। मेरे मन में उस रात के गाने की स्मृति जाग उठी। मैंने उसके पास जाकर पूछा, "क्या बजा रहे हो ?"

वह शरमा गया और बोला, "बाबूजी, कुछ नहीं बजाता।"

मैंने कहा, "मालूम पड़ता है, तुम गाना जानते हो।"

"नहीं बाबूजी, यों ही ज़रा कभी ऊं-आं कर लिया करता हूं।"

"पांच-छः दिन पहले रात में मैंने एक बहुत सुन्दर गाना सुना था। पता नहीं, वह किसने गाया ? मैं उस आदमी को खोज रहा हूं। कौन जाने, किस वार्ड में है।"

"यहां हम तीन सौ आदमी बन्द होते हैं। रात में काफी शोर होता है। नींद नहीं आती, तब कई लोग यों ही कुछ गाया करते हैं। आपने वही सुना होगा। दूसरे वार्ड में से गाया हुआ गाना यहां क्या सुनाई पड़ेगा ?"

"तुम यहां कितने दिनों से हो ?"

"दो वर्ष हो रहे हैं।"

"कितनी सजा है तुम्हारी ?"

"सजा कहां ? ब्लैक-आउट में (अंधेरे का कैदी) हूं।"

"ओह, तुम ब्लैक-आउट हो ! तो पहले कई बार सजा पा चुके हो न ?"

"पहले की बात मत पूछिये, बाबूजी ! हां, सज़ा तो काटी ही है।"

उसकी आवाज में दर्द था। वह भर्राई हुई थी। वह आदमी भी ज़रा दूसरों से भला-सा लगता था। मैंने कहा, "तुमको यहां कोई तकलीफ तो नहीं है !"

"तकलीफ किस बात की, बाबूजी। हम चोर जो ठहरे! हमारा तो यह घर ही है। एक बीड़ी हो, तो कृपा करें।"

"भाई बीड़ी तो मैं नहीं पीता।"

"तो कोई साबुन का टुकड़ा हो, तो...."

"हां, भीतर वार्ड में आना, साबुन जरूर मिलेगा।"

"भीतर बाबूजी, सिपाही नहीं जाने देते। यदि रिपोर्ट कर दें तो यहां बेड़ी लग जायेगी।"

"अच्छा, यदि हम तुम्हें अपने वार्ड में काम करने के लिए ले लें तब?"

"तब तो बड़ी कृपा होगी, बाबूजी!"

"देखो भाई, हम सब हैं राजनैतिक बन्दी और उसमें भी सिक्यूरिटी प्रिजनर। हम लोगों के पास बहुत-सी चीजें भी हैं। कीमती चीजें भी हैं। तुम कहीं चोरी कर लो, तब? तुम लोगों का क्या भरोसा!"

"हां, हमारा विश्वास कौन करता है!" एक लम्बी सांस खींचते हुए उसने कहा।

मैंने कहा, "अच्छा, मैं जेलर से बात करूंगा। तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम धीरेन्द्र दास है।"

"और नम्बर?"

"नम्बर ३४५-बी है।"

मैं अपने वार्ड में आ गया। सोचने लगा, आदमी-आदमी में इतना फर्क क्यों है? क्या यह फर्क होना जरूरी है? क्या यह स्वयं निर्मित है? नहीं, यह फर्क जबरदस्ती आदमी ने अपनी सुविधा के लिए बनाया है। अपने स्वार्थ के लिए उसने कमजोर आदमी पैदा किये हैं। यह फर्क एक बहुत लम्बे समय से चला आ रहा है। क्या यह बराबर इसी तरह चलता रहेगा? यही सोचता-सोचता मै अपने कार्यों में लग गया। दूसरे दिन जेलर से कहकर हम लोगों ने उस आदर्म को अपना काम करने के लिए ले लिया। दो-चार दिन तो उसको काम से परिचय करने में लगे, फिर वह सब काम बड़ी सफाई और चतुराई से करने लगा। हमें कभी किसी तरह की शिकायत करने का मौका उसने नहीं दिया। यदि ऐसा आदमी हम शहर में नौकर रखें, तो इस महंगाई के जमाने में बीस रुपया मासिक और खाना तो देना ही पड़े। और आजकल खाने पर भी कम-से-कम पौन-एक रुपया तो रोज खर्च होता ही है। पर यह आदमी रात-दिन कड़ी मेहनत और होशियारी से काम करता है और सिवा दो-चार बीड़ियों के इसकी कोई मांग नहीं। पर यह कैदी जो है, चोर जो है, कौन इसे काम देगा, कौन इसे अपने घर में रखेगा? बोलबाला है आज इस समाज-रचना का, जिसने हम-जैसे सफेदपोशों के लिए सब सुभीते कर रखे हैं। शरीर से कोई परिश्रम करना हम पसन्द नहीं करते– पसन्द

ही नहीं, उस परिश्रम करने में अपनी हेठी भी समझते हैं और साथ ही 'कल्चर' की कमी भी ।

एक दिन हम लोगों का रसोइया बीमार पड़ गया, तो धीरेन्द्र ने कहा, "बाबूजी, क्या खाना बना दूं ?"

"तुम खाना कैसे बनाओगे ? तुम तो खाना बनाना जानते नहीं ।"

"नहीं बाबूजी, मैं जानता हूं । एक दिन मुझसे बनवाकर तो देखिए ।"

और उस दिन धीरेन्द्र ने जो खाना बनाया वह उस रसोइये के खाने से कहीं अच्छा था । उसने एक-दो चीजें नई भी बनाई थीं । अब तो हम लोगों का खाना भी बनाने लगा और नित्य एक-न-एक नई चीज बनाता, जो लोगों को बहुत पसन्द भी होती । मैं सोचता कि यह आदमी पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर बड़ा अच्छा मिला। यदि यह आदमी किसी तरह इस ब्लैक-आउट से छूटे, तो इसको अपने घर पर रख लें । यह चोर जरूर है; पर यदि सोचकर देखा जाय, तो इसका इसमें बहुत कम कसूर है । बेचारा क्या करे ? जब इसका कोई विश्वास ही नहीं करता, तो पेट के गढ़े को भरने के लिए कुछ-न-कुछ करेगा ही । आज की समाज-रचना ने न मालूम कितनों को अपना पतन करने के लिए विवश किया है ।

अब धीरेन को पहले की अपेक्षा काम कम करना पड़ता था, पर कभी खुश नहीं दीख पड़ता । उसे देखकर मैं बराबर यही सोचा करता कि इस आदमी के मन में कोई गम-दर्द जरूर है । एक दिन मैंने उससे पूछा, "धीरेन, तुम्हें यहां कोई तकलीफ तो नहीं है ?"

"नहीं बाबूजी, यहां तो बहुत आराम है । आप लोगों की सेवा का मौका मिलता है । आप लोग देश के लिए तकलीफ सहते हैं । हम तो चोर हैं । आपका साथ मिल गया, यही क्या हमारे लिए कम है । यहां भला तकलीफ किस बात की ?"

"तो तुम इतने सुस्त क्यो रहते हो ? तुमको कभी हंसते नहीं देखा । बताओ भाई, यदि हमसे कुछ हो सकेगा, तो तुम्हारे लिए करने की कोशिश करेंगे ।"

इतना सुनकर वह रोने लगा । कुछ देर बाद संभला तो मैंने आश्वासन के स्वर में पूछा, "यह क्या बात है ?"

"बात कुछ नहीं है, बाबूजी, मैं सदा से ऐसा नहीं था ।"

यह सुनकर उससे पिछला हाल जानने की मेरी उत्कण्ठा और भी बढ़ी और मैंने उससे पूछा, "अच्छा, तुम्हारी कहानी क्या है ?"

"क्या फायदा है उसे कहने में ? यों ही आदमी किसी अज्ञात के इशारे से क्या से क्या हो जाता है !"

"नहीं, तुम इस फन्दे में कैसे फंस गये ? तुम तो थोड़ा लिखना-पढ़ना भी जानते हो, मेहनती भी हो, काम करने का शऊर भी है, फिर तुम्हारा यह हाल

कैसे हुआ ?''

''अच्छा, जब आप पूछते ही हैं, तो मैं कहे देता हूं । मेदिनीपुर जिले के सूताहाटा गांव में मेरा घर है । मां-बाप हैं, दो बहनें है, जगह-जमीन है, गाय-बैल हैं । अच्छी खाती-पीती अवस्था है, किसी बात की कमी नहीं । पिता-माता का इकलौता पुत्र और वह भी बड़ी उम्र में पैदा होने के कारण मैं बहुत लाड़-प्यार से पाला गया । गांव के स्कूल में मिडिल तक पढ़ा भी । आगे पढ़ने की खूब इच्छा थी; पर हमारे गांव में इससे आगे की पढ़ाई नहीं होती थी और शहर के स्कूल में भेजने के लिए माता-पिता राजी नहीं हुए । मैने बहुत कोशिश की; पर मां मुझे अपने से अलग करना नहीं चाहती थी । फलत. मै घर की खेतीबारी का काम देखने लगा ।''

वह जरा चुप हुआ और ठिठका । उसके चेहरे पर किसी विषाद भरे भाव की रेखाएं चमकने लगी । मैंने पूछा, ''क्यों, चुप कैसे हो गये ?''

''बाबूजी, और बातें आज नहीं, किसी दूसरे दिन बताऊंगा ।''

''नहीं भाई, अब तो मेरी उत्सुकता और बढ़ गई है । कहो– कहो, घबराना नही चाहिए ।''

वह बोलना ही चाहता था कि किसीने पुकारा, ''धीरेन !'' और वह उठकर चला गया । देखा, सिपाही आया है और कह रहा है कि उसकी दूसरे वार्ड में बदली हो गई है । सुनते ही बेचारा सहम गया । मेरे पास आकर बोला, ''बाबूजी, मुझे आठ नम्बर खाते मे जाना पड़ेगा ।''

''क्यो ।''

''सिपाही आया है । जेलरसाहब का हुकुम है ।''

मैने सिपाही से कहा, ''भाई, इसे यही रहने दो । हम लोग जेलर से बात कर लेंगे ।''

सिपाही ने कहा, ''बाबूजी, हम क्या कर सकते है ? एक बार तो जाना ही पड़ेगा । फिर आप जेलरसाहब से बात करके इसको वापस बुला सकते हैं ।''

धीरेन बोला, ''बाबूजी, दुर्भाग्य मेरा साथ नही छोड़ता । आपकी कोशिश व्यर्थ है । मुझे उसके भरोमे छोड़ दीजिए । आप जैसे लोगों के साथ मैं कैसे रह सकता हूं !''

दूसरे दिन जब जेलर आया, तो हम लोगों ने उससे धीरेन को हमारे पास रहने देने के लिए कहा, पर वह राजी नहीं हुआ । कहने लगा, ''बड़े जमादार ने उसकी यहां पर रहने की शिकायत की है । मैं उसको यहां नहीं रख सकता ।''

जेल में एक वार्ड और दूसरे वार्ड में ४०-५० गज का ही फासला होता है, पर वह फासला भी कितना अधिक है, इसे भुक्तभोगी ही जान सकता है । इसलिए इसके बाद धीरेन मुझसे न मिला और न मैं ही कभी धीरेन से । रात को जब

नींद टूट जाती या कम आती । मन में तरह-तरह के विचार उठते । उनमें धीरेन की कहानी को लेकर अनेक कल्पनाएं तथा हम लोगों से विदा होते समय की उसकी आकृति मन और आंखों में घूमा करती । आज भी उसकी पूरी कहानी जानने की प्रबल इच्छा है, और वह क्या हो सकती है, इस सम्बन्ध में नाना कल्पनाएं उठा करती हैं । धीरेन ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य किसी अज्ञात के इशारे से क्या से क्या हो जाता है ।

२ : रामलाल

नाटे कद का एकहरा बदन और काला रंग, एक आंख में फुलड़ी, सिर पर राजनैतिक बन्दियों के सुबह के नाश्ते का बोझ और हाथ में चाय की पतीली लिए उसे मैने आते देखा । नाश्ता देकर वह चलता बना । थोड़ी देर बाद फिर किसी काम से आया, ग्यारह बजे खाना लेकर आया और फिर शाम को खाना लाया। सब मिलाकर हमारी हाजत में वह सात-आठ बार आया होगा । इसी तरह वह बराबर आया करता ।

तीन-चार दिन बाद हम कुछ आदमी बड़ी हाजत से बदलकर यूरोपियन वार्ड में लाये गये । यहीं हम लोगों का खाना बनता और यहीं से वह हम लोगों की चीजें लेकर बड़ी हाजत में दिन में कई बार जाया करता । अब तो उसको हम लोगों के सब काम करने का भार सौंपा गया । हम लोग कुल दस आदमी थे और वहां दस के ही रहने की जगह थी । इसमें से तीन आदमी निरामिषभोजी थे, इसलिए उनका इन्तजाम अलग था, बाकी सात की सेवा का भार उस पर पड़ा । रसोई बनाने वाले और भी आदमी थे, पर इन सात आदमियों के सारे काम उसे ही सौंपे गये । उसको यहां के लोगों में से कोई तो 'काना' नाम से पुकारता और कोई 'बुड्ढा' कहकर । उसके साथी कैदी भी उसे इन्हीं नामों से पुकारते । पर उसको चाहे जिस नाम से पुकारो वह वहां आता था ।

मुझे उसका 'काना' नाम बहुत ही बुरा लगा और उसे 'बुड्ढा कहकर पुकारना भी ठीक नहीं जंचा, इसलिए एक दिन मैंने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

वह हँसा और बोला, जी, "समझ लीजिए । 'काना' भी कहते हैं 'बुड्ढा' भी कहते हैं ।"

"नहीं, यह तो तुम्हारी उम्र से या आंख की वजह से कहते हैं । तुम्हारा असली नाम क्या है ?"

"नाम ? नाम तो रामलाल है ।"

"कहां के हो ?"

"यहीं का ।"

"नहीं तुम्हारा देश कहां है ?"

"देश तो उड़ीसा है ।"

"तुम्हारे घर पर कौन-कौन हैं ?"

"एक भौजाई है और एक उसका बेटा ।"

"उसका बेटा कितना बड़ा है ? क्या तुमने विवाह नहीं किया ?"

"मैं विवाह कैसे करता ? भौजाई तो बेचारी विधवा है ।"

"तो इससे क्या ? तुमने विवाह क्यों नहीं किया ?

"नहीं यह मेरा धर्म नहीं । उसको तथा उसके बेटे को खाना देना मेरा धर्म है । मैं विवाह करता, तब तो बस मैं उनको भूल ही जाता ।"

"तुम्हारे भाई को मरे कितने दिन हुए ?"

"पन्द्रह-बीस वर्ष हो गये होंगे ।"

"उसका लड़का कितना बड़ा है ?"

"होगा कोई ग्यारह-बारह साल का ।"

"तो क्या वह तुम्हारे भाई के मरने के बाद पैदा हुआ ?"

"राम-राम, वह बहुत अच्छी है । ऐसी बात मुंह से मत निकालिए ।"

"तुम तो कहते हो, भाई को मरे पन्द्रह-बीस वर्ष हुए होंगे और लड़का ग्यारह-बारह साल का है । तब भाई को मरे इतने वर्ष नहीं हुए होंगे । तुमने उससे विवाह क्यों नहीं कर लिया ? तुम लोगों में तो ऐसे विवाह होते हैं ।"

"उससे विवाह करता ? वह तो मां है, मां !"

"अच्छा तो तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

"तीन कुड़ी[1] से ज्यादा होगी ।"

मैंने मज़ाक किया, "चार-पांच कुड़ी होगी ।"

"पांच कुड़ी तो पूरे सौ होते हैं । इतनी नहीं । चार कुड़ी तो ज्यादा है, हो भी सकती है ।"

राम लाल सुबह छः बजे आता है और शाम को छः बजे चला जाता है । इन बारह घंटों में वह कभी बैठता नहीं । जिस तरह तेली बैल को घानी में जोत देता है और उसकी आंखें बांध देता है, फिर वह फिरता ही रहता है, उसी तरह राम लाल भी है । पर उसको भौजाई की रक्षा में धर्म मालूम होता है, न जाने यह क्या बात है !

---

१. कोड़ी (अर्थात २०) का उच्चारण बंगाल-उड़ीसा में 'कुड़ी' ही किया जाता है ।

जेल में दो हजार से ज्यादा ही कैदी हैं । इनमें शायद ही कोई हो, जो तमाखू बीड़ी न खाता-पीता हो । और यहां तमाखू पीना गुनाह है । राम लाल भी तमाखू खाता है और इतनी खाता है जितनी मिल सके । फिर भी यदि उसके पास से कोई मांगता है, तो वह यह खयाल नहीं करता कि जब उसे जरूरत होगी, तो कहां से आयेगी । वह मांगने वालों को दे ही देता है । इस मामले में वह कर्ण से कम नहीं है ।

राम लाल यह ख्याल नहीं करता कि अमुक चीज अमुक आदमी की है । वह जिसको जिस चीज की जरूरत हो, दे देता है । जब उससे पूछा जाता है कि अमुक चीज जो वहां थी, कहां गई, तो वह कहता है कि वह तो अमुक को दे दी । उससे पूछा जाय कि बिना हमसे पूछे क्यों दे दी, तो वह कहता है कि उसने मांगी थी, उसे जरूरत थी, इसीलिए दे दी । यदि उससे कहा जाए कि हमें भी उसकी जरूरत है, तो वह कहता है, तब तो बड़ी 'मुश्किल की बात' है । यह 'मुश्किल की बात' उसका तकिया-कलाम-सी हो गई है। कोई उसपर नाराज हो, वह बुरा नहीं मानता, और खुश हो, तो भी उस पर कोई खास असर नहीं होता।

१० फरवरी, १९४३ को जब गांधीजी ने २१ दिन का उपवास शुरू किया तो रामलाल पूछा करता, "गांधी महात्मा की क्या खबर आई है ?" जब महात्माजी की अवस्था खराब होने लगी और हम लोग चिन्तित हुए, तो उसने कहा, "गांधी महात्मा तो भगवान हैं, उनका कुछ बिगड़ेगा नहीं । वह अच्छे हो जाएंगे । उनको कौन मार सकता है ?" लेकिन बावजूद इस आत्मविश्वास के उसको गांधीजी की खबर जानने की उत्सुकता बराबर रहती थी ।

सात आदमियों की कोठरियों की सफाई करना, सामने का बरामदा साफ करना, किसी को गरम पानी-नीबू, तो किसीको ठंडा पानी; किसी को चाय, तो किसी को दूध; किसी को कुछ तो किसी को कुछ –यह सब वह सुबह से शाम तक करता रहता है । इसके अलावा सबके कपड़े धोता है, जूठे बर्तन साफ करता है, नहाने के लिए ठंडा या गरम पानी देता है । मतलब यह कि वह कभी ज़रा भी विश्राम करते नहीं देखा गया । भोला इतना है कि उसे जो कोई जैसा कहे, सब सच ही मानता है । लगभग सभी उससे मजाक किया करते हैं । कभी कोई आदमी बीमार होता है तो वह उसकी बेहद सेवा-सुश्रूषा करता है । वह साथी कैदियों के सुख और सुविधा का सदा खयाल रखता है । यदि हम लोग कभी उसे कोई चीज देते, वह साथी कैदियों को देकर खाता तथा उनकी तकलीफों के लिए हम लोगों से सिफारिश भी करता । उसे अपनी उतनी फिक्र नहीं, जितनी दूसरों की।

एक दिन हमारे वार्ड के राजबन्दियों ने दूसरे वार्ड के कुछ बन्दियों को दावत दी । इससे राम लाल का काम बहुत बढ़ गया । पहले ही वह कौन कम था।

दिन भर वह खूब दौड़ता रहा । शाम को खाकर दूसरे वार्ड में बन्द होने गया और वहां बीमार पड़ गया । उसे एक कै हुई और कुछ दस्त आए । सुबह होते-होते उसे बुखार चढ़ आया । पर ज्योंही वह हमारे वार्ड में आया, तो फिर उसी तरह काम करने लगा । मैंने उससे कहा, "तुम यह क्या करते हो ? कुछ विश्राम करो ।" बोला, "अच्छा, विश्राम करूंगा ।"

एक जगह वह सो गया और अपने-आप बात करने लगा, "विश्राम करो, बस विश्राम करो; पर विश्राम कैसा ? विश्राम करने से तो फिर विश्राम ही हो जाएगा । नहीं मैं मूर्ख हूं । मुझे विश्राम नहीं, काम करना चाहिए । रात में अच्छा लगा, ज्यादा खा लिया । मूर्ख हो गया, अब फिर मूर्ख हूं, विश्राम जो करता हूं। नहीं, मुझे काम करना चाहिए । काम करने से आदमी ठीक रहता है ।"

थोड़ी देर बाद, देखा, तो वह अपना सारा काम फिर सदा की भांति कर रहा है । यह राम लाल 'शीतोष्णसुखदुःखदा' है, 'मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः' है और है 'निर्ममो निरहंकारः ।' यदि हम सफेद-पोश लोग सोचकर देखें, तो उसने किसका क्या बिगाड़ा है ? वह संसार से क्या लेता है ? उसकी जरूरतें कितनी हैं ? वह पूरा आत्मत्यागी है । दिन भर मेहनत करता है और सिर्फ पेट भरने के सिवा उसकी कोई मांग नहीं । वह दूसरों को कितना अधिक देता है और स्वयं कितना कम लेता है, यह सोचने की बात है ।

३ : दत्तात्रेय

बात तीस वर्ष से भी ज्यादा पुरानी है । मैं खादी भंडार में बैठा काम कर रहा था कि एक लड़का आया । उम्र शायद सोलह-सत्रह की रही होगी । बोला, "एक रूपया दीजिए ।" मैंने उसकी ओर गौर से देखा और रूपया दे दिया । वह चला गया, कुछ नहीं बोला । सात-आठ दिन बाद फिर आया और बोला, "एक रूपया दीजिए ।" मैंने फिर उसकी ओर देखा, एक मिनट उसको समझने की कोशिश की —मन ही मन —और एक रूपया दे दिया । सात-आठ दिन बाद वह लड़का फिर आया । चुप, कुछ बोला नहीं, मैंने पूछा, "क्या बात है ?" वह बहुत उदास था, कमजोर तो पहले से ही था और भी कमजोर दुबला पतला निहायत थका-सा निराश ही लग रहा था । मैंने उससे जरा ज्यादा सहानुभूति के स्वर में पूछा, "क्या बात है ?"

"मैंने आपसे दो बार एक एक रुपया मांगा । आपने दे दिया । मैंने पहली

बार ही सोचा था कि इस रुपये की कोई चीज खरीदकर उसकी बिक्री करके जो दो-चार पैसे मिलेंगे, उससे खा लूंगा और काम चला लूंगा। पर यह हुआ नहीं, रुपया खत्म हो गया, खाने में। फिर साहस करके आया और मांग लिया। मिलने पर सोचा, इस बार तो निश्चय ही काम चला लूंगा, पर वह नहीं हो सका। रुपया खत्म हो गया। अब मैं आपसे मांगने नहीं आया हूं, न लेना चाहता हूं। आप दें तब भी नहीं। क्या करूं, कैसे करूं, यह बतायें या कोई काम दें।"

भाई मूलचन्दजी अग्रवाल के पास भेज दिया और पच्चीस 'विश्वमित्र' बेचने के लिए देने को लिख दिया। उसने बहुत कोशिश की, पर पन्द्रह-सोलह से ज्यादा नहीं बेच सका। बाकी लौटाने के लिए लिखकर जितना वह मांगे उतना 'विश्वमित्र' उसको दे और न बिकने पर लौटा ले, ऐसी बात हो गई। उन दिनों 'विश्वमित्र' का दाम दो पैसा था और एक बेचने पर आधा पैसा कमीशन मिलता। उसके रहने और खाने-पीने का प्रबन्ध कर दिया। 'विश्वमित्र' की बिक्री से वह दस-बारह पैसा कमाता। शाम को कैंची, सूई, तागा आदि बेचता, पर चार-पांच आने से ज्यादा रोजाना नहीं कमा पाता। खाने-पीने का इन्तजाम था, पर वह खुश नहीं था। पच्चीस रुपये महीने पर एक प्रेस में उसकी नौकरी लगी। सुबह आठ बजे जाता, रात में नौ-दस बजे आता। बहुत ज्यादा परिश्रम करना पड़ता उसे। वह कमजोर था और भी कमजोर होता जा रहा था। मैं उसको देखता तो कष्ट होता, पर वह किसी प्रकार की शिकायत या अन्य बात न करता। अपना काम चुपचाप बड़ी सच्चाई और नियमितता से करता रहता।

उन दिनों शुद्ध खादी भंडार की एक शाखा मुरादाबाद में थी। वहां खादी-उत्पादन का तथा आश्रम का काम भाई महाबीर प्रसादजी पोद्दार चलाते थे। एक भंडार दिल्ली में हम लोग उसकी ओर से चलाते थे। भाई पोद्दारजी कलकत्ता आये तब मैने उनसे कहा कि पोद्दारजी एक लड़का मेरे पास है। वह मुझे बहुत भला लगता है, पर कष्ट में है। किसी प्रकार की सहायता वह नहीं लेना चाहता। उसको जो काम करना पड़ता है, उसमें जो मेहनत करनी पड़ती है, उससे वह बीमार हो जायेगा। उसको आप ले जाइए। वहां चीजें सस्ती हैं। उसको ज़रा दूध-दहीं आदि अच्छा खाना मिल सके, इसका प्रबन्ध कर दीजिए तो वह बचेगा, नहीं तो मर जाएगा। लड़का बहुत भला मालूम होता है। पोद्दारजी उसको ले गये। वहां उसने काम किया तो वह एक खास योग्य आदमी साबित होने लगा। उसकी आवश्यकता केवल खाने-भर की थी। पांच छः महीने में वह काफी तंदुरुस्त हो गया। शरीर थोड़ा भर आया था। वहां की आबोहवा और खाना-पीना-रहना सबका उसके शरीर पर काफी असर पड़ा। काम तो वह इतना करता था कि उसके जैसा काम करनेवाला वहां कोई दूसरा आदमी ही न था। एक वर्ष में वहां का सब काम जान गया और एक प्रकार से व्यवस्थापक का काम

करने लगा । उससे कई बार कहा कि तुम रुपये ले लो, जो चाहे वह ले लो। कम से कम सवा सौ रूपया महीना तो उसे मिलना ही चाहिए था, पर वह पांच-दस रुपया भी न लेता । जरूरत पड़ने पर दो-चार लेता,वह भी कभी ही । पोद्दारजी उसपर फिदा रहते । एक-दो वर्ष ऐसे ही बीते होंगे । एक दिन उसने पोद्दारजी से कहा, "मुझे दो सौ रुपये चाहिए ।" पोद्दारजी ने कहा, "जितने चाहिए ले लो, पर क्या करोगे ?" उसने कहा, "घूमने जाऊंगा ।" उन्होंने रुपये दे दिये । वह चला गया । लौटा नहीं, न पत्र आदि आया । चिन्ता होने लगी हम सबको, पर क्या करते ! महीना-दो महीना निकल गया ।

मैं और पोद्दारजी शुद्ध खादी भंडार में बैठे बात कर रहे थे । एक महाराष्ट्री सज्जन आये । उमर पचास के करीब होगी, काली टोपी, कमीज, कोट, ऊंची सी-धोती, नाटे-से थे वह । कुरसी पर बैठाया । बडे निराश से, थके-से मालूम हो रहे थे । दो-चार मिनट बाद उन्होंने अपनी पाकेट से एक फोटो निकाली और कांपते हुए हाथों से भर्राई हुई आवाज में हमें देते हुए बोले, "यह लड़का आपके यहां..." हमने फोटो को ध्यान से देखा । पोद्दारजी ने मुझसे कहा, "यह तो दत्तात्रेय की फोटो मालूम होती है ।"

उन सज्जन ने कहा, "यह लड़का मेरा भानजा है । इसके पिता हैदराबाद में एक बड़े पद पर काम करते है । लड़के ने मैट्रिक की परीक्षा दी । उसके बाद वह घर से चला गया, कहां गया, पता नहीं । इन दो वर्षो में हमें जहां भी कुछ पता लगा वहां-वहां गये । हजारों रुपये खर्च किये, पर पता नहीं लगा । इसके माता-पिता रात-दिन इस दुःख में घुले जा रहे है ।

उस लड़के की वृत्ति और स्वभाव इतना अच्छा था कि हम उसको भूल नहीं पा रहे हैं । महाराष्ट्री सज्जन ने कहा, "आपकी दूकान गांधीजी की दुकान है। वह लड़का ऐसी जगह आ सकता है, इसलिए हम आपके पास आये है ।"

हम लोग क्या कहते ! उस आदमी को कुछ कहते बनता नहीं था । फोटो सचमुच उस लड़के की थी । हमें कहना पड़ा कि वह हमारे पास दो वर्ष तक रहा, पर दो महीने हुए, हमसे छुट्टी मागंकर सैर करने के बहाने चला गया और नहीं आया, न कोई पता बताया, न कोई पत्र लिखा । हमारा मन भी उसे खोज रहा है ।

उस अधेड़ आदमी ने सिर पीट लिया और रोने लगा ।

उस दत्तात्रेय का हमको आजतक पता नहीं, पर न मालूम उसकी कितनी बार याद आती है । बात बहुत छोटी होते हुए भी इतनी गहरी और मन की गहराई को छूती है कि आज भी मेरा मन उसे खोज ही रहा है ।

४ : बटोही

सुबह मैं प्रतिदिन ढकुरिया लेकर घूमने जाता हूं। दो-तीन दिन से वहां एक बूढ़े आदमी को देख रहा हूं। इस आदमी को देखकर मन में कई तरह के विचार चलते रहे। सोचा, क्या सिद्धार्थ ने किसी ऐसी ही क्षीणकाय जरा-पीड़ित देह के दर्शन करके अपने संवेदनशील मानस में भीषण विकलता का अनुभव किया था। मेरे एक मित्र हैं, प्रायः हम दोनों एक साथ घूमते हैं। मेरे मित्र बहुत पर-दुःखकातर हैं। वह गरीब और दुःखी के हृदय में प्रवेश पा जाते हैं। मैंने उनसे कहा, "भाईसाहब, इस आदमी से बातें करने को जी चाहता है। चलिये, बातें करें। आप ऐसे दुःखी लोगों से अच्छी बातें कर सकते हैं। चलिये, आप ही शुरू कीजिएगा।"

नजदीक से देखा उस मानव-तनधारी को। उसकी कमर इतनी झुक चुकी है कि वह आकाश को नहीं देख सकता और अपने हाथों को लटकाकर नहीं चल सकता, क्योंकि हाथों को लटका दे तो वह जमीन से थोड़े ही ऊंचे रह जाएंगे। इसलिए बरबस हाथों को कमर के पीछे लगाकर वह चलता है और शायद ऐसा करने से उसे कुछ जोर भी मिल रहा हो। कुदाली को पीठ पर बायें हाथों के सहारे लिये, फटी-मैली धोती पहने, चिथड़े-जैसी पगड़ी सिर पर लपेटे, झुर्रियों से भरा मुख, छोटी-छोटी आंखें, जो बुढ़ापे के कारण अन्दर धंस चुकी हैं, वह अपनी टुकुर-टुकुर चाल से चला जा रहा था। वह किसी ओर नहीं देखता। हम दोनों थोड़ी दूर तक उसके साथ-साथ चले। अपनी समाधि में स्थिर किसी योगी की तरह वह अपने ध्यान में चलना रहा। अब सवाल यह था कि उसे क्या कहकर सम्बोधन करें ? बूढ़ा कहना अच्छा नहीं लगता। कुछ सूझा नहीं उसे सम्बोधन करने को। अन्त में ऐसे ही बात शुरू कर दी, "कहिए, कहां जा रहे हैं ?"

वह हमारी तरफ बिना देखे ही बोला, "काम पर जा रहा हूं।"

"रहते कहां हैं ?"

"बालीगंज स्टेशन के पास !"

"काम करने कहां जा रहे हैं ?"

"टालीगंज ट्राम-डिपो की लाइन में।"

मैंने मन में सोचा, टालीगंज और बालीगंज स्टेशन का तो काफी फासला है। कितनी देर में पहुंचेगा यह वहां और उसकी यह अवस्था इतनी दूर चलने लायक है ? पर मित्र ने दूसरा प्रश्न कर डाला, उनसे, जिससे मेरा ध्यान भी उस तरफ फिर गया।

"क्या पाते हो काम करने का ?"

"पता नहीं शायद एक रुपया रोज मिलेगा ।"

"तो क्या यह काम अभी करने लगे हो ?"

"हां, बाबूजी, रोज-रोज काम थोड़े ही मिलता है ।"

मित्र ने दूसरा प्रश्न किया, "तुम्हारी उमर कितनी है ?"

"बाबूजी, मालूम नहीं ।"

मैंने कहा, "सत्तर के ऊपर होगी ।"

"हम तो जानत नाहीं ।"

मित्र ने कहा, "कुड़ी जानते हो ।"

"जानत हैं ।"

"दो तीन कुड़ी होगी क्या ?"

"इससे तो ज्यादा होत ।"

मैंने कहा, "देश कहां है ?"

"समझता नहीं, बाबू !"

मित्र ने पूछा, "कभी मुलक गये थे ?"

"हां, गया था । पिछले वर्ष गया था ।"

"वहां तुम्हारे कौन हैं ?"

"सबन हैं ।"

मित्र ने कहा, "लड़के हैं तो, स्त्री है तो, तुम इस उमर में यहां क्यों रहते हो ?"

"क्या करूं, पेट तो भरना ही पड़ेगा ।"

"क्या वे लोग तुम्हें खाना नहीं देते ?"

"बाबू खेती-बारी है नहीं उनकी । फिर कौन किसीको देता है ! देनेवाला सबको देता है ।"

उसके यह कहने में कि कौन किसीको देता है, उसकी सारी व्यथा व्यक्त हो रही थी । यह उमर, यह शरीर और इतनी मेहनत क्या कोई सहज ही और यों ही कर सकता है ? पर वह अपने घर के लोगों से, समाज-व्यवस्था से त्रस्त है। उसे बाध्य होना पड़ता है इतनी दूर चलकर ट्राम डिपो में कुदाली चलाने पर । थकावट के कारण ज़रा सुस्ताने की कोशिश करता है, तो सरदार की झड़कियां खानी पड़ती हैं और कभी मजदूरी काट लेने का भय दिखाया जाता है ।

उसने कहा, "न बाबू, पेट तो भरना ही पड़ेगा । इसलिए इस गढ़े को भरने के लिए मान-अपमान, दुःख-सुख सभी कुछ सहना पड़ता है ।" उससे अलग होते समय मित्र ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? उसने कहा, "बटोही ।" मैंने कहा, "सचमुच यह बटोही ही है ।" मैं घर आ गया और नाश्ता करने लगा, पर मस्तिष्क में उस बूढ़े की वह शक्ल घूम रही थी, उसकी व्यथाभरी आवाज कानों में गूंज

रही थी। मैं सोचने लगा, यह आदमी क्या हमारे देश की हालत का प्रतीक नहीं? जिस देश में स्त्रियां पेट के लिए तन बेचें, बच्चे बिलख-बिलखकर मर जायं और इस तरह का आदमी कुदाली चलाने जैसा कठोर धन्धा करने पर बाध्य हो, वहां मानवता का विकास कैसे हो सकता है!

५ : दो दृश्य

कल रात को यहां खूब वर्षा हुई। गंगा के किनारे की जमीन कीचड़ से भर गई, इसीलिए मुझे अपने प्रातःकाल के वायु-सेवन के लिए सदर रास्ते पर चलना पड़ा। नाना प्रकार के विचारों में निमग्न मैं करीब दो मील निकल गया। मै अपने पथ पर अकेला था और मेरी चाल तेज थी। एकाएक एक आवाज आयी और मेरे पैर रुक गये। सामने एक आदमी खड़ा था और उसके सामने भीगे हुए कंबल का एक पुलन्दा। वह आदमी उस पुलिन्दे की तरफ मुंह किये कुछ बातें कर रहा था। एक निर्जीव चीज से बातचीत! मैं उस आदमी के नजदीक गया और मैने जो कुछ देखा, उसकी याद आज तक मेरे रोम रोम को कंपा रही है। मैं उसे भूलने की कोशिश कर रहा हूं, किन्तु उसकी तस्वीर इतनी ताकतवर है कि मेरी दुर्बल आखो का पानी बार-बार कोशिश करने पर भी उसे मिटा नहीं पाता।

मैंने देखा, उस कम्बल के पुलिन्दे में जान थी। वह कंबल का पुलिन्दा एक मनुष्य था, मेरे ही समान चेतनामय। वह गरीब था। किसी ने दया कर वह सूती कम्बल दे दिया था। वही उसका एकमात्र कपड़ा था। दुर्भाग्य से उसमें आग लग गई थी! उस कम्बल में कई छेद हो गये थे और उन छेदों में से आग की लपटें उसके शरीर को भी जला गई थीं। जलने पर भी वह उसी कम्बल को लपेटे शरीर के दर्द, वर्षा की बौछारे और रात की ठंड को सहता रहा। वह एक वृक्ष के नीचे पड़ा था। शायद वह वृक्ष को अपनी रक्षा का साधन समझे हुए था। उसका चेहरा देखने से मालूम होता था कि वह कराहने की कोशिश कर रहा है, किन्तु उसके मुंह से आवाज नहीं निकल पाती थी। मैंने उसके पास खड़े हुए आदमी से उसके जलने का कारण पूछा तो मालूम हुआ कि उस अभागे ने कपड़े की कमी के कारण आग में अपनी सर्दी मिटाने की कोशिश की थी और इसीलिए वह जल गया है। अस्पताल में उसके लिए जगह नहीं थी। दुनिया मे उसका कोई सगा-सम्बन्धी नहीं था। मैंने जब जले हुए घावों को दिखाने के लिए

कहा, तो उस आदमी ने जरा-सा कम्बल सरका दिया, और मैंने देखा मनुष्य के शरीर का वह भयंकर रूप, जिसकी याद ने मेरे प्राणों में एक घाव बना दिया है। उस आदमी ने बताया था कि उस अभागे का कोई नहीं है। मुझे एकाएक ईश्वर की याद आ गई; क्योंकि जब दूसरा नहीं होता, तब भगवान की याद आ ही जाती है। मेरे मन ने सवाल किया, "क्या जगत-पिता कहाने वाला परमात्मा भी उस अभागे का कोई नहीं है ? क्या उस ईश्वर की सृष्टि में ऐसे भी जीव हैं, जो वस्त्रहीन, अन्नहीन, भूखे-प्यासे, बीमार और दर्द से कातर होकर यह महसूस करते हैं कि उनका कोई नहीं है ? और वह भी उस विशाल सम्पति के केन्द्र कलकत्ता से केवल ३५ मील की दूरी पर ! मन की एक अजीब हालत हो गई। उस ग्रामीण भाई से सलाह की कि उसके लिए क्या किया जा सकता है। वह इस देहात का एक भयंकर दृश्य था। मैं आगे बढ़ा। अचानक मेरी नजर पड़ी दो उछलते-कूदते बछड़ों पर। उन्हें संसार में आये पन्द्रह-बीस ही दिन हुए थे। रंग बिल्कुल सफेद था। मस्तक कुछ-कुछ लाल और पीला था। चारों तरफ वे दौड़ रहे थे। वे खुद बहुत सुन्दर थे। संसार भी उन्हें बहुत सुन्दर मालूम होता था, इसीलिए वे खुश भी बहुत थे। वे भी राहगीरों को आकर्षित करते थे। उस अभागे गरीब ने भी आकर्षित किया था। पर दोनों के संसार में कितना अंतर था !

मन की बात

: कांग्रेस अधिवेशन
: जेल जीवन
: जयपुर राय प्रजामण्डल
: नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

कांग्रेस अधिवेशन

१. लाहौर कांग्रेस अधिवेशन

२६ दिसम्बर १९२९ : आज लाहौर रवाना होना है। ढ़ाई टिकट सेकेन्ड क्लास के रिज़र्व करा लिये। यह बात क्या ठीक है कि इतने रुपये ज़रा से आराम के लिए ख़र्च हो जाएं। इस काम में गलती है। एक तो रुपया कमाते नहीं, दूसरे यही रुपया पब्लिक काम में लग सकता था। कुछ विचार से काम लेना चाहिए, पर अभी अपने में बहुत कमजोरी है।

२९ दिसम्बर : तीन बजे कांग्रेस की बैठक शुरू होने वाली थी, एक बजे एक्ज़ीविशन में गये। कांग्रेस की टिकटें खरीदीं। साढ़े बयालीस रुपये लगे। पाँच बजे कार्यवाही शुरू हुई। जालन्धर कन्या विद्यालय की लड़कियों ने वन्दे मातरम् गाया। इस के बाद एक और देशभक्ति का गीत गाया गया। उस के बाद पंजाबी भाषा में देशभक्त कैसे होते है, इसका एक गीत गाया गया। गीत बहुत सुन्दर, बहुत जोशीला था। सब लोगों ने बहुत पसन्द किया। रिसेप्शन कमेटी के प्रधान डॉक्टर किचलू (सैफ़ुद्दीन) वक्तृता देने के लिए खड़े हुए। उन्होंने अँगरेज़ी में बोलना शुरू किया। लोगों ने हिन्दी या उर्दू के लिए हल्ला मचाया। बड़ी मुश्किल से बहुत देर के बाद क्षमा माँगकर अपनी मुसीबत बताकर डॉक्टर साहब बोल पाये। उन का भाषण बहुत लम्बा था। अपन चले आये। बाद में जवाहरलालजी का भाषण हिन्दी में हुआ, वह बहुत अच्छा हुआ, सब विषयो पर अच्छा प्रकाश डाला गया। जवाहरलालजी का भाषण नवयुवकों को पसन्द आया। कांग्रेस से लौटते समय शन्नोदेवी से मुलाकात हुई। उनके साथ जालन्धर कन्या महाविद्यालय के संस्थापक और संचालक लाला देवराजजी से मिले। बड़े सज्जन, मिलनसार और सीधे हैं। लड़कियों से उन का अत्यन्त प्रेम है। पन्ना को गोद में बैठा लिया। उनसे पन्ना को महाविद्यालय में भरती कराने के सम्बन्ध में बातचीत हुई।

३० दिसमबर : बैरिस्स्टर फकीरचन्दजी के यहाँ भोजन करने गये। वह अग्रवाल आश्रम के मन्त्री और लाहौर के प्रधान वकील हैं, गवर्नमेण्ट एडवोकेट भी हैं। लाहौर की चीजें देखने गये। जहाँगीर का मकबरा देखा, क़िला देखा। आज कांग्रेस तो थी नहीं इसलिए इधर-उधर भटकते रहे।

३१ दिसम्बर : एक बजे कांग्रेस में गये । रास्ते में बहुत भीड़ होने के कारण कुछ देर से पहुंचे । महात्माजी का प्रस्ताव था कि वाइसराय को बम मारने वाले की निन्दा की जाय और वायसराय को सकुशल बचने के लिए कांग्रेस की ओर से बधाई दी जाये । इस प्रस्ताव का बहुत विरोध हुआ । वोट लेने पर महात्माजी का प्रस्ताव मंजूर हुआ । अपने भी यह नहीं जँचता था कि वाइसराय को बधाई दी जाये । महात्माजी के प्रस्ताव का चाहे जितना विरोध हो, पर होता वही है जो महात्माजी चाहते हैं । दूसरा प्रस्ताव भी महात्माजी का ही था, **जो कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव कहा जा सकता है कि कांग्रेस का ध्येय पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है** । इस प्रस्ताव में कई क्लाज़ थे, उस में कई संशोधन थे । एक संशोधन मालवीय जी का, एक सुभाषबाबू का और एक डॉक्टर आलम का था । मालवीयजी ने संशोधन पेश करते हुए बहुत सुन्दर भाषण दिया । डॉक्टर आलम भी अच्छा बोले । मालवीयजी का समाधान था, अभी अप्रैल तक और ठहर जायें, अप्रैल में कांग्रेस की विशेष सभा बुलायी जाये । इस पर दस-बीस वोट आ पाये ।

१ जनवरी १९३० : अमृतसर गये । जलियाँवाला बाग़ देखा, अँगरेजों का राज्य नहीं रहेगा, तब भी यह उनके अत्याचार की यादगार बना रहेगा । एक नवयुवक इस जगह को देखकर क्या करे, यह स्पष्ट है । जब तक इनका राज्य रहेगा तब तक न मालूम और कितने जलियाँवाला होंगे ।

२ : कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग : इलाहाबाद

३० जनवरी : १९३१ तुलसीरामजी मिले, बोले कि इलाहाबाद चलना चाहिए । अपनी इच्छा जाने की नहीं थी । जाकर हम क्या करेंगे, तुलसीरामजी को कहा पर उनकी इच्छा जाने की थी, तब कहा, सेठजी (जमनालाल बजाज) को पत्र दिया है उनकी बुलाहट आये बग़ैर जाने की इच्छा मेरी नहीं है । दमदम जेल में बसन्तलालजी से मिलने की इच्छा थी । तुलसीरामजी ने कहा, मैं भी चलूंगा तो उनके साथ दमदम गये । बहुत देर खड़े रहने के बाद मुलाकात हुई । बसन्तलालजी मिले, प्रसन्न थे । शाम को साढ़े सात बजे सेठजी का तार मिला, आ सकते हो । पंजाब मेल से जाना तय हुआ । इलाहाबाद रवाना हुए । मन पर बोझ मालूम हो रहा था केवल सबसे मिलना और तमाशा देखना तो अपना उद्देश्य नहीं होना चाहिए ।

३१ जनवरी : तुलसीरामजी से खुल्लमखुल्ला कुछ बातें हुईं । उनको डायरी के कई पैरे पढ़कर सुनाये, जिसका उनके ऊपर प्रभाव पड़ा । उन्होने कहा मेरे

मन में मान की इच्छा है अभी मेरे मन में यह भाव जाग्रत नहीं हुआ है कि मैं मान छोड़ दूं। अपने कहा, भाई इस पाप से मैं भी बचा हुआ थोड़े ही हूँ पर भगवान् से प्रार्थना तो करनी चाहिए कि हमें इससे बचाओ। पहले आनन्द भवन गये। पता लगा, जमनालालजी व घनश्यामदासजी मालवीयजी के यहाँ ठहरे हैं। वहाँ गये, सामने ही सेठजी बैठे रामकृष्ण डालमिया से बात कर रहे थे। कमल (नयन बजाज) के साथ आनन्द भवन गये, महात्माजी आदि सब नेता प्रायः वहीं ठहरे हैं। आनन्द भवन का तो क्या कहना है। एक विशाल घेरे के अन्दर दो तल्ला (मंज़िला) बिल्डिंग है। मारबल और अप-टू-डेट ढंग से सजा हुआ मकान है। नीचे के तल्ले में मोतीलालजी है, उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ देर पर बुलेटिन निकलती रहती है; महात्माजी अपने कमरे में कुछ लिख रहे थे। सब लोग अपने-अपने काम में लगे हुए थे। कुछ ही देर बाद वर्किंग कमेटी की बैठक थी। मोतीलालजी पहले जिस स्थान में रहते थे वह भी इस घेरे के अन्दर है। वह स्थान अब कांग्रेस को दे दिया गया। उसका नाम आनन्द भवन से स्वराज्य भवन हो गया है। उसी में वर्किंग कमेटी की मीटिंग थी जिस में महात्माजी, जवाहरलालजी, मालवीयजी, डॉक्टर अंसारी, सेनगुप्ता, राजगोपालाचार्य, जमनालालजी, जयरामदास दौलतराम आदि इकट्ठे हुए थे। और भी कई लोग बाहर के आ गये थे, उनमें से कई को दर्शक रूप में लिया गया था। श्री घनश्यामदासजी भी गये थे। जब तक वर्किंग कमेटी की मीटिंग थी तब तक तो अपना समय मुफ़्त गया ही, और भी समय यों ही गया। पहले भी अपने मन में विशेष उत्साह नहीं था। बहुत आदमी मिले, कुछ न कुछ अनुभव तो मिलेगा ही। आज का समय अभी तक तो कोई ऐसे काम में नहीं लगा जिसका कुछ मूल्य हो। जमनालालजी से बातें हुईं, घनश्यामदासजी भी आ गये वे भी बातों में भाग लेने लगे। अपने केवल जमनालालजी से ही बात करना चाहते थे, पर घनश्यामदासजी से भी कुछ छिपाने की बात नहीं थी। घनश्यामदासजी भी बहुत सज्जन तथा गुणशील पुरुष हैं। अपने ऊपर उनका प्रभाव अच्छा पड़ता है। इतने धनी होते हुए भी देश के कामों मे साथ हैं और बुद्धिमान तो वे खूब ही है। जमनालालजी ने अकेले में पूछा, इस आन्दोलन में तुमने कितने रुपये खर्च कर दिए ? अपने कहा, साढ़े तीन हज़ार। इसमें एक प्रकार थोड़ी झूठ ही बोली गयी। इतनी कमजोरी है कि समय पर वह अटका लेती है। अपनी आर्थिक-स्थिति के सम्बन्ध मे बातें हुईं। अपने इन दो वर्षों में जब से व्यापार का काम छोड़ा है तब से जो कुछ आया है उससे कम नहीं लगाया। अपने कामों से उनको प्रसन्नता है तथा वे प्रेम करते हैं, ऐसा मालूम होता था। घनश्याम दास जी प्रेम करते है। कलकत्ते के मित्रों के सम्बन्ध में अपने कोई बात करना नहीं चाहते थे, पर तब भी कुछ बात चल गयी और घनश्यामदासजी ने कहा कि पदमराजी एक तरफ और उनके साथ कुछ मित्र हैं,

महाबीर प्रसादजी, सीताराम एक तरफ हैं। यह अपनी-अपनी चलाना चाहते हैं। अपने इसका विरोध किया। मालवीय जी से भी जमनालालजी ने परिचय कराया और प्रशंसा के शब्द कहे। मालवीयजी के यहां ठहरना और उनके घर का भोजन करना यह सौभाग्य की ही बात कहनी चाहिए। भोजन बहुत ही सादा था, बेचारे बड़े ही गरीबी से रहते हैं। सचमुच एक ब्राह्मण का घर था, काफ़ी सादगी थी, स्त्रियां-बच्चे भी बहुत सादे ढंग से रहते थे। भोजन में शाक में मसाले आदि नहीं के बराबर थे, बड़े मीठे मालूम होते थे। एक बात और लिखने की है। वह यह कि मालवीयजी महान हैं। चालीस वर्ष से देश-सेवा कर रहे हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय उनके यश की उज्ज्वल पताका है। और भी बहुत-से काम उन्होंने किये हैं। बेचारे इतनी वृद्धावस्था में भी जेल हो आये पर तब भी यह कहना पड़ता है कि उनकी कोई विशेष पूछ या कदर नहीं थी, वैसे तो देश के बड़े से बड़े लोग जमा हुए थे और देश का सबसे बड़ा प्रश्न सामने था, पर बात असली तो उस एक ही व्यक्ति के हाथ थी। सब कोई उस मुट्ठी-भर हाड़वाले चरखा और तकली कातने वाले के मुख की ओर देख रहे थे कि वह क्या कहता है। जो कुछ वह कहेगा वही सब स्वीकार कर लेंगे। यह बड़े आश्चर्य की बात देखी, इतने बड़े-बड़े मस्तिष्कों पर भी कब्ज़ा उसीका है। घनश्यामदासजी से बात हुई तब उन्होंने कहा, चाबी बापू के पास है। समय कोई विशेष काम में नहीं लगा। महात्माजी का दर्शन हो गया पर मुख्य काम तो काम करने से है।

१ फ़रवरी १९३१ : आनन्द भवन गये। जमनालालजी ने पूज्य बापूजी से परिचय कराया और कहा कि यह आप से कुछ बातें करना चाहते हैं। बापूजी ने कहा कि मैं पहले भी मिला हूँ पर कहाँ मिला, यह याद नहीं है। वे बड़े हैं, उनको बहुत काम हैं, क्या-क्या याद रहेगा पर अपने को खूब याद है कि जमनालालजी ने आज के दो वर्ष पहले बापूजी से परिचय कराया था। अपने महावीर प्रसाद जी के साथ खादी भण्डार उनके कहने पर ही गये थे। बापूजी धूप में बैठे रहते हैं और वहीं पर अपना लिखना, पढ़ना, आने वालों से बात करते है। इतनी तेज धूप थी कि लोग सहन नहीं कर सकते पर बापूजी की बातें सुनने के लालच में सह रहे थे। कई लोग बात करने वाले थे तथा घनश्यामदासजी भी बात कर रहे थे इसलिए अपने तथा साथियों को बहुत देर बैठना पड़ा। खैर कड़ी तपश्चर्या के बाद नम्बर आया। पहली बात अपने उनको सेनगुप्त के सम्बन्ध में कही कि सेनगुप्त कलकत्ता जाकर कौंसिल के साथ काम करेंगे तो वहाँ का काम बढ़ जाएगा, और विरोध में गये तो काम में तकलीफें पैदा होंगी। उन्होंने कहा यह ठीक है। दूसरी बात डिफेंस के सम्बन्ध में कही तो उन्होंने कहा, काम करने वालों को समय और परिस्थिति देखकर काम करना चाहिए। मेरे सिद्धान्तों के अक्षरों का पालन न करके, उनकी आत्मा का पालन करना चाहिए। कोर्ट

में गवाही या सम्मन मिले .i जाना चाहिए या नहीं – यह पूछने पर उन्होंने कहा, जाना तो चाहिए पर भाग लेना नहीं चाहिए । बंगाल में जो चार संस्थाएँ ग़ैर-कानुनी हुई हैं उनमे एक संस्था के नाम से काम करना चाहिए या अलग-अलग नाम से । तो उन्होंने कहा, एक के नाम से अच्छा है । घनश्यामदासजी पास ही बैठे थे, उन्होंने कहा कि यह डिटेल्स की बातें है, अपने लोग परस्पर मिल बैठकर ठीक कर लेंगे ।

वहां से विजयलक्ष्मी पण्डित के घर सेनगुप्त से मिलने गये । उनसे कई देर तक बातें हुई । बहुत प्रेम और सत्कार से बातें की । सुभाषबाबू की अपेक्षा यह होशियार ज्यादा है । अपने उनसे कहा, आप कौंसिल के साथ काम करेंगे तो काम ज्यादा और अच्छा होगा, तो उन्होंने कहा, मैं तो कौसिल के साथ ही करूँगा। काम तो करना ही है । सामने विजयलक्ष्मी तथा उसके पति आर.एस. पण्डित जो अभी ही यानी आज ही जेल से छूटकर आये है और कृष्णा नेहरू आदि बैठे बातें कर रहे थे । इन लोगों के यहाँ खर्च तो बहुत अधिक है, ठाटबाट भी बहुत है । बेचारे पुराना स्वभाव कितना छोड़े, जितना छोड़ दिया वह भी कम नहीं है। स्वरूप रानी से भेंट हुई थी । पण्डितजी की बीमारी के कारण घर भर दु:खी हो रहा है । सब के चेहरे उड़े हुए थे । जवाहरलालजी, कमलाजी तथा स्वरूपरानी बहुत कमजोर तथा सुस्त थ । कृष्णा अभी कम उमर की है इसलिए विशेष सुस्त नहीं मालूम होती थी ।

चार बजे पुरुषोत्तम पार्क मे गाधीजी का व्याख्यान था । भोर में ही करीब दो हज़ार किसान तथा दूसरे लोग बाहर से आ गये थे । आठ सौ आदमी तो रेल का टिकट लिये बग़ैर ही आ गये । स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिये गये । जवाहरलालजी ने जाकर उन को छुडाया। किसान राष्ट्रीय झण्डा लिये मैदान में आ डटे थे । कुछ ही देर में पार्क भर गया। सड़कें, वृक्ष तथा आसपास के मकान सब मनुष्यमय दिखाई देने लगे । महिलाएँ इस युद्ध की प्राण ही हैं । वे भी अपने सेनानायक, नीचे को ऊँचा उठाने वाले तथा इस युद्ध में नारी जाति का आवाहन करने वाले उस महान् पुरुष का दर्शन करने मे किसी से कम नहीं रहने वाली थीं । करीब पाँच हज़ार की संख्या में स्त्रियाँ आयी थी और पुरूष ? कोई कितना बताता था पर पचास हज़ार का अन्दाज़ समझा गया । बहुत ऊँचा मंच बनाया गया था । महात्माजी ने अपनी स्वाभाविक मुस्कान के साथ खड़े होकर सबको दर्शन दिया । शामकुमारी नेहरू ने एक राष्ट्रीय गीत गाया– 'मादरे हिन्द न हो ग़मगीन दिन अच्छे आने वाले हैं ।' महात्माजी ने व्याख्यान आरम्भ किया, पर समय पर लाउडस्पीकर बिगड़ गये । कुछ देर व्याख्यान बन्द कर दिया गया, लाउडस्पीकर ठीक करने में लगे । बीच में एक राष्ट्रीय गान हुआ, पर वह ठीक न हो सका । तब महात्माजी जो कुछ बोलते थे उसको शिवप्रसादजी गुप्त अपनी

ज़ोरदार आवाज़ में लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करते थे पर तब भी कुछ हुआ नहीं। भीड़ ज़्यादा थी, हल्ला बन्द नहीं होता था, शेष में महात्माजी ने बहुत थोड़े में समाप्त कर दिया। महात्माजी ने कहा, हमारे इस युद्ध में स्त्रियों का स्थान ऊँचा है। उन्होंने इस युद्ध में अपने को चार-पाँच इंच ऊँचा उठा लिया है और देश को भी इतना ही ऊँचा उठा दिया है। बच्चों ने भी इस युद्ध में बहुत काम किया है। मैंने जेल में वानर सेना का नाम सुना, तब कुछ समझा नहीं। फिर मालूम हुआ कि हमारे वानरों ने बहुत काम किया है। मैं इन बहनों और वानरों से कहूँगा कि वे अपना काम बराबर ज़ारी रखें। मैं कहता आया हूँ कि सब कोई चरखा काते, खादी पहने। हल्ला इतना है कि इसमें विशेष कुछ कहना नहीं है। मैं ईश्वर से चाहता हूँ कि आप का कल्याण करे।

मालवीयजी के घर गये। जमनालालजी रवाना हो चुके थे। भोजन करके मालवीयजी को प्रणाम करने गये। उन्होंने कहा, सफलता निश्चित है। अपने को सम्बोधन करके बोले, खूब काम करो। सरल स्वभाव के ब्राह्मण हैं। उन के अन्दर ब्राह्मणत्व है।

३ : कराची कांग्रेस अधिवेशन

२३ मार्च १९३१ : सुबह कलकत्ता पहुँचे। कांग्रेस में जाने वाले तथा चारुबाबू आ गये। टिकटों का प्रबन्ध किया। कांग्रेस में जाने वाले रुपया माँगते हैं किस को दें और किस को न दें। अपने इसको खराब समझते हुए भी सहायता करनी पड़ी। करीब ढाई सौ रुपया देना ही होगा, अपना खर्च अलाहिदा। अपना जिस ढंग से खर्च हो रहा है उसमें क्या होगा; भगवान् ही जाने ऐसी, बात हो गयी है कि लोग अपने पास बहुत रुपया समझते हैं। भगवान् सब ठीक करेंगे। भगत- सिंह के लिए एक सभा थी। सुभाषबाबू सभापति थे, वहां गये। सभा समाप्त होने पर सुभाषबाबू के घर गये। सुभाषबाबू ने कहा, महात्माजी से मैं मिला, मेरा उनका सैद्धान्तिक मतभेद नहीं रहा है। बहुत बातें नहीं हो सकीं क्योंकि वह कराची के लिए रवाना हो रहे थे। पर अपने को तथा भाई बसन्तलालजी को सन्तोष था कि अपने सुभाषबाबू को महात्माजी के पास भेजने का उद्योग किया था। उसका फल ईश्वर ने अच्छा ही किया।

२४ मार्च : कराची के लिए विदा हुए। एक बोगी हावड़े से कराची तक की रिज़र्व करायी गयी थी। प्रायः एक सौ आदमी थे, तीस-चालीस स्त्रियाँ थीं,

साथ में खाने-पीने का समान बहुत अधिक था और भी सामान बहुत ज़्यादा था। अपने लोगों में यह बात है कि सामान अधिक लेते हैं। आज भोर में तुलसीरामजी आये थे। जब तक वे बाहर रहेंगे उतने दिन तक अपनी स्त्री को अपने घर पर छोड़ना चाहते थे। भगवानदेवी ने बहुत प्रेम से रखा। तुलसीरामजी ने ही खबर दी कि सरदार भगत सिंह को फाँसी हो गयी और बड़ेबाज़ार में हड़ताल हो रही है। फाँसी का समाचार तो बहुत ही दुःखद था खासकर इस समय फांसी देना सरकार के लिए अव्वल दर्जे की मूर्खता है। महात्माजी के लिए कठिनाई पैदा करने वाली है और इस बात का द्योतक है कि सरकार का हृदय अभी नहीं पलटा है। भगत सिंह तथा और भाइयों का बलिदान देश के लिए हुआ है, उन का उद्देश्य महान् था। वे देश के लिए जिये और देश के लिए मरे। उनके खून से इस समय सरकार को अपने हाथ रंगने नहीं चाहिए थे पर "जाको विधि दारुण दुख देहीं, ताकी मति पहिले हरि लेहीं"। एक तरफ़ वह राउण्ड टेबल कान्फ्रेंस करना चाहती है और दूसरी तरफ़ इस तरह का बरताव करती है। जनता में उत्तेजना आयेगी, नवजवानों के दिल भड़केंगे और महात्माजी ने ट्रूस की है उसका विरोध करने वालों की शक्ति बढ़ेगी। पर चाहे जो हो, अपना तो यह विश्वास है जहां सत्य है, जहाँ पवित्र प्रेम है वहीं विजय है और यह दोनों बातें महात्माजी के रोम-रोम में है। यद्यपि अपने को सरदार की फांसी का ख्याल किसी से कम नहीं और यह भी कि अपने ट्रूस को पसन्द नहीं करते तब भी महात्माजी महान् है। उनकी महानता को अपने समझ नहीं सकते। इस में विवेक जो कुछ कहे अभी अपने को उस पर ही चलना है उसे ही मानना है। भगत सिंह की फांसी के लिए उपवास किया।

२५ मार्च : कानपुर मे भगत सिह दिवस की हड़ताल को लेकर हिन्दू-मुसलिम झगड़ा हो गया। कई आदमी मारे गये। मन्दिर और मसजिद भी नष्ट कर दिये गये। यह सब बातें इस देश में कब बन्द होगी, इसको प्रभु ही जानता है। परन्तु ऐसा पागलपन तो लज्जाजनक है। दोनों जातियों मे काफ़ी पागलों की संख्या है और समय-समय पर वे ऐसा करते हैं। पाँच बजे दिल्ली पहुँचे। स्टेशन पर परमेश्वरप्रसादजी तथा केदारनाथजी गोयनका आये थे।

२६ मार्च : क़रीब चार बजे गाड़ी....पहुँची। वहाँ पर लाहौर से कराची मेल आयी जिस मे सरदार भगत सिंह के पिता तथा दूसरे डेलीगेट भी थे। शन्नोदेवी भी थी और फ्रंटियर के नेता या गांधी अब्दुल गफ़्फ़ार खाँ भी अपनी लालकुर्तियों वाले जवानों के साथ थे। इन सब लोगों के चेहरे पर काफ़ी उत्साह था। अपने ने सबसे पहले सरदार भगत सिंह के पिता के दर्शन किये। उनका जवान बेटा चला गया, जो सारे देश में रोशन हो रहा था, पर उनके चेहरे पर प्रसन्नता थी। उनको देखकर आश्चर्य होता था और यह भी मालूम होता था कि वास्तव में वह

भगतसिंह के पिता है । ऐसे पिता के ही भगतसिह जैसे पुत्र उत्पन्न होते है । इतने में बहन शन्नोदेवी की आंख अपने ऊपर पड़ी और उन्होने पुकारा । जाते ही उन्होंने दोनों हाथ पकड़ लिए । अपने सोच रहे थे लाहौर के रास्ते जाते तो शन्नोदेवी से मिलना हो जाता– 'जो इच्छा कुछ मन के माहीं, राम कृपा से दुर्लभ नाहीं ।' अब्दुल गफ़्फ़ार खाँ को देखकर तो और भी प्रसन्नता हुई । अपने मन में यह था कि फ्रंटियर का निवासी और मुसलमान होकर अहिंसा को सिद्धान्त रूप मे क्या मानता होगा । अभी अपने नहीं जानते वह कैसा और कितना अहिसावादी है, पर यह नो जरूर कहा जा सकता है कि उसके चेहरे से शान्ति झलक रही थी और वह बहुत अच्छा आदमी मालूम हो रहा था । कराची मेल चली गयी और एक स्पेशल गाड़ी में अपनी गाड़ी जुड़ गयी । रास्ते मे कल भी और आज भी विमल प्रनिभा से बहुत वादविवाद हुआ । वह भगत सिह की फॉसी से बहुन नाराज़ है और महात्माजी पर बिगड़ी हुई है । वह चाहनी है कि अब यह जो क्षणिक सन्धि हुई है उसको तोड़ देना चाहिए । यदि महात्माजी नहीं नोड़ना चाहते है तो महात्माजी का विरोध करना चाहिए । अपने को वह बहुत समझानी है । पर अपने तो निश्चय कर रखा है कि महात्माजी करे वह ठीक है । बड़ाबाजार की बहने नथा और भी लोग महात्माजी की तरफ है । खास कर स्त्रिया भी उस पक्ष मे नहीं है । उसने दो-एक शब्द बुरे भी व्यवहार कर दिये इसलिए यशोदा उससे लड़ गयी । अपने जाकर यशोदादेवी को शान्त किया । यशोदा का स्वभाव गरम ज्यादा है ।

२८ मार्च (कराची) महात्माजी के कैम्प मे गये । मालूम हुआ कि सुभाषबाबू ने एक स्टेटमेट दिया है । इस को लेकर दूसरे दल के लोग महात्माजी नथा महात्माजी के दल को सुभाषबाबू के विरोध मे समझा रहे है । अपने तो सुभाषबाबू को महात्मा जी की तरफ लाने की कोशिश शुरू से करने थे । इस काम मे बाधा पड़ती देख सोचा, क्या करना चाहिए । घनश्यामदासजी ने कहा, अपने लोगो को सुभाषबाबू के पास चलना चाहिए और उनको समझाना चाहिए । उनके साथ सुभाष बाबू के पास गये, वह रास्ते मे ही मिल गये । उनको सब बाते कहीं और महात्माजी से उनकी उसी समय मुलाकात हुई । अपने सब लोग पास मे ही बैठे रहे । बातचीत अगरेजी मे होनी है और उसके कारण बहुत सी कठिनाइयाँ मालूम होती है, पर इस समय उसपर विचार करना वृथा है । सुभाषबाबू और महात्माजी की बातचीत सन्तोषजनक थी । सुभाषबाबू महात्माजी के पक्ष मे आ गये इसलिए अपने को सन्तोष था । शाम को छ बजे पण्डाल मे महात्माजी की प्रार्थना थी । पचास हज़ार आदमी इकट्ठे हो गये थे । बहुत शान्त प्रार्थना हुई और वहाँ से नवजवान भारत सभा की मीटिंग मे गये, बड़ा हो-हल्ला था । मालवीय जी कुछ बोलना चाहते थे । सभापति सुभाषबाबू ने उन्हे बोलने के लिए आज्ञा दी पर नौजवान कब मानने

वाले थे । उन्होने हल्ला मचाया और यहां तक कहा कि डाउन-डाउन मालवीयजी। पर वे वैसे ही अटल रहे जैसे पहाड़ों पर बहुतसी वर्षा बरसती है और वे अटल रहते हैं । सुभाषबाबू ने लोगों को समझाया तो बहुत से लोग मान गये, पर एक दल जो अपने को सोशलिस्ट कहता था वह नहीं माना और हो-हल्ला मचाता रहा। शन्नोदेवी उनके हल्ले और उछलकूद के बीच में बढ़ी (घुसी) और उनको समझाया। उसकी साड़ी उतर गयी, पर वे भले आदमी किसी की भी नहीं सुनते थे । आखिरकार सुभाषबाबू ने सभा पोस्टपोन कर दी । मालवीयजी को बहनों ने घेर लिया और उनको बाहर निकाला । ऐसा मालूम होता था कि शायद यह पागल लोग मालवीयजी पर हाथ न चला दें । अपने शन्नोदेवी से कहा तो उन्होंने कहा, बेफ़िक्र रहिए । वहाँ से सुभाषबाबू के पास गये ।

सुभाषबाबू ने आज सब्जेक्ट कमेटी में स्टेटमेंट कर दिया था कि यद्यपि सन्धि से हमें बिल्कुल सन्तोष नहीं है और हमारा यह भी विश्वास है कि राउंड टेबल कान्फ्रेंस में कुछ होने वाला नहीं है पर इस समय हमारे में मतभेद होना ठीक नहीं और महात्माजी हमारा नेतृत्व कर रहे हैं । हमें उनको बल देना चाहिए । हमारा विश्वास है कि उनके नेतृत्व में हमें पूर्ण सफलता मिलेगी । इस वक्तव्य से लोगों के अन्दर आश्चर्य समा गया था, खासकर सेनगुप्त की पार्टी तो निराश हो गई थी । ये लोग दिखाना चाहने थे कि बंगाल में सब काम सुभाष ही खराब कर रहा है, पर उनका सोचा हुआ सब गड़बड़ हो गया । सुभाषबाबू के पास अपने सब मित्रों के साथ गये थे, बहुत देर तक बातें होती रहीं । सुभाषबाबू से जब बात होती है तब ही वे बहुत खुलकर बात करते हैं।

२९ मार्च : कांग्रेस पण्डाल गये । बंगाल के डेलीगेटों से मिले । जमनालालजी मिले, पर बहुत बात न हो सकी । उन्होंने कहा, यदि तुम दिल्ली चलो वहाँ शायद ठीक से बात हो सकेगी । शाम छह बजे से कांग्रेस की पहली बैठक थी, करीब साढ़े पाँच बजे ही पण्डाल में गये । पण्डाल अच्छा और सुन्दर बना था। अब की बार एक विशेषता थी कि ऊपर से खुला रखा गया था, चाँदनी में बहुत सुहावना मालूम हो रहा था । प्रबन्ध बहुत अच्छा था । कराची के लोग प्रबन्ध में होशियार मालूम होते हैं । इतने थोड़े समय याने क़रीब २४ दिन में पण्डाल तथा हरचन्दराय नगर का सब प्रबन्ध अच्छी तरह कर लिया । कुछ लड़कियों ने राष्ट्रीय गान गाया और भी दो-तीन गान हुए, पर अच्छे नहीं थे, जैसे बंगाल या लाहौर में सुने थे वैसे नहीं । सभापति सरदार वल्लभभाई का भाषण हुआ, कोई विशेषता नहीं थी। ऐसा मालूम होता था कि महात्माजी ने ही लिखा हो, कोई नयी बात या प्रोग्राम नहीं था । और सभापतियों के भाषण के सामने फीका था । गत वर्ष के जवाहरलालजी के भाषण से तुलना की जाये तो बहुत ही अन्तर मालूम होगा । लोगों पर भी कोई विशेष असर नहीं पड़ा । उन्होंने राजनैतिक हत्याओं को भी सामान्य हत्या

२७ दिसम्बर : चार बजे वर्धा पहुँचे । जमनालालजी के यहाँ से पूड़ी, साग आया, बहुत अच्छी तरह खाया । रातभर का रास्ता और रह गया था ।

२८ दिसम्बर : साढ़े छह बजे बम्बई पहुँचे । स्टेशन पर जमनालाल जी का आदमी आ गया और साथ में महात्माजी के स्वागत में जाने के लिए दो पास भी लाया था । सामान वह ले गया ।

अपने सीधे जहाँ महात्माजी के स्वागत का प्रबन्ध था वहाँ पहुँचे । रास्ते में जगह-जगह तथा मोटरों पर 'महात्मा गांधी घणुं जीवो' के बोर्ड लगे हुए थे । अपने को जो सब से अच्छी और उत्साहदायक तथा नयी बात दिखाई दी वह यह थी कि हज़ारों की संख्या में देश-सेविकाएँ केसरिया साड़ी पहने राष्ट्रीय झण्डा लिये क़तार बाँधे अपनी ड्यूटी पर खड़ी थीं, बहुत ही सुन्दर और देश का गौरव-स्वरूप मालूम होती थीं । स्वागत हॉल को भी अच्छी प्रकार सजाया गया था । जिनके पास कार्ड था वे ही भीतर जा सकते थे। दरवाजों पर देश-सेविकाएँ खडी थीं जो पास पंचकर लोगों को भीतर जाने देती थीं। एक ऊँचा मंच था । हल्ला-गुल्ला बिल्कुल नहीं था । क़रीब आठ बजकर चालीस मिनट पर महात्माजी पधारे। वन्दे मातरम्, महात्मा गांधी की जय के नारों से आकाश गूँज उठा । सोमवार होने के कारण महात्माजी मौन थे इसलिए कोई भाषण की व्यवस्था नहीं थी । देश तथा बम्बई की तरफ़ से महात्माजी को बहुत से पुष्पों तथा सूत के हार पहनाये गये, स्वागत किया गया । एक बहन ने एक सुन्दर गान भी गाया जिस का मुख्य अंश था– भले हो जो भले आये मोहन-मोहन गांधी । स्वागत के बाद वल्लभभाई के साथ महात्माजी मोटर में मणिभवन चले गये । पहले जुलूस निकालने और हवाई जहाज़ से पुष्पवर्षा करने की कई तरह की व्यवस्था की गयी थी, लेकिन जवाहरलालजी के पकड़े जाने से वह प्रोग्राम कुछ तो पहले कैंसिल्न कर दिया और कुछ महात्माजी को मालूम हुआ तब उन्होंने बन्द करा दिया । ऐसा भी सुना कि महात्माजी ने जवाहरलाल को देखा नहीं तब उन्होंने पूछा, जवाहरलाल कहाँ है । जमनालालजी के स्थान से राजा गोविन्दलाल पित्ती के यहाँ गये । स्थान बहुत अच्छा है । सारी बातों का प्रबन्ध ठीक है ।

सेवादल का महिला कैम्प देखने गये । क़रीब साठ-सत्तर बहनें सब प्रान्तों से आयी हैं और ट्रेनिंग पा रही हैं । ट्रेनिंग देने वालों में पुरूष हैं । लाहौर की श्रीमती लज्जावती भी थीं । वे कैम्प की इन्चार्ज़ हैं । कलकत्ता से आयीं पाँच-छह बहनों से मिले। सब बहनें कैम्प के जीवन से अनभिज्ञ होने तथा व्यवस्था कुछ कड़ी होने के कारण कुछ घबराई हुई थीं । ऐसा मालूम होता था कि कुछ बहनें समय के पहले चली जायेंगी । बंगीय सेवादल ग़ैरक़ानूनी ठहरा दिया गया जिससे वहाँ के संचालकों को भय है । सरकार का जो ढंग है उससे मालूम होता है कि शायद हिन्दुस्तानी सेवादल को भी ग़ैरकानूनी घोषित कर दे । इसलिए सरदार पटेल कैम्प

में गये और सब बहनों से कहा कि हो सकता है कि तुम सबकी सब यहाँ गिरफ़्तार कर ली जाओ, इसलिए जिन बहनों के अन्दर कुछ कमज़ोरी हो या जो अपने प्रान्त में ही गिरफ़्तार होना चाहती हैं वे पहले ही चली जायें। यह सब बातें सुभद्रा (विद्यालंकार) ने अपने से कहीं और पूछा कि हमें क्या करना चाहिए। अपनी राय तो ऐसी थी कि उनको रहना चाहिए, लेकिन तब भी सत्यदेवजी को लिखकर उनकी राय जानने को कहा।

महात्माजी के यहाँ गये। मणिभवन के बाहर रास्ते में ही बहुत भी़ थी, लोग दर्शन की अभिलाषा में खड़े थे। भीतर तो सब को किस प्रकार जाने दिया जाये। खैर, अपने भीतर गये, बापू के पास जाकर बैठे। बापू वर्किंग कमेटी के मेम्बरों से बात कर रहे थे, वे उनसे विलायत की बात पूछते थे। कल साढ़े आठ बजे बंगाल के लोगों से स्पेशल बात करने का टाइम दिया।

पाँच बजे आज़ाद मैदान में सभा थी। लोग कहते थे वहाँ जाने से क्या फ़ायदा, पत्रों में पढ़ लेना चाहिए, लेकिन अपने को बम्बई की सभा और व्यवस्था देखने की इच्छा थी इसलिए गये। सभा बहुत बड़ी थी, ऊँचा मंच बनाया गया था, लाउड स्पीकर का भी प्रबन्ध किया गया था। देशसेविका तथा स्वयंसेवक अपनी ड्यूटी अच्छी तरह कर रहे थे। भीड़ तो इतनी अधिक थी कि उसको लाखों की भीड़ कह सकते हैं। महिलाओं की संख्या भी पन्द्रह-बीस हज़ार तक हो सकती है। ठीक पाँच बजे महात्माजी मंच पर आये। वल्लभभाई, प्रेसीडेंट पटेल, नारीमन, सुभाषबाबू आदि लोग पास बैठे। वल्लभभाई ने सभापति का आसन ग्रहण किया, थोड़े से शब्दों में महात्माजी का स्वागत किया। फिर क़रीब बीस मिनट महात्माजी ने गम्भीर और आश्वासनपूर्ण भाषण दिया। सब से पहले उन्होंने कहा, मैं हिन्दुस्तान आ गया और बड़े दिन में मुझे लार्ड विलिंगडन की ओर से कुछ भेंट मिलनी चाहिए, इसलिए जवाहरलाल तथा शेरवानी को पकड़कर मुझे यह भेंट दी गयी है। मुझे यहां आने पर ही मालूम हुआ कि जवाहरलाल आदि पकड़े गये हैं। सीमान्त के अब्दुल गफ़्फ़ार के बारे में कहा, मैं उनको जानता हूँ कि वे सत्याग्रही हैं। और जवाहरलाल के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं, मैं और आप सब जानते है। यह सब होते हुए भी मैं चाहता हूँ कि हम चेष्टा करें जिससे हमें बहुत बड़ी परीक्षा देने को न हो। मैं तो सब तदबीर करके देखूंगा और फिर भी नहीं होगा व कांग्रेस मेरी सलाह मानेगी तो मै एक क़दम भी पीछे हटने वाला नहीं हूँ। मैंने विलायत में भी कह दिया है तुम लोगो को भी कहता हूँ कि हमें स्वतंत्रता हासिल करने के लिए दस लाख आदमियों की बलि चढ़ानी पड़ेगी तो भी मै खुशी-खुशी वह चढ़ाने के लिए कह दूँगा। इसलिए मै कहता हूँ कि यदि हमारे भाग्य में लड़ना ही बदा हो तो तुम्हें तैयार रहना चाहिए। गत लड़ाई में लाठी खायी, जेल गये; इस बार गोली खानी होगी। अछूतों के सम्बन्ध में कहा कि उनको मै क्या कहूँ।

मै तो यह मानता हूँ कि जब तक हिन्दू धर्म से यह कलक दूर न हो जाये तब तक तो मै अछूत ही हूँ। आज कई भाइयो को चोट लग गई। इसका तो क्या। जब तक अछूतपन है हमारे कई भाई मार दिये जाये तो इसका प्रायश्चित है। कई काम की बाते उन्होने कहीं लेकिन वे पूरी न तो याद है और न सब की सब लिखी जा सकती है।

जमनालालजी के पास आये। सुबह जब स्वागत की तैयारी हो रही थी तब अम्बेडकर की तरफ वाले या यो कहिए सरकार के बहकाये हुए आदमियो ने गड़बड़ की और वालेटियरो के सिर फोड़ दिये। फिर एक जलूस-सा भी निकाला गया जिसमे बायकाट गान्धी चिल्लाते थे। आज की डायरी मे कई बाते काम की होगी तथा कई काम की बाते छूट गयी होगी। लेकिन आज का दिन एक विशेष दिन है यह जरूर मालूम होता है।

२९ दिसम्बर साढ़े आठ बजे बगाल से आये लोगो की महात्माजी से बात थी। अपने को भी बुलाया गया था– श्री सुभाषबाबू, कृष्णदासजी, सतीन सेन, शैलेन राय, डॉक्टर प्रफुल्ल घोष और अपने इस तरह छह आदमी थे। पहले कृष्णदासजी ने बगाल की सारी स्थिति बताई फिर सतीन सेन ने कई बाते कहीं फिर प्रफुल्ल बाबू ने कहीं। इतने मे महात्माजी ने कहा कि मुझे बीस मिनट की छुट्टी दीजिए और वे बीस मिनट के लिए सो गए। अपने लोग सब अलाहिदा होकर बात करने लगे तो सुभाषबाबू बहुत नाराज होते हुए बोले, "कृष्णदासजी! आप लोगो ने सब काम मिट्टी कर दिया। आपने जो बाते कहीं वे ठीक नहीं कहीं और इससे बहुत नुकसान हो गया। मुझे तो आशा नही कि यहा कुछ होगा। चाहे जो हो वर्किंग कमेटी इजाजत दे या न दे, हमे तो बगाल मे जल्दी से जल्दी बायकाट का काम शुरू करना है। यदि कोई भी कुछ नहीं करेगा तो मै तो करूँगा ही और जाते ही शुरू करूँगा।' वह बहुत गरम हो गये थे और वहाँ से चले गये कहा मुझे दूसरा टाइम दिया गया है। महात्माजी बीस मिनट बाद उठे। शैलेन राय ने बोलना शुरू किया, बोलने का ढग बिल्कुल बेढगा था। उसका असर न तो महात्माजी पर अच्छा होना दिखाई देता था और न दूसरे बैठे आदमियो पर ही। बीच मे वल्लभभाई ने कई प्रश्न किये जिसका वे सन्तोषजनक उत्तर न दे सके। महात्माजी ने कहा, तुम भी कुछ कहोगे तो अपने कहा कि कृष्णदास जी और प्रफुल्लबाबू ने जो कहा है वही है और क्या कहूँ ? तो जमनालालजी ने भी कहा, तुम भी कह सकते हो, कहो। बापूजी ने भी कहा, कहो तब अपने भी शुरू किया। बड़े बाजार की पिकेटिंग तथा मेदिनीपुर के सम्बन्ध मे और कई तरह की बाते अपने भी कहीं। बीच-बीच मे शैलेनबाबू आपत्ति करते रहे। फिर जमनालालजी ने बगाल के अपने अनुभव कहे। इसके बीच मे उन्होने अपना नाम लेकर कुछ विमलप्रतिभा देवी के बारे मे कहा कि यह सीताराम तो काम भी करता

है और अहिसा मे विश्वास भी करता है। खादी का काम करता है तो भी ऐसे चक्कर मे पड़ जाना है, तो वल्लभभाई ने कहा कि इसने जानकर तो नहीं किया है। लेकिन अपने को इस विषय मे बोलने का फिर महात्माजी ने मौका दिया और अपने उसको बहुत अच्छी तरह साफ कर दिया जिससे मालूम होता था कि महात्माजी तथा औरो को सन्तोष हो गया। फिर महात्माजी ने कहा, अच्छा मैने आप लोगो की बात सुन ली फिर आप से बात करूंगा।

यहाँ का बालिका विद्यालय देखा। करीब एक सौ दस लड़कियाँ पढ़ती है। साधारण काम है। मारवाड़ी समाज की तरफ से जो लड़कियो के स्कूल चलते है, उन की प्राय सब ही जगह साधारण हालत है। मामूली अक्षरज्ञान के आगे न तो कोई प्रबन्ध है न मारवाड़ी समाज के अधिकाश आदमी इससे ज्यादा शिक्षा अपनी बालिकाओ को देना ही चाहते है।

३० दिसम्बर राजेन्द्र बाबू के साथ महिला सेवादल कैम्प गये। आज वहाँ महात्मा जी तथा दूसरे नेता भी गये थे। महिलाएँ सैनिक ढग मे खड़ी थीं, इतनी अच्छी लगती थीं जसे देवियाँ हो। उनको सादी (सफेद) साड़ी ने उनकी सादगी बढ़ा दी थी। इतने मे महात्माजी, कस्तूरबा, सरदार पटल आदि आये। महिलाओ ने सैनिक ढग से सलामी दी। महात्माजी ने कैम्प के सब स्थान अच्छी तरह देखे फिर प्रार्थना-मन्दिर मे बैठे, सब महिलाएँ प्रार्थना-मन्दिर मे गई। महात्माजी ने करीब पन्द्रह-बीस मिनट भाषण दिया लेकिन वह भाषण तो गजब का था। उसको यहाँ लिखना ठीक नहीं क्योकि उस भाषण का एक भी शब्द छोड़ने का नहीं। इसलिए वह नवजीवन मे निकलेगा तो उसकी कटिग इस डायरी मे रखना है या लिख लेगे। बापू के कइ भाषण सुनने का सौभाग्य मिला लेकिन आज वाला भाषण अपने को बहुत जंचा। श्री लज्जावती से भी काफी समय बाते हुई। उन का कहना था कि यहाँ जो बहने ट्रेनिग लेने आयी है उनमे भी बम्बई की बहने ज्यादा अच्छी है। बगाल की बहन बीमार हो गयी है इसलिए ज्यादा काम नहीं कर सकतीं।

दो बजे **वर्किंग कमेटी** थी वहा अपने को जाना नहीं था जाना चाहे तो मजे मे जा सकते थे और बहुत से लोग चले गये। इच्छा तो अपनी भी थी कि जाये लेकिन जाना उचित नहीं जॅचना था। दूसरे यह भी था कि जाये नो जमनालालजी तथा महात्माजी आदि क्या समझगे। इसलिए न जाना ही तय किया। खादी भण्डार गये। महादेव सराफ की शादी के लिए साड़ी खरीदी। आज सुबह के भोजन के समय राजा गोविन्दलाल, उन की स्त्री तथा उन की दो लड़कियाँ, एक लड़का और अपने तथा कृष्णदासजी ने साथ ही भोजन किया। गोविन्दलालजी बहुत ही सीधे और सादे आदमी मालूम होते है। इतने धनी और ठाठ से रहने वाले आदमी है तो भी अपनी स्त्री तथा बच्चो को पूरी स्वतत्रता देते है। सब के साथ मिलने आदि मे कोई सकोच नहीं है। भोजन के समय स्त्रियाँ बराबर भाग ले रही थीं

अपने मारवाड़ियों में और धनी घरानों में यह उदाहरण इन का ही देखा। जमनालालजी के यहाँ प्रायः ऐसा ही है। लेकिन यह अपने को अच्छा लगा। इनके लड़के हैं वे भी बड़े सीधे हैं। उनमें भी घमण्ड कुछ नहीं है।

३१ दिसम्बर : कल की वर्किंग कमेटी में बंगाल के सम्बन्ध में सवाल आया था उस समय अपना रहना जरूरी था लेकिन अपने गये नहीं थे। बंगाल से जो लोग आये उनमें पाँच आदमियों के नाम तार आया था कि यह हमारे प्रतिनिधि हैं। उसमें एक नाम अपना भी था इसलिए अपने मज़े में जा सकते थे, पर अपने सोचा, जमनालालजी ठीक नहीं समझेंगे। वहाँ जो बातें हुईं वह अच्छी नहीं हुईं। सुभाषबाबू को वल्लभभाई ने बहुत फटकारा तथा बापू ने उनसे जो सवाल किये उसका वह उचित उत्तर न दे सके। सुभाषबाबू में अनुभव की कमी और जल्दबाजी बहुत है। स्नान-भोजन कर सतीन सेन से मिले फिर महात्माजी के पास गये, वह वर्किंग कमेटी के लिए प्रस्ताव लिख रहे थे और मौन थे। रेजुलेशन लिख कर उन्होने मौन तोड़ा तो वल्लभभाई, डॉक्टर अंसारी, डाक्टर आलम आदि आ गये। उनसे बातें होने लगीं इसलिए अपने वापस आ गये। बीच में वल्लभभाई से थोड़ी सी बात हो गई थी। वे बंगाल की ओर से निराश ही हैं। वायसराय के तार की उड़ीक सबको लग रही थी। उसके आये बग़ैर किधर रास्ता लें यह नहीं सूझता था। वह आ गया और निराशाजनक आया। सरकार इस समय अपने को मज़बूत समझती है, उसने एक बार ज़ोरों का दमन करने की नीति स्थिर कर ली है इसलिए नरम तार आ नहीं सकता था। अब वर्किंग कमेटी क्या करती है, उसको भी बाध्य होकर फाइट का प्रोग्राम बनाना पड़ेगा ही। परन्तु अब कोई नया तरीक़ा नहीं निकाला जाएगा तब तक काम जोर से नहीं बढ़ेगा। हमारे पहले वाले अस्त्रों को सरकार ने जान लिया है। वह अब हमें उन्हें काम में लाने का मौका नहीं देगी। गांधीजी जो करेंगे वह खूब सोच-समझ कर ही करेंगे। सारे आदमी चिन्तित से हो गये हैं। शायद आजकल में सब गिरफ़्तार हो जायें। गिरफ़्तारी का किसी को डर नहीं है। पर आगे आन्दोलन कैसे चलाया जाये, यही चिन्ता है। आज सात बजे तक वर्किंग कमेटी की मीटिंग चली, रात में नौ बजे से फिर चलेगी। डायरी ग्यारह बजे लिखी जाती है तब तक तो कुछ नहीं हो पाया है।

बम्बई, १ जनवरी १९३२ : कल रात वर्किंग कमेटी की मीटिंग दो बजे समाप्त हुई। इस बार का प्रस्ताव बहुत ही व्यापक है। महात्माजी के यहाँ गये। वह रात सोये नहीं थे तो भी उसी तरह काम में व्यस्त थे। शायद महात्माजी आज रात ही पकड़े जायें पर अपना काम तो कलकत्ता शीघ्र जाना है। अपने भी समझते हैं कि जल्द ही गिरफ़्तार हो जाएंगे। शायद दस-बीस रोज़ काम करने का मौका मिले।

२ जनवरी : महात्माजी के यहाँ गये। बम्बई के मिल मालिकों तथा मुख्य व्यापारियों से उनकी बातचीत हुई। उनकी बातों से मालूम होता था कि महात्मा

जी के प्रति लोगों की कितनी भक्ति है । यहाँ के मारवाड़ी भाई भी कांग्रेस में शामिल समझे जाते हैं और कलकता के मारवाड़ी कांग्रेस के विरूद्ध ।

३ जनवरी : जमनालालजी के साथ मणिभवन गये । महात्माजी आज अहमदाबाद जाने वाले थे और रास्ते में ही पकड़ लिये जायेंगे, यह भी निश्चय था । इसलिए सब काम मुलटाया जा रहा था । महात्माजी कह रहे थे, मैं आज जरूर पकड़ लिया जाऊँगा । महात्माजी ने कृष्णदासजी से बात की, कहा कि धीरतापूर्वक काम करना चाहिए । जो प्रस्ताव हुआ है उसके अनुसार काम करना चाहिए । जल्दबाजी में या काम करने के लालच में आकर ऐसा कोई काम न करना जो हानिकारक सिद्ध हो या जिससे वायलेंस को प्रोत्साहन मिले । काम न हो इस की परवा नहीं, लेकिन जो हो वह ठीक हो । इसका हरदम ध्यान रखना चाहिए। यदि इस में पचास वर्ष भी लग जायें तो मैं जल्दी नहीं कर सकता । अपना काम है कि जो उचित जँचता है उसी तरह करते जाना फिर प्रभु को जो करना है वही होगा । अपने और कृष्णदासजी महात्माजी का चरण छू विदा हुए ।

५. स्वराज्य-पार्टी की बैठक–रांची

२ मई १९३४ : आज की स्वराज्य पार्टी की मीटिंग के लिए जगह आदि ठीक करायी, ३ बजे क़रीब स्वराज्य पार्टी के नेता लोग आने शुरू हुए । डॉ. विधान राय, डॉ. अन्सारी, भूलाभाई देसाई, सरोजिनी नायडू, कन्हैयालाल मुन्शी, नारीमन तथा सत्यमूर्ति और सभी प्रान्तों के कई लोग थे । पंजाब का कोई ख़ास आदमी नहीं था । श्रीमति श्यामा जुत्शी तथा उनकी लड़की आयी थीं । सब लोग अँगरेजी में बात करते थे, सारी कार्यवाई अँगरेज़ी मे होती थी । डॉ. अन्सारी ने सभापतित्व किया । दूसरी जगह के अनेक लोग अपने परिचित थे, ये लोग मज़े की हिन्दी जानते हैं पर अँगरेज़ी में ही बोलते हैं, इसलिए जो बातें हुईं वे समझ में नहीं आयीं । स्वराज्य पार्टी की मीटिंग की कार्यवाई अपने देखते रहे, कुछ विशेषता नही लगी । कौंसिल में जाने वालों का गुट-सा दिखा । ख़ैर, जो भी हो अपने सम्बन्ध की यह बात नहीं । अपने स्थान पर इतने लोग आये थे इसलिए उनकी आवभगत करनी, उनको अच्छी तरह बैठाने का काम करते रहे ।

३ मई : आज का दिन पू. महात्माजी का राँची में काम करने का दिन था इसलिए बिड़ला हाउस गये, वहीं रहे । साढ़े चार बजे निवारण आश्रम और हरिजन इण्डस्ट्रियल स्कूल का पू. बापूजी द्वारा उद्घाटन था, वहाँ गये । निवारणबाबू के

पास बैठे रहे । पू. जमनालालजी निवारणबाबू के लिए बहुत कोशिश करते हैं । निवारणबाबू सचमुच देवता आदमी है । राजेन्द्र बाबू ने पू. महात्माजी से कहा, निवारणबाबू दवा आदि लेने में संकोच करते हैं, क़ीमती दवा नहीं लेते, फल आदि क़ीमत के भय से नहीं लेते, महात्मा जी ने कहा, यह ठीक नहीं । शरीर को रखना है, उससे सेवा करने का उद्देश्य है तो बचने की कोशिश करनी चाहिए। मित्र लोग जैसी व्यवस्था करें उसी के अनुसार चलना चाहिए । अपने आप को उपचार के लिए मित्रों और काम के लिए भगवान् के हाथों सौंप देना चाहिए । हृदय को देव-मन्दिर मान लेते हैं तो फिर उसमें जो लोग चढ़ावें, वह ठीक है । अंगूर का रस क़ीमती है, इस बात को भूल जाना चाहिए । इसी सिलसिले में कहा, प्रभु को इस शरीर से काम लेना होगा तो वह इसे रखेगा । नहीं लेना हो तो उसकी मरज़ी, उसकी गरज़ हो तो रखे नहीं तो फिर अपना उसमें क्या है । महात्माजी के खूब नज़दीक ही खड़े थे और उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं पर काम में रहे इसलिए उनका पूरा-पूरा रूप याद नहीं रह सका, जो कुछ लिखा है वह उनके कहने के आधार पर, कुछ-कुछ उनके शब्द भी लाने की कोशिश की है । आश्रम तथा स्कूल का उद्घाटन करते हुए उन्होंने छोटा-सा व्याख्यान दिया, फिर स्त्रियों की मीटिंग में चले गये, अपने और जमनालालजी निवारण बाबू के पास रहे । डॉ. विधानराय ने निवारण बाबू को खूब अच्छी तरह देखा ।

महात्माजी की पब्लिक मीटिंग में गये, राँची के लिए यह शायद अपूर्व मीटिंग थी, बहुत बड़ी संख्या में लोग आये, लोगों में महात्माजी के प्रति अपूर्व श्रद्धा है। राँची की ओर से जो थैली भेंट की गयी उसमें रुपये बहुत कम थे कुल छह सौ तैंतीस रुपये थे । इतने धनी लोग रहने पर भी यह हाल । मानपत्र वाली चाँदी की तश्तरी नीलाम की गयी, सौ रुपये आये । एक चद्दर मीरा बहन के हाथ के सूत की, सवा सौ में नीलाम हुई, कुछ पैसे स्वयंसेवकों ने इकट्ठा किये।

६. बम्बई कांग्रेस

१९ अक्तूबर १९३४ : पू. महात्माजी के साथ बम्बई रवाना हुए । उनके डिब्बे में कई लोग बैठना चाहते थे तो अपने बग़ल के डिब्बे में ही बैठे, उन के साथ बैठने में भी सुविधा नहीं जँची ।

२० अक्तूबर : सात बजे गाड़ी माटुंगा पहुँची, यहाँ गाड़ी खड़ी नहीं होती पर पू. महात्माजी को यहीं उतारने का प्रबन्ध किया गया था इसलिए गाड़ी खड़ी हुई । नारीमन, सरदार वल्लभभाई स्टेशन पर खड़े दिखाई दिये । महात्माजी को

उतारकर अब्दुल ग़फ़्फ़ार नगर ले जाया गया । अपने जमनालालजी की लड़की कमला के यहाँ गये । शाम स्वदेशी और खादी प्रदर्शनी का ख़ाँ अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ साहब उद्घाटन करने वाले थे, उनके पास ही चले गये । वे कलकत्ता से बम्बई की व्यवस्था, जागृति, कांग्रेस का साथ आदि ज़्यादा मानते हैं । वे बम्बई में हिन्दू-मुसलमानों की एकता का भाव भी ज़्यादा समझते हैं । उनके साथ ही प्रदर्शनी में गये ।

२१ अक्तूबर : पू. राजेन्द्रबाबू का बंबई नगर की ओर से अपूर्व स्वागत होने वाला है । बहुत ठाठ से स्वागत किया जायेगा, ऐसी कल्पना कई दिनों से लोगों के मन में थी । रास्तों में बहुत भीड़ थी, छज्जे भरे थे । जिन-जिन रास्तों से राजेन्द्रबाबू आने वाले थे उन्हें खूब सजाया गया था, सब से ज़्यादा मारवाड़ी बाज़ार का रास्ता सजा हुआ था । पर इसमे अपने को बहुत सुन्दरता नहीं जँची थी। तोरण बन गये थे, जो व्यापारी जिस चीज़ का काम करता है उसके एसोसिएशन ने उन्हीं चीज़ों का दरवाज़ा बनाया था । राजेन्द्रबाबू को कल्याण उतार लिया गया और वहाँ से स्पेशल ट्रेन में उन्हें बोरीबन्दर स्टेशन लाया गया, वहीं से जुलूस सजाया गया । अपने स्टेशन गये ज़्यादा भीड़ के कारण राजेन्द्रबाबू को देखकर जल्दी लौट आये । सैडर्हस्ट रोड बिरला हाउस के पास से जुलूस को देखा, अपने को बिल्कुल नहीं जँचा । अपनी निगाह मे बहुत छोटा और साधारण जुलूस रहा । बम्बई के लोग जो रूप दिखाना चाहते थे उससे बहुत हल्का जुलूस रहा । पत्र चाहे जो लिखें कलकत्ता मे स्व. मोतीलालजी के जुलूस से इसका कोई माप नही। रास्तों की सजावट और दरवाज़े अपने को बिलकुल कलापूर्ण नही जंचे । सच पूछा जाये तो भद्दे मालूम हुए और व्यापारियों के विज्ञापन जैसे मालूम हुए । बेचारों ने श्रद्धापूर्वक ही किया पर बनिये तो है ही । फूल-पत्तो का कोई भी दरवाज़ा अपने को दिखाई नहीं दिया ।

२२ अक्तूबर : शाम विट्ठल भाई की पुण्य तिथि की सभा मे गये, पू. महात्मा जी और बाहर से आये नेताओ के भाषण हुए । बम्बई वाले मीटिंग का प्रबन्ध सुन्दर करते है । भाषणो मे सार नही था, कौंसिल का प्रचार-सा मालूम होता था।

२३ अक्तूबर : आज से **सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग** है, बसन्तलालजी आ गये है और कैम्प मे ठहरे है इसलिए अपने भी कैम्प में रहना ठीक समझा । पू. महात्माजी के साथ चार कैम्प है, सभापति बाबू राजेन्द्रप्रसाद का, सरदार पटेल का, कांग्रेस सेक्रेटरी के ऑफिस का, पू. जमनालाल जी का । अपने पू. जमनालालजी के कैम्प में रहे । राजेन्द्रबाबू, खान साहब, सरदार पटेल से मिले । सरदार पटेल ने कहा, तुम्हारे प्रान्त में तो खूब झगड़ा चल रहा है, बात सच्ची है । दो बजे सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग शुरू हुई । पचीस रुपये की टिकट थी, वह ख़रीदी और वहाँ गये । आरम्भ मे सरदार पटेल ने हिन्दी मे भाषण दिया और राजेन्द्रबाबू

को अपना चार्ज सम्हलाया । इसके बाद राजेन्द्रबाबू का हिन्दी में छोटा सा भाषण हुआ । इसके बाद महात्माजी के कांग्रेस से अलग होने के प्रश्न पर चर्चा चली। पू. महात्माजी ने पन्द्रह मिनट हिन्दी में व्याख्यान दिया और कहा, आप मुझे छोड़ दें और मुझे जिन चीज़ों में मैं हूँ उनको लेकर काम करने दें । आज तो मैं आप के लिए भाररूप हो गया हूँ और आप मेरे लिए । मैं कांग्रेस के बाहर जाता हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि मैं आप से नाराज़ हो गया हूँ या आप से कोई द्वेष हो गया है । यह भी नहीं कि आप ने मुझे साथ नहीं दिया हो पर तो भी मैं कांग्रेस से बाहर जाना चाहता हूँ क्योंकि मैं अशक्त हो गया हूँ । मैं अपने में आपका संचालन करने की शक्ति नहीं पाता । यदि ईश्वर वह शक्ति मुझे दे दे और मुझे मालूम हो कि मैं आपके साथ रह सकता हूँ और आपका काम कर सकता हूँ तो मैं उसी क्षण आपके पास आ जाऊँगा । मुझे अभिमान नहीं है कि मैं न आऊँ इत्यादि कई बातें कहीं, वे अपूर्व ही थीं । इसके बाद कई लोगों ने महात्माजी से कहा कि आप न जायें । आपके जाने से देश की, कांग्रेस की बड़ी क्षति होगी । पर उनकी दलीलों का महात्माजी पर तो क्या अपने जैसे लोगों पर भी असर नहीं हुआ । शेष में मालवीयजी महाराज ने अपील की कि आप मत जाइए और आपको जाने का अधिकार नहीं है । आपने देश का पन्द्रह वर्ष तक नेतृत्व किया है, ऐसा नेतृत्व पहले किसी ने नहीं किया । आपने देश को बहुत आगे बढ़ाया है । अब देश मुश्किल परिस्थितयों से गुज़र रहा है, हमें आगे और भी ज़ोरों से लड़ाई करनी है, ऐसे मौक़े पर आपका कांग्रेस से अलाहिदा होना दुश्मनों को मौक़ा देना है, और आप जैसों के योग्य नहीं है। मैं जानता हूँ आप किसी की सुनने वाले नहीं हैं । पर तो भी मैं आपसे कहता हूँ और बड़ा दुःख होता है । यह भी सोचता हूँ ऐसे मौक़े पर चुप रह जाऊँगा तो न्याय नहीं होगा। इसलिए कहता हूँ आपको जाने का अधिकार नहीं है और न्याय नहीं है । हम आप को जाने नहीं देंगे । आप विचार करें, फिर विचार करें। इसका जवाब भी महात्माजी ने दिया फिर थोड़ा मालवीयजी बोले पर था कुछ नहीं । महात्माजी का निश्चय बदलवाने की ताक़त किसमें है । इसके बाद डॉक्टर अंसारी साहब ने पटने की आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में जो प्रस्ताव पास किये उनको पास करने का प्रस्ताव रखा और छोटा सा व्याख्यान दिया । इस प्रस्ताव पर बहुत विवाद हुआ, इस पर संशोधन प्रस्ताव रखे गये थे । वे सब गिर गये । मालवीयजी के संशोधन पर सब से कम वोट आये । श्री सम्पूर्णानन्द ने साम्यवाद सम्बन्धी तथा कौंसिल विरोधी संशोधन रखा था उस पर सबसे ज़्यादा वोट आये पर डॉ. अंसारी के मूल प्रस्ताव पर ज़्यादा वोट आने से वह पास हो गया । इसके बाद सबजेक्ट कमेटी कल के लिए स्थगित हो गयी ।

२५ अक्तूबर : सबजेक्ट कमेटी में गये, बहुत वाद-विवाद होता है । बहुत-

सा समय तो मुफ़्त में ही चला जाता है पर राजेन्द्रबाबू बहुत योग्यतापूर्ण काम कर रहे हैं। कांग्रेस के सभापति को अँगरेज़ी का अच्छा ज्ञान, पार्लियामेंटरी का अच्छा ज्ञान होना ही चाहिए नहीं तो वह अच्छा संचालन नहीं कर सकता।

२६ अक्तूबर : सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में गये। कांग्रेस की क्रीड तथा दूसरे नियम सम्बन्धी परिवर्तन का प्रस्ताव पू. महात्माजी ने रखा, उस पर उन्होंने डेढ़ घण्टे अँगरेज़ी में व्याख्यान दिया। सारी बातें बड़े अच्छे ढंग से खुलासा कर दीं। सात बजे से कांग्रेस का खुला अधिवेशन शुरू होने वाला था इसलिए वहाँ गये। पण्डाल तो खुब ही बड़ा था। समुद्र के किनारे, खुले आकाश के नीचे, भव्य बिजली की लाइटों के कारण चारों ओर चकाचौंध सी हो रही थी। लोग बहुत पहले से ही आ कर बैठ गये। सात बजे का समय था पर पण्डाल उस से पहले से ही भर गया था। बम्बई के किसी नामी गायक ने वन्दे मातरम् गाया, वह अपने को सुन्दर नहीं लगा। फिर कुछ बहनों ने दो गीत गाये, इसके बाद स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री नरीमान ने अपने व्याख्यान अँगरेज़ी में पढ़ा। वह बहुत ही सुन्दर था। राजेन्द्रबाबू ने सापति का आसन ग्रहण किया उन्होंने अपने व्याख्यान का कुछ हिस्सा पढ़ा तथा कुछ यों ही व्याख्यान दिया। इसके ाद डॉ. अंसारी ने पिछले छह महीने में वर्किंग कमेटी तथा आल इण्डिया कॉंग्रेस कमेटी ने जो प्रस्ताव पास किये उनको पास करने का प्रस्ताव रखा। और उनको क़रीब डेढ़ घण्टे समझाया। प्रस्ताव का समर्थन नरीमान ने किया। इस प्रस्ताव में एक साम्प्रदायिक समझौते के सम्बन्ध में एक संशोधन मालवीयजी ने रखा और उस संशोधन को रखते हुए मालवीयजी ने सुन्दर व्याख्यान दिया। क़रीब एक घण्टा से भी ज़्यादा बोले होंगे। इस संशोधन का समर्थन श्री अणे ने किया। इसके बाद कांग्रेस का यह अधिवेशन आज के लिए समाप्त हो गया।

२७ अक्तूबर : सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में भी जाने की इच्छा नहीं हुई। शाम को कॉंग्रेस में गये। उपस्थिति कल से कम नहीं थी। मालवीयजी के संशोधन पर आज और बहस हुई। बंगाल के प्रतिनिधियों ने अच्छा रुख़ नहीं दिखाया। साम्प्रदायिक समझौते के विरुद्ध याने वर्किंग कमेटी के पक्ष में जो बोलते थे उन को बोलने नहीं देते थे इससे बंगाल की बड़ी बदनामी हुई। शेष में मुख्य प्रस्ताव पास हो गया। राजेन्द्रबाबू ने योग्यतापूर्वक और दृढ़तापूर्वक काम किया।

२८ अक्तूबर : सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में नहीं गये। कार्यवाही अँगरेज़ी में होती थी इसलिए जाने की खास इच्छा नहीं हुई। शाम छह बजे कॉंग्रेस के खुले अधिवेशन में गये। पू. महात्माजी का प्रस्ताव था कि कॉंग्रेस के विधान में अमुक तरह का परिवर्तन हो, इसका एक मसविदा भी उन्होंने पेश किया, वह बहुत बड़ा था, इसलिए उसकी मुख्य बातें समझायीं। करीब सवा घण्टा बोले और हिन्दी में बोले इसलिए पूरा समझने को मिला। कॉंग्रेस की इस बार की कार्यवाही में

मुख्य दो ही कार्यवाही थी, एक तो पार्लियामेण्टरी बोर्ड बना दूसरा, विधान में परिवर्तन। महात्माजी ने तो अपने निश्चय के अनुसार कांग्रेस छोड़ दी। पर वे दो महत्वपूर्ण परिवर्तन कांग्रेस से जाते समय कर गये। इनका क्या परिणाम होगा इसका पता तो भविष्य में लगेगा। पर कांग्रेस में ये परिवर्तन मामूली नहीं हुए हैं। कांग्रेस का अधिवेशन आज ही समाप्त करना था। इसलिए कार्यवाही बहुत रात तक चलेगी यह सोच कर अपने आकर सो गये थे पर कांग्रेस साढ़े बारह बजे समाप्त हो गयी। इस बार की कांग्रेस में विशेष उत्साह नहीं था। जोश नही था। यह कांग्रेस तो लड़ाई हारने के बाद हो रही थी। कांग्रेस मे आकर आदमी किसी नये उत्साह को लेकर लौटा हो, ऐसा अपने को नहीं लगा।

७ : वर्ष १९३४ का मूल्याकन

फिर पू. महात्माजी ने इस (बिहार के बाढ़ सहायता) काम मे सरकार को सहयोग देने की बात कही। और यहाँ तक कहा कि असहयोग करना पाप है। अपने दिल मे महात्माजी की बात बहुत खटकी और अपने को उसका दुःख भी बहुत हुआ। अपने सोचा-विचारा भी खूब, पर सन्तोष नहीं हुआ और ऐसा भी मालूम होने लगा कि स्वतन्त्रता का काम इस तरह नहीं होने का, इसके लिए दूसरा ही मार्ग और दूसरा ही नेता जरूरी है। इस घटना ने अपने ऊपर काफी गहरा असर डाला और यह [illegible] को [illegible] ऐसा ही मालूम होने लगा और होता रहा।

इस घटना के कुछ दिन बाद कांग्रेस ने कौंसिलों मे जाने की आज्ञा दी, यह कहा जाने लगा कि देश के सामने सबसे बड़ा कार्य इस समय कौंसिलों का, असेम्बली का चुनाव जीतना है। पटना में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की मीटिंग मे पू. महात्माजी ने यहां तक कहा कि कौंसिलों मे न जाना हमारी भूल थी। एक दिन पू. महात्माजी ने कौंसिलों मे जाना पाप बताया था, कौंसिलों मे जाने वाले देशद्रोही माने गये। ऐसी क्या परिस्थिति बदल गई? जो लोग तकलीफ नहीं उठा [illegible] और देश का नेतृत्व भी करना चाहते है उनके सामने कौंसिलों के सिवा और क्या कार्य रह जाता है। पर पू. महात्माजी इस कार्यक्रम को क्यो स्वीकार करते हैं, यह समझ में नहीं आता। इस कार्यक्रम से भी अपने मन मे काफ़ी उथल-पुथल हुई थी। सत्याग्रह सग्राम बन्द करने की पू. महात्माजी ने घोषणा की और उसका कारण बताया कि मेरे साथी सत्याग्रह के योग्य नहीं है। मै केवल अपने लिए ही सत्याग्रह करने का अधिकार रखता हूँ। जिन्होने मेरे कहने से सत्याग्रह में भाग

लिया उनको मैं कहता हूँ कि अब यह युद्ध फ़िलहाल बन्द किया जाता है। महात्माजी का यह वक्तव्य अपने को नहीं जँचा, कई लोगो के पास विचार करने गये पर सन्तोष नहीं हुआ। अपनी यह मान्यता रही है कि पू. महात्माजी जैसा पवित्र, महान् तपस्वी और वीर आदमी शायद ही कोई हो पर न मालूम क्या बात है इन दिनों उनके कई काम अपने को ज्यों-के-त्यों नहीं जँचे। अपनी समझ में देश की स्वतन्त्रता के लिए इससे ज्यादा उग्र-कार्य और उग्र-नीति की आवश्यकता है। आज तो देश के बहुत भाग को स्वतंत्रता का पता भी नहीं। यदि स्वतन्त्रता मिल जाये तो वह दुःखियों के लिए क्या होगी ? वह तो अपने जैसे उनसे अच्छे भोजन करने वालों को मिलेगी। सत्याग्रह चलते रहने या स्थगित कर देने से देश की स्वतंत्रता के काम में विशेष आता-जाता नहीं, पर लड़ाई तो जारी रहनी ही चाहिए। लड़ाई बन्द करना अपने को बिलकुल नहीं जँचा। सत्याग्रह बन्द करते समय वीर पुरूष जवाहरलाल, अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ और सरदार पटेल जेल में थे। और भी हजारों लोग जेल में थे। जो लोग सत्याग्रह शुरू हुआ उस समय घर-बार, बाल-बच्चे, रोजगार, स्वास्थ्य आदि की परवा किये बिना इस भावना से लड़ाई में कूद पड़े कि क्या तो मर जाना है या स्वतंत्रता देखना है, उनका आज क्या हाल हो ? वे तो दर-दर भिखारी हो गये है। ये भावनाएँ मन मे आती थीं। देश की बड़ी घटनाओं मे शायद ये तीन घटनाएँ ही ऐसी थीं जिनका मन पर काफी असर पड़ा।

८ : कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती उत्सव

२७ दिसम्बर १९३५ स्वर्ण-जयन्ती की तैयारी अच्छी हो रही है। लोगो के अन्दर कांग्रेस का प्रेम है पर वह पंगु हो रहा है। देश के अन्दर जागृति है पर वह दबी हुइ मालूम होती है। भावना तो निश्चय ही स्वतन्त्रता की ओर बढ़ रही है चाहे कोई कितना दबाये। जो राष्ट्रीय भावना उठी है दबाइ नहीं जा सकती और किसी प्रकार नष्ट नहीं की जा सकती। यह पांच-सात दिन का समय तो आनन्द का है।

२८ दिसम्बर : पौने छह बजे उठे, बड़ाबाजार की प्रभातफेरी में शामिल होने गये। भगवानदेवी, पन्ना भी थीं। प्रार्थना गाड़ी में रास्ते में ही की। प्रभातफेरी का जुलूस अच्छा हो गया था। फिर झण्डोत्तोलन मे शामिल हुए। सारे कलकत्ता की तरफ़ से देशबन्धु पार्क में झण्डा फहराया गया था। वहाँ कुछ मुसलमान भाई

नमाज़ पढ़ रहे थे, उनका प्रसिद्ध त्यौहार ईद आज था, किसी को मालूम नहीं हो सका कि पार्क के किसी कोने में मुसलमान भाई नमाज़ पढ़ रहे हैं । लोगों ने आनन्द ध्वनि की, शंख आदि बजाये इस कारण मुसलमान उत्तेजित हो गये और लाठी-पत्थर बरसाने लगे जिससे कई आदमी घायल हो गए । साथ में स्त्रियाँ और बच्चे भी थे इसलिए और भी कठिनाई हुई । यह दुःखद घटना काँग्रेस के उत्सव में एक दाग़ हो गयी । यह नासमझी के कारण हो गयी । क्या किया जाये, देश का दुर्भाग्य आगे-आगे चलता है ।

दस बजे घर आये, स्नान-भोजन कर बड़ाबाज़ार गये, यहाँ जो जुलूस निकलने वाला था उसका भार अपने ऊपर था । जुलूस बहुत ही शानदार था और ईश्वर की कृपा से रास्तों में राष्ट्रीय नारे तथा महात्माजी की जय बोलते हुए तारासुन्दरी पार्क पहुँचा । वहाँ पर एक महती सभा हुई । उपस्थिति बहुत अधिक थी, कहीं पर बैठने की जगह नहीं थी । लोग बड़ी संख्या में बाहर खड़े थे, स्त्रियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था । यह मीटिंग समाप्त कर कलकत्ता की ओर से बंगाल के जीवित लोगों में सब से बूढ़े और पुराने कांग्रेस सेवक श्री हरदयाल नाग के सभापतित्व में कलकत्ता की ओर से सभा थी, उसमे गये । वहाँ भी उपस्थिति बहुत अधिक थी । सबसे पहले हरदयाल बाबू को कलकत्ता के नागरिकों की ओर से मानपत्र दिया गया । इसके बाद बगाल के तीस जिलों की तरफ़ से उनको पुष्पमाला पहनायी गयी । इस के बाद कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती के लिए घोषित राष्ट्रपति का सन्देश पढ़ा गया । बाद में सभापतिजी की स्पीच पढ़ी गई । रात साढ़े नौ बजे घर आये ।

आज का यह दिन बड़ा ही आनन्ददायक, स्फूर्ति और जीवनदायक मालूम होता था । ईश्वर से प्रार्थना है कि हे प्रभु, हे न्यायकर्ता, इस दुःखी और गरीब तथा गिरे हुए देश को उठाइए । हे पतितपावन, दीनो की रक्षा करने वाले, इस दीन देश का उद्धार करो । इसे पराधीनता के बन्धन से छुड़ाओ, इसको स्वतंत्र बनाओ । इसका त्राण करो, इस को उन्नत करो । इसको सच्चा, पावन और पवित्र बनाओ । यह प्रार्थना है । हे मंगलमय, मंगल करो । ओम् शान्तिः शान्तिः ।

विशेष : अपनी समझ में इस वर्ष देश में भी कोई महान् परिवर्तनशील घटना नहीं घटी । वर्ष के शेष में कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती का उत्सव बड़ा अच्छा हुआ और इसमें लोगों ने उत्साहपूर्ण भाग लिया । जो लोग कहते थे कांग्रेस मर चुकी है उनको पता लग गया है कि कांग्रेस कहाँ है, देश की जनता पर उसका कितना प्रभाव है । इस हालत में भी यह अच्छी तरह मालूम होना है कि हमारे भीतर की आग बुझी नहीं है । यह हवा के एक झोंके से ही फिर चमक सकती है यदि कहीं तूफान और आंधी आ गयी तो यह आग उड़कर चारों ओर ऐसा अग्निकाण्ड कर सकती है कि देश की पराधीनता ही नहीं सारे पाप, सारा दुःख और सारा

रूढ़िवाद भस्म हो जाये । और फिर नये विचार, नवीन कार्य-पद्धति, नये बाग़ और नये पुष्प, वृक्ष और नवीन ज्योति, आज़ादी की हवा में ला सकेगी । कांग्रेस की शक्ति आज भी अक्षुण्ण है । वर्ष के शेष के ये पाँच-सात दिन सुखप्रद, आशाप्रद और ज्योति देने वाले निकलें ।

उम्र का एक वर्ष घट गया जहाँ थे वहीं रहे । मानसिक हालत वही है । विचारधारा में कमजोरी नहीं मालूम होती, जोश और उत्साह भी है । स्वतन्त्रता आन्दोलन चल रहा है । आज का आन्दोलन मध्यवृत्ति लोगों का है, धनियों से कष्ट सहने के आन्दोलन का असली सम्बन्ध हो ही नहीं सकता, पर जो लोग दुःखी हैं और जिनकी संख्या ही अधिक है, किसान और मजदूर हैं, उनका भी आन्दोलन से कम-से-कम सम्बन्ध रहा है । इसलिए इनका सम्बन्ध जोड़ने का काम और इनका दुःख दूर हो, ऐसा कार्यक्रम तथा भावी स्वराज की योजना हो तब काम चले । अपनी निगाह मे घावों पर मलहम लगाने से वास्तविक लाभ होने वाला नहीं है उससे थोड़ा आराम मिल सकता है पर घाव नहीं मिट सकता, यदि मिटा तो बग़ल मे ही दूसरा फिर नया हो जायेगा । इसके लिए वर्तमान प्रणाली जड़मूल से बदलनी होगी तभी सच्ची स्वतन्त्रता, सच्चा सुख और देश की दुःखी जनता को लाभ होगा । नहीं तो आज जो लूट रहे है वे चले जायेंगे तो उनके स्थान पर कोई दूसरा लुटेरा ही आ जायेगा । शेष तो लूट के औज़ार नष्ट करने होंगे । इसका सबसे अच्छा उपाय तो साम्यवाद है, पर वह हो कैसे ? साम्यवाद केवल कल्पना की चीज तो नहीं, पर वर्तमान समाज का जो रूप है वह साम्यवाद में सहज ही बदला जा सकता है । इसके समय की और शक्ति की प्रतीक्षा करनी होगी पर न मालूम वह समय कब आयेगा और कैसे आयेगा ? उसकी उपासना करनी होगी, उसके लिए तपश्चर्या करनी होगी, आरती के लिए नैवेद्य सजाना होगा । देश, जाति का सच्चा और वास्तविक विकास साम्यवाद में ही हो सकता है पर यह क़ानून के जोर या जबरदस्ती के डर के वश आया तो टिकना मुश्किल है । हो सकता है शुरू में कुछ ज़ोर-जबरदस्ती भी करनी पड़े, पर उसके द्वारा सच्चा सुधार होने वाला नहीं । देश में जिस दिन अच्छे लोगों की संख्या बढ़ जायेगी उसी दिन से साम्यवाद का प्रचार होने लगेगा और अपनी शक्ल में प्रकट होने लगेगा । अपने न तो साम्यवाद के सिद्धांतों के ज्ञाता हैं, न उसके साहित्य के जानकर पर समता के सिद्धान्त से अपना प्यार है, चाह है, इच्छा और कुछ कोशिश भी होगी ही । देश में जो भयानक भीषणता है, जिसके कारण भीषण दुःखों की सृष्टि हो गयी है, अन्न के भण्डार पड़े रहते हैं और देश के नौनिहाल भूख में तड़प-तड़प कर प्राण दे देते हैं, यह स्थिति क़िसी तरह भी बदले । इन पापों का नाश तो अवश्य होगा ही । इस का प्रतिकार तो होना ही चाहिए और अपनी समझ मे इसकी सच्ची दवा साम्यवाद है । समता का सिद्धान्त ही सच्चा सिद्धान्त है । गीता में भगवान ने कहा कि

'सर्वभूतहिते रताः' (लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषा....) यह बात ही साम्यवाद है पर उसको कार्य में परिणत करना होगा और उसको आज के तरीक़े, आज के ढंग से बदलना और उसकी बाहरी वेशभूषा में भी परिवर्तन करने होगे। ऐसी विचारधारा इन दिनों मन में चलती है और पुराने तरीकों के प्रति मन में एक प्रकार का रोष, एक प्रकार का विद्रोह होता है। देखें, अपने क्या करते है? प्रभु अपने से क्या कराते है। ईश्वर के सहारे के बिना अपना काम नहीं चलता। बहस में अपने नहीं पड़ते, जो लोग ईश्वर को नहीं मानते उनसे अपनी बिल्कुल कोई लड़ाई नहीं। अपने सोच कर देख लिया है कि अपने लिए तो ईश्वर है ही और उसके बिना अपना काम नहीं चल सकता।

९ : लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन

८ अप्रैल, १९३६ : पूज्य महात्मा जी वहाँ ठहरे है और पूज्य जमनालालजी का इन्तजाम है, सीधे वहीं गये। मोतीनगर देखने गये। रास्ते मे लखनऊ की इमारते देखते जाते थे, सुन्दर लगीं। रास्ते चौड़े और साफ है। इलाहाबाद की अपेक्षा लखनऊ ज्यादा सुन्दर, व्यापारिक तथा आह्लादकारी मालूम हुआ। मोतीनगर जाते समय हीरालाल जी शास्त्री रास्ते मे मिल गये. वे अपने ही पास जा रहे थे, बड़ा अच्छा लगा। यहाँ की कांग्रेस की व्यवस्था तथा प्रबन्ध उत्तम नहीं मालूम होता। जानकीबहन भी आ गयी तथा पूज्य कस्तूरबा भी यहीं है। पूज्य महात्माजी का कमरा और अपने जिस कमरे मे है वह अगल-बगल है। जवाहरलालजी का जुलूस निकलने वाला है उसे देखने गये। विशेष चहल-पहल नहीं मालूम हुई। दुकाने आदि प्राय नहीं सजायी गयी थीं। दरवाजे भी बहुत थोड़े बनाये गये थे जो बनाये गये थे वे भी सुन्दर नहीं थे। वालेंटियरों की काफी कमी थी। कलकत्ता और बम्बई के सभापतियो के जुलूस को देखते हुए तो कुछ भी नहीं था पर लखनऊ को देखते हुए भीड़ अच्छी थी। पहले जवाहरलालजी और सब नेताओं के पैदल एक साथ चलने की बात थी पर प्रबन्ध ठीक न होने के कारण केवल जवाहरलालजी ही पैदल जुलूस मे निकले। रास्ते भर पड़े थे इसलिए उनका चलना मुश्किल हो गया। वे बिगड़े दिल तो है ही। ज्यादा घिर जाने पर स्वयं लोगों को हटाकर जोरों से आगे निकल गये। उम्र के हिसाब से वह बहुत छोटे नहीं पर स्वभाव मे जो चंचलता, जोश और उग्रता है वह नौजवानों के दिलो मे भी मिलनी मुश्किल है। थोड़ी दूर यों ही निकल जाने के बाद फिर उनको घोड़े पर चढ़ाना पड़ा।

चार बजे क़रीब सुभाषबाबू के पकड़े जाने की खबर मालूम हुई । सरकार ने निश्चय कर रखा था कि सुभाषबाबू हिन्दुस्तान आयें तो स्वतंत्र नहीं रखना । सरकार का यह निश्चय कैसा भी हो पर हमारी अवस्था कैसी निःसहाय है, हम आज कैसी पराधीनता में हैं ? सुभाषबाबू के पकड़े जाने से इस अवस्था से बहुत ही दर्द होता है । इस बेबसी के जीवन से तो मरना अच्छा है ।

९ अप्रैल : पूज्य महात्माजी की प्रार्थना मे शामिल हुए फिर उनके साथ घूमने गये । क़रीब एक घण्टे घूमते रहे । जमनालालजी भी थे जिनसे कई तरह की चर्चा होती रही । कांग्रेस की बातों के अलावा तुलसीकृत रामायण पर भी बात हुई । साढ़े दस बजे पूज्य महात्माजी रामायण का पाठ किया करते हैं उस में उन्होंने बुलाया । उनके साथ रामायण के पाठ में शरीक होने का यह सौभाग्य ईश्वर कृपा से मिला, बड़ा आनन्द आया । पूज्य महात्माजी रामायण की खूब भक्ति करते हैं और अपनी भी रामायण के प्रति श्रद्धा है इसलिए आनन्द और भी अधिक मालूम होता था ।

दो बजे **विषय-निर्वाचनी की मीटिंग** में गये । आज बहुत वर्षों बाद यह पहली विषय निर्वाचनी थी जिस में पूज्य महात्माजी नहीं थे । सभा प्राणहीन देह सी मालूम होती थी, सभी लोग थे पर महात्माजी के न होने से चीज का रूप ही दूसरा हो गया । पूज्य मालवीयजी भी नहीं पहुँचे हैं । मालूम नहीं कि पहुँचेंगे कि नहीं, चाहे उनसे कितनी भी विचार-भिन्नता हो पर वे एक ऊँचे पुरुष हैं । राजेन्द्रबाबू ने गत वर्ष के कामों के बारे मे कहा और साथ काम करने वालों को धन्यवाद दिया । फिर मौलाना आज़ाद ने सबकी ओर से उनको धन्यवाद दिया । इस के बाद पं. जवाहरलालजी ने सभापति का आसन ग्रहण किया और इस वर्ष का कार्य शुरू हुआ । कई प्रस्ताव पास हुए । कांग्रेस मे सर्व-साधारण लोगों का 'किसान मज़दूरों' का अधिक सम्बन्ध हो इस पर विचार करने के लिए तीन आदमियों की कमेटी बनाने के प्रस्ताव पर डेढ़ घण्टे विवाद हुआ जिसको एक प्रकार साम्यवादी और पुराने कांग्रेसमैन विचारधारा का विवाद कहना चाहिए । अपने अपनी समझ में साम्यवाद को प्यार करते हैं और चाहते हैं कि देश में सच्चे साम्यवाद का प्रचार हो, अपनी यह भी मान्यता है कि देश की सच्ची मुक्ति साम्यवाद के बिना नहीं होगी । तो भी आज जो भाषण साम्यवादियों की तरफ़ से हुए उनसे दुःख और निराशा होती है, कोई दलील, कोई आकर्षण नहीं था, वितण्डावाद था जिससे देश का कुछ भी लाभ नहीं होने वाला । चाहे साम्यवादी हो या कोई वादी हो, नम्रता, सच्चाई और बड़ों के प्रति आदर और विश्वास होना ही चाहिए । शेष में मूल प्रस्ताव ही पास हुआ, साम्यवादियों के पक्ष में वोट भी अधिक नहीं आये। बम्बई में उनका विरोध चाहे अप्रत्यक्ष ही हो पर गांधीजी से ही था पर वहाँ उनके प्रस्तावों पर वोट अधिक आये थे । यहाँ तो खुद सभापति ही साम्यवादी हैं पर अनुचित

तर्क के कारण उनको अधिक वोट नहीं मिले ।

कांग्रेस के विधान में भी कुछ सुधार करने का प्रस्ताव आया है । कई सुधार किये गये हैं तथा प्रान्तों के नामों में भी कई सुधार हुए । प्रदर्शनी देखने गये। कांग्रेस के साथ प्रदर्शनी बराबर ही हुआ करती है पर इस बार उसने अपनी दिशा को बढ़ाया है । ग्रामोद्योग की चीजें और चार्ट हैं वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं । आज दिन भर तबीयत खराब मालूम होती थी पर क्या करे, यों ही चलते हैं ।

१० अप्रैल : कहीं भी नहीं गये, बुखार था । विश्राम किया । विषय निर्वाचनी समिति में न जाने का दुःख था पर सोचा आज कहीं नहीं जायेंगे तो शायद सब कामों में जा सकेंगे ।

११ अप्रैल : पूज्य महात्माजी की रामायण में शामिल हुए, बड़ा आनन्द रहा। रामायण समाप्त होने के बाद पूज्य महात्माजी ने अपने को तबीयत के बारे में पूछा, थोड़ी बात शुरू करने की इच्छा थी पर डॉ. अंसारी आदि आ गये इसलिए चले आये ।

सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में गये । पदग्रहण करने या न करने पर विचार हो रहा था, इसलिए रसदार विवाद था । दिन भर बहस जारी रही । बहुत व्याख्यान पदग्रहण के विरुद्ध हुए, वे सब साम्यवादी दल की ओर से ही हुए । वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव था, फ़िलहाल इस विषय को स्थगित रखा जाये, इस विषय के पक्ष के व्याख्यानों में सब से अच्छा या यों कहिए, सारे व्याख्यानों में सब से अच्छा व्याख्यान राजेन्द्रबाबू का हुआ । उनके व्याख्यान में हृदय बोल रहा था । साम्यवादियों की ओर से बोलने वालों में नरेन्द्रदेव जी का व्याख्यान सबसे अच्छा था या यों कहिए राजेन्द्रबाबू के बाद नरेन्द्रदेवजी का ही व्याख्यान सबसे अच्छा था । अपने तो यह मानने वालों में हैं कि पद-ग्रहण का पक्ष ही कांग्रेस के सामने नहीं आना चाहिए, वह तो क्रान्तिकारी संस्था है और जब तक देश स्वाधीन न हो तब तक उसे उग्र क्रान्तिकारी संस्था बनी रहनी चाहिए । क्रान्ति करने वाले लोग या क्रान्ति चाहने वाले लोग कभी विदेश सरकार के अन्दर कोई पद स्वीकार नहीं किया करते । वर्किंग कमेटी के निश्चय को पलटना सहज नहीं होता, उसके निश्चित बँधे हुए वोट हैं इसलिए उनका जो प्रस्ताव होता है वही पास हो जाता है । साम्यवादियों की अभी देश के सामने कोई सेवा नहीं, उनमें जवाहरलालजी को छोड़कर दूसरा बहुत बड़ा व्यक्ति सामने नहीं । केवल किताबी ज्ञान रखने वालों का प्रभाव तो नहीं पड़ सकता । यह निश्चय-सा मालूम होता है कि नौजवान इस तरफ झुक रहे हैं और एक दिन निश्चय ही चाहे किसी रूप में हो देश में साम्यवाद की स्थापना होगी और उसी दिन देश का दर्द वास्तव में दूर होगा और देश में जो सच्ची भावना से काम करने वाले लोग हैं उनके विचारों में भी फर्क आ जाएगा और वे साम्यवाद के मुख्य स्वरूप को मानकर काम करने लगेंगे । अपने वोट देने के

अधिकारी नहीं थे इसलिए जल्दी आ गये ।

१२ अप्रैल : बापूजी की प्रार्थना और रामायण में शामिल हुए । विषय-निर्वाचनी में गये, वहाँ से प्रदर्शनी, फिर **छः बजे कांग्रेस की सभा** में । स्वागत समिति की टिकट ख़रीदी और पण्डाल में गये । भीड़ अधिक नहीं थी, आहिस्ते-आहिस्ते थोड़ी भीड़ हुई पर कांग्रेस में जैसी भीड़ हुआ करती है. कांग्रेस की जो शान पहले के अधिवेशनों में देखी है उस को याद करते है तब यह कांग्रेस फीकी दीख पड़ती है । यदि पूज्य महात्माजी और मालवीयजी उपस्थित नहीं होते तो यह कांग्रेस वास्तव में देखने की दृष्टि से तो बहुत ग़रीब कांग्रेस होती, इन दो बड़े व्यक्तियों की उपस्थिति से थोड़ी शोभा हो गयी पर इसमें निराश होने की कोई बात नहीं, इसके कई कारण हैं, एक तो इस समय देश अपने को पराजित अनुभव करता है, लोगों में जोश नहीं । भीतर दर्द पहले से अधिक होते हुए भी बेबसी मालूम हो रही है । दूसरे लखनऊ वालों की परस्पर की लड़ाई ने भी लोकल लोगों पर तथा बाहर के लोगों पर बुरा प्रभाव डाला है, परिणामस्वरूप काफी रुपये खर्च करने पर भी स्वयंसेवक नहीं मिले, अत· प्रबन्ध अच्छा नहीं कर सके । सवा छह बजे कार्यवाही शुरू हुई । उपस्थिति इस समय एक प्रकार अच्छी हो गई थी । सर्वप्रथम वन्दे मातरम् गीत हुआ, एक और गीत हुआ । स्वागत समिति के सभापति श्रीप्रकाशजी का भाषण हुआ, जो बहुत छोटा होने पर भी सारी बातों से भरा हुआ था । इस के बाद जवाहरलालजी का भाषण हुआ, भाषण अँगरेजी, हिन्दी, उर्दू में छपा कर बाँटा गया था । जवाहरलालजी ने इसे अँग्रेजी में लिखा पर वे भाषण को सामने रखकर हिन्दी में बोल रहे थे, बोलते समय भाषण को और भी बढ़ा दिया । पूरे सवा दो घण्टा बोले । भाषण निहायत जोशीला, स्पष्ट और साम्यवादी था । कहीं पर भी जवाहरलाल जी में हिचक नहीं है, अपने विचारों को वीरता और निर्भीकतापूर्वक प्रकट करते हैं, शब्द-शब्द से यह चीज़ टपक रही थी । इस आदमी में यौवन, उत्साह, जोश और हिम्मत का समुद्र भरा पड़ा है । मर्यादा को तोड़ने वाला नहीं, समुद्र होते हुए भी मर्यादित है । सुभाषबाबू की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में प्रस्ताव सभापति द्वारा ही हुआ ।

१३ अप्रैल : बापूजी की प्रार्थना और रामायण में गये । सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में गये, उसके समाप्त होने पर प्रदर्शनी में गये । कांग्रेस के अधिवेशन मे गये । आज मुख्य प्रस्ताव था कि कांग्रेस के लोग मन्त्री बनें या नहीं पर वर्किंग कमेटी की तरफ से प्रस्ताव रखा गया कि अभी इस विषय पर कांग्रेस कोई निश्चय नहीं प्रकट करती । साम्यवादी लोग अपने संशोधन रख रहे थे कि इस विधान में कांग्रेस किसी भी हालत में मन्त्री पद स्वीकार नहीं कर सकती । मुख्य संशोधन सम्पूर्णानन्द का था, और भी चार संशोधन थे जिसमें सरदार शार्दूलसिंह (कवीश्वर) का एक था । क़रीब बीस वक्ताओं ने संशोधनों और मुख्य प्रस्ताव पर भाषण

दिये। रात के एक बजे वोट लिये गये जिसमें वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव पर चार सौ अस्सी वोट आये और संशोधनों पर ज्यादा से ज्यादा दो सौ पचपन आये। काफ़ी बहुमत से वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव पास हो गया, क़रीब डेढ़ बजे अधिवेशन समाप्त हुआ। चाहे यह प्रस्ताव कैसा ही हो पर इस बार का मुख्य प्रस्ताव यही था। देश की मनोवृत्ति पद-ग्रहण की तरफ़ लग रही है। पराधीनता का पाप इससे मिट नहीं सकता यह भी सब कहते हैं तो भी पद-ग्रहण करना आवश्यक समझा जाता है। क्या किया जाये ? जो दुर्भाग्य है वह तो भोगना ही पड़ेगा।

१४ अप्रैल : मोती नगर में जवाहरलालजी का व्याख्यान था, वह सुना। बंगाल के कैम्प गये। एक सभा हो रही थी जिसमें विचार किया गया कि साम्प्रदायिक समझौते के सम्बन्ध में कांग्रेस ने जो निश्चय किया है उसको मान्य कर के कार्य करें, वहुत वाद-विवाद चला, अपने चले आये, कुछ निश्चय होगा, ऐसा नहीं मालूम होता। आज सबजेक्ट कमेटी में नहीं गये। शाम काँग्रेस में गये, कई प्रस्ताव थे जिनमें वाद-विवाद था। देशी राज्यों के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव था उस पर काफ़ी भाषण हुए पर शेष में वर्किंग कमेटी की तरफ से रखे गये प्रस्ताव ही पास हुए। कांग्रेस का अधिवेशन रात दो बजे सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

कांग्रेस अधिवेशन तथा और बातों पर अपने विचार –चार अप्रैल भागीरथजी के साथ इलाहाबाद रवाना हुए, वहाँ चार दिन रह लखनऊ गये। दस दिनों मे कांग्रेस नेताओं के साथ तथा कांग्रेस की कार्यवाही के सम्बन्ध में काफी सोचने का मौका मिला। पूज्य महात्माजी के साथ ठहरने के कारण भी थोड़ा-बहुत सुख मालूम होता रहा। वर्किग कमेटी और सभापति जवाहरलालजी में जो विचार-भेद है वह सामान्य-सा नहीं है बल्कि बहुत गहरा है। यदि इसमे कामचलाऊ समझौता नहीं हुआ तो काग्रेस की आगे की कार्यवाहियो मे काफी गोलमाल होगा तथा देश की स्थिति और भी खराब होगी। वर्किग कमेटी मे जो लोग है वे भी खूब प्रभावशाली है। इधर जवाहरलाल का तथा साम्यवाद का प्रभाव भी जनता मे बढ़ रहा है। वर्किग कमेटी के लोगों में वल्लभभाई साम्यवादियों से बहुत चिढ़े हुए है, राजेन्द्रबाबू भी साम्यवाद के समर्थक नहीं तथा जमनालालजी भी इन लोगों के मन के ही है। खासकर पूज्य महात्माजी भी जवाहरलालजी के विचारो से सहमत नहीं है। ऐसी स्थिति में एक जटिल समस्या देश के सामने है। यदि साम्यवादियों पर भरोसा किया जाये तो उनमें अभी तक ज़ोरदार, सच्चे तथा प्रभावशाली आदमी नज़र नहीं आते। दो चार आदमी है पर इतने से काम नहीं चल सकता, बाकी ज्यादा लोग तो किताबी ज्ञान पर बातें करने वाले हैं, उनमें त्याग, सच्चाई और देश के लिए मर मिटने की लगन वालों की अभी कमी मालूम होती है। ऐसा भी कहा जाता है कि इन लोगों को मौका ही नहीं मिला। इनके हाथ में कांग्रेस आ जाएगी तब वे भी इस प्रकार काम कर सकेंगे। जवाहरलालजी बिल्कुल सच्चे और पूरे साम्यवादी

हैं, उनमें कार्य करने की क्षमता है । त्याग और वीरता के तो वे पुतले हैं पर उनको सरकार कुछ भी नहीं करने देगी । वे जिस तरह बोलते हैं, विचार प्रकट करते हैं, उसमें उनका बाहर रहना मुश्किल मालूम होता है । इस बार जो स्थिति पैदा हुई है वह ज्यादा चिन्ता पैदा करने वाली है ।

कांग्रेस का प्रबन्ध– लखनऊ काँग्रेस का प्रबन्ध बहुत ही खराब था । वालेंटियर कम थे, जो थे वे भी काम लायक नहीं । महिला स्वयंसेविकाओं की भी काफी कमी थी । लखनऊ के लोगों में काफी झगड़ा था । एक-दूसरे का सहायक न होकर उलटा नीचा दिखाने की कोशिश करता था । स्वागत समिति के प्रधान बनारस के श्रीप्रकाशजी तथा प्रधानमन्त्री डॉ. मुरलीलालजी कानपुर के थे । जो कुछ भी प्रबन्ध हो सका उसका श्रेय डॉ. साहब को देना चाहिए । बेचारे बहुत मेहनत करते थे और बड़ी नम्रता से पेश आते थे । इससे प्रकट होता है कि लखनऊ के लोग इन प्रधान पदों के लिए झगड़ते रहे और परस्पर में कुछ भी तय नहीं कर सके।

कांग्रेस प्रदर्शनी –प्रदर्शनी का भार भी बाहर के लोगों पर था । चरखा संघ के मन्त्री शंकरलालजी बैंकर तथा उनके साथी कई दिनों से आये हुए थे और सारा भार उन पर था । इन लोगों ने जो ढाँचा इस बार तैयार किया था वह वास्तव में अच्छा था । जिसे प्रदर्शनी कहना चाहिए वह इस बार थी । काँग्रेस प्रदर्शनी तो बराबर होती है पर ग्रामोद्योग की चीजें, चित्र आदि की व्यवस्था, स्वास्थ्य सम्बन्धी और दूसरे तरह के चार्ट बहुत ही अच्छे थे । खादी मन्दिर की सजावट भी बहुत अच्छी थी । नन्दलाल बोस की गैलरी देखने लायक़ थी और भी कई नयी चीज़ें थीं । प्रदर्शनी का प्रबन्ध भी उत्तम था ।

कांग्रेस नेताओं का प्रभाव

महात्मा गांधी–पूज्य महात्माजी एक प्रकार से राजनीति से अलग हैं पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव जनता पर ज्यों का त्यों है । न मालूम क्या सोच कर कांग्रेस-फील्ड से अलग हो गये है । उनके अलग रहते हुए भी सब लोग उनके पास हर समय सलाह लेने जाते हैं । वे किस तरह और कैसी सलाह देते हैं, निज में क्या सोचकर चुप हैं इस विषय में कुछ भी कहना कठिन है । पर उनकी मुख-मुद्रा तथा उनकी दूसरी बातों से वे सुखी नहीं जान पड़ते। वैसे तो वे इन सब बातों से ऊपर हो गये है पर परिस्थिति का स्वाभाविक असर तो होता ही है । जनता उनको बहुत प्यार करती है पर वास्तव में वे जो चाहते है वैसा करना

या तो जनता की शक्ति के बाहर है या वह वैसा करना नहीं चाहती। इसलिए पूज्य महात्माजी के सामने काम करने की कठिनाई मालूम होती है। वैसे तो वे चौबीस घण्टे देश का ही काम करते हैं और उनके कामों से देश ऊँचा उठता है। देश की उन्नति होती है, स्वावलम्बन आता है। पर इस समय वे सूत्रधार नहीं हैं और न बनना ही चाहते हैं। अपने उनके पास ही ठहरे थे इसलिए प्रायः बहुत सी बातें देखने, सुनने का मौका मिलता रहा। उनके प्रति अपनी जो भक्ति और श्रद्धा हैं वह बढ़ी ही हैं। वे शायद इस युग के सबसे बड़े पुरुष हैं। उनकी महत्ता का आज देश अन्दाज नहीं कर सकता। चाहे साम्यवादी, चाहे किसी दूसरे सिद्धान्त का, भारतवर्ष किसी सिद्धान्त से किसी प्रकार स्वतंत्र हो। वह स्वतंत्र तो होगा ही। चाहे जवाहरलाल जी के प्रयत्न से चाहे और किसी के पर पूज्य गांधीजी की जो महत्ता है वह किसी समय और किसी हालत में घट नहीं सकेगी। ज्यों-ज्यों समय निकलेगा त्यों-त्यों बढ़ेगी ही। हो तो यह भी सकता है कि शायद उनके जाने के बाद लोग सच्चे गांधी को पहचानें और पार्थिव गांधीजी जो पूज्य हैं उससे बहुत अधिक उस समय गांधीजी की पूजा हो। अपने को भी आज चाहे मोहवश या कमज़ोरी के कारण या अपनी राग-द्वेष भरी वृत्ति के कारण गांधीजी के साथ सिद्धान्त नहीं रुचते और न मन ही स्वीकार करता है कि उन सब को मान कर चलना चाहिए पर उनके प्रति नतमस्तक हो कर प्रणाम करने में उनकी भक्ति और श्रद्धा रखने में प्रसन्नता होती है, सुख होता है।

जवाहरलाल—कुन्दन है, सच्चा है, वीर है, त्यागी है, साहसी है। अपूर्व देश-भक्त, आज़ादी का दीवाना, मर मिटने के लिए तत्पर है पर सब कुछ होते हुए भी वह आज देश के सर्वप्रथम नेता के गुणो वाला नहीं मालूम होता। उसके द्वारा देश का संचालन करना कठिन है। उस के विचार अति उग्र है और वे ठीक हैं पर उन विचारों को प्रकट करने भर से तो काम नहीं चल सकता। उन विचारों के अनुसार देश में तैयारी करना, वैसे कार्यकर्ता तैयार करना, उनका संगठन करना, अपनी शक्ति का जोर बाँधना ऐसी कितनी ही बातें है। बिना सच्चे कार्यकर्ताओ का, शक्तिशाली, बुद्धिशाली और मर मिटने की चाह वाले लोगों का एक संगठन जब तक अपने पीछे नहीं बना लेगा तब तक उसका कार्य देशव्यापी प्रभाव पैदा नहीं कर सकता, और इसका अभी जवाहरलाल जी में अपने को अभाव सा ही नज़र आता है, पर यह निश्चय है कि वह निज में निहायत बुद्धिमान्, विचारवान् और सचाई से भरा हुआ हे। उसके ऊपर पश्चिम के विचारों का खूब प्रभाव है, वह लड़ाई के स्वप्न देखता है और उसके द्वारा ही भारतवर्ष का सवाल भी तय होगा, ऐसी उस की विचारधारा अपने को मालूम होती है। लड़ाई होगी ही और उसके द्वारा भारतवर्ष को लाभ भी होगा ही पर मुख्य बात लोगों में शक्ति आना है।

राजेन्द्रबाबू–इन के प्रति जनता में खूब प्रेम है । बड़े सरल, सच्चे, देशभक्त और अपने आप को देश को अर्पण किये हुए बुद्धिमान् तथा नीतिज्ञ आदमी हैं। उनका अभी काँग्रेस और देश में काफी प्रभाव है ।

वल्लभभाई –ज़ोरदार आदमी हैं । जनता की राय की क़दर न कर अपनी चलाने वाले आदमी हैं । प्रभावशाली है । उनका पहले जैसा आदर तो अब नहीं है पर वे अपनी शक्ति रखते हैं और उसके प्रभाव से अभी देश की भावी नीति में उनका काफ़ी हाथ है । और भी सब लोग हैं और सब ही अच्छे है पर इस समय यह चार पाँच आदमी देश की हालत को बनाने-बिगाड़ने वाले हैं।

श्री सुभाषबाबू – बहुत वर्षों से जेल के मेहमान रहे हैं या भारतवर्ष के बाहर रहे हैं । अपनी निगाह में देश के विशेष आदमियों में है । जवाहरलाल से कम आग के गोले नहीं बल्कि कई बातों में वे उससे भी आगे बढ़े हुए है पर दुर्भाग्य है कि उनको आजतक देश ने और सरकार ने दोनो ने ही काम करने का मौक़ा ही नहीं दिया ।

जमनालाल जी–इस बार पूज्य जमनालाल जी के प्रति भी अपनी श्रद्धा बढ़ी है । आदमियों में कमजोरी तो रहती ही है पर जमनालाल जी भी सामान्य आदमियों मे नहीं गिने जा सकते । उनकी सहनशीलता, कार्य करने की शक्ति और सबसे ज्यादा उनकी सबके साथ मिलकर काम कर सकने की बात ने अपने को उनके प्रति श्रद्धावान् बनाया है । ईश्वर को अनेक धन्यवाद है, उसकी परम कृपा है कि अपने को उनके पास जाने का इतने लोगों के थोड़े सम्पर्क में आने का मौक़ा देता है ।

ईश्वर का सहारा– अपना कुछ भी वश नहीं है, अपने कुछ भी कर नहीं सकते है । अपने साम्यवाद तथा विज्ञान के विचारों में थोड़ा-बहुत विश्वास रखते है पर तो भी अपना यह विचार बराबर बना हुआ है कि अपने को ईश्वर का सहारा चाहिए। अपने लिए तो वह अणु-परमाणु सब में बसने वाला है और ऐसे प्रभु से ही अपने प्रार्थना करते है कि हे प्रभु, कृपा करो और सचाई की तरफ जिसमें सबका सबसे ज़्यादा हित हो ऐसे काम में इस जीवन की पूर्णाहुति कराओ।

१५ अप्रैल : पू. वापूजी के रामायण पाठ में शामिल होने की बहुत इच्छा थी पर जवाहरलालजी तथा राजेन्द्र बाबू आ गये । इसलिए आज रामायण में बहुत देर हुई । दो बजे की गाड़ी से कलकत्ता जाना था इसलिए रामायण में शामिल नहीं हो सके । इस बार प्रायः रामायण में शामिल होने का मौका मिला जिसमें खूब आनन्द आया । पूज्य महात्माजी से मिले, कलकत्ता जाने की आज्ञा मांगी तो उन्होंने कहा– ठीक है, कुछ कहना तो नहीं है । अपने कहा, कहना तो बहुत है पर आप को समय कहाँ है तब बोले, वर्धा आओ । पूज्य जमनालाल जी, जानकी बहन आदि लोगों से मिलकर स्टेशन गये ।

१०. : फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन

२२ दिसम्बर, १९३६ : आज फैजपुर जाने का विचार था। भगवानदेवी की तबीयत ख़राब थी, वैसे तो उसकी तबियत आजकल ख़राब ही रहती है पर आज पेट में दर्द था। अपने जाने की तैयारी कर चुके थे और जाना ज़रूरी मालूम होता था। भगवानदेवी ने तो कह दिया कि मेरी तबीयत की चिन्ता नहीं है, आप जाइए पर मन भीतर से थोड़ा हिचक रहा था शेष में जाना ही ठीक जँचा। भगवानदेवी के पेट में दर्द था और उसके पास कोई आदमी या स्त्री नहीं है इसकी फिक्र थी पर आ गये। ईश्वर सब अच्छा ही करेगा। सेकेंड क्लास का टिकट था इसलिए भीड़ का तो सवाल नहीं था पर सेकेंड क्लास में जाना अखर रहा था। एक अपनी तबीयत ख़राब का बहाना, दूसरे पन्ना की छोटी बच्ची का साथ इन कारणों से सन्तोष कर लेते थे।

२३ दिसम्बर : पन्ना वर्धा उतर गयी।

२४ दिसम्बर : मोटर लारी से फैजपुर पहुँचे। जमनालाल जी के कैम्प गये। सामने ही जानकीबहन मिलीं, उनसे थोड़ी बातें कीं, इतने में पूज्य महात्माजी घूमते हुए आ गये, प्रणाम किया। उन्होंने पूछा, तबियत कैसी है, कमज़ोर मालूम होते हो। शाम को मालूम हुआ कि ब्रजलाल गोयनका पागल हो गये हैं, उनके पास गये।

२५ दिसम्बर : पूज्य महात्माजी के हाथ से प्रदर्शनी का उद्घाटन था। उन्होंने ग्रामोद्योग, खादी, ग्राम-कला और प्रदर्शनी के कार्यकर्ताओं के सम्बन्ध में व्याख्यान दिया। बीच-बीच में विनोद और चुटकियाँ भी वे लेते थे, वे बड़ी उच्च कोटि की होती थीं। इतने में बंगाल काँग्रेस कमेटी के एक भाई बसन्तलालजी का पत्र लेकर आये जिसमें लिखा था, बंगाल प्रान्त का जो हिस्सा (अंशदान) आल इंडिया काँग्रेस कमेटी को देना है वह नहीं दिया जा सका इसलिए सौ रुपया दे दीजिएगा। यह बात अपने को बहुत बुरी मालूम हुई। बंगाल प्रान्त की काँग्रेस का यह कार्य किसी काम की बात नहीं। उसको अपना हिस्सा आज से पहले ही देना चाहिए था। और इसके लिए अपने से पहले ही कहना चाहिए था पर लोग बड़ी ग़ैर ज़िम्मेदारी और बेढंगेपन के साथ काम करते हैं। खैर, जो भी हो रुपये तो दिये ही। आल इंडिया की मीटिंग में मेम्बर की हैसियत से सम्मिलित हो रहे हैं इसलिए एक प्रकार से इसमें नये हैं। चुपचाप कार्यवाही देखते रहे। एक ही प्रस्ताव रखा गया था वही पास हुआ। साम्यवादियों की तरफ से दो तीन संशोधन थे पर वे सब बहुत बड़े बहुमत से गिर गये।

२६ दिसम्बर : प्रदर्शनी देखने गये, वहीं पूज्य महात्माजी भी गये थे, थोड़ी

देर उनके साथ रहे। खादी वालों से मिले और भण्डार के लिए थोड़ा माल छाँटा। प्रदर्शनी एक प्रकार से बिलकुल नयी चीज़ है,इसे नन्दलाल बोस ने सजाया है। ऐसी चीजें दिखायी गयी हैं जो ग्रामों के अन्दर बिना किसी पावर वाली मशीन की मदद से बन सकती हैं। ब्रजलाल गोयनका को कलकत्ता भेजा। सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में गये। कई प्रस्ताव जो वर्किंग कमेटी की तरफ से रखे गये थे, मामूली हेर-फेर के साथ पास हो गये।

२७ दिसम्बर : झण्डा अभिवादन में गये। अभिवादन के पाँच-दस मिनट पहले अजीब घटना हो गयी, जिस डोरी पर झण्डा लगा, कर चढ़ाया जाने वाला था वह ऊपर से उतर कर गिर गयी। इतने ऊँचे खम्भे पर, जो नीचे से मोटा होते हुए भी ऊपर से काफी पतला, ऊपर चढ़ कर डोरी कौन लगाये ? एक महाराष्ट्री लड़के ने हिम्मत की। बड़ी बहादुरी और फुर्ती से ऊपर चढ़ा और डोरी ऊपर चढ़ा आया। जिस समय ऊपर चढ़ रहा था उस समय अपूर्व दृश्य था, सारे लोगो की आँखे उसकी ओर लगी हुई थीं और मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि लड़के को सही सलामत उतार दें। जब वह नीचे आया तो लोगों का हृदय आनन्द से लहराने लगा, स्वागत समिति के प्रधान महाराष्ट्र के त्यागी देशभक्त श्री शंकरराव देव ने उछल कर उसको हृदय से लगा लिया, राष्ट्रपति जवाहरलाल जी ने उस से हाथ मिलाया, कई लोगों ने इनाम दिया।

अभिवादन के बाद प्रदर्शनी में पूज्य महात्माजी के व्याख्यान में गये। वहां टिकट मिलना मुश्किल हो रहा था। भीड़ का ठिकाना नहीं था। ऐसा व्याख्यान इन चार-पाँच वर्षों में शायद महात्माजी ने नहीं दिया होगा, करीब सवा घण्टा बोले होंगे और प्राणों को खोल हृदय के उद्‌गार प्रकट किये। उसका नोट कहीं मिल जाये तो वह रखने का विचार है, इसलिए यहाँ कुछ नहीं लिखते।

आज से काँग्रेस आरम्भ होने वाली थी, उसमें गये। भीड़ इतनी थी कि भीतर प्रवेश करना कठिन हो रहा था। ग्रामों से बहुत अधिक लोग आये थे, यह विशेष आकर्षक तथा काम की थी। पण्डाल, मंच, दरवाजे, तोरण बाँस ग्रामीण चीजों से बनाये गये थे, सभी चीजें सुन्दर बनी थीं। पण्डाल बहुत विराट् था, उपस्थिति से मनुष्यों का समुद्र जैसा मालूम होता था। सभापति जवाहरलाल जी पौने दो घण्टा बोले। थोड़े प्रस्ताव हुए। लोगों के आग्रह और इतने जनसमूह की इच्छा के कारण पूज्य महात्माजी भी थोड़ा सा बोले।

२८ दिसम्बर : सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में गये, प्रस्तावों पर वाद-विवाद हुआ और वे पास हुए। आगामी वर्ष के लिए गुजरात का निमन्त्रण स्वीकार हुआ। स्नान-भोजन के बाद खुले अधिवेशन में गये। सर्दी अधिक होने तथा अधिक लोगों के आ-जाने और उनका प्रबन्ध कर सकने की कठिनाई के कारण कांग्रेस अधिवेशन आज ही समाप्त करने का विचार किया गया और रात ग्यारह बजे तक कार्यवाही

चलती रही। काँग्रेस खूब ही सफलतापूर्वक समाप्त हुई। कोई खास प्रस्ताव नहीं हुआ और न कोई कार्यक्रम ही रखा गया पर तो भी ग्राम की काँग्रेस थी और ग्राम के लोगों ने इसमें इतनी दिलचस्पी ली यह इसकी खास विशेषता थी।

२१ दिसम्बर : पूज्य जमनालालजी के साथ नेताओं के कैम्प में गये। नई वर्किंग कमेटी की जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा की। पूज्य जमनालालजी क़रीब सोलह वर्षों से वर्किंग कमेटी में हैं और कोषाध्यक्ष हैं। इस बार वे छोड़ना चाहते हैं। अपनी इच्छा थी कि वे न छोड़ें पर उनका छोड़ने का हठ था। इसी बीच राजेन्द्रबाबू और वल्लभभाई आदि से थोड़ी बातें हुईं। हल्की सी चर्चा अपने नाम की भी आयी पर इस समय अपने इसके योग्य नहीं हैं। इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी लेने की इच्छा नहीं होती और ऐसे मिल भी नहीं रही है तथा कोशिश कर लेने की तो इच्छा ही नहीं है। काँग्रेस में आये मारवाड़ी भाइयों की एक परामर्श सभा थी, उसमें गये। कई तरह की बातें हुईं और एक अखिल भारतीय संगठन करने पर विचार हुआ। अपने को इस प्रकार का जातीय संगठन विशेष रुचता नहीं। बम्बई रवाना हुए।

छह दिन फैजपुर रहे। ये छह दिन अच्छे बीते, यह कहना चाहिए, दिन भर काम में रहे। पूज्य महात्माजी, जमनालाल जी, राष्ट्रीय नेताओं और देश की स्वतंत्रता की भावना के वातावरण में रहे, यह अच्छा प्रतीत होता था। फैजपुर आने वालों को कई तरह की असुविधा तथा तकलीफों का सामना करना पड़ा। पर ईश्वर की कृपा से अपना स्वास्थ्य अच्छा रहा। खाने पीने का ढंग महाराष्ट्री था, सभी चीजों में तेल गुड़ रहता था तथा चावल का भाग ज़्यादा था, यह भोजन अपने को बिलकुल ही नहीं जँचता। पर जमनालाल जी के यहाँ अपने तथा दो चार आदमियों के लिए भोजन का अलग प्रबन्ध था। पूज्य जानकी बहन तो अपने को विशेष रूप से प्रेम करती हैं। यह कहना चाहिए कि जैसे माँ-पुत्र, भाई-बहन का जो सम्बन्ध, प्रेम दुःख-दर्द में, सुख-दुःख में होता है उसी प्रकार वह निगाह और ध्यान रखती थीं। इस से अपने को सन्तोष होता है। फैजपुर की यह यात्रा ईश्वर की कृपा से आनन्ददायक रही।

११ : हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन

१४ फरवरी १९३८ : ए. आई सी. सी. के मेम्बर चुन तो लिये गये। काँग्रेस देश की सर्वमान्य, आज़ादी का आन्दोलन करने वाली मुख्य संस्था है पर

इसमें जैसे लोग शामिल हैं और जिन तरीकों से काम लिया जाता है वह बहुत ही अनुचित हैं। इसका कारण यही होगा कि ज़्यादा बड़ी संस्था होने से सब तरह के लोग इसमें घुस आते हैं। पर सबसे बड़ी बात तो यह है कि देश का काम करने वाले क्यों इतने नीचे उतर आते हैं। यह देख कर दुःख होता है। अपने इस क्षेत्र में आ गये हैं, अब न तो हटा जाता है और न ऐसे लोगों के साथ काम करने में सन्तोष होता है।

१५ फ़रवरी : दोपहर एसोसिएटेड प्रेस के तार से मालूम हुआ कि बिहार मन्त्रिमण्डल ने इस्तीफा दे दिया है और यू. पी. के मन्त्री भी दे देंगे। इस्तीफ़ा राजनीतिक क़ैदियों की रिहाई के सम्बन्ध में गवर्नर से मतभेद होने के कारण देना पड़ा। परिणाम क्या होगा कहना मुश्किल है पर ये सब बातें ज़रूर संघर्ष के नजदीक ले जाने वाली हैं और बिना संघर्ष के देश स्वाधीन भी नहीं हो सकता। इस बात को लेकर कोई लड़ाई हो सकती है ? यदि लड़ाई जारी हो गयी तो अपने क्या करेंगे। जेल जाना तो निश्चित मालूम होता है और भी न मालूम क्या हो। हे प्रभु ! कर्तव्य पालन करने का बल और बुद्धि दीजिए। देश की सेवा में, आज़ादी, की लड़ाई में प्राण भी जायें तो अच्छी बात है। देश के लिए मरने से बढ़कर क्या बात हो सकती है। अपनी तबीयत जेल में ख़राब हुई थी वह सुधरी नहीं। जो भी हो मौक़ा आ जाये तो पीछे हटना बड़ी भारी कमज़ोरी, कायरता होगी। सेवा सदन में रोगी तो कम हैं पर सब ज़्यादा बीमार हैं और प्रबन्ध भी थोडा ढ़ीला है। आजकल भाई भागीरथ जी सब काम करते हैं। दयालु स्वभाव के आदमी हैं इसलिए व्यवस्था तो ढीली हो ही जाती है पर वे बड़ी लगन से काम करते है। सब ठीक हो जाएगा। अपने तबीयत की ख़राबी के कारण काँग्रेस नहीं जाना चाहते थे पर आज इस्तीफ़े से जो स्थिति पैदा हो गयी है उसके कारण जाने की इच्छा होती है।

१६ फ़रवरी : काँग्रेस के लिए लोग रुपये माँगने आये। इन्कारना भी मुश्किल और देने की ताकत भी नहीं तो भी कई लोगों को तो देने ही पड़े। इस बार काँग्रेस की तैयारी जिस उत्साह, उमंग से हो रही है उसके कारण जाने की इच्छा खूब ही हो रही थी पर तबीयत ख़राब होने के कारण जाने का साहस नही हो रहा था। डॉक्टर और मित्र भी जाने की राय नहीं देते थे पर कल से जब मिनिस्ट्री टूटने की ख़बर आयी तब से मन में चंचलता हो रही है। इसलिए आज जाना तय कर लिया। साढ़े आठ बजे की गाड़ी से हरिपुरा काँग्रेस रवाना हो गये।

१८ फ़रवरी : साढ़े चार बजे गाड़ी मढ़ी स्टेशन पहुँची। काँग्रेस की तरफ से बहुत अच्छा इन्तज़ाम था। लाउडस्पीकर द्वारा स्टेशन पर विट्ठलनगर जाने, वहाँ रहने आदि की सूचना दी जा रही थी। अपने लोग लारी करके विट्ठलनगर रवाना हुए, रास्ता ख़ूब साफ़ था। जगह-जगह पुलिस खड़ी थी। विट्ठलनगर दो मील

रह गया तब तो एक प्रकार की विशेषता दिखाई देने लगी। विट्ठलनगर में नेता-निवास में पूज्य जमनालाल जी के पास गये। नेता-निवास से सटी हुई पूज्य महात्मा जी की कुटी थी। नेता-निवास में दो भाग थे– एक में सभापति तथा वर्किंग कमेटी के मेम्बरों के अलग-अलग कैम्प बने हुए थे, दूसरे में काँग्रेस सरकार के मन्त्री तथा असेम्बलियों के सभापति आदि थे। पूज्य जानकीबहन के साथ नेता-निवास के रसोई घर में भोजन करने गये। साधारण भोजनालय में जो भोजन की व्यवस्था थी वह भी सुना कि अच्छी थी पर नेता-निवास के तो सभी कामों में विशेषता रखी गयी थी। रात में पूज्य जमनालाल जी से राजनीतिक बातें होती रहीं, स्थिति का ज्ञान हुआ। सारा काम पूज्य महात्माजी चाहेंगे और करेंगे वैसा होगा, उनका प्रभाव सब जगह काम कर रहा है। पूज्य जमनालाल जी तथा जानकी बहन का प्रेम कहिए या कृपा अपने ऊपर खूब ही है।

१९ फ़रवरी : साढ़े आठ बजे **झण्डोत्तोलन** हुआ। सरदार वल्लभभाई तथा दूसरे नेताओं के साथ सुभाषबाबू आये। बहुत अधिक भीड़ हो गयी थी, दो लाख से तो कम बिलकुल नहीं होगी। वन्दे मातरम् गाया गया फिर सुभाषबाबू ने झण्डा फहराया। झण्डा फहराने के बाद उन्होंने हिन्दी में व्याख्यान दिया। सुभाषबाबू की मातृभाषा बाँग्ला है। इसलिए उनकी जो हिन्दी थी वह सुन्दर ही कही जाएगी। व्याख्यान बहुत लम्बा था इसलिए विशेष अच्छा नहीं लगा।

दूध की व्यवस्था बहुत अच्छी है। पूज्य महात्माजी की इच्छा से गाय का दूध ही बरता गया था और खास गोशाला की व्यवस्था की गई थी। चावल मशीन का नहीं था, हाथ का था। आटा भी हाथ या बैल की चक्की का ही काम में लिया गया, तेल भी घानी का था। चीनी की जगह ज़्यादा कर के गुड़ से ही काम लिया गया था। इस प्रकार सारी चीजें पवित्र, गुणकारी, शुद्ध और ग्रामों में बनी हुई थीं। इन चीजों को बनाने में गाँव में रहने वालों को मजदूरी मिली थी। विषय निर्वाचनी समिति में गये पर ख़ास बात नहीं थी। भोजनालय में विलायत की लेबर पार्टी के लार्ड सेम्योल होर ने भी भोजन किया।

पाँच बजे **काँग्रेस का अधिवेशन** था। अजीब दृश्य था। चारों ओर मनुष्य ही मनुष्य। चारो तरफ़ लाउडस्पीकर थे, पण्डाल बहुत विशाल था। पीछे की तरफ़ नेताओं के बैठने का मंच था, बीच में व्याख्यान देने के लिए एक ऊँचा सुन्दर खूब सजा हुआ स्थान जिस को अँगरेजी में रोस्ट्रम कहा जाता है, बनाया गया था। पण्डाल में दो लाख आदमी बैठ सकें इतनी जगह का प्रबन्ध था। पाँच बजे नेताओं के साथ सुभाषबाबू ने पण्डाल में प्रवेश किया। सब ने खड़े होकर वन्दे मातरम्, महात्मा गांधी की जय, सुभाष बोस की जय के नारों के साथ स्वागत किया। सुभाषबाबू के अपने स्थान पर बैठ जाने के बाद बिलकुल शान्ति हो गयी। सबसे पहले बंगाल की गाने वाली पार्टी ने बन्देमातरम् गाया। सब

लोगों ने खड़े होकर सुना । स्वागत समिति के सभापति दरबार साहब गोपालदास ने अपना बहुत ही छोटा-सा भाषण पढ़ा शायद यह पहला ही इतना छोटा भाषण था जो काँग्रेस के स्वागताध्यक्ष ने दिया । दरबार साहब गुजरात के प्रसिद्ध रईस है और पूज्य महात्माजी के मार्ग पर चलने वाले सच्चे आदमी है । सुभाषबाबू ने हिन्दी मे छपा हुआ अपना सभापति का व्याख्यान पढ़ कर सुनाया और फिर अँगरेज़ी मे भी थोड़ा पढ़ा । कई प्रस्ताव रखे गये और वे पास हुए ।

२० फ़रवरी सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग मे आज मिनिस्ट्री पर खास प्रस्ताव था जिसका मसविदा पूज्य महात्माजी ने तैयार किया था । प्रस्ताव क्या था एक वक्तव्य था । बहुत खुलासे और बड़ी चतुराई से तैयार किया गया था । इस प्रस्ताव को सरदार वल्लभभाई ने उपस्थित किया और लम्बी, सुंदर वक्तृता दी । साम्यवादी इस प्रस्ताव के विरोधी थे पर एक तो उनकी ताकत इस बार बहुत कम थी, दूसरे सुभाषबाबू के कहने से या एकता के लिए उन्होने कोई संशोधन नहीं रखा पर उन लोगो के जो व्याख्यान हुए वे प्रस्ताव के विरोध मे ही हुए । शेष सरदार वल्लभभाई ने सबका उत्तर देते हुए जो व्याख्यान दिया वह बहुत ही कड़ा हुआ और साम्यवादियो को बुरी तरह फटकारा और उनको चैलेंज दिया । आपके पक्ष मे निर्णय हो ना करा लीजिए नहीं तो व्यर्थ की बाते क्यो करते है । इस पर साम्यवादी लोग बहुत बिगड़े और काफी हो हल्ला मचा । सुभाषबाबू को जैसा कंट्रोल करना चाहिए था वैसा नहीं कर सके । थोड़ी देर मे अपने आप शान्ति हुई । साम्यवादियो ने कोई संशोधन नहीं रखा । प्रस्ताव के विरोध मे बहुत ही कम वोट आये । आज श्री गोविन्दवल्लभ पन्त की स्पीच बहुत सुन्दर हुई और बड़ी आत्मविश्वास पूर्ण । सरदारसाहब की पहली स्पीच तो बहुत अच्छी थी पर दूसरी बार वे जरा ठीक नहीं बोले ।

यहाँ भी **प्रदर्शनी** बहुत सुन्दर थी । भाई महावीरप्रसादजी पोद्दार भी आये थे । वे यहाँ प्रदर्शनी मे ही थे । पन्ना और प्रहलाद भी बम्बई से आये थे । प्रदर्शनी विशाल तो थी ही उसमे काम की बाते भी बहुत थीं । जो लोग ग्रामो मे काम करते है या करना चाहते है, उनके सीखने के लिए, ग्रामो के लोगो की हाथ के उद्योग से आय बढ़ाने के नए-नए तरीके बताये गये थे । सफाई और स्वास्थ्य की बाते भी खूब बतायी गयी थीं । इनके अलावा देश की कारीगरी की चीजे भी दिखायी गयी थीं । जिनमे मैसूर के हाथी दाँत का सोने के काम का सिंहासन था, जिसको बीस वर्ष कई लोगो को बनाने मे लगे । बताते है, उसकी क़ीमत दो लाख बतायी जाती है । जो भी हो चीज सुन्दर थी और हिन्दुस्तान के हाथ की कारीगरी का ख़ास नमूना थी । साढ़े पाँच बजे काँग्रेस का खुला अधिवेशन था । कई प्रस्ताव पास हुए । किसानो से सम्बन्धित प्रस्ताव तथा देशी राज्यो वाला प्रस्ताव ही आज मुख्य प्रस्ताव थे ।

२१ फरवरी : बिहार के प्रधानमन्त्री श्री बाबू की स्पीच का लोगों पर खूब प्रभाव पड़ा। मिनिस्ट्री के सम्बन्ध का प्रस्ताव वल्लभभाई ने पेश किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया। शेष में सुभाषबाबू की स्पीच हुई। रात ग्यारह बजे काँग्रेस का यह ऐतिहासिक इक्यावनवाँ अधिवेशन बड़ी शान्ति, गम्भीरता और शान के साथ समाप्त हुआ।

इस बार काँग्रेस की विशालता, प्रबन्ध, विट्ठलनगर की सारी व्यवस्था, सफाई, भोजन का इन्तजाम, स्वयंसेवकों और देश-सेविकाओं की तत्परता आदि सराहनीय ही नहीं निहायत उत्साह देने वाली और हमारी कार्यकारि शक्ति को प्रकट करने वाली, बल देने वाली थी। हजारों बहनें रात में पहरा देती थीं और दिन में रसोई-चौके का प्रबन्ध सँभालती थीं। वल्लभभाई का गुजरात में अपूर्व प्रभाव है। गुजरात के लोग काम की बात करते हैं। फ़ुजूल की बातों में शक्ति नहीं खोते, ऐसा प्रत्येक बार प्रकट होता था। सारी शक्ति पूज्य महात्माजी की है। उनका प्रभाव अद्वितीय है। पूज्य महात्माजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है उन्होंने प्रत्यक्ष कोई खास भाग नहीं लिया पर जो कुछ करते है वे ही करते है और वे जो करना चाहते हैं वही होता है। ईश्वर उनको बहुत दिन जीवित रखे और हमारे इस ग़रीब और पराधीन देश को सुखी और स्वाधीन करे।

२२ फरवरी : पूज्य महात्मा जी आठ बजे की गाड़ी से जाने वाले थे, उनके दर्शन करने गये। सभी नेता वर्किंग कमेटी के नये संगठन के बारे में उनसे बातचीत करने आये थे। सब कुछ महात्माजी के हाथ से ही हो सकता है, उनका अमिट प्रभाव सब जगह काम कर रहा है। ग्यारह बजे भुसावल जाने वाली गाड़ी से कलकत्ता रवाना हुए।

१२ : त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन

७ मार्च, १९३९ : शाम सवा तीन बजे गाड़ी जबलपुर पहुँची तो मालूम हुआ कि यहाँ कल से ही हिन्दू-मुसलिम दंगा हो रहा है। दुर्भाग्यपूर्ण दंगे देश के हर हिस्से और मौक़े पर होते रहते है। जब हिन्दू-मुसलमानों का त्योहार साथ-साथ पड़ता है तब चारों ओर डर, अविश्वास का भयंकर वातावरण बन जाता है और दंगे हुए बिना नहीं रहते। इस स्थिति का कब सुधार होगा ? यह स्थिति हमारे लिए बड़ी बुरी, बहुत अपमानजनक और दुखदायी है। पूज्य जमनालाल जी जेल में हैं उनका कैम्प नहीं हैं। अपने को बंगाल के डेलीगेटों के कैम्प में ठहरना पड़ा। कैम्प लाइफ़ का थोड़ा अनुभव लाभदायक होगा। आज ए. आई. सी. सी. की

मीटिंग हुई । उसमें कुछ नहीं हुआ कारण सुभाषबाबू बीमारी के कारण नहीं आ सके ।

८ मार्च : बाहर निकले तो सामने ही राजेन्द्र बाबू, वल्लभभाई, आचार्य कृपलानी मिले । उनसे बंगाल की स्थिति और काँग्रेस के काम के सम्बन्ध मे बातें हुईं । वे लोग बिहार, कर्नाटक, यू. पी., आन्ध्र, बम्बई आदि के डेलीगेटों के कैम्पों में मिलने गये, अपने भी साथ रहे । मालूम होता है इस बार प्रस्तावो को लेकर काफ़ी संघर्ष होने वाला है । डॉ. प्रफुल्ल घोष का आदमी आया । बातें करने पर मालूम हुआ कि आज ए. आइ. सी. सी. मीटिंग में महात्माजी के अनुयायियों की तरफ मे प्रस्ताव रखा जायेगा, उस पर अपनी सही होनी चाहिए । प्रस्ताव देखा और उस पर अपनी सही कर दी । प्रस्ताव वही था जो कल गोविन्दवल्लभ पन्त ने पेश किया था । यही प्रस्ताव इस बार मुख्य प्रस्ताव और वाद-विवाद का होगा । साढ़े तीन बजे ए. आई. सी सी. की बैठक हुई । सुभाष बाबू की तबीयत अच्छी नहीं थी, उनको बुखार था, काफी कमजोर हैं तो भी स्ट्रेचर पर आये । आर्मचेयर पर लेटे-लेटे कार्यवाही का संचालन किया । जो प्रस्ताव महात्मा जी के अनुयायियो द्वारा रखा जाने वाला था उसको ए आई. सी. मी. के लिए सुभाषबाबू ने अपनी रूलिंग से ग़ैर क़ानूनी क़रार दिया और कल या आज की सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग मे रखने के लिए कहा । इन्तज़ाम सुन्दर नहीं है, हरिपुरा और यहाँ के प्रबन्ध मे काफ़ी फर्क़ है । सफ़ाई कम है और हम लोगो के अज्ञान और बुरी आदतो के कारण सफ़ाई रहना मुश्किल हो गया है ।

९ मार्च . **सबजेक्ट कमेटी** की मीटिंग में गये । सुभाषबाबू उसी तरह आये जैसे कल आये थे । पहला प्रस्ताव जो गांधीवादियों की तरफ़ से हुआ, इस पर पौने दो सौ आदमियो की सही है, उसे पन्त जी ने रखा और सुन्दर भाषण किया। भाषण बहुत ही प्रभावपूर्ण था । समर्थन महाराष्ट्र काँग्रेस कमेटी के प्रधान श्री गाडगिल ने किया । इस के बाद दस-बारह संशोधन कई लोगों ने किये जिन में नरीमान, सरदार शार्दूलसिंह तथा साम्यवादियों की तरफ़ से थे । राजगोपालाचारी का व्याख्यान प्रस्ताव के पक्ष में हुआ, उसे अपने नहीं समझे पर लोगो का कहना था कि जितने व्याख्यान हुए उन सब में यह अच्छा था । रात साढ़े दस बजे सुभाषबाबू का बुखार बढ़ गया । इसलिए कल ही वोट लेना तय कर कमेटी समाप्त की गयी।

सुभाषबाबू ऐसी हालत में सात-आठ घण्टे बैठे और काम किया । यह एक प्रकार से उनकी बहादुरी और हिम्मत कही जानी चाहिए और वैसे उनका मोह और अपना प्रभाव जमाने की कोशिश भी कही जा सकती है । जो भी हो सुभाषबाबू अपने ढंग के बड़े ज़ोरदार आदमी है । रात तबीयत ठीक मालूम नहीं होती थी। अपने कैम्प में भीड़ बहुत हो गयी थी । अपने मित्र सन्तलाल जी, जो रंगून रहते है, उनके यहाँ फ़ैमिली क्वाटर में चले गये । सन्तलाल जी बराबर आग्रह करते

रहे, आज वे अपने कैम्प में आकर बैठ गये और अपने को वहां ले गये। सन्तलाल जी और उनकी स्त्री का व्यवहार निहायत सुन्दर और प्रेमपूर्ण है।

१० मार्च : जयपुर के सम्बन्ध में यहाँ आये मारवाड़ियों की मीटिंग थी। आज सभापति का जलूस निकलने वाला था, झण्डावन्दन था। सुभाष बाबू काफ़ी बीमार हैं, इसलिए नहीं आ सके। जुलूस यों ही निकाला गया, रथ में बावन हाथी जोते गये, कई प्रकार के बाजे बज रहे थे। भीड़ खूब हो गयी थी। यह ठाठ-बाट, बावन हाथी। फूलों और सोने चाँदी के गहनों से सजे हाथियों को देख बड़ा आश्चर्य हो रहा था। इन सब का क्या अर्थ है, इनकी तह के अन्दर क्या मनोवृत्ति काम कर रही है– यह एक विचारणीय बात है। हिन्दुस्तान की इस ग़रीबी और कंगालियत की स्थिति में हम यह सब क्यों करते है ? ग्रामों में काँग्रेस कर हम क्या आदर्श स्थापित करना चाहते हैं। हरिपुरा और फैजपुर में राष्ट्रपति के रथ में बैल जोते गये थे, वह किसानों के गाँवों में किसान का, हिन्दुस्तान के पुराने आदर्श का द्योतक हो सकता है पर हाथियों का प्रदर्शन बादशाही ज़माने की बात है, यह तो साम्राज्यशाही का नमूना है, यह तो राजसी ठाठ है। अपने को तो यह बात और यह जुलूस बहुत ही बेढंगा और विचित्र सा लगा।

झण्डा चौक में भीड़ नो खूब हो गयी थी पर हरिपुरा और फैजपुर से कम थी। वह रौनक और उत्साह भी नहीं था, कारण महात्माजी नहीं आ मके, सुभाषबाबू बीमार है परस्पर में काफी खींचातानी है इसलिए लोगों के मन न तो शान्त है और न उनमें उत्साह है। जवाहरलाल जी ने झण्डा फहराया।

छह बजे **काँग्रेस की खुली मुख्य सभा** थी। पण्डाल सुन्दर मालूम होता था। नेताओं, स्वागत समिति के मेम्बरों, ए आई सी.सी के मेम्बरों के बैठने के लिए जो जगह बनायी गयी थी, पहाड़ के ऊपर थी और बहुत सुन्दर मालूम होती थी। जो दर्शक टिकट नहीं ले सके थे वे हज़ारो की संख्या में पहाड़ के ऊपर चढ़ कर कांग्रेस का दृश्य देख रहे थे तथा व्याख्यान सुन रहे थे। पहाड़ पर बैठे हुए लोग बहुत अच्छे मालूम हो रहे थे। क़रीब अस्सी हज़ार या एक लाख के करीब लोग होंगे। सुभाष बाबू बीमार ज़्यादा हो गये, इसलिए नहीं आ सके। काँग्रेस के उपस्थित सभापतियों मे सबसे पुराने मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

११ मार्च : सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग, इस मे पन्त जी का प्रस्ताव बहुत वाद-विवाद के बाद बहुमत से पास हो गया। अपने प्रस्ताव के पक्ष में रहे। इससे बंगाल के लोग अपने से नाराज़ हुए और नाना तरह की बातें भी करते रहे। बंगाल में अपने रहते हैं, दस-बारह वर्षों से इन लोगों के साथ काम करते है, लोगों से काफी सम्बन्ध और प्रेम है, अपनी शक्ति के अनुसार सेवा और सहायता भी करते हैं पर इन लोगों का थोड़ी सी बात पर जो ढंग बदला और जिस तरह

का रुख इन्होने दिखाया, वह अपने लिए विचारने लायक़ तो है ही और दुखदायी भी है । अपने क्या करें ? कॉंग्रेस का काम करने की इच्छा है । बंगाल में रहते है । तीस वर्षों से यहाँ अपना काम है, हटना बड़ा मुश्किल मालूम पड़ता है इन लोगों की जैसी मनोवृत्ति है, जैसी विचारधारा है उसमें अपना रहना, काम करना मुश्किल है । थोड़े दिनों पहले तक बंगाल के साथ सम्बन्ध होने का अपने को गौरव था, पर आज बंगाल की अवस्था बड़ी विकट है, जो बंगाली विरोधी हैं, उन पर ये नाराज हैं पर अपने से जो नाराज़गी है वह दूसरी तरह की है । एक कॉंग्रेसी और मजदूर नेता ने कहा कि इस बार कलकत्ता जाकर मारवाड़ियों के विरोध में आन्दोलन करना होगा । ये सब बातें महत्त्व नहीं रखतीं पर मनोवृत्ति घातक तो है ही ।

सुभाषबाबू की तबियत ख़राब है । कई डॉक्टर आये, उनकी बातें सुनीं । बंगाल के लोग जितनी ज़्यादा तकलीफ बताते हैं, डाक्टरों की बातों से उतनी मालूम नहीं होती पर तकलीफ़ काफ़ी है । जबलपुर अस्पताल जाने को कहा पर वे राज़ी नहीं हुए । जो भी हो ईश्वर उन्हे जल्दी से जल्दी आरोग्य करे । चाहे उनसे कितना भी मतभेद हो वे देश के, और अपने तो, खूब ही प्यारे हैं । वे पक्के देशभक्त, त्यागी, वीर हैं । सुभाषबाबू जैसे आदमी कितने हैं बंगाल में ? हिन्दुस्तान में भी उनसे बराबर के आदमी पॉंच-सात से ज्यादा कहाँ है ? ऐसी स्थिनि में वे देश की महान् शक्ति हैं. सम्पत्ति हैं ।

खुले अधिवेशन में पहला प्रस्ताव पन्त जी का था । लोगों मे काफ़ी उत्तेजना और उत्साह था, उधर सुभाष बाबू की बीमारी के कारण लोग चिन्तित भी खूब थे । अजीब सी हालत थी । समय हो गया था पर कार्यवाही आरम्भ नहीं हो रही थी । परस्पर कानाफूसी हो रही थी, बहुत से लोग स्टेज के ऊपर आ गये थे। मालूम हुआ नरीमान एक प्रस्ताव उपस्थिन करना चाहते है कि जब तक सुभाष बाबू अच्छे न हो जायें, पन्त जी का प्रस्ताव स्थगित कर दिया जाये । इस प्रस्ताव से दूसरे पक्ष के लोग सहमत नहीं हो रहे थे, शेष में श्री अणे ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया कि सुभाष बाबू की बीमारी को देखने हुए पन्त जी का प्रस्ताव आज उपस्थित न किया जाये और प्रस्ताव ए आई सी. सी में भेज दिया जाये। इस प्रस्ताव को पन्त जी ने स्वीकार कर लिया, वोट लेने पर वह पास हो गया। बगाल के लोगों ने डिवीज़न मॉंगा और सभापति ने देना स्वीकार कर लिया ।

इस बार बंगाल के डेलीगेटों की तरफ़ से बहुत हो-हल्ला मचा था । जवाहरलालजी को बोलने नहीं दिया । उन्होने कई बार चेष्टा की पर हो-हल्ला मचा कर बोलने नहीं दिया पर जवाहरलालजी भी वहॉं से हटे नहीं, क़रीब डेढ़ घण्टे यह हालत रही और बंगाल के लोग बुरी तरह चिल्लाते रहे । जवाहरलालजी, वल्लभ भाई, आदि के विरूद्ध यह प्रदर्शन था और सबको बुरा लग रहा था । बंगाल के लोग

सबकी आंखों में गिर रहे थे। शरत् बाबू भी वहीं थे और सब नेता थे पर कोई कुछ नहीं बोल रहा था। बंगाल के लोगों की चारों ओर से निन्दा हो रही थी। डेढ़ घण्टे गोलमाल के बाद ये लोग थोड़े शान्त हुए तब जवाहरलालजी बोल पाये और उन्होने अपना प्रस्ताव वापिस ले लिया तब शान्ति हुई। अणे सुभाष बाबू के पक्ष के लोगों में हैं, उनकी तरफ़ से ही प्रस्ताव रखा गया था, ये लोग पागल हो गये थे। इसके बाद नेशनल माँग का प्रस्ताव जवाहरलाल जी रखने वाले थे, उसके रुक जाने के कारण जयप्रकाश नारायण ने रखा जिसका समर्थन आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने किया और विरोध शरत् बाबू ने। शरत् बाबू ने जो व्याख्यान दिया वह बहुत ही कटु और आक्षेपपूर्ण था। इस भाषण से शरत् बाबू का पोजिशन और भी गिरा। बंगाल के लोगों के प्रति सारे लोगों का रुख ख़राब हो गया। शरत बाबू के भाषण का उत्तर जवाहरलाल जी और जयप्रकाश ने दिया। प्रस्ताव पर वोट लिये गये। बड़े बहुमत से पास हो गया। इसके बाद आज का यह दुःखद और बेढंगा जलसा समाप्त हुआ।

१२ मार्च : काँग्रेस में आये, मारवाड़ी कार्यकर्ताओं की मीटिंग में गये, जयपुर के आन्दोलन तथा दूसरी बातें हुईं। साढ़े आठ बजे काँग्रेस की मीटिंग थी, केवल डेलीगेट ही जा सकते थे। कल जो गड़बड़ी हो गई थी उसकी वजह से आज पन्त जी के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए केवल डेलीगेटों को ही बुलाया था। प्रस्ताव पर जितने संशोधन थे, उन सबको बोलने का मौका दिया गया, विरोधियों को मौका दिया गया। पन्त जी के प्रस्ताव के पक्ष में व्याख्यानों की जरूरत सभापति जी ने नहीं समझी। विपक्ष में भी कोई अच्छा व्याख्यान नहीं हो सका। समाजवादी पार्टी की तरफ़ से जयप्रकाश जी ने एक वक्तव्य दिया कि पार्टी इस प्रस्ताव पर उदासीन रहेगी।

सब डेलीगेटों को अपने-अपने प्रान्त का एक समूह बना कर बैठने की व्यवस्था थी। अपने को बंगाल के डेलीगेटों में बैठना पड़ा। वहाँ का वायुमण्डल पहले से ही ख़राब था, जो लोग डेलीगेट नहीं थे वे भी काफ़ी संख्या में घुस आये थे। वोट लेने पर एक के बाद एक सारे संशोधन गिरते गये, शेष में मूल प्रस्ताव पर वोट लिये गये, वह बहुत बड़े बहुमत से पास हो गया। बंगाल के डेलीगेटों में क़रीब चालीस ने पक्ष में वोट दिया बाक़ी क़रीब चार सौ ने विरोध में। दूसरे प्रान्तों के बहुत ही कम आदमियों ने प्रस्ताव के विरोध में वोट दिया। बंगाल के लोग बहुत ही चिढ़े हुए हैं पर आज कुछ बोले नहीं। कल रात के प्रदर्शन से उनकी बहुत बदनामी हो गयी थी, इसी कारण दूसरे प्रान्तों से उन्हें वोट नहीं के बराबर मिले।

जो भी हो पूज्य महात्माजी पर देश का पूरा विश्वास है और जब तक वे हैं तब तक काँग्रेस की बागडोर उन्हीं के हाथों में सुरक्षित रह सकती है, यह प्रकट

हो गया ।

अब काँग्रेस का मुख्य काम प्रायः शेष हो गया है, लोगों में और यहाँ रहने की इच्छा नहीं रह गयी है । धुआँधार नामक प्रपात और मारबल रौक देखने गये। यहाँ से नौ मील दूर नर्मदा नदी में ये दोनों है । आज काँग्रेस का शेष दिन है। लोग अपना-अपना बिस्तरा बाँधने की कोशिश मे लगे हुए थे । अपने भी तय किया कि आज ही यहाँ से चला जाये । इस बार की कांग्रेस यात्रा अपने लिए सब तरह से नयी और अनोखी रही । सात दिनों तक विकट परिस्थिनि से गुज़रे। बंगाल के साथ अपना जो सम्बन्ध है, उसे खूब धक्का लगा । लोगो के ख्याल का नया पहलू मालूम हुआ ।

१३ : कांग्रेस महासमिति की बैठक : कलकत्ता

२९ अप्रैल १९३९ . आज ही ए. आई. सी पी. की मीटिंग शुरू होगी, वातावरण बहुत ही क्षुब्ध था । लोग यह जानने को उत्सुक थे कि पूज्य महात्मा जी और सुभाषबाबू के बीच क्या तय हुआ । सबकी चाह थी कि किसी तरह परस्पर मिलजुल कर काम हो, पूज्य महात्माजी की बात सुभाषबाबू स्वीकार कर ले । मीटिग चार बजे शुरू होने वाली थी । नेता लोग पण्डाल मे पधारे पर सुभाष बाबू नहीं आये, उनका फोन आया कि मीटिग पाँच बजे शुरू होगी । प्राय. जानकार लोगों को मालूम हो गया कि समझौता नहीं हो सका और सुभाषबाबू इस्तीफ़ा देंगे। पाँच बजे सुभाष बाबू आये, मीटिंग का कार्य आरम्भ हुआ, लोगों से देर हो जाने के लिए क्षमा माँगी और अपना एक वक्तव्य दिया जिसमें नयी वर्किंग कमेटी न बना सकने के कारण तथा सैद्धान्तिक मतभेद बता कर राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र देने की बात कही । इससे सभी को दु.ख हुआ । त्यागपत्र पर विचार हो इसके लिए उपस्थित लोगों में काँग्रेस के सब से पुराने सभापति सरोजिनी नायडू ने अध्यक्षा का आसन ग्रहण किया । जवाहरलालजी ने सुभाषबाबू से त्यागपत्र लौटाने की प्रस्ताव द्वारा अपील की, समर्थन श्री जयप्रकाश नारायण ने किया । दो-तीन सज्जनों ने जवाहरलाल जी के प्रस्ताव के विरोध में बड़ा बेढ़ंगा रुख लिया और सुभाषबाबू को बधाई दी और कहा कि जब तक सुभाष बाबू की बात पुराने लोग न मान लें तथा सिद्धान्त को स्वीकार न करे तब तक इस्तीफ़ा नहीं लौटाना चाहिए । बंगाल के लोगों में बहुत उत्तेजना थी, वे समझते थे कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, ऐसी स्थिति में अधिवेशन कल तक के लिए स्थगित हुआ । जब लोग बाहर निकलने

लगे तो बंगाल के लोगों ने गोविन्दवल्लभ पन्त तथा आचार्य कृपलानी आदि के प्रति दुर्व्यवहार किया, शेम-शेम चिल्लाना और जूता दिखाना, रास्ता घेर लेना, आदि किया। यह निहायत बेजा हुआ।

३० अप्रैल : सुभाष बाबू ने इस्तीफ़ा वापस लेने का प्रस्ताव नहीं माना। शेष में दुःख के साथ इस्तीफा स्वीकार किया गया। सर्व-सम्मति से राजेन्द्रबाबू सभापति चुने गये। श्रीमति नायडू ने बड़ी बुद्धिमत्ता और तत्परता के साथ कार्यवाही का संचालन किया। राजेन्द्रबाबू तुरत मंच पर आ गये और अपना व्याख्यान शुरू कर दिया। बंगाल के लोगों ने शेम-शेम तथा दूसरे नारें लगा बहुत ही ज्यादा बाधा डाली, बीच में सुभाषबाबू को शान्त रहने के लिये अपील भी करनी पड़ी पर उसका भी विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। राजेन्द्रबाबू अपने स्थान पर डटे रहे, अपना व्याख्यान चालू रखा। राजेन्द्रबाबू ने कहा, सुभाषबाबू के इस्तीफ़े का और समझौता न हो सकने का हम सबको काफ़ी दुःख है, ऐसी स्थिति में सभापति का पद लेने में मुझे कोई खुशी नहीं पर कर्तव्य व जिम्मेवारी के कारण लेना पड़ रहा है। वर्किंग कमेटी के मेम्बरों के नामों की घोषणा जितनी जल्दी हो सकती है उतनी जल्दी करने की कोशिश करूँगा। सेशन समाप्त हुआ। आज तो कल से भी ज्यादा उत्तेजनापूर्ण वातावरण में सभा समाप्त हुई। बाहर जाते समय कई नेताओं पर आक्रमण किया गया, कई लोगों को मामूली चोटें आयीं। बड़ी संख्या में पुलिस भी आई। बड़ी मुश्किल से स्थिति शान्त हो सकी। लोगों ने जवाहरलाल जी को भी खूब गालियाँ दीं। बंगाल के लोगों ने इस बार जो कुछ किया वह बहुत दुःखद था, बंगाल को धब्बा लगाने वाला था। सब लोगों की शर्म के मारे आँखें झुकी जाती थीं। अपने भगवानदेवी, पन्ना आदि के साथ पूज्य बापूजी की प्रार्थना में गये। भगवानदेवी, पन्ना बापूजी को प्रणाम कर के आयीं। राजेन्द्रबाबू से बाते हुईं, उन्होंने कहा, मेरे ऊपर तो बहुत बोझ आ गया है।

१ मई : ए. आई. सी. सी. की मीटिंग में गये। राजेन्द्रबाबू ने वर्किंग कमेटी के मेम्बरों के नाम की घोषणा की। पुरानी कमेटी के मेम्बरों को ही रखा था। बंगाल की तरफ़ से सुभाषबाबू ने रहना स्वीकार नहीं किया इसलिए डॉक्टर बी. सी. राय, डॉक्टर प्रफुल्ल घोष को रखा गया है। जवाहरलालजी ने कमेटी में रहना स्वीकार नहीं किया, उनकी जगह अभी भी खाली रखी गयी है। जवाहरलालजी के न रहने से लोगों को कई प्रकार की शंका होती है। वास्तव में कोई खास बात नहीं है। यह तो स्पष्ट है ही कि जवाहरलालजी महात्माजी के प्रति श्रद्धा रखते हुए भी उनके सिद्धान्तों से मतभेद रखते हैं और गत दो वर्षों से वर्किंग कमेटी की ज़िम्मेवारी को बड़ी कठिनता से निभा रहे हैं। वर्किंग कमेटी में महात्मा जी के विचारों के अनुसार काम होता है इसलिये जहाँ मतभेद हो वहाँ वह स्वतंत्र रहना पसन्द करते हैं। सब कामों में और वर्किंग कमेटी में पूरा सहयोग देने का

उन्होंने वचन दिया है इसलिए जवाहरलाल जी एक प्रकार से अलग नहीं हुए है। सुभाषबाबू तो नाराज हो कर किसी प्रकार का सहयोग नहीं देंगे, कोई नया दल बनाने की भी बात है। दो-तीन मुख्य प्रस्ताव हुए जिस में युद्ध विरोधी प्रस्ताव जवाहरलाल जी ने पेश किया, बाकी सभापति की तरफ़ से हुए और ए. आई. सी. सी. की दूसरी मीटिंग जल्दी बुलाने की बात रही। इस बीच वर्किंग कमेटी, जो प्रस्ताव आये हैं उन पर तथा दूसरी बातों पर विचार कर लेगी। इस बार की यह मीटिंग काँग्रेस में अपना एक खास स्थान रखती है और इसकी घटनाओं का देश पर स्थाई प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। आज भी नेताओं के विरुद्ध भयंकर प्रदर्शन किया गया। आज की कार्रवाई तो कल से भी ज़्यादा शर्मनाक थी।

२ मई : आज बड़ाबाजार की तरफ़ से जवाहरलालजी का व्याख्यान कराया गया था। उपस्थिति तो बहुत अच्छी थी। जवाहरलालजी यूरोप की स्थिति , वहाँ पर जो उलट-फेर हो रहे हैं, उसी पर बोलते हैं, हिन्दुस्तान की स्थिति पर.वे कम प्रकाश डालते हैं। इसलिए इस देश के सर्वसाधारण लोगों के काम की बातें उनके व्याख्यान में प्रायः नहीं के बराबर रहती है। वैसे उनका व्याख्यान एक नतीजे पर पहुँचा हुआ सा होता है और सुनने वालों का ज्ञान बढ़ता है।

५ मई : श्री जयप्रकाश नारायण के साथ भोजन किया, काफी देर तक बाते हुई। सुभाष बाबू जो नया दल बनाने जा रहे हैं उसका कुछ रूप समझ में नहीं आता और उसमें वे (जयप्रकाश नारायण) तो शामिल होंगे ही नहीं और भी बहुत कम लोग उसके साथ होगे। श्री जयप्रकाश नारायण की निगाह में काँग्रेस की बागडोर जिन लोगो के हाथ में है उनका तरीक़ा भी ठीक नहीं है और वे दूसरे विचारो को बरदाश्त नहीं कर सकते है। इस समय किसी प्रकार की टूटन नहीं होनी चाहिए पर जवाहरलाल जी तथा ये लोग प्रयत्न करने पर सफल नहीं हो पाये। जयप्रकाश जी शिष्ट, सज्जन और सच्चे आदमी है, उनमें उद्दण्डता नहीं। वे विचारपूर्वक काम करना चाहते है। अपने से उनका पुराना सम्बन्ध है जब मिलते हैं तब सन्तोष और खुशी होती है। सुभाष बाबू से भी काफ़ी सम्बन्ध है पर उनकी पद्धति से मेल नहीं खाता, यह भेद तो जयप्रकाश जी से भी है। सुभाष बाबू के ज़रा स्थिर न होने की वजह से उनके साथ काम करना मुश्किल हो जाता है।

१४ : कांग्रेस महासमिति की बैठक-बम्बई

२४ जून १९३९ . बम्बई स्टेशन पर बम्बई काँग्रेस कमेटी की तरफ़ से प्रबन्ध था। दो बजे ए. आई. सी. सी. की मीटिग मे गये। काँग्रेस के विधान के कई

नियमों में परिवर्तन और नये नियम बनाये गये हैं। इन परिवर्तनों का उद्देश्य काँग्रेस की शुद्धि करना है। जो बुरे लोग घुस आये हैं, अधिकार जमाने के लिए जो अनुचित तरीके काम में लाये जाते हैं, उनको रोकना है। राजेन्द्र बाबू ने ये बातें और दूसरी बातें कहीं। पर नियमों में परिवर्तन करने पर जो वाद-विवाद हुआ, जिस प्रकार का रुख दीखा उससे काँग्रेस की शुद्धि होना मुश्किल है। परस्पर में अविश्वास, द्वेष और ग़लतफ़हमियाँ इतनी अधिक हैं कि ऐसे वातावरण में देश आगे बढ़ सके, यह मुश्किल है। देश के काम की चिन्ता, एक बड़ी शक्ति के साथ लड़ना है, स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है यह चिन्ता छोटी चीज है, यह चिन्ता ज्यादा है कि काँग्रेस हमारे हाथ में किस प्रकार रह सकती है, इस भावना से अधिक काम होता है। यहाँ का रुख देखकर न तो उत्साह होता है, न प्रसन्नता होती है और न किसी प्रकार की पवित्रता ही आती है। काँग्रेस ने गत पचास वर्षों में देश के लिए महान् त्याग किया है, इसी कारण आज काँग्रेस की प्रतिष्ठा है, इस प्रतिष्ठा के बल पर काँग्रेस का काम चल रहा है। काँग्रेस अपनी पुरानी पूँजी के बल पर चल रही है। यदि उसका सच्चा सुधार नहीं हुआ तो देश की भलाई नहीं हो सकती पर आशा नहीं छोड़नी चाहिए। पूज्य महात्माजी के सच्चे तप से देश का भला होगा और यह भी मानना चाहिए कि यह देश जिस तरह की तकलीफों से गुजर रहा है उसमें उसका सुधार ही होगा, भला ही होगा। अब इस देश का बिगाड़ होने के लिए जगह कहाँ है।

२५ जून : बारह बजे ए. आई. सी. सी. की मीटिंग में गये। आज की मीटिंग क़रीब साढ़े नौ घण्टे चली और आज का वाद-विवाद भी अच्छा रहा। कई व्याख्यान सुन्दर हुए और प्रस्ताव पास हुए, उनसे काँग्रेस में व्यवस्था रखने में सुविधा होगी। साम्यवादी किसान सभा, मज़दूरों के नेता तथा कम्युनिस्टों ने मिल कर सुभाष बाबू के अग्रगामी दल के साथ वर्किंग कमेटी की तरफ़ से जो प्रस्ताव रखा गया था उसका विरोध किया पर उन लोगों मे से किसी का भी व्याख्यान न तो सुन्दर हुआ और न कोई दलील ही रही इसलिए उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव बहुत ज्यादा बहुमत से पास हो गया। साढ़े नौ घण्टे के समय में राजेन्द्र बाबू एक बार भी नहीं उठे, बराबर बिना विश्राम के काम करते रहे।

२६ जून : पूज्य महात्माजी के पास बिड़ला हाउस गये। वे राजेन्द्र बाबू के साथ घूम रहे थे। अपने को देख कर इशारे से पूछा, कैसे हो ? सोमवार के कारण मौन था। राजकोट का मामला फिर बिगड़ गया, राज्य वाले कुछ भी करना नहीं चाहते। राजेन्द्र बाबू से कई प्रकार की बातें हुईं। काँग्रेस का काम ठीक से चले और ज़िम्मेदार लोग काँग्रेस के नाम का दुरुपयोग न कर सकें इसके लिए आज प्रस्ताव आने वाला है, उसके बारे में बातचीत हुई। दो बजे ए. आई. सी.

सी. की मीटिंग में शामिल हुए । बहुत गरमागरमी रही । नरीमान, सुभाष बाबू, स्वामी सहजानन्द के व्याख्यान बहुत बेढंगे और गैर-जिम्मेवार थे । नरेन्द्रदेव जी का व्याख्यान भी अच्छा नहीं हुआ । जयप्रकाश जी अच्छा बोले । वल्लभभाई और भूलाभाई के व्याख्यान बहुत सुन्दर और प्रभावशाली हुए, जो लोग वामपन्थी कहलाते है, वे बुरी तरह हारे । आज भी मीटिंग साढ़े आठ घण्टे से कम नहीं चली ।

२७ जून : नौ बजे ए. आई. सी सी. की मीटिंग में गये । आज की मीटिंग में विशेष रस नहीं था । बारह बजे कार्यवाही समाप्त हुई । इस बार ए. आई सी. सी. की जो कार्यवाही हुई उससे यदि काँग्रेस में कुछ व्यवस्था पैदा हो सके तो देश का काम आगे बढ़ सकता है पर सुभाषबाबू तथा और भी कई लोगों का जो ढंग है उसके कारण काँग्रेस में जो गोलमाल पैदा हो गयी है वह सहज ही मिटनी मुश्किल है । पूज्य महात्माजी जब तक है तब तक तो किसी प्रकार चलता है फिर तो कांग्रेस के इतिहास में बड़ी मुसीबत का समय आयेगा । जो होगा सो होगा । अपना तो यही कर्तव्य है कि जो काम ठीक समझ में आये सच्चाई से उसे करें ।

१५ : रामगढ़ काँग्रेस अधिवेशन

१७ मार्च, १९४० : जमनालाल जी से मिले, जयपुर के बारे में बातें हुईं तथा कांग्रेस के आगे के कार्यक्रम के बारे में भी अभी तक निश्चय नहीं हो पाया है कि सत्याग्रह आन्दोलन कब शुरू होगा । पर जो स्थिति है उसमें ज्यादा दिन चुप कैसे रहा जा सकता है । जयपुर की स्थिति तो और भी अनिश्चित है पर यदि ब्रिटिश इडिया मे आन्दोलन होगा तो जयपुर में कुछ नहीं करना है ।

पहाड़ो के बीच में काँग्रेस नगर बनाया गया है, थोड़ी दूर पर सुभाषबाबू के समझौता विरोधी सम्मेलन का पण्डाल है । इस बार काँग्रेस में मारवाड़ी और वर्षों की अपेक्षा बहुत ज्यादा आये हैं । देहातों तथा आसपास के शहरों के आदमी भी खूब आये हैं । एक प्रकार से यह अच्छा है कि मारवाड़ी समाज में भी राजनीतिक भावना बढ़ रही है । पर वास्तविकता को देखा जाये तो ज्यादा आदमी तमाशबीन से मालूम होते हैं । आल इंडिया काँग्रेस कमेटी की मीटिंग में गये । बैठक की कार्यवाही समाप्त करते समय जवाहरलालजी ने राजेन्द्र बाबू को धन्यवाद दिया जिस में एक खास भावना थी, हृदय से दिया गया था, राजेन्द्र बाबू ने भी वैसा ही हृदयस्पर्शी कहा । इसके बाद नये वर्ष के लिए मौलाना अबुल कलाम आज़ाद साहब

को सभापति बनाया गया, राजेन्द्र बाबू ने उनको अपना बैज लगाया और माला पहनायी। आज़ाद साहब ने एक सुन्दर सी छोटी वक्तृता दी। आज़ाद साहब पण्डित आदमी है और उनकी भाषा में एक ख़ासियत है। वर्किंग कमेटी में पटना मे जो प्रस्ताव पास किया था उसे जवाहरलाल जी ने रखा।

१८ मार्च : ढ़ाई बजे सबजेक्ट कमेटी की मीटिंग में गये। आज प्रस्ताव पर जो संशोधन आये उन पर विचार होने वाला था। कुल अट्ठाईस संशोधन आये थे जिन में ज्यादातर कम्युनिस्ट पार्टी तथा एम. एन. राय की पार्टी के थे। समाजवादियों ने तो मुख्य प्रस्ताव को ही मान लिया था और उसका समर्थन किया। उनकी ओर से पार्टी के मन्त्री श्री मेहर अली ने एक वक्तव्य दिया जो बहुत अच्छा और एकता का समर्थक था। विरोधी लोगो मे दो-एक व्याख्यान बहुत खराब हुए। प्रस्ताव बहुत बड़े बहुमत से पास हुआ। साढ़े नौ बजे मीटिंग खत्म हुई। साढ़े सात घण्टे लगातार काम चला।

कांग्रेस में काफी गड़बड़ी है पर तो भी इससे ज्यादा प्रभाव रखने वाली दूसरी संस्था शायद कोई नहीं है। आज की सबजेक्ट कमेटी की सबसे ज़्यादा विशेषता यह थी कि पूज्य महात्माजी काफी देर तक रहे, बोले भी। बम्बई कॉंग्रेस के बाद महात्माजी पहली बार सबजेक्ट कमेटी मे आये और बोले। महात्माजी का व्याख्यान तो व्याख्यान नहीं वह तो पवित्र वाणी है, सिद्धान्त है, एक रूह है जो लोगो के दिलो से खाराकर हिन्दूस्तान के करोड़ों गरीब मूक प्राणियो मे सम्बन्ध रखती है। महात्माजी इतने महान् हैं कि उन्हे समझना भी कठिन है। वे श्रद्धा की चीज़ है, भक्ति की चीज है। उन्होने जो कुछ कहा वह सच्चा, सरल और स्पष्ट था। उन्होंने कहा, क्या तो आपको मुझे छोड़ देना चाहिए, मै आपके काम लायक नहीं हूँ तो मुझे क्यो नेतृत्व देते है क्यों कहते है कि सत्याग्रह की सरदारी कीजिए। यदि आप मुझसे सरदारी कराना चाहते है तो आपको मेरी शर्तें पालन करनी होंगी। मै अनुशासनहीन सेना का सेनापति नहीं बन सकता। आप मे सत्य, अहिंसा की भावना होनी चाहिए। और भी खादी चरखा आदि के विषय मे अच्छी तरह समझाया। लोगों पर प्रभाव भी पड़ा पर लोग काम करने वाले, उनकी बातो को पूरा करने वाले तो कम ही होगे।

१९ मार्च : शाम साढ़े पाँच बजे से कॉंग्रेस का खुला अधिवेशन होने वाला था पर भीड़ पहले ही से पण्डाल की ओर जाने लगी। पण्डाल बहुत सुन्दर बना था। चारों ओर पहाड़, नीची-ऊँची जगह, पीछे नदी बह रही थी। ठीक उसी समय जोरों की वर्षा शुरू हुई। कार्यवाही चालू नहीं रखी जा सकी पर तो भी कुछ देर काम होता ही रहा और लोग वर्षा मे भीगते रहे। स्त्रियाँ और उनके साथ के बच्चो के पास काफी पानी इकट्ठा हो गया पर कोई भी अपनी जगह मे हटा नहीं, न किसी प्रकार की गड़बड़ी पैदा हुई। जिस जोर से वर्षा हो रही

थी और लोग जिस धीरज के साथ बैठे-बैठे कार्यवाही देख रहे थे, वह दृश्य देखने लायक था, अपूर्व था। उससे लोगों की भावना का अन्दाज होता था कि कांग्रेस के प्रति जनता की क्या भावना है। जो झोंपड़ियाँ बनाई गयी थीं वे चूने लगीं, नीचे भी पानी आ गया। लोग पेड़ों के नीचे रहे, स्त्रियों और बच्चों को तो बहुत तकलीफ़ हुई। अपने पूज्य जमनालालजी के कैम्प में आये। वर्षा और सर्दी के कारण उनके पैरों की तकलीफ़ बढ़ गई थी इसलिए पूज्य महात्माजी ने उन्हें वर्धा जाने को कहा और वे उसी समय की गाड़ी से चले भी गये।

२० मार्च : नौ बजे खुले अधिवेशन की कार्यवाही होने की बात का पता लगा, वहाँ गये। आकाश बादलों से घिरा हुआ था; थोड़ी बूँदाबाँदी भी हो जाती थी। कार्यवाही चल नहीं सकेगी, यह आशंका बनी हुई थी पर तो भी समय पर काम शुरू हुआ और बहुत बड़ी संख्या मे लोग इकट्ठे हो गये। वर्किंग कमेटी की तरफ से जो प्रस्ताव था उसे जवाहलाल जी ने पेश किया और वल्लभभाई ने समर्थन किया। प्रस्ताव बहुत बड़े बहुमत से पास हुआ। वोट देने का बहुत अच्छा तरीक़ा निकाला गया। सब अपने हाथ में बैज लेकर वोट दे सकते थे। इसके बाद आज़ाद साहब तथा राजेन्द्रबाबू के धन्यवाद के व्याख्यान हुए। पूज्य महात्माजी ने भी कार्यवाही मे पूरा भाग लिया और क़रीब पौन घण्टे बोले और हृदय खोल कर सारी बाते बतलायीं। जनता पर उनका प्रभाव है, उनमे एक प्रकार का जादू है। देश पर उनका ही सच्चा अधिकार है। हो-हल्ला जितना किया जाए पर वे जो कुछ कहेंगे, वही होगा। मीटिंग की कार्यवाही साढ़े छह बजे वन्देमातरम के साथ समाप्त हुई। लोगों के चेहरों पर खुशी और सन्तोष था। कल की वर्षा के कारण जो निराशा और दुःख था, आज वह बिल्कुल नहीं रहा। झण्डे के नीचे खुले मैदान मे खूब बड़ी उपस्थिति में यह कार्यवाही सानन्द समाप्त हो गया। इसके बाद तुरन्त फिर वर्षा हुई।

१६ : वर्किंग कमेटी की मीटिंग--वर्धा

२१ जून, १९४० : कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग सत्रह जून को शुरू हुई, पाँच दिन से लगातार हो रही है। अभी तक प्रस्ताव पूरा सामने नहीं आया है, पर जो बातें पत्रों में आ रही है उससे पता लगता है कि उन लोगों के सामने परिस्थिति गम्भीर है। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के कारण परिस्थिति गम्भीर है, वह तो है ही साथ ही भीतरी मतभेदों या यों कहिए, महात्माजी के विचारों के अनुकूल

चलने की असमर्थता होने से यह परिस्थिति और भी जटिल हो गयी है । आज शाम तक कोई निर्णय हुआ होगा, वह कल मालूम हो जायेगा । पता नहीं इस देश का क्या होगा । इस के पापों का अन्त होगा या नहीं ।

२२ जून : वर्किंग कमेटी कल शाम समाप्त हो गयी, वक्तव्य देखने को मिला। खुशी नहीं हुई, एक प्रकार का क्षोभ हुआ । वक्तव्य में कहा गया है कि महात्मा जी अहिंसा का प्रचार करने के लिए स्वतंत्र हैं, काँग्रेस का अहिंसा का सिद्धान्त जैसा था वैसा ही है पर देश की भीतरी और बाहरी रक्षा करने लायक़ शक्ति अभी अहिंसा के द्वारा लोगों में पैदा नहीं हुई इसलिए ज़रूरत पड़ने पर रक्षा के लिए हिंसा के उपाय भी काम में लाये जा सकते हैं । महात्माजी का कहना था कि इस मौक़े पर हम यानी कांग्रेस यह घोषणा करे कि चाहे जैसी हालत हो हिन्दुस्तान अहिंसा के सिंद्धान्त का ही पालन करेगा और वह अपनी रक्षा फौजी तरीकों तथा शस्त्रों से नहीं करेगा । वर्किंग कमेटी के लोग इस में राजी नहीं थे और राजी इसलिए नहीं थे कि अभी देश ने अहिंसा में इतनी तरक्की नहीं की है कि वह इसकी घोषणा करे, इस कारण महात्माजी को अलग होना पड़ा है । इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा । वहाँ तो देश के अच्छे से अच्छे लोग थे, सन में सच्चाई और देशभक्ति थी और वे परिस्थिति को भी खूब अच्छी तरह समझते हैं । उन्होंने समझ के ही सब कुछ किया होगा पर अपने मन पर वक्तव्य का असर हुआ है और इस समय ऐसे नाजुक समय पर महात्माजी के साथ मतभेद होना, उनका अलग होना अच्छा नहीं हो सकता ।

२६ जून : वर्किंग कमेटी के इस बार के प्रस्ताव के बारे में कमेटी के नज़दीक के आदमी से बात हुई । आज जो अवसर और स्थिति हमारे सामने हैं, वह एक अजीब है । ऐसे मौक़े देश के सामने ऐतिहासिक मौक़े हैं और इतिहास में इसकी चर्चा होगी कि जिस समय यूरोप में भयानक युद्ध चल रहा था और संसार में एक विचित्र और भयानक उथल-पुथल मची थी उस समय हिन्दुस्तान ने क्या पार्ट अदा किया । लिखते सोचते कष्ट होता है कि हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए लगातार पचास वर्ष से भी ज़्यादा कठिन और महान् कार्रवाई और बड़ा से बड़ा बलिदान करने वाली, साहस और विवेक रखने वाली संस्था काँग्रेस, जिसकी महानता विदेश और हिन्दुस्तान के प्रत्येक विचारक ने मानी है, वह आज भीतर से वैसी नहीं रही । उसके संचालकों में एक मत नहीं है, उनके विचार और मस्तिष्क साफ़ नहीं है, वे आज विश्वास और दृढ़ता के साथ देश का नेतृत्व नहीं कर रहे। आज तो हमें ऐसे नेतृत्व की ज़रूरत थी कि जो पूरी तरह से एक ही विचार करके एक ही विश्वास के एक ही कार्य का निर्देश देता और सारे देश का प्राण उस से उद्वेलित हो उठता, चाहे वह हिंसा का होता या अहिंसा का होता पर वह एक होता । इसकी शक्ति महान् होती, वह अपने और देश के प्रति विश्वास पैदा करने

वाला होता पर दुःख है कि महात्माजी का नेतृत्व उन लोगों द्वारा जो आज बीस वर्ष से उनके सच्चे से सच्चे अनुयायी और कार्यवाहक रहे हैं, छोड़ा जा रहा है। और उन छोड़ने वालों के मन में महान् दुःख भी है । दुःख होना स्वाभविक भी है पर वे इस में विश्वास नहीं कर सकते कि हम महान् हैं, हमारी बात सारा देश सुनेगा और हम उसका नेतृत्व करके उसको इस विपत्ति के समय पार उतार सकेंगे । ऐसी दुविधा में क्या होगा, जनता क्या करेगी और वर्तमान सरकार भी क्या करेगी । हमें क्या करना चाहिए था और हम क्या कर रहे हैं । समाजवादी भाइयों की कई तरह की पार्टी, हिन्दू-मुसलिम मतभेद आदि स्वार्थों को जो झगड़ा है, वह तो है पर सबसे ज्यादा दुःख की बात तो यह है कि काँग्रेस जो राष्ट्र की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है या यों कहिए उसका दावा है, वह देश की सब संस्था दल और लोगों से बड़ी है, जिसने देश की आज़ादी के लिए सबसे ज्यादा बलिदान किया है, जिसने ही देश में अपूर्व जागृति पैदा की है और सचमुच में वही देश की तरफ़ से बोलने का सच्चा अधिकार रखती है, उसके चोटी के लोगो में जब विभिन्नता देखी जाती है तब सामने अन्धकार मॉलूम होता है पर जो हो ईश्वर अच्छा ही करेगा ।

१७ : वर्किंग कमेटी-मीटिंग–दिल्ली

७ जुलाई . काँग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग पॉच दिनो तक लगानार चलने के बाद आज शाम समाप्त हो गयी । एक वक्तव्य निकला है जिस में हिन्दुस्तान को पूर्ण स्वनंत्र करने की माँग की गयी है । भीतरी बातों का अभी पता नहीं ।

१८ : महासमिति-बैठक-पूना
(देश के नेतृत्व की दुविधा)

२५ जुलाई : पूना में सत्ताईस से आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी की बैठक है। जाने के विषय में तीन-चार दिन से विचार चला । शेष में न जाना तय किया कारण वर्धा और देहली में वर्किंग कमेटी ने जो प्रस्ताव किये हैं वे अपने को जँचे नहीं । यदि अपनी इतनी तैयारी होती कि अपने अहिंसा के द्वारा आने वाली स्थितियों

में कुछ काम कर पाते तो अवश्य जाते। पर अपने अन्तर में उतर कर सोचते हैं तो मालूम होता है कि अपने को गांधीजी जो कहते हैं वह बात अच्छी लगती है और यह भी जँचता है कि इस हिंसा के भयानक वातावरण में हिन्दुस्तान को अपना अहिंसा का आदर्श अक्षुण्ण रखना चाहिए था, रखना चाहिए पर मौक़ा आये तब अहिंसा पर विश्वास रखते हुए उसका पालन करते हुए युद्ध के लिए (वह) तैयार नहीं हो सकता है। मौका आये तब क्या हो पर अपनी मानसिक स्थिति उतनी ऊँची नहीं इसलिए सोचा न जाए तो कोई बात नहीं। दूसरे इधर खर्च भी बहुत हो गया है। आजकल आमदनी नहीं हो रही है और पूना में काफी ख़र्च था। यही सब कारण थे जिनसे अपने नहीं गये पर तो भी वहाँ की स्थिति जानने की इच्छा बहुत प्रबल है। एक ही बात है इस देश को स्वाधीनता मिले और वह अपना आदर्श पालन करता रहे पर अभी तो इसका ढंग कम है, अभी भी हम बहुत साधारण बातों में फँसे रहते है।

३ अगस्त : वर्किंग कमेटी के मेम्बर प्रफुल्लबाबू के साथ बातें हुई। काँग्रेस की जो स्थिति है वह उत्साहपूर्ण और कार्यकारी नहीं मालूम होती, आज कांग्रेस देश को कोई आदेश नहीं दे सकती। काँग्रेस के उच्च सत्ताधारी लोगो मे विचार-भिन्नता है, उसमें उन लोगों का जोर है जो साम्राज्यवादी सरकार से समझौता करने पर तुले हुए हैं। क्या होगा उसको तो कोई नहीं कह सकता पर हिन्दुस्तान की राजनीतिक हालत बहुत ख़राब है पर तो भी अब इस देश का नुक़सान होने की गुंजाइश नहीं है, चाहे जो हो लाभ होगा।

१६ अगस्त : आज पत्रों मे भारत मन्त्री मि. एमरी का भाषण पढ़ा। पढ़कर अपने मन में एक प्रकार का रोष हुआ। प्रतिक्रियावादी भाषण था, उसमे सच्चाई और उदारता नहीं थी, पुरानी बातें दुहरायी गयी थीं। मुसलमानों का सवाल, देशी राज्यों का सवाल, अछूतों का सवाल, इनकी ही रक्षा ब्रिटिश सरकार को करनी है यानी हिन्दुस्तान के स्वतंत्र हो जाने ही इनको लोग खा जाएँगे। यदि हिन्दुस्तान के लोग परस्पर राजी हो जायें तो हम सब कुछ करने को तैयार हैं, यह कह कर हिन्दुस्तान की समस्या को कभी हल नहीं करना है। अब यह निश्चय जैसा है कि ब्रिटिश सरकार अपनी खुशी से हिन्दुस्तान को वह अधिकार कभी नहीं देगी, जो हिन्दुस्तान चाहता है या जिसकी हमें ज़रूरत है। पर अधिकार तो अपनी ताक़त से ही लिया जा सकता है। सब मतभेद, मुसलमानों का सवाल और दूसरे सवाल सब अँग्रेज सरकार के पैदा किये हुए है और ये तब तक नहीं मिट सकते जब तक अँग्रेज सरकार को न मिटा दिया जाये। यह सरकार इन्हीं तीन खम्भों पर खड़ी है, वह उनको मिटने देना नहीं चाहती। आज ब्रिटिश सरकार भयानक विपत्ति में फँसी हुई है। सहानुभूति होती है पर आज भारत-मन्त्री का वक्तव्य पढ़ने पर

तो वह सहानुभूति भी कम हो जाती है क्योंकि जो जाति दूसरी जातियों के हकों को हर हालत में दबा कर ही रखना चाहती है वह जाति यदि दुनिया में बड़ी हो कर रहेगी तो संसार में सच्ची सुख शान्ति कभी नहीं होगी । अब तो कांग्रेस की सहनशीलता की हद हो गयी है । अब अँग्रेजों के साथ सहयोग करना ठीक नहीं जँचता । युद्ध में सहायता देना कैसे हो सकता है ? युद्ध में अंग्रेज़ विजयी होगे, इसका अर्थ हिन्दुस्तान सदा इनका गुलाम रहेगा । डेढ़ सौ वर्ष के शासन मे इन लोगो ने हिन्दुस्तान को ग़रीब, कंगाल, कायर और नपुमक बना दिया है, अनेक भागो मे विभाजित कर दिया है याने हिन्दू-मुसलिम भागो मे । आज यह देश न ज्यार के मामले मे कुछ भी ताक़त नहीं रखना क्योकि यहाँ कोई आदमी शस्त्र रख ही नहीं सकता, जो हो अब अँगरेजो की नेकनीयती पर विश्वास करके रहना मूर्खता होगी । काँग्रेस को अपनी नीति पर चलना होगा और अँगरेज़ों को युद्ध मे हिन्दुस्तान का सहयोग न मिले, इस बात की कोशिश करनी होगी। जब तक काँग्रेस कोई निश्चय न करे तब तक किसी को कुछ करने का अधिकार नहीं है । काँग्रेस का जो निश्चय हो उसी के अनुसार चलने मे देश का भला होगा।

१९ : वर्किंग कमेटी-मीटिंग–वर्धा
(गांधीजी के नेतृत्व की माग)

२२ अगस्त वर्धा मे वर्किंग कमेटी की मीटिंग जो अट्ठारह तारीख से चल रही है, उसके मुख्य प्रस्ताव का मसविदा आज दोपहर के पत्रो के विशेष अक मे प्रकाशित हुआ । प्रस्ताव बहुत बड़ा है । काँग्रेस ने वायसराय की घोषणा, भारत-मन्त्री के पार्लियामेंट के भाषण को प्रतिक्रियावादी, अप्राप्त जनतन्त्र शासन के विरूद्ध तथा भारत के विकास और उसके एकीकरण मे बाधक बताया है । यह कहा गया है कि काँग्रेस कमेटियाँ जगह-जगह सभाएं कर वायसराय की घोषणा की निन्दा करे । काँग्रेस से जो आशा की गयी थी उसके अनुरूप ही उसने किया है । ऐसा लगता है कि बहुत जल्द ही संघर्ष शुरू हो जायेगा । प्रधान-प्रधान लोग पकड़ लिये जायेंगे, सारे देश मे एक नयी प्रकार की हलचल शुरू हो जायेगी । चाहे जो हो ब्रिटिश सरकार की जो मनोवृत्ति है उसके साथ मेल नहीं हो सकता, देश की स्वतंत्रता के लिए उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता । यह स्वतन्त्रता संघर्ष से ही प्राप्त होगी ।

देश का दुर्भाग्य है कि मुसलमानों का तथा दूसरे कई सवाल इस सरकार के रहते मिटने वाले नहीं और इन सवालों के रहते यह सरकार नहीं मिटती । यही समस्या देश के सामने है पर इसका हल तो बलिदान, ऊँची भावना और स्वार्थ त्याग के अन्दर समाया हुआ है । इन बातों के अलावा, एक सबसे बड़ी बात यह भी है कि मनुष्य के सामने, संस्था के सामने तथा देश के सामने उसका स्वाभिमान भी एक बड़ी चीज़ होती है । वह कब तक अपमानजनक स्थिति बरदाश्त कर सकता है ? काँग्रेस ने जो किया ठीक किया । काँग्रेस की इन सब कार्रवाई के पीछे पूज्य महात्माजी का पहले जैसा वरद हस्त नहीं है । इस का दु:ख ह तो भी यदि काँग्रेस उचित रास्ते चल सकी तो उनका आशीर्वाद और शक्ति काँग्रेस को मिलेगी ही ।

शाम को पत्रों में एक समाचार और पढ़ा कि मोशियो ट्राटस्की की मृत्यु हो गई । आज सुबह के पत्रों से ही मालूम हो गया था कि उन पर कायरतापूर्वक जो भयानक आक्रमण किया गया उससे वे बच नहीं सकते । ट्राटस्की संसार के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे । उनके विचार अपने थे और उन विचारों के कारण उन्होने बहुत तकलीफ़ उठाई और उन्हींके कारण उन पर आक्रमण हुआ । ऐसे आक्रमण उन पर कई बार हुए या करने की कोशिश की गई पर इस बार बच नहीं सके । ट्राटस्की चाहे जैसे रहे हों पर वे एक आसाधारण आदमी थे, बहुत बड़े लेखक, वक्ता, सेनापति और नेता थ । वे रूस की क्रान्ति के उत्पादकों में थे । लेनिन के एक विशेष साथी थे और रूस के वर्तमान डिक्टेटर स्टालिन के विरोधी होने के कारण आज शायद उनकी यह गति हुई है । योरप की राजनीति भयानक घातक नीति है, वहाँ मनुष्य मशीन बन गया है, वहाँ अधिकार ही सब कुछ है । अधिकार प्राप्त करने और पाये अधिकार की रक्षा करने के लिए कुछ भी किया जा सकता है और वह किया जाता है देश के नाम पर, मनुष्यता के नाम पर, समानता के नाम पर 'बड़ा फ़रेबी' फन्दा है । ट्राटस्की की मृत्यु एक भयानक और दु:खद घटना है । संसार का एक विशेष मनुष्य उठ गया । ईश्वर उस महान् आत्मा को शान्ति प्रदान करे ।

२० : महासमिति बैठक–बम्बई

१२ सितम्बर : कल बम्बई जाने का विचार है, तबीयत तो ढ़ीली है । इस बार ए. आई. सी. सी. में जाना ज़रूरी है, ख़ासकर इसलिए कि वहाँ जाने से स्थिति का पता लग सकता है, अखबारों से वह चीज़ नहीं जानी जा सकती इसलिए

जाना ही उचित लगता है। इधर काँग्रेस को अँग्रेजों ने बाध्य कर दिया है कि वह अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए संघर्ष करे। अँग्रेज नहीं चाहते कि हिन्दुस्तान का प्रश्न न्याययुक्त तरीक़े से तय हो, इसलिए ऐसी कार्रवाई कर डालते हैं जो एक प्रतिष्ठित संस्था के लिए बरदाश्त की स्थिति से बाहर हो जाती है। महात्मा जी अँग्रेजों की इस विपत्ति के समय काँग्रेस को किसी प्रकार का संघर्ष करने से रोक रहे थे पर अभी तक पिछले दिनों जो कार्रवाइयाँ हुई हैं, उनसे उनका भी दिल हिल उठा है और सत्य पालन करने के लिए काँग्रेस को बचाने के लिए वे भी अब संघर्ष के लिए विवश हो गये हैं और बम्बई की मीटिंग में यही तय होने वाला है इसलिए जाना तो जरूरी मालूम होता है।

१५ सितम्बर, बम्बई : ए. आई सी.सी. की मीटिंग ढाई बजे शुरू हुई। मौलाना आज़ाद ने जब से यूरोप की लड़ाई शुरू हुई तब से काँग्रेस का क्या रवैया रहा तथा किस-किस तरह की कार्रवाइयाँ हुईं, इस पर प्रकाश डाला। इसके बाद जवाहरलाल जी ने प्रस्ताव पेश किया पर कोई वक्तृता नहीं दी, इसलिए नहीं दी कि इस पर पूज्य महात्माजी बोलेंगे। वल्लभभाई ने प्रस्ताव का समर्थन किया, उन्होंने भी कोई व्याख्यान नहीं दिया। इसके बाद गांधीजी ने अपना व्याख्यान शुरू किया। बहुत ही अच्छी तरह, सीधी, स्पष्ट भाषा और भावों मे करीब एक घण्टा हिन्दी में और फिर अँग्रेजी में करीब उतनी ही देर बोले। इधर बहुत वर्षों में महात्मा जी की इतनी बड़ी स्पीच नहीं सुनी गयी। कई बातें बतायीं और साफ़ कहा कि काँग्रेस के लोग यदि सच्चाई के साथ प्रस्ताव मानने के लिए तैयार हों, इसकी भावना के अनुसार वे तैयार हों, तभी इस प्रस्ताव को वोट दें नहीं तो इसे रद्द कर दें। स्पीच का लोगों पर खूब अच्छा असर हुआ। जो संशोधन आये थे उनकी संख्या छह थी। तीन तो कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से, एक अग्रगामी गुट की तरफ से तथा दो यों ही। महात्माजी के व्याख्यान के बाद संशोधन की न तो ज़रूरत थी न किसी मन की पर कुछ मनचले होते हैं जो सिर्फ बोलने के लिए कुछ कहना चाहते है। कम्युनिस्ट हैं जो अपना खाली एक बुद्धिवादी ख़याल प्रकट करना चाहते हैं।

१६ सितम्बर : बिड़ला हाउस जहाँ पूज्य महात्मा जी ठहरे हैं, गये। ख़ान अब्दुल गफ़्फ़ार ख़ान से मिले, कल की कार्यवाही पर बात हुई। वे सच्चे और साधु आदमी हैं, आजकल की राजनीति में विश्वास नहीं करते, उन्होंने कहा, यह सब देखकर मुझे तो हैरानी होती है। दस दिन पहले कहते हैं कि हम सिर्फ़ सरकार से लड़ने भर के लिए अहिंसा से काम लेंगे और देश की रक्षा और भीतरी गड़बड़ी के मौके पर हिंसा से काम लेंगे, वे ही लोग आज कहते हैं कि स्वराज्य हो जाने के बाद और पहले यानी हर हालत में हम अहिंसक रहेंगे, यह क्या बात है। विश्वास तो बार-बार बदलने वाली चीज नहीं है। यह क्या हो रहा है, मैं तो

आज ही जाना चाहता था पर महात्माजी, जवाहरलाल ने रोका है, कहते हैं बातें करनी हैं । उन की बातों से ज़ाहिर होता था कि वे सन्तुष्ट नहीं हैं पर बापूजी आदि की बातें मान कर चलना है । आज मुख्य प्रस्ताव पर वाद-विवाद था । कम्युनिस्टों की स्पीचें अच्छी नहीं हुईं, दूसरी स्पीचें भी साधारण रहीं । शेष में जवाहरलाल जी ने सब का उत्तर दिया और पूज्य महात्माजी भी बोले । वोट लिये गये । विरोध में कुल सात वोट ही आये । मीटिंग की कार्यवाही आज समाप्त हो गयी, प्रस्ताव भी पास हो गया, सारा भार गांधीजी को दे दिया गया । आगे क्या होगा, इस का पता नहीं पर लोगों के मन में सन्तोष नहीं था । लोग यह सोच कर आये थे कि इस बार की मीटिंग में सब लोग मिल लें फिर तो आन्दोलन शुरू होगा, तब जेल जाना ही है पर आन्दोलन कब चलेगा, यह अन्धकार में ही रहा, इससे लोगों के मन में खुशी नहीं थी । पर महात्मा जी जो करते हैं वह सोच समझ कर ही करते हैं ।

२१ : महासमिति बैठक–वर्धा

१४ जनवरी, १९४२ : जमनालाल जी के बंगले पर आये, उनसे मिले, प्रणाम किया वे बहुत कमज़ोर हो गये हैं, फिर भगवानदेवी के पास मकान गये । जो मकान मिला है वह अच्छा तो नहीं पर काम चल जायेगा ।

१५ जनवरी : आज़ाद साहब थोड़े बीमार थे इसलिए जवाहरलाल जी ने झण्डा फहराया । पाँच-सात आदमियों से मिले, परिस्थिति जानने-समझने की कोशिश की । कोई ख़ास उत्साह नहीं दिखाई दिया । दो बजे ए. आई. सी. सी. की मीटिंग शुरू हुई, उसमें गये, आठ बजे तक चली । आज़ाद साहब का भाषण लम्बा हुआ पर उस में सारी स्थिति पर प्रकाश डाला गया । उसके बाद पूज्य गांधीजी का भाषण हुआ, वह उनकी महानता का प्रत्यक्ष प्रमाण था । वर्किंग कमेटी ने बारदोली में जो प्रस्ताव किया है और जिसकी वजह से गांधीजी को काँग्रेस के नेतृत्व से हटना पड़ा उसको उन्होंने कहा, ए. आई. सी. सी. को पास करना चाहिए । ए. आई. सी. सी. में गांधीजी की विचारधारा का बहुमत है । यह सब होते हुए भी गांधीजी ने यह कहा । जिन लोगों के विचार प्रस्ताव के विरुद्ध हैं वे तटस्थ रहें, विरोध न करें या उनको उनका विवेक जो कहे वैसा करें पर मेरे कारण विरोध न करें। प्रस्ताव उनकी दृष्टि से ठीक नहीं है क्योंकि उसमें हर तरह के युद्ध का विरोध अहिंसात्मक तरीक़े से करने के लिए नहीं कहा गया है । जवाहरलाल जी ने प्रस्ताव रखा और लम्बा व्याख्यान दिया । राजगोपालाचार्य ने समर्थन किया।

१६ जनवरी : ए. आई. सी. सी. की मीटिंग मे गये। संशोधन पेश किये गये, उन पर स्पीचें हुईं। कोई दम वाली बात नहीं थी। दो बजे फिर मीटिंग शुरू हुई। राजाजी की स्पीच हुई, अपने को वह बिलकुल नहीं जँची। प्रस्ताव पर वोट लिये गये। पक्ष के वोट गिने गये, शायद ज्यादा से ज्यादा साठ-सत्तर होंगे। कई लोग तो इससे भी कम बताते थे, विपक्ष में सत्रह वोट बताये जाते थे। इस के बाद रचनात्मक कार्यक्रम का प्रस्ताव राजेन्द्र बाबू ने रखा और पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त ने समर्थन किया। यह प्रस्ताव तो बिना विरोध के पास होने वाला था, वह हो गया। बारदोली प्रस्ताव पर काँग्रेस की मुहर तो ज़रूर लग गयी, यदि ए. आई. सी. सी. की मीटिंग न बुलायी जाती तो भी यही स्थिति रहती जो आज है। गांधीजी ऐसे नाजुक मौके पर परस्पर में मनभेद या फूट ठीक नहीं समझते। जो हुआ सो अच्छा ही हुआ। ईश्वर के कामों का रहस्य हम नहीं समझते। अपने मन को कार्यवाही से बहुत सन्तोष नहीं हुआ। काँग्रेस में अब वह जोश, एकाग्रता और कार्यतन्परता नहीं दिखाई देती। अब तो परस्पर प्रस्तावों पर वाद-विवाद करते हैं और एक ही प्रस्ताव की अपनी-अपनी दृष्टि से व्याख्या करते हैं तथा प्रस्ताव बनता है तब उसमें अपनी विचारधारा घुसाने की कोशिश करते हैं। एक ही कार्य, एक ही कार्यक्रम और एक ही भावना से अब काम नहीं होता। विचारों का भेद तो मुरदों में नहीं होता, भिन्न-भिन्न विचार हों तो हर्ज नहीं लेकिन कामों में एकता, जोश और तत्परता चाहिए। वह न होने से काम आगे नहीं बढ़ता तथा देश की आम जनता के सामने हम कोई निश्चित बात नहीं बता सकते। गांधीजी अहिंसा की बात कहते हैं, राजाजी सरकार को इस युद्ध में सहयोग देने के लिए झुके हुए से मालूम होते हैं, जवाहरलाल जी कहते है कि ब्रिटिश साम्राज्य तो मिट्टी का ढेर है, उससे कोई बात या समझौता क्या करना है या क्या किया जा सकता है, आदि-आदि अनेक बाते हैं। इससे तो जनता के सामने कोई ऐसी चीज नहीं आती कि उसमें वह इसके साथ लग सके। जनता के लिए तो कोई निश्चित बात होनी चाहिए। इस लड़ाई में योगदान दो या इसका बायकाट करो, हमारा एक भी पैसा या आदमी लड़ाई में न जाये, इस की कोशिश करो। कोई और तरह का कार्य हो पर ऐसा करने में नाना तरह की आपत्ति है तो भी यह कहना चाहिए कि अमुक तरह की आपत्ति है और इस को करने से हमारा सच्चा लाभ नहीं होगा इसलिए जब तक युद्ध चलता है तब तक हमें इस तरह के काम करने है।

१७ जनवरी : तीन बजे पूज्य गांधीजी रचनात्मक कामों के बारे में कॉंग्रेस कार्यकर्ताओं से बात करने वाले थे, उस मे गये। दो घण्टे गांधीजी ने लोगों के प्रश्नों के उत्तर दिये। जो कार्यकर्ता बात करने आये थे, उनमें से अधिकांश का रचनात्मक कामों से कम सम्बन्ध था, वे तो कॉंग्रेस की राजनीति में काम करने वाले लोग थे। जो हो प्रश्नों द्वारा कई बातो पर प्रकाश तो पड़ा ही।

२२ : अगस्त क्रांति की भूमिका
(वर्किंग कमेटी की मीटिंग—वर्धा)

६ जुलाई, १९४२ : वर्धा में आज से वर्किंग कमेटी की मीटिंग शुरू हुई है, यह बहुत महत्त्वपूर्ण समझी जाती है। जो परिस्थिति है उस पर विचार कर पूज्य गांधीजी ने अँगरेज़ों को यहाँ से अपनी सत्ता हटाने का मैत्रीपूर्ण सुझाव दिया है। इस मीटिंग में कोई न कोई प्रभावशाली निश्चय होगा और देश के सामने कोई कार्यक्रम रखा जायेगा। असहयोग और सविनय अवज्ञा का आन्दोलन भी शुरू करने की उम्मीद है। आज पूज्य बापूजी का मौन है, कल वे मीटिंग में पूरा भाग लेंगे तब पता लगेगा कि क्या होने वाला है। जो हो अपने को ऐसा लगता है महात्माजी जो कहेंगे और करेंगे उस पर सब को चलना पड़ेगा।

१६ जुलाई : वर्किंग कमेटी ने जो प्रस्ताव पास किया है वह हिन्दुस्तान के राजनीतिक इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है। इस प्रस्ताव के ज़रिये हिन्दुस्तान की राजनीतिक अवस्था को बिलकुल बदलने की बात कही गयी है। प्रस्ताव इतना स्पष्ट और साफ़ है कि इस के बाद अब कोई ऐसी बात नहीं रहती जिसमें किसी समझौते या ग़लतफ़हमी का बहाना किया जा सके। साफ़-साफ़ शब्दों में अँगरेज़ों से कहा गया है कि वे अपना शासन अविलम्ब हटायें, वे हिन्दुस्तान को एक स्वतन्त्र देश घोषित करें और मानें। इसके बाद ही हिन्दुस्तान उनके साथ किस तरह रह सकता है, इस पर दोनों देशों के प्रतिनिधि बैठ कर विचार कर सकते हैं। इस प्रस्ताव को अँगरेज़ मानेंगे, इसकी आशा नहीं के बराबर है। इसलिए साफ़ मालूम होता है कि एक भयंकर आन्दोलन शुरू होगा और देश में ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है जो न तो अँगरेज़ों के लिए अच्छी है और न हमारे लिए। पर इस का क्या उपाय क्योंकि हमें मजबूर कर दिया गया है। आज हमारे देश में जंग की वजह से जो हालत पैदा हो गयी है तथा अँगरेज़ सरकार का जो रवैया है, वह हम चुपचाप बैठे रह बरदाश्त करते रहें तो यह हमारी मौत की जैसी बात है। कोई देश या आदमी ज़िन्दा मृत्यु बरदाश्त नहीं करता और करता है तो वह मुरदा है। हम अपने को इतना गया-बीता मानने को तैयार नहीं, इसी लिए उचित रूप से और बहुत ही नम्रतापूर्वक महात्माजी की राय से काँग्रेस ने यह प्रस्ताव स्वीकार किया है और अँगरेज़ों तथा उनके साथी राष्ट्रों को भी इस पर विचार करने को कहा है।

दो दिनों से विलायती अखबारों में प्रस्ताव पर जिस तरह के मत प्रकाशित हो रहे हैं उसमें ज़रा भी गुंजाइश नहीं मालूम होती है कि अँगरेज़ इस प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे। दुनिया में जो कुछ हो रहा है और होने जा रहा है उसमें

अँगरेज़ हिन्दुस्तान को अपने अधीन तो नहीं रख सकेंगे पर अच्छा होता वे इस बात को महसूस करते पर ये शायद वस्तुस्थिति को जानते हुए भी अपनी परम्परागत आदतों के कारण कुछ नहीं कर सकते। अपना तो यह पक्का विश्वास है कि हमारा शेष भला ही होने वाला है। तकलीफ़-आराम तो आयेंगे ही। अब यह देश भी ग़ुलाम बना कर नहीं रखा जा सकता। काँग्रेस ने ख़ासकर पूज्य गांधी जी ने इस देश का स्थान बहुत आगे बढ़ा दिया है।

२२ जुलाई : काँग्रेस के प्रस्ताव पर सभी विलायती तथा अमेरीकन पत्र खूब बिगड़े हैं। महात्माजी को खरी-खोटी भी कह रहे हैं और भय भी दिखाते हैं कि जो संस्था या व्यक्ति इस समय युद्ध-प्रयास में बाधा डालेगा वह हमारा शत्रु है। जो हो महात्माजी के दृष्टिकोण को, काँग्रेस के प्रस्ताव को उन लोगों ने न्याय की निगाह से नहीं देखा। स्वार्थपूर्ण और भ्रमपूर्ण निगाह से ही वहाँ के लोगों ने इस परिस्थिति पर विचार किया इसका परिणाम निश्चय ही हमारे लिये और अँगरेज़ों के लिए दुखदायी होगा।

हमें तो मालूम है कि बिना बड़े बलिदान के स्वाधीनता कैसे पा सकते हैं ? जो तकलीफ होगी, जो कष्ट दिये जायेंगे उनको हमें ख़ुशी-ख़ुशी बरदाश्त करना है। अँगरेजों को आन्दोलन के कारण जो तकलीफ होगी, युद्ध-प्रयास में बाधा पड़ेगी वह उनकी स्वार्थबुद्धि, अपनी शान तथा अपरिवर्तनीय नीति की वजह से होगी। आज़ ऐसी हालत पैदा हो गयी है कि काँग्रेस आन्दोलन करेगी ही और अँगरेज़ भी न्यायबुद्धि से प्रेरित नहीं होंगे। सरकार आज भी भेदनीति और झूठे वादों पर निर्भर करती है और विश्वास करती है कि हम अपने इतने वर्षों के अनुभव के आधार पर इसी नीति पर चल सफल होंगे पर अब वे दिन नहीं रहे तो भी हमारे देश के लोग आज भी उनका साथ दे ही रहे है, उनको आज भी लोग मिल जाते है। जो हो कॉंग्रेस को तो यह काम चलाना ही है और यह भी आशा तो की जा सकती है कि हमारे बलिदानों से जनता के अन्दर भावना पैदा होगी और उसका असर होगा।

२३ जुलाई : अब तो एक महीने के अन्दर जेल जाना पड़ता दीख रहा है। जेल में तबीयत का क्या हाल होगा जब कल्पना करते हैं तो जी घबराता है। अपना जैसा खान-पान और रहन-सहन बन गया है। वह जेल-जीवन से कितना विपरीत है। वहाँ दूध-फल और दूसरी चीजें कहाँ नसीब होंगी और उनके बिना अपना स्वास्थ्य कैसे टिका रहेगा ? सारी बातें सोचने के बाद अपने को यही उचित मालूम होता है कि चाहे जैसी हालत में जो भी परिणाम हो इसकी परवाह किये बिना अपने को देश का काम करना चाहिए। जेल जाना तो इस में साधारण बात है। ईश्वर अपने को बल दे कि अपने कर्तव्य का पालन कर सकें।

३१ जुलाई : वर्धा से श्रीमन्नारायणजी आये हैं, उनसे पूज्य बापूजी आन्दोलन

को क्या रूप देना चाहते हैं, इस विषय में बात हुई। बापूजी तो इस बार आखिरी लड़ाई लड़ रहे हैं और सर्वस्व का दाँव लगाने का विचार है। शायद वे बिना पानी का आमरण उपवास करें। उनका कहना है कि आज संसार में जो घोर हिंसा हो रही है उस के विरुद्ध मुझे बड़े से बड़ा क़दम उठाना चाहिए। वे आज की दुनिया में कुछ भी न कर के कैसे चुप बैठ सकते हैं। आन्दोलन को जो रूप बापू जी देना चाहते हैं वह बहुत विशाल होगा और उस का असर भी बहुत व्यापक और जल्द होगा। पता नहीं देश के लोग इतना बड़ा बलिदान करने को तैयार हैं या नहीं। पर जो हवा चलेगी तो उसी में से तूफान पैदा होगा और उस तूफ़ान में आज जो स्थिर-से हो रहे हैं वे भी साथ हो जायेंगे। सब से बड़ी बात तो यह है कि गांधी जी की इतनी बड़ी तपश्चर्या व्यर्थ नहीं जा सकती। आज हिन्दुस्तान में अँगरेज़ों के प्रति जो वैर-भाव है शायद पहले ऐसा कभी नहीं था। आन्दोलन निश्चय ही शुरू होगा और अँगरेज दमन करेंगे तब यह दुर्भावना और भी बढ़ेगी जिस का परिणाम उन के लिए ख़तरनाक होगा। अँगरेज़ों की साम्राज्यवादी सरकार इस बात को समझ नहीं रही है। जो हो ईश्वर अपने को बल दे जिस से अपने कर्तव्य का पालन कर सकें और महात्मा जी के जीवन की रक्षा करे तथा उन को सफल करे।

२३ : बम्बई कांग्रेस अधिवेशन
(भारत छोड़ो आन्दोलन प्रस्ताव)

६ अगस्त, १९४२ बम्बई : बिड़ला हाउस गये, जहाँ महात्मा जी ठहरे हैं। घनश्यामदास जी से बातें हुईं। पूज्य गांधीजी इस बार के विशाल आन्दोलन को किस तरह चलाना चाहते है, इसका पूरा पता अभी तक किसी को नहीं है। सब लोग चकित हो रहे हैं, सरकारी हलक़ों तथा अमेरीका, इंग्लैण्ड में काफी हलचल हो रही है। क्या होगा, कैसे होगा इसका सब अन्दाज ही लगा रहे हैं। सरदार पटेल, आचार्य कृपलानी और डॉ. घोष से साधारण बात हुई। वे लोग भी ज़रा डरे-से हैं। इतना बड़ा क़दम उठाने में क्या-क्या हो सकता है, इस विचार में डूबे हुए से हैं। सब के चेहरों पर काफ़ी गम्भीरता थी। घनश्यामदास जी से बातें होती रहीं। एक बात उन्होंने महत्त्व की कही कि शायद आन्दोलन शुरू करने के पहले बापूजी देहली जायें। अभी पता नहीं बापूजी देहली जा रहे हैं या वायसराय

उन्हें बुला रहे हैं पर बापू का देहली जाना महत्व रखता है । बापू की राजनीति एक अलभ्य और नयी नीति है । जिसको हर कोई जल्दी नहीं समझ पाता। बापू वायसराय से वह क्या करने वाले हैं, क्यों करने वाले हैं, ये सारी बातें बताने तथा अन्तिम समय भी आप चेतो और न्याय करो की बात करने जाने वाले अपने को लगते हैं । शायद दूसरे अनेक राजनीतिक नेता दिल से इसे पसन्द भी न करें पर गांधीजी तो गांधीजी हैं और उनका मानव की न्याय-बुद्धि पर जो अटूट विश्वास है उसकी वजह से वे शेष तक उस से प्रार्थना करते हैं, निवेदन करते हैं, कोई चारा नहीं रहता तभी आन्दोलन करते हैं और इसी में उनकी महानता तथा सफलता का रहस्य है । बापूजी की प्रार्थना में शरीक हुए, बीच में वर्षा आ गयी पर कोई टस से मस नहीं हुआ। प्रार्थना के बाद हरिजन सेवा के लिए गांधी जी भीख माँगते हैं, उस में एक हज़ार से ऊपर रुपये आये जिन में कम से कम एक पैसे की तीन पाई होती है, उनकी संख्या भी काफी थी । इससे मालूम होता है कि देने वाला कितना आर्थिक दृष्टि से कमजोर है पर उस की भावना किस से कम है और उसके दान का महत्त्व भी किस से कम है ।

७ अगस्त : ए. आई. सी. सी. की मीटिंग में गये । बड़ी भारी भीड़ थी, पार कर के भीतर जाने में काफ़ी देर लगती है । पण्डाल दर्शकों से भर गया था । लोगों के चेहरे से उत्साह झलक रहा था । मौलाना का शुरूआत का भाषण ठीक हुआ फिर पूज्य महात्माजी का भाषण हुआ जिससे प्रस्ताव पास करने के पहले प्रस्ताव की बातों पर खास कर अहिंसा के मामले पर काफ़ी प्रकाश डाला और चेतावनी दी कि आप ए. आई. सी. सी. के मेम्बर, काँग्रेस दफ़्तर में जो मेम्बरों के नाम हैं उनके ही नुमाइन्दे नहीं हैं, हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ लोगों के लिए काँग्रेस जो आजादी चाहती है उसकी ज़िम्मेवारी आप पर है । और उस ज़िम्मेवारी से मुझे इस आज़ादी के आन्दोलन का नेता चुन रहे हैं । मैं कैसा हूँ उसको आप समझ लें । मेरा तो अहिंसा में अटूट विश्वास है, मुझे तो अहिंसा के बराबर बल किसी दूसरी चीज़ में नहीं दीखता । मैं तो मानता हूँ कि सम्पूर्ण विश्व में यह सब से बड़ा अस्त्र है । तब छोटे से इस पृथ्वी के टुकड़े की तो बात ही क्या है । आप एक ऐसे आदमी को अपना नेता बना रहे हैं तो फिर उस के आदेश के अनुसार चलना होगा । मैं यह नहीं कहता कि आपमें भी मेरे जैसी ही अहिंसा होनी चाहिए पर मैं आपसे यह तो चाहूंगा ही कि आप मेरे साथ चलें, तब तक अहिंसक रहें । अहिंसक तरीकों से ही मेरे आदेशों का पालन करें जैसे फ़ौज में, वहाँ कोई भी अपने कप्तान का हुक्म न माने तो उसे मृत्युदण्ड दिया जाता है पर मेरे पास तो प्रेम का ही बल है । आप प्रस्ताव को पास करें उससे पहले इन सब बातों पर अच्छी तरह विचार कर लें और आपके दिल में ज़रा सी भी अगर-मगर हो तो इसे नामंजूर कर दें, मुझे इससे बिल्कुल नाउम्मीदी

नहीं होगी, बल्कि इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी से बच जाऊँगा। पर मैं यह ज़िम्मेवारी इस उमर और इस जर्जर शरीर से लेने में हिचकता नहीं, मैं तैयार हूँ पर मेरी बातें समझ कर, सोच कर जैसा मैं हूँ यह जान कर ही आप यह भार मुझे दें और मेरी कम से कम यह शर्त तो जरूर ही है कि आप मेरे साथ जब तक रहें तब तक अपने कामों में अहिंसक रहें। बस मेरा काम हो गया।

जवाहरलालजी ने प्रस्ताव रखा, एक घण्टा बोले। समर्थन सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया। आज की सभा में सरदार का भाषण ही अपनी निगाह में सबसे अच्छा और जोरदार था। पूज्य गान्धीजी आज पूरे समय रहे, कई वर्षों बाद यह हुआ। घर आ कर सोये। खूब उत्साह था, उमंग थी, चाव था। पता नहीं आगे ईश्वर को क्या स्वीकार है पर ढंग अच्छा मालूम होता है।

८ अगस्त : ए. आई. सी. सी. की मीटिंग में गये। प्रस्ताव पर जो संशोधन आये, कोई महत्त्वपूर्ण तो था नहीं पर उन पर बहस तो होनी ही थी। कोई विशेष बात किसी ने नहीं कही। कइयों ने कहा कि जब तक हिन्दू-मुसलमानों में एकता न हो तब तक कोई बड़ा आन्दोलन नहीं चलाना चाहिए। फिर प्रस्ताव पर आम बहस हुई। शेष मे जवाहरलालजी ने उत्तर दिया। वोट लिये गये। कुल तेरह वोट विरोध में आये, प्रस्ताव बहुत बड़े बहुमत से पास हो गया। इसके बाद आगे क्या करना है तथा क्या रास्ता दिखाना चाहते हैं, इसके लिए मौलाना साहब ने पूज्य गांधीजी को बुलाया। गांधीजी के मन में इस आन्दोलन को लेकर, आज दुनियां की जो हालत है उसको देख कर और हिन्दुस्तान को ऐसे नाज़ुक वक्त पर क्या करना चाहिए, इन पर न मालूम कितने विचार और काम करने की बातें भरी पड़ी हैं।

आज इस सभा में हिन्दू-मुसलमानों की एकता का सवाल ज़रा ज़ोर से उठ गया था इसलिए शुरू में उन्होंने वही चीज़ ले ली और उस पर उनका बहुत वक़्त लग गया। बातें तो कई कहीं पर पाँच बातें कहीं वे इस तरह थीं–१. प्रेस वालों को कहा कि आपको सरकार की मशीन नहीं बनना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि आप कहें तो हम अपना प्रेस बन्द कर देंगे पर आप की अनुचित आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे। २. जजों से कहा कि वे आज इस्तीफा तो न दें पर सरकार को सूचित कर दें कि अपनी न्यायबुद्धि से न्याय करेंगे। आप के आदेश से नहीं, चाहे सरकार राज़ी हो या नाराज़। इस्तीफा देना पड़े तो दे दें। ३. विद्यार्थियों से कहा कि वे अपने प्रोफेसरों को कह दें कि हम तो काँग्रेस के आदमी हैं और काँग्रेस हड़ताल करने या कालेज छोड़ने के लिए कहेगी या अन्य आदेश देगी तो हम उसका पालन करेंगे। आज ही वे कॉलेज छोड़ें नहीं पर तैयार हो जायें। ४. फ़ौज से कहा, वे तैयार हो जायें। मेरे पास तथा जवाहरलाल के पास कई लोग आए हैं, वे कहते हैं कि आप कहें तो हम इस्तीफा दे दें पर अभी नहीं। अभी तो मैं वायसराय से खतो-किताबत करूँगा, जब आन्दोलन छेड़ना ही पड़ेगा

तो मै उनसे कहूँगा कि उन्हे क्या करना चाहिए । ५ राजाओ से कहा, आपको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान तो आज़ाद होगा ही और उस आजाद हिन्दुस्तान मे आपको अपना स्थान रखना है तो आपको जनता के साथ रहना चाहिए । मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे मन मे आप का अस्तित्व मिटाने की बात नही है । मै आपका रक्षक हूँ, मेरा पिता एक स्टेट का दीवान वर्षो रहा है । मैने आपका नमक खाया है तो नमकहराम थोड़े ही बनने वाला हूँ पर आप नही चेतेगे तो आगे आने वाले जमाने मे आप के लिए स्थान नही रह जायेगा। इसके बाद सबसे बड़ी बात जो उन्होने कही वह यह थी कि इस प्रस्ताव को पास करने के बाद हम स्वाधीन हो गये है । अब हमे महसूस करना चाहिए कि हम आजाद है और हम पर कोई गैर लोग हुकूमत नही कर सकते, हम अपनी हुकूमत कायम करेगे । किसी दूसरी हुकूमत के मातहत हम रह नही सकते, इस प्रकार सवा दो घण्टे से भी ज्यादा बोले । बोलना तो और भी बहुत था पर समय बहुत ज्यादा हो गया था और वे थक भी गये थे । कई लोगो ने किसानो, मजदूरो आदि के लिए पूछा तब उन्होने कहा हॉ सब कहूँगा पर आप इतना तो हजम करिए, एक साथ ज्यादा खाने से तो बीमार पड़ जाने का डर है न ?

इसके बाद मौलाना आजाद का अन्तिम भाषण हुआ, समय की कमी की वजह से वह भी बहुत छोटा ही करना पड़ा पर था जोरदार । मौलाना ने कहा जब समुद्र मे कूदे तो तूफानो की परवा नही वे तो आयेगे ही । और हम अपनी पूरी ताकत लगा कर पार उतरना ही है । हम न तो तूफानो से डरे और घबराये और न अपनी ताकत लगाना बाकी रखे । सारी ताकत लगा कर हमे यह सागर पार करना है और जरूर करना है हम कामयाब होगे या डूब मरेगे । इसके बाद करीब ग्यारह बजे लगातार साढ़े आठ घण्टे तक चलने के बाद कॉग्रेस का ए आई सी सी का यह ऐतिहासिक जल्सा समाप्त हुआ । पता नही आगे खुदा को क्या मजूर है पर लोगो मे खूब उत्साह उमग और जीवन मालूम होता है ।

९ अगस्त समुद्र किनारे घूमने गये तो लोगो से सुना कि महात्माजी गिरफ्तार कर लिये गये । सहसा विश्वास नही हुआ कि सरकार इतनी बेवकूफ नही कि इतनी जल्दी गाधीजी को पकड़ ले । फिर थोड़ी देर घूमे पर मन मे एक प्रकार की उथल पुथल हो रही थी । लौट कर घर आये दरबान से पूछा, क्या सरदार वल्लभ भाई पकड़े गये, जो इसी मकान मे थे जिसमे अपने हैं, तो उसने कहा, हॉ । थोड़ी देर के लिए सुन्न से रहे, क्या करना चाहिए । कुछ समझ में नहीं आ रहा था,पकड़ा जाना कोई ऐसी बात नहीं जिसके लिए ज्यादा चिन्ता की जाये पर बापूजी यदि उपवास शुरू कर देंगे तो क्या होगा, यह सवाल मन में उठ रहा था । बिड़ला पार्क गये, वहॉ काकासाहब कालेलकर मिले महात्माजी के दूसरे सेक्रेटरी प्यारेलाल जी मिले । बापू क्या कह गये यह भी उन्होंने थोड़े में बताया।

कोई खास बात तो नहीं थी पर बापू कह गये हैं या तो मरेंगे या आजाद होंगे। इससे भी बापू के उपवास की बात ही सामने आती है । घनश्यामदास जी मिले, उनकी राय थी कि बापू उपवास तो जरूर करेंगे, अभी नहीं करेंगे । खैर वहाँ बहुत लोग मिल गये, सबसे मिल-जुल कर विदा हुए ।

रास्ते में चारों तरफ़ झुण्ड के झुण्ड लोग इधर से उधर घूम रहे थे । ट्राम, मोटर आदि सब चीजें बन्द हो रही थीं, यों भी रविवार के कारण बन्द थीं पर चारों ओर हो-हल्ला और गिरफ़्तारी के प्रति रोष तथा उद्वेग दिखाई दे रहा था। गोबिन्दराम जी (सेकसरिया) के यहाँ गये तो मालूम हुआ कि रूई का बाज़ार अनिश्चित समय के लिए बन्द हो गया है और भी सभी बाजार बन्द रहेंगे । फिर मालूम हुआ कि बहुत से लोग पकड़े गये हैं । बम्बई के मुख्य-मुख्य सभी लोग पकड़ लिये गये हैं तथा भीड़ पर लाठी चार्ज और आँसू बहाने वाली गैस का भी प्रयोग किया गया है, कई लोगों को चोट भी आयी है । काँग्रेस हाउस जब्त कर लिया गया है । भयानक उत्तेजना नज़र आ रही थी । सरकार की बेवक़ूफी और बदतमीजी पर गुस्सा और अफ़सोस होता था, साथ ही परेशानी भी कि क्या करें । शाम को उत्तेजना और भी बढ़ गयी । शिवाजी पार्क में बापू का भाषण होने वाला था पर उनके गिरफ़्तार होने के कारण पूज्य कस्तूरबा वहाँ जाने के लिए तैयार हुईं । बिड़ला हाउस के बाहर निकलते ही उनको भी गिरफ़्तार कर लिया गया। दादर में तो लाखों आदमियों की भीड़ हो गयी थी और सुना कि पन्द्रह बार गैस का प्रयोग किया, लाठियाँ चलीं, गोली भी चली तो भी भीड़ वहाँ से नहीं हटी। शहर का सारा कारोबार तो बन्द था ही और लोग पागल से हुए चारों तरफ़ घूम रहे थे। बड़ी ख़तरनाक स्थिति मालूम हो रही है । ऐसा लगता है कि दो चार दिन में ही न मालूम इतनी ज़बरदस्त आग लग जाये कि न तो सरकार और न हमारे किसी के वश की बात रहे । चिन्ता क्या, वही होगा जो ईश्वर को मंजूर है और वह अच्छा ही करेगा । हिन्दुस्तान के सारे ही हिस्सों में गिरफ़्तारियाँ हुई हैं ।

१०-११ अगस्त : आज कल से भी ज्यादा अशान्ति थी, पुलिस बार-बार गोली चलाती थी । जनता के झुण्ड जगह-जगह इकट्ठा हो जाते थे । जनता में पूरा अहिंसक भाव नहीं था पर आज सरकार ने जो स्थिति पैदा की है उसके लिए वही उत्तरदायी है । जनता को उत्तेजना मिलने के सभी कारण सरकार ने उपस्थित किये हैं । असल बात तो यह है कि जनता और सरकार दोनों पागल बन गये हैं इसका परिणाम न हमारे लिए और न सरकार के लिए अच्छा है, न होगा । पर सरकारी नीति बहुत ही भयानक है और जनता आज उत्तेजनापूर्ण भाव से उसका प्रतिवाद करने के लिए लाचार सी हो गई है । तीन बजे की गाड़ी से कलकत्ता रवाना हुए । रास्ते के स्टेशनों पर सभी जगह सनसनीपूर्ण समाचार मिले ।

जेल जीवन

जेल जीवन : १

१८ जून, १९३० कलकत्ता : शाम बड़े बाजार में पिकेटिंग का प्रबन्ध करते हुए मुझे गिरफ़्तार किया गया और रूपचन्द राय स्ट्रीट थाने में ले जाया गया और रात नौ बजे लालबाज़ार थाने में भेज दिया गया। गिरफ़्तारी का यह मेरा पहला अनुभव था। १९२१के आंदोलन मे बहुत इच्छा होते हुए भी जेल न जा सका था। जिस लाक-अप में मुझे बन्द किया गया था उसमें आहिस्ते-आहिस्ते हम लोग २८ आदमी हो गये, जिनमें २७ क्रिमिनल लोग थे। बंगाल में राजनीतिक क़ैदियों को स्वदेशी बाबू कहते हैं। इस प्रकार लाक-अप में मैं ही एक स्वदेशी बाबू था। ये लोग बीड़ी पीते थे, गाली बकते थे। लाक-अप में ही शौच का स्थान था। मैं इन लोगों को समझाता था तो वे पाँच-दस मिनट शान्त हो जाते थे। कोई-कोई कहता, "ये स्वदेशी बाबू हैं। हम लोगों को इनका लिहाज रखना चाहिए पर पाँच-दस मिनट बाद फिर गाली-गलौज शुरू हो जाता। रात साढ़े बारह बजे हुगली के एक व्यक्ति गिरफ़्तार कर लाये गये। नाम पूछने पर प्रफुल्लचन्द्र सेन बताया। उन्होंने हल्ला-गुल्ला करने वालों को समझाया। इसका अच्छा असर हुआ और वे घण्ट-दो घण्टे के लिए चुप हो गये, जिससे हम लोगों ने कुछ झपकियाँ ली।"

सुबह शौच के लिए तो वही स्थान था पर स्नान के लिए अलग ले जाया गया। ग्यारह बजे क़ैदियों की गाड़ी में हमें जोड़ाबागान थाने ले जाया गया। वहाँ मजिस्ट्रेट ने पूछा कि पुलिस ने जो चार्ज लगाया है उसके बारे में कुछ कहना है क्या, तुम्हारा कोई वकील है क्या ? हमें कोर्ट की कार्यवाही में कोई भाग लेना नहीं था इसलिए तुरंत ही मजिस्ट्रेट ने छह महीने की सश्रम कैद दे दी। हमें थोड़ी देर बाद प्रेसीडेंसी जेल भेज दिया गया। प्रफुल्ल बाबू को कितनी सजा हुई और कहाँ भेजा गया, यह याद नहीं। प्रेसीडेंसी जेल में हमें अपराधी क़ैदियों के साथ रखा गया। इस जेल में 'बी' क्लास के क़ैदियों को यानी जो कई बार जेल आ चुके होते हैं, रखा जाता था। इसलिए मुझे तथा और कई साथियों को सेण्ट्रल जेल, अलीपुर भेज दिया गया, जिसको जेल की भाषा में नयी जेल कहते थे।

यह निश्चय ही प्रेसीडेंसी की अपेक्षा साफ़-सुथरी थी। यहाँ कई साथी मिल गये और मुझे प्रथम श्रेणी का क़ैदी बना दिया गया। सेण्ट्रल जेल का एक वार्ड था, जिसको सेग्रेशन कहते थे उसमें श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त भी थे। मैने इस वार्ड में जाना पसन्द किया। इस वार्ड में हम शायद ५७ आदमी थे जिसमें ३२ आदमी 'ए' और 'बी' क्लास के और २५ आदमी 'सी' क्लास के। १९२९ में यतीन्द्रनाथ दास के बलिदान के कारण जेलों में जो सुधार हुआ उससे ये तीन क्लास बने ए, बी, सी। 'सी' क्लास का खाना पौने चार आने या पाँच आने का, 'बी' क्लास का पौने आठ आने का और 'ए' क्लास का साढ़े नौ आने का होता था। इस आन्दोलन के समय सरकार की नीति कुछ उदार थी, क्योंकि लार्ड इरविन वाइसराय थे। जेल में एक नियम बनाया गया कि सरकारी खाना ले लो या इन पैसों के हिसाब से जो चाहे ले लो। हम ५७ आदमी अपना पैसा जोड़ कर उतने रूपये का सामान रोज मँगाते और सब एक साथ खाना खाते। जो मांस–मछली खाने वाले थे उनमें से कुछ ने सतीश बाबू के कारण निरामिष खाना ही स्वीकार किया इसलिए काम चला।

एक दिन एक घटना हुई जिसकी याद अच्छी है। हमारी चटनी में जिसे बंगला में टौक (खट्टा) कहते हैं, मछली की गन्ध आयी। मैं टौक खाता नहीं था पर दूसरे गैर-बंगालियों को, जिन्होंने मछली कभी चखी नहीं, चटनी में बहुत ही बदबू आयी। बंगाली भाइयों ने कहा, हमें तो नहीं आती। निश्चय हुआ कि मैं और एक बंगाली भाई जा कर रसोई का निरीक्षण करें। हम उस रसोईघर में गये जहाँ हमारा निरामिष खाना बनता था, तो देखा वहाँ मछलियाँ पड़ी है और दो बकरों के कटे हुए सिर भी पड़े हैं। हमने पूछा कि निरामिष भोजन वाला रसोईघर कहाँ हैं ? तो पता चला कि आमिष और निरामिष दोनों ही एक जगह बनता है। यहाँ तक कि जिन बरतनों में मांस–मछली बनते है उन्हीं में तरकारी भी। हमने आकर रिपोर्ट दी। इस पर निश्चय हुआ कि हम लोग खाना नहीं खायेंगे। जेलर आया, उसने कहा, "आज तो आप लोग खाना खा लीजिए कल हम अलग प्रबन्ध कर देंगे।" हमारी स्थिति को वह समझ नहीं सका। सतीश बाबू ने कहा कि हम विरोध में खाना बन्द नहीं कर रहे है,हमें तो इस तरह का खाना खाने में धार्मिक आपत्ति है इसलिए भूखे रह सकते है, यह खाना नहीं खा सकते। जेलर ने हमारे लिए विशेष प्रबंध कर दिया और दूसरे दिन हमको दस-बारह मील दूर दमदम जेल भेज दिया जो इसी आंदोलन के लिए बनायी गयी थी, पहले वह आर्डिनेन्स फैक्टरी थी।

दमदम जेल में बहुत बड़े-बड़े और लम्बे क्वार्टर थे जिनमें ६०-७०-८०-१०० तक राजनीतिक क़ैदी रहते थे। यहाँ बहुत परिचित बन्धु मिले, जिन्होंने बहुत आवभगत की और प्रेम जताया। मेरे सबसे पुराने साथी भाई बसन्तलालजी मुरारका भी थे

और श्री पद्‌मराज जी जैन और बैजनाथ जी केडिया भी थे। बंगाली मित्रों और साथियों की तो बहुत बड़ी सख्या थी। हम लोगों के लिए एक चौके की अलग व्यवस्था थी जिसे मारवाड़ी चौका कहते थे। आंदोलन में गिरफ़्तार एक मुसलमान सज्जन ने कहा, हम आप के चौके में भोजन करना चाहते हैं, हम बहुत खुश हुए हमारे एक मित्र ने, जिनका नाम लिखना नहीं चाहता, कहा कि वह मुसलमान के साथ नहीं खा सकने। बहुत चर्चाएँ हुईं पर उनको हम राजी नहीं कर पाये। उनके लिए अलग व्यवस्था की पर मुसलमान सज्जन हमारे साथ ही खाते रहे। हम लोगों का चौका इतना लोकप्रिय हुआ कि हमारे बंगाली साथी भी हमारे चौके में खाने लगे। हमारे बंगाली साथियों में सबसे अधिक संख्या मिदनापुर के लोगों की थी। इस आंदोलन में बंगाल का मेदिनीपुर, बिहार का बीहीपुर, बम्बई का विले-पारले और गुजरात का बारडोली बहुत प्रसिद्ध हो चुके थे और यहाँ के लोगों ने बहुत बड़ी क़ुरबानी दी थी। मेदिनीपुर के बहुत से साथियों ने हिन्दी सीखने की बहुत उत्सुकता दिखायी और हम लोगों ने हिन्दी क्लास आरम्भ किया, जिसमें बीस-तीस बंगाली बन्धुओं ने हिन्दी सीखी। इन बन्धुओं में आज जो जीवित हैं वे अभी तक मुझे हिन्दी में ही ख़त लिखते हैं। हमारी क्लास में हिन्दी सीखने वालो में अजयबाबू (मुखर्जी) और बसन्तबाबू (कुमारदास) भी थे। हम लोग सब एक कुटुम्ब के लोग जैसे थे। शाम को साथ खेलते, राष्ट्रीय गान गाते, मीटिंगें करते। संयोग से और सरकार की नरम नीति के कारण हमारे सुपरिन्टेन्डेण्ट का व्यवहार बहुत अच्छा था, वह निहायत भले और सज्जन थे। उनकी सज्जनता का अनुचित लाभ उठाने वाले लोग भी कम न थे।

जेल में बाहर से अख़बार मँगाना गुनाह है पर अख़बार आते थे और खुलेआम पढ़े जाते थे। सुपरिन्टेन्डेण्ट ने दो एक सज्जनों को बुला कर कहा कि यह जेल के नियम के खिलाफ़ है पर मैं कोई कार्रवाई नहीं करना चाहता। आप इतना कीजिए कि जब मैं निरीक्षण के लिए आऊँ तो कम से कम उस समय अख़बार न पढ़े और उसको छिपा दें। हमारे मित्रों ने उसकी भलमनसाहत का फ़ायदा उठा कर कहा, हमें आपके आने का कैसे मालूम होगा तो उसने कहा, काठ की सीढ़ियाँ हैं मैं ऊपर चढूँगा, तो ज़ोर से चढूँगा आवाज से आप बन्द कर दें।

इसी तरह की एक और घटना है। देवीपूजा (दुर्गा) का समय आया। सब क़ैदियों ने कहा, हम पूजा मनायेंगे। पूजा के लिए आप कितना रुपया खर्च करेंगे। कुछ रक़म स्वीकार हुई। बड़े ठाट से पूजा मनायी गयी। लोगों ने कहा कि हम हमारी पूजा घर के लोगों को दिखाना चाहते हैं तो सुपरिन्टेन्डेण्ट ने घर के लोगों को आने की इजाज़त दी। दो-तीन दिन जेल में भीड़ लगी रही।

सन्‌ १९३० का समय अजीब था–लार्ड इरविन के ज़माने और सरकार की नीति का या गांधीजी के प्रभाव का जो कहें उसका। एक और घटना याद आती

है : स्वर्गीय बंकिम मुखर्जी उन दिनों भी कम्युनिस्ट विचारधारा के थे । उन्होंने एक 'राक्षस' पार्टी बनायी थी जो रात में जगती और दिन में सोती । रात में दो-ढाई बजे तक उनकी मीटिंगें होतीं । सब लोग सो जाते तो राक्षस पार्टी के सदस्य हमारे वार्डों में आकर हमारी चीजें ले जाते । सुबह उठने पर कोई चीज नहीं मिलती तो हम लोग समझ लेते कि यह काम निशाचरों का है । वे कहते कि यह तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है कि हमारे पास जो चीज न हो और दूसरों के पास हो तो हम उसको ले लेते हैं । इस प्रकार एक विनोद भी था । पन्द्रह दिन पर मुलाक़ात की इजाज़त थी लेकिन कभी-कभी लोग पहले भी आ जाते थे तो सुपरिन्टेन्डेण्ट मिलने देता था । मुलाक़ात के समय सी. आई. डी. बैठने के नियम में भी ढिलाई बरती गयी । मेरी पत्नी पहली-पहली मुलाक़ात में आयी। वह पिकेटिंग का काम करती थी । मैंने उससे व्यंग्य किया कि तुम जेल में बाहर से मिलने आयीं तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया । दूसरी मुलाक़ात होने के पहले वह जेल चली गयी और उसके बाद हमारी मुलाक़ात जेल से छूटने पर ही हुई पर उसके जेल जाने की खुशी कितनी थी ! (मुझे और भगवानदेवी को उस वक़्त जो सन्तोष हुआ था वह आज भी जब वह जीवित नहीं है तब भी है ।)

जेल में हम लोगों को काँच का एक-एक गिलास मिला था । एक लम्बे कमरे में हम ६४ आदमी रहते थे । बसन्तलालजी मुरारका बहुत ही आनन्दी स्वभाव के व्यक्ति थे । किसी का गिलास गिर जाता तो आवाज़ सुन कर कहते कि अमुक बाबू का आनन्द हो गया ।

बंगाल के एक खास क्रान्तिकारी अमरेन्द्रनाथ चटर्जी का ज़िक्र करना आवश्यक लगता है । प्रथम महायुद्ध में भारत रक्षा क़ानून के अन्तर्गत उनकी गिरफ़्तारी बहुत आवश्यक मानी गयी क्योंकि बंगाल के क्रान्तिकारियों में उनका प्रमुख स्थान था। उन पर वारंट था पर उन्हें गिरफ़्तार नहीं किया जा सका । कई वर्ष साधु के वेश में दूसरे प्रान्तों में उन्होंने क्रान्तिकारियों के साथ सम्पर्क बनाये रखा था । वे मेरे और बसन्तलाल जी के बहुत प्रिय मित्र बन गये । वे उस समय की अनेक घटनाएँ और क्रान्तिकारियों की बातें बताया करते । इसमें कोई शक नहीं कि बगाल के क्रान्तिकारियों का इतिहास बलिदान का अनूठा इतिहास है । उसका वर्णन करना बहुत मुश्किल है । यहाँ तक हुआ कि एक स्त्री जिसको क्रान्तिकारी अपनी बहन मानता है और जिसके साथ बहन जैसा ही व्यवहार करता है उसके साथ वह दिखावट में पति के रूप में रहा । इस प्रकार की अनेक घटनाएँ अमरबाबू ने हमें बतायी। बंगाल के प्रसिद्ध शिवपुर डकैती केस में अमर बाबू थे । उन्होंने इस घटना का विवरण हमें बताया था । ज़मींदार लोग किस प्रकार क्रान्तिकारियों की सहायता करते थे उसका एक उदाहरण उन्होंने शिवपुर डकैती केस का दिया । एक ज़मींदार से क्रान्तिकारियों में से एक परिचित था; क्रान्तिकारियों ने ज़मींदार से सहायता

माँगी तो उसने कहा सहायता देना तो दिक़्क़त की बात है, मैं तुम्हें अपना ख़ज़ाना बता देता हूँ तुम लोग डाका डाल कर उसे ले जाओ इससे अच्छी सहायना मिल जायेगी। यह क़िस्सा लम्बा है। अमरबाबू ने बताया कि इसी प्रकार से राजभक्त दीखने वाले लोगों में से कई गुप्त रूप से क्रान्तिकारियों की सहायता करते थे। इस जेल में जिससे सम्बन्ध जुड़ा वे हमारे बहुत ही प्रिय रहे और अमरबाबू जब तक जीवित रहे तब तक हम लोगों ने सच्चे साथी के रूप में काम किया।

छह महीने की जेल इस तरह कटेगी, कल्पना भी न की थी। सोचा था,न मालूम कितने कष्ट सहने पड़ेंगे, और इसके लिए तैयारी भी की थी। पहले दो महीने में वज़न सात पौण्ड घटा पर जेल से निकलते समय जितना लेकर गया उतना ही लेकर लौटा। जेलर और सुपरिन्टेन्डेण्ट दोनों ने मुझे ज़्यादा से ज़्यादा रिमीशन दिया, छह महीने की जेल पाँच महीने तीन दिन में पूरी हुई।

सन् १९२९ से मैंने डायरी लिखनी शुरू की तब से कोशिश की कि किसी दिन भी न छूटे। जेल में भी लिखी। उसमें शायद जेल का और उन दिनों का विस्तृत विवरण हो पर वह डायरी की कापी खो गयी है। याददाश्त के सहारे जैसा कुछ हुआ था उसको उसी रूप में यहाँ बताने की कोशिश की है। इसमें जरा भी अतिरंजना या कोई ऐसी बात नहीं जो बाद में जोड़ी गयी हो। यह हो सकता है कि बहुत बातें छूट गयी हों।--सीताराम सेकसरिया, ७ अगस्त, १९७०।

जेल जीवन : २

५ जनवरी, १९३२ : यहाँ की प्राय संस्थाएँ अनलॉफुल हो गयी थीं और जोरों से धर-पकड़ हो रही है। ऐसा मालूम होने लगा कि अपने भी आजकल में पकड़ लिये जायेंगे। घर आये तो सामने पुलिस के अफ़सर और सिपाही घर को घेरे दिखाई दिये। मालूम हुआ कि एक तो सर्च वारंट है और एक अपने को पकड़ने के लिए। एमरजेंसी अर्डिनेन्स की तीसरी धारा के अनुसार वारंट है। पुलिस वाला बड़ा भला आदमी था, उसने अच्छी तरह सर्च कर ली और बहुत अच्छा व्यवहार किया। अपनी मोटर में वह अपने को भवानीपुर थाने ले गया, वहाँ से अलीपुर कोर्ट और वहाँ से सेंट्रल जेल ले आया। आते समय भगवानदेवी से कहा, तुम लोगों को कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए और हो सके उतना देश का काम करना चाहिए।

अपने को मालूम हो गया था कि भाई बसन्तलालजी भी गिरफ़्तार हो चुके हैं। जेल में अपने को सेग्रेगेशन में जगह दी गयी तो वहाँ बराबर के मिलने वाले

पाँच बंगाली भाई आगे बैठे थे । बसन्तलालजी आये नहीं थे सो चिन्ता हुई कि कहीं और न भेज दें । कुछ देर में बसन्तलालजी तथा बड़े बाज़ार के मदनलाल मिश्र, सत्यदेव विद्यालंकार और रामलगनसिंह आ गये, बहुत थोड़ा भोजन किया। भोजन के मामले में अपने बहुत ही कमज़ोर हैं और यह अपने लिए दुःख तथा लज्जा की बात है । इस कमज़ोरी को दूर करने की कोशिश करते हैं तो भी ज़रा सी भी सफलता अभी तक नहीं मिली है ।

६ जनवरी : आसन, घूमना तथा प्रार्थना जितनी अच्छी तरह यहाँ होती है उतनी बाहर नहीं । साढ़े छह बजे बन्द कर दिया गया । वैसे तो दिन भर बन्द रहते हैं, वार्ड के बाहर नहीं जा सकते । रात में इतना फ़र्क हो जाता है कि जिस कमरे में रहते हैं उससे बाहर नहीं जा सकते । चलो, अच्छा ही है ! लोग कहते हैं, ऐसे जेल में क्या तकलीफ़ है । यह बात शायद ठीक होगी । थर्ड डिवीज़न के क़ैदियों को हम लोगों से बहुत अधिक कष्ट है लेकिन अपने को तो इस में भी कष्ट मालूम होता है । लेकिन इस कष्ट में एक सुख है और वह मानसिक सुख है और उसी सुख के कारण इन कष्टों का सामना हो सकता है ।

७ जनवरी : स्टेट्समैन से मालूम हुआ कि आन्दोलन थोड़ा-थोड़ा तो सभी जगह चल रहा है पर जैसी आवश्यकता है उस ज़ोर से अभी कहीं शुरू नहीं हुआ है । यह महात्माजी का आन्दोलन तो प्रभु का चलाया हुआ आन्दोलन है, वही इसे चलायेगा और वही इसे सफल बनायेगा । सवाल यह है कि सरकार दो महीने तक अपने को बन्द रख सकती है, केस चला कर सज़ा दी जा सकती है । क्या होगा ? इसका न कोई अन्दाज़ है और न पता । बाहर कई आदमियों को एक महीने के लिए नोटिस दिया गया है कि किसी राजनीतिक काम में भाग न लें, उनमें अपने मारवाड़ी मित्रों तथा कई बहनों के भी नाम हैं । अपनी तथा बसन्तलाल जी की मारवाड़ी मित्रों के सम्बन्ध में बातचीत हुई । उनको आशा है, तीन आदमियों में गंगाप्रसाद जी तो नोटिस को जरूर तोड़ेंगे ।

१२ जनवरी : मुलाक़ात आयी । इस से कोई लाभ नहीं, उलटे मन में उद्विग्नता होती है ।

१३ जनवरी : कल पुरुषोत्तम राय और बड़े बाजार के और लोगों में थोड़ी गरमागरम बातें हुई थीं इसलिए पुरुषोत्तम राय ने आज उपवास किया । ताश का खेल बराबर होता है, अपने शामिल नहीं होना चाहते । तब भी रात में कुछ देर उन लोगों के पास बैठ गये जिससे मन खींचने लगा इसलिए उठ गये ।

१४ जनवरी : कई लोगों की मुलाक़ात आयी थी । मालूम हुआ कि काम हो रहा है, आज एक बड़ा जुलूस निकला था, पुलिस ने लाठी चलायी । देखें कहाँ तक लाठियों की मार से राज्य कर सकते हैं ।

१८ जनवरी : कल जेल में अपने को पन्द्रह दिन हो जायेंगे । लोगों की धारणा

थी कि शायद हम लोग कल छोड़ दिये जायें लेकिन छोड़ना और रखना एक ही है। यदि आन्दोलन चलता रहा तो बाहर रहना हो नहीं सकता और यह आन्दोलन बन्द होने वाला नहीं। बाहर जाना, न जाना बराबर ही है। रही काम करने की बात, वह प्रभु की इच्छा पर निर्भर है, वह चाहेगा तब हर तरह से काम हो जायेगा। अपने जा कर ही क्या कर लेंगे, इसलिए अपने संतोष रखना चाहिए।

१९ जनवरी : मालूम हुआ कि सब आदमियों को कितने दिन बन्द रखेंगे, इसकी ख़बर आ गयी है। भाई वसन्तलालजी को बयालीस और अपने को उनचास दिन रखने की बात थी। इस से ज़रा ठीक नहीं लगा। एक हफ़्ते ज़्यादा रखने का कारण समझ नहीं आया। रात में परस्पर बातें करते-करते धर्म-विषय पर कुछ वाद-विवाद हो गया वह मुखकर नहीं था। अपने चुप हो गये। रात में करीब साढ़े बारह बजे नींद आयी इसलिए और भी कष्ट हुआ। नींद न आने से मन में कमज़ोरी के विचार आते है और उससे तकलीफ़ होती है। प्रभु का नामस्मरण करते सोये।

२० जनवरी : आज महाभारत पढ़ लिया गया।

२१ जनवरी . आज पढ़ने लायक कोई पुस्तक नहीं थी, समय यों ही गया। राजनीति की तो कोई पुस्तक आने ही नहीं देते और पुस्तकें आने में भी बाधा है।

२२ जनवरी : बाल कटाये। जेल मे बालो को धोना और तेल लगाना, सँवारना अच्छा नहीं लगता, अतः सब बाल कटा दिये। वैसे तो बाहर भी बाल रख कर क्या फ़ायदा, पर अपने मन से अभी नक़ली सुन्दरता का मोह हटा नहीं है। लोग ताश खेल रहे थे, अपने भी बैठ गये! खेल भी अपने चिपने (पकड़ने) लगा, काफ़ी देर तक बैठे रहे। खेला तो नहीं, लेकिन वहाँ से हटने की इच्छा नहीं हुई। अख़बार से मालूम हुआ कि आन्दोलन बहुत ही जोरों से चल रहा है, गिरफ़्तारी भी जोरों मे हो रही है। यदि सरकार सब क़ानून तोड़ने वालो को पकड़े तो बहुत लोग पकड़े जा सकते है। पर सबको पकड़ती नहीं। कुछ आदमियों को पकड़ती है बाक़ी लोगों को मारती है और छोड़ देती है। स्त्रियों की गिरफ़्तारी तो बहुत अधिक है। गत बार के आन्दोलन की अपेक्षा वे इस बार और भी अधिक उत्साह से भाग ले रही है। यह एक पवित्र आन्दोलन है, इसमें जितनी अधिक पवित्रता होगी वे ही अधिक भाग ले सकेंगे इसलिए प्रभु इसको सफल भी निश्चय ही करेगा।

२३ जनवरी · कृष्णदासजी, बृजलालजी गोयनका, गुलाबचन्दभाई यहाँ आ गये हैं, उनसे मिलने की इच्छा है लेकिन मिलना मुश्किल हो रहा है। मिलना हो जाये तो अच्छा है, नहीं होगा तो जेल है।

२४ जनवरी : बाँग्ला पुस्तक पढ़ी। आज हावड़े के विभूतिभूषण हाजरा भी आ गये। वह हँसोड़ हैं इसलिए हँसी-दिल्लगी होती रही। अपने को विशेष अच्छी नहीं लगती थी, पर बैठे तो थे ही।

२६ जनवरी : कुछ साथी स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में वन्दे मातरम् आदि बोले । देखा-देखी अन्य वार्डों से वन्दे मातरम् की बुलन्द आवाज़ आने लगी । उन वार्डों में आदमी अधिक हैं । पगली घण्टी बजनी शुरू हुई और सिपाही बड़े जोर से इधर-उधर दौड़ने लगे । अपने तथा भाई बसन्तलालजी ऐसे हंगामे के विरूद्ध थे । जेल में आकर वन्देमातरम् बोलने या और तरह की गड़बड़ करने से अपनी समझ में देश का कोई लाभ नहीं । लेकिन यहाँ ऐसी बात कहने वाले कायर और डरपोक गिने जाते हैं । अपने यह जानते थे कि ये लोग मानने वाले नहीं हैं इसलिए अपने कोई विरोध तो नहीं किया लेकिन शामिल नहीं हुए । उधर के लोगों ने कहीं से छिपा कर झण्डा मँगा लिया और उसको लेकर बड़ा हल्ला मचाया । जेल वालों ने झण्डा छीन लिया और उन लोगों को बन्द कर दिया, इसके विरोध में उन लोगों ने खाया नहीं । इधर जो लोग वन्दे मातरम् बोलने वाले थे उन्होंने मज़े में खाया । बँगला पढ़ी । बाहर क्या हुआ होगा जो हुआ होगा अच्छा ही हुआ होगा। शाम को भी उन लोगो ने भोजन नहीं किया तब जेल वाले यहाँ से अमर चटर्जी आदि को उनको समझाने के लिए ले गये । उन लोगों ने आकर कहा, किसी के चोट नहीं लगी है कल से वे लोग भोजन करेंगे ।

२७ जनवरी : जिस बंगाली सज्जन से बाँग्ला का अभ्यास करते थे वह नोटिस दे कर छोड़ दिये गये । निज में ही थोड़ी देर पढ़ते रहे । कुछ देर बाद रामकुमार जी भुवालका तथा दो और सज्जन आये । अभी इनको सजा नहीं हुई है, अट्ठाइस को केस है । रामकुमारजी का कहना था कि छब्बीस को कलकत्ता में सब जगह ग़जब का काम हुआ है । देश के लोगों में उत्साह और जोश है । उन्होंने यह भी कहा कि आज तक सारे हिन्दुस्तान में पैंतालीस हज़ार से कम आदमी नहीं पकड़े गये हैं यदि यह ठीक हो तो आन्दोलन की गति बहुत ही तीव्र है यह तो निश्चय है कि यह आन्दोलन दबने वाला नहीं है । महात्माजी की तपश्चर्या विफल नहीं हो सकती ।

२८ जनवरी : बँगला पुस्तक पढ़ते रहे । अभी बँगला का अभ्यास नहीं है इसलिए ज्यादा समय में कम पढ़ाई होती है । बड़े बाज़ार के लोगों और अन्य साथियों का अनुभव मिल रहा है । इन लोगों में ऐसे भी लोग हैं, जो पढ़े-लिखे हैं तथा देश के लिए तकलीफ़ उठाते हैं, निज का जीवन बड़ी तकलीफ़ से बसर करते हैं । इतना करते हुए भी इनका क्या उद्देश्य है, किस लिए इतनी तकलीफ़ उठाते हैं– समझ में नहीं आता । एक तरफ़ तो कष्ट उठाते हैं, दूसरी तरफ़ बहुत छोटी बातों के लिए गड़बड़ करते हैं तथा परस्पर में झगड़ा-द्वेष करते हैं । इस से समझ में नहीं आता कि यह क्या बात है ।

२९ जनवरी : बड़े बाजार के अन्य लोगों की मुलाक़ात आयी थी । उनसे मालूम हुआ कि पन्ना भी जेल आने के लिए उतावली हो रही है । भगवानदेवी

उसको रोकती है इसलिए वह अपने से आज्ञा लेना चाहती है । अपने उसे क्या कहें, यह सोचना है । बसन्तलाल जी की राय है कि उसको नहीं आने देना चाहिए। अपने अभी निश्चय नहीं किया है कि उसको रोकें । मुलाकात में आयेगी तब उस से बात करेंगे । उस के अन्दर बहुत प्रबल भावना मालूम होगी तो अपने को रोकना नहीं जँचता । यदि यों ही किसी की बात सुन कर इच्छा हो गई होगी तो उसको समझावेंगे ।

३० जनवरी : आज कबीर ग्रन्थावली पढ़ी । कबीर जी ईश्वर भक्त ही नहीं, महान् सुधारक भी थे । जातिपाँति तथा छुआछूत के वे कट्टर विरोधी थे । उन्होंने एक जगह कहा है, 'जो बाह्मन बाह्मनी जाया तो आन वाट क्यों नहीं आया जो तूँ तुरक-तुरकनी जाया तो भीनर खतना क्यों न कराया ।'-इसी प्रकार उन्होंने छुआछूत वालों की खबर ली है । उनकी कविता हृदय में पैठने वाली है । बाँगला पुस्तक पढ़ी । बँगला साहित्य का ज्ञान न होने के कारण वह पूरी-पूरी समझ में नहीं आती लेकिन पढ़ने से कुछ ज्ञान बढ़ता ही है ।

३१ जनवरी : बड़ाबाज़ार के दयाराम बेरी से विभूतिभूषण हाजरा ने दिल्लगी की जिससे बेरी जी ने नाराज हो कर उनको माँ-बहन की गाली दी तथा जूता फेंका । यह काण्ड अपने को बहुत ही बुरा मालूम हुआ और ऐसे लोगों के साथ रहना पड़ता है इसका भी विचार हुआ । लेकिन उपाय क्या है न तो अपने में इतना बल है कि इनको समझा दें और ये मान जायें । यहाँ जो लोग हैं, प्रायः दिन भर ही बेढंगेपन से रहते है । खैर प्रभु ने इन का साथ भी किसी लाभ के लिए ही दिया होगा । शचीन्द्रनाथ मित्र जो अपने यहाँ एक साथी थे तथा ए. बी. एस. (छात्र संगठन) के प्रेसीडेन्ट थे उनको नौ महीने की सज़ा हो गयी और उन्हे सी क्लास में रखा गया है । इससे मालूम होता है कि इस बार राजनीतिक क़ैदियों के सम्बन्ध मे सरकार की नीति क्या है पर चाहे जो हो, इन बातों से लोग डरेंगे थोड़े ही । जिनके मन में देश का दर्द है वे अपने सुखों की परवा नहीं करते ।

२ फ़रवरी : 'सम्राट अशोक नामक पुस्तक पढ़ी । बाबा गुरुदत्त सिंह, जो बहुत बूढ़े हैं, वे भी आज यहाँ आ गये । उनको नौ महीने की सजा हुई है । वे रात में सोते समय बेहोशी में बहुत बोलते हैं ।

५ फ़रवरी : 'सम्राट् अशोक' आज समाप्त हो गयी । अपने पढ़ते थे भाई बसन्तलालजी सुनते थे । पुस्तक शिक्षापूर्ण है । इसमें एक उपगुप्त श्रेष्ठी तथा उसकी स्त्री का चरित्र बहुत ही सात्त्विक और परोपकारमय दिखाया गया है । इन्द्रपुर के कुमार का चरित्र भी आदर्श है तथा इन्द्रपुर की राजकुमारी का भ्रातृप्रेम तथा देशप्रेम भी खूब है । अशोक तो आदर्श पुरुष था ही । उसका कहना ही क्या–सादगी, सरलता, सचाई, त्याग तथा शेष उसकी अहिंसा ! बौद्ध-भिक्षुओं का अनाचार तथा धर्म के नाम पर क्या-क्या अत्याचार घटित हो सकते हैं, यह भी बड़ी अच्छी तरह

दिखाया गया है । पुस्तक की भाषा भी सुन्दर और अलंकारमय थी । उपन्यास होने पर भी यह शिक्षाप्रद और पढ़ने योग्य पुस्तक है इसे निसंकोच बहनों के हाथ में दे सकते हैं ।

६ फ़रवरी : मुलाक़ात आयी । भगवानदेवी, पन्ना, दुर्गाप्रसाद जी की लड़की कुन्ती आदि आये । बसन्तलालजी की मुलाकात में उनकी स्त्री आई । साधारण बातचीत हुई । भगवानदेवी दुःखित थीं । उन लोगों का यह विचार था कि मारवाड़ियो में यह दो ही आदमी पकड़े गये है और कोई भी नहीं, यह तो उनकी भूल है। ईश्वर जिन पर जितनी कृपा करता है वे उतना ही पवित्र कामों मे भाग ले सकते है । यह तो ख़ुश होने की बात है । पन्ना की पढ़ाई की व्यवस्था बड़ी गोलमाल है । गत बार अपने जेल आये थे तब भी उसकी पढ़ाई का हर्ज हो गया था। अपने बाहर थे तब भी उसकी तरफ़ विशेष ध्यान नहीं दे सके तो भी व्यवस्था थी । लेकिन बहुत ही हर्ज हो रहा है । लेकिन क्या उपाय, जो हो उसमें सन्तोष मानना चाहिए । कुन्ती से बाते हुई । लड़कियाँ स्कूल मे बहुत ही असन्तुष्ट है। राष्ट्रीयता के कामों की वहाँ कोई बात नहीं हो पाती, यह बहुत दुःख की बात है । जिन लड़कियो को अपने प्राणो से प्यार करते थे और उनके अन्दर देशप्रेम तथा सुधार की भावना लाना चाहते थे, आज वही लड़कियां उस वातावरण से अलहदा हो रही है । लेकिन अपना क्या उपाय ।

७ फ़रवरी : अपने जिस वार्ड में है उसके ठीक बगल मे ही फांसी वार्ड है। अपनी जगह से वह अच्छी तरह दिखाई देता है । आजकल दो फाँसी की सजा पाये हुए आदमी उन कोठरियो में रहते है । एक आदमी तो अपने आने से पहले ही था एक और आ गया । किसी भी सभ्य देश म तथा सभ्य मनुष्यो मे फाँसी का होना उस सभ्यता पर कलक है । यह अमानुषिक सजा है । एक दुःख भरा दृश्य है जिसने हत्या की उसने बहुत बड़ा अन्याय तो किया ही है उसको फाँसी दे कर उस अन्याय को और भी बड़ा अन्याय बनाना है । इन फाँसियो से हत्या बन्द नहीं होती बल्कि यह होता है कि जो बदमाश या द्वेषी आदमी निज मे मरना स्वीकार करता है वह एक अच्छे आदमी की हत्या करने पर उतारू हो जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि फाँसी की सज़ा उठा कर ऐसी सजा रखी जाय जिससे लोग नृशस हत्याएं न करे । फांसी की सजा के पहले के कैदियो को जो सड़ाया जाता है वह तो बहुत ही भयानक है । इसको तुरत बन्द किया जाना चाहिए।

आज के छापे (अखबार) से मालूम हुआ कि एक लड़की ने सीनेट हाल मे गवर्नर पर गोली चलायी[1] इससे पहले भी दो लड़कियों ने एक मजिस्ट्रेट की हत्या

---

१. प्रसिद्ध क्रातिकारी वीणा दास (अब भौमिक) ने तत्कालीन बंगाल के गर्वनर सर जान एंडरसन पर गोली चलायी थी । वर्षो बाद जेल से छूटने के बाद डायरी लेखक ने वीणा दास को मारवाड़ी बालिका विद्यालय में अध्यापिका के पद पर रखा, जब उन्हें बगाली स्कूलों में कोई रखने को तैयार नहीं था, वह अपने को गाधीजी की 'आज्ञा न मानने वाली' बेटी कहती है ।

कर दी थी। यह सब काण्ड पहले पुरुष करते थे, अब स्त्रियाँ भी ऐसे मामलों में हाथ डालने लगीं। यह तो भारतीय स्त्रियों के गौरव को नष्ट करने वाला काम है। जो मनुष्य की जन्मदात्री है वह अपने पुत्रों की हत्या कैसे कर सकती है, यह सर्पिणी जैसा काम है जो अपने बच्चों को आप ही खा जाती है। यह बहन ऐसा काम किस प्रकार कर सकी। इस प्रकार छिप-छिप कर किसी भारतीय महिला ने आज तक किसी की हत्या नहीं की थी। इन्होंने भारत के इतिहास में नारियों पर कलंक लगाया है। बम्बई में पूज्य महात्माजी ने कहा था, जो लड़कियाँ ऐसे काण्ड करती हैं उन्होंने बहुत बुरा काम किया है, और ऐसे काम जब होते हैं तब मुझे कितनी पीड़ा होती है इसको मै ही अनुभव करता हूँ और मेरे लिए तो यह अधिक दुःख की बात है कि उन लड़कियो को मं तो अपनी ही लड़कियाँ मानता हूँ। मेरी लड़कियाँ ऐसा दुःखद काम करें और मैं जीवित रहूँ।

इन बातों से मालूम होता है कि उनको कितना कष्ट था। इस देश के अन्धे लोगों ने अब भी इस महापुरुष को नहीं पहचाना है और उसके आदेशों की अवहेलना करके उससे उल्टा और हानि पहुँचाने वाले काम किये हैं। इसका परिणाम सुखकर नहीं हो सकता। यदि इसी प्रकार यहाँ के लोग करते रहेंगे तो देश की स्वाधीनता के घातक बनेंगे। इन पागलों को यह पता नहीं कि आज तक इस तरह छिप-छिपा कर मारने वालों ने कहाँ स्वतन्त्रता पायी है। कौन सा देश इस तरीक़े से स्वतन्त्र हुआ है ? इन बहनों का इस काम में आना बहुत ही खतरनाक है। इसमें इनका जितना दोष है वह बहुत थोड़ा है, दोष तो उनका है जो इनको बहका कर इस मार्ग की ओर लगाते है। महिलाओं का हृदय भावुक तथा पवित्र होता है। उनको जिस तरफ़ झुका दिया जाता है उसी तरफ़ वे लग जाती हैं। प्रभु सब का मंगल करे और सबको सद्‌बुद्धि दे।

८ फ़रवरी : पुरुषोत्तम राय और सूर्यवंशी जी का झगड़ा हो गया। रायसाहब ही दुःखित मालूम होते थे लेकिन बहुत जो जस करहिं सो तस फल चाखा' ...खैर।

९ फ़रवरी : बाबा गुरुदत्तसिंह जी ने कोमागाटा मारू की घटना कहनी शुरू की है। लोग बहुत प्रेम से सुनते हैं लेकिन अपने तो उसमें विशेष अनुराग पैदा नहीं हुआ, न कोई खास बात मालूम हुई। अत्युक्ति तो मालूम हुई लेकिन यह बात ज़रूर है कि बाबा जी बेचारे बुड्ढे आदमी हैं और देश के काम में तकलीफ़ उठाते हैं। अपने तो इतना कष्ट उठा नहीं सकते।

११ फ़रवरी : सरस्वती-पूजा के उपलक्ष्य में राजनीतिक क़ैदियों को तीन नम्बर वार्ड में जा कर परस्पर मिलने और खाने आदि के लिए जाने दिया गया। प्रायः ढ़ाई सौ आदमी थे जिनमें बीस-तीस हिन्दुस्तानी (उत्तर भारतीय) के सिवा सभी बंगाली थे और प्रायः आदमी सी क्लास मे थे। अच्छे पढ़े-लिखे लड़के तथा और लोग सी क्लास का जाँघिया और कुरता पहने हुए थे। बाल बढ़े हुए। तेल नहीं

मिलता, साबुन नहीं मिलता। कई आदमियों के शरीर पर पुलिस की चोट के निशान थे। एक आदमी का तो हाथ भी टूट गया था। दस-बारह वर्ष के बच्चे भी कई थे। ऐसी हालत थी कि देख कर कष्ट होता था। सी क्लास के भाइयों को वास्तविक कष्ट है। परस्पर मिलने से लोगों को सन्तोष तथा शान्ति मिली।

१२ फ़रवरी : बाबा गुरुदत्तसिंह की बात रोज होती है।

१४ फ़रवरी : बसन्तलालजी कल छोड़ दिये जायेंगे, यह आज एक तरह से पक्का हो गया। उनके जाने से मन में एक प्रकार का क्षोभ होता है वह स्वाभाविक है। भगवान उनको अच्छा रखें, यही प्रार्थना है। कल से अपने को उनका अलहदा होना मालूम होगा।

१५ फ़रवरी : भाई बसन्तलालजी को लेने बाहर मित्र भी आये पर जेल का कोई आदमी नहीं आया। भोजन घर से कम आया, भगवानदेवी ने समझ लिया कि बसन्तलालजी तो छोड़ ही दिये गये होंगे। भगवानदेवी को मालूम हुआ कि बसन्तलालजी नहीं छूटे तो उसने तुरंत और भोजन बनाकर भेज दिया। मन में भगवानदेवी के प्रति बहुत प्रेम और आदर उत्पन्न हुआ। उसके हृदय में बड़ी सरलता और प्रेम है। ईश्वर की कृपा से ही अपने को ऐसी स्त्री मिली है। प्रभु की कृपा बिना ऐसा संयोग नहीं होता। मालूम हुआ कि बसन्तलाल जी आदि जो तीन सज्जन आज छूटने वाले थे उनके अट्ठारह दिन और बढ़ा दिये गये हैं।

१६ फ़रवरी : बाबाजी की बातें सुनीं। मालूम हुआ, कल कलकत्ता में बहुत से आदमी पकड़े गए तथा बहुतों पर मार पड़ी। महिलाएँ भी काफी संख्या में गिरफ़्तार हुई। साथ ही सुना एक सारजेंट को भी चोट लगी है। यह ठीक नहीं। अपने आदमी तो जाते है मरने के लिए, मारने के लिए नहीं इसलिए सबसे पहले इन सब बातों का पूरा ख़याल रखना ज़रूरी है। इस आन्दोलन को ईश्वर चलाता है और वही सब को सत्य का बल देगा।

१७ फ़रवरी : फाँसी की सज़ा पाये दो क़ैदियों में से एक को आज फाँसी हो गयी। उसको देखने के लिए बैठे रहे। उसको पूछा, स्नान करोगे। उसके स्वीकार करने पर स्नान कराया गया। बहुत से सिपाही, जेलर, सुपरिंटेंडेंट आदि आये। उसके हाथों को पीछे की ओर कर के हथकड़ी लगा दी गई। सिर से गले तक कपड़ा पहना दिया गया और चबूतरे पर लाकर फाँसी की डोरी गले में डाल दी गई। लोहे का तख़्ता जिस पर वह खड़ा था वह सरक गया और वह लटक कर नीचे चला गया। एक मिनट भी नहीं लगा। प्राण कितनी देर में गये इसका मालूम नहीं हो सकता। क़रीब एक घण्टे बाद वह बाहर निकाला गया। देखते समय कुछ भी नहीं मालूम हो सका। इस प्रकार एक आदमी की हत्या कर दी गई। मान लो, उसने बहुत अन्याय किया होगा तब भी इस प्रकार बदले में उसको मार कर कोई लाभ नहीं हो सकता। उसने आवेश में आकर मूर्खतावश

और अज्ञानवश किसी को मार दिया होगा। उसके बदले में उसको न्याय के नाम पर मार डाला गया।

चार बजे अस्पताल में लोगों से मिलने तथा अस्पताल देखने गये। बहुत लोग मिले। राजनीतिक क़ैदियों में बीमार बहुत कम ही लोग थे। ज्यादा आदमी बीमारी का बहाना बना अस्पताल में पड़े है। यह राजनीतिक क़ैदियों के योग्य बात नहीं पर यहाँ तो इसका विचार नहीं के बराबर है। अस्पताल बड़ा है, जेल के हिसाब से ठीक व्यवस्था है। यह कहना चाहिये सेन्ट्रल जेल और जेलों की अपेक्षा बहुत अच्छी जेल है। सब व्यवस्था ध्यानपूर्वक की जाती है डॉक्टर आदि भी अच्छे आदमी मालूम हुए।

१९ फ़रवरी : बाबा गुरुदत्तसिंह की अज्ञातवास की कहानी आज समाप्त हो गई। उसमें ऐसी कोई खास बात अपने को नहीं लगी। अज्ञातवास में जो कष्ट हैं वे तो उनको उठाने पड़े ही। देवनन्दनसिंह दीक्षित, जो एमरजेन्सी आर्डिनेन्स में अपने साथ ही पकड़ कर आये थे, उनको आज राजद्रोह के अपराध में एक वर्ष की सज़ा दी गयी।

२० फ़रवरी : प्रेमयोग नाम की पुस्तक पढ़ी। उसमें सूरदास जी ने वात्सल्य का जो ख़ाका खींचा है वह अपूर्व है। यशोदा का कृष्ण के प्रति प्रेम बेजोड़ है। श्रीकृष्ण की बाल-लीला प्रेममयी तथा आह्लाददायिनी है। उनका वह मचल मचल कर माखन-रोटी माँगना और रुठना आदि ऐसा है और सूरदासजी ने जिस भावपूर्ण भाषा में वर्णन किया है वह हृदय-सागर में अपूर्व तरंगें पैदा करता है। अपने उस समय बेहोश जैसे हो गये। यदि प्रभु अपने को प्रेम सागर में डुबो दे और उस अथाह सागर में ऐसा डूबें कि कहा जाये कि क्या हुआ इसका पता भी न मिले उसी में लीन हो जाये। ऐसा तब ही हो सकता है जब वह प्रभु कृपा कर के अपने को प्रेम सागर में ले ले।

२२ फ़रवरी : कल अपने छूटने का टाइम है। आज शाम तक कोई नया आर्डर नहीं आया इससे मालूम होता है कल छोड़ दिये जायेंगे लेकिन कुछ ठीक नहीं।

२३ फ़रवरी : जेल का सारजेट आया। उसने आध घण्टे में तैयार होने को कहा। कपड़े-बिछौने बाँधकर तैयार हो गये। करीब नौ बजे दौरे पर सुपरिनटेंडेंट आया तब उसने कहा, चार मार्च तक रखने का आर्डर आ गया है। अपने को तो बसन्तलालजी के बिना अकेले छूटने में कोई आनन्द नहीं था।

२४ फ़रवरी : वर्तमान टर्की नाम की अँगरेज़ी पुस्तक दूसरे आदमी से सुनते है। मालूम होता है कि कमाल पाशा ने तुर्की में अपूर्व सुधार किया है, उनमे

मुख्य सुधार महिलाओं का है और वही सब सुधारों की बुनियाद है । कमाल ने सब से पहले इस तरफ़ ध्यान दिया । उसने महिलाओं के सुधार के लिए जो नियम बनाये वे ठीक तरह से काम आते हैं या नहीं, इसकी भी पूरी निगाह रखी और महिलाओं को उत्साहित करके तथा निज में उन नियमों का पालन करके बराबर उनको आगे बढ़ने में सहायता दी । इसीका परिणाम है कि आज तुर्की भी एक स्वतन्त्र, सुखी तथा सभ्य देश है । महिलाएँ बुरके में रखी जाती थीं, उनके लिए सूर्य की रोशनी तथा हवा लेना भी पाप बताया जाता था तथा उन्होंने अच्छी तरह से सड़क के दर्शन भी नहीं किए थे । एक महिला ने उस समय की टर्की की हालत के बारे में लिखा है कि कहीं मेरी इन सब बातों का पता किसी को मिल जायेगा तो मुझे जान से हाथ धोना पड़ेगा । जिस जगह कुछ ही दिन पहले ऐसी हालत थी आज वहाँ की महिलाएँ दूसरे राष्ट्रों में अपने देश के राजदूत का काम करती हैं । कैसा परिवर्तन, कैसा विकास है ।

प्यारी स्वतन्त्रता तू जिसके पास जाती है उसको तू ऐसा ही बना देती है तू कब इस अभागे को देश अपनायेगी। देवी तू भी स्त्री है । भारत की करोड़ों देवियाँ, तेरी करोड़ों बहनें आज तेरे अभाव में कितना कष्ट पा रही हैं, कितना दुखी और सन्ताप, अपमान का जीवन बिता रही हैं । तू इन पर कृपा करके एक बार मिल, आज वे तेरे लिए किस तरह तरस रही हैं । कितनी ही तो इतने दिनों के वियोग के कारण तुझे भूल ही गयी है अब तेरा नाम तथा रूप बताने पर तुझे याद नहीं करती । यदि इनसे तू शीघ्र न मिली तो तेरी ये करोड़ों बहनें तुझ से बिलकुल छूट जायेंगी । देवी, आपको याद रखना चाहिए कि जब तू इन के साथ रहती थी उन दिनों इन्होंने मानव समाज की बहुत बड़ी सेवा की थी । जैसा तेरा स्वभाव, सब को सुखी बनाना है वैसा ही तेरी इन बहनों का भी है । देवी, कृपा करो और पिछड़ी हुई बहनों से आ कर मिलो । इन्होंने ग़लतियाँ कीं या तेरा अपमान किया तो क्या सदा के लिए इनको छोड़ दोगी ?

फरीदपुर के लालमियाँ भी आज अपने वार्ड में आ गये।

२५ फ़रवरी : निपटने के समय बराबर खून गिरता है । यहाँ आये तब से ही प्रायः गिरता था, दो-तीन दिन से पेट में दर्द भी हो जाता है । यह सब होता है, इसके लिए मन में चिन्ता हो जाती है । किसी भी बात के लिए चिन्ता क्यों ? जो कुछ होता है वह प्रभु की इच्छा से होता है ।

२७ फ़रवरी : मुलाकात आयी । सब से बातें कीं । उनमें निराशा मालूम होती थी । कई नये बंगाली सज्जन इस वार्ड में आ गये हैं जिनमें ज्यादा तो विद्यार्थी वर्ग के ही लोग हैं । शाम को इनका गान बहुत ही सुन्दर हुआ । बंगाल में गान बहुत है ही फिर इनका देशभक्तिपूर्ण गान होता है, उसका तो कहना क्या ?

बंगाल का साहित्य बहुत ऊँचा है, संगीत भी बहुत ऊँचा है ।

३ मार्च : सी क्लास के लोगों को जिस ढ़ंग से रखा जाता है वह अपने को कष्टकर मालूम हुआ । पूछने पर वे कहते थे, कोई कष्ट नहीं है ।

४ मार्च : कल छोड़ने की बात है ।

५ मार्च : जेल का आदमी बसन्तलाल जी को बुलाने आया और वह गये। उन्होंने आकर कहा, सब को छोड़ देंगे, पैरोल थाने में हाज़िरी देने की शर्त पर। उनको भी पैरोल का नोटिस मिल गया है । एक महीने तक दिन में दो बार थाने में हाजिरी देने को उसमें लिखा है तथा और भी कई शर्तें थीं । ऐसा ही नोटिस प्रायः सब को दिया गया । अपने को भी ठीक बसन्तलाल जी जैसा नोटिस मिला और क़रीब दस बजे छोड़ दिये गये ।

घर गये मन तो निश्चिन्त नहीं था, यह जो नोटिस मिला था उसका अर्थ था फिर तुरन्त जेल जाना । इसलिए किसी काम को करने का मन नहीं हुआ। बहुत मिलने वाले आ गये । हाज़िरी देने का समय था, नहीं गये । इसलिए धारणा हो रही थी कि शायद पुलिस अभी आ कर गिरफ़्तार कर ले । फूलचन्द जी चौधरी बहुत बीमार हैं, उन से मिले । खादी भण्डार गये। इस बात का डर तो था नहीं कि पकड़े जायेंगे क्योंकि पकड़ा जाना तो निश्चित है । ऐसी अपमानजनक शर्त मानना दो बार जा कर हाज़िरी देना । छिप कर रहना भी अच्छा काम नहीं। इसलिए पकड़े जाने के सिवा और क्या रास्ता है सो निर्भय हो कर फिर रहे थे।

यह इच्छा ज़रूर थी कि सोमवार को पकड़े जायें तो अच्छा, जिस से लाकअप में न रहना पड़े । गत बार लालबाज़ार के लाकअप में बहुत तकलीफ हुई थी। बसन्तलाल जी अपने पिता से मिलने जसीडीह चले गये, सोमवार को आने के लिए कह गये थे । अपने दिन भर लोगों से मिलते तथा बाहर की स्थिति, आन्दोलन की स्थिति का अध्ययन करते फिरे । शाम को बड़े बाजार के मित्रों से मिले । उन की बातों तथा सब देखने पर स्थिति बहुत ही निराशाजनक मालूम हुई । किसी आदमी में जान नहीं मालूम होती थी । बाजार में इतनी शान्ति थी कि साधारण सा समय मालूम होता था । कोई आन्दोलन हो रहा है या इस देश के पूज्य लोग जेलों में हैं, ऐसा नहीं मालूम होता था । सब अपने-अपने कामों में लगे थे । यदि कोई नया आदमी आये और लौट कर जाये और उससे उसके देश के लोग पूछें कि हिन्दुस्तान में जो आन्दोलन हो रहा है उस के विषय में क्या देखा, तो वह बेचारा क्या कहेगा । वह तो यही कह सकता है : भाई, मैंने तो किसी प्रकार का आन्दोलन नहीं देखा । शाम को कई बंगाली मित्र मिले । उन से आन्दोलन के सम्बन्ध में कई बातें मालूम हुईं लेकिन आशाजनक बात कोई नहीं थी ।

जेल जीवन : ३

७ मार्च १९३२ : कलकत्ता-विद्यालय गये। सब लड़कियाँ तथा अध्यापिकाएँ बहुत ही प्रेमपूर्वक मिलीं। लड़कियों ने एक मीटिंग की, उसमें उन्होंने अपने प्रति प्रेम दिखाया। अपने भी कई बातें कहीं, बोलते थे तब गला भर गया था। लड़कियाँ रोने लग गईं। इन निर्दोष बालिकाओं को प्रभु बल दे जिससे वे देश, समाज और धर्म की सेवा कर सकें।

एक बात कल लिखनी छूट गई। वह यह कि अपने जेल जाना है और तुरंत जाना है। अब की बार क्लासों का गड़बड़ है। बहुत ही कम आदमियों को ए क्लास देते हैं। अपने शरीर की जो हालत है उसको देखते हुए यदि अपने को सी क्लास दे दिया तो क्या तकलीफ़ बरदाश्त कर सकेंगे ? यह प्रश्न अपने दिल में था इसलिए अपने चाहते थे कि कोई कार्रवाई ऐसी हो जाये जिस से ए क्लास मिल जाये। एक मित्र से बात हुई वह पुलिस के किसी अफ़सर से मिले तो उसने विश्वास दिला दिया कि ए क्लास दिला दूँगा, आप निश्चिन्त रहिए। विचार करके देखा तो अपने ने यह अनुचित काम किया। लेकिन दिल की कमज़ोरी से समय-समय पर ऐसी हालत बन जाती है। अपने अनुचित तो समझते हैं, पर सी क्लास के कष्टों को उठाने को तैयार नहीं, दोनों बातें कैसे हो सकती हैं। ख़ैर जो हो, जब तक प्रभु सत्य की ओर लगने की शक्ति नहीं देगा तब तक अपने में वह शक्ति नहीं आ सकती, अपने तो प्रभु की कृपा पर ही पार उतर सकते हैं ! तुलसीदास जी की यह चौपाई अपने लिए ठीक हो सकती है, 'निज बुद्धि बल भरोस मोहि नाहीं, ताते विनय करहु तोहि पाहीं।'

स्कूल से निकले, चितपुर रोड, हरीसन रोड की मोड़ पर पहुँचते ही पकड़े गये। ऐसा मालूम हुआ कि लड़कियों से मुलाकात के लिए ही अपने को छोड़ रखा था। हरीसन रोड की मोड़ पर पहुँचे तो एक सी. आई. डी. मोड़ पर खड़ा था। वह अपने पास बराबर आया-जाया करता था। अपने को पहचानता था। उसने कहा, सीताराम बाबू मोटर से उतर आइए, मैंने आपको गिरफ़्तार किया है। अपने उससे कहा, उतरने की क्या ज़रूरत है तुम ही हमारी मोटर में आ जाओ। वह मोटर में बैठ गया और अपने को बड़ाबाज़ार थाने ले गया। वहाँ बहुत देर बैठे रहे कोई केस नहीं लिखा गया। जिसने अपने को गिरफ़्तार किया था वह भौचक खड़ा टेलीफ़ोन करता रहा। उसने कहा, टालीगंज थाने भेजना होगा। अब किस तरह जायें, यह विचार आरम्भ हुआ। कोई कहता था घोड़ा गाड़ी में भेजा जाये, कोई कहता था टैक्सी में। अपने कहा, हमारी मोटर है उसी में भेज दो तो उन्होंने कहा ठीक है। थाने में बहुत देर बैठे रहे फिर थाने के इंचार्ज ने अपने

को बुलाया। सब बातें पूछ कर केस लिखा। बेचारा अच्छा आदमी था। थोड़ी देर बाद असिस्टेंट कमिश्नर आया। वह अपने को अच्छी तरह जानता था, अपने उसे नहीं जानते थे। रात में क़रीब नौ बजे अलीपुर थाने भेज दिया गया। अपने लॉकअप में रहने से डरते थे वही मिला। वहाँ के अधिकारी अच्छा व्यवहार करना या अच्छी बात करना उचित नहीं समझते थे। कारण, वहाँ राजनैतिक क़ैदी बहुत ही कम जाते हैं। जो हो अपने को लॉकअप में बन्द कर दिया गया। लालबाजार के लॉकअप से तो यह कम अच्छा था। अपने से पहले एक भाई थे वे ताड़ी पीते और झगड़ा करते पकड़े गये बताते थे। बारह बजे तक पन्द्रह आदमी और आ गये तो अपने सिपाही से पूछा यहाँ कितने बजे तक आदमी आते हैं। उसने कहा, बस अब बारह बजे बाद नहीं आयेंगे। उनकी परस्पर की बातचीत, गाली, गन्दापन भी देखने की चीज थी। उन लोगों में से बहुत से कई बार जेल गये हुए थे। इन लोगों को देखने से तो ऐसा मालूम होता था कि बहुत से लोग अज्ञान तथा बेकारी में बुरी आदतें ग्रहण कर लेते हैं, वे छूटती नहीं और बराबर गिरते जाते हैं।

८ मार्च : जैसे तैसे सवेरा हुआ। पुलिस के एक बंगाली साहब आये। उन को इन भाइयों में से बहुत से जानते थे कारण ये लोग भी पुराने थे और पुलिस के साहब भी। परस्पर में बहुत सी बातें हुईं। एक कहने लगा, अब साधु हो गया हूँ, सिर्फ गाली देता हूँ, कभी कभी थोड़ा मारता हूँ नहीं तो पहले मैंने अच्छे-अच्छों के होश ठिकाने ला दिये हैं। इतने में खाने के लिए लपसी आयी। वे लोग खाना लाओ का हल्ला पहले से ही मचा रहे थे इसलिए मज़े में खायी। अपने को उसका रंग देखकर ही खाने की इच्छा नहीं थी। तब पुलिस वालों ने कहा, यहाँ छह पैसे का खाना मिलता है, इस में आपको और क्या मिलेगा!

कुछ देर बाद पुलिस के जमादारों का हवलदार आया। उस ने अपने को देखा तब कहा कि आप स्नान आदि करें तो हम आप को बाहर निकाल सकते है। अपने कहा, स्नान कर लेंगे। तब वह अपने को जमादारों की गारद में ले गया। वहाँ बहुत से जमादार थे, सबने अपने साथ बहुत अच्छा और प्रेम का व्यवहार किया। दो बाल्टी जल मंगा दिया, स्नान किया। शिवजी की मूर्ति उन्होंने स्थापित कर रखी है वहाँ बैठ कर उपासना की। उन भाइयों ने कहा, भोजन करिएगा ? अपने कहा, नहीं तब मिसरी मँगायी और शरबत बनाने लगे। अपने थोड़ी सी मिसरी खाकर जल पी लिया। जमादारों से बातचीत होती रही। उन्होंने कहा, हम लोग देश के पक्ष में नहीं हैं यह बात न समझें। हमारा भी देश है। हम भी सब समझते हैं कि लोग देश के लिए कितनी तकलीफ़ उठाते हैं लेकिन और कुछ काम नहीं मिलता तब इस को करना पड़ता है। एक भाई ने कहा, हमारी नौकरी तीस के नीचे है और बंगालियों की बहुत अधिक है और वे ही

पुलिस की ज्यादा मदद करते हैं । वे अपना काम नहीं छोड़ते और हम लोगों को नीचा समझते हैं तब हम ग़रीब आदमी कैसे छोड़ सकें । जिस दिन और लोग काम छोड़ेंगे उस दिन हम लोग सब से आगे रहेंगे । यदि वे छोड़ने को तैयार हों तो हम लोग तो अभी छोड दें । ऐसी बातें होती रहीं फिर उन्होंने अपने को बन्द नहीं किया । दस बजे डिप्टी कमिश्नर के यहाँ ले गये । क़रीब सवा दो बजे डिप्टी कमिश्नर के सामने उपस्थित किये गये । उसने तुरंत ही मजिस्ट्रेट के सामने भेजने का आर्डर दे दिया । अलीपुर कोर्ट गये । क़रीब तीन बजे केस हुआ तो पुलिस के गवाह नहीं आये, जिन्होंने गिरफ़्तार किया था वे भी नहीं पधारे इसलिए ग्यारह मार्च के लिए स्थगित हो गया । रामरिख, भगवानदेवी, पन्ना आदि सभी थे, उन लोगों ने वकील दे कर कहलाया कि 'ए' क्लास मिलना चाहिए । मजिस्ट्रेट ने कहा, मैं अनुरोध कर दूँगा, आप डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के यहाँ दरख़ास्त कीजिए। अपने समझे 'ए' क्लास हो गया है । चार बजे सेंट्रल जेल भेजे गये । प्रधान वार्डन ने कहा कि आपके लिए कोई क्लास नहीं लिखा है, हमें आपको 'सी' क्लास में रखना पड़ेगा । अपने उससे कहा, हमारा तो 'ए' क्लास हुआ है, भूल से काग़ज़ नहीं आया होगा । उसने कहा, कोई उपाय नहीं है । ख़ैर,अपने को 'सी' क्लास में भेजा गया । मन में बहुत कष्ट हुआ पर उपाय क्या था । कुछ देर में•जेल में लोगों को मालूम हुआ तब ये जेलर से मिले और कहा कि इन को 'सी' क्लास हो ही नहीं सकता, भूल से हुआ है । जेलर ने मान लिया और अपने को क्लासीफ़िकेशन में भेज दिया । वहाँ तो सब पहले वाले लोग थे इसलिए किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं मालूम हुई ।

९ मार्च : सुपरिनटेंडेट के पास ले जाया गया । उसने कहा, आप फिर आ गये । अपने कहा, क्या उपाय था । वजन हुआ, एक सौ छत्तीस पौंड था । फिर सुपरिनटेंडेंट ने कागज देखा तो कहा, आप तो 'सी' क्लास मे है । इनको वार्ड नम्बर चार में भेज दो । अपने उससे कहा भी लेकिन कोई उपाय नहीं था । अपना विश्वास था कि 'ए' क्लास हो गया है पर वह काग़ज़ नहीं आया । 'सी क्लास के वार्ड में भेज दिया गया । जान-पहचान के दो तीन खास आदमी थे, उनके पास रहे । आदमी इस वार्ड में ज़्यादा थे । लड़के बहुत थे, हल्लागुल्ला बहुत था। निपटने की जगह बहुत ख़राब थी, क्या करते।

१० मार्च : सुना कि बसन्तलालजी और मदनलाल मिश्र पकड़े गये और अमर बोस को नौ महीने की सजा हो गई । शाम को भगवानदेवी, रामरिख आदि मिलने आये तो कहा, जाल के भीतर से ही मुलाक़ात होगी । अपने कहा, तब हम लोग तो मुलाक़ात नहीं करेंगे, तब उन्होंने दो जाल की जगह एक जाल के भीतर से मुलाकात करायी । अपना मन इतना क्षुब्ध हो गया कि उन लोगों से कहा, क्लासिफ़िकेशन होने पर ही मुलाक़ात करें । नींद आ गयी यह भगवान की

कृपा है।

११ मार्च : दस बजे कोर्ट का आदमी लेने आया। बाहर निकलते ही बसन्त लाल जी और मदनलाल मिश्र मिले। उन्होंने कहा, हम लोगों को छह-छह महीने की सज़ा हुई है। कोर्ट पहुँचे, अपना केस होने में देर थी।

तारीख़ आठ की एक बात छूट गयी, वह यहाँ लिखते हैं। जब अपने को मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित किया गया तो उसने कहा, आप मारवाड़ी हैं ? अपने कहा, हाँ। उसने कहा, मारवाड़ी भी स्वदेशी आन्दोलन में पड़ने लगे। आप क्यों इस झमेले में पड़ते हैं ? आप तो व्यापारी हैं, अपने व्यापार में चले जाइए। मैं आपको छोड़ देता हूँ यदि आप कह दें कि इस आन्दोलन में भाग नहीं लेंगे। अपने उससे कहा कि मारवाड़ी भी इस काम में भाग लेते हैं और हमें कुछ कहना नहीं है। हम आपको कोई वचन नहीं दे सकते। मतलब यह है कि कोर्ट में शायद अपने पहले कोई मारवाड़ी नहीं आया होगा। मारवाड़ी समाज का इस आन्दोलन में कितना भाग है, इसका अनुमान बाहर के लोग जानते भी नहीं।

लॉकअप के सामने बहुत देर बैठा रहना पड़ा, बीच-बीच में मित्र मिलने आते तो क्लर्क झिड़कता था। रोष में एक बार उसने बेजा झिड़का और कहा, इनको लॉकअप में बन्द करो। इतना कहने की देर थी कि सिपाही साहब ने अपने को धक्का लगाया—चलो भीतर। अपने क्या करते, उससे कहा तो उसने कहा, माफ़ कर दीजिए हम तो आप की ख़ातिर करते हैं पर नौकरी तो देखनी ही होगी।

साढ़े तीन बजे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। चार-पाँच मित्रों को छोड़ कर किसी को भीतर नहीं आने दिया। भगवानदेवी, पन्ना को भी नहीं। केस चला, थोड़ी बातें होने के बाद फिर स्थगित करने की बात आयी। अपने कहा, स्थगित क्यों करते हैं तब उन्होंने कहा, जिसने आप को नोटिस दिया वह नहीं आया है तो अपने कहा कि नोटिस मुझे मिला है। फिर उसने कहा, आप नोटिस तोड़कर बड़ाबाजार गये थे, अपने कहा, हाँ। तब उसने कहा, आप दोषी हैं और छह महीने की सपरिश्रम सज़ा दी। क्लासिफिकेशन का सवाल उठा तो उस ने कहा, मुझे तो क्लासिफ़िकेशन का अधिकार नहीं है। आप डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को दरख़ास्त दीजिए। उन लोगों ने वैसा ही किया। अब यह हुआ कि एक दिन सी क्लास में और रहना पड़ेगा। इतनी कोशिश पर क्लास ठीक नहीं हो सका, इस का आश्चर्य था। क़रीब सात बजे फिर सेंट्रल जेल भेज दिये गये। वहाँ जेलर आदि कोई नहीं था, बहुत देर दरवाजे पर बैठे रहे फिर जेल के कपड़े दिये गये। बन्दर जैसा स्वांग बना दिया। वार्ड बन्द हो गया था उस को खोल कर बन्द कर दिया गया। पशुओं के बाड़े की तरह एक कमरे में अस्सी आदमियों को बन्द कर दिया जाता है। शाम को भोजन हुआ कि नहीं, इसकी खबर कौन लेता ?

१२ मार्च : ऐसी रोटी आज के पहले अपने सामने नहीं आई थी। ख़ैर,

नमक के साथ उन दो रोटियों के ऊपर का हिस्सा उतार कर खाया और जल पीया। लोगों से बातचीत करते रहे। जो लोग मिलते आश्चर्य से पूछते, आपको सी क्लास दिया। सहानुभूति दिखलाते और कहते, दो चार दिन में आपका क्लासीफ़िकेशन ज़रूर हो जायेगा। यह बात अपने को अच्छी लगे और विश्वास भी हो। यहाँ के लोग बहुत प्रेम का व्यवहार करते हैं पर अपने मन में शान्ति नहीं, वह 'ए', 'बी' क्लास की ओर लगा हुआ है। बसन्तलाल जी का भी साथ छूट गया। वे इसी जेल में हैं लेकिन मिल नहीं सकते। अपने एक भी साथी या मित्र यहाँ पुरानों में नहीं हैं। इसलिए तकलीफ़ ज़्यादा मालूम होती है। ऐसे ही दिन बीत गया।

१३ मार्च -१८ अप्रैल : अब तारीखवार लिखना ठीक नहीं। न तो कोई काम ही किया और न तारीखवार बातें याद हैं। इसलिए मोटी बातें एक साथ लिखने की कोशिश करते हैं। प्रातः, सायंकाल प्रार्थना बराबर होती ही रही है। वार्ड नम्बर दो के भाइयों ने अपने लिये खाना भेजने का प्रबन्ध किया, उस में भोर में डेढ़ पाव दूध है। नम्बर दो के भाई बेचारे बड़े प्रेम से भेजते हैं पर अपने ही नहीं खा सके। यह तो अपना पाप था, अपने ऐसी आदत डाल न सके कि जो मिले वह सन्तोषपूर्वक खायें और समझें कि भगवान् ने जो भेजा है वह ही अमृत है। अपने इन सब बातों को जानते है लेकिन मानसिक कमज़ोरी मन को दबा देनी है। यह एक तरह का पाप है। जब प्रभु दया करेगा तब ही पापों और वासनाओं से छुटकारा होगा।

खैर, इस प्रकार पाँच-सात दिन बीते। एक दिन बसन्तलाल जी आदि से मिलने का मौका मिला। पूछने लगे, तकलीफ़ तो नहीं होती। अपने को कुरता जाँघिया पहने देखकर लोग कहते थे, यह लगते तो आप को अच्छे हैं। बसन्तलाल जी को भी कोई आराम तो नहीं है पर अपने से बहुत अच्छे हैं। उनको तक़लीफ़ न हो यह भी तो खुशी की बात है। एक दिन चारू बाबू डॉक्टर ने कहा,आप अस्पताल आ जाइए, वहाँ तकलीफ नहीं होगी। लेकिन अपने जाने की इच्छा नहीं थी, अपने कोई बीमार नहीं। झूठा बहाना बना कर जाना ठीक नहीं जँचता। उन्होंने कहा, हम ने आपके लिए जगह ठीक की है और डॉक्टर से बात की है। बसन्तलाल जी दाँत उखड़वाने अस्पताल आये थे। उन्होंने भी कहा, आप आ जायें तो अच्छा है लेकिन अपना मन स्वीकार नहीं करता था इसलिए नहीं गये। दो-चार दिन निकल गये, लोग मिलते थे और आश्चर्य व सहानुभूति दिखाते थे। यहाँ बंगाल के जो नामी आदमी हैं जिनके हाथ में एकाध पत्र या हो-हल्ला करने का साधन है वे कहते थे कि हम लोग आपके क्लासीफ़िकेशन की चेष्टा कर रहे हैं। मतलब बाहर में सबसे काम पड़ता है और अपने से जो हो सकती थी उन की सेवा करते थे। शायद वे अपने से और भी आशा करते हैं इसलिए बात

की सहानुभूति क्यों न दिखलायी जाये । एक दिन सतीश दासगुप्त ने कहा, आप की तबियत अच्छी नहीं, बवासीर की बीमारी है इसलिए अस्पताल में चले जाइए, इस में कुछ नुक़सान नहीं । अपना मन तो लपलप कर ही रहा था । अपने अस्पताल में आ गये । रात भर तो ऊँटपटाँग रहे, सवेरे जिस कमरे में चारू बाबू थे उसी में जगह मिल गयी ।

लोग कहते हैं कि अस्पताल में सब से अच्छा कमरा यही है । यहाँ दूध, पाव रोटी तथा दो कमला नीबू (सन्तरा) खाने को मिला, इससे अपने को सुविधा मिली । निपटने और स्नान करने का भी आराम था । लेकिन अनेक रोगी हैं हवा अच्छी नहीं है । अपने शुरू में आये जब तो देखकर घबराये और रहने की इच्छा नहीं हुई । पर लोगो ने कहा कि दो-एक दिन रह कर देख ले, न जँचे तो चले जाइएगा, इसलिए रह गये और फिर यही एक प्रकार से ही ठीक मालूम होने लगा । भोर में सुप्रि० आया तो अपने को देख कर चौका और रहने की अनुमति दे गया । एक बात और यह हुई कि अस्पताल मे आ कर अपने ताश खेलना शुरू कर दिया । गत बार जेल में जब लोग ताश खेलते थे तब अपने नाक-भौ सिकोड़ते थे और समझते थे कि यह लोग अच्छा नहीं कर रहे है, वही काम निज में करने में लग गये । समय पर कहना और करना इस में बहुत फ़र्क़ है । जो बात दूसरों को विचार करते समय नहीं सोचते वही मौक़ा आता है तब करने लगते है । अपने लिए चाहे जो बहाना निकाल ले वास्तव मे जो कमज़ोरी है वह कमज़ोरी ही है। गत बार अपने को किसी प्रकार की तकलीफ़ का सामना नहीं करना पड़ा सो दूध के धोये बने रहे । इस बार मौक़ा पड़ा तो जगह-जगह कमजोरी मालूम होती है पर अपना विश्वास है कि प्रभु इन कमजोरियो से छुड़ायगा, अपने अपने पर कोई अभिमान नहीं कर सकते ।

बाईस मार्च को होनी थी । बाहर से मिठाई आदि मगानी चाहिए, ऐसी सलाह करने के लिए भाई बसन्तलाल जी आदि आये । अपने उनसे कहा, आप जैसा उचित समझें, करें । दूसरे दिन मिठाई आदि आयी, सब राजनीतिक क़ैदी एक जगह इकट्ठे हुए, एक साथ खाया-पीया, सभा सी हुई । सब जान-पहचान के अपने को 'सी' क्लास मिला इसकी बातचीत करते थे, अपने को अच्छा मालूम नहीं होता था । जो वालेंटियर अपने पास काम करते थे उन्हें भी 'बी' क्लास मिला । दूसरे दिन तेईस मार्च को बसन्तलाल जी को दमदम भेज दिया इससे मन खराब सा ही रहा, यहाँ रहते थे तो कभी-कभी मिलना हो जाता था, वह भी नहीं रहा । शाम को मुलाकात आयी, ऐसी मुलाकातो मे सुख नहीं, कष्ट ही होता है । जेलर ने कहा, आप जरूर मुलाक़ात करें नहीं तो उन लोगों को कष्ट होगा । रामरिख, ज्वाला प्रसाद (सराफ), भगवानदेवी, पन्ना आये । उन लोगो ने अपने को जेल का जाँघिया-कुरता पहने देखा । रामरिख रोने लगा । भगवानदेवी तथा पन्ना भी

बहुत दुःखी हुई । उन्होने कहा, क्लासिफ़िकेशन के लिए चेष्टा तो बहुत की लेकिन जब तक आप पेटीशन नहीं करेंगे तब तक चान्स नहीं के बराबर है । देवीप्रसाद जी खेतान आदि से भी कोशिश करा ली । आप हम लोगों के लिए ही पेटीशन कर दीजिए । अपने कहा, पेटीशन तो नहीं करूँगा । लेकिन अपना मन दु:खी था । अपने इतने मित्र है, इतने आदमियो से सम्बन्ध है और एक जरा सी बात भी नहीं हो सकी । अपना मन क्षुब्ध रहता है, हरेक बात मन पर असर करती है।

इधर कई वर्षो से अपने को अपमान का कष्ट नहीं सा हुआ था । आजकल अपमान सा मालूम होता है । लोग बेचारे बहुत प्रेम करने है पर अपने अपनी ही कमज़ोरी से दु:खी रहते है । एक दिन एक घटना हो गयी । अपने अस्पताल मे जेल के कपड़े न पहन धोती, गंजी पहनते थे । लोगो ने कहा, अस्पताल मे घर के कपड़े पहनने पर कोई आपत्ति नहीं करता । सुप्रि ने दो-तीन दिन देखा और कुछ कहा नहीं, पर यह बात रूल के विरूद्ध थी । एक दिन सुप्रि ने कहा, ये कपड़े क्यों पहनते हो ! आप तो 'सी' क्लास के कैदी हो । तो दूसरे दिन वही कुरता-जाँघिया पहनना पड़ा । इस घटना से अपने को कष्ट बहुत हुआ, सारे दिन विचार रहा । लोगो ने कहा, जब सुप्रि आये तब जाँघिया-कुरता पहन ले और चला जाये तो साधारण कपड़े । अपने को यह अच्छा नहीं लगा, लेकिन किया वैसा ही । मन इतना कमजोर हो गया कि किसी बात पर टिकना नहीं सब की परवा करने का सा ढग हो गया है । इधर चारू बाबू आदि मित्रो का कहना न करे यह भी ठीक नही जँचता । करे तो उचित नहीं जँचता । लेकिन अपनी कमजोरी से जो काम जेल के नियम के विरूद्ध है और अपने करना नहीं चाहते वैसे कइ काम कर लिये जा यहाँ न करना लोग मूर्खता समझते है । जितना लाभ, आराम मिल सके उतना लेना ही ठीक है, ऐसा कहने वाले और करने वाले ही यहा अधिक है । पर अपने ऐसा नहीं करते थे और करना नहीं चाहते थे। फर्क इतना ही है कि अपने दु:ख के साथ करते है और दूसरे लोग अपनी होशियारी से करते है । प्रभु के सिवा अपना कोइ चारा नहीं । सुप्रि छह अप्रैल को अस्पताल से डिस्चार्ज करने को कह गया और अपने चार नम्बर वार्ड मे चले गये । वहाँ जाने से दूध वगैरह सब बन्द हो गया । अस्पताल मे सुधीरकुमार बनर्जी बड़े ही अच्छे आदमी है । सब की तकलीफ, आराम का ध्यान रखते है । अपना तो बहुत ही ध्यान रखते थे । वे चारू बाबू चाहते थे कि अपने फिर एक दो दिन मे अस्पताल आ जावे पर अपना दिल नहीं था लेकिन तीन दिन बाद दस अप्रैल को अपने को बुखार हो गया और फिर अस्पताल आना पड़ा । अपने बीमारी मे वैसे ही घबराते है । यहाँ ज़्यादा घबराते थे । दो तीन दिन मे बुखार ठीक हो गया । भगवानदेवी को बुख़ार का मालूम हो गया और मुलाकात करने आयी । पन्ना की

पढ़ाई नष्ट हो रही है। एक बात सब से ख़राब यह हुई कि स्वामी ज्ञानानन्द ने अपने नाम से क्लासीफ़िकेशन के लिए पेटीशन कर दिया है। इस बात को अपने जानते तो भी अपने चाहते हैं कि जल्दी से उस का उत्तर आये और क्लासीफ़िकेशन हो जाये। ऐसी कमज़ोरी आ गयी है। अपने पतित है लेकिन उसका नाम पतितपावन है। यदि अपने पवित्र कर्मों के बल से पार उतर जायें तो प्रभु कृपा, लेकिन पापियों को भी पवित्र करने वाले प्रभु अपने को पवित्र करेंगे। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सी क्लास के कष्टों के सम्बन्ध में–

१. 'सी' क्लास के कैदियों के प्रति अधिकारी तथा और लोग बेपरवाह रहते हैं, उनकी तकलीफ़ों की सुनवाई नहीं है।

२. जो भोजन दिया जाता है वह अच्छा और पुष्टिकारक नहीं है।

३. जाँघिया-कुरता पहनने से ही आदमी अपने को छोटा महसूस करने लगता है।

४ नहाने, कपड़ा धोने को साबुन नहीं मिलता, न तेल मिलता है। बिछाने-ओढ़ने के लिए तीन कम्बल मिलते है जो घोड़ो के लायक भी नहीं, इन कम्बलो की वजह से लोगो को खुजली हो जाती है। कम्बलों के रोओं से शरीर जगह-जगह छिल जाता है। कम्बलों के रोएं उड़-उड़कर पानी में गिरते है, पानी पीना मुश्किल हो जाता है। जिस जगह लोग रहते है वहाँ झाड़ू देने पर रोज़ एक ढेर कम्बलो के रोओ का निकलता है।

५ घी-दूध के दर्शन तक नही हो पाते। जो माँस नहीं खाते उन्हें हफ़्ते में आधपाव दही मिलता है। रोटी भी कच्ची मिलती है।

६. दो महीने में एक बार मुलाकात हो सकती है इस बीच एक पत्र भी लिखा जा सकता है।

७. सुप्रि. कभी नहीं मिलता और न ही उससे जल्दी कोई शिकायत की जा सकती है।

बड़ी उम्र के लोग तथा छोटे लड़के एक साथ रखे जाते है, इससे बड़ी उम्र वालों को ज्यादा कष्ट होता है।

९. शाम को सात बजे बन्द करते है और भोर साढ़े पाँच बजे खोलते हैं।

१०. और छोटे-छोटे अनेक कष्ट है जो लोग किसानों के ढंग से रहते है तथा जिन्होंने कष्ट बरदाश्त करने की शक्ति प्राप्त कर ली है वे लोग तो बरदाश्त कर लेते है। बहुत आदमी बीमार हो जाते है। अपनी बातें तो लिख चुके।

१९-२३ अप्रैल : पाँच बजे सो कर उठते है, प्रार्थना-आसन करते है, फिर दूध और एकाध टुकड़ा पावरोटी का खाते है, फिर गीता का पाठ करते हैं। इतने में सुप्रि. जेलर के आने का समय होता है तब सज कर बैठते है। उसके जाने

के बाद स्नान करते हैं । एक बजे से कुछ देर ताश खेलते हैं । प्रार्थना के बाद दस बजे सोते हैं । मन शान्त नहीं है । इक्कीस तारीख़ को जेलर आया तो उसका ढंग बिगड़ा हुआ था । अस्पताल में नीचे तलाशी हुई । ऊपर अपने कमरे में भी तलाशी हुई लेकिन कोई चीज़ नहीं मिली । अपने पास अंडर ट्रायल के समय आये कुछ कपड़े हैं अपने भेजे भी नहीं । अपने समझते थे कि जेल वाले अपने से ही ले जायेंगे । लोग कहते हैं कि ऐसे रखने का अधिकार नहीं इसलिए जिस समय तलाशी हो रही थी अपने मन में अशान्ति थी कि कहीं अपनी तलाशी हो और कपड़ों के लिये दोषी समझे जायें लेकिन अपनी तलाशी नहीं हुई लेकिन यह सब काण्ड क्यों हुआ । इसका कारण एक-दो आदमी होंगे । सुनते हैं कि बाहर से खबर मिली है कि आर्म्स ऐक्ट के लोग भागने की चेष्टा करते हैं इसीलिए यह सब हुआ । दोपहर में भी एक से चार बजे तक बन्द कर दिया जाता है। यह उन लोगो को भी भोगना पड़ता है जो ऐसे भागने वालों के काम को ठीक नहीं समझते । वे भले आदमी भाग कर कहाँ जायेंगे । पहले तो चोरी करके पिस्तौल लाये होंगे । समझ में नहीं आता कि वे एक चोरी से लायी पिस्तौल से इतनी बड़ी सरकार को नष्ट करने का स्वप्न कैसे देखते है । उनको पहले देश की जनता को तैयार करने के काम मे लड़ना चाहिए था । ख़ैर, जो हो उन की जैसी बुद्धि है बेचारे करते है अपने जैसों की वे कब सुनने वाले है लेकिन सारी जेल में हलचल रही ।

२४ अप्रैल एक दो पुस्तके है, उन्हीं को उलट-पुलट देखते रहे । चरखा तो है ही नहीं और भी समय बेकार-सा ही जाता है । अस्पताल में बहुत से नीबू के पेड़ थे और उनमें नीबू अच्छे लगते थे । यहाँ के लोग उनको पकने तो नहीं देते थे पर सुगन्ध अच्छी रहती थी । उन सबको आज सुप्रि. ने कटवा दिया, सारे पेड़ मिनटों के अन्दर काट डाले गये । प्रभु की लीला है, इनको कितने दिन लगे होंगे, कितनी देख-रेख की गई होगी । इनको इस प्रकार नष्ट करने में कोई पाप नहीं हुआ ? अभी अपने सामने ही अपने लोगों और मित्रों को इस प्रकार नष्ट करें तो अपने को कितना कष्ट होगा । उनको भी तो वैसा ही हुआ होगा । प्रकृति बड़ी निठुर है वह मिनटो में सृजन करती है और फिर किसी न किसी बहाने नष्ट कर देती है ऐसा खेल क्या अच्छा है । अपना तो इस में कुछ उपाय नहीं ।

२५ अप्रैल : गीता का पाठ किया कि बन्द कर दिया गया और कहा, तलाशी होगी । कहते है, यहाँ के लोग ने चोरी से ऐसी चीजे मँगाली है जो बहुत अनुचित है इसलिये कड़ाई करनी पड़ रही है । जो भी हो यह बहुत बुरा मालूम होता है। यहाँ के अधिकारियों में ज्यादा ऐसे है जो निज में ही चोरी करते है इसलिए जो लोग गड़बड़ करने वाले हैं वे तो गड़बड़ कर ही लेते है । लेकिन अपनी दृष्टि

से वे ठीक नहीं करते, इससे कुछ होने वाला नहीं । यह लड़कों-सा खेल है और लोगों को, रोगियों को तथा यहाँ के जो भले अधिकारी हैं, उन्हें मुफ्त में तकलीफ हो जाती है । सारे अस्पताल की तलाशी हुई । दिल्ली में काँग्रेस तो अच्छे ढंग से हो गई । स्टेट्समैन ने पाँच सौ से ज्यादा गिरफ़्तारी लिखी । लोग कहते हैं एक हज़ार से भी ज़्यादा हुई । जो प्रोग्राम था वह सारा ठीक से काम में लाया गया । जो हो मालवीयजी इतने दिन बाहर रहे तो कुछ करके ही गये । कलकत्ता में भी थोड़ा बहुत काम हुआ ही । नौ बहनें पकड़ी गयीं ।

२६ अप्रैल : चार नम्बर वार्ड में लड़कों ने सिपाही के साथ मामूली गोलमाल की । इस पर सिपाही ने पगली घण्टी करवा दी और सिपाहियों ने लड़कों को बेतहाशा मारा । एक आदमी तो बहुत ही घायल हो गया, दस आदमी अस्पताल आये । अपना समय यों ही चला जाता है । इस तरह अस्पताल कितने दिन रहेंगे। मन ठीक नहीं रहता ।

१ मई : आज के दिन सुप्रि. नहीं आता इसलिए जेल के कपड़े नहीं पहने। इस बार की जेल मे मन गड़बड़ में पड़ गया । सुप्रि. आता है तब पहन लेते हैं फिर निकाल देते है । पहनते और उनारते समय विचार होता है यह काम अपने ठीक नहीं करते । तो भी करते है । इससे मालूम होता है मन कमजोर हो गया है । एक बंगाली सज्जन बीमार होकर आये । उन्होंने हंगर स्ट्राइक की थी आज तोड़ी और भात खा लिया जिससे बीमार हो गये । रात भर बहुत तकलीफ़ रही।

३ मई : अस्पताल में भीड़ है । नये रोगियों के लिये भी जगह चाहिए । जो आ जाते हैं वे अपनी तरह जम कर बैठना चाहते है । अपने क्या करे, सोच रहे है । जिस वार्ड में जाना है वहाँ तो गर्मी और गन्दगी बहुत है, जाने की हिम्मत नहीं होती । एक मोह लग गया है शायद दो एक दिन में क्लासीफ़िकेशन हो जाये, यह एक तमाशा सा हो गया है । अपना अब की बार इस मामले मे बहुत मोह रहा । क्या करें । प्रभु जैसी बुद्धि, शक्ति देता है उतना ही कर सकते है ।

४ मई · पॉच बजे आदमी बुलाने आया कि मुलाकात आयी है । जायें कि नहीं, इसी विचार में दो-चार मिनट बिताये, फिर गये । जिस जगह 'सी' क्लास की मुलाक़ात दी जाती है वहाँ इतना हल्ला था कि बात सुन नहीं सकते और खड़े होने की जगह नहीं थी । अपने कहा, मुलाकात नहीं करेंगे । उन लोगों को कह भी दिया था लेकिन वे आ जाते है । अपने आने लगे पर मेट ने कहा, हम भीतर पूछते हैं । खैर, शेष में उन्होंने भीतर बैठाकर पास-पास में मुलाक़ात करा दी । रामरिख के व्यापार की हालत खराब नहीं । क्लासीफ़िकेशन के सम्बन्ध मे बात हुई । वे लोग तो बहुत ही विवश हैं । अपने दिल में इस विषय में काफ़ी कमजोरी ने घर कर लिया है ।

६ मई : आजकल इस नम्बर नौ वार्ड के आदमियों को डिस्चार्ज कर रहे हैं। यहाँ के एक आदमी का जो बंगाल आरडिनेंस में बन्द है, आपरेशन हो गया इसलिए विशेष ध्यान रखना पड़ता है और जगह ख़ाली कर रहे हैं। अपना भी नम्बर आ सकता है। यहाँ रहने में कोई प्रसन्नता नहीं, पर वार्ड में यहाँ से भी ज्यादा तकलीफ़ है। आज दमदम जेल से कई लोग आये हैं। उन में तो कितने बीमार हो कर और कितने सजा पाकर आये हैं। सजा की बात से मालूम होता है वहाँ बहुत साधारण बातों पर सजा दी जाती है। पर वास्तव में हमारे में कमी है और उसी के लिए तकलीफ़ उठानी पड़ती है और नीचा देखना पड़ता है।

१० मई : मौलवी इसलामाबादी साहब से मुहम्मद साहब के जीवन-चरित्र के सम्बन्ध में सुना, अभी और सुनना है। जैसे अपने आदर्श पुरुष हुए है, उन में एक तरह की विशेष शक्ति थी उसी तरह की बातें मुहम्मद साहब के बारे में उन्होंने बतायी। द्वेषवश हिन्दुओं में कई लोग उनके जीवन पर कुत्सित लांछन लगाते है। ऐसे ही कई मुसलमान हिन्दुओं के महापुरुषों पर दोष लगाते हैं जिससे वैर बढ़ता हैं। ख़ैर, मुहम्मद साहब का जीवन जानने की इच्छा थी और वह थोड़े अंशों मे पूरी हुई।

१२ मई : न तो कोई पुस्तक है जिसे पढ़ें और न ही काम जो करें। बैठे समय बिताना मुश्किल होता है लेकिन समय तो चला ही जाता है। अस्पताल मे रह कर जेल काटना क्या यह ठीक काम है, यह विचार बार-बार उठता है तब भी यहाँ पड़े है। वार्ड में जाने में भय लगता है। और भी तो सैकड़ों आदमी वहाँ रहते है। पूछते हैं तो कहते है कि हमें तो कोई तकलीफ़ नहीं मालूम होती, वे ही अच्छे है। अपने तो इस मामले मे बहुत ही कच्चे निकले।

१३ मई : यहाँ कितने आदमी ऐसे है जो बेचारे आम की शक्ल और स्वाद तक भूल गये है। जिनको बीस वर्ष की सजा है उनको तो जेल के भात के सिवा और चीजों के दर्शन हुए भी वर्षों के वर्ष बीत गये होंगे।

१६ मई : चारू बाबू तथा सत्यो बख्शी ने कहा, कल मुहर्रम है इसलिए राजनीतिक क़ैदियों के लिए कुछ खाने को मँगाना चाहिए क्या आप मँगा देंगे। अपने को यह सब ठीक नहीं जँचता पर शर्म के मारे ना करना भी मुश्किल होता है। इसलिए छह सौ आम और छह सौ सिंघाड़ा (समोसा) मँगाने के लिए कहा। चारू बाबू ने ही जा कर मारवाड़ी स्टोर में टेलीफ़ोन किया। रुपये पचास-साठ से कम नहीं लगेंगे। शाम को स्वामी ज्ञानानन्द जी ने कहा, हमारे नाम के कुछ रूपये जमा कराने पड़ेंगे। उन के नाम से भी पचीस रूपये जमा कराने को कहा। यह सब दान है ? यह तो यों ही बिना इच्छा होते हुए भी हो जाता है। बंगाली खासकर कलकत्ता में रहने वाले और नेता क्लास के बंगाली भाइयों की मनोवृत्ति से मन में सन्तोष नहीं होता है तब भी बराबर उनके साथ काम करना होता है। देश-

उद्धार का काम इस ढंग से चलेगा और इससे क्या स्वतन्त्रता आयेगी । अपने को दूसरों की बात न सोच कर अपनी सोचनी चाहिए । अपने जो करते हैं वह क्या है उससे अपना या देश का क्या सुधार हो रहा है इसका ही हरदम विचार करना चाहिए और जो उचित जँचे उसके अनुसार करना चाहिए, उसके विरुद्ध करना ही अपने लिए खराब है । आत्मशान्ति ही असली शान्ति है । चाहते हैं कि सारे काम आत्मा की आवाज के ही अनुसार करें पर मोहवश उसके विपरीत कर लेते हैं तब मन को अशान्ति होती है । हे प्रभु, मन की अशान्ति, ग्लानि दूर कीजिए, सत्य स्वरूप की ओर लगाइए ।

१७ मई : साढ़े चार बजे सब राजनीतिक क़ैदी एक वार्ड में इकट्ठा हुए और वहीं कविता, गान, खाना-पीना हुआ, सब से मिलना भी हो गया । आज के समाचार पत्रों से मालूम हुआ कि बम्बई में भयानक हिन्दू-मुसलिम दंगा हो गया । बहुत से लोग मारे गये, घायल हुए तथा घर, दुकाने लूट ली गईं, जला दी गईं । यह समाचार दु:खद है । अभी इस देश के पापों का अन्त नहीं हुआ है, लोगों का पागलपन अभी दूर नहीं हुआ है । कोई भी देश अपने पापों से ही पराधीन हुआ करता है और जब तक वह पापो से छुटकारा नहीं पा लेता तब तक उसका स्वाधीन होना मुश्किल है । गत वर्ष कानपुर मे ऐसा ही काण्ड हो गया था । इसका उपाय तो क्या बताएे । इस देश में हिन्दू मुसलमान नाम की दो जातियाँ रहेंगी तब तक शायद ये काण्ड बन्द न होंगे । क्या इन दो जातियो में कभी ज्ञान पैदा होगा और वे अपना भला बुरा समझने लगेगी, प्रभु ही जानें । प्रभु ने इस देश को बहुत प्यार किया था इसके द्वारा ससार के अन्य देशों को ज्ञान दिया था । इसका गौरव बहुत बड़ा किया था । वही इस की रक्षा कर सकता है । उसीने इस देश में संसार के सब से ज्यादा महापुरूषों को जन्म दिया; आज भी उसी ने इस देश को गांधी जी जैमी विभूति दी है । वही इसका उद्धार करेगा, दूसरे किसी की सामर्थ्य नहीं ।

१८ मई : लोकमान्य का गीता रहस्य पढ़ना शुरू किया है । पहले का थोड़ा पढ़ा हुआ है । यह तो ज्ञान का भण्डार है, जितना पढ़ा जाये उतना ही मिलेगा। आज का समय और दिनों अपेक्षा ठीक ही गया ।

२१ मई : आज मन में क्षुब्धता ज्यादा रही । किसी बात को सुन कर मन क्षुब्ध हो जाता है फिर जल्दी शान्त नहीं होता । दुख-सुख सब मन की स्थिति पर निर्भर है । यदि मन अधिकार में हो गया तो सभी कुछ हो गया लेकिन मन तो हवा से ज्यादा प्रबल है इस का वश में होना तो बहुत कठिन है । भगवान् ने कहा है, अभ्यास और वैराग्य से मन वश में हो सकता है लेकिन प्रभु-कृपा बिना अभ्यास वैराग्य नहीं होता ।

२६ मई : आज लोगों की मुलाकात आयी । उस से मालूम हुआ कि दुर्गाप्रसाद

जी खेतान की लड़की कुन्ती का विवाह जून में है। अपने बाहर थे तब इस विवाह को रुकवाने की कोशिश की थी और ऐसा मालूम होता था कि यह विवाह कम से कम इस वर्ष तो नहीं होगा लेकिन आज यह मालूम हुआ। दुःख हुआ क्योंकि लड़की साढ़े तेरह वर्ष की होते हुए भी बहुत नाटी और कमज़ोर है तथा पढ़ाई-लिखाई का काम भी पूरा नहीं हुआ। लड़की की इच्छा अभी विवाह करने की नहीं थी। लड़का भी अपने मित्रों का ही है, उसकी उम्र सत्रह है और उस की भी इच्छा अभी विवाह करने की नहीं थी। अपने सामने तो उस ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि इस वर्ष विवाह नहीं करूँगा, लेकिन मारवाड़ी समाज के लड़कों में दम कहाँ है। सब से दुःख की बात तो यह है कि दोनों तरफ़ ही सुधारक, पढ़े-लिखे लोग होकर भी लड़की-लड़के की इच्छा, शारदा ऐक्ट तथा स्वास्थ्य और आदर्श के विरूद्ध विवाह कर रहे हैं। समाज में किस से आशा की जाये ? समय पर सभी कच्चे सवित हो जाते हैं। यह लड़की बहुत ही अच्छी है और अपने उसे बहुत प्यार करते थे। मारवाड़ी बालिका विद्यालय में ही पढ़ती थी। अपनी इच्छा थी कि इस लड़की को मैट्रिक पास अवश्य करा लेंगे। लेकिन मारवाड़ी समाज में सुधार होना तथा लड़कियों में शिक्षा का प्रचार होना बहुत ही मुश्किल है। अभी भी अपनी इच्छा है कि किसी प्रकार से विवाह रुके लेकिन यहाँ बैठे क्या कर सकते हैं। रात में भी मन में यही विचार रहा। कई उपाय भी जँचे लेकिन बहुत कठिन हैं। अपने पहले भी बहुत कोशिश की थी पर प्रभु की इच्छा होती है वही होता है ऐसा समझ कर सन्तोष करना चाहिए।

३० मई : लोगों के विषय में जो में जो अनुभव होता है वह सुखदायक नहीं है। देश में अच्छे काम करने वाले लोग यदि नहीं होंगे तो देश की भलाई होना मुश्किल है।

३१ मई : लोकमान्य का गीता रहस्य पढ़ते है। उसकी छह सौ पेजों से भी अधिक की भूमिका पढ़ ली। अब गीता की टीका शुरू हुई है, ज्ञान का भण्डार है। सर्वसाधारण के लिए नहीं है। गान्धीजी ने बहुत थोड़े में बातें अपने अनुवाद में कह दी हैं कि सर्व-साधारण मज़े में समझें। लेकिन लोकमान्य की गीता भी अपूर्व चीज है। जेल के सिवा और कहीं इतनी बड़ी पौथी पढ़ने का मौका मिलना मुश्किल था।

१ जून : मौलवी इसलामाबादी आज रिलीज हुए। कुछ समय उनके काम में लगा। बेचारे बहुत बीमार हैं। बाहर शायद ठीक हो जायें। जेल का आदमी अपना टिकट जो हरेक क़ैदी के पास रहता है और उस के सम्बन्ध की सब बातें उस में लिखी रहतीं हैं उसको प्रिजनर हिस्ट्री टिकट कहते हैं, लेने आया और कहा, आप के क्लासीफ़िकेशन की खबर आयी है। अपने उसको टिकट बता दी लेकिन मन में एक तरह का विचार पैदा हो गया। पहले जिस क्लासीफ़िकेशन के लिए

तड़पते थे उसीके विषय मे इस समय होने का दु ख सा मालूम होने लगा । क्या कारण था ? अच्छी तरह नहीं समझे । शाम अस्पताल के डॉक्टर आये तो उन्होने कहा, आपका डिवीजन टू हो गया है और साथ ही अस्पताल से डिसूचार्च करने के लिए भी सुप्रि ने कहला भेजा है । लेकिन हम ने कहा, जो बीमार होता है वह डिवीजन टू होने से ही स्वस्थ हो जाता है क्या, हम डिसचार्ज नहीं करेगे । लेकिन अपन मन मे तो पहले ही हलचल थी । अस्पताल मे लोग क्यो रहते है यह विचार हुआ करता था । आज अपने मन मे अस्पताल मे रहने का लालच था । मनुष्य की बुद्धि और स्वभाव कैसा है ? उसको किसी बात का पूरा ज्ञान होना बहुत ही कठिन है । वासनाओ, अनेक मोहो मे उसका मन फँसा रहता है और उसी तरह के विचार आते रहते है ।

२ जून लोगो को मालूम हुआ कि क्लासीफिकेशन हो गया है इसलिए मुबारकबाद देने लगे लेकिन अपने को दु ख मालूम हो । लोगो को क्या कहे ? हाँ-हाँ कर काम निकाला । सुप्रि आया, डॉक्टर ने अपने को डिसचार्ज करने को कह दिया। अब डॉक्टर के पास क्या उपाय था और अपने उससे कुछ कहे यह इच्छा नहीं थी कारण, इतने दिन रहे और अब वह विचार भी क्या करे । चलो, अच्छा है। लेकिन आज तबीयत ज्यादा सुस्त मालूम होती थी पर कहना बहाना करना था इसलिए कुछ नहीं कहा ।

३ जून सीग्रीगेशन वार्ड मे आ गये । जान पहचान के लोग तो बहुत है। बड़ेबाजार के वार्ड मे महारथी भी कई है । पहले अपने यहाँ रह भी चुके है । सब आराम ही है । भोजन का कष्ट होगा तो जेल मे उसका कोई उपाय नहीं। यह तो अपना ही पाप है कि अपने दूध ही चाहिए और इसे अपने को ही भोगना होगा ।

४ जून नीचे चार सेल है । सब भरे हुए है । इच्छा हुई कि एक सेल मिल जाता तो शायद ठीक रहेगा । सेल मे गरमी अधिक रहती है पर एकान्त मिलता है । जो सज्जन सेल मे थे उन को मालूम हुआ तो उन्होने सेल खाली कर दिया और अपने चले गये । अपने उनसे कहा, आप को तकलीफ हो तो हम ऐसा नहीं करना चाहते लेकिन उन्होने कहा, कुछ भी तकलीफ नहीं होगी । बेचारे सब ही प्रेम करते है । साढ़े चार बजे मुलाकात आयी, दस आदमी थे । चार आदमियो के आने का नियम है लेकिन सब आ गये । इस बार जेल आने के बाद वास्तव मे मुलाकात इच्छा से आज ही ली और जिसको मुलाक़ात कहा जाये वह आज ही हुई । खास बात कुन्ती के विवाह के सम्बन्ध मे करनी थी। अपनी समझ मे तो ऐसी थी कि लडकी चौदह वर्ष से कम है लेकिन उन लोगो का कहना है कि चौदह बर्ष की हो चुकी है चाहे जो हो लड़की के शरीर का जो ढग है वह विवाह करने को नहीं कहता । अपने ख़याल से लड़का अठारह

वर्ष का पूरा नहीं हुआ है । उन लोगों ने कहा कि यदि लड़का या लड़की दोनों में से एक की उम्र अठारह और चौदह से कम होगी तो हम लोग विवाह को रोकने की पूरी कोशिश करेंगे नहीं तो विवाह रुकवा सकें ऐसी आशा हमें बिलकुल नहीं है । देखें, क्या होता है । लड़के ने अपने साथ जो प्रतिज्ञा की थी वह भी बता दी । प्रभु की इच्छा होगी तो बन्द हो जायेगा । काफ़ी देर मुलाकात हुई। मन में एक प्रकार की शान्ति सी मालूम होती थी । साढ़े सात बजे क़रीब सेल बन्द कर दिये गये । सेल में कभी नहीं रहे, यह नया अनुभव होगा । साढ़े तीन बजे तक नींद नहीं आयी । कोई आदमी दिखाई नहीं देता था, न कोई आवाज़ या बातचीत ही सुनने में आती थी । अच्छा है । गरमी तो है ही । सेल में और भी ज्यादा मालूम होती है ।

१० जून : वर्षा हो रही थी, गरमी शान्त हो गयी थी । किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं मालूम होती थी । कई दिनों से सुप्रि. इस वार्ड में नहीं आया था। इसलिए उसको आने के लिए लिखा गया था, कुछ लोगों को उससे कम्पलेण्ट करना था । सुप्रि. आया, वर्षा होने के कारण खुली जगह में खड़ा न हो कर सेलों के सामने बरामदे में खड़ा हुआ तो अपने घर से आये आमों पर उसकी दृष्टि पड़ गयी । चट उसने जेलर से कहा, ये आम डिवीजन टू के वार्ड में कैसे, तो जेलर ने तुरन्त एक सारजेंट बुलवा कर सब आम उठवा लिए । अपने से पूछने लगा कि ये आम तुम्हारे हैं ? मन बड़ा दुःखित हो गया, आम ले जाने का दुःख नहीं था । इस बात का था कि अपने क्यों मँगाया और आया ही था तो क्यों लिया। ऐसे खाने से क्या लाभ । अपने स्वास्थ्य के नाम पर इन चीजों को लेने हैं पर अच्छी तरह सोच कर देखा जाए तो जीभ की गुलामी ही इसका कारण है । इस प्रकार इन्द्रियों के वश में रह कर क्या उन्नति हो सकती है । महात्माजी ने ही इस जीभ को कुत्ती बताया है, इसकी लार तो बराबर ही टपकती रहेगी । यह कुत्ती तो बराबर पूँछ हिलाती ही रहेगी पर इसका वश होना भी साधारण बात तो नहीं है–"हों हारो कर जतन विविध विधि, अति रूप प्रबल अरजै, तुलसीदास बस होई जब ही तब प्रेरक प्रभु बरजै ॥" अपने तो चाहते हैं, इसको वश में करें पर प्रभु कृपा बिना अपने कुछ नहीं कर सकते । ऊपर जो आज की कथा है वह थोड़ी बाक़ी रह गयी है याने जब सारजेंट ने आम ले लिये तो एक सज्जन ने जो विचाराधीन क़ैदी हैं, आकर सुप्रि. जेलर से कहा, ये आम तो हमारे है हम ने यहाँ रखा था तब सुप्रि. आदि क्या करते, वे उनको दे दिये गये । अपने को इससे कोई सुख नहीं था । वास्तव में अपने आम मंगाया भी नहीं था, बाहर के आदमियों ने भेज दिया अपने ले लिया, पर आज सोचा इस प्रकार लेना या रखना और खाना भी अनुचित है । अब की मुलाक़ात में चीजें भेजना बन्द करने के लिए कहना है । तकलीफ़ हो तो उस को बरदाश्त करना चाहिए । वास्तव में

इस बार की जेल में अपने को कई प्रकार के अनुभव और कष्ट हुआ। निज का अभिमान करने का तो कुछ नहीं रहा।

१४ जून : चरखा काता। दो-चार दिन से चरखा नियमित सा ही चलता है। यह एक अच्छा काम हुआ। सेल में गरमी का कोई ठिकाना नहीं।

१५ जून : कई आदमी एमरजेंसी आर्डिनेन्स में गिरफ़्तार हो कर आये। ज़्यादा जान पहचान वाले ही थे। कल बंगाल प्रान्तीय राजनीतिक कान्फ्रेन्स होने वाली है इसलिए पहले ही कई लोगों को पकड़ लिया। इस तरह कितने दिन यह सरकार चलेगी ? जो जाति जाग जाती है उसको फिर सुलाया नहीं जाता। गरमी भयंकर रूप से पड़ रही है। कानपुर, अलीगढ़ आदि में तो गरमी के कारण बहुत आदमी मर भी गये हैं। यहाँ भी लोगों को भयानक तकलीफ़ होती है। इसका उपाय असली तो यही है कि भगवान् के कथनानुसार 'मात्रा स्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्सुखदुखदाः। आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥' पर ऐसा हो कैसे। इच्छा तो बहुत है कि ऐसी स्थिति प्राप्त हो जिसमें सुख, दुख-का, मान-अपमान का क्लेश न हो।

१८ जून : महर्षि टॉलस्टाय की आत्म कहानी पढ़ी। जैसा भगवद् भक्तों को सत्यकी खोज करने वालों को कई संकटों का तथा हृदयमन्थन का समय-समय पर सामना करना पड़ता है वैसा ही उनको भी करना पड़ा। अपने को उनकी जीवनी पढ़ कर भी यही जँचा कि बिना ईश्वर की कृपा के प्राप्ति नहीं होती और कृ पा होने पर ही मनुष्य पूरी तरह से शान्त हो सकता है। दूसरे मार्ग कितने भी हो चाहे वे अच्छे हों या न हों पर भक्ति मार्ग उसको प्राप्त करने का सहज मार्ग है और इस में मज़ा भी है। भक्ति के साथ ही साथ एक तरह का विश्वास होता है कि प्रभु हम पर जरूर कृपा करेंगे। संसार में या कहीं भी जो माँगना है सभी हमें मिल जायेगा याने कुछ पाने की इच्छा ही नहीं रह जायेगी।

१९ जून : ख़बर मिली कि देवनन्दन सिंह दीक्षित की स्त्री का देहान्त हो गया। दीक्षित जी से ऐसे तो अपना कई दिनों का परिचय है पर इस बार जेल मे उनसे थोड़ा सा प्रेम भी हो गया। अभी वह और हम पास-पास सेल में रहते है। वैसे तो किसी को कष्ट में देख कर दुःख होना स्वाभविक है पर जिससे कुछ प्रेम हो जाता है उसके दुःख से कुछ अधिक दुःख होता है। ख़ास कर जेल में ऐसी घटनाएँ ज्यादा दुखकर मालूम होती है। दीक्षित जी वीर आदमी हैं, चार बार तो जेल आ चुके हैं लेकिन तब भी ऐसी बात का दुःख न हो यह तो कल्पना नहीं की जा सकती। जिस स्त्री के साथ आदमी बीस वर्ष रहे और उसके सुख में सुखी और दुःख में दुखी हो, जिसके साथ एक नौका में बैठ संसार-समुद्र की यात्रा तय करने का विचार कर लिया हो उसके वियोग के समय दुःख हुए बिना कैसे रहे। जो पूरे ज्ञानी हैं जिन्होंने मृत्यु-जीवन का रहस्य समझ लिया है और जो कर्तव्य के लिए ही संसार में कर्म कर रहे हैं, वे ऐसे दुःखों से बच सकते

हैं या जिन का हृदय पाषाण है, जिन को सिवा अपने आराम के किसी के सुख-दुख से मतलब नहीं, वे शायद दुःखी न हों। इसलिए दीक्षित जी का दुःखी होना अनिवार्य था। शाम को भोजन तो वैसे ही नहीं करना था। कारण, ढाका में एक राजनीतिक कैदी को, जो किसी बम या पिस्तौल के केस में पकड़ा गया था, पुलिस ने इतना मारा कि वह मर गया। इसलिए जेल मे सब ने एक समय का उपवास रखा था। यद्यपि अपने को बम या पिस्तौल वाले तरीक़ों का काम अनुचित लगता है पर इस प्रकार क़ानून के नाम पर आदमियो को मार डालना उससे भी ज़्यादा अनुचित है। अनुचित ही नहीं, अन्याय है। उस को फाँसी की सज़ा दी जा सकती है पर बिना विचार किये ही इस प्रकार मारे यह तो सरासर अन्याय है। रात को सेल में न सो कर ऊपर सोये, दीक्षित जी को भी ऊपर ही ले गये।

२३ जून : रात में नींद बहुत देर से आयी। तबीयत सुस्त मालूम होती थी। खास कर अपने वहम रहता है इसलिए ज़्यादा खराब मालूम होने लगती है। मृत्यु जिस दिन आने वाली है उस दिन आयेगी, उसके लिए चिन्ता करना, भय करना मूर्खता है। उसके लिए तो तैयार रहना चाहिए। प्रभु अपने से जो काम लेना चाहेगा, ले लेगा। नहीं लेना है नहीं लेगा। यह होगा, वह होगा–इस की चिन्ता क्यों करें ! हर समय कर्तव्य में लगा रहना चाहिए। प्रभु की ओर, सत्य की ओर जाने की कोशिश करनी चाहिए जो होना है होता रहेगा। मन को चिन्ता के विचारो से हटा कर सत्य की ओर लगाने का प्रयत्न करना है। ओम् शान्ति शान्तिः शान्ति।

२७ जून : मुलाक़ात आयी। महादेव सराफ़, जो हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसरी करते है, वे भी आये। उनका विवाह पजाबी अग्रवाल लड़की से हुआ है। इसको कराने में अपना काफ़ी भाग था इसलिए सबसे पहले महादेव से यही पूछा कि आपका और आप की स्त्री का प्रेम है न ? जो उत्तर दिया वह सन्दिग्ध सा था, इसलिए दुःख हुआ। ज़्यादा बातें नहीं हो सकी इसलिए पूरा पता नहीं लगा। अपने प्रभु से प्रार्थना ही कर सकते है कि वह इन लोगों को सद्बुद्धि दे और सच्चे रास्ते चलाये। कोई नवीन बात नहीं है। आन्दोलन जैसा चलता था चल रहा है और चलता रहेगा। दो-चार दिन से बंगला अक्षर लिखने का अभ्यास करते है।

२ जुलाई : शाम को टहल रहे थे कि भाइयों ने गन्ध उड़ायी कि अभी लिबर्टी का विशेष अंक निकला है जिस में लिखा है कि महात्मा गान्धीजी छोड़ दिये गये और वर्किंग कमेटी के मेम्बर कल छोड़ दिये जायेंगे। यदि सच्ची ख़बर होती तो कितनी आनन्ददायक होती। तो भी आनन्द-सा मालूम हुआ लेकिन तुरंत समझ में आ गया कि गप्प है। जेलों में ऐसे आदमी होते हैं जिनका काम गप्प उड़ाना

या इसी तरह का काम करना होता है। पर यह निश्चित है कि सरकार गान्धी जी को छोड़ने का विचार ज़रूर कर रही है। इतने बड़े महापुरुष को कोई भी सरकार बहुत दिन बन्द नहीं रख सकती। महात्मा जी जो काम करने आये हैं उस को पूरा करने के लिए जितने दिनों उनका जेल मे रहना ठीक है वह उतना ही रहेंगे और उतने ही दिन सरकार उनको रख सकती है।

४ जुलाई : डिप्टी जेलर ने कहा, आज जो लोग दमदम जायेंगे, उनमें आप का नाम है। इच्छापूर्वक कोई भी दमदम जाना नहीं चाहता। वसन्तलालजी से मिलने तथा साथ रहने का मौका मिलेगा। जाने मे यही सुख का एक कारण था और सब बाते तो वहाँ की ठीक नहीं। करीब साढ़े दस बजे मालूम हुआ कि अपना नाम सत्तो (सत्यरंजन बख़्शी) बाबू ने कटा दिया। चलो अच्छा ही हुआ, पर वसन्तलाल जी से मिलना होता यह बात मन मे आयी।

७ जुलाई अपने छूटने का महीना अगस्त ठीक हुआ है, एक महीना, आठ दिन रीमीशन मिला है, यहा के कई मित्रो ने कोशिश की। इस जेल में काफ़ी रीमीशन देते भी है पर सी क्लास के कैदियो को इतना नहीं देते और न उनके लिए कोई कोशिश करने वाला ही होता है। वास्तव मे असली जेल तो उनको ही होती है और उनका नाम भी नहीं होता पर ऐसे मूक बलिदान पर ही तो देश की स्वाधीनता की बुनियाद खड़ी होती है।

१५ जुलाई ताश खेला, यह अपने मन से तो कभी नहीं करते थे। आज विचार आया कि कल से नहीं खेलना है। सोमवार को आई. जी. आने वाला है। एक वर्ष मे वह दो बार जेल का पूरा निरीक्षण करता है इसलिए जेल अधिकारी पूरी निगरानी कर सावधनी से सारे काम ठीक कर रहे है। सब जगह सफ़ाई हो रही है, कोठरियो मे रंग-चूना आदि हो रहा है। यह सरकार कितने नियमों पर चल रही है, जो नियम है वह ठीक समय पर ठीक उसी तरह काम में लाया जाता है इसीलिए यह सरकार इतनी मजबूत है। हम लोग अपने शक्ति का विचार करे, अपने साधन, सामग्री की ओर नज़र डाले तो बिल्कुल अन्धकार दिखाई देता है तो भी भगवान् भरोसे हम लोग काम कर रहे है और इसी तरह करना होगा। कभी न कभी इसी से शक्ति और सुव्यवस्था पैदा होगी।

२१ जुलाई : आज आई. जी. इस वार्ड को देखने आयेगा, ऐसा निश्चित था। सुबह से ही जेल के लोग क़ाफी दौड़-धूप में लगे थे। राजनीतिक कैदी भी बहुत सचेत तथा उत्सुक से थे। सब लोग बड़े शान्त और सजे-सजाये चरखा, तकली कात रहे थे या यों ही सामने रखे हुए थे। लोग आई. जी. को उड़ीक (प्रतीक्षा) रहे थे पर वह भला दूज के चाँद की तरह दिखाई ही नहीं देता था। चरखा तकली प्रेमी उकता रहे थे कि किसी प्रकार इस झंझट से छुट्टी मिले। कोई आहट होने पर लोग सचेत हो जाते थे पर आँख उठा कर देखें तो सारजेंट और

सिपाहियों के सिवा कोई नहीं। देखते-देखते क़रीब साढ़े आठ बजे आई. जी. टोली के साथ पधारे। पाँच सात मिनट में उसने इधर-उधर देख लिया। दो एक आदमी जो बेचारे बड़ी तत्परता से चरखा चला रहे थे उन्हें ख़ास तौर से देखा। अपने और दीक्षित जी सेलों के सामने चरखा कात रहे थे, वहाँ आया, सूत देखा, अच्छा कह कर चला गया। लोगों के मन से एक बोझ सा उतरा। आई. जी. के जाने पर लोग हलके हुए और परस्पर में बातें करने लगे। आई. जी. के आने की यदि कोई अच्छी बात थी तो यहाँ जो सफाई हुई, वही थी।

२५ जुलाई : शतरंज खेल रहे थे कि सतीश बाबू (दासगुप्त) आ गये। काफ़ी समय तक उनसे बातचीत हुई। उनसे बात करने से मन में एक प्रकार का सन्तोष आता है। ऐसे तो कमजोरी सबमें होती है पर सतीश बाबू महात्माजी के पक्के अनुयायी हैं। महात्माजी की लिखी गुजराती की पुस्तक 'ग्रामों की बहार' दे गये। पढ़नी शुरू की, बहुत ही अच्छी मालूम होती है। मुलाक़ात आयी। चमेली देवी की लड़की सरस्वती भी आई। यह जेल की शेष मुलाकात थी।

२८ जुलाई : चारू बाबू यहाँ हैं, उनको खाने-पीने रहने में तकलीफ़ होती है। ऊँचे स्टैंडर्ड से जो लोग रहते है उनको होगी ही। देश की दरिद्रता के कारण हमारा इस प्रकार रहना अच्छा नहीं। ऊँचे स्टैंडर्ड से रहना पाप ही है पर क्या किया जाये। सब बातें जानते हुए भी अपने इस तरह रहते हैं। विवश हो कर 'सी' क्लास में रहना पड़ा तो बहुत ज़्यादा अखरा और कमजोरी के मारे जिन बातों को अनुचित समझते है उनसे भी काम लिया।

३१ जुलाई : महात्मा जी का गीताबोध पढ़ते रहे। गीता का जैसी सरल और साधारण भाषा में ज्ञान कराया गया है वह अतुलनीय है। यदि उन के बताये अनुसार आचरण किया जाये तो मनुष्य दुःख और सुख के परे जो आनन्द है उस मे रम सकता है। सतीश बाबू से बंगाल की राजनीतिक और पार्टी फ़ीलिंग के सम्बन्ध में बातचीत हुई। बंगाल में एकता होने का कोई रास्ता नहीं है।

१ अगस्त : कल छूटने की तारीख है। जो जान पहचान के और प्रेम करने वाले लोग हैं उनसे मिलने की इच्छा थी इसलिए जेलर से कहा। स्पेशल वार्ड गये। वहाँ के लोगों से मिले, राजी-खुशी के सिवा और क्या बात थी। सतीश बाबू से ज्यादा बातचीत हुई। कल जाना है, मन में कुछ चंचलता तो है ही।

२ अगस्त : मिलजुल कर क़रीब सात बजे जेल की ऑफीस गये। क़रीब पौन घण्टा लगा। बाहर बहुत से मित्र खड़े थे, कई बहनें भी थीं। बाहर होते ही बड़े प्रेम से अपने को माला पहनायी। हीरालाल जी शास्त्री अपने से मिलने आये थे। घर आये। मित्रों से कई देर बातचीत होती रही। आन्दोलन के सम्बन्ध में जो बातें हुई वे आशा जनक नहीं थीं। प्रार्थना नहीं हो सकी, न चरखा ही काता। जेल के कार्यक्रम में और यहाँ के कार्यक्रम में बहुत अन्तर पड़ गया। भगवानदेवी से बातें करने में खूब समय लगा।

जेल जीवन : ४
(कांग्रेस अधिवेशन पर गिरफ्तारी)

पूर्वपीठिका

१९ मार्च, १९३३ : ह्वाइट पेपर बाहर हो गया। जो आशा किये बैठे थे उनकी आशाओं पर पानी फिर गया। इस शासन-सुधार के जिस तरह का शासन-विधान बनाने की योजना रखी गयी है वह तो हमारे लिए और भी घातक है। इस विधान से हमें कुछ मिलता नहीं, वास्तविक अधिकार देशवासियों के हाथ में नहीं आते। इस में तो वायसराय और गवर्नरों को बहुत ज़्यादा अधिकार दिये गये हैं। कोई भी आदमी इस से सन्तुष्ट नहीं हो सकता पर हमारे सन्तोष-असन्तोष की सरकार को कोई परवा नहीं। उस का विश्वास तलवार पर है। वह जानती है कि भूखे, निःशस्त्र, दरिद्र, अशिक्षित भारतवासी क्या कर लेंगे ? थोड़े-से लोग हो-हल्ला मचाते हैं उन को जेल, कष्टों व झंझटों में डाल कर कमज़ोर कर देंगे और कुछ लोगों को शासनतन्त्र में शामिल कर बड़े-बड़े पद, नौकरियाँ दे अपने वश में कर लेंगे और देश में इसी प्रकार हुकूमत करते रहेंगे। इसी विश्वास पर ऐसा निकम्मा, निःसार और निर्जीव, सच कहा जाये तो देश के सच्चे देशभक्तों का अपमान करने वाला शासन-विधान तैयार किया जाता है पर यह भी हमारे लिए सहायक होगा। बहुतत बुद्धिमान् होने पर भी अँगरेज़ सरकार ने अमरीका को खोया, आयरलैंड एक प्रकार से इन के हाता से निकल ही गया है, अब ये सोने की चिड़िया भारतवर्ष को किसी भी हालत में छोड़ना नहीं चाहते। मार्ले-मिन्टो सुधार के समय देश की जो माँग थी वह पूरी नहीं की गयी। मांटेग्यू-चेम्सफ़ोर्ड सुधार के समय देश की माँग पूरी नहीं की गयी। नेहरू स्कीम बनी उस की इन्होंने परवा नहीं की। उस का परिणाम यह हुआ कि लाहौर काँग्रेस को पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास करना पड़ा और काफी आन्दोलन हुआ। हमारी माताएँ व बहनें जो कभी रास्ते चलते नज़र नहीं आती थीं वे बाहर निकल जेलों में गयीं, लाठियाँ खायीं। एक भयंकर प्रकार का आन्दोलन उठा और सरकार का आसन हिला। देश के पूज्य नेता तथा संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष महात्मा गांधी जी के साथ सरकार को अस्थायी समझौता करना पड़ा और देश के सन्तप्त हृदयो को थोड़ी सी शान्ति मिली और ऐसा मालूम होने लगा कि हम अपने उद्देश्यों में सफल होंगे पर कालचक्र ने पलटा खाया, हमारे साथ जो अस्थायी समझौता हुआ था उसे अँगरेज़ों ने तोड़ दिया और इस बीच काफ़ी तैयारी कर ली। अपने शस्त्रागार में दमन के कई शस्त्र तैयार कर लिये और उन का एक साथ हमारे ऊपर प्रयोग करना शुरू कर दिया। हमारे पूज्य नेता तथा मुख्य कार्यकर्ता तुरंत जेलों में बन्द

कर दिये गये । अट्ठाईस महीने तक काफ़ी लड़ाई बिना सेनापति के देश की यह सेना लड़ती रही । पहले की लड़ाई की थकान तथा मार्गदर्शक के बिना सिपाहियों में शिथिलता आ गयी और हमारे दुश्मन समझने लगे कि विजयी हो गये, अब ये क्या कर सकते हैं । इस विजय के भरोसे आज सरकार ऐसा शून्य और निर्जीव विधान हमारे गले मढ़ रही है, जिसमे कोई लाभ होने वाला नही बल्कि इसमें यह योजना रखी गयी है । कि हम परस्पर और लड़-झगड़ कर असंगठित हो जायें। देश इसे किसी हालत में क़बूल नही करेगा, इसको रद्दी की टोकरी के हवाले करना ही होगा । शासन को याद रखना चाहिए कि तुम तुम्हारे दमन के हथियार से चाहे कितने ही दिनों तक हमारे ऊपर शासन कर लो, अब तुम्हारा और हमारा सम्बन्ध ऐसा हो गया है, तुमने इसे इतना हेय बना दिया है, तुम्हारे कारनामों ने इतनी गहरी खाई खोद दी है, तुम्हारे अमानुषिकता भरे ढंग ने हमारे दिलों में इतना द्वेष और कष्ट भर दिया है जो हमे जलाये डाल रहा है । जब हम तुम्हारे द्वारा दिये गये कष्टों से अपने भाइयो को तड़पते देखते हैं, तुम्हारे सिपाहियो द्वारा सताये हुए लोगों को देखते हैं, जब यह याद आता है कि तुम्हारे सिपाहियों ने हमारी माताओं और बहनों की इज़्ज़त और सम्मान हर लिया है तब हमारे दिलों पर क्या गुजरती है यह तुम हुकूमत में मतवाले घमण्डी लोग नही जान सकते । और जानोगे भी कैसे ? अभी हम तुमको मज़ा चखने वाले नही हुए है पर याद रखो हमारे दिल जल गये है । यह निश्चय रखो कि अब देर नहीं, हमारे अन्दर बहुत शीघ्र बल आयेगा और वह तुम्हें वाध्य कर देगा कि ऐसे निर्जीव विधान की रचना करना तुम भूल जाओ । हमारे पूज्य नेताओं ने हमारे देश का आदर्श सदा शत्रु के प्रति भी प्रेम और भलाई करना बनाया है । चाहे हमारे दिल में कितना भी कष्ट, गुस्सा और द्वेष हो पर हम हमारे नेता के बताये मार्ग से विमुख नहीं होंगे और बहुत जल्दी इस शासन-विधान को कोरा कागज़ साबित कर बता देंगे ।

२७ मार्च : आजकल सारा समय कांग्रेस के काम में जाता है, कठिनाइयों का तो अन्त नहीं पर प्रभु पार लगायेगा । यह भी प्रभु की इच्छा है कि जब अपने को काम करना पड़ता है तब मित्रों का साथ नही मिलता । बसन्तलाल जी ाहर हैं और अपने इस तरह अकेले हैं । किसी की सहायता नहीं मिलती, यह खटकता है । दिन भर के कामों का क्या लिखें जो लोग बाहर से आये है उन की तकलीफें असह्य है । पर बेचारे देशभक्ति की भावना के लिए सब सह रहे हैं । अपने तो मौज में रह कर थोड़ा बहुत जो होता है वह करते हैं ।

२८ मार्च : कालीघाट मे जो डेलीगेट ठहरे हैं उन को देखा । अपने घर पर काम करने वालों की मीटिंग थी जिस में बंगाल के और बाहर से आये हुए प्रान्तों के डिक्टेटर शामिल हुए । दो-तीन दिन से धड़ाधड़ धर-पकड़ हो रही है। देखें शेष तक क्या नतीजा होता है ?

२९ मार्च : बाहर से बहुत प्रतिनिधि आ रहे हैं, ठहरने तथा खाने आदि के काम में बहुत कठिनाई हो रही है पर काम चल जाता है। बिहार के लोगों का संगठन बहुत अच्छा है। शाम को पहले ख़ास काम करने वालों की मीटिंग हुई जिसमें काँग्रेस की जगह और सारे कामों पर विचार हुआ। रात में नौ बजे स्वागत समिति के मेम्बरो में जो थोड़ा बहुत काम कर रहे हैं उनकी मीटिंग हुई। काम ठीक-ठाक हो रहा है। आज सेकेंड गिरफ़्तारी हुई। ऐसा मालूम होता है कि काँग्रेस के पहले ही सब को गिरफ़्तार कर लेंगे। ऐसा भी सुना है कि कल सुबह बहुत बड़ी गिरफ़्तारी होगी।

३० मार्च : पाँच बजे सो कर उठे, हाथ-मुँह धो ही रहे थे कि पुलिस के आदमियो ने नीचे एक प्रकार का घेरा लगा दिया, एक सब-इन्स्पेक्टर आया उस ने कहा, हम आप को गिरफ़्तार करने आये हैं। अपने साथ जा ही रहे थे कि भाई भागीरथ जी आ गये वे थाने साथ ही गये, वहाँ कई प्रमुख लोग मिले। जे. सी. गुप्ता, उर्मिलादेवी। सब ने कहा, आप भी गये। सब ही आ रहे हैं। बेचारे आलम साहब बीमार होते हुए भी नहीं छूट पाये। सब को सेंट्रल जेल भेज दिया, जेल अधिकारियों में प्रायः अधिकांश जान-पहचान के थे। सी क्लास के राजनीतिक कैदियो के छह नं. वार्ड में भेज दिया गया। सुबह प्रार्थना नहीं कर सके थे सो की। साढ़े तीन बजे इस वार्ड से बदल कर सेग्रेगेशन वार्ड में भेज दिया गया जो अपनी राय में इस जेल का सब से अच्छा वार्ड है।

१–५ अप्रैल : आलम साहब से अपना परिचय नहीं था पर इस बार उन से कुछ घनिष्ठता सी हो गयी। वे अपने साथ काफ़ी उठते-बैठते है। दिन में अपने सेल में सोते हैं। सरल प्रकृति के और मज़ाकी आदमी है। मुसलमान भाइयों में कट्टरता के वे विरोधी है और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे हैं, इसके लिए एक प्रोग्राम भी बनाया है। बेचारे बीमार हैं। आजकल पैसा मिलना कठिन हो रहा है सो काम आगे बढ़ाना मुश्किल हो रहा है पर हिम्मती हैं। विद्वान् तो है ही। बंगाली भाइयों की संख्या ही अधिक है जिस में कैप्टन दत्त को छोड़ कर सभी सेनगुप्तों की पार्टी के है। उनमें काँग्रेस या देश के काम के सम्बन्ध में बहुत कम बातें होती हैं ज़्यादातर कारपोरेशन की बातें होती हैं। इसमें उन का रस है। परस्पर इतना झगड़ा है कि कई बार आलम साहब ने भी कहा, हमें बहुत दुःख होता है। आज कांग्रेस हुई होगी कैसी हुई, क्या हुआ जानने की उत्सुकता सब को लगी हुई है। शाम लोगों की मुलाक़ात आयी तो मालूम हुआ कि सभा सफलता के साथ हो गयी। पुलिस ने लाठी चार्ज किया तथा बहुत लोगों को पकड़ा भी है। काम सब ठीक हो गया। सेनगुप्त की स्त्री नेली सेनगुप्त ने सभापति का आसन ग्रहण किया। सफलता के साथ हो गयी जान सब को प्रसन्नता हुई। क़रीब आठ सौ आदमियों को सरकार काँग्रेस अधिवेशन के पहले पकड़ चुकी थी।

प्रायः सब ही पकड़ लिये गये तब भी काम हो गया। यह सरकार की बहुत बड़ी हार है। डॉक्टर आलम की तबीयत ख़राब थी ही और ख़राब हो रही है। जो लोग अपने साथ हैं उन में जे. सी. गुप्ता जैसे और भी एक-दो लोग थे जिन्हें जेल के प्रथम दर्शन हुए और इस बार किसी प्रकार की कुछ भी तकलीफ़ नहीं थी तब भी घर जाने की उत्सुकता होती थी। पाँच अप्रैल की शाम को डॉक्टर आलम और मौलाना हाशमी भी छोड़ दिये गये और लोग कब छूटेंगे पता नहीं। एक-दो दिन से गीता रामायण मिली है इसलिए कुछ समय पढ़ने में चला जाता है।

६ अप्रैल : आज छोड़ दिये गये। नौ बजे पर पहुंचे।

जेल जीवन : ५
(भारत छोड़ो आंदोलन)

१२ अगस्त १९४२, कलकत्ता : गाड़ी करीब साढ़े बारह बजे हावड़ा पहुँची, ढाई घण्टा लेट थी। पुलिस मौजूद थी। स्टेशन पर अपने को और भाई बसन्तलाल जी को गिरफ़्तार कर लिया और हावड़ा स्टेशन के थाने ले गये, वहाँ सी. आई डी. के अफ़सर ने कई तरह के प्रश्न कर एक स्टेटमेंट बनाया। चार बजे हावड़ा जेल भेज दिया। इस जेल को अपने पहले कभी नहीं देखा था। इसलिए इस को देखना अच्छा ही हुआ पर वहाँ क़रीब दो-तीन घण्टे रख कर प्रेसीडेंसी जेल, जो अपनी १९३० में देखी हुई थी, भेजा गया। वहाँ अपने चार साथी, जो कल गिरफ़्तार कर लाये गये थे, वहीं रख दिया। जिस जगह अपने को रखा गया उस का नाम बड़ा हाज़त था। आजकल वहाँ कोई राजनीतिक बन्दी नहीं था इसलिए जगह निहायत खराब थी, चारों ओर बदबू आ रही थी। सील थी, मच्छर थे, पेशाब-पाखाने आदि सभी की तकलीफ़ थी। नीचे फ़र्श पर सोना पड़ता था। जिस कमरे में अपने लोगों को रखा उसमें भीड़ भी ज़्यादा थी पर उपाय क्या था।

२३, २४, २५ अगस्त, प्रेसीडेंसी जेल : साढ़े पाँच बजे उठते हैं। लॉकअप खुलता है तब शौच आदि से निवृत्त होते है, प्रार्थना तो पहले कर लेते हैं। फिर सामने की जगह में क़रीब पौन घण्टे घूमते हैं, पाँच मिनट करीब आसन करते हैं फिर गीता, रामायण का पाठ करते हैं। चरखा कातते हैं। स्नान कर के घर से आया हुआ भोजन क़रीब ग्यारह बजे तक करते हैं। थोड़ी देर आराम कर

के दो-ढाई घण्टे ताश खेलते रहे, यह समय व्यर्थ जाता है पर पास में किताबें नहीं हैं इसलिए लिखने-पढ़ने का काम नहीं होता। थोड़ी देर ऊर्दू की दो किताबें हैं उनको पढ़ते हैं। फिर शाम को थोड़ी देर घूमना तथा भोजन। साढ़े छह बजे से जेल में बन्द कर दिया जाता है। तारीख बाईस को मालूम हुआ कि भाई भागीरथ जी को भी गिरफ़्तार कर लिया गया है, उनकी गिरफ़्तारी कई कारणों से चिन्ता की बात है। नन्दू जो एक निहायत भला, होशियार और प्यारा लड़का है वह ज़्यादा बीमार है, उसके मन पर भागीरथजी की गिरफ़्तारी का सदमा पहुँचेगा तथा भागीरथजी की ग़ैरहाजिरी उसकी बीमारी में दिक़्क़त पैदा कर सकती है। भागीरथ जी की स्त्री भी बीमार तथा भोली है। भागीरथजी के बिना उसकी तकलीफ़ बढ़ने का अन्देशा है। तीसरे भागीरथजी बाहर रहते तो आन्दोलन को हर तरह की मदद मिल सकती थी, यह भी एक बड़ा नुकसान है। इसके बाद एक बात और है, यदि वे बाहर रहते तो अपने घर के लोगों की तरफ़ से अपने को चिन्ता नहीं थी पर सारी बातों के बाद एक बात ऐसी भी है कि जो खुशी की भी है, वह यह है कि उनके जेल आने से उनकी तथा उनके घर के लोगों की ताक़त बढ़ेगी और हो सकता है कि वह आगे जाकर देश के कामों में ज़्यादा हिस्सा लें। यदि वे अपनी पूरी ताक़त देश के कामों में लगायें तो बहुत काम कर सकते हैं। वे योग्य हैं और हर तरह से बड़ी सेवा कर सकते है। जो हो अपने तो ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो, उनको हर तरह खुश रखें और उनको किसी प्रकार की तकलीफ़ न हो।

आन्दोलन तो तेज़ रफ़्तार से चल रहा है पर इसमें काफ़ी कुरबानी करनी पड़ रही है, रोज़ ही गोलियाँ चलती हैं। लाठी चार्ज तो इतना सस्ता हो गया है कि हर समय होता ही रहता है और इस बार सरकार ने हर अँगरेज को किसी को भी गोली मार देने का पावर दिया है। हमारी क़ुरबानी खाली तो नहीं जा सकती पर अभी समय लगेगा। जो हो आन्दोलन का नतीजा शेष में अच्छा ही निकलेगा। अपने तो यहाँ बैठे हैं क्या करें, सन्तोष मानना ही ठीक है।

२६-२७ अगस्त : आज कई लोगों को दमदम जेल भेजा गया, यदि अपने को भी भेजा जायेगा तो तकलीफ़ होगी कारण भोजन यहाँ तो घर से आ जाता है वहाँ नहीं आ सकेगा। जेल का भोजन अपने को बरदाश्त हो सकेगा, ऐसा नहीं दीखता। जो होगा वह अच्छा ही होगा। तबीयत यों ही खराब है, दाहिने पैर में दर्द हो गया है और सुस्ती काफ़ी मालूम होती है। गरमी तो भयानक पड़ रही है। रात बन्द कमरे में सोना पड़ता है। यह लॉकअप बहुत अखरता है पर जेलखाना तो जेलखाना ही है। दूसरे देशों के लोग अपने देश की आज़ादी के लिए क्या-क्या तकलीफें उठाते हैं अपने तो केवल जेलों में ही बन्द हैं, जो हो अब अपना देश किसी तरह स्वतन्त्र हो तब काम चले। आज इस पराधीनता

के कारण बड़ी तकलीफ़ और बेचैनी मालूम होनी है। इस बार की कोशिश और मौक़ा तो ख़ास है।

१८ अगस्त : दो बजे भाई भागीरथ जी सेंट्रल जेल से यहाँ आ गये। उन के आने से दिली ख़ुशी हुई और बड़ा अच्छा लगा, बस सारा समय उनके साथ बात करने ही बीता। शाम को साथ भोजन किया। भागीरथजी के साथ वर्षो भोजन किया है, आज इस प्रेसीडेंसी जेल मे साथ बैठकर भोजन करने की बात और थी, इसकी कभी कल्पना भी नही की थी कि जेल में भाई भागीरथ जी के साथ रहने और बातचीत करने का मौका आयेगा। ईश्वर की लीला को कौन समझे। नन्दू की तबीयन के समाचार अच्छे नही है, बस नन्दू की तबीयत ठीक हो जाये तो कोई चिन्ता की बात नही पर अभी तबीयत सुधर नही रही है। आन्दोलन के समाचार भी बहुत उत्साहवर्धक तो नहीं मिल रहे है पर चल रहा है। अपना विश्वास है कि यह चलता ही रहेगा और असफल नही हो सकता। अँगरेजो ने जो नीति अख्तियार की है वह चाहे हमारे लिए कितनी भी तकलीफ देह हो पर उनके लिए भयानक, घातक सिद्ध होगी। इस बार के आन्दोलन मे हज़ारो आदमी मौत के घाट उतार दिये गये। सन् १९२१ के पहले आन्दोलन मे लोगो का जेल का भय निकला, १९३० मे लाठियो का और इस बार गोलियो का भय निकला। लोगो ने खड़े होकर छाती पर गोलियाँ खायी और डटे रहे। जो लोग बन्दूक के सामने बन्दूक लेकर लड़ते है और उस लड़ाई मे मारे जाते है, उनको बहादुर कहा जाता है पर जिन के हाथ मे कोई हथियार न हो और सामने फौज, वह भी ब्रिटिश फौज गोलियो की बौछार कर रही हो (तो) उस के सामने डटे रहना कितनी बड़ी बहादुरी है। यह अपने उद्देश्य के लिए सच्चा और पवित्र बलिदान है, यह कभी व्यर्थ नही जा सकता। मन मे नाना तरह के भाव पैदा होते है, उनको काग़ज पर उतारना मुश्किल है शाम को आज सात बजे बन्द किया पर गरमी इतनी बेजा थी कि उसके मारे परेशानी थी पर परेशानी भी ख़ुशी की चीज़ है।

२९-३० अगस्त : चरखा तो बाहर कातते थे उतनी ही देर कातते है, कातना तो ज़्यादा चाहिए पर शरीर मेहनत करना न तो चाहता है और न बरदाश्त करता है। भागीरथजी के साथ ही रामायण का पाठ करते है, आनन्द भी ज़्यादा आता है और पढ़ते भी ज़्यादा समय तक है। दिन मे कुछ दूसरी किताबे पढ़ते है। मैथिलीशरण जी का 'साकेत' पढ़ा, अच्छा लगा। कई जगह तो बहुत ही सुन्दर लगा। उर्मिला के चरित्र का उन्होने जो निर्माण किया वह तो किया ही पर कैकेयी को राम वनवास के लिए तैयार करते हुए भी उन्होने विशेषता दिखलायी है। उ ने रामायण बराबर पढ़ते है और वह अपने को बहुत आदरणीय और प्यारी है। अपने साकेत का थोड़ा सा हिस्सा १९३२ की जेल में पढ़ा था और अपने

को उस समय जँचा नहीं था और अपने यह मानने लग गये थे कि रामायण पढ़ते हैं, साकेत में क्या धरा है पर इस बार अपनी वह धारणा बदल गयी । साकेत भी पढ़ने और समझने लायक़ तथा आदर करने लायक चीज़ है । रामायण का स्थान है सो है । अपने को यों तो घर छोड़े क़रीब एक महीना हो रहा है, जेल आये भी बीस दिन तो हो ही गये, इस बीच घर के लोगों से न तो मुलाक़ात हुई और न कोई ख़तो-किताबत। इससे इच्छा तो होती है कि मिलना हो जाता पर यहाँ उपाय भी क्या है ।

१-२ सितम्बर : कोठरी में बन्द करने का समय जैसे सुबह खुलने का एक घण्टा अपने आप बढ़ गया वैसे ही एक घण्टा बढ़ जाना चाहिए पर वह नहीं बढ़ा । अपने लोगों ने जेलर से निवेदन किया, जैसे खुलने का समय बढ़ गया वैसे ही बन्द होने का भी बढ़ना चाहिए पर वह राजी नहीं हुआ । आज एक घण्टे पहले कोठरियों में जाना पड़ा । यह अखरा तो खूब और झुँझलाहट भी हुई पर इस बात पर जेल के अधिकारियों से लड़ना उचित नहीं जँचा । दूसरे अपने लोग उनसे कई तरह की सुविधाएँ भी ले लेते हैं, ऐसी हालत में लड़ने का सवाल ही नहीं उठता । जेल जेल ही है । तीन दिन से लगातार वर्षा हो रही है, गरमी की शिकायत नहीं रही पर बराबर वर्षा से भी यहाँ तकलीफ़ होती है । पाखाना चूता है, छाता जेल वाले देते नहीं । रात में दो-दो घण्टे पहरा बदलता है, गिनती करते है, परस्पर में ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हैं, आवाजें आती हैं कितने क़ैदी हैं और कहते हैं ठीक हैं । इन सब बातों के कारण बार-बार नींद खुल जाती है और फिर आनी मुश्किल होती है । पर ये सब बातें न हों तो जेल कैसी । जेल के जो नियम हैं वे अमानुषिक हैं, नाक़ाबिले-बरदाश्त हैं । जिस महापुरुष ने ये बनाये हैं और इन जेलों की रचना की है, उसका भगवान् भला करे ।

३, ४, ५ सितम्बर : खबर मिली कि पन्ना ने मैट्रिक परीक्षा पास की, इस से सन्तोष हुआ । तीन बच्चों का बोझ तथा जापान की लड़ाई की वजह से वह इधर-उधर भी रही । मास्टर की गड़बड़ी रही तथा समय भी कम मिला । यह भी खबर मिली कि भगवानदेवी बीमार हो गयी थी । उसको काफ़ी तकलीफ़ हुई। अपने को चिन्ता स्वाभाविक है पर यहाँ बैठे क्या कर सकते हैं । यहाँ पर अपने बैठे समय जा रहा है । ईश्वर इस आन्दोलन को सफल करे, देश आज़ाद हो, गांधीजी सफल हों तथा बहुत दिन जीयें, यही प्रार्थना है ।

६-७ सितम्बर : सात तारीख को भाई बसन्तलालजी से की मुलाक़ात आयी, मालूम हुआ कि भगवानदेवी के बुखार कई दिन पहले हो गया था वह अभी तक चल ही रहा है । इससे मन को चिन्ता हुई । रात में कई तरह के विचार मन में चलते रहे । शेष में यह सोचकर सन्तोष किया, एक तो अपना वश नहीं कि अपने यहाँ बैठे कुछ कर सकें, दूसरे अपने क्या कर सकते हैं । स्वाभाविक तौर से भगवानदेवी की तकलीफ़ के समाचार जानने की इच्छा होती है पर जानने

का साधन नहीं है। इसलिए सब बातें भगवान् के भरोसे छोड़कर सन्तोष करने में ही शान्ति मिल सकती है। ईश्वर सब अच्छा करेगा।

८ सितम्बर : शाम की मुलाकात आयी। सिर्फ पन्ना तथा छोटे बच्चों को ही मुलाक़ात के लिए आने दिया गया, बाक़ी प्रहलाद, मदन आदि थे, उनको आने नहीं दिया। जेल के नियम है कि महीने में दो मुलाक़ात होगी, अपने एक महीने में सिर्फ यह मुलाक़ात दी जिसमें किसी को आने नही दिया। अपने मुलाक़ात करने से इन्कार कर दिया। सी. आई. डी. का आदमी आया था, उसने कहा कि हमारे पास तो केवल पन्ना को ही आने देने का हुक्म है, हम दूसरों को कैसे आने दें। शेष जेलर ने, दूसरे अफ़सरों ने कहा, आप मुलाक़ात ले लीजिए, कल-परसो ही आपको एक विशेष मुलाकात हम लोग और दे देंगे, इसलिए अपने पन्ना आदि से मिले पर खुशी नही हुई। जेलों के नियम तथा सरकार का जो तरीक़ा है वह इन्सानियत से ख़ाली है। जो हो जब तक यह सरकार है तब तक तो सभी बरदाश्त करना है। भगवानदेवी की तबीयत अभी तक ठीक नही हुई। उसकी तकलीफ़ से चिन्ता है, अपने क्या कर सकते है, यहां पराधीनता के दिन बैठे कट रहे है। 'बुलबुले कैद है चमन के लिए।'

९-१० सितम्बर : अख़बार अपने खर्च से मँगा लेते है, बाहर की ख़बरों का थोड़ा अन्दाज हो जाता है। आन्दोलन अभी तक तेज़ रफ़्तार से चल रहा है पर बीच बीच मे हिंसात्मक कार्रवाइयाँ हो जाती है और कई कार्रवाइयाँ तो बहुत बीभत्स हो जाती हैं– कई तो आन्दोलन को हानि पहुँचाने वाली है। भयानक दमन हो रहा है, बात-बात पर गोली चलती है। तो भी अपने को तो अहिंसक रहकर आन्दोलन चलाना है, इसी मे अपनी सफलता है, अखबार में कोई ख़ास ख़बर आती है तो जेल के अधिकारी उस पर काली स्याही लगाकर भेजते है तो मामूली पता चल जाता है। भागलपुर जेल मे भयानक हत्याकाण्ड हो गया। कई सौ लोग मारे गये, ऐसा सुना। मन मे बड़ी व्यग्रता रही। इस तरह लोगो का मारा जाना तथा कैदियों की तरफ़ से हिंसापूर्ण कार्रवाई होना दोनो ओर से बहुत बुरी बाते है। पता नही इस बार क्या होगा। पर यह साफ़ है कि सरकार ने जो ढंग अख़्तियार किया है उसमें उसका ख़ात्मा हो जायेगा।

११-१२ सितम्बर : आज के अख़बार मे चर्चिल का हिन्दुस्तान की वर्तमान हालत पर वक्तव्य पढ़ा, यह शरारत से भरा था, झूठ बातें कही गयी थी और कांग्रेस की भरपूर निन्दा की गयी थी तथा स्थिति का गलत अन्दाज़ लगाया गया था। बड़ी अहंमन्यता की बातें कही गयी थीं, इसको पढ़कर दिल में दर्द होता था और ग़ुस्सा आता था। साथ ही आज भी लोग सरकार के साथ सहयोग करते है, इस पर शर्म भी आती थी। जो भी हो चर्चिल के इस वक्तव्य ने अँगरेज़ जाति, अँगरेज़ हुकूमत की कोई ख़िदमत नही की, इससे तो अँगरेज़ सरकार और

हिन्दुस्तान के बीच खाई और भी चौड़ी की गयी है, वस्तुस्थिति क्या है उस को चर्चिल साहब दिल में तो ज़रूर जानते होंगे पर उन की बुद्धि साम्राज्यवाद के मोह में है। इस वक्तव्य से भी हमारा भला ही होगा। दिन-भर और रात में भी चर्चिल के वक्तव्य पर मन में नाना तरह के विचार चलते रहे। अपने जेल में बैठे हैं, क्या कर सकते हैं पर मानसिक क्रियाएँ तो होती ही हैं।

१३-१४ सितम्बर : तारीख चौदह को हवाई हमले की चेतावनी की घण्टी बजी, उस समय भोजन कर रहे थे। जेल आये सवा महीना हुआ, इस बीच चार बार यह चेतावनी की घण्टी बजी मालूम होती है। जापान के आक्रमण का ख़तरा रोज़-बरोज़ बढ़ रहा है। जापान का हमला होने में हिन्दुस्तान की कोई भलाई नहीं है। अच्छा तो यही होता कि अँगरेज़ों के साथ हिन्दुस्तान का सम्मानजनक समझौता हो जाता और हिन्दुस्तान के लोग यह अनुभव करते कि हमारे देश पर हमला होगा, उस का हम अपनी जान लगा कर सामना करेगे पर अँगरेज़ सरकार की बेवकूफ़ी कि इस मौक़े को खो दिया और उलटे हिन्दुस्तान के लोगों को अपना दुश्मन समझ लिया और बना भी लिया। अँगरेज़ सरकार ने जो ढंग अख़्तियार किया है और जिस तरह उस ढंग पर आमादा है उसमें तो हिन्दुस्तान के लोगों की सहानुभूति उस के साथ हो नहीं सकती।

१५, १६, १७ सितम्बर : बसन्तलालजी की मुलाक़ात आयी, मालूम हुआ कि भगवानदेवी का बुखार मियादी हो गया है और तकलीफ़ है, इससे अपने को चिन्ता हो गयी। रात में नींद भी बहुत कम आयी तथा नाना-तरह के विचार चलते रहे। यहाँ जेल के अधिकारी और पुलिस (सब का काम) आजकल ख़ुफ़िया पुलिस के महकमे में है। उसको युद्ध और आन्दोलन की वजह से बहुत ज़्यादा अधिकार दे दिये गये है। इसलिए वे मनमानी करते है, उन पर काम का बोझ भी बहुत अधिक पड़ गया है फिर यहाँ के आदमी ढीले भी बहुत है तथा सहानुभूतिशील भी नही होते। इन सारी वजहो से जेल के नियमों के अनुसार जो हक़ हैं उन का पूरा उपयोग नहीं मिलता। अपने को डेढ़ महीना हो गया, नियम के अनुसार अपने को तीन मुलाक़ात मिलनी चाहिए थी पर वास्तव में एक भी नहीं मिली। चिट्ठी देते है तो कोई उत्तर नही मिलता। भगवानदेवी बीमार है, अपने यहाँ पड़े हैं, उसकी क्या हालत है, इलाज कैसा हो रहा है, इन सब बातों को जानने की इच्छा होती ही है पर सिर पटक कोशिश करने पर भी कोई नतीजा नहीं निकलता। बहुत कोशिश करने पर कोई सफलता नहीं मिली तब अनायास ही तारीख़ सोलह को ख़बर मिली कि भगवानदेवी की तबीयत आज बहुत खराब रही, दस बार दस्त हुए। इससे अपनी चिन्ता और भी बढ़ गयी। रात मे नींद नहीं आया और बेचैनी रही। क्या करें, कुछ सूझ नही रहा है, न ठीक से ख़बर मिलने का कोई रास्ता है और न कोई बात। यदि लुक-छिपकर कार्रवाई करें तो शायद कुछ हो सके

पर ऐसा करना अपने मन के अनुकूल नहीं और न यह ठीक है। ईश्वर जो करेगा अच्छा करेगा, वही अपना सच्चा सहायक है। तारीख़ सत्रह को रामकुमारजी भुवालका को छोड़ दिया गया। रामकुमारजी ने ग़लती की है पर वे अपनी बात तो मानने वाले नहीं हैं। अपना क्या उपाय था ? उनके साथ भगवानदेवी के बनिस्बत कुछ बातें और थोड़ा-बहुत दान-धर्म करने के बारे में समाचार भेजे हैं, इससे अपने मन को थोड़ा सन्तोष हुआ। रात में पन्ना ने खबर दी कि माँ की तबीयत आज अच्छी है, इससे दिल को काफ़ी तसल्ली मिली। दो दिनों के बाद अच्छी तरह सोये। जीना-मरना सब कुछ ईश्वर के हाथ है पर भगवानदेवी ने अपने लिए बहुत किया है। अपनी इच्छाओं में उसने अपनी इच्छा मानी है तथा अपनी भावना के अनुसार उस ने सब काम किया है। उस के प्रति अपने मन में प्रेम है वह तो है श्रद्धा भी है। यही प्रार्थना है कि आप उस को अच्छी रखें, स्वस्थ करें।

१८, १९, २० सितम्बर : भगवानदेवी की तबीयत अभी सुधार की तरफ़ नहीं है, बीस दिन हो गये। चिन्ता बढ़ जाती है पर ईश्वर ठीक करेगा। जेल में ज़रा-सी भी बात के लिए आदमी देखता रह जाता है, कुछ कर नहीं पाता। अपने को साथ अच्छा मिला है, यह भगवान् की कृपा के सिवा और क्या है। अख़बारों के द्वारा आन्दोलन के जो समाचार मिल रहे हैं वे उत्साहवर्धक नहीं। कारण लोगों मे हिंसा का जो भाव है और पोस्ट ऑफिस जलाना, थाना जलाना यह सब कार्रवाई घातक है और यह कार्रवाई आन्दोलन को बहुत बड़ा नुक़सान पहुँचायेगी। इस आन्दोलन की सफलता तो अहिंसा मे ही है। हमारी हिंसा-भावना आन्दोलन को बढ़ा नही सकती।

२१-२२ सितम्बर : शाम को जब बन्द होने का समय होता है (तो) जेल का पहरेदार चाहता है कि यह जल्दी बन्द हो तो अपने को जल्दी छुट्टी मिले। अपनी ख़्वाहिश होती है कि दस-बीस मिनट भी खुली हवा में रहे तो अच्छा। यह मौक़ा एक ख़ास मौक़ा होता है, बन्द तो होना ही पड़ता है और जेल वाले अपनी तरफ़ से ज़रा भी देर नहीं होने देते पर बन्द होने के लिए रोज़ ही एक मानसिक क्रिया होती है। तारीख़ बाईस को मुलाक़ात आयी थी. भगवानदेवी की तबीयत ठीक बताते थे। चिन्ता की बात नहीं बताते थे। यह ईश्वर की महान् कृपा है, उसने दया करके भगवानदेवी को ठीक कर दिया। जेल आये डेढ़ महीना हो गया जिसमें यह पहली ही मुलाक़ात अच्छी तरह हुई। जो हो यह मुलाक़ात ठीक से हो गयी और बातें भी हो गयीं। पर जेल के जो नियम है वे अमानुषिक हैं।

२५ सितम्बर : चार-पाँच दिन से इन्सपेक्टर जनरल प्रिजन्स बंगाल जेल का मुलाहिज़ा कर रहे हैं। अपने जिस वार्ड में रहते हैं उसमें आने की रोज ख़बर आती रही। शेष में वह आया, कोई पाँच-सात मिनट यहाँ रहा। न तो किसी

से पूछा और न किसी को कुछ कहा, देखा भी नहीं। एक अजीब नाटक-सा रहा। एक तरफ़ से आया और दूसरी तरफ से चला गया। सप्ताह में एक दिन सुपरिंटेण्डेण्ट भी प्रायः ऐसा ही नाटक करते हैं और रोज सुबह जेलर महोदय तो अवश्य ही यह नाटक करते हैं। सुबह जब अपने लोगों का लॉकअप खुलता है उस समय रोज़ जेलर आता है। कभी तो दरवाज़े के भीतर मुँह डालता है, कभी भीतर पैर भी ले आता है और कभी सिर्फ़ उनके लिए दरवाज़ा खुलता है और वे उस के पास से गुज़रते हैं। दररवाज़े का पहरेदार ज़ोर से बोलता है अटेनशन, इस से जेलर के आने का पता लगता है नहीं तो मालूम भी न हो कि जेलर आया था या नही, पर (ये) सब बातें क्यों की जाती हैं, यह व्यर्थ का आडम्बर, बेमतलब की परेशनी का मायने समझ में नहीं आता। इस का मतलब क़ैदियों पर ब्रिटिश सरकार का रोब-ग़ालिब रहे, वे समझें कि उनके ऊपर कोई है पर अब यह रोब उठता जा रहा है। इस तरह बहुत दिन नहीं चल सकेगा। जेलों के द्वारा अपराधी मनोवृत्ति के लोगों का सुधार होने का काम होना चाहिए जो किन्हीं कारणों से बुरी आदतों के आदी हो गये हैं। उन की वे आदतें छुड़ा कर उनको अच्छा नागरिक बनाने की जगह ये जेलें हो सकती है तथा जो लोग निपट निरक्षर आयें उनको मामूली ज्ञान कराने का काम भी यहाँ हो सकता है, इसके अलावा ऐसे हुनर भी यहाँ सिखाये जा सकते है जिससे आदमी यहाँ से निकल कर बीसेक रुपया महीना उपार्जन मज़े में कर सके। पर रीति निराली है, यहाँ तो कोई भूल से या बुरी सगत से अपराध कर एक बार आ जाये तो फिर वह जन्म-भर के लिए इन्हीं कामों को करने का इल्म सीखता है। पता नहीं इस सब पापों से हमारे इस ग़रीब देश का कब पीछा छूटेगा। जेल में लोगों को देखते है, उनसे बाते करते हैं तो एक प्रकार की व्यथा होती है। मन व्याकुल हो जाता है। ईश्वर की इस सुन्दर सृष्टि में, जिस का सर्वोच्च विकास मानव है, मानव का इतना पतन, इतना अपमान, इतना घृणित जीवन, कुछ समझ में नही आता। इस भीषणता का इन अमानुषिक नियमों का कब अन्त होगा।

२६-२७ सितम्बर : समय तो गुजरता है। पर तबीयत बहुत अच्छी नही रहती इसलिए दिक़्क़त-सी बनी रहती है। सारी बातें देखने के बाद एक तरह से ठीक ही चल रहा है। आन्दोलन भी अपनी गति से चल रहा है, दबा नहीं। सरकार ने इस बार भयानक दमन किया। शायद ऐसा दमन अँगरेज़ों के राज्य में पहले कभी नहीं हुआ होगा तो भी वे आन्दोलन को दबा नही सके। बात तो यह है कि आन्दोलन उनके बुते के बाहर जा रहा है। अँगरेज़ बड़ी भूल करते हैं, वे गांधीजी जैसे आदमी को अच्छी तरह पहचान नहीं रहे या पहचानते हुए भी अपनी स्वार्थ-बुद्धि की वजह से उस पहचान का दुरुपयोग कर रहे है। यदि अपनी मूर्खता के वश उन्होंने गांधीजी को खो दिया तो फिर इन के लिए, हमारे लिए भी एक

बार बहुत बुरा समय आयेगा । ईश्वर इनको सुबुद्धि दे जिससे ये न्याय का रास्ता पकड़ें, अभी जिस रास्ते चल रहे हैं वह तो इन को खत्म कर देगा । भगवानदेवी खूब ही बीमार रही, अब भी उस की तबीयत कैसी है और कब तक ठीक हो जायेगी इस की खबर अपने को नहीं मिलती, जेल के बन्धन बुरी से बुरी चीज़ है । ऐसी व्यवस्था में स्वाभाविक-तौर से जेल से छूटने की इच्छा तो होती है पर ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमारे देश को आज़ाद करे, आज़ाद हिन्दुस्तान का दर्शन हम कर सकें ।

२८-२९ सितम्बर : भाई भागीरथजी की मुलाकात से मालूम हुआ कि भगवानदेवी की तबीयत बीच में सुधरी थी फिर ख़राब हो गयी । क्या किया जाये सिवा ईश्वर से प्रार्थना के अपना क्या वश है । जेल ऑफ़िस से ख़बर आयी कि आप अपने घर जाकर अपनी स्त्री से मिल आयें, हुक्म आया है । अपने को ख़ुशी नहीं हुई । भगवानदेवी को ज़्यादा बीमार देख कर पन्द्रह दिन पहले दरख़्वास्त की थी कि जेल के नियमों के अनुसार बीमार को देखने जाने का नियम है । रोगी की हालत ज़्यादा ख़राब हो और वह अब-तब हो रहा हो और उस को देखने का आर्डर यदि पन्द्रह दिन बाद आये तो गुस्से आने लायक बात है । एक बार तो इच्छा हुई कि जाना अस्वीकार कर दें पर सोचा कि भगवानदेवी की तबीयत ख़राब है और अपने मिलने से शायद उसे संतोष हो इसलिए जाना ही ज़रूरी समझा । पर अभी कब ले जायेंगे, इस का पता नहीं । शायद जैसे आर्डर आने में देर लगी वैसे ही भेजने में भी हो । मन चंचल था, रात में नींद भी कम आयी । जेल के नियम, ढंग शिष्टाचारपूर्ण नहीं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इनका इन्तजाम स्वयं गड़बड़ा गया है, यह अब कोई भी इन्तजाम अच्छी तरह कर नहीं पाते हैं । बहुत ढीलापन तथा बदइन्तज़ामी पैदा हो गयी है । साथ ही देश में चारों ओर भयानक स्थिति पैदा हो गयी है, खाने-पीने की चीज़ों, कपड़े के दाम भयानक रूप से बढ़ रहे हैं । लाखों कुटुम्बों को भूखा रहना पड़ता होगा, स्त्रियाँ तन ढँकने को कपड़ा नहीं पा रही हैं । इसके बाद सरकार ने दमन-नीति अख्तियार की है, रोज़ गोलियाँ, मशीनगन चल रही हैं, यहाँ तक कि हवाई जहाज़ों से लोगों को मशीनगन दिया गया है, सैंकड़ों गाँवों पर लाखों रुपया जुर्माना किया गया है जो बेरहमी से वसूल किया जा रहा है । ऐसी हालत में यहाँ हुकूमत शान्तिपूर्वक चल नहीं सकती । जो हो हमारे इस ग़रीब, दुःखी देश का भगवान् भला करे और सारी दुनिया का भला करे, यही प्रार्थना है ।

३० सितम्बर : चार बजे जेल ऑफ़िस का आदमी आया । आप घर अपनी स्त्री से मिलने जा सकते हैं, खुफिया पुलिस का ऑफ़िसर आ गया है । उस ऑफ़िसर ने अपने को बंगाल सरकार का आर्डर दिया जिस में घर जाकर एक घण्टे अपनी स्त्री से मिलने की इजाज़त थी । अपने भाई भागीरथ जी की गाड़ी से घर रवाना

हुए। डेढ़ महीने से ज्यादा हुआ तब अपने इन रास्तों में चला करते थे। आज इन रास्तों को देखने में एक प्रकार का लालच था, एक प्रकार की खुशी थी और थोड़ा अजीबपन भी। घर पहुँचे, वहाँ कई मित्र तथा घर के सब लोग आ गये थे। भगवानदेवी के पास गये। वह काफ़ी देर कुछ बोल न सकी, प्रणाम कर लिया, अपने ही उस से बातें कीं, काफ़ी कमज़ोर हो गयी है, तकलीफ़ अभी मिटी नहीं है। बुख़ार तो है ही, पानी तक हज़म नहीं हो रहा है। बत्तीस दिन से सिर्फ़ बार्ली के पानी पर है पर उस के हज़म होने में भी दिक्कत होती है। थोड़ी देर बाद भगवानदेवी ने अपने को सँभाला, हिम्मत की, उस को अपनी चिन्ता है। ख़ाना ठीक पहुँचता है कि नहीं, तबीयत कैसी है, दूध यहाँ से हम लोग भेज दें आदि बातें कहने लगी। उसकी तबीयत के बारे में बात करने पर कहा, पहले से अब अच्छी हूँ, पानी पीने पर भी उल्टी हो जाती है। डॉक्टर से टेलीफ़ोन पर बात हुई, उन्होंने कहा, पाँच-सात दिन में अच्छी हो जाने की पूरी उम्मीद है, रिस्क की बात तो नहीं है। कोलन में सूजन आ गयी है इसीसे बुख़ार नहीं उतर रहा है, ठीक हो जायेगी। मित्रों में प्रायः बहुत आदमी आ गये थे, उन से ज़्यादा बातें नो नहीं हो सकीं। खादी भण्डार के आदमी आये थे, खादी नही मिल रही है, भण्डार में घाटा पड़ रहा है। सेवा-सदन का काम भी अच्छा नहीं चल रहा है। दोनों का काफ़ी नुकसान हो रहा है पर अपना वश नहीं है।

लौटते समय लेक के रास्ते से गाड़ी निकली, जिस लेक पर रोज़ एक घण्टे से .ज्यादा घूमा करते थे आज वह नयी-सी मालूम हो रही थी। लेक पानी से लबरेज़ हो रही थी जैसे कोई सुहागिन सम्पूर्ण शृंगार करके खड़ी हो वैसे ही लेक अपने आप में थी। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली नज़र आती थी। बड़ा मनोहर गुणकारी दृश्य था। लेक की दूसरी तरफ़ तालाब है। जिस में तैरना सीखने के लिए जो बीच में जगह बनायी गयी है उस का नज़ारा तो और भी ज़्यादा दिल लुभाने वाला था। उसमें दूर तक सफ़ेद खम्भों की क़तार ऐसे मालूम हो रही थी मानो मानसरोवर पर हंसों की क़तार हो।

जेल पहुँचने पर जेलर ने तलाशी लेने की रस्म अदा की। यह एक रस्म अदायगी के सिवा कुछ नहीं थी, पर अपने को वह बहुत बुरी लगी। अपने पाँचवी बार जेल आये हैं जिसमें पैरोल का यह पहला ही मौक़ा है। जो हो अपने साथ कोई चीज़ या काग़ज़-पत्र तो हो ही क्या सकता था। 'पुनर्मूषको भव' की तरह दो घण्टे पहले जिस चाहरदीवारी के अन्दर बन्द थे उस में आ गये, जो इस विशाल दुनिया में अपनी एक छोटी सी दुनिया है।

१-२ अक्तूबर : तारीख दो को पूज्य महात्माजी, गांधीजी, बापूजी का जन्मदिन है। यहाँ क़रीब एक सौ राजनीतिक बन्दी हैं पर वें अलग-अलग वार्डों में है फिर बंगाल के लोगों में जैसी होनी चाहिए वैसी गांधीभक्ति भी नहीं है। इसलिए यहाँ

गांधी जयन्ती का कोई सम्मिलित आयोजन नहीं हुआ। कोशिश करने पर भी सम्मिलित कार्यक्रम होना मुश्किल था। अपने हलकी सी चेष्टा की पर यहाँ के अधिकारी गांधी जयन्ती मनाने का आर्डर देंगे, ऐसी आशा नहीं की जा सकती थी। इसलिए व्यक्तिगत प्रार्थना और पूज्य गांधीजी के जीवन की प्रार्थना, नित्य नियम के अनुसार ज़्यादा चरखा कातकर, गांधीजी की जयन्ती को मनाने का सन्तोष किया। ईश्वर गांधीजी को अनन्त काल तक जीवित रखे और उन को अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल करे।

३ अक्तूबर : चार बजे जेलर का आदमी आया। आज फिर बीमारी का हाल जानने घर भेजा गया। घर पर आज भी बहुत मित्र और बहनें आ गयी थीं, सब से राज़ी-खुशी की बात हुई है। विशेष बात तो क्या हो सकती थी और न अपना कोई लुक-छिपकर बातें करने का ही इरादा था। भगवानदेवी की तबीयत आज पहले से बहुत अच्छी थी। आज वह बैठकर बात कर रही थी। पैंतीस दिन बाद अन्न का स्पर्श कराया गया है। इस बार उसने काफ़ी बीमारी भोगी पर ईश्वर की महान् कृपा थी कि वह अच्छी हो गयी।

४-५ अक्तूबर : तारीख़ ग्यारह को गिरफ़्तार हुए दो महीने हो जायेंगे। इसके बाद ये इस तरह नहीं रख सकेंगे। क्या तो छोड़ देंगे जिस की आशा कम है? मालूम तो यह होता है कि भारत रक्षा कानून की धारा छब्बीस के अनुसार बन्द कर के रखेंगे। यदि ऐसा ही हुआ तो इस दोपहर के समय के उपयोग का अच्छा रास्ता निकालना है।

६ अक्तूबर : चार बजे जेल ऑफ़िस का आदमी आया, ऑफ़िस जाने पर मालूम हुआ कि घर भेजने के लिए इन लोगों ने यह तय किया है कि यहाँ से टैक्सी से भेजा जाये, घर पर कुछ भी ख़बर न दी जाये। अपने दो बार पहले गये तब मालूम हो जाने से बहुत आदमी आ गये और उस की खबर सी. आई. डी. ऑफ़िस में पहुँच गयी। जो हो अपना यह मतलब नहीं था कि किसी बहाने लोगों से मिलें और बातचीत करें, लोग आ गये थे, उनसे रामश्याम करनी तो जरूरी थी और मिलने में एक प्रकार का सुख भी होना ही है पर तो भी गत बार की मुलाक़ात के समय मन में यह बात आयी थी कि इतने लोगों का आना और अपने को उन से मिलना मुनासिब नहीं। भगवानदेवी की तबीयत अब ठीक हो रही है इसलिए अपने आयें ही क्यों। भाई भागीरथजी से इस बात का जिक्र भी किया था और सरकार को पत्र लिखने की बात भी की गयी थी पर फिर निश्चय यही रहा कि सरकार ने जो आर्डर दिया उससे जाकर मिल आना ठीक है। घर पहुँचे तो भगवानदेवी आदि को आश्चर्य हुआ। भगवानदेवी, पन्ना और बच्चों के सिवा और कोई नहीं था। थोड़ी देर बाद प्रहलाद आ गया, बातें तो बड़ी शान्ति से हुईं पर ज़्यादा लोगों के आ जाने में, मिलने-जुलने में एक प्रकार

का मानसिक हलकापन आ जाता है, वह नहीं आया । लौटकर आये तब मन पर बोझ था पर इस तरह लोगों से मिलना और इतने लोगों का आ जाना आर्डर के मुताबिक़ ठीक नहीं था । भगवानदेवी की तबीयत अब ठीक है । साढ़े पाँच बजे फिर उस वार्ड में, उसी कोठरी में, चार-पाँच साथियों की दुनिया में आ गये। बाहर का नज़ारा देख आये और उस की हलकी सी तसवीर अब तक भी आँखों में घूमती है । सोये पर नींद नहीं आयी, गरमी भी खूब थी ।

९ अक्तूबर : भाई भागीरथजी को आज कन्फ़र्म कर दिया गया यानी वे अनिश्चित काल के लिए जेल में रख दिये गये । अपने और भाई बसन्तलालजी के लिए भी कल यही होने वाला है क्योंकि अपने पहले के आन्दोलन में चार र जेल गये हैं तथा कांग्रेस से अपना सीधा सम्बन्ध है पर भाई भागीरथजी के बारे में कोई बात ही नहीं थी पर आजकल तो सी. आई. डी. की रिपोर्ट पर काम होता है, चाहे जो कर सकते हैं । भाई भागीरथजी के बन्द कर देने का अपने मन पर असर पड़ा । यह सरकार का सरासर अन्याय है, पर इस बार सरकारी अन्यायों का कोई हिसाब-किताब थोड़े ही है, जो हो इस का परिणाम अच्छा ही होगा । अपने लिए भागीरथजी का साथ मिलना खुशी की बात है । ईश्वर सब बातें अच्छी करता है, अपने मोहवश घबराते हैं ।

११-१२ अक्तूबर : अपने को गिरफ्तार हुए पूरे दो महीने हो गये । भारत रक्षा-क़ानून की जिस धारा के अनुसार अपने को रोक रखा था, उस मे दो महीने से ज़्यादा रखने का विधान नहीं है । इसलिए उसी ऐक्ट की दूसरी धारा के अनुसार अनिश्चित समय तक के लिए बन्द रखने का आर्डर बंगाल सरकार का आ गया और अब कब छोड़ेंगे, इसकी कोई अवधि नहीं रही । इस आर्डर के अनुसार अपने को बन्द कर दिया, यह ठीक ही हुआ इस समय अपने बाहर जाकर क्या सुख अनुभव कर सकते थे, पूज्य बापूजी जेल में हैं, जवाहरलालजी जेल में हैं, बड़े से बड़े नेता जेल में हैं और देश के हज़ारों भाई-बहन जो देश की आज़ादी चाहते हैं वे जेल में हैं, इसलिए इस आर्डर के आने से अपने को कोई बुरा नहीं लगा। आज़ाद हिन्दुस्तान में जेल से बाहर निकलें तब ही सच्चा सुख मिल सकता है ।

१६, १७, १८ अक्तूबर : दो दिन से वर्षा, तूफान रहा । बेचारे साधारण आदमियो की तकलीफ़ का खयाल करते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं । बहुत नुकसान हुआ होगा । बेचारे जानवरों और पक्षियों को बहुत तकलीफ़ हुई होगी। बहुत-से वृक्ष गिर गये । छोटे-छोटे पक्षियों के बच्चे तो बहुत ही ज़्यादा मर गये होंगे । पता नहीं ईश्वर की क्या इच्छा होती है और वह यह खेल करता रहता है । दो दिनों से जवाहरलालजी का 'विश्व इतिहास की झलक' पढ़ रहे हैं, जवाहरलाल जी बहुत अच्छा लिखते हैं । उनको लिखने की कला का अच्छा ज्ञान है, यह भी कह सकते हैं कि वे इस के विशारद हैं । समय कट रहा है, पता नहीं कब तक

इस तरह रहना है । रहने का तो अफ़सोस नहीं, पर हमारे इस मुल्क की हालत पर विचार करते हैं तब ज़रा चिन्ता सी होती है । इसको आज़ाद होना चाहिए, होगा भी देखें कितना समय लगता है ।

१९, २०, २१ अक्तूबर : सात बजे कोठरी में बन्द कर दिये जाते हैं । बन्द होना अखरता तो खूब है पर बन्द होना पड़ता ही है । नौ बजे क़रीब सोते हैं, दो घण्टे का समय कुछ प्रार्थना में, कुछ पढ़ने में यों ही चला जाता है । जिस दिन नींद ठीक आ जाती है उस दिन तो मज़े में कट जाती है और जिस दिन नहीं आती उस दिन रात कटनी मुश्किल होती है । रात तो जितने घण्टे की होती है उतनी ही होती है पर अपने को वह ज़्यादा बड़ी मालूम होने लगती है । कई तरह के विचार मन में आते रहते हैं और तबीयत ख़राब मालूम होने लगती है। जो हो किसी प्रकार समय कट रहा है । अँगरेज़ सरकार की नीयत अच्छी नहीं है और हमें इससे आशा भी क्यों करनी चाहिए । कोई भी देश आज़ाद होता है तो अपनी ताक़त से, अपने संगठन से, त्याग और अपने ही बुद्धिबल से । हमारा देश भी इस तरह इस गुलामी से छूटेगा पर अभी देर कितनी है वह तो परमेश्वर ही जाने । इस बार के आन्दोलन में देश ने कुरबानी तो बहुत की पर आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो सरकार को टिकाये हुए हैं । •

२२, २३, २४ अक्तूबर : जेल में जो काम नियम से और समय पर करते हैं वे बहुत अच्छी तरह होते हैं, कारण कोई दूसरी तरह का झंझट तो रहता नहीं। प्रार्थना-उपासना सब ठीक समय पर हो जाती है । चर्खा ठीक ढंग से काता जाता है । नियमित जीवन बीतता है । यह सब होते हुए भी जेल-जीवन खलता है, इच्छा होती है इससे छुटकारा मिले । इससे साबित होता है कि जेल का जीवन कष्टदायी है, इसमें सुख नहीं मिल सकता । यहाँ जो साधारण क़ैदी हैं, जो लोग चोरी या दूसरे अपराधों की वजह से आयें हैं, उनके साथ अधिकारी लोगो का जो व्यवहार होता है वह अपने जब देखते हैं तथा उनके जीवन की कल्पना करते हैं तब ऐसी व्यग्रता होती है और दुःख होता है । इन लोगों का जीवन पशु-जीवन से भी ख़राब है, इनमें मनुष्यता के गुण जेल आने के बाद खतम हो जाते हैं। पशु बनकर यहाँ से बाहर जाते हैं । पुराणों में जो नरक का वर्णन है शायद वह इन्हीं जेलों का और इनमें रहने वालों का ही है ।

२७, २८, २९ अक्तूबर : आज के अखबार में जापान के आसाम और चटगाँव में बम गिराने की ख़बर थी । यह लक्षण ऐसे हैं कि शायद अब हिन्दुस्तान लड़ाई का क्षेत्र बन जाये । अब ये हवाई हमले बराबर होते रहेंगे । आसाम,बगाल में कई तरह की तक़लीफ़ें जल्दी पैदा हो जायेंगी, ईश्वर ही मालिक है । इधर देश की यह स्थिति उधर युद्ध का क्या होगा ?

३०-३१ अक्तूबर : जेल सुपरिन्टेडेण्ट का आर्डर आया कि सात नम्बर खाते

में आप लोगों को किया गया है, वहाँ जाइए पर उस जगह होहल्ला रहता है, अपने अनुकूल नहीं रहेगा। ऐसा सोचकर सुपरिन्टेण्डेट को खत लिखा कि हम जहाँ हैं वहीं रहें तो अच्छा हो। अभी कोई दूसरा आर्डर तो नहीं आया अपने जैसे थे वैसे ही हैं, देखा जाये क्या होता है पर जेल कैसी चीज़ है और यहाँ आदमी कितना बेबस, दीन हो जाता है, सोचने की बात है। मनुष्य के लिए बेबसी सब से बुरी है और यह जेल में पग-पग पर मिलती है। सचमुच जेल एक भयानक यातना है पर अपने लोग जिस मक़सद के लिए यह भोग रहे हैं उसमें एक प्रकार की मानसिक प्रसन्नता और शान्ति मिलती है, उसके सामने जेल की यह बेबसी कुछ नहीं है।

१-२ नवम्बर : भाई भागीरथजी की स्त्री मुलाक़ात करने आयी थी, उसने कहा कि भगवानदेवी को फिर बुखार हो गया था। अब बुख़ार तो नहीं है पर कमज़ोरी है। ईश्वर का भरोसा है। वही ठीक करेगा। आन्दोलन धीमे, ठण्डा चल रहा है। संसार का ख़ासकर अमरीका का लोकमत हिन्दुस्तान के सवाल को तय करने के पक्ष में बहुत ज़ोर से है पर अँगरेज़ टस से मस नहीं हो रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि अँगरेज़ों ने इस बार कोई पक्का निश्चय कर लिया है कि चाहे दुनिया कुछ भी कहे और हिन्दुस्तान में कितने ही ज़ोर का आन्दोलन होता रहे, अपने को भी नहीं करना है। जो भी हो अँगरेज़ों ने जो नीति अख़्तियार की है उसमें सफलता तो हो ही नहीं सकती। वे अपने लिए, हमारे लिए बहुत खतरनाक काम कर रहे हैं। यदि हिन्दुस्तान के साथ अँगरेज़ों का कोई समझौता नहीं हुआ तो आगे आने वाले दिन हिन्दुस्तान के लिए चाहे कितने भी बुरे हों पर अँगरेज़ों के ख़ात्मे के दिन होंगे। अपनी तो यही प्रार्थना है कि भगवान् अँगरेज़ों को और हमारे देशवासियों को सुबुद्धि दे जिससे परस्पर विश्वास करके दोनों देशों का ही नहीं सारे मानव-समाज का भला हो, वह रास्ता निकाला जाये। इस बार का सवाल बड़ा बहुत है तो भी वह निश्चय है कि अब यह देश गुलाम नहीं रह सकता, इस को आज़ाद होना ही है और इसी मौक़े होना है।

३, ४, ५ नवम्बर : सुबह का टहलना तो कमज़ोरी के कारण बन्द करना पड़ा है और सारे काम नियमित चल रहे हैं। तबीयत के ढीलेपन के कारण मन में एक प्रकार की उदासी रहती है। नींद भी अच्छी नहीं आती। समय कट रहा है यों करते-करते। जितने का भोग है वह पूरा हो ही जायेगा। इस बार मन में एक प्रकार की उतावली तो है पर अपनी जल्दी से तो काम होता नहीं वह तो अपने ढंग से अपने मौक़े से ही होगा। गाछ में फूल लगते हैं, फल लगते हैं फिर वे फल अपनी क्रिया के अनुसार पकते हैं तब जाकर उन का स्वाद मिलता है। पकने के पहले फल तोड़ लिये जायें या यों ही टूट पड़ें तो उनमें स्वाद नहीं होता। कच्चे फल बहुत अच्छे और गुणकारी भी नहीं होते। इसलिए वे अच्छी

तरह पक जायें तब तक का इन्तजार करना ही बुद्धिमानी है। वे तो पक ही रहे हैं और मिलने ही वाले हैं फिर यह बेसबरी ठीक नहीं।

९, १०, ११ दिसम्बर : अखबार से पता लगा कि कलकत्ता में एक बहुत ही दुखद घटना हो गयी। काली पूजा के दिन खेल, व्यायाम के प्रदर्शन में अचानक पण्डाल में आग लग गयी, जिससे डेढ़ सौ से ज़्यादा लोग उसी जगह जलकर मर गये। अधिकांश स्त्री और बच्चे थे। यह पढ़कर सन्न रह गये। दिन-भर मन ख़राब रहा, न मालूम कितने घर वीरान हो गये होंगे, कितने बच्चे मातृहीन हो गये होंगे। और जो लोग जीते जी आग में जले उन को जो कष्ट हुआ होगा वह तो कल्पनातीत ही है। कुछ ही दिन पहले मेदिनीपुर और उड़ीसा में भयानक तूफ़ान से हज़ारों आदमी, अगणित पशु-पक्षी मर गये, जिसके कारण आज भी वहाँ भयानक हाहाकार मचा हुआ है। मनुष्य चाहे कितनी भूलें करें पर उस पर इस तरह की भयानक विपत्ति तो नही आनी चाहिए। इन दोनों घटनाओं से दिल दहल गया और बहुत वेदना हुई। सहायता करने वाली कई संस्थाएँ तैयार हो गयी है, शायद कुछ सहारा मिले पर तकलीफ़ इतनी ज़्यादा है कि कोई मनुष्य उसे सँभाल नहीं सकता और भी समाचार अच्छे नहीं मिल रहे है। आन्दोलन भी दबता जा रहा है और सरकार अपना रवैया बदलने को तैयार नही मालूम होती। जो हो इस बार हिन्दू-मुसलमान के भाग्य का निपटारा तो होगा ही।

एक सज्जन मिले जो वीरभूमि ज़िले के है और आमार कुटीर नाम की संस्था कई वर्षो से चला रहे है। उनकी संस्था किस प्रकार चल रही है तथा क्या-क्या काम करती है, क्या उद्देश्य है आदि बातें हुई। इस सज्जन ने विवाह नही किया बचपन से ही देश सेवा की धुन सवार हो गयी थी। जब बंग-भंग हुआ और स्वदेशी आन्दोलन की शुरुआत हुई यानी जिस दिन से हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए कोई आपसी काम शुरू हुआ उसी दिन से यह भाई काम कर रहे है। पहले आतंकवाद में विश्वास करते थे, कई बार, कई वर्षो जेलो में रहे। देश सेवा की संस्था-ख़र्च के लिए व्यापार भी किया और अच्छी सफलता भी मिली, पर सरकारी दमन और नीति से बार-बार यह चौपट होता गया। पर इस आदमी के उत्साह, उमंग और उद्देश्यों में ज़रा भी ढीलापन नहीं आया और न अफ़सोस ही हुआ। यह आदमी तो अनासक्त है, खूब तन्दरुस्त और खूब क्रियाशील बना हुआ है। इनके आश्रम आमार कुटीर में आज चौंतीस आजीवन सदस्य हैं, जो अपना सारा समय, सारी बुद्धि, सारी शक्ति देश-सेवा, जनसेवा, देश की स्वाधीनता के कामों में लगा रहे हैं और उन के सब भार कुटीर पर है। कुटीर को एक कमेटी चलाती है जो इन्ही सदस्यों से बनती है। किसी भी सदस्य को यह अधिकार नहीं है कि वह कुटीर से किसी चीज़ के लिए, किसी भी ज़रूरत के लिए ख़ास माँग करे। वह अपनी बात कुटीर के सामने रख सकता है। वैसे तो वास्तव में सब लोग एक

परिवार की तरह हैं इसलिए किस चीज़ की जरूरत है उस से भी सभी जानकार रहते हैं और इसलिए कमेटी कुटीर की हालत और उस सदस्य की ज़रूरत पर विचार करके जो निर्णय करती है उस को वह सदस्य खुशी से स्वीकार करता है। एक आदमी बहुत योग्य है और कुटीर की सेवा भी बहुत करता है, उसकी आवश्यकता सिर्फ़ बीस या पचीस रुपये महीने की है। एक दूसरा सदस्य साधारण है उस की ज़रूरत पचास या सौ की है तो कुटीर-कमेटी उसके लिए उसी तरह तय करेगी। सदस्य के बूढ़े माँ-बाप गुज़र जायें तो उन का श्राद्ध आदि भी कुटीर करती है, किसी की लड़की है, उस का विवाह करना है तो वह भी कुटीर करती है। विवाह, श्राद्ध का खर्च भी कुटीर-कमेटी ही तय करती है।

कुटीर के दो विभाग है, एक सार्वजनिक विभाग, दूसरा व्यापार विभाग। व्यापार-विभाग भी काफ़ी बड़ा है। वर्ष मे करीब पचास हजार से ज़्यादा आय होती है। व्यापार-विभाग से सार्वजनिक-विभाग कमेटी रुपयों की माँग करती है और वह जितनी आय होती है वह सब सार्वजनिक काम में लगाती है। कुटीर दान नहीं लेती है और भी बहुत सी बाते है। मतलब यह बहुत ही सागोपाग उपयोगी तथा लोकहितकारी संगठन है। ऐसे संगठन और ऐसे त्यागी, निस्पृह लोग ही सच्चा और क्रांतिकारी काम कर सकते है। इन सज्जन से बात कर बड़ी प्रसन्नता हुई और इनकी बात का अपने मन पर काफ़ी देर तक प्रभाव रहा, बहुत देर तक मन में कई तरह के विचार चलते रहे।

अपने निज के बारे मे बहुत देर तक सोचा। अपने आज से करीब चौदह वर्ष पहले जब अच्छे चलते बिजनेस को छोड़ कर सार्वजनिक काम करने के विचार से (चले थ) तब इस तरह के मनसूबे थे पर आज अपने व्यापार से अलग होते हुए भी कहाँ है, यह अपने अच्छी तरह जानते है। इस का क्या कारण है, इस पर विचार करते है तो साफ़ तौर से दो बाते सामने आती है, एक अपने विवाहित थे, पीछे छोटी मोटी गृहस्थी थी। इसके बाद दूसरी बात यह कि अपने ठीक विचार किये बिना भावुकता मे काम करते रहे। आज भी अपने वैसे सन्तोष है पर जिस सन्तोष की जरूरत है, जिस चीज़ की, जिस बात की कल्पना उन दिनो थी वह नही हुई। विचार करने पर एक बात और भी मालूम होती है कि अपने जिस समाज में पैदा हुए, वह स्वभावतः व्यापारी समाज है। अपनी जिस तरह की सोसायटी है, मित्र है, जिस तरह का वातावरण चारों तरफ़ रहता है वह सब धनियों का है। धन की प्रशंसा, धन का प्रभाव, धन का महत्व और धन कमाने के साधन दिन-भर अपने सामने से गुजरते है। अपने देखते-देखते अपने जान-पहचान के लोग, अपने मित्र धन कमाते है और उस धन मे वे जिस समाज में अपने रह रहे है, उस मे आदर, मान, इज़्ज़त पाने लगते हैं तथा वे खुद अपने आप को ज़्यादा बुद्धिमान, ज़्यादा शक्तिशाली और ज़्यादा साधन-सम्पन्न अनुभव करने लगते

हैं। चाहे प्रत्यक्ष न सही परोक्ष इस वातावरण का अपने मन में भी प्रभाव पड़ता ही है। इस प्रकार के अनिश्चित मन और सम्पूर्ण त्याग की भावना की कमी से बहुत ज़्यादा आगे बढ़कर किसी काम में रत कैसे हुआ जा सकता है ? तो भी जो कुछ ईश्वर ने अपने को बुद्धि और साधन दिया तथा प्रेरणा दी, जितनी सेवा वह अपने द्वारा कराना चाहता है, कराता है और उसमें अपने को उस महान् प्रभु का उपकार मानना चाहिए। उसको धन्यवाद देना चाहिए और उससे प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभो, आप कृपा करो और ज़्यादा से ज़्यादा सच्चा, न्याय, तप, तपस्या और पवित्रता का रास्ता दिखाओ और उस पर चलने का बल दो। जिस सज्जन का अपने मन पर असर है उन का नाम सुखेन मुखर्जी है और वे ही आमार कुटीर के संचालक और संस्थापक हैं।

१६, १७, १८, १९ नवम्बर : जेल-जीवन का अनिश्चित समय बीत रहा है। नाना तरह के विचार चलते रहते हैं, बाहर की घटना का मालूम नहीं होता, जो कुछ अखबारों से मालूम होता है वही होता है। स्थिति क्या है, इसे जानने की इच्छा तो होती है पर उपाय नहीं। तिकड़मबाज़ी करने से थोड़ा-बहुत पता लग सकता है पर वह करना है नहीं, ऐसा लालच भी नही करना चाहिए। रात में चार-पाँच सिपाही पहरा देने वाले दो-दो घण्टे में बदलते हैं। वे आकर पहले तो ताला ज़ोर से खड़खड़ाते है, यदि उससे नींद नही टूटी तो फिर बाहर के सिपाही को आवाज़ देने के वक्त अक्सर टूट जाती है। ऐसी आवाज़े भी रात मे चार-पाँच बार, शायद इससे भी ज़्यादा बार देते है। कई सिपाही ज़रा भले आदमी होते हैं तो ताला ज़ोर से नहीं खड़खड़ाते और आवाज़ भी दरवाज़े के पास आकर देते हैं, पर महीने में कम-से-कम दस बार सिपाहियों की वजह से नींद टूटती है, रात गुज़रना मुश्किल होता है, वह जी ही जानता है पर उपाय क्या है।

२१-२२ नवम्बर : शनिवार को मुलाक़ात आयी थी। मुलाक़ात आने से एक प्रकार की मानसिक हलचल हो जाती है तो भी मुलाक़ात का लालच बना रहता है। वास्तविक बात तो यह है कि जेल में किसी भी स्थिति में मनुष्य को सन्तोष का अनुभव नही होता। आज तो सब से बड़ा सवाल देश की स्वाधीनता का है। कांग्रेस के सभी कार्यकर्ताओं तथा व्यापक सहानुभूति रखने वाले या यों कहिए देश की आज़ादी की इच्छा से किसी तरह के आन्दोलन करने वालों की ज़बान बिलकुल बन्द कर दी गयी है। हज़ारों को जेलों में डाला गया, हज़ारों को गोली से उड़ा दिया गया, गाँवों को नष्ट कर दिया गया। जुर्माना लगाकर लोगों को नाहक तंग किया गया है और नाना-तरह के काम किये गये हैं। ऐसी हालत में आन्दोलन एक बार ढीला हो गया। सरकार अपनी बहादुरी और दमन-नीति पर चल रही है। पर कोई भी सरकार दमन पर अपना शासन न तो क़ायम रख सकती है और न ही चला सकती है। देखें आगे क्या होता है। निराशा में ही

आशा का अंकुर छिपा रहता है और अपने समय पर ठीक फूटकर निकलता है। रात में नींद कम आने की वजह से ज़रा बेचैनी रहती है । सब ठीक है। ईश्वर सब ठीक ही करता है और ठीक ही करेगा ।

२३ नवम्बर : कल बंगाल कांग्रेस पार्टी ने नेता श्री किरणशंकर राय को पुलिस ने गिरफ़्तार करके अपने पास भेज दिया । वे आना चाहते थे या नहीं पुलिस किसी को भी बाहर नहीं रहने देना चाहती । इस बार पुलिस को यानी सी. आई. डी. वालों को राज्य मिल गया, जो चाहे करते हैं ।

२४, २५, २६, २७ नवम्बर : किरणशंकर राय को अपने लोगों के साथ रखा है । एक प्रकार यह अच्छा ही हुआ । राजनीतिक विषय की तथा दूसरी तरह की बातें होती रहती हैं । तारीख छब्बीस को विशेष मुलाक़ात मिली जिस में भगवानदेवी, पन्ना आयी थीं । भगवानदेवी की तबीयत सुधर नहीं रही है, कमज़ोर बहुत है, बीच-बीच में बुख़ार भी हो जाता है । उसको देखकर चिन्ता हुई । अपने मित्र गौरीशंकरजी डालमिया जो बिहार की जेल में अपनी तरह ही बन्द हैं, उनकी स्त्री का देहान्त हो गया, कई छोटे बच्चे हैं, बेचारे बड़ी तकलीफ़ में पड़ गये । बड़ी चिन्ता हुई, क्या उपाय किया जाये । गोरीशंकर जी के मन पर क्या बीतती होगी । भगवान् उन को दुःख सहने का बल दे और परलोकगत आत्मा को शान्ति दे, यही प्रार्थना है । खाने की चीज़ों, सारी रोज़मर्रा की चीज़ों के दाम इतना ज़्यादा बढ़ गये हैं कि ग़रीब और नौकरी-पेशा के लोगों के लिए जीना दुश्वार हो गया है। आटा अट्ठारह रुपया मन, दाल भी इसी भाव है । चावल बारह रुपया मन। चीनी पचीस-तीस रुपया मन, गुड़ भी बीस रुपया मन । किरासिन तेल मिलना मुश्किल हो गया है । नमक भी बहुत महँगा है । धोती भी सात रुपये से कम नहीं मिलती, घी भी बहुत महँगा है । इतने ऊँचे भाव होने पर भी चीजें मिलने में कठिनाई । कलकत्ता में तथा और जगह भी आदमियों के लिए गुज़र करना मुश्किल हो गया और लोग बहुत दुःखी हैं । घर-बार की चीज़ें नीलाम हो रही हैं । सुना है स्त्रियों की इज़्ज़त तक ख़तरे में हैं । ऐसी भयंकर हालत है जिसका कोई न तो चारा दिखाई देता है और न अन्य लोगो के मन में ब्रिटिश-विरोधी भाव भयानक रूप से बढ़ रहे हैं । आर्थिक स्थिति बेहद ख़राब है और होती जा रही है । सरकार पागल की तरह दमन-नीति चला रही है । ऐसी ही स्थिति में से क्रान्ति निकला करती हैं, पर अब भी हिन्दुस्तान में भयानक क्रान्ति होने में सन्देह ही मालूम होती है, जिस के आने से एक ऐसे परिवर्तन की आशा की जा सके कि सदा के लिए ग़रीबों का दुःख दूर हो जाये । यह भीषण असमानता, इतनी ग़रीबी और इतना धन । क्रान्ति होगी और होनी ज़रूरी है ।

२८, २९, ३० नवम्बर : चार -पाँच दिन से शाम को पाँच बजे आठ खाते के राजबन्दियों के साथ घूमने जाने लगे हैं; वहाँ एक तालाब है । ख़ास मतलब

तो यह है कि बहुत-से लोगों से मिलना हो जाता है । बात हो जाती है जिस से थोड़ा मन हलका रहता है । पौने सात बजे लॉकअप बन्द हो जाता है, थोड़ी देर जप आदि करते हैं, साढ़े नौ बजे क़रीब सो जाते है । यहाँ जो कार्यक्रम है वह नियमित और समय पर होता है । इस प्रकार जेल का यह जीवन कट रहा है । पता नहीं कितने दिन इस तरह रहना है । जो हो देश स्वाधीन होकर छूटें तब ही सच्चा छूटना हुआ, नहीं तो एक प्रकार इस छोटी जेल से बाहर बड़ी जेल में जाना है । आज जो लोग बाहर हैं वे क्या सचमुच स्वाधीन हैं ? उनको न तो बोलने की आज़ादी है, न लिखने की और भी न मालूम कितनी तरह की बन्दिशों का जीवन बिताना पड़ता है, फिर नाना तरह की आफ़तों का सामना करना पड़ता है । चारों ओर कितनी ग़रीबी, कितनी दीनता, कितनी बेबसी, कितना अज्ञान और बीमारी फैली हुई है । यह क्या मनुष्य को कलपा नहीं देती, पर क्या किया जाये, आज तो कोई भला काम करना सरकार की निगाह में गुनाह बन गया है। देखें आगे क्या होता है, यह हालत बराबर तो रह नहीं सकती।

१, २, ३ दिसम्बर : बंगाल कांग्रेस पार्टी के नेता श्री किरणशंकर राय एक हफ़्ता पहले आये थे, आज छूटकर चले गये, कैसी विचित्र लीला है । पता नहीं कैसे ओर क्यों छोड़ दिये गये पर प्रमुख आदमी का छूटना एक अजीब-सी बात है । बंगाल की पुलिस और बंगाल के नेताओं की कार्रवाई दोनों ही समझ के बाहर की बात है । यहाँ पर भयानक दमन होता है और इस प्रकार यहाँ के नेता बचते भी रहते हैं । जो लोग सचाई के साथ काम करना चाहें उनके लिए बंगाल में कठिनना है या यों कहिए कि यहाँ सचाई से काम करने की नीति या पद्धति नहीं है । जो हो इस बार के आन्दोलन में नैतिकता की बहुत ही कमी है । पूज्य गांधीजी की बात से अपनी समझ में यह आन्दोलन बिलकुल नहीं चलाया जा रहा है । वे तो जेल में बन्द हैं, वे बाहर होते तो इस तरह के छिपकर तथा हिंसक-भावना से जो काम हो रहा है उस का ज़रूर विरोध करते, पर सरकार आज पागल हो गयी है, वह दमन पर विश्वास करती है । सहयोग, सचाई मनुष्य के अधिकारों, व्यक्ति की स्वाधीनता को कुचल रही है, क्या करें कुछ भी उपाय नहीं। आन्दोलन-नीति से भी तकलीफ़ होती है । यदि आन्दोलन ठीक दिशा में चलता रहता, लोग पूज्य बापूजी की नीति से सत्य, अहिंसा के ढंग से आन्दोलन चलाते रहते तो सरकार की दमन-नीति की परवाह नहीं थी । पर आज दुःख यह है कि सरकार और देश के लोग दोनों ही पागल हो गये हैं तो भी ज़िम्मेवारी सरकार पर है । उसने बापूजी जैसे शान्त, शिष्ट और लोकहित महामानव को इस प्रकार जेल में बन्द कर रखा है और बड़ी निर्लज्जता के साथ कहती है, उनका किसी से मिलने नहीं दिया जा सकता ।

४, ५, ६, दिसम्बर : आजकल तो डायरी लिखना महज़ रस्म अदा करने

जैसा है । कई बार इच्छा होती है कि लिखना बन्द कर दें, पर यह सोचते हैं कि बहुत वर्षों से लिख रहे हैं, एक सिलसिला चल रहा है । कई बार कई तरह के विचार मन में पैदा होते हैं उन को लिपिबद्ध करने का यह आसान तरीक़ा है तथा कभी-कभी इसके द्वारा आत्म-निरीक्षण का भी अच्छा मौका मिलता है । यदि एक बार यह लिखना बंद हो जायेगा तो फिर शुरू होना तथा जिस नियमित रूप से क़रीब चौदह वर्ष यह लिखी गयी है उस तरह नहीं लिखी जायेगी इसलिए यही निश्चय किया कि भले ही आजकल लिखने लायक़ कोई ख़ास बात न हो तो भी यह सिलसिला जारी रखना चाहिए । यों तो आजकल भी कुछ न कुछ विचार चलते ही हैं और इन पन्नों में आ जाते हैं । शनिवार को मुलाक़ात आयी थी । कई तरह की घर की, व्यापार की बातें हुईं । मुलाकात एक ऐसी चीज़ है उस की उड़ीक बनी रहती है और जब मुलाक़ात होती है वह पन्द्रह दिन पर एक घण्टे के लिए होती है । सी. आई डी. का अफ़सर उपस्थित रहता है इसलिए कोई सार्वजनिक विचार की बात हो ही नहीं सकती । इस प्रकार एक प्रकार का घोटाला-सा हो जाता है, बहुत बातें बाक़ी रह जाती हैं । शेष मुलाक़ात ख़त्म होती है तो एक प्रकार मन दुःखित-सा हो उठता है । मुलाक़ात करने और न करने दोनों में ही सुख नहीं मालूम होता । वास्तव में जेल में एक अजीब तरह की मानसिक स्थिति हो जाती है । जो हो इसी हालत में मन को खुश रख कर चलना पड़ता है। पूज्य महात्मा जी जेल में हैं उतने दिन बाहर रह कर भी क्या सुख है । पूज्य महात्मा जी जब तक जेल में हैं हिन्दुस्तान सारा ही जेल में है । अँगरेज़ सरकार ऐसा नहीं समझती या समझना नहीं चाहती ।

८, ९, १० दिसम्बर : आन्दोलन की जो गति है, तथा नीति है, यह देखते हुए आन्दोलन प्रायः खत्म सा हो गया है । बीच-बीच में कहीं पर ज़रा जोर से आन्दोलन चलने का समाचार आता है पर जिस तरह लुक-छिप कर आन्दोलन चलाया जा रहा है उसमें न तो आन्दोलन बढ़ सकता है और न सफल ही हो सकता है । पता नहीं इस बार क्या बात है सारे ही लोग नैतिकता की परवा नहीं कर रहे हैं । अच्छे-अच्छे और ख़ास आदमी हिंसा को प्रोत्साहन दे रहे हैं, लुका-छिपी की नीति बरत रहे हैं । हो सकता है कि उनकी नीति ठीक हो पर अपने को यह तरीक़ा उचित नहीं जान पड़ता और अपनी समझ में पूज्य बापू जी भी इस तरीक़े को पसन्द नहीं करेंगे । पर वे तो आज इस तरह बन्द हैं कि कुछ कह भी नहीं सकते । जो कोई भाई बाहर से गिरफ़्तार हो कर आते हैं और वे बातें बताते हैं तो सुन कर अपने को तो तकलीफ़ होती है । इस तरह हम इतनी बड़ी सरकार को खत्म नहीं कर सकते । जो हो अपने तो आज कुछ भी कर सकें, ऐसी हालत में नहीं हैं ।

११, १२, १३ दिसम्बर : बारह तारीख़ की रात सवा तीन बजे क़रीब फिर

ख़तरे की घण्टी बजी । फिर बम गिरने की आवाजें आयीं । पचास मिनट बाद ख़तरा टल गया । इस की सूचना दी गयी पर नींद कैसे आ सकती थी । सुबह सिपाहियों से इधर-उधर की ख़बरें मिलीं कि बम पड़े हैं । शाम को भाई भागीरथ जी की मुलाक़ात आयी थी उससे सारी बातों का पता लगा कि कई जगह बम पड़े हैं । लोगों में घबराहट भी है, बाज़ार भी मन्दे हैं फिर भी यह घबराहट वैसी नहीं है । जैसी गत वर्ष जब जापान ने लड़ाई की घोषणा की थी और बर्मा पर धावा बोला था । अजीब बात है, कलकत्ता में बम पड़े हैं तब लोग सोच-विचार में हैं कि क्या करना चहिए और रंगून में बम पड़ रहे थे तब बेतहाशा भाग रहे थे । जो हो आज का भी दिन बीता । सवा एक बजे क़रीब फिर ख़तरे की घण्टी बजी और साथ ही बम गिरने की आवाज़ें आने लगीं । आज तो आवाज़ें ज़्यादा ज़ोर की थीं और भय पैदा कर रही थीं । आज तीन दिन से लगातार बम पड़ रहे हैं, लोग मर रहे है । इन लोगों (अँगरेज़) ने भी बम गिरना स्वीकार किया है तथा हलका नुक़सान बताया है साथ ही वायसराय का बधाई का तार और लोकल मिनिस्टरों के वक्तव्य भी निकले हैं जिस में शहर के लोगों की हिम्मत की सराहना की गयी है तथा यह कहा गया है कि हमारी ताक़त बहुत अच्छी है और हमारे लोग उनका सामना अच्छी तरह कर सकते हैं । यह सब तो कहा गया है, पर दुश्मन का एक भी जहाज़ गिरा नहीं । तीन दिन लगातार हमला होते हो गया पर उस की ताक़त का कुछ भी बिगाड़ नहीं हो सका । साथ ही शहर के लोगों के लिए कोई हिम्मत की सच्ची बात नहीं की गयी । लोगों में घबराहट बढ़ रही है पता नहीं आगे क्या होगा, पर लक्षण अच्छे नहीं दिख रहे। देश की बुरी हालत है । बिना मतलब, बिना क़सूर अँगरेज़ों की वजह से हमारी गुलामी के कारण आज हमारे देश पर विपत्ति का पहाड़ आकर गिरने लगा है। गांधीजी तथा दूसरे प्रमुख लोग नज़रबन्द हैं । कैसी विडम्बना है कि एक देश पर आक्रमण हो रहा है और उसी देश के ख़ास लोगों को बन्द रखा जाये ।

१५, १६, १७ दिसम्बर : सेवा-ग्राम के भंसाली भाई क़रीब चालीस दिन से उपवास कर रहे हैं । वे तो सच्चे और पक्के हठयोगी हैं, अपनी बात से डिगने वाले नहीं । उनकी माँग भी उचित, सही और साधारण है । सी. पी. प्रान्त के गाँवों में पुलिस की ओर से भयानक अत्याचार हुआ है, ख़ासकर स्त्रियों को बेजा तरह से बेइज़्ज़त किया गया है । भंसाली भाई उसकी निष्पक्ष जाँच चाहते हैं। सरकार जाँच करने के लिए तैयार नहीं है । पहले तो उन्होंने लिखा-पढ़ी की फिर बड़े अफ़सरों से मिले । सब तरह से निराश होकर उन्होंने आमरण उपवास शुरू किया। इस समय सरकार पागल बनी हुई है, वह किसी बात पर कितनी ही न्यायपूर्ण क्यों न हो विचार और बात करने पर राज़ी नहीं । यदि भंसाली भाई का बलिदान हो गया, सरकार अपनी बात पर अड़ी रही तो यह मामला एक अजीब रूप धारण

कर सकता है, इसको लेकर हवा में एक भयानक गरमी पैदा हो सकती है। सरकार को बुद्धि होगी तो वह भंसाली भाई का बलिदान नहीं होने देगी।

१८, १९, २० दिसम्बर : मुलाक़ात आने की तारीख़ बीत गयी पर मुलाक़ात नहीं हुई, जेल वालों से बात हुई तो वे कहते हैं कि हमें तथा सी. आई. डी. वालों को फ़ुरसत नहीं है। फ़ुरसत होने पर मुलाकात देंगे। इच्छा होती है मुलाकात लेना ही बन्द कर दें पर इस से घर के लोगों को तकलीफ़ तथा अपने साथ भाई बसन्तलालजी और भाई भागीरथजी संकोच और झंझट में पड़ जायेंगे। वे मुलाक़ात न लें तो अपने को तकलीफ़ हो। ऐसी हालत में सब बातें सोचकर यही तय किया कि जेल वाले या पुलिस वाले जो करें, जिस तरह रखें उसको जहाँ तक हो बरदाश्त करके चलना चाहिए। नियमों का पालन तो जेल-वालों, पुलिस-वालों की इच्छा पर होता है। यदि कोई बन्दी ज़्यादा सुविधा चाहे तो वे नियम दिखाये जाते हैं। हफ़्ते में चार पत्र बाहर दिये जा सकते हैं पर वे पहुँचते कहाँ हैं। पहुँचते हैं, वे भी कलकत्ता में ही पन्द्रह-बीस दिन बाद। ऐसी हालत में पत्र लिखना बेकार सा हो जाता है और पत्र लिखने को जी नहीं चाहता। जो हो जब जेल में हैं तो सब ही सहना पड़ेगा।

२१, २२ दिसम्बर : रात सवा दस बजे ख़तरे की घण्टी बजी, बम गिरने जैसी आवाजें आयीं। सुबह सिपाहियों से मालूम हुआ कि खिदिरपुर, बजबज में बम गिरे है तथा और भी कई जगह।

२३ दिसम्बर : रात में जो बम पड़े थे उसकी वजह से आज सिपाहियों तथा अन्य लोगों में काफ़ी घबराहट थी। तीन दिन से लगातार बम पड़ रहे हैं। लोगों के घरों से टेलीफ़ोन आ रहे है कि वे बाहर जाना चाहते है क्या करें, यह उन के सामने सवाल है। किसी का कोई भाई, लड़का, पिता, पति जेल में है वे उन को छोड़कर जावें यह भी मुश्किल और यहाँ रहें यह भी। इस प्रकार जो लोग बाहर हैं तथा यहाँ हैं सभी चिन्तित हैं। कल जिन लोगो की मुलाक़ातें आयीं उन से पता लगा कि कई जगह बम पड़े हैं। इस तरह नागरिकों पर बम गिराने का क्या मतलब है, यह समझ में नही आता। इच्छा कर के इस तरह बम गिराये जा रहे हैं या निशाना चूक हो जाने की वजह से यह होता है ? जो हो लोगों में काफ़ी घबराहट हो गयी है और लोग बेतहाशा भागने लगे हैं। सुना है कि रेल न मिलने पर लोग पैदल ही जाने लगे हैं। इसी तरह दो-चार बार और बम पड़ेंगे तो कलकत्ता प्रायः ख़ाली हो जायेगा और यहाँ की सारी व्यवस्था में गोलमाल पैदा हो जायेगी। लोग इस सरकार का न तो विश्वास करते हैं और न इसके साथ सहानुभूति रखते हैं। यह आन्दोलन शुरू हुआ और सरकार ने जिस तरह दमन किया उससे तो देश का प्रत्येक आदमी सरकार का विरोधी हो गया है। यह एक दूसरी बात है कि ज़्यादा लोग सरकार के नाश के लिए कुछ कर नहीं

रहे हैं पर वे हृदय से इस सरकार का विनाश चाहते हैं। ऐसी हालत में इतने विरोध में केवल अँगरेज़ फ़ौज की ताक़त के आधार पर दुश्मन का सामना करना मुश्किल है। पूज्य गांधीजी तथा कांग्रेस का रुख़ जापान तथा जर्मनी आदि के विरूद्ध था। कांग्रेस तो अँगरेज़ों को युद्ध में मदद और सच्ची मदद देना चाहती थी। यदि कांग्रेस के साथ अंग्रेज़ समझौता कर लेते तो शायद जापान हौसला ही नहीं करता कि हिन्दुस्तान पर आक्रमण करे। यदि करता तो देश की सच्ची ताक़त का सामना करना पड़ता, लोग भागने के बदले या सरकार के विरोध के बदले उसके साथ होते, मददगार होते। जो हो शेष मे हमारे देश का तो भला ही होने वाला है। बीच की तकलीफ होगी वह होगी, पर ऐसे नाजुक मौक़े पर गांधीजी जैसे महापुरुष को जेल में रखना कितनी बदक़िस्मती की बात है। गांधीजी मानव-जाति के शुभचिन्तक है। ऐसे आदमी को बिना विचार किये जेल में बन्द कर देना क्या कम अपराध है। हमारे देश के लिए भी यह मौक़ा, जो आज युद्ध की वजह से आया है, निर्णयात्मक मौक़ा है। इस बार सारी दुनिया के भाग्य का फ़ैसला होने वाला है। ऐसे नाजुक वक़्त पर गांधीजी हमारी रहनुमाई नही कर सकते, यह हमे बरदाश्त नही हो रहा, तो भी उनकी प्रेरणा हमारा रास्ता साफ़ करेगी। अपने घर मे अपने को छोड़कर कोई ऐसा आदमी नहीं है जो स्त्री, बच्चो की देख-भाल कर सके, उनको बाहर भेजना हो तो इन्तज़ाम कर सके। पन्ना है वह निहायत अच्छी लड़की है और बेचारी अपनी ताकत के मुताबिक घर के लोगों की पूरी सँभाल रखती है। तीन दिन से नींद बहुत कम हो रही है, एक तो बमो के या इन की तोपो के धड़ाके होते रहते है, दूसरे मन भी उचटा हुआ सा हो जाता है। दिन मे कमज़ोरी भी मालूम होती है। जेल मे आदमी का किसी चीज़ पर वश नही चलता, न तो अपनी इच्छा से किसी से मिल सकता है, न कोई दवा माँग सकता है, न इलाज करा सकता है। जेल मे जो नियम बने हुए है वे पहले तो बहुत ही अनुदार है फिर उनको काम मे लेने का तरीका और भी खराब है इसलिए ज़रा स्वाभिमान से रहने वाले आदमी के लिए जेल बड़ी मुसीबत है।

२४ दिसम्बर : अचानक भाई भागीरथजी चक्कर आने से गिर पड़े, ज़्यादा चोट आ गयी। बहुत चिन्ता हो गयी. सेवा-शुश्रूषा में रहे पर उनको दर्द बेहद था, खून भी बहुत गिर गया था। अपने मन में भी काफ़ी हलचल हो रही थी, जेलखाने में क्या करेंगे। डॉक्टर को आने मे देर हो गयी पर वह आ गया, यहाँ के डाक्टरों और दवा पर विश्वास नहीं होता, जो हो इन्हीं पर निर्भर रहना पड़ेगा। डॉक्टर ने विशेष चिन्ता की बात नहीं बतायी। शाम मुलाक़ात आयी। भगवानदेवी आदि तो बहुत तकलीफ़ में हैं, बेचारी क्या करे कहीं भी बाहर जाये तो अपने

यहाँ जेल में बन्द हैं, इसकी चिन्ता, अपने खाने-पीने का इन्तजाम ठीक नहीं होगा, साथ ही बाहर में नाना तरह की बातें सुनाई देंगी, इससे चिन्ता और भी ज़्यादा होगी। यहाँ रहे तो छोटे-छोटे बच्चे हैं यहाँ रोज़ बम गिर रहे हैं। ऐसी हालत है कि क्या करें। शेष में यही तय किया कि बच्चों को और पन्ना को बाहर भेज दिया जाये, भगवानदेवी अभी यहाँ रहे फिर देखा जायेगा। बाज़ारों में काफ़ी हलचल हो गयी है। बाजार बहुत मन्दे हो गये हैं, यह भी एक समस्या हो गयी है। स्थिति के, और ग़रीब आदमी बेतहाशा भाग रहे हैं, रेल नहीं मिल रही है। ऐसे भी बहुत लोग होंगे जो बेचारे किसी भी तरह बाहर नहीं जा सकते और यहां बड़ी बेबसी और तकलीफ़ अनुभव करते हैं। ग़रीबी सबसे बड़ी तकलीफ़ है। भाई भागीरथजी को अस्पताल भेजना पड़ा, रात में अकेले कोठरी में रहना उचित नहीं था, जेल के नियमों के अनुसार पास कोई रह नहीं सकता था। अपने दिन में चरखा नहीं कात सके, इसलिए चरखा कातने बैठे, थोड़ी ही देर बाद हवाई हमले की घण्टी बज़ी। थोड़ी देर बाद बमों, तोपों के धड़ाकों की आवाजें आयी। अपने कोठरी में अकेले पड़े सुनते रहे और ईश्वर का नाम लेते रहे। ईश्वर का ही भरोसा सब कुछ है, वही सब करने वाला है। अपने मन को समझाते थे कि चिन्ता की कोई बात नहीं, मनुष्य की मृत्यु निश्चित है इसलिए यदि कुछ हो जाये तो इसमें चिन्ता का क्या कारण है और घबराने से होता भी क्या है ? ईश्वर अपने से जितना काम लेना चाहता है, जितने दिन अपनी ज़रूरत है, अपना भोग है उतने दिन वह अपने को ज़रूर रखेगा। यों अपने को अपने जीवन से सन्तोष मानना चाहिए। ईश्वर ने अपने को अच्छी प्रेरणा दी, अच्छे विचार दिये, अच्छा चरित्र दिया, उसकी जितनी इच्छा थी या है उतनी सेवा कराता है, करा लेगा। सवा नौ से सवा बारह बजे तक यह हालत ही रही इसके बाद दूसरी घण्टी बजी कि ख़तरा टल गया है पर इन तीन घण्टों में तो न मालूम क्या-क्या हो गया होगा। कितनों की जान गयी होगी, कितनों की क्या मालूम क्या हालत हुई होगी। कैसी राक्षसी सभ्यता है जिसमें निरपराध लोग यों बिना मतलब के मारे जाते हैं। इन हवाई जहाजों की वजह से आज चारों ओर कितना हाहाकार मचा हुआ है। हवाई जहाज़ की इज़ाद करने वाले ने इसका यह भयंकर नतीजा तो नहीं सोचा होगा।

२५ दिसम्बर : भाई भागीरथजी की चोट ठीक हो रही है, आज उनकी मुलाक़ात आयी थी। रात में बम गिरे उससे नुक़सान ज़्यादा हुआ बताया। शहर में बेजा घबराहट है, लोग बेतहाशा भाग रहे हैं। कई बाज़ारों में चीज़ मिल रही है कई में नहीं। दिन तो आनन्द से बीत गया। रात आयी तो वही बम गिरने का अन्देशा होने लगा पर आज बम नहीं गिरे इसलिए वह शान्तिपूर्वक बीती। अपनी तरह और लोगों को भी शान्ति मिली होगी तथा अच्छा लगा होगा। जो हो अपने मन

में जापान के आने का विरोध है । अपने नहीं चाहते कि हिन्दुस्तान जापान की मदद से आज़ाद हो. अपने को यह भी भय है कि जापान जैसा साम्राज्यवादी देश किसी को स्वाधीन नहीं कर सकता । हिन्दुस्तान में परस्पर इतना मतभेद है, इतनी जातिया है, इतनी साम्प्रदायिकता है कि आज़ादी के लिए जिस एकता की ज़रूरत है वह यहाँ हो नहीं सकती । वैसा संगठन भी नही हो सकता जैसा होना आज़ादी हासिल करने के लिए ज़रूरी है । इसलिए दूसरे देश की सहायता की ज़रूरत नहीं है। हिन्दुस्तान की हालत जरूर ऐसी है कि यहाँ फ़िरकेबाज़ी बहुत है तो भी हमारी इच्छा के बिना हम पर अँगरेज हुकूमत नहीं कर सकते । सबसे बड़ी बात तो यह है कि संसार का लोकमत अब बदल रहा है, इसलिए हमें अपना आन्दोलन जारी रखना और लोकमत को अपने पक्ष में कर मौजूदा सरकार से स्वाधीनता प्राप्त करनी चाहिए । किसी दूसरे देश की मदद लेने जाने मे तो देश उसके हाथ में जाने का खतरा है ।

२६ दिसम्बर : कल बम नही गिरे इसलिए जरा शान्ति रही पर बाहर जो घबराहट है वह भी जेल के लोगो के मन पर असर करती है । सुना स्यालदह स्टेशन पर लोगो की इतनी ज़्यादा भीड़ हो गयी कि पुलिस बुलानी पड़ी । पुलिस इन्तज़ाम न कर सकी और लाठी चार्ज करना पड़ा । ऐसा लगता है कि कलकत्ता की हालत बहुत खराब है और शायद आगे और भी खराब होगी । जो हो उपाय नही, एक बात यह भी है कि यदि लोगो की तकलीफो के खयाल को एक बार छोड़ें तो ऐसा होना बुरा नही है । तकलीफ़े तो मनुष्य को बल देती है, साहस पैदा करती है । दुनिया मे इतनी हलचल हो रही है, आगे बहुत बड़े परिवर्तन की उम्मीद है। ऐसी हालत मे यह सब हुए बग़ैर कैसे रह सकता है । प्रसव होने के पहले भयंकर वेदना तो होती है इसलिए इसकी चिन्ता करना. दु:खी होना ठीक नहीं। दूसरे देशो के लोगों को जिन तकलीफ़ो का सामना करना पड़ रहा है उनको देखते तो यहाँ कुछ भी नही हो रहा । दुःख यही है कि वे लोग अपने देश की रक्षा, अपनी शान अपनी मान-मर्यादा की रक्षा के लिए तकलीफ़ उठाते है और ऐसी तकलीफ़ों को लेने मे खुशी होती है । हमें विदेशी-हुकूमत की वजह से तकलीफ़ होती है ।

२७ दिसम्बर : कलकत्ता में अव्यवस्था पैदा होने लगी है । अपने सुबह एक डेरी से दूध आता है । दो-दिन से वह देर से आने लगा है और उसने कह दिया है कि बम गिरने की वजह से हमारे कामों में गड़बड़ पैदा हो गयी है, हम समय पर नहीं पहुँचा सकेंगे । आजकल कोई किताब नहीं है । जेल में किताबें मिलने में इतनी देर होती है कि बीच में कई दिन यों ही रहना पड़ता है, कारण किताबें पास होने में बहुत देर लगती है । दूसरी बात यह है कि जेल के लोग परवा नहीं करते । यदि जेल अधिकारी बन्दियों के साथ सहानुभूति का काम थोड़ी तत्परता

से करें तो सुभीता हो सकता है पर वे करते नहीं और उन पर कोई असर नहीं है कि जिससे उनको बाध्य किया जा सके। अभी जेल में ऐसा कोई ख़ास आदमी नहीं है जिसका असर बंगाल सरकार या जेल के अधिकारियों पर पड़े। रात नौ बजे, साढ़े तीन बजे हवाई हमले के खतरे की घण्टी बजी और सवा चार बजे ख़तरा दूर होने की सूचना दी गयी। विशेष कुछ हुआ, ऐसा नहीं लगा। जो हो अब ये बखेड़े बराबर चलने वाले दीखते हैं। लोगों को इससे तकलीफ़ तो बहुत हो रही है पर आज की व्यवस्था में यह हुए बिना रह नहीं सकता। दुनिया की धारा बदले, व्यवस्था बदले, धन-सम्पत्ति के बँटवारे की व्यवस्था बदले तब ही कुछ हो सकता है। नहीं तो यह युद्ध, यह ज़बरदस्ती, चढ़ा-उतरी, परस्पर का संघर्ष चलता ही रहा। ताक़तवर लोग, बुद्धिमान लोग, साधन-सम्पन्न लोग साधारण लोगों को चूसते रहेंगे, अपने स्वार्थ, सुख के लिए उनका शोषण करते ही रहेंगे। पर ऐसा मानना चाहिए कि यह वर्तमान व्यवस्था बराबर नहीं चल सकती, इस को बदलना ही होगा।

२८ दिसम्बर : कल रात में जो बम पड़े वे कम पड़े, पर अब यह बराबर ज़्यादा-कम पड़ते ही रहेंगे और यहाँ के रहने वाले लोग शान्ति की नींद नहीं सो सकते।

२९ दिसम्बर : दो दिन से बम नहीं गिरे इसलिए शान्ति रही तो भी आशंका बनी रहती है कि रात कैसे गुजरेगी।

३० दिसम्बर : वही सवा छह बजे लॉकअप खुलने पर बाहर निकलना और सब काम जैसे करते हैं वैसे करना। यहाँ जेल में ख़ास बात तो कभी-कभी ही होती है। बीच-बीच में मान-अपमान, जरूरत की चीज़ों के अभाव, उन को प्राप्त करने के साधन की कमी का अनुभव होता है कागज और कापी के कारण लिखने-पढ़ने की तकलीफ़ होती है इसलिए ज़्यादा लिखना भी मुश्किल है।

३१ दिसम्बर : लॉकअप खुला तब बाहर आये। शौच आदि से निवृत्त हो कर सब काम-काज, गीता-रामायण का पाठ करके स्नान-भोजन किया। चरखा काता। शाम को थोड़ी देर दूसरे वार्ड में घूम कर आये। भोजन करके सात बजे कोठरी में बन्द होना पड़ा। दस बजे सोये। इस प्रकार यह इस वर्ष के शेष का दिन जेल में खत्म हुआ।

६ जनवरी, १९४३ : आन्दोलन का चलते हुए पाँच महीने हो गये। अब उसकी गति बहुत मन्द हो गई है। गुजरात, पूना आदि की तरफ यह थोड़ा बहुत चल रहा है। बाकी प्रान्तों में तो यह प्रायः बन्द सा है। मेरी निगाह में आन्दोलन जिस ढंग से चला, वह गलत तो था ही, साथ ही ऐसे आन्दोलन ज्यादा दिन चल भी नहीं सकते और न ऐसे आन्दोलनों के द्वारा, जिस सरकार के पास हिंसा के इतने बड़े साधन हों, उसे भगाया ही जा सकता है। क्या किया जाय ? गांधी

जी जिस तरह का आन्दोलन चाहते हैं, वैसे आन्दोलन की ताकत लोगों के पास नहीं है। सरकारी कार्रवाइयों की वजह से, देश की बिगड़ी हुई हालत के कारण जो असन्तोष है, वह किसी न किसी रूप में प्रकट होता ही है। सरकार यह सब जानती है, परन्तु वह इसका सच्चा इलाज करना नहीं चाहती। क्योंकि जनता के हाथ सत्ता देना कोई सरकार अपनी इच्छा से कर नहीं सकती। इसके लिए तो तकलीफ सहन करते-करते जनना में जब पूरी ताकत पैदा हो जाती है, तब उसके हाथ में अधिकार स्वयं आ जाते हैं। इसलिए बीच की दशाओं से हमें गुजरना ही होगा। कई बार निराशा और दुःख होता है, कि देश के स्वतन्त्र करने वालों के बीच इतना मतभेद, इतनी नासमझी, इतनी क्षुद्रता और इतनी दलबन्दी है, ऐसी हालत में सफलता कैसे होगी ? परन्तु चाहे जैसी स्थिति हो, इसीमें से सच्चाई पैदा करनी होगी। स्वार्थ-त्यागी बुद्धिमान लोगों को पैदा करना होगा। आशा, हिम्मत और उत्साह के साथ काम करना होगा। यह कैसे सम्भव है, कि इतना बड़ा देश, जिसकी संस्कृति और गुमान हर आदमी करता है, इस तरह गुलाम बना रहे।

८ जनवरी, ४३ : ६ बजे जेल की कोठरी खुलती है। आज जरा चक्कर सा आ गया। तबीयत ढीली है, पर काम तो चल ही रहा है। चिन्ता हम क्यों करें ? प्रभु की इच्छा ही अपनी इच्छा माननी चाहिए। सब काम नियमित किये। आज एक विशेष मुलाकान मिली। जेल में विशेष मुलाकात मिलना नियामत माना जाता है। पन्ना और प्रह्लाद बम्बई जा रहे हैं। कारण पन्ना की तबीयत खराब है, उसका वहाँ ऑपरेशन होगा। ऑपरेशन भी पेट का। मन में थोड़ी चिन्ता स्वाभाविक है। इतने बड़े ऑपरेशन के समय न तो मैं पन्ना के पास रह सकता हूँ और न कुछ मदद ही कर सकता हूँ। लेकिन सन्तोष करना छोड़, दूसरा रास्ता ही क्या है ? इसके अलावा यदि देश-सेवा करनी हो, तो इन मोहों को त्यागना ही होगा। न मालूम, आज कितने लोगों के क्या-क्या अभाव और क्या-क्या तकलीफें हैं। यदि मनुष्य अपने लाभ की और अपने सुख की सीमा से बाहर न निकल सके, तो उसकी मनुष्यता कैसी ?

व्यक्ति को अपनी दृष्टि को जरा बड़ा करके संसार देखना चाहिए।

९ जनवरी, : ६ बजे जेल की कोठरी खुली। नित्य के नियमानुसार सब काम किये। वही राग और वही डफली ! किसी तरह का परिवर्तन नहीं। ऐसा जीवन ! इस तरह पड़े-पड़े उम्र के दिन कम करने में बुरा लगता है। यदि आन्दोलन अच्छी तरह चलता, तो मानसिक सन्तोष रहता; पर आन्दोलन प्रायः सभी जगह ढीला पड़ गया है। कहीं-कहीं चल भी रहा है, तो वह ठीक नहीं चल रहा है। गांधीजी की इच्छा और उनके आदर्शों के अनुसार नहीं चल रहा है। अपने आप चल रहा है। सरकार की कार्रवाइयों के प्रति लोगों के दिलों में रोष है और वे अपनी इच्छानुसार उस रोष को प्रकट कर रहे हैं। सब लोग गुप्त रूप से काम

करने लगे है । इससे सरकार तंग हो सकती है, पर झुकाई नहीं जा सकती । जो हो, अपना क्या बस है । सरकार जिस तरह अकड़ रही है तथा जैसी इच्छा हो, वैसे ही तरीके बरत रही है, वे बरदास्त नही किये जा सकने । पर उसके अधिकार के लिए हमें ज्यादा संगठित होना चाहिए और अधिक उन्नत रूप से काम करना चाहिए ।

आज की परिस्थिति की जो प्रतिक्रिया अपने मन में होती है, उसको इन पृष्टों मे अंकित भर करके मन को हल्का करते है । होगा तो वही जो होने वाला है। मन में नाना तरह के विचार चला करने हैं । उन सबको लिखा नहीं जा सकता। हमारी समस्या काफी जटिल है । तो भी यह उम्मीद करनी चाहिए, कि वे सुलझेंगी और जल्दी सुलझेंगी । जेल में सोचने का ज्यादा मौका मिलता है । दिन का समय ता किसी तरह कट जाता है, पर रात को ग्यारह घंटे बन्द रहने पर, कितनी देर सोयें; और नींद भी तो नहीं आती । इसलिए बाकी समय में विचार तो चलते ही है । यह ससार क्या है ? मनुष्य क्या है ? उसकी ताकत कितनी छोटी है ? वह कर ही क्या सकता है ? फिर यह अभिमान, इतनी छीना-झपटी, यह विकराल युद्ध, ये निरपराध हत्याएं– न मालूम क्या क्या अन्याय, अत्याचार आदमी क्यों करना है ? यह एक भ्रमजाल है, जो सहज में समझ में नही आता–

"तुम्हारी कृपा जाने को है, को है –"

१४ जनवरी : ६ बजे जेल की कोठरी खुली । भोजन घर से आता है, इससे घर के लोगों को तकलीफ भी होती है और खर्च भी अधिक होता है । तबीयत खराब है, इसलिए लाचारी बस भोजन घर से मगाना पड़ रहा है । आजकल चीजें जिस कदर महँगी हो गई है, मिलने मे दिक्कतें हैं, इससे साधारण लोगों को तथा गरीबों को जो तकलीफ होती है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। मोटा से मोटा चावल पच्चीस-तीस रुपयए मन से कम में नहीं मिलता है । वह भी मिलावट का और खराब । चीनी, घी, गुड़, तेल, नमक, कोयला आदि जो नित्य व्यवहार की चीजें हैं, जिनकी हर आदमी को रोज जरूरत होती है, वे सब की सब बेजा महगी है । और मिलने में जो दिक्कतें हैं, वे अलग । जेल में जो आटा आया है, वह इतना खराब है, कि उसे खाकर आदमी बीमार पड़े बिना नहीं रह सकता। पर यहाँ और खायें क्या ? यह युद्ध यों ही चलता रहा और कांग्रेस के साथ कोई समझौता नहीं हुआ, तो यह हालत और भी बदतर होती जायेगी, क्योंकि जब तक जनता की विश्वासपात्र सरकार न होगी, तब तक उसे सच्चा सहयोग नही मिल सकता । कोई भी सरकार जनता के सच्चे सहयोग के बिना अपना काम सुचारु रूप से नहीं चला सकती । सरकार को आज जो सहयोग मिल रहा है, वह भाड़े का सहयोग है । दमन, भय और लोभ से आज का काम चल रहा है । इससे चारों ओर कष्ट और तकलीफें बढ़ रही हैं । कहा नहीं जा सकता,

कब तक ऐसा चलना रहेगा ।

१५ जनवरी : आज सुबह जेल के सिपाहियो ने काम करना बन्द कर दिया। इसलिए शाम को जिन लोगो को बन्द किया गया था, वे बन्द के बन्द ही रहे। सिपाहियो ने कुछ दिनो से वेतन बढ़ाने की माँग कर रखी थी । सरकार वेतन जितना बढ़ाना चाहती थी, उससे सिपाही सन्तुष्ट न थे । इसीलिए वे आज काम छोड़ने को मजबूर हुये । जो गाये सुबह दुही जाती थी, दाना पानी दिया जाता था, उनको दुहा नही गया । वे रॉभ रही थी । उनकी आवाजे हर आदमी को विचलित करने वाली थी । सब लोग अपने वार्डो मे कोठरियो मे बन्द पड़े थे । न कोई उनके पास आता था, न कोई पूछता था । यह भी पता नही था, कि यह हालत कितनी देर तक रहेगी । रात के ग्यारह घंटे किसी तरह काटे थे पर अब सुबह भी बन्द रहना बड़ा बुरा लग रहा था । आठ बजे करीब पुलिस और फौजी आदमी आये और उन्होने भार लिया । सभी वार्डो मे पुलिस का पहरा हो गया और सार्जन्टो का गारत लगने लगी । लेकिन 'लौक-अप' खोलने का कोई नाम नही होता था । बहुत ही बुरा लग रहा था और गुस्सा भी आ रहा था । यह भी मालूम हो रहा था, कि सरकार तथा इसकी हुकूमत कितने कच्चे धागे पर चल रही है । सरकार के प्रति लोगो मे ज्यादा से ज्यादा असन्तोष तो है ही साथ ही जो रोब हुआ करता था, वह खत्म हो चुका है । ऐसा भी लगता है कि मौजूदा सरकार मे बुद्धि का काफी अभाव है । पता नही, यह ताश का घर कब गिर पड़े । जो हो, साढ़े ग्यारह बजे के बाद 'लौक-अप' खुला । बाहर निकले । सत्रह घंटे बन्द रहना पड़ा । सुबह से ये ६ घंटे का समय पहाड़ जैसा भारी रहा । स्नान आदि करके और भोजन आदि करके उठा तो देखा डेढ़ बज चुका है । बहुत से लोगो को तो आज पूरा भोजन भी नही मिला । अस्पताल मे रोगियो को दवा नही मिली । कारण, यहाँ पर सब काम कैदियो से लिये जाते है । सिपाही केवल पहरा भर देते है । आफिस के लोग आफिस मे लिखा पढ़ी करते है । कैदी सब बन्द पड़े थे, इसलिये कुछ भी काम नही हो सका । मै पाँचवी बार जेल आया हूँ, इस बार का यह एक नया अनुभव है ।

१९ जनवरी : सुबह का समय तो मजे मे गुजर जाता है । दोपहर चरखा कातने और पढ़ने मे, शाम थोड़ी देर घूमने मे निकल जाता है । रात को तो बन्द कोठरी का मजा मिलता है, दो-तीन दिन से काकासाहब की लिखी हुई गुजराती की एक पोथी 'ओतराती दिवालो' पढ़ रहा हूँ । काकासाहब जेल मे थे, तब वहाँ पक्षी, कीड़े, मकोड़े आदि साथियों के ऊपर उन्होने यह किताब लिखी है । किताब बहुत शिक्षाप्रद और सरस है । उन्होने इस पोथी मे छोटी-छोटी बातो को लेकर सुन्दर चित्र खीचे है । इन चित्रो मे तरह-तरह के रंग भरे है । काकासाहब कितने अच्छे कलाकार है, यह इस किताब के पढ़ने से पता चलता है । जेल मे समय

बिताने और ज्ञान-प्राप्त करने का मुख्य साधन पुस्तकें हैं। पर ये बराबर नहीं मिलती; इसलिए कई बार जब किताबें नहीं मिलती है, तो दूसरे कामों में जैसे; ताश आदि खेलों में समय लगाना पड़ता है। जेल का जीवन एक अजीब जीवन है। बहुत दिन जेल में रहने के बाद तो आदमी के स्वभाव मे नाना तरह के विचार और परिवर्तन स्वभावतः होते हैं। बंगाल तो मुद्दत से जेलखाना बना हुआ है। यहाँ पर ऐसे बहुत से नवयुवक मिलेंगे, जो जवानी मे जेल आये थे और बूढ़े हो चले है। बीच में कुछ महीनों के लिए बाहर आये थे; लेकिन सारा जीवन जेल मे ही बीता। मेरे साथ एक ऐसा नवयुवक है, जिसने मैट्रिक की परीक्षा जेल में, आई० ए० की जेल में और बी० ए० की जेल मे तथा एम० ए० भी जेल में दी है, अब डबल एम० ए० की तैयारी कर रहा है। ऐसे ही और भी लोग हैं, जिनकी उम्र पचास साल के करीब है, जिनमें सत्ताईस अठाईस वर्ष जेल में बीते है। शायद अनजान आदमी इस पर विश्वास भी न करे, पर इसमे एक अक्षर भी झूठ नही है। क्या हालत है हमारे देश की ! समाज के अच्छे से अच्छे, योग्य से योग्य, युवको का जीवन किस तरह बरबाद किया जा रहा है। जो लोग देश और समाज की उन्नति कर सकते थे, देश मे विद्या, बुद्धि और संस्कृति का विकास कर सकते थे, उनकी शक्ति का कितना बड़ा दुरुपयोग है यह ! पर पराधीन देश में इसके सिवाय और क्या हो सकता है ? जो लोग देश को स्वाधीन करना चाहते है, देश के दुःख, अज्ञान, दारिद्रय को मिटाने के लिए स्वाधीनता की सबसे ज्यादा जरूरत समझते है, उन्हें अपनी जिन्दगी का सबसे मूल्यवान हिस्सा यो गला गला कर नष्ट करना पड़ता है। पता नही, हमारी स्वाधीनता के यज्ञ की कब पूर्णाहुति होगी ? पर जब तक नहीं होती, तब तक तो इस तरह लाखों लोगो को अपने प्राण इस यज्ञ मे होम करने ही पड़ेगे।

२३ जनवरी : कई बार ऐसा लगता है, कि यहां जेल मे बैठे-बैठे हजारों आदमी कैसे समय खो रहे है ? सरकार की नीति में कोई परिवर्तन की आशा नही। देश की राजनीति शिथिल पड़ती जा रही है, तब भी क्या यह मानना चाहिए, कि यह अवस्था इसी तरह रहेगी ! आज संसार जिस पथ से गुजर रहा है, वह सामान्य-पथ नही है। क्रान्ति की लहरें सारे संसार मे दौड़ रही है। दुनिया का नवीन इतिहास बन रहा है। हमारा देश भी इस क्रान्तिकारी परिवर्तन मे अपना हिस्सा अदा कर रहा है। हमे खुशी मनानी चाहिए, कि हम इस इन्कलाबी जमाने में पैदा हुए और हम अपनी ताकत भर इसके साथ है। चाहे वह ताकत एक तिल बराबर ही क्यों न हो।

२६ जनवरी: आज 'स्वतंत्रता-दिवस' है, पर वह जेल में मनाना पड़ेगा। आज से ग्यारह वर्ष पहले सन १९३२ में भी यह दिवस जेल ही में मनाना पड़ा था। तेरह वर्ष से यह दिवस हम लोग मनाते आ रहे है। इस दिवस में हम स्वतंत्र

होने ही प्रतिज्ञा दोहराते हैं। इन तेरह वर्षों में, स्वतंत्रता के आन्दोलन में कितती घटनायें घटीं। हम स्वतंत्रता के मार्ग में कितने आगे बढ़े हैं, आदि पर विचार करते हैं। पता नहीं, यह कितने दिन चलेगा, पर अब तो हम उक्ता चुके हैं। हमारी धीरता की हद हो चुकी है। जो परिस्थितियाँ हमारे सामने हैं, वे हमें बाध्य कर रही हैं, कि हम विश्राम के बिना आगे बढ़ें। रास्ते की मुसीबतों की परवाह न करें। गांधीजी ने इस बार जो आन्दोलन शुरू किया है, उसमें 'करेंगे या मरेंगे' का नारा है। इसलिए जब तक हम मंजिल को तय न कर लें, तब तक आगे ही बढ़ना है। चाहे वह स्थान कितनी भी दूर हो और रास्ता कितना भी विकट हो, तो भी हमें वहाँ पहुँचना पड़ेगा। वहाँ पहुँचे बिना चैन भी कैसा ?

अपना भोजन बराबर घर से आ रहा है। वर्षा, धूप; किसी दिन भी भोजन आने में देर और बाधा नहीं पड़ी। अपने दूसरे मित्र का भोजन घर से आता है। पर आज उनके साथ अपना भी भोजन आया। कुछ शंका तो हुई, पर सोच-लिया कि कोई बात होगी। शाम को भी भोजन उन मित्र के भोजन के साथ आया। इससे कई तरह की दुष्कल्पनायें मन में आने लगीं। खासकर पन्ना का बड़ा ऑपरेशन बम्बई में हुआ था, उसके बारे में पता लगाने का क्या उपाय जेल में ? जेलखाने में न मालूम कितने आदमियों के घरेलू, आर्थिक और शारीरिक विपत्तियों तथा उन विपत्तियों की आशंकायों से, जिनके बारे में जानना और खबर पाना मुश्किल होता है, उद्विग्न होते रहते है। जेल में जो तकलीफें है, उनसे ये सब बातें ही ज्यादा तकलीफ देने वाली होती है तथा इन सबों के कारण ही बन्दी का मानस एक भयंकर तूफान से भरा रहता है।

७ फरवरी : छः बजे जेल की कोठरी खुलती है और अपना वही बंधा हुआ कार्य शुरू होता है; दस बजे के करीब जब हम सोते हैं तब तक यह चलता है। जीवन की धारा के साथ हम बदल रहे हैं, इस आशा और विश्वास से, कि जीवन अच्छे कार्यों मे, समाज के सुख-सृजन में, लगेगा। इसलिए भी हम जीते है और जीना चाहते हैं, कि जीना प्यारा लगता है। पता नहीं, मृत्यु क्या वस्तु है ? वह अज्ञात है। मनुष्य स्वभावतः अज्ञात की चिन्ता करता है, उससे डरता है। यह निश्चित है, कि एक दिन मृत्यु अवश्य आयेगी। उसे जब आना होगा, तब आयेगी। हमारे बुलाने से न वह आती है और हमारे न चाहने से रुकती भी नहीं। इसलिए जो जीवन प्रत्यक्ष है, उससे काम लेना उसे सुखी बनाना, दूसरों को सुख पहुँचाना, हम क्यों नहीं सीखते ? अज्ञात की कल्पना से क्या लाभ ? लोग कहते हैं, कि मृत्यु भयावनी है। पता नहीं, वह क्या है ? हो सकता है, कि वह सुखद भी हो, पर उसे क्या लेना-देना है। हमारे हाथ में जो हैं, कुदरत ने हमें जो सौंपा है, उनका अच्छा से अच्छा उपयोग करना हमारा काम है। यदि हमने जीवन का अच्छा उपयोग कर लिया, तो सब कुछ कर लिया।

१० फरवरी : आज सरस्वती पूजा का दिन है। जेल में भी पूजा की व्यवस्था की गई थी। जितने राजबन्दी हैं, सब एक जगह इकट्ठा हुए। सबने साथ भोजन किया तथा जेल के अपराधी कैदियों को भी राजबंन्दियों की ओर से मिठाई बाँटी गई। थोड़ा उत्साह रहा। जेल-जीवन में ज़रा सा भी काम जो रोज के जीवन में फर्क करने वाला हो, सुखद और उत्साहप्रद प्रतीत होता है। लेकिन हज़ारों साथियों के जेलों में पड़े रहने, तथा अकाल, महामारी एवं शोक की घटनाओं से घिरे हुये देश में कैसा बसन्तोत्सव और कैसी वाणी-वन्दना। क्रन्दन में वीणा के तारों का गुंजार कैसा ? आज लाखों मातायें और बहनें आँसू बहा रही हैं– किसी के पति, किसी के पुत्र, किसी के पिता और किसी के भाई जेलों में पड़े हैं, या गोलियों के शिकार हो गये हैं। ऐसी हालत में क्या उत्सव मनाया जा सकता है ? पर जेल की एकरसता तोड़ने के लिए यह एक बहाना है।

११ फरवरी : साढ़े छः बजे जेल की कोठरी खुली। अखबार देखते ही मालूम हुआ, कि पूज्य गांधीजी ने इक्कीस दिन का उपवास शुरू कर दिया है। मन में नाना तरह के विचार और शंकाएं होने लगीं--क्या होगा, हम क्या करें, क्या कर सकते है आदि। कुछ भी निश्चय करना मुश्किल था। तब भी मन में यह प्रार्थना होने लगी, कि ईश्वर गांधीजी को इस अग्नि-परीक्षा में उत्तीर्ण करें। गांधीजी ने उपवास शुरू करने के पहले ३१ दिसम्बर को वायसराय को एक पत्र लिखा था। इसका उत्तर उन्नीस जनवरी को मिला। इस प्रकार चार पत्र गांधीजी ने वायसराय को लिखे और वायसराय ने भी चार पत्र उत्तर में दिये। आज वे प्रकाशित हुए हैं। गांधीजी के पत्रों में दर्द था, वेदना थी और थी अपील। मुझे ये पत्र बहुत ही अच्छे लगे। राजनीतिक दृष्टि से, सत्याग्रही की दृष्टि से तथा एक महान पुरुष की कलम से जैसी उच्च-भावनापूर्ण दलीलें और सच्ची बातें निकलनी चाहिए थीं, वैसी ही थीं उन पत्रों में। वायसराय का शेष का पत्र बहुत ही खराब था। उसमें गुस्सा था, अभिमान था और भाषा की दृष्टि से भी एक दो शब्द तो निहायत बेजा थे। जो हो, उपवास शुरू हो गया। चिन्ता यह है, कि गांधीजी, चौहत्तर वर्ष की उम्र में इतना लम्बा उपवास बर्दास्त कर सकेंगे क्या ? ईश्वर उनकी रक्षा करें ! यदि हमारे दुर्भाग्य से गांधीजी चले गये, तो हिन्दुस्तान में अँधेरा हो जायेगा। सच्ची बात तो यह है, कि आज उसकी कल्पना में भी डर लगता है। पर मेरा दृढ़ विश्वास है, कि चाहे जैसी तकलीफ हो, गांधीजी अवश्य सफल होंगे।

रोजमर्रा के काम नियमपूर्वक किये, परन्तु किसी काम में जी नहीं लगा। गांधीजी के उपवास सम्बन्धी विचार मन में द्वन्द्व मचाते रहे। हम तो उपवास कर नहीं सकते, कर सकते होते, तो भी मन कहता है, कि गांधीजी के उपवास के साथ, साधारण आदमियों के उपवास को जोड़ने का यह समय नहीं।

१३ फरवरी : गांधीजी के उपवास को शुरू हुए आज चौथा दिन है। अभी

तक तो वह ठीक-ठाक चल रहा है । ईश्वर से प्रार्थना है, कि वह गांधीजी की रक्षा करें । परन्तु उनकी उमर और शारीरिक हालत का ख्याल करता हूँ, तब चिन्ता होती है । विधि के विधान को कौन जानता है ? व्यर्थ की कल्पनाओं की उलझन में पड़ने से क्या फायदा है ? उपवास का परिणाम अच्छा ही निकलेगा । सरकार इतनी बेवकूफी तो क्या करेगी, कि गांधीजी जैसे महान पुरुष का अन्त जेल मे होने देगी और वह भी अपने हठ के कारण ? इस उपवास के कारण देश मे काफी हलचल पैदा हो गई है । सभी तरह के लोग गाधीजी को छोड़ने के लिए अपने-अपने ढग से सरकार मे अनुरोध कर रहे है । पता नहीं, गाधीजी इसे पसन्द करते है, या नही । मेरी समझ से गाधीजी ने जेल से छुटने के लिए तो उपवास किया नही है ।

१५ फरवरी : गाधीजी के उपवास के समाचार अच्छे नही आ रहे है । उन्हे इधर नींद न आने की शिकायत शुरू हो गई है । सरकार हठ और बेवकूफी पर तुली मालूम पड़ती है । गाधीजी के पहले के उपवासो की जैसी स्थिति आज नही है । हम जेल मे है, इसलिए पूरी बाते नही जान पाते पर अखबारो म जो समाचार छप रहे है, उनमे सन्तोष नहीं हो रहा है । जो भी हो, मेरा यह दृढ विश्वास है, कि गाधीजी की रक्षा ईश्वर करता है और करेगा । आज जेल के राजबन्दियो ने एक दिन का उपवास, गाधीजी की सफलता और सहानुभूति के लिए, किया। मेरी तो निरन्तर यह प्रार्थना है, चाह है, कि गाधीजी सफल हो । यदि गाधीजी न रहे, तो मेरे लिए अन्धकार हो जायेगा । गाधीजी के चले जाने की कल्पना के लिए भी मेरा मन तैयार नहीं । गाधीजी के बिना ससार मेरी निगाह मे ज्योति रहित ससार होगा । आज इस अव्यवस्थित युग मे गाधीजी ही शान्ति की दीपशिखा जला रहे है । उसकी रोशनी चाहे कितनी भी दूर है, और कितनी भी हल्की है, फिर भी दीप की एक हल्की सी लौ तो दीख रही है, जो भविष्य मे अपना प्रकाश जरूर फैलायेगी । क्योंकि, कुदरत ने पशुता का नाश करके, परमता का विकास करने के लिए ही मानव की रचना की है न ! २४ घन्टे के उपवास के बाद गाधीजी की सफलता और दीर्घायु की प्रार्थना करके साढ़े नौ बजे सोया।

१७ फरवरी : गाधीजी के उपवास का आज आठवाँ दिन है । जो समाचार आ रहे है, वे चिन्ताजनक है । गाधीजी की तबीयत गिरती जा रही है । सरकार का रुख कड़ा है । वह अपनी नीति मे कोई परिवर्तन करना नही चाहती है। देश मे चारो ओर चिन्ता छा गई है । पर सरकार पर इसका प्रभाव नही पड़ रहा है । न कोई ऐसी जोरदार कार्यवाई ही हो रही है, कि सरकार पर दबाव पड़े। अभी तक के लक्षणो से कोई आशा नही होती । पर मेरा मन यह स्वीकार नही करता, कि गाधीजी जैसा महापुरुष, जो कई शताब्दियो के बाद आया करता है, यों ही चला जायेगा । परन्तु व्याकुलता और विकलता बढ़ती जाती है । विचार

करना भी मुश्किल हो रहा है। चाहता हूं कुछ न सोचूं, ईश्वर जो करेगा अच्छा ही करेगा, परन्तु बरबस सोचना पड़ता है। बापूजी का सम्बन्ध, उनकी प्रवृत्तियों, उनका प्रेम, अपनापन एक-एक चीज याद आती है। यह कैसी बेरसी है, कैसी निसहाय अवस्था है। इस पराधीनता के भयकर पाप ने हमें किस बुरी जगह में लाकर गिरा दिया है। जो व्यक्ति किसी प्राणी की हानि नही करता, किसी का बुरा नही चाहता, किसी से बैर नहीं करता, जो "सर्वभूतहिते रता" रहता है उसके प्रति, उसकी भावनाओ के प्रति कैसा तिरस्कार। गांधीजी चले जाएं, उसके बाद सरकार अपनी भूल भी मान ले, तो क्या ? का बरसा जब कृषि सुखानी ?

२० फरवरी : आज सुबह के अखबारों मे गाधीजी की हालत कल से कुछ अच्छी बताई जाती है। इससे थोड़ी शान्ति मिली। पर अभी तो कुल दस दिन बीते है। कमजोरी तो बढ़ ही रही है। दिल्ली म जो नेताओ की सभा हुई उसका भी कोई असर नही पड़ा। उपवास-काल मे डर लगा ही रहेगा। पर मेरी श्रद्धा तो यही कहती है, कि हर हालत मे ईश्वर गाधीजी की रक्षा करेगा। 'परहित बस जिनके मन माहीं, तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं'।

२१ फरवरी छ बजे जेल की कोठरी खुली। प्रार्थना करके घूमना शुरू किया, तो मन मे गाधीजी के उपवास के विचार चल रहे थे। रात मे खबर मिली थी कि गाधीजी की अवस्था अच्छी नही है। अखबारो मे भी बहुत बुरी हालत बताई गई है। गाधीजी के पास के प्रसिद्ध डाक्टरो के हस्ताक्षरो से लिखी गई सरकारी विज्ञप्ति मे 'Very grave' याने 'बहुत चिन्ताजनक' शब्द है। दिल्ली के नेताओ की सभा मे जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था, वह वायसराय के पास भेज दिया गया। वायसराय ने जो उत्तर दिया है, वह निराशाजनक तो है ही, साथ ही यह प्रकट करता है कि अग्रेज शासको के अन्दर न तो बुद्धिमत्ता है और न दूरदर्शिता। जैसी स्थिति पैदा हो गई है उसमे गाधीजी कैसे बचेगे समझ मे नही आता। अब तो सब विश्वास और प्रार्थना के कुछ वश नही। न मालूम आज कितने करोड़ हृदय ईश्वर के निकट प्रार्थना कर रहे होंगे, कि वह गांधीजी को बचावे। कलकत्ते म भी लोगो ने उपवास और प्रार्थनाए की। शाम को जेल के सारे राजनैतिक बन्दियो ने गाधी जी की सफलता और दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थनाएं की।

२२ फरवरी : आज के अखबारो से पता लगा, कि गाधीजी की हालत निहायत नाजुक है। रोज रोज गिरते जा रहे है। डाक्टरो ने साफ कहा, कि यदि उपवास चालू रहा, तो किसी भी समय खतरा हो सकता है। वास्तव में गांधी जी जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे हैं। उनका मनोबल ही उन्हें जिला रहा है। इस हालत मे उपवास सफलतापूर्वक कैसे समाप्त होगा ? तो भी मन कहता, कि गांधीजी के मनोबल का अन्दाज नही किया जा सकता। शायद वे सफलतापूर्वक

उपवास को समाप्त करें। इसी संकल्प-विकल्प, उधेड़-बुन में मन लगा रहता है। इस समस्या का सुलझाव देखने में तो सरकार के पास है, पर असल तो प्रभु के ही हाथ है। सरकार तो टस से मस नहीं होती दीखती।

इंगलैंड के बड़े-बड़े अधिकारी भारत-मंत्री श्री एमरी से इस सम्बन्ध में बातचीत करने के लिए मिले हैं। यह खबर कल की है। यह डायरी लिखते समय रात के नौ बज रहे हैं। अभी तक उस बातचीत के नतीजे की कोई खबर नहीं आई। गांधीजी का जीवन एक-एक क्षण भारी हो रहा है। उन अधिकारियों की बातचीत का कोई परिणाम निकलता नहीं दीखता। एक ही सहारा है, और वह है, परमेश्वर की कृपालुता का, मारवाड़ियों में एक कहावत है, कि 'मारनेवाले से जिलानेवाला बड़ा है' वही 'जिलानेवाला' गांधीजी को रक्खें। भगवान भक्तों की रक्षा करते हैं और उनकी कड़ी परीक्षा भी लेते हैं। मेरी निगाह में तो कितनी भी कड़ी परीक्षा हो, गांधीजी उसमें उत्तीर्ण होंगे। ऐसा विश्वास होते हुए भी, जो खबरें आ रही हैं. जैसे लक्षण दीख रहे हैं, उनसे मन विचलित हो उठता है।

२३ फरवरी : आज के अखबारों में थोड़ी अच्छी खबर थी। यानी गांधीजी की हालत थोड़ी अच्छी है। परसों तो बहुत खराब हो गई थी। एकबार तो नब्ज का पता तक नहीं चल रहा था। अभी सात दिन बाकी हैं। हृदय बहुत कमजोर हो चुका है। परसों अमेरिका से एक खबर आई थी, जिससे थोड़ी आशा हुई थी, कि शायद गांधीजी छोड़ दिये जाएं। पर चर्चिल की सरकार तो जो है, सो है ही। यह जो न करे सो कम। मेरी तो एक ही प्रार्थना, एक ही चाह, एक ही इच्छा और एक ही भावना है, कि गांधीजी जीवित रहें।

२५ फरवरी : दो दिनों से पूज्य गांधीजी के उपवास के समाचार थोड़े अच्छे आ रहे हैं। इस तरह चलता रहा, तो गांधीजी इक्कीस दिन पूरे कर लेंगे। सरकार का ढंग तो पहले ही अच्छा नहीं दीख रहा था। लेकिन आदमी आशा तो अच्छी ही करता है। यह भी मानना चाहिए कि मनुष्य के अन्दर जो सहज भली वृत्ति है, उसका उद्भव समय पर हो जाता है। सरकारी विज्ञप्तियों की कड़ी और निस्पृह भाषा देखते हुए भी आशा थी, कि गांधीजी ने सरकार को जो एक अच्छा मौका दिया है, उससे वह फायदा उठाएगी। लेकिन देश के करोड़ों लोगों की इच्छा और भावना को सरकार ने बिल्कुल कुचल दिया। दिल्ली के नेता-सम्मेलन में सर्वसम्मति से जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था, उसका उत्तर वायसराय ने 'नकार' में दिया। इसके बाद देश के प्रमुख व्यक्तियों के हस्ताक्षर से ब्रिटिश प्रधान-मंत्री चर्चिल के पास गांधीजी की रिहाई के लिए जो तार दिया गया, उसका उत्तर निराशजनक के साथ ही शिष्टता से भी खाली है। यह उत्तर प्रकट करता है, कि वर्तमान ब्रिटिश सरकार कभी भी हिन्दुस्तान के साथ न्याय करने वाली नहीं है। गांधीजी इस उपवास में बच भी गये, तो भी, न मालूम इनको किस वक्त क्या हो जाय।

क्योंकि चुप बैठे, जो कुछ हो रहा है उसका वे साक्षी मात्र रहें, यह सम्भव नहीं। हमारे अन्दर इतनी ताकत नहीं दीखती, कि हम सरकार को बाध्य कर सकें। ऐसी हालत में गांधीजी क्या करेंगे, उसका क्या परिणाम होगा, यह सोचना भी मुश्किल है।

२७ फरवरी : गांधीजी के उपवास की समाप्ति में अब तो तीन दिन बाकी रहे हैं। अभी तो उपवास ठीक चल रहा है। ये तीन दिन भी शान्तिपूर्वक निकल जायेंगे। जो हो, अंग्रेज सरकार का जो तौर-तरीका इस उपवास में रहा, वह बहुत ही दुःख भरा और गुस्सा दिलानेवाला था। पर क्या किया जाये। आज की हालत में कोई कुछ कर सके, ऐसा नहीं मालूम होता। परन्तु दुनिया बदल रही है, युद्ध से नया इतिहास बन रहा है। उसका असर हिन्दुस्तान पर भी पड़े बिना रह नहीं सकता।

३ मार्च : आज का दिन कितना अच्छा है। पूज्य गांधीजी ने इक्कीस दिन के उपवास की नींबू के रस से समाप्ति की। ईश्वर ने करोड़ों मूक हृदयों की प्रार्थना सुनी और प्रह्लाद को जैसे जलती हुई आग से बचाया था, उसी प्रकार गांधीजी को भी बचाया। डाक्टरों ने आशा छोड़ दी थी, कि गांधीजी बचेंगे, उनका विज्ञान समाप्त हो चुका था। गांधीजी के कामों में जो एक महान सच्चाई है, वही उन्हें सफलता प्रदान करती है–

'जाको राखे साईया, मारि न सकिहें कोई,
बाल न बॉका करि सकै, जो जग बैरी होई।'

७ मार्च : छः बजे के बाद जेल की कोठरी खुलती है, वही कार्यक्रम है जो नित्य चला करता है। 'सदा दिवाली संत के, आठो पहर बसन्त।' बसन्त ऋतु आ रही है। कोयल बोलने लगी है। पेड़ पौधों मे नवजीवन का संचार होने लगा है। शीतल-मन्द-हवा चलने लगी है। ऋतुराज के आगमन की कैसी सुन्दर तैयारियाँ हो रही हैं। पर क्या हमारे जीवन में भी कोई उत्साह और उमंग है? कैसी बेबसी है। हजारो माँ के लाल गोली से उड़ा दिये गये हैं। लाखों को जेलों मे बन्द कर दिया गया है, सैंकड़ों को फांसी के तख्ते से लटका दिया गया है ऐसी हालत में हम ऋतुराज के आगमन की क्या खुशियाँ मनावें? हम तो बेरहमी से कुचले जा रहे हैं।

ऋतुराज! तुम्हें तो पता भी नहीं होगा कि पच्चीस-तीस रुपये मन आटा है। सात-आठ रुपये से कम में माँ-बहनों को तन ढकने के लिए साढ़ियाँ नहीं मिलती हैं। पता नहीं तुमने उन माँ-बहनों को देखा है या नहीं जो किसी तरह भी अपनी लज्जा का निवारण नहीं कर पातीं। उन भूखे, नंगे, बिलबिलाते बच्चों को तुमने देखा होगा, जिनके पेट में एक कौर अन्न न दे सकी वह माँ, जो अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यार करने का दावा करती थी। ऋतुराज! तुम उस युद्धक्षेत्र में

गये कि नहीं, जहाँ रक्त की नदी बह रही है। जहाँ मानव मानव का नाश करने मे बहादुर कहा और समझा जाता है। आकाश से वे दस-दस मन के बम उन नगरों पर गिराये जा रहे हैं, जिन नगरों के बनाने सुधारने में और सजाने में कितने कारीगरो, कितने शिल्पिया और कितने चित्रकारों ने कई वर्षो तक अपनी बुद्धि और शक्ति लगायी थी। तुम तो वर्ष-वर्ष आते हो, तुमने बड़ी-बड़ी लड़ाईयां देखी होगी, पर मनुष्य का इतना भयानक पशु-रूप तुमने पहले भी देखा है? ऐसी स्थिति मे तुम्हारा कोई क्या स्वागत कर सकता है! जैसा शुभ सन्देश तुम पक्षियो और पौधों तक को देते हो, वैसा कभी इस नृशस मानव को भी दे सकोगे? तुम्हारे आगमन से पौधे हरे होते है, फूल खिलते है और भौंरे गुजार करते है। क्या कभी मनुष्य भी इसी तरह दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए विकसित और प्रफुल्लित होगा? वह द्वेष और घृणा, पशुता छोड़कर क्या सच्चा मानव बनेगा? जिस दिन मनुष्य ऐसा बनेगा, उसी दिन तुम्हारा सच्चा स्वागत होगा।

१० मार्च : सुबह छ बजे जेल की कोठरी खुलती है। दिन जल्दी निकलने लगा है। इससे कोठरी भी जल्दी खुलनी चाहिए, पर शायद अभी दस-पाँच दिन यो ही चलेगा। शाम को बन्द होने मे दस मिनट की देर होने लगी है। यह दस मिनट भी ज्यादा खुला रहना कितना अच्छा लगता है। बाहर के लोग नही समझ सकते, कि इस तरह दस पाँच मिनट पहले बन्द होना या दस पाच मिनट बाद मे बन्द होना -इसमें क्या अन्तर है। पर जेल मे यह कितनी बड़ी बात है। इसका अनुभव इन कोठरियो मे बन्द होने वाले लोग ही कर सकते है। कई बार ऐसा होता है, कि पाच कोठरियाँ जो ऊपर है, उनमे बन्द होने वाले लोग यह सोचते है, कि पहले नीचे वाले लोगो को ही बन्द करे तो अच्छा और नीचे वाले सोचते है कि ऊपर वालो को। ऐसा ही वार्डो मे भी होता है। बन्द होना लोगो को इतना अखरता है, कि दस-पाँच मिनट के लिए भी हर आदमी ज्यादा खुला रहने की कोशिश करता है। सारा समय कामो मे बँटा हुआ है। प्राय: कोई समय खाली नही है। तब भी मानसिक चिन्ता उठती है। जेल जीवन अखरता भी है। देश मे राजनीतिक आन्दोलन प्रायः नही रह गया है। जिस भयंकरता से दमन किया गया है, उसमे बराबर आन्दोलन चलता रहे, यह आशा नही की जा सकती है। तकलीफ सहने की भी एक सीमा होती है। फिर जनता का मार्ग-प्रदर्शन करने वाला उसे उत्साहित करने वाला कोई बाहर नहीं है। इसलिए फिलहाल हमारे इस यज्ञ कुण्ड की अग्नि पर राख छा गई है। परन्तु अनुकूल हवा का झोका मिलते ही वह राख उड़ जायेगा और दिव्य अग्नि फिर अपने द्विगुणित वेग ले प्रज्वलित होगी, इसमें कोई शक नहीं।

१३ मार्च : आज बम्बई से प्रह्लाद का पत्र आया है। पत्रों मे पुलिस की ओर से बहुत काटाछांटी हुई है, पर तो भी पता चलता है, कि वह बापूजी के

उपवास के समय पूना गया था और बापूजी के दर्शन भी किये थे। जिस दिन वह दर्शन करने गया, उस दिन बापूजी के उपवास का बीसवाँ दिन था। बापूजी कमजोर तो बहुत हो गये थे, पर चेहरा बड़ा देदीप्यमान था। पह्लाद ने अपना नाम लेकर बापूजी को प्रणाम कहा, तब उन्होने पूछा–"सीताराम कहाँ है ?" उसने कहा–"जेल में ही हैं।" उन्होने कहा–"मुझे मालूम नही था।" कैसी बात है उनकी, क्या है वे ?

कितने हृदय मथन के बाद इक्कीस दिनो का उपवास उन्होंने शुरू किया ! उपवास काल में क्या-क्या बीती ! उनके इस वृद्ध शरीर की क्या हालत हुई। इसके अलावा उनके सामने कितनी बड़ी जिम्मेवारी है ! कैसे-कैसे विचार उनके मस्तिष्क में उठ रहे होंगे। कितने बड़े-बड़े लोगों से मिल रहे होंगे ! ऐसी हालत में उपवास के बीसवें दिन मेरे जैसे एक साधारण आदमी का ख्याल करना कितनी बड़ी बात है। उनका मस्तिष्क कितना शात और गभीर है। उनका हृदय कितना विशाल और स्वच्छ है। तुलसीदास जी ने कहा है, कि "जानत प्रीति रीति रघुराई, केवट मीत किये हित मानत, बानर बधु बड़ाई"–ऐसे ही हैं बापूजी।

आज मुलाकात आई थी। उससे पता लगा, कि भगवान देवी• को मयादी बुखार (Typhoid) हो गया है। केवल चार महीने पहले इसी बीमारी मे वह डेढ़ महीने तक तकलीफ मे थी। अब तो कमजोर भी बहुत है। पास मे कोई नहीं है। पर सब अच्छा ही होगा। हम कर ही क्या सकते है ? न मालूम कितने लोगो को क्या-क्या पारिवारिक और आर्थिक तकलीफ होती है। जेल मे आने पर इन चीजो के सोचने से काम नही चलता। जिस बात मे अपना बस नही, उसे सोचकर भी क्या किया जा सकता है। सब भगवान भरोसे है। बाहर के लोग खासकर भाईजी के घर के लोग उसका पूरा ख्याल रख रहे है।

१६ मार्च : आज दो घटे के लिए भगवानदेवी के पास जाकर मिलने का आदेश मिला। ढाई बजे पुलिस अधिकारी के साथ घर पर गया। भगवानदेवी बेहोश थीं। थोड़ी देर बाद ज्ञान होने पर उसने कहा "मेरा मन बहुत खराब हो रहा है"। मै क्या कहता ? उसे समझाया। इस तरह घर आना क्या मेरे लिए सुखकर था ? पुलिस अधिकारी के साथ आना या और किसी के साथ आना, और किसी से कुछ बात न कर सकना; कितना बुरा लगता है। बहुत से मित्र आ गये थे। इन सबने मुझे देखा और मैने उनको। कैसी हालत होती है, उस समय जब किसी मित्र या प्रेमी को दस बारह महीने बाद देखें, पर उससे बात न कर सकें। शाम को बार बजे लौट कर फिर उन्हीं सींकचों के अन्दर आ गया। कई दिनों बाद कलकत्ते के रास्ते देखे। चलती हुई ट्राम और बसें देखीं, फिरते

• लेखक की पत्नी

हुये आदमी देखे। वे सब नवीन से मालूम होते थे। यद्यपि उनमें कोई नवीनता न थी, तब भी आँखों को ये अच्छे लग रहे थे। इच्छा होती थी और देखें–इन रास्तों में दस-बीस कदम घूमें। पर यह कैसे सम्भव था। यही तो जेल है। मनुष्य को मौका मिलता है जेल में सोचने का, कि हम क्या हैं? हमारी वृत्तियाँ किस प्रकार उन्हीं वस्तुओ का मूल्य समझने लगती हैं, जिनका कुछ भी मूल्य एक दिन हमारे सामने नहीं था।

१९ मार्च : छः बजे जेल की कोठरी खुली। सब काम रोज के नियमानुसार किये। यहाँ के जीवन में किसी तरह का परिवर्तन करना सहज नहीं। एक ही प्रकार का जीवन बिताना भी यहाँ एक नियम समझना चहिए। यदि कोशिश करके कुछ परिवर्तन किया भी जाए, तो दस-पाँच दिन में वह भी नियम-सा हो जाता है। जेल-जीवन वास्तव में जीवित-समाधि है। जो हो, इसको लेकर चलना है। जिन लोगों को दो-चार-पाँच या सात वर्ष की सजा होती है, वे शाम को सोते समय कहा करते हैं, कि चलो एक दिन तो कम हुआ। इस सहारे वे एक प्रकार जेल जीवन काटते हैं। पर जिन लोगों को बिना विचार, अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया है, उनकी हालत और है। यदि उनका कोई अपराध है, तो अपने देश की स्वतंत्रता चाहना है। जिस स्वतंत्रता के लिए आज अंग्रेज लड़ रहे हैं, जिसके लिए उन्हें बहादुर और देश-भक्त कहा जाता है, उसी स्वतंत्रता को पाने की इच्छा रखने के लिए हमारे देश के हजारों लोगों की यों ही बन्द करके रख दिया गया है। जो हो, हम मजिल की ओर बढ़ रहे हैं, हमारी यात्रा चालू है। हो सकता है, इस लम्बी यात्रा मे हम बीच-बीच में थकावट का अनुभव करें, रुकना भी पड़े पर हमें मंजिल तय करनी है और उसे हम तय करेंगे।

३० मार्च : बाहर के मित्रों ने भगवानदेवी की बीमारी के लिए मुझे पैरोल पर छुड़ाने की कोशिश की, तो उन्हें उत्तर मिला, कि उनको पैरोल पर नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि सीताराम तो गांधीजी के आदमी हैं, वे कैसे अच्छे आदमी हो सकते हैं? यह उत्तर, चाहे कितना भी कड़ा हो, गांधीजी के प्रति सरकारी अधिकारियों की भावनाओं का द्योतक है। आज अंग्रेज सरकार गांधीजी को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानती है, पर गांधीजी के दिल में तो किसी के लिए कोई दुश्मनी नहीं। मेरे लिए तो गौरव की बात है, कि मैं गांधीजी का, कांग्रेस का आदमी माना जाऊं। पर मैं जब सोचता हूं, तो गांधीजी का आदमी बनना सहज नहीं। अंग्रेज सरकार चाहे गांधीजी को जो कुछ भी समझे, कांग्रेस को जो चाहे कहे; देश का गांधीजी में, कांग्रेस में अटूट विश्वास है। इस समय की तकलीफ आराम से निकल ही जायेगी। ब्रिटिश सरकार भी सदा इस देश में शासन नहीं कर सकेगी। जिस दिन देश स्वाधीन होगा, उसी दिन संसार गांधीजी की सच्ची कीमत लगायेगा। गांधीजी ने इस देश के लिए ही नहीं, मानव-जाति के लिए, मानव-कल्याण के लिए अपना

जीवन लगाया है । नये बनने वाले ससार के लोग गाधीजी की पूजा करेगे और उनको त्राणकर्ता के नाम से पुकारेगे । आज का वह शोषण उस दिन नही रहेगा। मनुष्य मनुष्य को प्यार करना सीखेगा ।

कामस मे भारतवर्ष के सम्बन्ध मे वाद-विवाद था । जिसमे भारत मन्त्री श्री एमरी की जो वक्तृता हुई, वह जहर से भरी हुई थी । बड़ी अपमानजनक मालूम होती । अग्रज किसी तरह भी हिन्दुस्तान पर से अपना कब्जा नही हटाना चाहता। हमे ज्यादा बलिदान करना होगा ।

४ अप्रैल भाई भागीरथजी, जो मेरे बहुत नजदीक के मित्र है और मेरे साथ जेल मे है, कई दिन से बीमार चल रहे है । बाहर उनकी स्त्री ज्यादा बीमार है। आज उनको बहुत जोर बुखार रहा । बेचैनी भी बहुत थी । जेल मे अच्छी तरह इलाज की व्यवस्था भी नही हो सकती । बाहर का इलाज कराया नही जा सकता। इसलिये चिन्ता होती है । चाहे इसे मन की कमजोरी कही जाये, पर जब किसी नजदीक के आदमी को तकलीफ पाते देखे, तो स्वभावत कष्ट और चिन्ता होती है । यह अपनी निगाह मे मानव-स्वभाव है ।

देश की राजनीति मे जरा भी सुधार होने के लक्षण नही दीख रहे है । श्री राजगोपालचारी जी तथा उनके जैसे विचार के लोगो ने सरकार से कई तरह की आरजू मिन्नते की । पर सरकार अपने रुख मे जरा भी परिवर्तन करने के लिए राजी नही । वह एक ही बात कहती है, कि अगस्त प्रस्ताव को वापस लो और आगे के लिए हमे गारटी दो, कि कोई ऐसा काम नही करेगे । अपनी निगाह मे यह अपमान भरा रुख ऐसा है कि इस सिलसिले मे कोई बात करना व्यर्थ है । ऐसी स्थिति मे, राजाजी या दूसरे नेताओ की प्रार्थना करना, डेपुटेशन ले जाना अच्छा नही लगता । इससे देश मे निराशा फैलती है । सरकार का सिर चढ़ता है। इससे तो यही अच्छा है कि ये नेता लोग चुप रहे परिस्थिति को अपने ढग से बनने बिगड़ने दे । जो लोग क्रान्ति के रास्ते पर नही चल सकते, वे कम से कम शान्त होकर देखते रहे तो यही अच्छा है । राजाजी पर अपनी श्रद्धा होते हुए भी उनकी ऐसी कार्रवाईया बुरी लगती है, हमारे सामने निराशा का अन्धकारपूर्ण वातावरण छाया हुआ है, पर देश ने जो इतना बड़ा त्याग किया है, देश के नौजवानो मे जो नई विचारधारा फैल रही है, उसमे यह बर्दाश्त नही किया जा सकता, कि हम समझौता करने के लिए नाक रगड़े और खुशामद करते फिरे ।

१० अप्रैल · आज खबर मिली, कि मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब की बेगम साहिबा की मृत्यु हो गई । कई दिन से वह सख्त बीमार थी । मौलाना साहब से मिलने की बहुत इच्छा थी । पर सरकार ने मौलाना साहब को यहा लाकर उनसे मिलने का मौका नही दिया । सरकार का यह रुख बेजा तो बहुत था कि मृत्यु शय्या पर पड़ी तड़पती हुई, एक स्त्री की इच्छा का, जो अपने पति का दर्शन

करना चाहती है, असर भी सरकार पर न हुआ । इस समय जो न हो जाय वही कम है । बेगम साहिबा ने अन्तिम समय भी पूछा, कि क्या मौलाना जी नहीं आये ? उन्होंने कहा, कि मेरा शेष का संलाप उन्हें कहना और वे आवें तो नमाज के समय यह इत्र उन्हें देना, कि मेरी तरफ से इसे लगाकर नमाज पढ़ें । शेष मे उन्होंने कलमा पढ़ने की कोशिश की, पर उनकी स्मरण-शक्ति समाप्त हो चुकी थी। दूसरे सज्जन, जो उस समय उनके पास थे, कलमा पढ़ना शुरू किया तो उनकी स्मरण शक्ति फिर लौटी और उन सज्जन के साथ बेगम ने कलमा पढ़ा, इसके बाद वह सदा के लिए मौन हो गयी । मौलाना साहब न उसे देख सके और न वह मौलाना को !

१४ अप्रैल : जेल-जीवन एक ऐसा जीवन है, जिसको भला या बुरा कहना मुश्किल है । यहाँ मनुष्य की वृतियाँ कुछ दूसरी तरह की हो जाती है । अपने गुण-अवगुण पर विचार करने का यहाँ अच्छा मौका है । पर यहां उल्टा ही होता है । जो दो-चार आदमी साथ रहते है, उनमे वह अपने को बड़ा साबित करने की कोशिश करता है । सच पूछा जाय, तो जेल छोटी दुनिया है । इस छोटी दुनिया मे बड़ा आदमी नहीं बनता । यहाँ छोटी-छोटी बाते भी बड़ी दीखने लगती है । उन छोटी बातो पर यहाँ के लोग बहुत विचार करते है, ये उनमे शान्ति भी पैदा करते है, कई बार सोचते है, कि अपने अच्छे रहे तो जग अच्छा । अपनी अच्छाई-बुराई का सम्बन्ध ही अपने से है । अपने को सुधारना, अपन अवगुणों को देखना और उन्हे दूर करने की कोशिश करना, यही तो आदमी का काम है। पर हमारा अहम्, हमे यह कहाँ करने देता है ? जब तक अहम् से ऊपर न उठें, तब तक तो व्यर्थ मे इस भ्रमजाल मे फँसा रहना पड़ेगा ।

१५ अप्रैल : छ. बजे जेल की कोठरी खुलती है और अपना नित्य का काम जैसे चलता है, वैसा चलता है । यहाँ जीवन अपनी बंधी धारा में बीत रहा है। इसमें कोई परिवर्तन यदा कदा ही होता है । वह कभी सुखद होता है, कभी दु खद । पर यहाँ सुखद बात हो, उसकी आशा कम ही है । चौबीस तारीख को एक साधारण सी घटना हुई । शाम को राजनीतिक बन्दियो ने, जिनको जेल की भाषा में स्वदेशी बाबू कहा जाता है, दो अपराधी कैदियो को (जिनको जेल की भाषा मे फालतू कहा जाता है) मारा और ज्यादा पीटा । उनका ऐसा करना मेरे निगाह में निगाह में बेजा था । स्वदेशी बाबू तो देश-सेवक है । उनका तो सब के प्रति प्रेम होना चाहिए । हर आदमी मे इनके कामों के लिए प्रेम हो, सब उनका आदर करें, तभी तो वे स्वदेशी बाबू है । यदि जेल के अधिकारियों के साथ स्वदेशी बाबुओ का झगड़ा हो (वह भी मार-मीट का नहीं) तो समझ मे आ सकता है। पर बेचारे गरीब कैदियो को मारने में स्वदेशी बाबुओ की क्या बहादुरी है ! उस घटना के दूसरे-तीसरे दिन यानी आज शाम को जो हुआ, वह तो बहुत ही बुरा;

बर्दाश्त करने लायक नहीं । कल जिन लोगो ने मार खाई थी, उन लोगो ने तथा उनके जो साथी कैदी है, उनमे से पचास साठ आदमियों ने यहाँ के राजबन्दियो पर एक साथ धावा बोल दिया और परस्पर मार-पीट होने लगी । जेल की पगली घंटी बजने लगी, सिपाही आ गये, जेलर, सहायक जेलर सभी आ गये । मार-पीट चलती रही । पगली घंटी बजने पर जेल का नियम है, कि सब लोग अपने-अपने वार्डो में चले जायँ । लोग वार्डो में जाने लगे, कुछ लोग बाहर थे । उस वक्त वार्ड का दरवाजा बन्द हो गया । जो लोग बाहर रह गये, उनको खूब मारा गया; जिससे तीन आदमी सख्त घायल हो गये, उनको मेडिकल कालेज भेजना पड़ा । चोट तो कई को लगी थी, पर यहाँ के अस्पताल मे तो पॉच-सात को रहना ही पड़ा, मरहमपट्टी भी की गई । यह घटना बहुत ही दर्द भरी और भयावनी है । लोगो का यह भी कहना है कि जेल अधिकारियो के इशारे से अपराधी कैदियो ने स्वदेशी बाबुओं को पीटने का साहस किया । पता नहीं सच बात क्या है ? मारने के समय जेल-अधिकारियो का चुपचाप खड़े देखना शक पैदा करता है । इस घटना से जेल के वातावरण मे एक खास गर्मी आ गई । जेल अधिकारियो और राजबन्दियों के बीच एक खास तनाव पैदा हो गया । यह घटना और भी कई तरह के रूप बदल सकती है । राजबन्दियों ने खाना नही खाया गया और वे इसकी जांच कराना चाहते है । जेलर को हटाने की मांग भी कर रहे है । चीफ मिनिस्टर को यहां बुलाकर सब बाते उनसे कहना चाहते है । इस प्रकार यह घटना कुछ ज़ोर पकड़े, दरअसल मुझे तो शर्म आती है । पर जेल अधिकारियो का बर्ताव निश्चय ही खराब था और उसका प्रतिकार होना चाहिये ।

१३ मई . भाई भागीरथ की तबियत कई दिनो से खराब चल रही है, पर इन चार पांच दिनो से तो बहुत गिर गई है । बुखार भी ज्यादा हाने लगा, खासी बढ़ गई और भूख बिलकुल नही लगती । कमज़ोर होना तो स्वाभाविक है ही । यहाँ न तो अच्छा इलाज हो सकता है और न अच्छी सेवा की व्यवस्था ही । इसलिए चिन्ता होती है । भागीरथजी जैसा साधु पुरुष भी कितनी तकलीफ पा सकता है ?

सरकार ने बिना कारण शका पर लोगो को ला कर बन्द कर दिया है । जो लोग यहाँ है, उनमे से ऐसे बहुत लोग हो सकते है, कि उनका बन्द रखना बिलकुल नाज़ायज़ हो । यों तो किसी को भी विचार किये बिना बन्द करना अन्याय है ही, पर सरकार जिन कारणो से लोगो को बन्द करना चाहती है या बन्द करती है, उन कमो से जिनका ताल्लुक नही, उनको भी शक पर बन्द कर दिया गया है । आज जिस तरह अन्याय हो रहा है वह तो दुश्मन से बदला लेने जैसा है । पर क्या किया जाय ? ये सब हृदय के घाव है, सरकार उनको गहरा कर रही है । जो हो; वह ठीक है ।

३१ मई नित्य साढ़े पांच बजे के करीब जेल की कोठरी खुलती है । तबियत

अच्छी न होने की वजह से ज़रा देर से बाहर निकलते हैं। रोज़मर्रा के काम तो किसी तरह कर लेते हैं, पर मन और तन दोनों अच्छे नहीं हैं।

अखबारों से जो खबरें मिलती हैं, उनसे निराशा बढ़ रही है। लोग अपनी-अपनी सोचने लगे हैं। नये मंत्रिमंडल बनाने की कोशिश होने लगी है। लोभवश लोग सरकार का साथ दे रहे हैं। हिन्दु-मुस्लिम समस्या भी विकट होती जा रही है। मि. जिन्ना मुसलमानों के एकमात्र नेता बन रहे हैं, क्योंकि कोई दूसरा आदमी सामने नहीं। मि जिन्ना का जो ढंग है, उसके बारे में कुछ कहना ही मुश्किल है। जो बात ब्रिटिश भी कहने में हिचकती है, वह मि. जिन्ना गांधीजी के बारे में कह देते हैं। जो आदमी बदले में जवाब नहीं दे सकता, अपनी सफाई पेश नहीं कर सकता, उस पर लांछन लगाना, हमला करना, इन्सानियत नहीं। गांधीजी जैसे आदमी पर बेईमानी का आरोप करना कमीनापन है। अपनी शुरू से ही यह मान्यता रही है, आज भी है, कि हिन्दुओं ने मुसलमानों के साथ भाईचारे का व्यवहार नहीं किया। उनको जिस उदारता से काम लेना चाहिए था, वह नहीं लिया। आज भी इस बात की जरूरत है, कि हिन्दू मुसलमानों के साथ ज्यादा मिलने जुलने तथा उनके साथ हमदर्दी से पेश आवें। मि० जिन्ना की जो हरकतें है, वे देश के लिए नो घातक है ही, पर मुसलमानों के लिए भी हितकर नहीं है। जिन्ना साहब की नीति से चाहे आज मुसलमान यह समझ रहे हों, कि उनका लाभ हो रहा है, पर मि. जिन्ना जिस नीति पर चल रहे हैं, उससे शेष में मुसलमानो का हित होने वाला नहीं। मुसलमानों को बिना संघर्ष किये, मि. जिन्ना जो अधिकार दिलाने की बात कहते हैं, उसमें मुसलमान जाति की जीवनी-शक्ति कम हो जायेगी। मुसलमान जाति यदि संघर्षशील न रही, देश की इतनी बड़ी हलचल मे अपना कुछ भी हिस्सा अदा न किया, तो वह जीवित जातियों में कैसे रह सकती है! अच्छी बात तो यह हो, कि किसी तरह मि. जिन्ना के नेतृत्व से मुसलमानों का छुटकारा मिले, तो देश का और सब का भला हो। पर आज इसकी आशा कैसे की जा सकती है। साम्प्रदायिकता के रंग में कम ज्यादा, हिन्दू-मुसलमान दोनों रंगे हुये है। आज का समय हमारे देश के इतिहास में दुःख और दुर्भाग्य का समय है। पर इन दु.ख और दर्दो के अन्दर से ही सुख-सौन्दर्य का सूर्य चमकेगा। अमावस्या की घोर अन्धेरी रात के बाद ही तो शीतल चाँदनी के दर्शन होने हैं। मुझे जेल आये दस महीने हो गये हैं। इन दस महीनों के अन्दर देश की हालत में कुछ से कुछ अन्तर हो गया है। जब मैं आया था तब चारों ओर उत्साह, उमंग, हवस, और बलिदान की भावना थी। आज सब जगह निराशा, गिरावट और स्वार्थपरता दिखलाई पड़ती है। इन सब बातों से तकलीफ़ होती है। जेल भारी लगती है। पर अपना क्या ? पूज्य गांधीजी को देखना चाहिए कि उनकी कितनी उम्र है ? कैसी कैसी जिम्मेवारियाँ हैं ? क्या क्या कहा जाता है उनके

बारे में। वे सब सह रहे हैं। ईश्वर उनकी और दूसरे सच्चे लोगों की तपश्चर्या जरूर सफल करेगा। ये काल बादल, यह निराशा और यह बुज़दिली हट जायगी, स्वतन्त्रता के सूर्य का उदय होगा अघ-उलूप भी जो इस समय अन्धकार मे गर्ज्ज पागये हैं और नाना तरह से चिल्लाते है, छिप जायेंगे। कमल खिलेगे, भौर गुजार करेंगे, स्वराज का मंगल-गान होगा, देश के दु:खी लोग सुखी होगे और वही सच्चे सुखका दिन होगा। उसी दिन के लिए सब कुछ हो रहा है। उस दिन, देवो के पुष्पों द्वारा-तब शुभ अभिनन्दन होगा।

७ जुलाई : पाँच सात दिनो से अखबारो मे यह चर्चा चल रही है, कि पूज्य गाधीजी ने वायसराय को पत्र लिखा है, जिसमें तारीख ८ अगस्त को जो प्रस्ताव ए० आई० सी० सी० ने स्वीकृत किया था, उसको लौटाने की बात है। कई तरह की अटकले लगाई जा रही है। सरकारी तौर पर किसी तरह का पता नही लगता। पक्की बात तो यह है, कि मालूम भी नही, कि पत्र लिखा भी या नही। हो सकता है, कि पत्र लिखा हो, पर बापूजी उस प्रस्ताव को कभी भी लौटा नही सकते। मेरी समझ में भी नहीं आता कि लोग ऐसी कल्पना किस तरह करते है। यह ठीक है, कि देश की हालत नाजुक है, इस हालत में कोई भी आन्दोलन नही चलाया जा सकता है। स्थिति पर सरकार का पूरा काबू है। तो भी क्या प्रस्ताव लौटाया जा सकता है? गाधीजी कोई और रास्ता निकालने की कोशिश कर रहे है। इस बार तो वे खुद बहुत कडे हो गए थे। जीवन मे आखिरी लड़ाई लड़ने का विचार उन्होने प्रकट किया था। वे पीछे कदम रखे; यह मुझे नही जंचता। वे क्या करेंगे– यह कहना सहज नही, पर वही करेगे, जो उचित होगा और जिससे सब का हित होगा।

१० जुलाई . पॉच बजे करीब जेल की कोठरी खुलने लगी। थोड़ी देर पहले बाहर निकलने मे सुख होता है। कई दिनो से तबियत ढीली रहती है। तबियत ठीक रहे, तो लिख-पढ़ कर इधर-उधर बातचीत करके, समय काटने की सुविधा रहती है। पर, यदि तबियत खराब रहे, तो पड़े-पड़े समय काटना बहुत मुश्किल होता है। राजबन्दियो ने अपने वार्ड मे चित्र-प्रदर्शनी की है। जेल मे रंग तथा अन्य चीजे मिलनी कितनी मुश्किल है, इसको देखते हुए इन लोगों ने निहायत ही अच्छे चित्र बनाये। कई एक चित्र तो बहुत ही सुन्दर बने। इसके अलावा चित्रकला पर दो सुन्दर व्याख्यान हुए जिनमे डाक्टर निहारेन्दु राय का, (जो कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के हेड लाइब्रेरियन हैं) व्याख्यान बहुत ही विद्वत्तापूर्ण था। संगीत और नृत्य भी दिखाये गये। मतलब कला के अंगों का प्रदर्शन किया गया। साहित्य संगीत, चित्रकला और नृत्य–इनसे यहाँ के राजबन्दियों का बहुत अच्छा मनोरंजन हुआ मुझे तो यह आयोजन बहुत ही अच्छा लगा जेल जीवन में, आज का यह तीन-चार घण्टे का समय निहायत ही अच्छा बीता। इस तरह के मनोरंजन

से मनुष्य के मन में अच्छे विचार पैदा होते हैं । वह कला की, कलाकार की पूजा करना सीखता है संसार का रचयिता और सब से बड़ा कलाकार है, उसकी पूजा भी हम तभी कर सकते हैं, जब हमारे दिल में कला के प्रति सात्विक अनुराग पैदा हो जाय ।

२१ जुलाई : सवा पाँच बजे जेल की कोठरी खुलती है, तब हम निकल कर नित्यनैमित्तक काम शुरू करते हैं बीच में दो तीन दिन तबियत ज्यादा खराब रही, बुखार का सा ढंग रहा । वजन कम होता जा रहा है, कमजोरी बढ़ रही है; यहाँ के तो ये ही इनाम हैं और इनको पाने में भी एक प्रकार का मजा है । देश की हालत नित्यप्रति बिगड़ती जा रही है । खाद्य पदार्थों की कमी, चीजों के भीषण दाम, करोड़ों लोग खाने नहीं पाते, ये हालत बर्दास्त करने लायक नहीं है, तो भी आज के लोग चुपचाप न मालूम इन्हें क्यों बर्दास्त कर रहे हैं ? हिन्दुस्तान तो पहले से ही गरीब मुल्क है । यहाँ तो लाखों आदमियों को कभी भर पेट खाना और तन पर कपड़ा मिलना मुश्किल रहा । ऐसी हालत में तीस-पैतीस रुपये मन चावल , चालीस-पचास रुपये मन आटा और दस रुपये में धोती मिले, तो कितने लोग भूख से मर रहे होंगे और कितनी बहनें लज्जा निवारण करने के लिए वस्त्र न पाती होंगी, इसका अन्दाजा करना भी मुश्किल है । बीमारियाँ बढ़ रहा हैं, शहरों में भूखे और नंगे लोगो की भीड़ बढ़ती जा रही है । सफाई का प्रबन्ध खराब हो चला है और पानी की कमी होने लगी–ऐसी हालत में वर्दमान में भीषण बाढ़ आ गई है । बहुत पशु मरे है, बहुत लोग गृहहीन हो गए है, खड़ी फसल को बड़ी भारी हानि पहुँची है; क्या होगा इसकी कल्पना करने मे भी जी घबड़ाता है । यदि लड़ाई इसी तरह चलती रही और हिन्दुस्तान का शासन जिस तरह, जिन तरीका से, जिन हाथों से होता है–उसी तरह होता रहा तो, यहां की मुसीबतों का पारावार नहीं ।

हम अपने क्या कर सकते है, यह सोचते है, तो कोई बात सामने ऐसी नही आती, कि कुछ कर सके । यहाँ बंद रह कर क्या किया जाये ? यदि बाहर होते तो जितना हाथ-पैर हिला सकते थे, हिलाते । समुद्र में चाहे एक बूँद का कुछ भी मूल्य नहीं, पर बूंद को समुद्र से मिलने में सुख मिलता है । भाई भागीरथ जी बाहर चले गए हैं– उनसे जितना बन पड़ेगा उतना वे अवश्य करेंगे । पर ऐसी स्थिति में जब तक लोगों में इसके प्रतिकार की भावना पैदा नहीं होती, तब तक रिलीफ के कामों से रिलीफ नहीं मिल सकती ।

२५ जुलाई : कल अपनी मुलाकात की बारी आई थी । उन लोगों का कहना था, कि बाहर में दाम देने पर भी चीजें मिलनी बहुत मुश्किल हो रही है । दूध, घी आदि तो कितनों को मिलता है, पर साधारण खुराक की चीजें मुश्किल से

मिलती हैं। कलकत्ते में इतने आदमी कभी नहीं थे, जितने आज हैं। रास्तों, पार्कों और ट्रामों में बेजा भीड़ रहती है। लोग सड़कों और पार्कों में सो जाते हैं। वहीं मलमूत्र त्याग करते है, बहुत ज्यादा दुर्गन्ध फैली रहती है। सफाई का इन्तजाम ठीक नहीं है। बीमारियां फैलने लगी हैं। दवाइयाँ मिलती नहीं। उन लोगों की बातों से मालूम होता था, कि हालत निहायत नाजुक और संगीन है। इसका क्या प्रतिकार हो ? सरकार की लापरवाही की वजह से यह हालत पैदा हुई है। विदेशी सरकार के दिल में सच्चा दर्द पैदा नहीं हो सकता और हमारे देश के अच्छे लोगों का वह सहयोग लेना नहीं चाहती। तो भी हम सरकार को दोष देकर बरी नही कर सकते। बाहर में बहुत ऐसे लोग हैं, जो इस स्थिति का थोड़ा बहुत मुकाबला कर सकते है। कांग्रेस के कार्यकर्ता भी बाहर हैं, फिलहाल बहुत से जेलों से बाहर गये है। पर कहीं कोई काम ऐसा नहीं हो रहा है, कि कार्यकर्ता लोग जनता के अन्दर प्रवेश करके उन्हे हिम्मत दें, उनमें साहस पैदा करें और इन कष्टों के समय उनकी सेवा और सहायता करें। पता नहीं क्या हो गया है ? लोगो में भयानक निराशा पैदा हो गई है। आज हरेक सार्वजनिक कार्यकर्ता असहाय सा हो गया है। दमन नीति ने लोगों को निस्तेज कर दिया है, लेकिन इससे घबड़ाना नही चाहिये। ऐसा सभी देशो के इतिहास में होता है। आदमी का काम यह है, कि जो काम उसके सामने आवे, उसे सच्चाई के साथ, जिम्मेवारी के साथ करने की कोशिश करे। यहाँ बन्दी अवस्था में बाहर के ये दुःख के समाचार सुनकर पीड़ा होती है। अच्छा होता, कि लोग इस अवस्था के विरूद्ध बलवा कर देते। पर वैसा कहाँ होता है ?

२८ जुलाई : बाहर मे जो भीषण स्थिति है, उसके समाचार अखबारो मे पढ़ते और मुलाकातों मे आने वाले लोगो के मुंह से सुनते है। अखबार मे खबर थी, कि रास्तो मे पड़ी हुई लाशो को उठाना मुश्किल हो रहा है। उनके समय पर न उठ सकने की वजह से दुर्गन्ध फैलती रहती है। 'हिन्दू-सत्कार-समिति' ने आज एक दिन मे सत्ताईस लाशे उठाई। मुसलमानों की भी किसी ऐसी संस्था ने मुसलमानो की कई लाशो को दफनाया। इसके बाद भी लाशे पड़ी रह जाती है। इससे अन्दाज किया जा सकता है, कि लोग कितनी बड़ी संख्या में मर रहे हैं। जो लोग थोड़ा बहुत खाकर जीते है या किसी तरह प्राण और शरीर का सम्बन्ध बना रहे, इतना सा ही खा पाते है, उनकी संख्या कितनी ज्यादा होगी, इसको सोचकर काँपना पड़ता है। यह हालत है एक कृषि-प्रधान देश की !

३ अगस्त : आजकल तो एक ही बात है और वह है बंगाल के अकाल की नित्यप्रति हालत बिगड़ती जा रही है, जाति नष्ट हो रही है, निष्प्राण हो रही है। पतियो ने स्त्रियों को छोड दिया, माताओं ने छोटे बच्चों को छोड़ दिया–

अन्न के लिये अपना सतीत्व बेच दिया– ये सब समाचार कैसे सुनें और कैसे बर्दाश्त करें– क्या होगा इस देश के भविष्य का ? यह तो देखने और सुनने लायक नहीं। देश के नेता, जो इस स्थिति को बदल सकते थे, उनको बन्द कर दिया गया और ये भयानक दृश्य हमारे सामने उपस्थित कर दिये गये हैं। धन के लोभी व्यापारी और सदा की लोभी सरकार पर ही इसका दायित्व है और कभी तो ऐसा होगा ही, कि यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकेगा।

९ अगस्त : पाँच बजे करीब जेल की कोठरी का खुलना और नित्य के कामों में लगना– न तो जेल की कोठरी छूटती है और न यह कार्यक्रम बदलता है। खाद्य पदार्थों की कमी के मारे जो तकलीफें थीं, वे तो थीं ही, अब चारों ओर बाढ़ आ जाने की वजह से और भी भयंकर बरबादी हो गई है। अब भी लगातार वर्षा हो रही है, जिससे दूसरी ओर भी बाढ़ आ जाने की आशंकायें बढ़ रही हैं। ऐसी भयानक मुसीबतों में पड़े हुये लोगों की सहायता करना हरेक मनुष्य का काम है। हो सकता है कि, वे ऐसी मुसीबतों मे बहुत बड़ी सहायता नही कर सकते, पर तो भी अपने मन को सन्तोष देने के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए आदमी का कुछ न कुछ करना ही चाहिये न ! यदि आदमी मुसीबत में फँसे सभी आदमियो की सहायता कर सके, तो उसे सन्तोष मिलता है। गत वर्ष इसी तारीख को पूज्य गांधीजी तथा दूसरे नेताओ को गिरफ्तार किया गया था। इस एक वर्ष के अन्दर क्या से क्या हो गया ? लाखों आदमी जेलों मे भर दिये गये, हजारो को गोलियो से उड़ा दिया गया, फाँसी पर लटका दिया गया और जुर्माना तथा कोड़ों की मार से बेदम कर दिया गया था। न मालूम क्या-क्या अत्याचार हुये है, इस एक वर्ष में; यहाँ तक कि हवाई जहाजों से बम भी गिराये गये थे उन निहत्थे और निरीह लोगो पर, आज चारों ओर निराशा, दुःख और मुसीबतों की कहानियो के सिवा कोई बात सामने नहीं आती। सरकार ने अपनी समझ में देश को निस्तेज कर दिया है। कांग्रेस का, गांधीजी का नाम तक सुनने को तैयार नहीं। क्या यह समझा जाय– यह सरकार सफल हो गई ? यह तो नहीं हो सकता। हमारे घाव ज्यादा गहरे हो रहे हैं। उनकी टीस उठती है। हमारी आहें खाली नहीं जा सकती। हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं हो सकता। सफ़लता होगी तो हमारी ही होगी। दमन कार्य कभी सफल नहीं हो सकता ! हमें अपना कर्तव्य करते रहना चाहिये। हर देश के इतिहास में ऐसे वक्त और नाजुक मौके आया करते हैं जब उसकी हालत यह होती है, कि समुद्र में डूबने वालों को तिनके का सहारा भी नहीं मिलता हमारा देश–चालीस करोड़ लोगों का देश, इतनी पुरानी सभ्यता और संस्कृति का देश, जिसका अतीत एक निराली शान रखता है; आज भी जिसमें गांधीजी जैसे पावन पुरुष पैदा हो सकते हैं; वह

देश नष्ट नहीं हो सकता, वह अपना स्थान मिटा नहीं सकता। उसका अतीत जैसा सुन्दर था, भविष्य भी सुन्दर ही होगा। उसके पुत्र और पुत्रियाँ अपने अतीत के गौरव की रक्षा जरूर करेंगी। शताब्दियों से हमारी मातृभूमि विदेशियों के पैरों तले कुचली जा रही है। पर सदा ही ऐसा नहीं होता रहेगा। संसार के नवनिर्माण में हमे अपना स्थान ग्रहण करना होगा।

जयपुर राज्य प्रजामंडल

पूर्वपीठिका

५ अगस्त १९३२ : कलकत्ता : इस बार जेल में मन में यही विचार होता था कि आगे का जीवन किस प्रकार और किस काम में, किस स्थान में बितायें। सोचा था, हीरालाल जी, महावीरप्रसाद जी, बसन्तलालजी, घनश्यामदास बिरला से सलाह कर किसी नतीजे पर पहुँचने की कोशिश करेंगे । हीरालाल जी की राय रही कि तुम्हें कलकत्ता के बाहर खासकर राजपूताना में ही काम करना चाहिए, जिस काम में उत्साह हो वही करना ठीक होगा लेकिन कलकत्ता असली काम के लिए बहुत अनुपयुक्त जगह है । जयपुर या आस-पास काम किया जाये तो वे काफ़ी मदद करेंगे । जीवन कुटीर और हीरालाल जी के सम्बन्ध में बातचीत हुई। हीरालाल जी अच्छे आदमी हैं, आत्मबल है और विचारक भी है तब भी शायद अपने आप में जितने हैं उससे ज़्यादा आशा करते हैं या यों कहिए जितनी पूँजी है उस से बहुत बड़ा धनी अपने-आप को मानते हैं । इससे हानि का डर है । खास बात अपने को अपने विषय में विचारनी है । घनश्यामदास जी से खास नाम से तो बात नहीं हुई लेकिन कलकत्ता से वे भी बहुत निराश हैं, उनका भी आगे कलकत्ता के बाहर काम करने का विचार है । अपने भी सोचते हैं तब यही मालूम होता है कि वास्तव में जिसको काम कहा जाये उसका कलकत्ता में अभाव ही है और थोड़ा-बहुत जो होता है उसमें दोष बहुत है । अपना जिस तरह का मन बन गया है या जिस परिस्थिति में रहते हैं या पड़ गये हैं उसमें खर्च बहुत अधिक होता है । निज का भी अधिक है और लेन-देन का खर्च भी बढ़ता ही जाता है, जो दिया जाता है उस में सात्त्विक भाव कम रहता है । यह व्यापार तथा अपनी आर्थिक हालत के सर्वथा प्रतिकूल है, रुपये घटे हैं । रुपये न रहें यह कोई ऐसी बात नहीं पर जो है, उनका सदुपयोग न हो और योंही नष्ट हो जायें तब कम से कम यह तो लोग कहेंगे ही अपने अयोग्य हैं । पहले ही सावधान होना ज़रूरी है इसलिए भी अपने को कलकत्ता का मोह छोड़ना चाहिए । मोह छोड़ने में असमर्थ हों तो काम की लाइन बदल कर किसी स्थायी काम में लगना चाहिए। प्रभु जिस राह ले जायेंगे, उसी राह जाना है ।

१. राजपूताने की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति

१: वनस्थली

३ सितम्बर १९३२ : हीरालाल जी के साथ बसन्तलाल जी, स्त्रियो और बच्चों सहित वनस्थली रवाना हुए। हीरालालजी के साथ कुटीर के कामो मे समय लगाया। कुटीर की स्थिति तथा अपनी भावनाएं हीरालालजी ने बतायीं। वे भावनाएँ सच्ची और उच्च थीं। उनका कहना था कि समाज सेवा करे तथा अपने परिवार के लिए किसी प्रकार का सग्रह और उपार्जन न करे। यदि परिवार के लोग साथ न हो तो पारिवारिक सम्बन्ध छोड़ दे और ईश्वर पर निर्भर करे। बसन्तलालजी को कुटीर के काम से सन्तोष हुआ। यहाँ की और कुटीर की खेती देखी। यहाँ की खेती की अवस्था सन्तोषजनक नहीं। किसान बहुत ही गिरी और निर्जीव हालत मे है। बहुत ही डरपोक और अज्ञानी है। हीरालाल जी की कठिनाइयो का अधिक ज्ञान हुआ। ग्रामभाषा मे गीत या भजन या कविता गत साढ़े दस बजे तक सुने, बहुत अच्छे मालूम हुए। जागृति के उत्तम साधन जँचे। पर आजकल हीरालाल जी ने इस तरीके को तथा रात्री पाठशाला को बन्द कर दिया है। वे बताते है कि इसमे हमारी शक्ति बहुत लगती है और मुख्य काम वस्त्र स्वावलम्बन मे हर्ज होता है पर अपनी निगाह मे यह काम चलना भी आवश्यक है।

४ सितम्बर कुटीर की मीटिंग मे शामिल हुए। कार्यकर्ताओ का परिचय तथा काम की फेहरिश्त मालूम हुई। आज के कामो का भार दिया गया कि अमुक आदमी अमुक-अमुक काम करेगा। ऐसी मीटिंग रोज़ होती है, यह सच्चे काम करने वालो के लिए महत्व की जची। पोद्दारजी भी समय से पहुँच गये इसलिए वनस्थली की यह यात्रा और भी सुखप्रद मालूम हुई। रतन जी (शास्त्री) बेचारी बहुत काम करती है और प्रेम भी खूब करती है।

५ सितम्बर : पोद्दारजी चले गये, कल जयपुर में मिलने की बात है। ज़्यादा समय तो बातों मे ही लगा पर बाते काम की हुई। जीवन कुटीर सम्बन्धी प्राय. सम्पूर्ण जानकारी की बातें थीं, अपने सम्बन्ध की भी बात करनी थी वह हो नहीं सकी, जयपुर मे करना तय हुआ।

गाँव देखने गये । घरों में जा कर देखा, बहुत ही दीनता की हालत है– किसी पुरुष, स्त्री के शरीर पर पूरे कपड़े नहीं थे । भर पेट भोजन कभी नहीं मिलता। कुछ रोटी और राबड़ी पीकर पेट भरा समझ लेते हैं । किसी के घर पूरे बरतन नहीं थे पाँच आदमियों के बीच के एक थाली । सारा सामान पाँच सात रुपयों से अधिक का नहीं, दीनता तथा दरिद्रता तो हृदय विदारक थी । ख़ास कारण राज का बढ़ा हुआ लगान तथा विवाह-शादी पर अनुचित खर्च है । किसानो की गरीबी और अज्ञान दूर करने का उपाय वस्त्र स्वावलम्बन तो नहीं जँचता । पहले वस्त्र स्वावलम्बन पूरा-पूरा सम्भव नहीं और हो भी जाये तो यह किसानों की गरीबी दूर करने में बहुत कम सहायक होगा । अपने तो इनकी खराब हालत देखने में ही घबराते है और बहुत कष्ट मालूम होता था । देश का एक बड़ा भाग किस ग़रीबी और कष्ट में दिन काट रहा है और अपने कितना ख़र्च करते हैं, किस तरह रहते है ? यह न्याय तो नहीं है पर अपने सोचते ही हैं कष्ट भी होता है पर होकर रह जाता है । अपने में साहस तथा धर्म नहीं कि इनकी हालत को दुखजनक समझकर इनके लिए त्याग करे । अपने शायद इस लायक़ ठहरते है कि देश का ग़म तो है पर आराम के साथ । कोई विशेष उन्नति होना तो मुश्किल है । यों तो थोड़ा बहुत अच्छे लोगों से मिलने जुलने की संगत से थोड़ा हो ही जाता है पर सच्ची भावना, सच्चा विचार, सच्ची लगन, सच्ची व्याकुलता हो तो उसका कुछ बड़ा फल भी होना चाहिए । वनस्थली से छह मील दूर चैनपुरा गॉव गये, हालत वनस्थली से अच्छी थी । हीरालाल जी का कहना है कि हमारे क्षेत्र में वनस्थली सबसे ग़रीब और चैनपुरा सबसे खुशहाल है पर अपने तो दोनो ही ग़रीब जँचे । फर्क है भी तो बहुत थोड़ा ।

६ सितम्बर अपने विषय की बात बाकी रह गयी थी वह की । शास्त्रीजी, बसन्तलालजी और अपने ने सब बातें पूरी तरह हर पहलु विचार करके की। अपने को तथा भाई बसन्तलालजी को आगे क्या करना चाहिए इस पर बात थी । पोद्दारजी ने कोई विशेष राय नहीं दी पर शास्त्रीजी ने पक्की राय दी कि खादी या स्त्री-शिक्षा का काम जो तुम्हें अपील करता है वह राजस्थान में ही करना चाहिए।

२ : जयपुर के विशिष्ट लोगों से भेंट

७ सितम्बर : जयपुर– हीरालालजी के साथ **जयपुर के विशिष्ट पुरुषों से** मिलने गये। **लक्खीराम जी वैद्य** आयुर्वेद के बहुत ही बड़े विद्वान् है उनसे मिले। बहुत प्रेमपूर्वक बात की। देश के सम्बन्ध में उनके विचार अच्छे हैं पर वह कार्य नही

कर सकते। जयपुर में आजकल जो उथल-पुथल हो रही है, अँगरेज़ों की प्रधानता बढ़ती जाती है, पुराने लोगों को हटा कर नये अनुभवहीन लोगों को राज के काम में भरती किया जा रहा है इन बातों का उनके दिल में काफ़ी दुख है पर यह शक्ति नहीं कि सामने आकर विरोध करें। हिन्दू-मुसलमानों के सम्बन्ध में उनके विचार वैसे ही हैं जैसे आजकल अधिकांश हिन्दुओं के हैं। वे अँगरेज़ों और मुसलमानों के विरोधी हैं। हीरालाल जी की बहुत प्रशंसा की और अन्त में अपना मकान जो हाल में बनाया है वह दिखाया। मकान सुन्दर और नये ढंग का है। फिर डॉक्टर दलजंग सिंह से मिले जो यहाँ के सब से बड़े और यशस्वी मेडिकल अफ़सर हैं। उनके ऊपर भी एक अँगरेज़ अफ़सर नियुक्त हो गया है। उन्होंने भी बहुत प्रेमपूर्वक बातें कीं, इतिहास तथा हिन्दुओं की सभ्यता के सम्बन्ध में कई मार्के की बातें कहीं। उन्होने कहा, आजकल ब्राह्मण बढ़ रहे हैं। जयपुर की मर्दुमशुमारी में ब्राह्मण बढ़े हैं। ये नामधारी बढ़ते हैं पर क्या करेंगे, किस को खायेंगे। इन क्षत्रियों ने ऋषि राज्य का अन्त कर दिया और मुसलमानो को यहाँ लाये, इन का बहुत बड़ा पतन हो गया है आदि।

वहाँ से **पं. मधुसूदन जी** के यहाँ गये जो वेद के बड़े भारी विद्वान् हैं, उन्होंने भी बहुत प्रेमपूर्वक बात की। वास्तव में बहुत ही ऊँचे विद्वान् मालूम होते हैं। किसी बात को कहते हैं तो बहुत प्रमाण सहित तथा ज़ोरदार शब्दों में बोलते हैं। वे भी जो नये परिवर्तन हो रहे हैं उनसे दुःखित तथा असन्तुष्ट हैं। उम्र उनकी क़रीब सत्तर है। बेचारे असन्तोष के सिवा क्या कर सकते हैं। इन तीन महानुभावों से मिल कर जयपुर के विषय में कई नयी बातें मालूम हुईं तथा मनुष्य की विशेषताओं का भी पता लगा।

८ सितम्बर: हरनारायण जी पुरोहित से मिलने गये। वह जयपुर राज्य के पुराने सेवक हैं। एक बार वे शेखावाटी की निजामत झुँझनू के नाजिम होकर गये थे और वहाँ बहुत लोकप्रिय हो गये थे। दुनिया की बहुत बातों की निगाह रखते हैं। जयपुर में रहते हुए भी इतनी ज़्यादा बातें जानते हैं, इतनी ज़्यादा फ़ाइलें, कटिंग उनके पास हैं कि वे किसी वक़्त पर बहुत काम दे जाती हैं। विचारक भी हैं, समझदार भी हैं।

उन्होंने एक बात ही विचित्र और नयी बतायी। आजकल ऐसी बातों के भेद खुलते जा रहे हैं। तो भी उनकी बात में विशेषता थी। उन्होंने कहा, गत बार लार्ड इरविन जयपुर आये थे तब एक मुसलमान सज्जन उनसे मुलाक़ात करने आये थे, उनसे वे मिले। वे चार-पाँच भाषाओं के तो जानकार हैं और सुन्दर नवजवान हैं, भारत सरकार से दस हज़ार रुपये माहवार पाते हैं। चार सौ रुपये महीने का सेक्रेटरी रखते हैं। फ़र्स्ट क्लास में सफ़र करते हैं पर सारा ख़र्च सरकार देती है। युक्त प्रान्त में वह काम करते हैं। उनके ज़िम्मे केवल युक्त प्रान्त ही है। ऐसे

लोग प्रायः हरेक प्रान्त में सरकार ने नियुक्त कर रखे हैं। इनका काम है कि हिन्दू-मुसलमानों में मतभेद बना रहे, इस तरह का प्रचार करना कि मेल न हो जाये। कितनी गहरी कूटनीति है यह। विष किस तरह और कैसे-कैसे तरीक़ों से हतभाग्य भारतीयों के खून में प्रवेश कराया जाता है। इस तरह के रोगों से कैसे छुटकारा मिल सकता है पर प्रभु की रचना के सामने रावण जैसों का नाश होते देर नहीं लगी तो इन बेचारों की क्या बिसात है। जिस दिन पाप का घड़ा लबालब भर जायेगा उस दिन फूटेगा ही। हरनारायणजी से बहुत बातें हुई, बड़ी प्रसन्नता हुई।

फिर **पुरोहित सर गोपीनाथ जी** से मिलने गये। हाल में राज की सेवा से उन्होने छुट्टी ली है। ऊँचे से ऊँचे पद पर रहे, उन से मिले तो उनकी सादगी और सरलता देख कर आश्चर्य हुआ। अनजान आदमी उनको घर का नौकर भी अनुमान कर सकता है। उनके यहाँ जो नौकर हैं वे उनसे अच्छे दीखते है। ख़ैर, उन्होंने भी प्रेम और नम्रता भरी बात की। कुछ गम्भीर है इसलिए कोई ख़ास विषय पर बात नहीं हुई, जनरल बातें हुई। उनका स्वास्थ्य ख़राब रहता है। उनकी बातों तथा रंग-ढंग से ऐसा मालूम होता था कि यह यात्री था अब थक गया है और विश्राम कर रहा है। भगवानदेवी, पन्ना, बसन्तलालजी आदि के साथ नवलगढ़, मुकुन्दगढ़ रवाना हुए। सात बजे गाड़ी नवलगढ़ पहुँची। भगवानदेवी, पन्ना को वहाँ उतार दिया। अपने बसन्तलाल जी के साथ मुकुन्दगढ़ गये।

३ : शेखावटी अंचल

९ सितम्बर: बसन्तलालजी की हवेली, बग़ीचा, कुआँ देखा। गगाबक्सजी की हवेली तथा विद्यालय देखा। विद्यालय की इमारत अच्छी है पर शहर के बिल्कुल बीच है इसलिए उपयुक्त नहीं। रामदेव जी के मेले की वजह से छुट्टी थी, लड़को को नहीं देख सके। औषधालय देखा वह अच्छा था, आयुर्वेद औषधियों का स्टाक अच्छा है। कन्या पाठशाला देखी वह तो नाम भर की है। मारवाड़ियों द्वारा कन्या पाठशालाओ की हालात कही अच्छी नहीं। इस गिरे हुए प्रान्त में तो अच्छी पाठशाला की आशा ही नहीं की जा सकती। नवलगढ़ रवाना हुए। रास्ते मे बहुत धूप थी। राजपूताने की धूप और रास्ते का ठीक बीस वर्ष बाद अनुभव हो रहा है। नवलगढ़ मे अपनी हवेली है। आठों हवेलियों में पहुँचे, सब बिल्कुल बेढंगी और बहुत छोटी-छोटी मालूम हो रही थीं। अपनी हवेली तो बहुत ख़राब मालूम हुई। यहाँ अपना दिल लगना मुश्किल है, यह भाव हुआ। सब जगह उदासी लगी। बसन्तलालजी साथ ही थे, ख़ैर, एक-दो जगह मिलने गये। रामदेव जी के मेले में गये। रामदेवजी

के दर्शन किए। भीड़ बहुत थी इसलिए चले आये। स्वर्गीय शिवदत्तरायजी की स्त्री से मिलने गये पर वह तीर्थों में चली गयी थीं। अपनी ससुराल सुरेका के यहाँ गये। अपने सेकसरियों में से बहुत आदमी आये. उनसे मिले। ब्रजलाल गोयनका जो कलकत्ता मे अपने साथ ही काम करता है वह तो साथ ही था। औषधालय, पुस्तकालय देखा। यह पुस्तकालय अपने सार्वजनिक काम मे सबसे पहले का है। एक प्रकार से प्यारी वस्तु है। पहले बहुत छोटा था अब अच्छा हो गया है । निज का मकान है वह अच्छा है, इस मकान को पहले पहल देखा । पुस्तकों की संख्या क़रीब चार हज़ार है । औषधालय तो बहुत ही विस्तृत हो गया है रोज़ दो सौ रोगी आते है, वैद्य ओंकारदत्तजी योग्य आदमी है ।

१० सितम्बर : नवलगढ़ विद्यालय के हेडमास्टर से मिले, विद्यालय बन्द था लड़कों को देख नहीं सके । हेडमास्टर अच्छे आदमी मालूम हुए । सुना है विद्यालय की उन्नति के लिए बहुत कोशिश करते है, इस बार रिजल्ट भी अच्छा रहा है। अपने सफ़ाई आदि के कई सजेशन दिये, वे उनको पसन्द भी आये । नवलगढ़ के ठाकुर मदनसिह जी के यहाँ जो सीनियर अफ़सर है उन से मिलने गये, बहुत प्रेम से मिले, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़े हुए है । बी ए., एल, एल. बी है चाहे तो नवलगढ़ मे बहुत सुधार कर सकते है ।

२७ सितम्बर : जयपुर से विदा हुए । तीस अगस्त को जयपुर पहुँचे थे, बीच मे कई जगह गये पर मुख्य स्थान जयपुर ही रहा । अपने इतने दिन इधर राजपूताने के किसी ग्राम या शहर मे नहीं रहे थे । **राजस्थान की स्थिति का पता लगा । जयपुर में पढ़े-लिखे लोग बहुत हैं, खाना-पीना रहना सस्ता है पर व्यापार कुछ भी** नहीं होने के कारण लोगो में दरिद्रता है, ज़्यादा आदमी राज के कामो से ही गुजर करते है, यहाँ के लोग राज पर ही निर्भर है, उनमे किसी प्रकार का जीवन और स्वाभिमान नहीं । लोगो को देख कर मालूम होता है जैसे रोगी हो । सचाई तथा ठीक पाबन्दी का बहुत अभाव है । लोगों की इच्छा रहती है कि किसी प्रकार ठग । दुकानदार, मज़दूर, गाड़ी -इक्के वालो से काम पड़ा. कहीं भी सच्चाई और बात के पक्के लोग नहीं मिले, चाहे इसका कारण अज्ञान और दरिद्रता ही हो पर यहाँ की जनता ब्रिटिश इण्डिया से बहुत पीछे है । राज का कानून इतना बुरा और स्वतन्त्रताहरण करने वाला है कि उसको बरदाश्त करना मनुष्यता को खोना है । राज का खर्च इतना बढ़ा हुआ है कि वह जल्द दीवालिया हो जायेगा । सारे राज के पदो पर अँग्रेज कब्जा करते जाते है । जिन पदो पर पहले यहाँ के लोग काम करते थे और उनको दो सौ पांच सौ रुपये वेतन देते थे आज उन्हीं पदों पर अँगरेज़ दो हजार और चार हज़ार ले रहे है । साधारण कर्मचारियों को हटाया जा रहा है । कहते है खर्च कम करना है और इन बड़े-बड़े सफ़ेद हाथियों को भरा जा रहा है । किसानो से अनाप शनाप लगान लेते है, वे ग़रीब होते जाते

हैं। जिस किसान के पास पाँच बैल थे उस के दो रह गये हैं। जिस घर में पाँच आदमी हैं उस में दो बाहर कमाने चले गये हैं तब भी पहले की अपेक्षा ज़्यादा दुःखी तथा गरीब हैं। सामाजिक हालत में जयपुर की जेवनार तो प्रख्यात है ही, छोटे बच्चों का विवाह करते हैं। **पाँच-छह साल के बच्चों का ब्याह तो आँखों से देखा, छह महीने तक के बच्चे का विवाह होता है। प्रधान रास्तों को छोड़कर और रास्ते काफ़ी गन्दे हैं। अपने लोगो का स्वास्थ्य यहाँ अच्छा नहीं रहा पर इस यात्रा से लाभ ही हुआ, ऐसा मानना चाहिए।** पहले अपनी इच्छा होती थी कि जयपुर में एक छोटा सा मकान बनवा लें पर यहाँ के कानून और काम दोनों को देखते हुए अपना यहाँ रहना कोई अच्छा नहीं होगा।

४ : राजस्थान में दरिद्रता (वनस्थली)

१ नवम्बर, १९३४ : हीरालालजी से कुटीर की स्थिति पर विचार करने अपने, भागीरथ जी तथा जाजूजी बैठे। हीरालालजी ने कुटीर की वर्तमान स्थिति तथा पहले के कार्य आदि पर अपने लिखित और मौखिक विचार प्रगट किये। कुटीर में हीरालालजी ने बड़ी लगन और कष्ट से काम किया है। इसमें अपने को कभी सन्देह नहीं था, और न है पर जैसी सफलता मिलनी चाहिए थी वैसी नहीं मिली। इसके अनेक कारण है। जिस क्षेत्र में उन्होंने काम शुरू किया है वह बहुत ही पिछड़ा है। यहाँ पर सार्वजनिक कार्य के रूप में किसी प्रकार का काम कभी हुआ ही नहीं है। इसके सिवा हीरालालजी के स्वभाव में कई गुण होने के साथ जो दोष हैं उनके कारण भी कार्य में बाधा लगी है। यहां के लोगों ने शास्त्रीजी को सेवक नहीं समझा, उनको बड़ा आदमी समझा और उनके लिए जो किया वह उनकी सेवा से प्रभावित हो कर नही बल्कि इसलिए किया कि वह बड़े आदमी हैं। अपने यहाँ दो बार पहले भी आये थे तब भी यह भावना देखी थी। शास्त्रीजी इन सब बातो को बरदाश्त करते थे और अपनी समझ में इन बातों को सहायक भी समझते थे। इसका परिणाम ठीक नहीं हुआ पर सब सोचने के बाद शास्त्रीजी को दोष देने का कोई कारण नहीं रहता। उन्होंने काम किया है और उसका परिणाम भी हुआ है और होगा। उनकी मदद करने वालों के लिए अफसोस या निराशा का कोई कारण अपनी समझ में नहीं है। शास्त्रीजी की सहायता की जरूरत पहले से ज्यादा है। वे निश्चय ही सच्चा काम करने वाले हैं। उनकी परिस्थिति पहले की अपेक्षा ख़राब है। नुक्ते की प्रथा बन्द करने का आन्दोलन करने से क्षेत्र के बहुत से हिस्सों में उनके विरुद्ध बग़ावत हो गयी है। पर तो भी निराश होने

का भी कारण अपनी समझ में नहीं है। काम जिस तरह चल रहा है उसको उसी तरह ज़ोरों से चलाने की आवश्यकता है। और काम शुरू करने के लिए उन्होंने पूछा, जैसे प्रचार का कार्य ज़्यादा ज़ोर से बड़े पैमाने पर किया जाये। कुटीर को हटाने या और किसी तरह का ख़ास परिवर्तन करने की आवश्यकता अपने को नहीं जँची। भागीरथजी और जाजूजी सभी लोगों की शास्त्रीजी के कार्य के प्रति सहानुभूति रही, उनका कार्य उचित लगा। शास्त्रीजी का विचार है १९३७ तक इस काम को ज़रूर ही करना है। जाजूजी की राय थी कि इसमें समय की लिमिट क्यों रखी जाये। शास्त्रीजी ने कहा, यह तो निश्चय किया हुआ है इसमें फ़र्क करना ठीक नहीं होगा। इस तरह दो घण्टे बात हुई। हीरालालजी की स्त्री रतनजी बहुत ही अच्छी हैं, योग्य भी हैं, काम भी बहुत करती हैं। व्यवस्था अच्छी करना जानती है। हीरालालजी जो काम करते हैं उसमें कष्ट-भोग की आवश्यकता है, वह सन्तोषपूर्वक सब करने को राजी मालूम होती हैं। शाम भोजन के बाद हीरालालजी द्वारा बनाये हुए गीत कुटीर, ग्राम के लोगों तथा स्त्रियों ने सुनाये। गीत बहुत ही भावना प्रधान थे, यहाँ की जनता के लिए शिक्षाप्रद थे। इन गीतों द्वारा प्रचार में सहायता अच्छी मिलेगी।

२ नवम्बर : वनस्थली से चार मील दूर गाँव मे शास्त्रीजी का काम होता है, वह देखने गये। अभी फ़सल का मौसम है सो कातना-बुनना बन्द है। ग्राम के लोगों से मिले। सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ के लोग कहने के लिए सब बातें स्वीकार कर लेंगे पर करने के समय पीछे हट जायेंगे। इसका भी पता नहीं लगता कि ये जिन बातों को स्वीकार करते है उनको करने के लिए कहते हैं या यों ही कहते है। कहते हें शास्त्रीजी बहुत अच्छे आदमी है, हमारा भला करने के लिए आये है, हमें अच्छी बातें सिखाते हैं पर कुछ देर बाद एक आदमी ने शास्त्रीजी की निन्दा की तो वे सब के सब प्रायः उसकी बात मानते चले गये। सौ की बात एक यही है कि अज्ञान का यहाँ पूरा-पूरा साम्राज्य है। शास्त्रीजी से कुटीर की स्थिति के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर हुए जिसमें यही तय हुआ कि कुटीर का कार्य जिस तरह और जिस नीति से चलता आया है उसी तरह चलता रहेगा। प्रचार का कार्य विशेष रूप से करने की बात भी तय हुई। क्षेत्र में जो भ्रम फैल गया है उसे हटाने के लिए अपनी जो नीति है उसका स्पष्टीकरण करना चाहिए तथा ग्रामों में जा-जा कर प्रचार करना चाहिए। आर्थिक स्थिति तो खराब है ही, शास्त्रीजी १९३७ तक किसी व्यक्ति विशेष से सहायता न माँगने वाली बात पर अटल रहना चाहते हैं।

कल शाम वनस्थली के निवासियों के घर देखने गये थे तब एक बड़ा दुखजनक अनुभव हुआ वह लिखे वग़ैर नहीं रहा जाता। एक घर में गये। घर का मालिक आँगन में खड़ा था। घरवाली टूटे हुए घर में थी, छोटी बच्ची पास में बैठी थी।

खेती का काम करते हैं, फ़सल से जो आता है वह न आये तो इन की तकलीफ़ों का कोई माप नहीं । बात करने में मालूम हुआ कि इनके पास एक थाली और एक ही लोटा है । पहनने के कपड़े तो बिल्कुल नहीं थे। रात में जाड़े में ओढ़ने के लिए फटे हुए गुदड़े थे, उनको देखा तो उनमें न मालूम कितने छेद थे । भोजन के बारे में बातें करने पर आदमी ने कहा, सुबह एक बार भोजन करते हैं, शाम रसोई नहीं बनाते तो उसकी स्त्री ने भीतर से उस बच्ची द्वारा कहलवाया कि नहीं, शाम को भी बनाते हैं । वह नहीं चाहती थी कि दूसरे लोग जानें कि उनके घर दोनों वक़्त रसोई नहीं बनती । इस बहन की बात सुन कर हृदय काँप उठा, मन इतना दुखित हुआ कि हृदय भर आया । अपने क्या कर सकते हैं ? केवल दुखित होने से क्या हो सकता है ? इसके लिए तो महान् प्रयत्न करना है । इसको तो बर्दाश्त करना ही पाप है । इसकी सृष्टि समदर्शी ईश्वर नहीं कर सकता। इसको स्वार्थी मनुष्य ने पैदा किया है, इसको मिटाना मनुष्यों का काम है । बहुत देर तक ऐसी बातें मन में चलती रहीं । शास्त्रीजी ने जिस मार्ग का अवलम्बन किया है वह बहुत तकलीफ़ उठाने, सुख त्यागने का मार्ग है। रत्नजी से पूछा, इस स्थिति से आप को सन्तोष है ? उन्होंने कहा, यह तो अपनी पैदा की हुई स्थिति है, इसमें असन्तोष की तो कोई बात ही नहीं । खाने को रोटी, पहनने को कपड़े तो मिलेंगे ही । शास्त्रीजी ने एक प्रकार से बरबादी के मार्ग का अवलम्बन कियाँ है। रतनजी ने शास्त्रीजी का पूरा साथ दिया है । रतनजी के प्रति अपने मन में शुरू से बहुत अच्छी भावना रही है पर इस बार और श्रद्धा के रूप में बढ़ी । कुटीर को भागीरथ जी ग्यारह सौ और मोतीलाल जी चोखानी ने पाँच सौ देने का वादा किया । सहकार सभा को एक हजार रुपया अपने उधार देने को कहा है, इस प्रकार कुछ दिन तो उनका काम चल जायेगा।

५ नवम्बर, मुकुन्दगढ़ : भागीरथजी के स्कूल में जाजूजी का व्याख्यान था। चार बजे बोर्डिंग देखने गये । स्काउटों की रैली करायी गयी, उसमें गये । यहाँ महिलाओं की एक सभा करने का विचार चल रहा है, इस की सूचना गंगादेवी द्वारा दिलायी गयी । यहाँ के लिए आश्चर्य की बात थी पर अपने लिए यही बात सुख की थी ।

६ नवम्बर : यहाँ से दो मील दूर चूड़ीग्राम घूमते हुए गये वहाँ एक सार्वजनिक पुस्तकालय देखा । दीपावली का पूजन किया ।

७ नवम्बर : भागीरथजी के स्कूल में दीपावली प्रीति सम्मेलन था । यहाँ के ठाकुर बाघसिंह जी को भी बुलाया गया । प्रीति सम्मेलन यहाँ के लिए बिलकुल नयी चीज़ थी । ठाकुर बाघसिंह आये, उनको सभापति बनाया गया । अपना व्याख्यान लोगों को अच्छा लगा । मालूम होता था, यहाँ की जनता में ज्ञान और जान दोनों नहीं हैं । यहाँ तो सेठ लोगों की पाठशालाएँ और विद्यालय हैं । शेखावाटी के

लोग कलकत्ता, बम्बई आदि शहरों में रहते हैं और उन्होंने अपनी कीर्ति के लिए पहले तो यहाँ धर्मशाला, कुँए आदि बनवाये, आज नये विचारों की लहर के थोड़े छींटे जिनको लगे हैं वे पाठशाला, विद्यालय आदि खोल रहे हैं पर उन धर्मशालाओं की जैसी व्यवस्था है वैसी ही करीब-करीब इन स्कूलों आदि की। अपने को यहाँ रहना नहीं और ऐसी कोरी बातों से कुछ होने वाला नहीं !

लोक जागरण

१४ नवम्बर, मुकुन्दगढ़ : नवलगढ़ में अड़तालीस घण्टे रहे, वे बिल्कुल काम करते हुए बिताये। समय थोड़ा था, बहुत लोगों से मिलना था, इसलिए सारा समय काम में रहे। संस्थाएँ देखीं। नवलगढ़ के प्रति पहले की अपेक्षा अपना आकर्षण बढ़ा है। थोड़ी जागृति मालूम हो रही है। नवलगढ़ के कुछ लोग भावना वाले मालूम हो रहे हैं पर काम करने का ठीक मौक़ा नहीं पा रहे हैं। एक बजे मुकुन्दगढ़ पहुँचे। आज स्त्री-पुरुषों की सम्मिलित सभा थी, उसका काम किया। लोगों में काफी वहम और अज्ञान है, यहाँ कभी कोई मीटिंग नहीं हुई। स्त्री - पुरुषों को सम्मिलित कर के सभा तो शायद शेखावाटी के किसी ग्राम में नहीं हुई। मीटिंग का समय हुआ पुरुष तो काफी संख्या में आ गये, कुछ बहनें भी साहस करके आ ही गयीं, इसलिए सभा अच्छी हो गयी, उपस्थिति बहुत अच्छी हो गयी, यहाँ की स्थिति और पहली सभा थी, इसको देखते हुए स्त्रियाँ भी काफी आयीं। एक बहन को ही सभानेत्री बनाया गया। एक बात बीच में छूट गयी–जयपुर राज्य के थानेदार को ख़बर मिली कि कोई बहुत बड़ी सभा हो रही है और दंगा होने की आशंका है इसलिए उनसे झुंझनू से लोग बुला लिये। वहाँ से दो अफ़सर और एक प्यादा आया। कहने लगे, जयपुर राज्य में कोई भी सभा बिना इजाजत नहीं हो सकती। उस को समझाया कि यह हम लोगों की सामाजिक सभा है, इसका राज्य के कामों और किसी दूसरे क़ामों से सम्बन्ध नहीं है। आप लोग उपस्थित रहिए, कार्रवाई को देखते रहिए। जैसे-तैसे वह राजी हुआ। ये सब बातें बहुत अखरीं पर उपाय क्या था ? इस जगह काम करना कितना कठिन है। हीरालाल जी के व्याख्यान के बाद भागीरथ जी की स्त्री गंगादेवी ने एक छोटा सा लिखित व्याख्यान पढ़ा। इसके बाद सुशीला (विनायक) हिम्मतसिंह का ने परदे के विरोध में छोटा सा लिखित व्याख्यान पढ़ा। इस जगह यह सब असाधारण था और इन लोगों का साहस ग़जब का साहस कहा जा सकता है। अपने को बहुत खुशी हुई, यात्रा सफल मालूम होने लगी। अपना व्याख्यान लोगों को पसन्द आया। समाज सुधार सम्बन्धी एक छोटा सा नाटक दिखाया गया जिस का भी अच्छा प्रभाव पड़ा। सभा सानन्द समाप्त हुई, किसी प्रकार का विघ्न नहीं हुआ, यह ईश्वर की कृपा थी।

१५ नवम्बर : गाड़ी रींगस पहुँची। रामेश्वर जी अग्रवाल ने रींगस उतारने

की बात पहले ही ठीक कर रखी थी, उनका आग्रह था कि कल इसी गाड़ी से जायें, चौबीस घण्टे का समय रींगस में लगायें। अपने को जल्दी थी इसलिए जो कुछ देखने और बात करने का काम था वह रात में इस समय ही करना तय हुआ। तुरत काम में लग गये, सब से पहले यहाँ हरिजन पाठशाला देखी, वह बहुत अच्छी थी। लड़के होशियार तथा बुद्धिमान मालूम हुए। साफ़-सुथरे थे, स्थान भी साफ़ था। इसके बाद कन्या पाठशाला देखी। लड़कियों की उपस्थिति तो ठीक थी पर पढ़ाई लिखाई नहीं। लड़कियाँ मैली थीं, गहने पहने हुए थी अध्यापिका में कोई दम नहीं जँचा। फिर पुस्तकालय देखा, यह नया है। इसमें मामूली पुस्तकें हैं तथा समाचार पत्र भी कम आते हैं। फिर औषधालय देखा, दवाओं का स्टाक काफ़ी था। वैद्य जी सार्वजनिक प्रवृत्ति वाले आदमी हैं। रामेश्वर के दादा जी के यहाँ भोजन किया। वह बूढ़े और पुराने आदमी हैं, उनका प्रेम तथा भावना बहुत सन्तोष देने वाली थी। रींगस के कार्यकर्ताओं को इकट्ठा करवाया। रींगस में एक कन्या बोर्डिंग खोलने की बात चली। जमनालाल जी की भी राय है। निश्चय हुआ जमनालाल जी से पूछ कर इस की व्यवस्था मूलचन्द जी करें। दूसरी बात जयपुर स्टेट के रहने वाले, सार्वजनिक कामों में रुचि रखने वाले युवकों के लिए एक युवक सम्मेलन किया जाये। इस के बाद और भी कई बाते हुई, परस्पर का परिचय हूआ।

५ : रींगस युवक सम्मेलन

२८ दिसम्बर, रींगस १९३४ : छह बजे गाड़ी पहुँची। स्वयसेवकों के साथ स्वागत समिति के ऑफ़िस गये। सम्मेलन में जो प्रस्ताव उपस्थित किये जाने वाले हैं उनको देखते रहे।

२९ दिसम्बर . सर्दी इतनी भयंकर थी, बाहर निकलने का साहस नहीं होता था। बसन्तलालजी छह बजे की गाड़ी से आने वाले थे, स्टेशन गये। बसन्तलालजी का जुलूस निकाल गया। यहाँ स्थानीय जनता का सहयोग नहीं है। सम्मेलन में हरिजनों के भाग लेने का खास विरोध है। लोगों को समझाने की कोशिश काफ़ी की गयी पर जनता के अज्ञान के कारण यह सफल नहीं हुई। जनता का सहयोग न होने पर भी सम्मेलन का कार्य बड़े उत्साह से हो रहा है, आसपास के ग्रामों के लोग काफ़ी संख्या में आये हैं। शेखावाटी में जाटों की जागृति हुई है उस के कारण जाट भी खूब आये हैं। स्थानीय कार्यकर्ता सब के सब दिन-रात काम

में लगे रहते हैं। भोजन का प्रबन्ध अपने लिए तो बिलकुल बेकाम ही है। खाने-पीने के मामले में अपने निहायत ख़राब आदमी हैं, आदतें बहुत ही बुरी हैं और ये हर समय तकलीफ़ देने वाली हैं। कई बार तो ऐसा मालूम होता है कि ये आदतें एक प्रकार की पाप हैं, यह अनुभव करते हुए भी अपने इनको अभी तक नहीं छोड़ सके हैं। दो बजे युवक सम्मेलन का कार्य आरम्भ हुआ। स्वागताध्यक्ष तथा सभापति बसन्तलालजी के भाषण हुए। अर्जुनलालजी सेठी आये थे, उनका बहुत सुन्दर भाषण हुआ। सेठी जी से और कई तरह की बाते हुईं। एक दिन इस आदमी ने देश के लिए फ़कीरी ली थी और इसके मन में बड़ी भारी आग थी पर आज तो कष्टों के कारण इस आदमी मे कुछ नहीं रह गया है तो भी इसका ज्ञान, इसके विचार बड़े हैं। काम करने का तरीक़ा ठीक न होते हुए भी, शक्ति न होते हुए भी यह आदमी साधारण आदमियों से तो बड़ा है ही।

३० दिसम्बर : सम्मेलन का स्थायी संगठन होना आवश्यक समझा गया और इसके कार्यकर्ता तथा एक वर्ष के ख़र्च की व्यवस्था हुई। ख़र्च सात सौ रुपये समझा गया जिस मे चार सौ रुपये कलकत्ता से भेजने का भार बसन्तलालजी और अपने ऊपर रहा। तीन सौ रुपये यहाँ के लोग जयपुर राज्य मे रहने वाले लोगो गे इकट्ठा करेंगे। एक महिला आश्रम की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। बीस लड़कियों को रखने का विचार करके एक आश्रम खोलना तय हुआ। इस में प्रारम्भिक ख़र्च दो सौ रुपये और मासिक ख़र्च करीब एक सौ पच्चीस रुपये लगेगा जिसमें पचास रुपये महिला मण्डल की तरफ़ से जमनालालजी देंगे। यहाँ पर आये लोगों से बाते करने पर एक वर्ष के लिए दस लड़कियों के खाने का ख़र्च देने वाले लोग मिल गये, दस लड़कियों का बन्दोबस्त अपने और बसन्तलालजी पर रहा। प्रारम्भिक दो सौ रुपये में सौ यहीं इकट्ठा हो गया, सौ रुपये का भार अपने और बसन्तलालजी पर रहा। इस प्रकार आश्रम की स्थापना करना तय हुआ। शेखावाटी में जाटों में जो जागृति हुई है वह अपूर्व कही जा सकती है। इस जागृति से शेखावटी तथा आसपास में अच्छा काम हो सकने की आशा है पर इस को ठीक दिशा में चलाने वाले अच्छे योग्य आदमी की ज़रूरत है। वह आदमी कोई है कि नहीं, इसका अपने को मालूम नहीं हो पाया। कई जाट भाई आये थे, उनमें मामूली पढ़े-लिखे तथा काम करने वाले भी कई लोग थे उनसे बातें कीं। वे बड़ी लगन तथा उत्साह से काम कर रहे हैं, यह भी मालूम हुआ। वे कष्ट उठाने के लिए भी तैयार हैं, उनका संगठन भी काफी अच्छा हो गया है। पर सब बातों के होते हुए भी इस संगठन की बुनियाद जाति-पाँति के ऊपर खड़ी है। यह सबसे बड़ा खतरा मालूम होना है। एक तो जाति के नाम पर काम करने से सार्वजनिक भाव पैदा नहीं होता और फिर जाति के मुख्य लोग किसी

कारण से विरोधियों से मिल जायें, या और किसी तरह का कारण हो जाये ऐसे आन्दोलनों को फ़ेल होते देर नहीं लगती। इसलिए इस जागृति से लाभ की जगह हानि होने का भी डर है। इसको ठीक चलाया जा सके तब यह बहुत ही ज्यादा काम की हो सकती है।

एक बजे सम्मेलन की कार्यवाही शुरू हुई। बाल विवाह के विरोध तथा विधवा-विवाह और समाज सुधार के पक्ष में कई प्रस्ताव पास हुए। आगे जयपुर का निमन्त्रण स्वीकार हुआ। स्थाई संगठन करना तय हुआ। छः बजे सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त हुई। रींगस के लोगों ने बिल्कुल भी सहयोग नहीं दिया। इस बात को भुला दिया जाय तो हर तरह से सम्मेलन सफल माना जा सकता है। रात को सब संस्थाओं की तरफ़ से बसन्तलालजी को मानपत्र दिया गया। कार्यकर्ताओं का परस्पर परिचय कराया गया। इस यात्रा में एक नये सज्जन से परिचय हुआ, जिनका नाम जयनारायणजी व्यास है। यह आदमी अपने को ठीक लगा, योग्यता है, उत्साह है, कष्ट सहने की ताक़त और इच्छा है, थोड़ी मस्ती भी है। इनकी तरफ़ अपना आकर्षण हुआ। आजकल यह तकलीफ़ में है, इनकी मदद करना ज़रूरी मालूम होता है, अपनी शक्ति देखते हुए अपने नहीं कर सकते इसलिए मन मसोसकर रह गये। इस सम्मेलन में शरीक होने के कारण काफ़ी ज़िम्मेवारी और खर्च अपने ऊपर आ गया, ऐसे मौको में यह होता ही है। थोड़ा आमोद-प्रमोद था, रात के दो बज गये, पर रहा बड़ा अच्छा।

१९ अक्तूबर, १९३६ सीकर : भागीरथजी के साथ जयपुर रवाना हुए। अपने रास्ते में सीकर ठहर गये। पूज्य जमनालालजी के पास गये। ऐसे तो पूज्य जमनालाल जी बराबर ही अपने को प्रेम करते है पर इस बार इन कई दिनों के साथ में उनके प्रेम का अपने ऊपर काफ़ी असर हुआ। वे वास्तव में अपने को प्यार करते हुए मालूम होते रहे, हर समय हर बात में अपना ख़्याल तथा सँभाल रखते थे। शाम गाड़ी में वे सीकर दिखाने ले गये, अच्छा शहर है, अच्छी-अच्छी इमारतें बनी हुई हैं, आजकल अँगरेजों का जमाव हो जाने से शहर की बाहरी चमक-दमक तथा ढंग-ढाँचा और भी सुधर गया है। परन्तु प्रजा की तकलीफें तथा शासन में गोलमाल आदि तो बढ़ी ही है राजा तो बहुत कमज़ोर दिल का आदमी है और अँगरेज़ अपना पंजा यहाँ पर जमाना ही चाहते हैं। इसलिए यहाँ गोलमाल तो काफ़ी चल रही है, ऐसा मालूम होता है कि शेष में राज्य अँगरेजों के अधीन होकर उनकी इच्छा से चलेगा। महाराज लोग बैठकर रोटी खायेंगे।

६ : वनस्थली उत्सव

२० अक्तूबर, : वनस्थली रवाना हुए । रास्ते में कई जगहों से और लोग शामिल हुए । गोविन्दगढ़ से चरखा संघ के प्रधान कार्यकर्ता श्री देशपाण्डे आये थे । उनकी स्त्री उनको पहुँचाने आयी थी । कई लोग आये पर किसी की स्त्री नहीं आयी । राजपूताने के लोगों में अन्य प्रान्तों के लोगों से बहुत फ़र्क़ है, यहाँ के लोग भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों से बहुत पिछड़े हुए मालूम होते हैं । साढ़े बारह बजे निवाई पहुँचे, वहाँ से बैलगाड़ी में वनस्थली के लिए चले। थोड़ी दूर से हीरालालजी ने जो तम्बू आदि लगाये थे वे दिखाई देने लगे । रात में शिक्षा-कुटीर का उत्सव था, उस में शरीक हुए । जयपुर से भी प्रसिद्ध लोग और सार्वजनिक कामों में भाग लेने वाले लोग आये थे । चार पाँच कोस तक के किसान भी आ गये थे, क़रीब तीन हज़ार आदमी होंगे जिसमें क़रीब ढाई सौ तो हीरालाल जी के मेहमान ही थे । प्रबन्ध ठीक नहीं था । एक तो ग्राम में प्रायः किसी भी चीज का मिलना दूभर होता है । दूसरे, हीरालालजी अच्छी व्यवस्था करने की परवा नहीं करते । उत्सव की कार्यवाही शुरू हुई, गोपीनाथ जी जोशी को सभापति बनाया गया था। शेष में लड़कियों ने 'अँधेर नगरी चौपट राजा' नाटक भी दिखाया । हीरालालजी से बातें की, उन्होंने सब मित्रों और साथियों के साथ बैठकर अपनी बातें कहीं तथा स्थिति बतायी और वे आगे क्या करना चाहते हैं यह भी बताया और लोगों की आगे के कार्यक्रम पर राय भी माँगी । अपने को उन की बातों में काफ़ी उतावलापन, झुंझलाहट और रोष मालूम हुआ। जयपुर जैसी हालत में स्वाभिमानी आदमी को पग-पग पर अपमान, लांछन और तिरस्कार सहना पड़ता है तथा अपनी मनोभावनाओं को दबाना पड़ता है। इस व्यवस्था के प्रति रोष आना और उतावलापन होना स्वाभाविक है पर मुख्य बात यह है कि अपनी शक्ति कितनी है, कितना सहयोग मिलने वाला है, साथी कैसे हैं आदि बातों पर विचार करना चाहिए कूदना जरूर चाहिये । पर आग में कूदकर हम क्या कर सकेंगे, यह भी देखना चाहिये। जयपुर राज्य में अभी हीरालालजी ने जो शक्ति इकट्ठी की है उससे राज्य से किसी प्रकार की लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती । जनता के अन्दर प्राण पैदा करना चाहिए। हीरालालजी ने प्राण फूँकने का काम किया है। फलस्वरूप थोड़ी चेतना भी आयी है पर वह मोर्चा लेने लायक़ नहीं । कारण अभी तक उन्होंने किसानों तथा यहाँ के लोगों के साथ जो काम किया वह प्रायः आर्थिक-भित्ति पर किया। अभी कुछ दिन राजनीतिक ढंग पर उनके दुःखों का क्या कारण है आदि समझाना चाहिए। उन दुःखों को दूर करने की प्रबल उत्कण्ठा तथा प्रतिकार करने के परिणामस्वरूप और भी जो भयंकर दुःख उठाने पड़ेंगे उनको खुशी से सहने की ताक़त जब तक

न दिखाई दे तब तक चौड़े चैलेंज के रूप में आन्दोलन नहीं करना चाहिए। इधर दो-तीन घटनाएँ हो गयीं जिनके कारण हीरालालजी उत्तेजित से हो गये। निश्चय ही ये घटनाएँ उत्तेजित करने वाली हैं पर क्या किया जाये ? इनका सच्चा प्रतिकार तो हमारी शक्ति पर निर्भर करता है। हीरालालजी भी किसानों का ही संगठन करना चाहते हैं पर वे जिस तरह संगठन करने जा रहे हैं उस तरह राज्य उन को आगे नहीं बढ़ने देगा। शिक्षा कुटीर का कार्य भी यहाँ वनस्थली में चल सकेगा, इसकी बिलकुल उम्मीद नहीं है, राज्य की ओर से बाधा तो लगेगी ही, इस के अलावा यहाँ और भी असुविधाएँ हैं। हीरालालजी के बिना रतन जी आदि इस काम को अपनी समझ में नहीं चला सकतीं। आर्थिक सवाल के सिवा भी वे अभी उसका पूरा भार लेने के योग्य नहीं हैं। इसलिए हीरालालजी जो कुछ करने की सोच रहे है और उन्होंने जो आगे पैर बढ़ा दिया है, वह अपने को ठीक नहीं लगता। यह सब बातें होते हुए भी अपना उन के प्रति प्रेम और विश्वास है। उनके त्याग तथा मर मिटने की चाह के प्रति श्रद्धा है। वे चाहें जो कुछ भी करें, उसमें सचाई है। देश का भला करें तो वह बिल्कुल व्यर्थ कैसे जा सकता है ? परमेश्वर उनको सफल करे, यही प्रार्थना है।

२१ अक्तूबर : लड़कियों का खेल शुरू होने वाला था, उसमे गये। लड़कियों ने गरबा नृत्य, घोड़े की सवारी, साइकल चलाना आदि खेल अच्छी तरह दिखाया। बारह महीने के समय में नयी संस्था के द्वारा और ऐसे स्थान में जहाँ हर प्रकार की कठिनता ही कठिनता है इतना काम कर लेना, मिडल क्लास चालू कर देना, चालीस लड़कियों का आश्रम में रहना, इस पिछड़े प्रान्त में इतना सब कर लेना निश्चय ही बड़ी सफलता है। दो तीन बहनों के व्याख्यान हुए जिनमें एक सुशीलादेवी जौहरी का व्याख्यान बहुत ही सुन्दर हुआ। पुरूषों में भी एक व्याख्यान अपना ही हुआ। शिक्षा कुटीर का उत्सव समाप्त हो गया और दोपहर को जीवन-कुटीर का उत्सव था। एक बजे जीवन-कुटीर का कार्य आरम्भ हुआ जिसके सभापति पूज्य जमनालालजी थे। हीरालालजी ने रिपोर्ट पढ़कर सुनायी जिसमें इस वर्ष का पूरा विवरण तथा इन साढ़े सात वर्षों में जीवन-कुटीर के कामों का जिक्र था। रिपोर्ट सचाई के साथ लिखी गयी थी। रिपोर्ट पढ़ते समय तथा अपनी और बातों को कहते हुए हीरालालजी विकल हो गये। उनकी आँखों में आँसू आ गये। राज्य की कार्रवाइयों से वे दुखित, उत्तेजित, घबराये हुए तथा क्रुद्ध थे, विकलता और बेबसी अनुभव कर रहे थे। पिंजरे में पक्षी जिस तरह छटपटाता है वैसी छटपटाहट उनमें मालूम होती थी और वे अपने साथियों, मित्रों तथा किसानों से अपनी तरह मर मिटने की तथा मर मिटने वाले काम में सहायक होने की एक मौन-सी अपील कर रहे थे। इसके बाद कई लोगों के व्याख्यान हुए, सबके सब राजनीतिक थे। जो लोग राजनीतिक बातों से खूब डरा करते हैं वे बिल्कुल राजनीतिक

व्याख्यान दे रहे थे, हीरालालजी के काम में सहायता देने और राज्य की मनमानी का प्रतिकार करने की बात कह रहे थे। इसका मुख्य कारण हीरालालजी का वह दुखभरा व्याख्यान था। शेष में पूज्य जमनालालजी का भाषण हुआ, वे होशियार, जिम्मेवार तथा कर्तव्यशील आदमी है, उत्तेजित नहीं होते। उनका व्याख्यान गम्भीर, -उदार, समझदारी और उत्तरदायित्वपूर्ण था। इसके बाद विदाई का गीत गाया गया। गीत में फिर जल्दी आने और सँभाल लेने की अपील की गयी थी, गीत स्वयं हीरालाल जी का जयपुर की बोली में बनाया गया था। जीवन-कुटीर के उत्सव का कार्य भी समाप्त हुआ। सबसे मिल कर जयपुर जाने वाली लारी में बैठे।

२७ अक्तूबर, मुकुन्दगढ़ : शाम भागीरथ जी के स्कूल के हेडमास्टर का इंगलैण्ड के अनुभव बताने के लिए व्याख्यान था, उसमें गये।

२८ अक्तूबर : भागीरथजी के साथ स्टेशन गये, हीरालालजी को ले कर आये। रात में हीरालालजी से बातें होती रहीं। यदि हीरालालजी को सज़ा हो जाये तो उस हालत में शिक्षा कुटीर का कार्य चलाने की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर आयेगी। हीरालालजी के साथ जो सम्वन्ध है तथा स्त्री शिक्षा के कार्य के प्रति अपनी जो श्रद्धा है उस को देखते हुए यह काम उन की अनुपस्थिनि में उजड़ जाये या रतन जी यह अनुभव करें कि शास्त्री जी के न होने के कारण काम उजड़ रहा है तो अपने लिए शर्म की बात होगी इसलिए हीरालालजी से बातें करते समय अपने मन मे यह हो रहा था कि हीरालालजी की अनुपस्थिति में शिक्षा कुटीर की सम्पूर्ण ज़िम्मेवारी लेना अपना कर्तव्य और धर्म है।

२९ अक्तूबर : जवाहरलाल जी की जीवनी हिन्दी मे छप गयी है, वह पढ़ी। इस को पढ़ने की बड़ी आतुरता था पर अँगरेज़ी न जानने के कारण नहीं पढ़ सके। हिन्दी की पुस्तक देहली से पत्र दे कर बड़ी कोशिश से मँगायी। पहला संस्करण बिक चुका था और दूसरे के निकलने में देर हो गयी। हीरालाल जी से बातें होती रहीं। यदि उन को जयपुर स्टेट से बाहर निकालने की बात हो तो एक बार मामला करके देखना चाहिए। शिक्षा कुटीर को तो वहाँ से हटाना ही है पर जयपुर वालों का आर्डर न मिलने तक वनस्थली में रहे फिर अजमेर के पास हटूंडी ठीक रहेगा।

७ : सेवासदन का वार्षिकोत्सव

३० अक्तूबर, लक्ष्मणगढ़ : भागीरथजी, हीरालालजी के साथ लक्ष्मणगढ़ रवाना हुए, वहाँ सेवा-सदन नाम की संस्था का वार्षिकोत्सव हीरालालजी के सभापतित्व में था। वहाँ पहुँचे तो मण्डल के कार्यकर्ताओं से मालूम हुआ कि यहाँ पुराने विचारों के लोगों का ही जोर है और वे इस उत्सव तथा सेवा-सदन का बड़ा विरोध कर रहे हैं और हमारे कार्य में काफ़ी असुविधा हो रही है। पुराने विचार के लोगों का विरोध स्वाभाविक है, उनके विरोध को सहने की शक्ति नवयुवकों में होनी चाहिए पर सेवा-सदन के मेम्बर विरोध के कारण ढीले हो गये हैं। दो-तीन युवक हैं जो डटकर काम करना चाहते हैं। सदन देखने गये, एक छोटी सी दुकान में कुछ पुस्तकें थीं, पाँच-सात समाचार-पत्र आते हैं जिनको आकर कुछ लोग पढ़ते हैं, यही सदन का रूप है। ख़बर आयी है कि जहाँ उत्सव करने की बात थी वह जिस सेठ की जगह थी उसने उस नोहरे का ताला बन्द करा दिया है। यह निश्चय हुआ कि सदन के सामने जो रास्ता है वहीं पर किया जाये। इसके लिए सरकार से यानी थानेदार, तहसीलदार से आज्ञा ली जाये। पता चला कि आज्ञा माँगने पर वे नहीं दे रहे हैं तब अपने, भागीरथजी और यहाँ के कार्यकर्ताओं के साथ तहसीलदार से मिले। बाज़ार से गये, वहाँ काले झण्डे लगाये गये थे तथा एक नोटिस भी निकाला गया था जिसमें अपने लोगों के बारे में अंटसंट लिखा था, जनता से कहा गया था कि वह उत्सव में भाग न ले। तहसीलदार ने मीठी-मीठी बातें कीं, कहा, "कागज -पत्र देख कर आध घण्टे में कहूँगा कि क्या करना चाहिए।" अपने लोगों ने निश्चय कर लिया कि बाहर नहीं करने देंगे तो भीतर कर लेंगे, पर करेंगे। यहाँ के लोग अनुभवहीन तो थे ही फिर यह तूफ़ान हो गया। बाहर से पचास-साठ जाट आये। आजकल जाटों में जागृति है। कोई आये न आये पर ये तो आ ही जाएँगे। बेचारे बड़ी दूर से, ख़र्च करके, कष्ट उठाकर आते हैं। सदन के प्रधान कार्यकर्ता मन्मथमिश्र के भाई सम्पतमिश्र आये और बड़े विनीत शब्दों में कहने लगे कि तहसीलदार साहब ने कहलवाया है कि मैंने सेठ जी से वही नोहर माँग लिया है और आप लोग कृपा कर उत्सव वहीं करें। इसी में सदन का हित है। सेठ भी राजी हो गया है यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो सदन को आगे जाकर बहुत हानि होगी यह सब को जँचा कि ठीक है। ख़ासकर हीरालालजी की यह राय रही। उसी स्थान पर उत्सव करना तय हुआ। ढ़ाई बज गये और कुछ भी होने का ढंग नहीं हुआ, नोहर में कूड़ा - करकट ही साफ़ हो रहा था। अपने लोगों से कहा गया वहीं चलिए, थोड़ी देर सेठ जी के पास बैठिए इतने में तैयारी हो जायेगी। सेठजी के यहाँ जाने की

बात अपने और दूसरे लोगों को नहीं जँची। नोहर गये, किसी तरह बैठने लायक़ जगह बनाकर बैठे तो सेठ का हुक्म आया कि जब तक तहसीलदार मेरे पास आकर या लिखकर नहीं कहेगा कि इनको नोहर दो, तब तक मैं यहाँ उत्सव नहीं होने दूँगा। यह बात अपने को तो बहुत बुरी लगी। तहसीलदार के पास आदमी गया। तहसीलदार के साथ तलवार, बन्दूक़, लाठी से सजे लगभग बीस सिपाही, थानेदार और न मालूम कौन-कौन लोग आये और दरवाज़े, बग़ल के मकान की छत तथा भीतर और बाहर सब तरफ़ तैनात हो गये। तहसीलदार ने कहा, "क्या-क्या कार्य होगा उसकी सूची, बाहर से आये लोगों के नाम तथा किस-किस का व्याख्यान होगा आदि सब बातें लिख कर दीजिए और यह भी लिखकर दीजिए कि कोई भी राजनीतिक बात इस सभा में नहीं होगी।" व्याख्यान देनेवालों में अपना नाम था इस पर उसने एतराज किया, कहा कि यह व्याख्यान नहीं दे सकेंगे, मेरे पास ऊपर से लिखा हुआ आया है। बड़ी मुश्किल से कशमकश में साढ़े तीन बजे कार्य शुरू हुआ। रिपोर्ट आदि पढ़ी गयी, इसके बाद दो मिनट के लिए अपने भी बोले। हीरालालजी का व्याख्यान हुआ, पाँच बजे क़रीब कार्य समाप्त हुआ।

यहाँ हो क्या रहा था जिसके लिए इतनी शंका, इतना प्रबन्ध और इतने आर्डर पर आर्डर दिये जा रहे थे। एक तरह तो हंसी भी आती थी पर जब अपने को न बोलने को कहा गया तब तो बरदाश्त नहीं हो सका और अपमान मालूम होने लगा। अपना क्या अपमान था, एक सार्वजनिक कार्य का अपमान था। यह तो मनमानी थी, इसे मानना मन नहीं चाहता था और यहाँ के कार्यकर्ता बेचारे वैसे ही डर रहे थे। वे पुलिस का प्रतिवाद करने की ज़िम्मेवारी नहीं ले रहे थे, नहीं तो स्थगित करने का विचार था। यहाँ की जनता का विरोध तो खूब प्रेम से सहा जा सकता था वह तो और विरोध करें तो भी एक प्रकार का आनन्द आता है पर पुलिस की मनमानी हुकूमत सहने में कष्ट होता था। सदन के कार्यकर्ता बिल्कुल अनुभवहीन थे, किसी प्रकार की कार्रवाई करने में वे न तो समर्थ थे और न हिम्मतवर। उनकी कठिनाइयों के कारण उनको कुछ कहने की इच्छा नहीं होती थी। शेखावाटी के शहरों में लक्ष्मणगढ़ बिलकुल पिछड़ा हुआ और कट्टरता का किला है पर तो भी जो स्थिति देखी उसकी आशा नहीं थी। ख़ैर साढ़े पाँच बजे फतेहपुर रवाना हुए, पौने सात बजे वहाँ पहुँचे। श्री सोहनलाल दूगड़ के यहाँ गये। बड़े प्रेम से आवभगत की, अपनी हवेली आदि दिखायी। पैसे वाला आदमी है इसलिए मकान आदि अच्छे बनाये हैं पर देखने में अपने को तो बिल्कुल भी आनन्द नहीं आया। और भी जान-पहचान के काफ़ी लोग थे, उनसे मिले, सब लोग अपनी हवेलियाँ दिखाते थे और बदले में प्रशंसा सुनना चाहते थे। अपने को भी शिष्टाचार के लिए हाँ-हाँ करना ही पड़ा। बाहर के लोगों का धन लूट कर महल खड़े किये हैं। वहाँ के लोग भूखों मरते हैं और ये वहीं से धन ला-

ला कर यहाँ पर ऐश-आराम और नामवरी के लिए तथा दूसरे यहाँ के ग़रीबों की छाती पर मूँग दलने के लिए बड़े-बड़े और ऊँचे-ऊँचे महल खड़े कर रहे हैं। ये मकान प्रायः ख़ाली पड़े रहते हैं तो भी और बनाये जा रहे हैं। इन सबको देखकर आश्चर्य और एक प्रकार का कौतूहल तथा कभी-कभी मोह ओर राग का मिला-जुला भाव पैदा होता है। ख़ैर, जो भी हो सोहनलाल का प्रेम था, उसने बड़ी अच्छी तरह अपना सब काम किया। भोजन बहुत अच्छा था, स्वादिष्ट और सादा था। व्यवस्था और सफ़ाई अच्छी थी। भोजन करके यों ही बात करते रहे।

३१ अक्तूबर : फतेहपुर का नामी सरस्वती पुस्तकालय देखा। पुस्तकों का संग्रह अच्छा है, संस्कृत की पुरानी अच्छी पुस्तकें हैं पर नवीन पुस्तकें प्रायः नहीं हैं और न आ ही रही हैं। दस बजे मुकुन्दगढ़ चले। ग्यारह बजे पहुँचे। लक्ष्मणगढ़ का कट्टर पन्थ और सीकर राज्य की अन्धाधुन्धी देखी, फतेहपुर मित्रों का प्रेम, बड़ी-बड़ी इमारत तथा सेठ लोगों की परस्पर की प्रतिस्पर्धा में बिना कारण बड़े बनने की भावना से मकानों पर मकान बनाने की इच्छा, ये सब मन में नाना तरह के भाव पैदा करती थीं।

८. अजमेर

६ नवम्बर १९३६, : हीरालालजी के साथ आश्रम देखा। शिक्षा कुटीर को हटाना पड़ेगा और कई दृष्टि से अजमेर उपयुक्त स्थान मालूम होता है और इसी दृष्टि से हटूंडी आश्रम देखा। आश्रम शायद मिल जाये पर वह न तो उपयुक्त ही मालूम होता है और न पर्याप्त। इसलिए दूसरी ज़मीनें भी देखीं। कल्याणीपुरा नामक स्थान में एक बारह बीघा ज़मीन है वह सब दृष्टि से ठीक जँची। शहर से तीन मील है, चारों ओर पहाड़ों का सुन्दर दृश्य है तथा आसपास के ग्रामों की लड़कियाँ भी आ सकती हैं। पर सब से बड़ी बात रुपयों की है, कम से कम बीस हजार लगें तब साधारण काम चलाने लायक़ स्थान बने। जो भी हो विद्यालय तो चलाना ही पड़ेगा। अग्रवाल महासभा के मन्त्री कृष्णगोपाल जी गर्ग के यहाँ भोजन किया। साढ़े नौ बजे दिल्ली रवाना हुए।

२. जयपुर आन्दोलन

५ अगस्त १९३८, कलकता : पूज्य जमनालालजी इस बार लक्ष्मणप्रसादजी के यहाँ ठहरे हैं। रात उनसे बात हुई, उसमें बारह बज गये। विस्तारपूर्वक सारा हाल बताया। सीकर का आन्दोलन बेढंगेपन से चला और उसका परिणाम भी अच्छा नहीं हुआ। जमनालालजी आगे का कोई रास्ता सोच रहे है पर साधारण लोग जमनालालजी के बताये रास्ते पर चलने को तैयार नहीं, जो भी हो जमनालालजी अपना काम अपने ढंग पर कर रहे हैं।

५ नबम्बर, १९३८ : राजपूताना अकाल सहायक समिति में रहे। यह काम ज़रूरी मालूम होने लगा है और भागीरथजी इस में खूब लग गये है। उन पर भार अधिक है। ऐसा लगता है कि अपने से हो सके उतनी उनकी सहायता करना अपना कर्तव्य है। कल बाहर जाने का विचार है भागीरथजी से बातकर तय करेगे।

१२ जनवरी, १९३९ : जयपुर राज्य की जो स्थिति है उसे देखते हुए वहाँ का संघर्ष टाला नहीं जा सकता। बिना एक बार वहाँ पर ज़ोरदार आन्दोलन और सरकार के साथ लड़ाई हुए कुछ होगा भी नहीं, सवाल एक ही है और उस पर ही सफलता निर्भर करती है कि कार्यकर्ता और जनता अहिसात्मक बने रहें।

१३ जनवरी : जयपुर से तार आया कि प्रजामण्डल को ग़ैरकानूनी क़रार दे दिया गया है, जयपुर के अधिकारी खूब कड़ाई से काम लेना चाहते है, स्वेच्छाचारी शासन चलाना चाहते हैं। अभी तक प्रजामण्डल ने कोई भी ऐसा काम नहीं किया था जिससे उसे ग़ैरक़ानूनी ठहराना जरूरी हो। पूज्य जमनालालजी पर जयपुर प्रवेश करने का जो अन्यायपूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया है उसको अभी न तोड़ कर जयपुर राज्य के अधिकारियों को सोचने का मौका दिया गया था पर वे जयपुर मे किसी प्रकार की जागृति, आन्दोलन होने नहीं देना चाहते। ऐसी हालत में कोई भी स्वाभिमानी आदमी कैसे चुप रह सकता है। यह तो एक प्रकार से सरकार ने स्पष्ट रूप से युद्ध घोषणा की है। वह नहीं जानती जनता मे जागृति हो जाने के बाद ऐसी कार्रवाइयाँ न तो कभी सफल हुई ही है और न हो सकेगी। जयपुर में जागृति हो चली है उसी का यह परिणाम है कि आज सरकार को दमन करने की सूझी है, हो सकता है कि एक बार ज़ोरो के दमन के द्वारा इसमें ढिलाई आ जाये और सरकार अपनी जीत समझने लगे पर इससे वास्तव में प्रजा की ताक़त बढ़ेगी ही और फिर थोड़े ही समय के बाद प्रचण्ड आन्दोलन शुरू हो जाएगा। ऐसा दीखता है कि पूज्य जमनालालजी तथा हीरालालजी जल्दी ही गिरफ़्तार कर लिये जायेंगे और अन्य लोग भी पकड़े ही जायेंगे। अपने एक तो जयपुर राज्य की प्रजा हैं,

दूसरे इस आन्दोलन के संचालक जमनालालजी और हीरालालजी हैं, इस के अलावा जयपुर के अन्याय के प्रति अपने मन में रोष और प्रतिकार की भावना भी है तथा अपना सार्वजनिक जीवन भी अपने को बाध्य करता है कि अपने इस काम से उदासीन नहीं रह सकते। ऐसी हालत में अपने को इस आन्दोलन में पड़ना ही होगा। अपनी स्थिति जेल जाने की नहीं है, स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। दूसरे रामरिख की मृत्यु के कारण फ़र्म की थोड़ी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर आ गयी है तथा इधर भगवानदेवी की हालत भी पहले जैसी नहीं है और जयपुर की जेल में रहने का साहस कम होता है पर तो भी ऐसा दीखता है कि अपने बच नहीं सकते क्योंकि इन सब बातों के सामने भी वह पुकार अपने को खींच लेगी और अपने को वहाँ जाना पड़ेगा। जो हो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि कर्तव्य-पालन करने का बल प्रदान करे।

१४ जनवरी : जयपुर की स्थिति पर विचार करने के लिए मित्रों की मीटिंग थी। सहायता के लिए चन्दा करना तथा खूब अच्छी तरह प्रचार करना और हो सके तो आदमी भेजना। यह सोचा गया और इन कामों के लिए एक कमेटी स्थापित करना तय हुआ। कमेटी का मन्त्री कौन बने। कोई नाम सामने नहीं आया तथा स्वेच्छा से कोई तैयार नहीं मालूम हुआ, यह बात दुखद है। अपना नाम मन्त्री बनने के लिए लिया गया। अपने इस आन्दोलन को चलाना चाहते हैं और हो सके उतनी मदद करना चाहते हैं। कोई नाम नहीं आयेगा तो अपने मन्त्री बनेंगे ही। दिन-भर जयपुर की स्थिति के विषय में विचार चलता रहा। जमनालालजी का तार भी आया है कि वे कलकत्ता से अच्छे सहयोग की आशा रखते हैं।

१५ जनवरी : रात में जयपुर के बारे में मीटिंग थी। मन्त्री के लिए अपना तथा बसन्तलालजी का सम्मिलित नाम आया। बसन्तलाल जी ने इन्कार कर दिया। अपना एक नाम रहा तब अपने ने सोचने की बात कही। मन में काफी हलचल है, यह तो निश्चय है कि मन्त्री बन जायें और जेल चले जायें तो इस आन्दोलन की भलाई ही होगी, पर अभी तक अपने में पूरा साहस नहीं आया है। जमनालाल जी, हीरालालजी जेल में पड़े रहें तो अपने बाहर रह भी कैसे सकते हैं।

१७ जनवरी : पूज्य जमनालाल जी से टेलीफोन पर बात की, वह बाईस तारीख को कलकत्ता आने का विचार करते हैं, आन्दोलन अच्छी तरह चलेगा, ऐसी आशा है। जयपुर से काफ़ी आदमियों के जेल जाने की आशा है। कल बसन्तलालजी से बात हुई थी। वह जयपुर के सम्बन्ध में जो आन्दोलन चलाना है उस के मन्त्री का भार अपने साथ संयुक्त मन्त्री बन कर लेने पर विचार करेंगे। आज उन्होंने साफ़ कह दिया कि मैं कोई जिम्मेवारी लेने को तैयार नहीं। यह सुन अपने को कष्ट हुआ पर क्या करते। बसन्तलालजी ही एक ऐसे आदमी अपनी निगाह में

थे जो हर तरह की तकलीफ़ ले सकते हैं पर उनका इस बार का ढंग अपने को अखरता है। अपने को हिचकिचाना नहीं चाहिए, जो भी जिम्मेवारी आये उसे साहस और उत्साह के साथ लेना चहिए।

१९ जनवरी : रात में पूज्य जमनालालजी पर जयपुर राज्य ने प्रवेश-निषेध की आज्ञा लगा दी है, उसका प्रतिवाद करने के लिए एक सभा हुई।

२२ जनवरी : पूज्य जमनालालजी के स्वागत का प्रबन्ध अपने लोगों ने किया। स्टेशन पर काफी लोग इकट्ठा हो गये थे। एक मीटिंग कुछ चुने हुए लोगों के साथ की। यहाँ लोगों में उत्साह कम है, सर्वसाधारण तो वैसे उदासीन हैं और धनी लोग जयपुर राज्य से डरते हैं। चार बजे सिखों के गुरूद्वारे में सभा थी, जमनालालजी के साथ गये। उसके बाद फिर एक सभा। उसमें भी ढंग अच्छा नहीं था पर पूज्य जमनालालजी जिस सच्चाई और गम्भीरता के साथ जयपुर के आन्दोलन को ले रहे हैं और पूज्य महात्मा जी ने उन्हें जिस तरह आशीर्वाद दिया है, आज उन्होंने जो लिखा है और जिस तरह प्रचार आदि काम हो रहा है, उसे देखते ईश्वर इस आन्दोलन को अवश्य सफल करेगा।

२३ जनवरी : रात में विराट् सभा थी, उस के इन्तजाम में रहे। सभा बहुत ही सफल रही। हज़ारो की सख्या में लोग आये। अपने को जयपुर का आन्दोलन चलाने के लिए यहाँ जो सभा की गयी, उसका मन्त्री बनाया गया। कम से कम जेल तो जाना ही पड़ेगा, इच्छा इस समय जाने की नहीं थी पर जब मौक़ा आ जाता है तो पीछे हटना बहुत बुरा मालूम होता है। अब तो पूरी तरह इस आन्दोलन मे पड़ जाना होगा।

२६ जनवरी : जयपुर आन्दोलन चलाने के लिए जो कमेटी बनी थी उसके सभापति के लिए विचार हुआ। भागीरथजी ने ख़ुद का नाम दिया। उनकी जेल जाने की तैयारी की बात वैसे तो एक महत्व की बात है ही, पर अपने लिए यह विशेष चीज है। वह यदि जेल में साथ रहेंगे तो अपने लिए विशेष सुविधा होगी पर पता नहीं साथ रह सकेंगे या नहीं।

१ : जमनालाल बजाज की गिरफ्तारी

२८ जनवरी, १९३९ : जयपुर की वर्तमान स्थिति तथा प्रजामण्डल के सम्बन्ध में बात करने के लिए कुछ मित्रों को बुलाया था। हीरालालजी शास्त्री ने सारी स्थिति अच्छी तरह समझायी। जयपुर में नया मंत्री आया है वह प्रजामण्डल को बरदास्त नहीं करता इसलिए संघर्ष हो जाने का अन्देशा रहता है पर प्रजामण्डल

अपनी तरफ़ से संघर्ष को बचाना चाहता है, बाध्य कर दिया जाये तो उपाय नहीं।

३१ जनवरी, दिल्ली : जमनालालजी, पारवती डिडवानिया के यहाँ ठहरे हैं। कई कार्यकर्ता, जयपुर के जाट आदि आये हुए हैं। बम्बई के मदनलाल, हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊ जी आदि थे। पहले ही प्रेस रिपोर्टरों की मीटिंग में गये, आन्दोलन की स्थिति के सम्बन्ध में प्रश्नों का उत्तर जमनालालजी ने बड़ी अच्छी तरह दिया। देहली के नागरिकों तथा राजस्थान के निवासियों की तरफ़ से सभा थी और जमनालालजी को मान-पत्र दिया गया। जमनालालजी का व्याख्यान बहुत ही सुन्दर और सारगर्भित हुआ। घनश्यामदास जी बिड़ला से मिलने गये। वह जयपुर राज्य से समझौता कराने की जो कोशिश कर रहे थे उसमें असफल रहे। इस लड़ाई के पीछे उनकी शुभ कामना तो है ही पर निज में क्या हिस्सा ले सकेंगे यह कहना मुश्किल है, पर धन की सहायता तो देंगे ही।

१ फ़रवरी : जाने की तैयारी हो रही है। जमनालालजी में खूब उत्साह था। देहली स्टेशन पर काफ़ी भीड़ हो गयी। प्रेस वालों ने जमनालालजी को घेर लिया और तरह-तरह के प्रश्न करने लगे। उन्होंने विदाई का वक्तव्य दिया जिसमें जयपुर राज्य के सामने माँगे रखी गयीं और उनके जाने के बाद जो सत्याग्रह कमेटी सारी जिम्मेवारी के साथ काम चलायेगी उसके मेम्बरों के नाम घोषित किये। हीरालालजी संयोजक रहेंगे। हरिश्चन्द्रजी शर्मा वकील, जयपुर, राधाकृष्ण बजाज, रायकुमार जालान और अपने सदस्य। अपने यह जिम्मेवारी जमनालालजी के प्रेम के कारण ही ली है पर राज्य की ज्यादती और उसका अन्याय भी अपने को कहना है कि ऐसे मौके में पीछे न हटकर जोर से अन्याय का मुक़ाबला करना चाहिए। अपने जयपुर में या जयपुर स्टेट में तथा अपने गाँव में कुछ भी सेवा नहीं कर सके हैं। अपना निज का अनुराग भी इस तरफ़ प्राय. नहीं रहा है पर तो भी मन कहता है कि इस अन्याय का प्रतिकार हो सके उतना करना कर्तव्य है। पूज्य सेठजी की विदाई बहुत शानदार हुई। सत्याग्रह कमेटी की मीटिंग की और आगे का कार्यक्रम तथा बजट बनाया। ऑफ़िस आगरा रखना पहले ही तय कर लिया गया था।

३ फ़रवरी : नौ बजे गाड़ी हावड़ा पहुँची।

५ फ़रवरी : पूज्य जमनालालजी फिर जयपुर गये। उनकी खबर लेने की कोशिश करने पर मालूम हुआ कि रींगस के पास उन्हें गिरफ़्तार किया। छोड़ा कि रखा इस का पूरा पता नहीं लगा।

६ फ़रवरी : जयपुर के आन्दोलन की स्थिति समझ में नहीं आ रही है। जयपुर शहर में सत्याग्रह किया गया पर कोई गिरफ़्तार नहीं किया गया। इस से ऐसा भी मालूम होता है कि फ़िलहाल स्टेट वाले इस आन्दोलन से बचना चाहते हैं। और यह आन्दोलन बढ़ेगा नहीं क्योंकि स्टेट वाले दमन नहीं करेंगे तब तक

आन्दोलन बढ़ नहीं सकता ।

७ फ़रवरी : आगरा से जमनालालजी से बात हुई जिससे मालूम हुआ कि उन को आज भरतपुर के पास छोड़ दिया । क़रीब पाँच सौ मील मोटर पर घुमाया। उनके मोटर से उतरने के लिये राजी न होने पर जबरदस्ती उतारा जिससे उनकी आँख और अंगुलियों में चोट आयी । जमनालालजी में काफ़ी उत्साह है वह फिर जाने का विचार कर रहे हैं तथा अपने लोगों को बुलाया है । जाना है ही, ईश्वर सब अच्छा करेगा ।

१२. फरवरी : जयपुर दिवस के लिए प्रभातफेरी की व्यवस्था की थी । दो घण्टे बड़ाबाज़ार मे जयपुर सम्बन्धी गाना गाते हुए और वन्दे मातरम् आदि नारे लगाते हुए प्रभातफेरी खूब उत्साह के साथ निकली, जनता पर इसका अच्छा असर पड़ा । सेवा सदन का आज वार्षिकोत्सव है । जयपुर दिवस का जुलूस खूब अच्छा और काफी बड़ा निकला । सार्वजनिक सभा हुई, सारा कार्यक्रम सफलतापूर्वक हो गया । पूज्य जमनालालजी, हीरालालजी शास्त्री और सब गिरफ़्तार कर लिये गये। अब जयपुर की लड़ाई साफ़ तौर पर शुरू हो गयी है । जनता की ताक़त याने उसके कष्ट सहन और त्याग पर ही इस लड़ाई की सफलता निर्भर करती है। अपने से जितनी कोशिश हो सकती है उतनी पूज्य महात्माजी के सत्य-अहिंसा के सिद्धान्तों के अनुकूल ही करते हैं । अपने को जल्दी ही जाना है, आजकल यहाँ अपनी जो परिस्थिति है उसमे जाने में बाधा तो है पर अब तो अपने ऊपर पूरी ज़िम्मेदारी भी आ ही गयी है । ईश्वर ऐसी शक्ति दे कि देश और जनता की सेवा चौबीसों घण्टे करते रहें और इससे कभी भी मन न हटे । समाज का जो खाते हैं उसका उत्तर तो सेवा कर के ही दिया जा सकता है ।

१५ फरवरी : प्रजा परिषद् के ऑफ़िस में रहे । आजकल तो यही काम सामने है । जयपुर रियासत के गाँवों में किसानों पर लगान को लेकर जो अत्याचार हो रहे है, उनका जो वर्णन आता है यदि वह सच है तो बहुत ही नृशंस तथा घोर अन्यायपूर्ण है ।

२१ फरवरी, कलकत्ता : रात प्रजा परिषद् की मीटिंग में रहे । बात करने वाले, केवल प्रचार पर भरोसा करने वाले तो खूब हैं पर वास्तव में आन्दोलन में पड़ने वालों की संख्या कम है । अपना बहुत जी नहीं लग रहा रहा है । काम भी ज्यादा कर सकें, यह नहीं दिखता है, ऐसी हालत में जेल चले जायें यही ठीक मालूम होता है । राजनीतिक काम में पड़ना बहुत खतरनाक है । इसमें बहुत तकलीफ़ होती है, वह तो होती ही है पर मानसिक कष्ट और झंझट बहुत आते हैं । यह तो कष्ट का मार्ग है, सूली ऊपर सेज है । यह सब होते हुए भी जब इसमें ऐसे लोग घुस आते हैं जो कुछ करते नहीं और बराबर अड़चनें डालते हैं तब मन दुःखी हो जाता है ।

२५ फ़रवरी : आजकल ज़्यादा समय जयपुर आन्दोलन के सम्बन्ध में लगता है, काम खूब रहता है, पूरा नहीं हो पाता । अपने को बहुत अच्छा लगता है। इतना अधिक काम होना चाहिए कि साँस लेने तक की फ़ुरसत न मिले । काम तो कर रहे हैं । अनासक्त भाव से सच्चाई के साथ काम करने की प्रभु शक्ति दे । भागीरथ जी से बात चली कि जहाँ अभिमान आ जाता है वहीं पतन हो जाता है ।

२ : जयपुर आन्दोलन के लिए गांधीजी की शर्तें

१७ मार्च, कलकत्ता : दिल्ली से भागीरथ जी का तार मिला कि पूज्य महात्मा जी जयपुर सत्याग्रह में खास तरह का फेरफार करना चाहते हैं, इसलिए पहली ट्रेन से आओ ।

१९ मार्च १९३९, दिल्ली : पारवतीदेवी डिडवानियाँ के यहाँ जयपुर के कार्यकर्ताओं से बातें करने गये । जयपुर में इतने अधिक उत्साह और जागृति की किसी ने भी कल्पना नहीं की थी । वहाँ के लोगों ने बहुत ऊँचे दरजे का अनुशासन तथा राज्य के कार्यों के प्रति असन्तोष दिखाया है । जब सत्याग्रह करने के लिए जत्था निकलता है तो बाजारों, रास्तों, मकानों पर मनुष्यों के सिवा कोई चीज नहीं दीखती । कहते थे कि दस-बीस हज़ार आदमी इकट्ठा होना मामूली बात है, ऊपर में तो पचास हजार तक लोग इकट्ठा हो जाते । साधारण दिन जयपुर में आध मन आटे की पूड़ियाँ बिकती हैं, सत्याग्रह के दिन छह मन बिकती हैं, बाहर से आसपास के स्थानों से बहुत बड़ी तादाद में लोग आते हैं । सत्याग्रहियों की बात भीड़ बहुत ध्यान से सुनती है और उनके आदेशों पर तुरत काम करती है ।

पूज्य महात्माजी ने आगे से सत्याग्रह चलाने के लिए जो सूचनाएँ दी थी उन पर विचार हुआ । महात्मा जी की चार शर्तें मुख्य थी जो सत्याग्रह में भाग लें वे बराबर शुद्ध खादी पहनने वाले हों, किसी प्रकार का दुर्व्यसन न हो, सत्य-अहिंसा में पूर्ण विश्वास हो, सदाचारी हों । इन के अलावा छोटी मोटी कई बातें थीं पर मुख्य ये ही चार थीं । इन पर विचार हुआ कि सत्य और अहिंसा में पूर्ण विश्वास होना ही चाहिए तथा जहाँ तक जानकारी हो वहाँ तक सदाचार का विश्वास भी करना चाहिए तथा व्यसनों में तम्बाकू, पान और चाय को नहीं गिनना चाहिए। पर सब से बड़ी और प्रत्यक्ष दीखने वाली बात तो खादी है । इस विषय में सोचा गया कि अभी जो लोग जेल जाने की तैयारी कर चुके हैं, जिनके नाम सार्वजनिक

रूप से घोषित हो चुके हैं, जिन्होंने नौकरी या किसी दूसरे तरह के काम को छोड़ जेल की तैयारी कर ली है, उन सबको खादीधारी न हों तो रोकना नहीं चाहिए और तीन महीने तक प्रचार करने का मौक़ा मिलना चाहिए। इसके बाद जो खादी बराबर न पहनता हो या आगे बराबर पहनने का पक्का विश्वास न दिला सके, उसको सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति न दी जाये। इन निश्चयों के साथ पूज्य महात्माजी से मिलने का तय हुआ। बिड़ला हाउस गये। पूज्य महात्मा जी धूप में पलंग पर लेटे थे। अपने सब लोगों की ओर से राधाकृष्ण जी ने बात की। महात्माजी ने सब बातें ध्यान से सुनीं और उन के रुख से ऐसा मालूम होता था कि वे पान, तम्बाकू, चाय वालों को व्यसनी नहीं गिनेंगे। महात्माजी ने कहा, खादी तो किसी हालत में छोड़ी नहीं जा सकती और मेरे नज़दीक ज्यादा लोग जेल में जायें यह सवाल बिलकुल ही नहीं है। मैं तो जिन लोगों के साथ लड़ रहा हूँ उनको तकलीफ़ पहुँचाना बिल्कुल नहीं चाहता, उन पर दबाब पड़े वे घबरा जायें, बाध्य कर दिये जायें, यह मेरी मंशा नहीं है, मैं तो उनके मन में परिवर्तन करना चाहता हूँ, उनके हृदय को बदलना चाहता हूँ, इसलिए जो सत्याग्रही बनें उनको तो ज्यादा-से-ज्यादा पवित्र बनना चाहिए, यदि खादी भी नहीं पहन सकते तो सत्य-अहिंसा में क्या विश्वास करेंगे ? फिर मेरे सामने तो सारे ही देशी राज्यों का सवाल है। जितने लोग जेल में हैं और जब तक जमनालालजी जेल में हैं जब तक जयपुर का सत्याग्रह चल रहा है और लोग जेल मे न भी जायें तो कोई बात नहीं पर जो जाना चाहें वह तो पूरी तरह से पहले कही हुई शर्तों को मानने वाले होने चाहिए और अभी तो राजकोट का मामला चल रहा है उसका नतीजा भी देखना है। बीच-बीच में एक दो बात कई लोगों ने कही, उनका भी उन्होंने उत्तर दिया कि कोई बीमार आदमी न जावे, बच्चे वाली स्त्रियाँ भी न जायें क्योंकि उनके लिए अधिकारियों को विशेष व्यवस्था करनी पड़ेगी, यह ठीक नहीं है। वे थक गये थे, इसलिए उन्होंने कहा, बस इस वक्त तो यहीं समाप्त करना है। अपने लोग दूसरे कमरे में आ गये। इस बार पूज्य बापूजी को देख चिन्ता हुई, बहुत कमज़ोर मालूम होते हैं। बातें करते समय एक बार उन्होंने हाथ ऊपर किया, कुहनी के ऊपर के हिस्से का चमड़ा बहुत ही लटका हुआ मालूम होता था। प्रसन्न तो खूब थे पर उनकी शारीरिक शक्ति निश्चय ही बहुत कम रह गई है और उन को बहुत अधिक काम करना पड़ता है। वे सचमुच मनुष्य के रूप में भगवान् हैं उनमें शक्ति अपरिमित है, बुद्धि निर्मल है, भावना पवित्र है, वे सबके शुभचिन्तक हैं। ईश्वर उनको कब तक हमें सुमार्ग दिखाने के लिए, हमें बल और सत्यबल देने के लिए हमारे बीच रखेगा, इसको कौन जानता है। उस प्रभु से यही प्रार्थना है कि इस महान् विभूति को आपने इस देश को बख़्शा है तो अनन्तकाल तक इसे बख्शे रहिए।

यह तय हुआ कि महात्मा जी की मुख्य चार शर्तों के अनुसार काम करना है। फ़िलहाल अपने पास सौ अदमी ऐसे हैं जो इन शर्तों में आ सकते हैं। इसलिए एक अप्रैल को जयपुर में प्रजामण्डल की कान्फ्रेंस करके सब लोग गिरफ़्तार हो जायें। बाद में एक दो आदमी रह जायेंगे वे आन्दोलन महात्माजी की इच्छानुसार चलाते रहेंगे। ये सब बातें हो ही रही थीं कि श्री घनश्यामदासजी बिड़ला एक छोटे से काग़ज पर चार लाइन में महात्माजी का सन्देश लेकर आये, उस में उन्होंने लिखा था कि मेरा अभिप्राय है कि जब तक दूसरी सूचना न दूँ तब तक जयपुर सत्याग्रह में जत्था भेजना बन्द रखा जाये। इस सूचना से सब सन्न हो गये। खैर, जो भी हो महात्माजी की आज्ञा सब को शिरोधार्य थी और उसको ज्यों का त्यों स्वीकार किया ही गया पर जो कार्यकर्ता इस लड़ाई में तन-मन होम कर लगे हुए हैं, उनके उद्योग से या महात्माजी के प्रभाव से जो जागृति, उत्साह और उमंग सामने आ रही थी। उन कार्यकर्ताओं को बहुत ही तकलीफ़ मालूम हुई। हीरालालजी की स्त्री रतन जी की आँखों से तो आँसू बहने लगे। जो हो इसका परिणाम निश्चय ही मंगल होगा। पत्रों में आन्दोलन स्थगित का वक्तव्य भेज दिया गया।

पूज्य महात्माजी जिस स्थान पर ठहरते हैं वही स्थान एक विशेष स्थान बन जाता है और हिन्दुस्तान के सब लोग जिनका जो काम होता है पहुँच जाते हैं। जवाहरलालजी आ गये, वाइसराय की कौंसिल के मेम्बर तथा देशी राज्यों के कई दीवान और न मालूम कितने लोग महात्माजी से बात करने के लिए घण्टों बैठे रहते हैं। महात्माजी इतने लोगों से इतने विषयों पर बातें करते है, उनकी बुद्धि, शक्ति का पारावार नहीं।

२३ मार्च : जयपुर प्रजा परिषद् के ऑफ़िस में फतेहपुर का पत्र आया कि चि प्रहलाद गिरफ़्तार हो गया। प्रहलाद का सत्याग्रह की लड़ाई में भाग लेना और जेल जाना अपने लिए गौरव की बात है। पन्ना का संबंध करते हुए अपने यही बात मुख्य रूप से सामने रखी थी कि जिसके साथ पन्ना का विवाह हो वह राष्ट्रीय विचारों का हो, उसमें देश-सेवा की भावना हो। प्रहलाद का जेल जाना इस बात का प्रमाण है कि जैसा लड़का पन्ना के लिए चाहा था वैसा प्रहलाद है। जेल में तकलीफ़ होगी पर यह सब तो होता ही है। सच्चाई का मार्ग तो तलवार की धार पर चलता है, जेल की तकलीफ़ तो साधारण बात है।

२८ अप्रैल १९३९ : भागीरथ जी और कमलनयन (बजाज) के साथ पूज्य महात्मा जी के पास गये। स्नान के बाद जब वे भोजन करने बैठे तो अपने लोगों **को बुलाया। कमलनयन ने पूज्य जमनालालजी से हुई बातें तथा जयपुर की स्थिति बतायी।** भाई भागीरथ जी ने जो जेलो में हैं, सत्याग्रह स्थगित करने से या नयी शर्तें लगाने से उनके मन में जो भावनाएँ उठ रही है, वे सब बातें कहीं। महात्माजी

ने कहा, मै जो कर सकता हूं कर रहा हूँ और करूँगा भी पर अभी फिर सत्याग्रह नही हो सकता है, जिनको मेरी शर्तें ठीक नहीं मालूम होती उनको जेल मे रहने की जरूरत नही। वे चाहे जैसे बाहर आ सकते है। माफी माँग कर या उनके लिए वे कहे तो लिख सकता हूँ कि वे अब सत्याग्रह नही करेगे और उनको छोड़ देना चाहिए। बहुत देर तक बाते हुई। एक प्रश्न के उत्तर मे कहा, जो सत्य और अहिसा मे पूरा-पूरा विश्वास नही करता उसको सत्याग्रह की लड़ाई में नही आना चाहिए। पूज्य महात्माजी की बाते बहुत ऊँची है, साधारण आदमी उनका पूरा-पूरा अमल कर सके, ऐसा नही लगता।

३ : जमनालाल बजाज और हीरालाल शास्त्री की रिहाई

९ अगस्त : पूज्य जमनालालजी आज छोड़ दिये गये। वह बीमार थे, उन के छूट जाने से फिर काम होगा। जयपुर मे जो जागृति हुई है उसका अच्छा उपयोग हो सकेगा। अपनी इच्छा थी कि हीरालालजी शास्त्री छूटे तब अपने जयपुर मे रहे और पूज्य जमनालालजी से भी जयपुर मे एक बार मिले पर यह हो ही नही सका। कारण अपने जो मकान बना रहे है उसके भाड़े की लीज सही कराने की झझट मे अपने को अटका रहना पड़ा। अपने व्यापार की जिम्मेवारी से थोड़े मुक्त है, देश-समाज की सेवा करने के लिए अपने पास काफी समय है, तो हो इस बार अनुभव हुआ कि जो केवल देश और समाज की सेवा करना चाहता है वह पूरी तरह से तभी काम कर सकता है जब वह निज के सुख के सब कामो को छोड़ दे। थोड़ा सा भी अपने स्वार्थ का काम किसी भी समय मोह का कारण बन जाता है और उसके मुख्य काम मे बाधक हो जाता है।

१० अगस्त : आजकल व्यापार की स्थिति खराब है। राजपूताना और कई जगहो से अकाल पड़ने की खबरे आ रही है। गत वर्ष भी राजपूताना मे भयानक अकाल पड़ा था और गाये बहुत ज्यादा मर गयी थी इस वर्ष अकाल पड़ा तो लोगो, खासकर पशुओं को इतना कष्ट होगा कि जिसकी कल्पना भी नही की जा सकती।

२६ अगस्त : हीरालालजी शास्त्री को लाने स्टेशन गये। जयपूर जेल से मुक्त होने पर पहली बार कलकत्ता आये है, कमजोर हो गये है पर प्रसन्न खूब है।

२७ अगस्त : पूज्य जमनालालजी, जानकी बहन को लाने स्टेशन गये, स्वागत का प्रबन्ध था। मित्र तथा मारवाडी समाज के बहुत से सज्जन और दूसरे लोग

भी अच्छी संख्या में पहुँच गये थे। सेठजी कमज़ोर काफ़ी हो गये हैं। जयपुर की स्थिति कुछ सुधरी सी लगती है। उनसे काफ़ी देर तक बातें हुईं, वे प्रजामण्डल के काम के लिए रुपये चाहते हैं पर इस समय रुपये मिलने मुश्किल हैं इसलिए विशेष प्रयत्न नहीं करना, तय हुआ। कल जमनालालजी और शास्त्रीजी का सार्वजनिक स्वागत तथा व्याख्यान कराना है।

२८ अगस्त : जमनालालजी, हीरालालजी को मानपत्र दिया गया। उन्होंने अपने भाषणों में जयपुर की स्थिति तथा प्रजामण्डल की नीति का स्पष्टीकरण किया और राज्य के साथ बिना किसी संघर्ष के जयपुर की स्थिति सुधर जाने की आशा प्रकट की।

२९ अगस्त : जमनालालजी से बहुत सी बातें काम की हुई। एक बार अपने को जयपुर जाना होगा। पूज्य जमनालालजी और हीरालालजी को जयपुर के लिए विदा किया। शास्त्री जी चार दिन अपने घर रहे तथा पूज्य जमनालालजी तीन दिन कलकत्ता रहे। खूब बातें हुई। जयपुर में जो जन-जागरण आया है, इसमें इन दो महानुभावों का ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा है या ऐसा कहा जा सकता है कि इनके प्रयत्नों के फलस्वरूप ही आज जयपुर में सुधार होने की आशा की जा रही है, वहाँ पहले जैसा अन्धाधुन्ध राज्य नहीं चल सकेगा, अब तो सुधार अनिवार्य हो गया है, इस बात को अधिकारी अच्छी तरह समझ गये हैं।

२८ फ़रवरी १९४०, पूज्य जमनालालजी आने वाले थे, स्टेशन गये। उन का स्वास्थ्य अभी सुधरा नहीं है, पैर का दर्द है ही, चलने में तकलीफ़ होती है। उन्होंने कहा, तुम पटना चलो, वहाँ बापूजी से जयपुर के बारे में बात होगी। हीरालालजी भी आयेंगे। तुम को वहाँ की बातों की पूरी जानकारी रखनी चाहिए। पिछले कई दिनों से जयपुर की स्थिति फिर से बिगड़ने लगी है।

२९ फ़रवरी, पटना : पूज्य जमनालालजी के साथ सदाक़त आश्रम गये। जाते ही पहले पूज्य महात्माजी के पास गये, प्रणाम कर के बैठ गये। पूज्य जमनालालजी ने जयपुर के विषय में बातें कीं। सरदार भी आ गये। थोड़ी बंगाल की स्थिति के सम्बन्ध में भी बातें हुई। बापू ने जमनालालजी से कहा सीताराम को देखा तो मैं जान गया कि तुम कलकत्ता से आ रहे हो।

१ मार्च : हीरालालजी शास्त्री आ गये। जयपुर की स्थिति तो सन्तोषजनक रही नहीं तो फ़िलहाल राज्य वाले ज़्यादा छेड़-छाड़ शायद नहीं करेंगे। पूज्य जमनालालजी जयपुर जा रहे हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, ऐसी हालत में राज्य वाले कड़ाई से काम लें और जमनालालजी वहाँ फँस जायें। यह अन्देशा अभी नहीं बताते मन को थोड़ी तसल्ली हुई।

४ : प्रजामण्डल अधिवेशन : जयपुर

२५ मई, १९४० : जयपुर -छह बजे गाड़ी पहुँची। न्यू होटल में, जहाँ जमनालालजी ठहरे हैं, वहाँ गये। जगह निहायत अच्छी है। सब प्रबन्ध अच्छा था। डॉ. काटजू खादी प्रदर्शनी खोलने आये हैं। तीन बजे विषय निर्वाचनी समिति में गये, वहाँ काम बाक़ायदा होता है। प्रजामण्डल का काम और सस्थाओं की तरह बेबुनियाद नहीं मालूम होता। शाम सात बजे प्रजामण्डल के खुले अधिवेशन में शरीक हुए, रात साढ़े ग्यारह बजे तक कार्यवाही चली। उपस्थिति अच्छी थी। स्त्रियाँ अच्छी संख्या में आई। प्रदर्शनी देखी, वह अच्छी थी। जयपुर में ऐसी चीजे तैयार होती हैं जो हिन्दुस्तान के लिए दूसरे देशों में आदर पैदा करती हैं। शास्त्रीजी और जमनालालजी की वजह से प्रजामण्डल का काम उचित रूप से चल रहा है, नहीं तो ग़लत रास्ते जाने का काफ़ी अन्देशा है।

२६ मई . विषय-निर्वाचनी-समिति की बैठक में गये, वहाँ जयपुर शिकार खाना मोहम के कानूनों के कारण जिन किसानों को बाघ आदि हिंसक जानवरों द्वारा जो तकलीफ़ें होती है, उसका एक विवरण देखा, साथ ही जो लोग इन पशुओ द्वारा घायल होकर ठीक हो गये है, उनको देखा और लोगों से बातें कीं। जिनके घर के लोग इन पशुओं के शिकार हो चुके है, एक स्त्री जिस के छह बच्चे है, उसके पति को साँभर (बारहसींगा) खा गया। उसकी करुण कहानी और हालत बहुत ही हृदयग्राही थी। राज्य को इन सब बातों की परवा नहीं। दुनिया में गरीबो पर क्या-क्या जुल्म नहीं होते। सात बजे खुले अधिवेशन में गये। मुख्य प्रस्ताव उत्तरदायी शासन के सम्बन्ध में था। इस प्रस्ताव पर काफ़ी देर तक दिलचस्प वाद-विवाद हुआ। दो चार नवयुवक अच्छे बोले।

२७ मई : जमनालालजी, हीरालालजी के साथ प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी के बारे मे बातें हुई। उनकी इच्छा थी कि कलकत्ता से एक नाम रखना है, वह अपना नाम रहे। अपनी इच्छा नहीं थी। कारण अपने इस तरफ़ बहुत कम आते है, साथ ही यहाँ की परिस्थिति अपने अनुकूल नहीं मालूम होती। जमनालालजी, हीरालालजी की तरफ़ अपना खूब आकर्षण है, प्रेम है तथा सब तरह का सम्बन्ध है और यह भी मालूम होता है कि यहाँ के कामों में शरीक होना चाहिए। इस बार पहले की अपेक्षा अपने को जागृति, ज्ञान और ज़रा जीवन सा भी मालूम हुआ। इन सब बातो के कारण अपने वर्किंग कमेटी में रहना स्वीकार कर लिया है। डॉ. काटजू के साथ यहाँ के कार्यकर्ताओ की मीटिंग थी, उसमें गये। उन्होंने अपने यू. पी. में रचनात्मक कामों का अनुभव बताया। डॉ. काटजू से अपना

मिला। वे सरल और सहृदय व्यक्ति हैं। वे ठीक दिशा में सोचते मालूम होते हैं। किसी चीज़ को देखते हैं तो उसके भीतर की जानकारी करना चाहते हैं। भले सज्जन और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। अपना आज जाने का विचार था पर जमनालालजी ने जाने नहीं दिया और जानकी बहन का आग्रह तो था ही। साढ़े सात बजे स्त्रियों की सभा थी। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में आयी थीं। कलकत्ता आदि शहरों में साधारणतः ऐसी मीटिंग नहीं होती। व्याख्यान आदि भी खूब हुए। वनस्थली बालिका विद्यालय की लड़कियों के खेल आदि हुए।

२८ मई : जयपुर प्रजामण्डल की कार्यकारिणी कमेटी की प्रथम बैठक में शामिल हुए। अगले वर्ष के कार्यक्रम और बजट पर विचार हुआ। मुख्य काम हीरालाल जी ही करते हैं और वे अपनी भावनाओं के अनुसार कार्यक्रम बनाते हैं। दूसरे लोग न तो उनके जैसी भावनाएँ रखते हैं और न उनके कार्यक्रम पर पूरा विश्वास करते हैं, अपना अधिकार भी रखना चाहते हैं इसलिए किसी चीज को रखने और समझाने में खूब ही समय लगता है और दिक़्क़त भी होती है। हीरालालजी की थोड़ी ऐसी आदत भी है कि हर चीज को विस्तार देते हैं। अपने को आज दस बजे कलकत्ता जाना था इसलिए मीटिंग से सब लोगों से मिल कर पूज्य जमनालालजी और जानकी बहन को प्रणाम कर स्टेशन गये। हीरालालजी और उनकी स्त्री रतन जी से मिल लिये। रतनजी की तबीयत अच्छी नहीं है, मोटापा बढ़ रहा है। निहायत अच्छे स्वभाव की स्त्री है और खूब काम करती है, हीरालालजी को इनके द्वारा खूब मदद मिलती है। राजस्थान बालिका विद्यालय का सारा बोझ उन्होंने अपने ऊपर ले रखा है। रतन जी के स्वास्थ्य के बारे में मन में चिन्ता रही और है। ईश्वर अच्छा ही करेगा। पूज्य जमनालालजी, जानकी बहन का साथ सुखदायी होता है। यह लोग वास्तव मे अपने को प्रेम करते हैं।

५ : राजपूताने में डा. राजेन्द्र प्रसाद

१९ सितम्बर १९४० रेल में जयपुर को : पंजाब के बैरिस्टर सरदार गुरुदयाल सिंह से, जो ए. आई. सी. सी. के मेम्बर हैं, खूब बातें हुई। उनकी भी कॉंग्रेस के उच्च अधिकारियों के प्रति सिक्खों की ओर से शिकायत थी। कॉंग्रेस की भीतरी स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। दो बजे गाड़ी सवाई माधोपुर पहुँची, वहाँ दो घण्टे ठहरना पड़ा, चार बजे जयपुर की गाड़ी में सवार हुए। रात आठ बजे जयपुर पहुँचे, वहाँ से न्यू होटल गये, वहाँ राजेन्द्र बाबू ठहरे हुए हैं उन से मिले,

उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, काफ़ी बातें हुईं, बम्बई की बातें कही ।

२० सितम्बर, नवलगढ़ : नवलगढ़ में बहुत से धनी आदमी है, यहाँ की जो बड़ाई है वह धन की बड़ाई है । अपने यहाँ कोई मकान नहीं बनाया है, रहने के लिए कोई अच्छी जगह नहीं है । यहाँ आते है तब अपना भी मन चल जाता है कि एक साधारण सा मकान तो बना लें ।

२१ सितम्बर : पूज्य जमनालालजी आये हैं, उनके पास रहे । शाम खादी भण्डार के उद्घाटन के लिए तथा जयपुर राज्य प्रजामण्डल की ओर से सभा थी। नवलगढ़ में सार्वजनिक काम नहीं होता, इसलिए यहाँ जागृति भी नही है तो भी सभा बहुत अच्छी हो गयी । उपस्थिति खूब थी । नवलगढ़ अपनी जगह है, अपने बाप-दादे यही रहे है पर इन अठाईस वर्षो में अपना यहाँ से कोई सम्बन्ध प्रायः नही रहा।

२२ सितम्बर : पूज्य जमनालालजी के साथ यहाँ की हरिजन पाठशाला, पुस्तकालय, औषधालय तथा आनन्दीलालजी का हाई स्कूल देखा ।

२३ सितम्बर, मुकन्दगढ़ : यहाँ का खादी भण्डार और खादी आश्रम देखा। काम अच्छा हो रहा है । कई दिनो बाद आज कातने का भी मौक़ा मिला । शाम मुकुन्दगढ़ के निवासियों की एक मीटिंग थी । मीटिंग साधारण थी ।

२४ सितम्बर : एक ग्राम, जहाँ सूत कताई का काम यहाँ के उत्पत्ति केन्द्र द्वारा होता है, देखने गये । सूत अच्छा और महीन काता जाता है । भाई महावीरप्रसाद जी पोद्दार ने कहा, आप लोग कोई गीत भी गाइए । इस पर उन्होने चरखे के सम्बन्ध मे ही गीत गाये जो बहुत ही सुन्दर थे । दस बजे लौटे, सीकर जाने के लिए गाड़ी पर सवार हुए, वहाँ पूज्य जमनालालजी के यहाँ गये । वहाँ बिहाररत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद भी थे । सेठ जी तथा राजेन्द्रबाबू से बाते होती रहीं ।

२६ सितम्बर, सीकर : चरखा काता । पढ़ा कलकत्ता मे बिलकुल फ़ुरसत नहीं मिलती और यहाँ सब कुछ कर लेने के बाद भी समय रहता था । शाम राजेन्द्रबाबू के साथ घूमते है, कई तरह की बाते होती रहती हैं । राजेन्द्रबाबू बहुत सीधे और सादे आदमी है । रात को यहाँ पुराने जो ख्याल होते थे, उन को करने वालों को बुलाया । उन्होने पुराने ख्यालों को, जो एक कविता और राग के रूप में है, गा कर, नाच कर सुनाया । अपने आज के तीस वर्ष पहले यह ख्याल देखा करते थे, आज फिर देखा तो सब पुरानी स्मृतियाँ एक प्रकार से अच्छी लगीं। राजेन्द्र बाबू को तो बहुत अच्छा लगा ।

२ अक्तूबर : आज महात्मा जी का जन्मदिन है इसलिए राजेन्द्रबाबू के साथ ढाई घण्टा चरखा कातने का कार्यक्रम बनाया । सब लोगों ने सम्मिलित प्रार्थना की। जमनालालजी भी देहली से आ गये । महात्मा जी के साथ वायसराय की बात खत्म हो गयी । अब समझौते का द्वार एक प्रकार से बन्द हो गया है और

सिवा संघर्ष के कोई रास्ता नहीं दिखता पर महात्मा जी कोई भीषण लड़ाई छेड़ने की इच्छा नहीं रखते। उनके सत्याग्रह के सिद्धान्त के अनुसार अँगरेज़ विपत्ति में फँसे हुए हैं, उन्हें और विपत्ति में फँसाना नहीं चाहते पर अँगरेज़ों की नीति का विरोध करना चाहते हैं। इसके लिए जन-सत्याग्रह न कर के व्यक्तिगत सत्याग्रह करने का विचार करते हैं। वे जो कुछ करेंगे अच्छा ही करेंगे पर अँगरेज सरकार ने जो ढंग अख्तियार किया है वह बरदाश्त करने लायक नहीं, उसका विरोध ज़ोर से होना चाहिए। विरोध तो होगा ही पर देश की जैसी तैयारी होगी वैसा ही उसका रूप हो सकता है। चाहे जो हो यदि न्याय नाम की कोई चीज़ है तो वह अँगरेज़ हिन्दुस्तान के साथ करने के लिए तैयार नहीं। यह न्याय अपनी ताकत से ही प्राप्त हो सकेगा या संसार में जो परिवर्तन हो रहे हैं उनसे हमारी स्थिति अपने आप सुधर जाये या उसके सुधरने में काफ़ी मदद मिले। महात्मा जी की जयन्ती के उपलक्ष्य पर सार्वजनिक सभा थी। वह राजेन्द्रबाबू के कारण जमनालालजी के स्थान पर हुई। जमनालालजी थोड़े से बीमार हो गये थे इसलिए अपने को सभापति बनना पड़ा। पूज्य राजेन्द्रबाबू का व्याख्यान हुआ, अपने को बोलना पड़ा। सभा अच्छी हो गयी।

३ अक्तूबर, जयपुर : यहाँ के पुलिस सुपरिटेंडेंट तथा जयपुर की पुलिस के एक सज्जन कई सिपाहियों के साथ आये और जमनालालजी को पूछा, वे स्नान कर रहे थे। उनके आने पर कहा कि हिन्दुस्तान टाइम्स में जो निकला है उसकी कापी हम लेने आये है। कापी नहीं थी इसलिए उन लोगों ने तलाशी ली। प्रत्येक काग़ज-पत्र देखा। शेष में जमनालालजी की व्यक्तिगत डायरी और वक्तव्य वाली कटिंग ले गये। इन सब कामों में साढ़े पाँच घण्टे लगाये, जो काम पन्द्रह मिनट में हो सकता था, इतनी देर सब को परेशान किया। प्रहलाद कहता था कि यह तो जमनालालजी का मामला था, किसी साधारण आदमी का होता तो बहुत तंग करते। यहाँ साधारण अफ़सर अपने को कर्ता-धर्ता मानता है और साधारण लोगों को काफी तंग कर सकता है। जनता सब मे डरती है। अपने यहाँ रहें और इस स्थिति का प्रतिकार करें, यह ताक़त या भावना नहीं है, कारण अपनी समझ में मुख्य रोग का इलाज तो हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता ही है।

४ अक्तूबर : सार्वजनिक सभा थी, जिसमें जमनालालजी का व्याख्यान था, अपने भी बोले। सुनने वालों खासकर राजेन्द्रबाबू ने कहा कि व्याख्यान बहुत कड़ा था। अपनी इच्छा कड़ा व्याख्यान देने की नहीं थी, क्योंकि राजस्थान में सामान्य-सी बात के लिए जेल जाने के लिए तैयार नहीं हैं। राजेन्द्रबाबू खादी पर बोले।

५ अक्तूबर, जयपुर : जमनालालजी, प्रहलाद आदि के साथ साढ़े दस बजे जयपुर पहुँचे। ढाई बजे जयपुर प्रजामण्डल की बैठक हुई, जमनालालजी के यहाँ जो तलाशी हुई, उस पर विचार हुआ तथा और भी कई विषयों पर। जिस वक्तव्य

पर तलाशी हुई थी उस पर यह तय हुआ कि कार्यकारिणी के मेम्बर उस वक्तव्य को अपना वक्तव्य कहें। इसका मतलब यह हुआ कि राज्य वाले जमनालालजी पर केस चलाना चाहें तो सब लोगो पर चला सकते हैं और सबको सजा दे सकते हैं। इस में दो हेतु है, एक तो यह कि इस तरह सब लोगों को जेल में दे दें तो वातावरण पैदा होगा, नहीं तो वे यो ही एक-एक कर मुख्य लोगों को जेल में भेज देंगे, दूसरे यह भी है कि शायद जयपुर सरकार एक साथ इतने लोगों को जेल में लेना ठीक न समझे। जो हो प्रस्ताव से अपनी जिम्मेवारी बढ़ जाती है तो भी स्वाभिमान के नाते यह प्रस्ताव आना चाहिए था।

६ : उदयपुर में राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन

६ अक्तूबर, उदयपुर पाँच बजे गाड़ी चित्तौड़ पहुँची, अपने इस समय नहीं देख सकते। समय मिला तो लौटने वक्त देखने की इच्छा है। उदयपुर के लिए गाड़ी बदली। रास्ते मे प्रार्थना की, गीता-रामायण का पाठ किया। जमनालालजी आदि से कई तरह की बाते होती रहीं। जमनालालजी मज़ाक मे अपने को नवाब कहते है, यह नवाबी किस्सा इस बार खूब चल रहा है। उदयपुर का पहाड़ी रास्ता सुन्दर है, उस में प्राकृतिक छटा है। प्रजामण्डल के प्राण माणिकलाल जी वर्मा तो चित्तौड़ से ही साथ थे, हरिभाऊजी उपाध्याय राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन में शरीक होने आये है, वे भी साथ थे। स्टेशन पर जमनालालजी का प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत किया गया, जहाँ खादी प्रदर्शनी थी, वहाँ आये। प्रदर्शनी देखी, फिर जमनालालजी का जुलूस निकाला गया। भीड़ काफ़ी हो गयी। जगह-जगह पर पानसुपारी, फूल-माला से स्वागत किया गया। कई जगहों पर बहनों ने भी स्वागत किया। यहाँ का स्वागत तथा लोगों का प्रेम, सादगी, सहृदयता और नम्रता आकर्षित करने वाली थी। सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ बूढ़े-बूढ़े लोगों की सफ़ेदी दाढ़ी और मेवाड़ी पगड़ी (में) एक प्रकार की नयी ज्योति मालूम होती है, उनके प्रति न मालूम क्यों स्वाभाविक श्रद्धा होती थी पर यह भी पता नहीं अपने जैसे आदमी को जो न दाढ़ी-मूँछ रखता है और न पगड़ी का पक्षपाती है, यहाँ की पगड़ी और दाड़ी क्यों अच्छी लग रही थी। राज्य की ओर से जमनालालजी को उदयपुर होटल में ठहराने का प्रबन्ध था, अपने भी वहीं ठहरे। राज्य की मोटर पर ही प्रसिद्ध स्थान देखने गये। साढ़े पाँच बजे राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर जो प्रदर्शनी की गयी, उसका उद्घाटन था। उद्घाटन यहाँ के प्रधानमन्त्री श्री टी. विजय राघवाचार्य ने किया, उनकी बड़ी प्रशंसा सुनी

जा रही है– उदार विचार के हैं तथा प्रजा के साथ सहानुभूति रखते हैं । देखने पर आदमी भले मालूम हुए । रात गान्धी जयन्ती के उपलक्ष्य में जो शेष की सभा थी, जिस में जमनालालजी का भाषण था, अपने को खादी पर बोलने को कहा गया, बोले भी । उपस्थिति अच्छी थी, महिलाएँ भी खूब आ गयी थीं । वर्षों से उदयपुर जाने की जो इच्छा थी, वह पूरी हुई ।

७ अक्तूबर : पूज्य जमनालालजी आदि के साथ जयसमुद्र देखने गये । उदयपुर पहाड़ी स्थान है, रास्ता पहाड़ों के अन्दर बना है । चारो ओर पहाड़ बीच में रास्ता । अरावली की वह ऊँची-ऊँची चोटियाँ, सघन वृक्षों के समूह और स्वतन्त्रता-प्रेम की कहानियाँ बड़ी मोहक थीं । राजस्थान के मरूस्थल में उदयपुर हर तरह से निराला मालूम होता है । दो घण्टे मे जयसमुद्र पहुँचे । पहाड़ों के बीच बहुत बड़ा बाँध बाँधा गया है, वहीं महाराज का महल और शिवजी का मन्दिर है । महल पहाड़ के नीचे और ऊपर भी है । स्टीमलॉच है जिसमे जयसमुद्र की सैर की जा सकती है । इस जलाशय का पूरा घेरा क़रीब पचानबे मील का बताया जाता है । सबमे बड़ी बात यह है कि जिन दिना यह बना था उन दिनो इस तरह की सुन्दर सर्वे करने का इन्तजाम था, यह देख कर आश्चर्य सा होता है । कलकत्ते के अपने परिचित श्री गोपालजी मोहता के यहाँ सब का भोजन था । बीस दिनो से राजपूताना में है पर रूचि के साथ भोजन नहीं किया, आज सब प्रबन्ध अच्छा था । शाम अग्रवाल भ्रातृमण्डल की मीटिंग में गये, बहनें अच्छी संख्या में आयी थीं । क़रीब दस नवयुवकों ने खादी पहनने की प्रतिज्ञा की । राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में गये । यह सम्मेलन यहाँ के हिन्दी प्रेमी और उत्साही कार्यकर्ता जनार्दनराय नागर तथा उन के साथियो ने संगठित किया है । जैन धर्म के सुप्रसिद्ध विद्वान् मुनि जिनविजय जी सभापति थे । सम्मेलन का पहला अधिवेशन था और यहाँ कठिनाई भी बहुत थी तो भी सम्मेलन सफल कहा जायेगा ।

८ अक्तूबर : प्रसिद्ध जनसेवक तथा विद्वान् डॉक्टर मोहनसिंह जी (मेहता) के साथ उनका विद्या भवन देखने गये । विद्या भवन से भाई भागीरथजी का ज़्यादा सम्बन्ध है, यहाँ लड़के और लड़कियों के पढ़ने की व्यवस्था है, बोर्डिंग है । पढ़ाई बिलकुल नये तरीक़े वैज्ञानिक ढंग से होती है, यह एक प्रयोग है । उदयपुर ग़रीब जगह है, यहाँ की शिक्षा तथा ढंग खर्चीला है । जो भी हो मोहनसिंह जी तथा प्रधानाध्यापक श्रीमालीजी श्रद्धा और विश्वास के साथ यह काम कर रहे है और इस के लिए तपश्चर्या भी करते हैं । वहाँ से राजस्थान महिला विद्यालय देखने गये । इस संस्था को एक भ्रातृसेवक श्री भरूलालजी गेलड़ा चलाते है, संस्था साधारण है पर भरूलालजी की भावना आदरणीय है, बड़ी कठिनाई और परिश्रम से चला रहे है, इससे स्त्री-शिक्षा के मार्ग में यहाँ प्रगति हो रही है । भोजन आज भी कलकत्ते के एक मित्र हनुमानप्रसादजी सोढ़ानी के यहाँ किया । वे यहाँ अबरक की खानों

आदि का काम करते है । उदयपुर के पहाड़ों में बहुत तरह की खानें हैं, बहुत तरह की चीजे मिलती है, उन्होने कई चीजे अपने को दिखलायीं पर यहाँ पैसे वाले व्यापारी कम है, इसलिए कुछ नहीं हो पाया । अब कलकत्ता, बम्बई के लोगों का ध्यान इस ओर गया है, थोड़े ही दिनो में यहाँ यह लोग फल जायेगे । जमनालालजी के साथ महाराणा श्रीभोपालजी के यहाँ गये जमनालालजी को उनसे कई तरह की बातें करनी थीं, अपने महल देखने चले गये । यह महल पानी के बीच बनाया गया है और सुन्दर बनाया गया है । पूज्य जमनालाल जी आदि के साथ चित्तौड़ रवाना हुए । चित्तौड़ मे जमनालाल जी का अच्छा स्वागत हुआ ।

९ अक्तूबर राज्य की मोटर मे चित्तौड़ का किला देखने गये । इसके बारे में कहा गया है कि गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया । राजपूतों में अज्ञान रहा, व्यर्थ की ऐंठ रही, परस्पर मे खूब लड़ते रहे, पर उन में साहस, वीरता, त्याग की अपूर्व ज्योति थी । मेवाड़ का इतिहास इनके अपूर्व बलिदानो से भरा है । किला और शहर अलग-अलग है किले में खेती होती है, दो हजार से ज्यादा लोग बसते है । शहर मे भी पाँच हज़ार आदमी है । शहर मे एक सभा हुई जिसमें जमनालालजी तथा अपना व्याख्यान हुआ । फिर गुरुकुल देखा जिसे स्वामी व्रतानन्द चला रहे हैं । जयपुर रवाना हुए, पूज्य जमनालालजी तीन बजे वर्धा रवाना होगे। उन्हे प्रणामकर जब विदा हुए तब मन में नाना तरह की भावना और हलचल थी। अब कब मिलेगे पता नहीं । जमनालालजी जयपुर मे या ब्रिटिश भारत में, जो आन्दोलन छिड़ने वाला है उसमे पकड़े ही जायेगे, अपने भी पकड़े जाने की काफ़ी सम्भावना है न जाने कितने दिनो बाद मिलेगे । जमनालालजी के प्रति श्रद्धा से मन झुकता है ।

७. प्रजामण्डल अधिवेशन झुंझनू

३ अप्रैल १९४१ मुकुन्दगढ़ हीरालालजी शास्त्री इस बार प्रजामण्डल के झुंझनू अधिवेशन के सभापति है, रास्ते के स्टेशनो पर उनका स्वागत होता रहा । शास्त्रीजी झुंझनू सीधे चले गये ।

४ अप्रैल, झुंझनू दस बजे झुंझनू पहुँचे । सामने ही प्रजामण्डल के सहकारी मंत्री श्रीकपूरचन्दजी पाटणी मिले, उनसे मालूम हुआ कि कार्यकारिणी कमेटी के

नये संगठन को लेकर काफ़ी विमर्श चल रहा है और कपूरचन्दजी ने एक हफ़्ते का उपवास ले रखा है। इस बात को लेकर कई घण्टों तक सब लोगों के साथ हीरालालजी आदि से बातें करते रहे, पर सन्तोषजनक हल नहीं निकला। यदि परिस्थिति ठीक नहीं होगी और उपवास चालू रहा तो यहाँ की कार्रवाई पर बहुत असर पड़ेगा।

५ अप्रैल : चरखा साथ नहीं ला सके थे, वनस्थली बालिका विद्यालय की एक लड़की के चरखे पर काता। प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी की मीटिंग में रहे काफ़ी देर तक विचार होता रहा। शेष में नयी कमेटी का गठन सन्तोषजनक हो गया और अधिवेशन में एक ही प्रस्ताव जो उत्तरदायी शासन के सम्बन्ध का है, रखना तय हुआ। तीन बजे विषय निर्वाचनी कमेटी की बैठक थी, प्रस्ताव बहुत वाद-विवाद के बाद सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया। रात में दस बजे अधिवेशन का कार्य शुरू हो सका, यहाँ के लोग एक तो स्वभावतः ढीले हैं, दूसरे बेचारों के सामने कठिनाइयाँ भी हैं। बारह बजे कार्यवाई समाप्त हुई।

६ अप्रैल : प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी की मीटिंग में रहे, फिर जो कार्यकर्ता यहाँ आये हैं उनसे विचार-विनिमय करने के लिए एक मीटिंग थी, उसमें रहे। यह बहुत देर तक चली, यहाँ की स्थिति, यहाँ के कार्यकर्ताओं की प्रवृति और ज्ञान का उससे काफी पता चला। यहाँ जागृति तो हुई है पर वह तो काफ़ी नहीं है। दूसरे इसके साथ कई तरह की गड़बड़ी भी पैदा हो गयी है जैसे, परस्पर में अविश्वास और दलबन्दी आदि। यह दोष पता नहीं क्यों हमारे देश में सभी जगह फैलता जा रहा है। रात नौ बजे अधिवेशन की कार्यवाही शुरू हुई। बारह बजे तक रहे। अपने भी बोले। एक बजे की गाड़ी से मुकुन्दगढ़ रवाना हुए। आज चरखा नहीं काता उसका अफ़सोस था और ऐसा लग रहा था कि नियम का भंग हो रहा है पर यह सोच सन्तोष कर लिया था कि यात्रा में नियम भंग नहीं मानना चाहिए। साथ में तो बहुत से सज्जन थे ही, उनमें श्री माधोपुर के वंशीधरजी का चरखा मिल गया और पूनी भी। बस रेल में कताई हो गयी, बड़ा सन्तोष मिला।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

१. "सुभाषबाबू की अध्यक्षता में गांधीजी द्वारा विदेशी वस्त्रां की होली"

४ मार्च १९२९ : कलकत्ता : श्रद्धानन्द पार्क में सुभाषबाबू की अध्यक्षता में महात्माजी द्वारा विदेशी वस्त्रों की होली करने के लिए सभा थी, बहुत ज़्यादा भीड़ थी, क़रीब पन्द्रह हजार आदमी होंगे। महात्माजी पहले हिन्दी में बोले कि आज आठ वर्ष बाद भी आपको यह समझाने की ज़रूरत है कि विदेशी वस्त्र छोड़ दो। इंग्लैण्ड का वस्त्र हमें छोड़ना चाहिए और देशो का नहीं पर मैं तो कहता हूँ कि हमें सभी विदेशी वस्त्रों को छोड़ना चाहिए, सब विदेशी वस्त्रों को छोड़े हमारा उद्धार होने का नहीं। हम केवल इंग्लैण्ड के वस्त्रों को छोड़ेंगे तो वह दूसरे देशों के नाम से हमारे यहाँ आ जायेगा। मैं तो खादी को गरीबों का अन्नदाता कहूँगा। यदि कोई इन ग़रीबों के पेट भरने का दूसरा उपाय बना दे तो उसे अपना गुरू मानूँगा , साष्टांग प्रणाम करूँगा। भारतवर्ष के कोने-कोने में फिरने पर भी मुझे तो कोई दूसरा उपाय नहीं सूझा और फिर मैंने लोगों से कहा, आप विलायती कपड़ो को अभी जला दें। मेरे पास लाकर दे दें ताकि मैं जला दूँ। इस पर वस्त्रों का ढेर लग गया। बड़ा ही दर्शनीय दृश्य था। सब वस्त्रों को इकट्ठा कर उन्हें आग लगा दी गयी। इतने ही में बहुत बड़ी सख्या में पुलिस आयी , सारजेंट और सिपाहियों ने मैदान घेर लिया और जिस जगह होली हो रही थी उस जगह पर पानी गिराकर लाठियों से पीट-पीट कर (आग को) बुझा दिया। लोगों में काफ़ी जोश आ गया। कोई भी हटा नहीं। लोग फिर जगह-जगह होली जलाने लगे और पुलिस बुझाने लगी। बिल्कुल भी पुलिस का भय नहीं था। जनता बिल्कुल शान्ति से अपना काम करना चाहती थी। ईश्वर की इच्छा विचित्र है, आन्दोलन ज़ोर का होना है इसलिए उसके आसार पैदा होते हैं। सभा का काम इस हालत में हो नहीं सकता था, सभा समाप्त कर दी गयी। पर जनता वहाँ से हटना नहीं चाहती थी। जहाँ कुछ कपड़े मिले लोग दियासलाई निकाल जलाने लगते। पुलिस किसको बुझाये और किसको नहीं। इस तरह का दृश्य बहुत देर तक रहा। जनता मार और जेल से नहीं डरती। पुलिस गोली चलाने का डर दिखाकर लोगों को

डरा सकती है । इसका भय भी बहुत दिनों तक ठहरने वाला नहीं । इस बार के आन्दोलन में यह भय भी साधारण रह जायेगा ।

१७ मार्च : विदेशी वस्त्रों की होली के जुलूस में गये । बहुत जोश था, भीड़ भी बहुत अच्छी थी । जुलूस बड़े बाज़ार की सब सड़कों पर घूमता हुआ बड़तल्ला की अर्जुन व्यायामशाला में समाप्त हुआ , वहाँ विदेशी वस्त्रों की होली सुभाषबाबू ने अपने हाथ से जलायी । उपस्थित आदमियों ने भी बहुत कपड़े उतारकर दिये । एक सज्जन ने तो किसी दूसरे आदमी की चद्दर उधार लेकर अपनी धोती भी दे दी । ऐसी सभाओं से बहुत लाभ होता है । विदेशी वस्त्रों को जलाने की बात बहुत आदमियों को नहीं जँचती पर अपना तो इस पर विश्वास बढ़ता ही जाता है ।

२४ मार्च : महात्माजी रंगून से लौट आये । सुभाषबाबू की अध्यक्षता में सभा हुई जिसमें महात्माजी का भाषण हुआ । फिर उसी समय महात्माजी ने बड़तल्ला में अर्जुन व्यायामशाला में विदेशी कपड़ों की होली जलायी । वे ही लोग भीतर जा सकते थे जो अपना या किसी दूसरे से माँग कर कम से कम एक विलायती कपड़ा दरवाजे पर दे देते थे । आज होली थी । स्त्री (भगवानदेवी) ने आज जितने विलायती कपड़े घर में थे सब के सब जलाने को दे दिये । अपनी दृष्टि में उसने साहस का एक और पवित्र काम किया । उसके अन्दर यह भावना तो पहले से ही थी । पर आज पोद्दारजी ने उसको पत्र लिखा कि आपके पास जितना विलायती कपड़ा हो वह आप को जला देना चाहिए, अब आपको यह पाप घर में रखना शोभा नहीं देता । उसी समय सब के सब कपड़े दे दिये । होली के दिन जलाना नहीं चाहिए, ऐसा कई लोगों ने उसे कहा, लेकिन उसके मन पर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ । पन्ना (लेखक की पुत्री) भी महात्माजी के भाषण में गयी । वहाँ लोगों से कपड़े माँग-माँग कर जलाती थी । बहुत देर तक यह हाल रहा । आज रात होली थी जिन स्थानों पर हुआ करती है वहीं हुई । पर पुलिस ने उस जगह होने से रोका, कारण महात्मा जी पर मुक़दमा चला रखा था। कई आदमियों को पकड़कर ले गयी । लोगों के मन में बड़ा क्षोभ था ।

२. "सुभाषबाबू के सभापतित्व में स्वतन्त्रता दिवस"

२५ जनवरी १९३१ : कलकत्ता :-अभी तो कुल समय २६ की तैयारी में लग रहा है । रूपया बहुत अधिक ख़र्च हो रहा है पर आशा पर ख़र्च किया जा रहा है और कार्यकर्ताओं को ख़र्च के लिए अनुत्साहित कर देने से काम में

बहुत बाधा हो जाती है । आज पूर्णदास (बंगाल के क्रान्तिकारी नेता) से कल के लिए सारा प्रोग्राम बना लिया गया । खर्च उसको दे दिया गया है । ऐसी आशा है कि काम पूरा सफल होगा । जितने काम करने वाले हैं उन सबसे अपने दिन मे तीन-चार बार मिलते हैं । परमात्मा करेगा तो सफलता निश्चित है । सुभाषबाबू भी अपनी तरफ़ से उत्साह दिखा रहे है । अपनी स्थिति क्या है ? जब से यह आन्दोलन शुरू हुआ, प्रायः तब ही से अपने इस काम में लगे हैं । जेल जाने से पहले अपने सिविल डिस्ओबिडिएंस कमेटी के साथ काम किया, जिसमें सेनगुप्त की पार्टी के लोग थे । और ऐसा सुन रहे थे कि सुभाषबाबू कुछ काम करना नहीं चाहते, पर अब की जेल से आने पर सुभाषबाबू के साथ मिलकर काम करना तय किया । दोनों पार्टी के मिलने की तथा पिकेटिंग की व्यवस्था करने में थे। ईश्वर की इच्छा से दोनो काम ही हुए, पर परिणाम यह हुआ कि सेनगुप्त की पार्टी के जो लोग मिलना नहीं चाहते थे वे अपने को सुभाषबाबू से मिल गये, ऐसा समझने लगे और अपने से जैसा प्रेम-विश्वास रखते थे उतना नहीं रखते ।

२६ की सभा के सभापति सुभाष बाबू हों , यह अपना मत था । कौंसिल मे दासगुप्ता (डॉ. जे. एम. , बड़ाबाज़ार कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष)' के विरोध करने पर भी शेष में वह स्वीकार हो गया । इस पर कल जब दासगुप्ता, सुरेश मजुमदार आदि से मिले तो वे लोग अपने पर बहुत नाराज़ मालूम हुए । उन्होंने कई बातें कहीं। अपने सोचा था कि सुभाषबाबू सभापति होंगे तो प्रभाव ज़्यादा होगा, लोग सभा में ज़्यादा सख्या में आयेंगे तथा बाहर भी ज़्यादा प्रभाव पड़ेगा। सुभाषबाबू की गिरफ़्तारी से सारे हिन्दुस्तान में कलकत्ते का तथा बंगाल का नाम होगा । इस आन्दोलन में कलकत्ते की जो बदनामी है वह यदि २६ को मिटायी जा सके तो बड़ा अच्छा हो और उसके लिए सब तरह से उद्योग किया गया है। पर यह भले लोग यह नहीं सोचकर यह सोचते हैं कि सुभाषबाबू का नाम बढ़ गया । यह अच्छी तरह से देखा गया है कि यहाँ के लोगों के अन्दर निज का प्रभाव बढ़ना तथा अपने से बड़ा दूसरा क्यों होता है, इसका विचार पहले होता है और काम का पीछे । डॉक्टर दासगुप्ता का अपने ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। अपने तो सब बातों को सह लेते है और काम करते जाते हैं । भगवान् की जो इच्छा होगी वही होगा । हर दम प्रभु से प्रार्थना है कि सत्य की ओर लगा दे। आज भण्डार में नन्दलाल कसेरा से बात करते हुए जानकीदेवी ने कह दिया कि जब तक तुम खादी की पगड़ी नहीं बाँधोगे तब तक मैं घी नहीं खाऊँगी। उनकी यह बात अपने को विचारपूर्ण नहीं जँची ।

२६ जनवरी : आज का दिन तो अमर दिन है । आज के ही दिन सारे हिन्दुस्तान में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया था । और इस वर्ष भी उसकी पुनरावृत्ति थी जिसके लिए काफ़ी तैयारियाँ पहले से की गयी थी । गत वर्ष अपना हिस्सा

बहुत साधारण था इस वर्ष जितना अपने दे सकते थे, दिया था। केवल प्रचार में ही दो हज़ार रूपया खर्च किया गया था। सारे काम का भार अपने समझते थे अपने ऊपर है, और इसी तरह जो कार्यकर्ता थे उनके घर जा-जाकर समझाया था। बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाये गये थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतन्त्रता मिल गयी हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झण्डे लगाये गये थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सज़ावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेण्ट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घुमायी जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबन्ध था। कहीं भी ट्रैफिक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। मोनुमेण्ट के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो भोर में छह बजे से ही पुलिस ने बड़ी सख्या में घेर लिया था पर तब भी कई जगह तो भोर में ही झण्डा फहराया गया।

श्रद्धानन्द पार्क में बंगाल प्रान्तीय विद्यार्थी संघ के मन्त्री अविनाशबाबू ने झण्डा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुन्दरी पार्क में बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मन्त्री हरिश्चन्द्र सिंह झण्डा फहराने गये पर वे भीतर न जा सके। वहाँ पर काफ़ी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गये। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला जिसमें बहुत सी लड़किगाँ थीं, उनको गिरफ़्तार कर लिया। ११ बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झण्डोत्सव मनाया। जानकीदेवी, मदालसा (मदालसा बजाज नारायण) आदि भी गयी थीं। लड़कियों को,उत्सव का क्या मतलब है, समझाया गया। एक बार मोटर में बैठकर सब तरफ़ घूम कर देखा तो बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। जगह-जगह फ़ोटो उतर रहे थे अपने भी फोटो का काफी प्रबन्ध किया था। दो-तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरूषोत्तम राय थे। सुभाषबाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, पर यह प्रबन्ध कर चुका था। स्त्री समाज अपनी तैयारी में लगा था। जगह-जगह से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने की तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं। मोनुमेण्ट के पास जैसा प्रबन्ध भोर में था वैसा क़रीब एक बजे नहीं रहा। इससे लोगों को आशा होने लगी कि शायद पुलिस अपना रंग न दिखलावे पर वह कब रूकने वाली थी। तीन बजे से ही मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बना कर मैदान में घूमने लगे आज जो बात थी वह निराली थी। जब से क़ानून भंग का काम

शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गयी थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी ।

पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती । जो लोग काम करने वाले थे उन सब को इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गयी थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जायेंगे । इधर कौंसिल की तरफ़ से यह नोटिस निकल गया था कि मोनुमेण्ट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झण्डा फहराया जायेगा तथा स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जायेगी । सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए । खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गयी थी ।

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाषबाबू जुलूस लेकर आये । उनको चौरंगी पर ही रोका गया, पर भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को नहीं रोक सकी । मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं, बहुत आदमी घायल हुए, सुभाषबाबू पर भी लाठियाँ पड़ी । सुभाषबाबू बहुत जोरों से वन्दे मातरम् बोल रहे थे । ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाषबाबू से कहा, आप इधर आ जाइए । पर सुभाषबाबू ने कहा, आगे बढ़ना है ।

यह सब तो सुनी हुई लिख रहें हैं पर सुभाषबाबू का और अपना विशेष फ़ासला नहीं था । सुभाषबाबू बड़े जोर से वन्दे मातरम् बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा । पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी । क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ ख़ून देखकर आँख मींच जाती थी । इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेण्ट की सीढ़ियों पर चढ़ झण्डा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं । स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गयी थीं । प्रायः सबके पास झण्डा था । जो वालेण्टियर गये थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे । सुभाषबाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकप में भेज दिया गया ।

कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चलीं । साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी । बीच में पुलिस कुछ ठण्डी पड़ी थी, उसने फिर डण्डे चलाने शुरू कर दिये । अब की बार भीड़ ज़्यादा होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए । धर्मतल्ले की मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और क़रीब ५०-६० स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गयी । पुलिस ने उनको पकड़कर लाल बाज़ार भेज दिया । स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ा जिसका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थीं । उनको बहु बाज़ार के मोड़ पर रोका गया और वे वहीं मोड़ पर बैठ गयीं । आस-पास बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी, जिस पर पुलिस बीच-बीच में लाठी चलाती थी। इस प्रकार क़रीब पौन घण्टे के बाद पुलिस की लारी आयी और उनको लाल बाज़ार ले जाया गया । और भी कई आदमियों को पकड़ा गया । बृजलाल गोयनका जो

कई दिन से अपने साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी अपने साथ था, पकड़ा गया। पहले तो वह झण्डा लेकर वन्दे मातरम् बोलता हुआ मोनुमेण्ट की ओर इतने ज़ोर से दौड़ा कि अपने आप ही गिर पड़ा और उसे एक अँगरेज़ी घुड़सवार ने लाठी मारी फिर पकड़कर कुछ दूर ले जाने के बाद छोड़ दिया। इस पर वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और वहाँ पर भी उसको छोड़ दिया तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार गया और वहाँ पर गिरफ़्तार हो गया। मदालसा भी पकड़ी गयी थी। उससे मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलाकर १०५ स्त्रियाँ पकड़ी गयी थीं। बाद में रात को नौ बजे सब को छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ़्तार नहीं की गयी थीं।

क़रीब आठ बजे खादी भण्डार आये तो कांग्रेस आफ़िस से फ़ोन आया कि यहाँ बहुत से आदमी चोट खा कर आये है और कई की हालत सगीन है उनके लिए गाड़ी चाहिए। जानकीदेवी के साथ वहाँ गये, बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देख-रेख तथा फ़ोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक ६७ आदमी वहाँ आ चुके थे। बाद में तो १०३ तक आ पहुँचे। अस्पताल गये, लोगों को देखने से मालूम हुआ कि १६० आदमी तो अस्पतालों में पहुँचे और जो लोग घरों मे चले गये वे अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल जरूर हुए है। पकड़े गये आदमियों की सख्या का पता नहीं चला, पर लाल बाज़ार के लाकप में स्त्रियों की सख्या १०५ थी। आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है।

बगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया, और लोग सोचने लग गये कि यहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है। यहाँ काम नहीं होता है, इसका कारण परस्पर का द्वेष तथा पार्टी-फीलिंग के और कुछ नहीं है। अपने आज न तो पकड़े गये और न मार खायी तब भी मन मे सन्तोष था कि अपने काम कर रहे थे। ऐसा कोई काम नहीं जिसमें अपना हिस्सा न हो पर मन में सर्वथा यह बात नहीं है कि अपने मान की इच्छा न हो। यह पाप मिट जाये तो ज़्यादा काम कर सकते हैं। रात में कल हड़ताल हो, इस के लिए कोशिश की जिसमें मालूम हुआ कि यहाँ के लोगों का मन ठीक नहीं। सुभाषबाबू पकड़े गये यह बोलकर हड़ताल हो तो ठीक नहीं, इन सब बातों से निराशा होती है। ख़ैर स्त्रियों के यहाँ गये और उनको यह कहकर आये कि भोर मे आप लोग निकले और बाज़ार बन्द कराने तथा हैण्डबिल बाँटने का प्रबन्ध भी किया गया।

७ मार्च १९३१ : सुभाषबाबू आज छूटने वाले थे इसलिए सेंट्रल जेल गये। मालूम हुआ कि कोई आर्डर नहीं मिला।

८ मार्च : विमल प्रतिभा के यहाँ गये तो मालूम हुआ कि आज सब स्त्रियाँ जेल से छोड़ दी गयी हैं और एक बजे सुभाषबाबू छूटेंगे । बसन्तलालजी को फ़ोन किया । सेंट्रल जेल गये । सुभाषबाबू को टैक्सी पर चढ़ाया जा रहा था । बी.पी.सी.सी या और भी किसी को मालूम नहीं था इस वजह से कोई नहीं पहुँचा । टैक्सी से उतार कर सुभाषबाबू को अपनी गाड़ी में चढ़ाया, उनके घर पहुँचाया । शाम को साढ़े पाँच बजे उनसे खास बातचीत करना तय हुआ । साढ़े पाँच बजे कृष्णदासजी, बसन्तलालजी के साथ सुभाषबाबू से मिले । क़रीब ढाई घण्टे बातचीत हुई जिस का अपने पर अच्छा प्रभाव पड़ा । अपने कई दिन से सुभाषबाबू के साथ काम करने का काम पड़ रहा है जिससे यह अनुभव हुआ कि उनमें त्याग की भावना ज़्यादा है, कष्ट सहने की शक्ति भी ज़्यादा है, खट भी खूब सकते है, सरलता भी काफ़ी है और उदारता भी याने मनुष्योचित गुण उनमें कम नहीं पर इस पार्टीबाजी ने सारा काम ख़राब कर रखा है । सुभाषबाबू की पार्टी के लोग ही उनको खराब करते हैं । उनमें यह कमजोरी है कि पार्टी को नहीं चला सकते पार्टी उनको चलाती है ।

३. गांधीजी और सुभाषबाबू

अपने लोग उनसे इसलिए मिले थे कि महात्माजी ने जो समझौता किया है उसपर उनका क्या मत है और वे क्या रास्ता लेंगे? उन्होंने कहा, अभी मैने इसे अच्छी तरह समझा नहीं है तो भी मै इतना कहूँगा कि मै तो अभी चाहता था कि लड़ाई ज़ारी रखी जाये और समझौता न किया जाये पर जो किया गया उस पर मैंने अभी विचार स्थिर नहीं किया है । अपने लोगों ने कहा, महात्माजी से मिले बिना आप का मत प्रकट करना ठीक न होगा। उन्होंने कहा, 'कल दस बजे मैं इस का उत्तर दूँगा' । बातें शेष होते समय अपने तथा बसन्तलालजी ने उनको साफ़ कह दिया कि हमारा आप पर विश्वास है, आपके साथ काम करने की इच्छा है पर आप महात्माजी का विरोध करेंगे तो हमें बाध्य होकर दुःख के साथ आप से अलाहिदा होना पड़ेगा और फिर जो पार्टी महात्माजी का समर्थन करेगी हमें उसका विश्वास न होते हुए भी उसी के साथ जाना होगा पर हम आप पर व्यक्तिगत प्रेम या श्रद्धा रखते हैं वह वैसी ही रहेगी । वहाँ से लौटकर दूसरे कामों में लगे रहे । सोचा था कि समझौता हो गया अब खाने, पीने, सोने का टाइम ठीक बनायेंगे पर अब तो और भी झंझट मालूम हो रहा है ! चारों ओर अपनी-अपनी पार्टी लोग बना रहे हैं और अपना भी इन सब से सम्बन्ध होने की

वजह से क्या करना चाहिए तथा कौन पार्टी ठीक है, इसके समझने में, किस उद्देश्य से पार्टी की जा रही है, यह सोचने में समय जाता है। वही ग्यारह बजे घर आते हैं। डायरी समय पर नहीं लिखी जा सकी इससे बहुत सी बातें छूट रही है। अपने तो क्या करते है दूसरे लोग जो बहुत काम करते हैं वे कितने व्यवस्थित हैं।

९ मार्च : आठ बजे दमदम जेल गये। सुना था कि आज बड़ाबाज़ार तथा मेदिनीपुर के भाई छोड़े जायेंगे जाने पर मालूम हुआ कि कोई छूटने वाले नहीं है। पिकेटिंग का काम तो बन्द हो ही गया। वालेंटियरों को भेजना है तथा कुछ काम और बाक़ी है। उन सब को सलटाने का भार मेघराज पर दिया। हालीडे पार्क में सुभद्रादेवी (सत्यदेव विद्यालंकार की पत्नी) का स्वागत था। फिर सेनगुप्त के सभापतित्व की श्रद्धानन्द पार्क की सभा में गये। भीड़ बहुत थी। गरमागरम भाषण हुए। जो बंगाल नजरबन्दों को न छोड़ने से असन्तुष्ट है उन्होंने मीटिंग में बाधा डालने की कोशिश की। मारपीट की भी नौबत आयी। शेष में सेनगुप्त का भाषण हुआ वह अपने को ठीक नहीं जंचा। उसमें प्रेम और शान्ति की बात नहीं थी। पार्टीबाजी की बात थी और दूसरो पर आक्षेप था। सभा समाप्त होने पर अपने सतीशबाबू (दासगुप्त) से मिलने गये, उन्होंने बुलाया था। रास्ते में जतिन विश्वास के घर गये। वह सेनगुप्त की पार्टी का खास आदमी है। वहाँ सब गरम हो रहे थे। सुभाषबाबू के आदमियो की ज्यादतियाँ बता रहे थे, कह रहे थे कि सारा काम पूर्णोदास करने-कराते है और यह लोग गोलमाल मचाकर काम को नष्ट करना चाहते हैं। बी पी सी सी को शेष (खत्म) बता रहे थे। सतीशबाबू से मिले। वह अच्छे आदमी है इसमे तो कोई सन्देह नहीं पर उनके अन्दर भी पार्टी स्पिरिट नहीं ऐसा मालूम नहीं हुआ। उन्होंने कहा, एक सभा स्थापित करने वाले है उसमे आप भी शरीक होवे, महात्माजी के सिद्धान्तानुसार काम करेगे। अपने कहा, करिए, अपने को भी किसी के साथ काम करना ही होगा। सुभाषबाबू से प्रेम होते हुए भी यह पूरा विश्वास नहीं होता कि वे महात्माजी का समर्थन करेंगे तब तो इनके साथ ही काम करना होगा यदि इनकी सभा स्थापित होगी। अपने को सोचना है कि किस तरह काम करे। रात में बसन्तलालजी से बात हुई कि घनश्यामदासजी सुभाषबाबू से मिलना चाहते है और वे समझौते के सम्बन्ध में उन्हे समझायेंगे। अपने तो यह चाहते ही है कि सुभाषबाबू महात्माजी की तरफ़ आकर्षित हो जायें। सुभाषबाबू के यहाँ गये वे मिले नहीं तब बी. पी. सी. में गये वहाँ भी नहीं मिले तब फिर उनके घर गये पर उनसे मुलाक़ात नहीं हो सकी और न ही पता लगा कि कहाँ गये हैं इसलिए एक पत्र लिखा, उन के घर पर रख कर आये।

१० मार्च : सुभाषबाबू के यहाँ गये। बाहर चले गये थे और तुरत आयेंगे

ऐसा कह गये थे। आध घण्टा बाद आये तो इतने ज़्यादा आदमी थे कि उन से बात करने में लग गये। वह ज़रा नरम प्रकृति के आदमी हैं जो आता है उनको घेर लेता है। अपने इंगेज़मेण्ट की तरफ़ ध्यान नहीं रखते इसलिए उनका तथा उनके पास जाने वाले का बहुत समय चला जाता है। शेष में अपने कहा कि हमें आपसे ज़रूरी बातें करनी हैं अलाहिदा चलिए तो बेचारे तुरत अपने साथ हो गये। उनसे कहा, घनश्यामदासजी बिड़ला आपसे मिलना चाहते हैं और आज ही मिलना चाहिए तो उन्होंने कहा,मैं चलूंगा। अपने कहा वे ही आपके पास आ जाएंगे आप समय बतायें तो उन्होने कहा। मैं बारह बजे तक घर पर हू। अपने कहा कि हम लोग जाकर अभी उनको ले आते है।

वहाँ से घनश्यामदासजी के पास गये तो उन्होने कहा कि ग्यारह बजे चलेंगे तुम यहाँ आ जाओ साथ ही चलेंगे। फिर सुभाषबाबू के यहाँ गये, उनको कहा, ठीक ग्यारह बजे आयेंगे। घर और तब सवा दस बज चुके थे। ग्यारह बजे घनश्यामजी के पास पहुँचना था जिसमें निपटना, स्नान करना, आसन करना , प्रार्थना करनी और भोजन करना–यह सब काम करके ठीक ग्यारह बजे बिड़ला पार्क पहुँचे। वहाँ मालूम हुआ कि वे चले गये। क़रीव आध घण्टा हो गया। यह बात अपने को ठीक नहीं लगी। अपने बहुत नाड़ानाड़ी (जल्दी, बगला) करके ठीक समय पर पहुँचे थे सुभाषवावू के घर गये। दोनों आदमी प्राइवेट बात कर रहे थे। घनश्यामदासजी बाहर आये तब अपने साथ मोटर मे ले गये। रास्ते में उन्होंने कहा, सुभाषबाबू से बातचीत करके मेरे मन पर तो अच्छा प्रभाव पड़ा है कि यह आदमी सच्चा, त्यागी, वीर और कष्टसहिष्णु है। इसको समझाकर महात्माजी के पक्ष में करना यहा का बहुत ज़रूरी काम है। वह (सुभाषबाबू) महात्माजी से मिले बग़ैर कुछ भी राय प्रकट नहीं करेगे, ऐसा निश्चय हो गया है और जल्द से जल्द महात्माजी के पास जाना चाहता है। मै उसके लिए बन्दोबस्त कर देता हूँ जिसमे वह महात्माजी से कहाँ और कब मिले। एक पत्र भी महात्माजी को लिखता हूँ तुम चाहे इस पत्र को पढ़ लेना। मेरे जंचता है कि तुम दोनो याने बसन्तलालजी और तुम मे एक आदमी साथ चले जाओ। अपने कहा, सतीशबाबू महात्माजी के पास कल जा रहे है और मुझे भी साथ चलने को कहते है। वे एक कांग्रेस लीग स्थापित करना चाहते है आज ही उसकी स्थापित करने की सभा है। उन्होंने कहा, सतीश बाबू को मुझ से मिलाओ और लीग यदि स्थापित करना है तो महात्मा जी से मिलने के बाद करें। अपने पूछा कि क्या यह बात आपके नाम से कह सकता हूँ तो उन्होंने कहा, हाँ। घनश्यामदासजी पर अपना विश्वास बढ़ रहा है। कर्मण्य तो वह है ही पर सचाई भी काफी है और भी कई गुण हैं ऐसा मालूम होता है कि डिप्लोमेट ज़रूर है। लीग की सभा मे गये, सतीशबाबू को घनश्यामदासजी से बातचीत के बारे में बताया। उन्होंने लीग की स्थापना के बारे में कहा, पहले

और पीछे में क्या है । पर इतनी चतुराई से, चालाकी से काम लिया कि लीग की स्थापना भी नहीं हुई और किसी को मालूम भी नहीं हुआ । उनको ले कर घनश्यामदासजी के पास जाना तय हुआ।

११ मार्च : सतीशबाबू को लेकर घनश्यामदासजी के पास गये । रास्ते में उन्होंने कहा कि सुभाषबाबू के साथ काम करना मुश्किल है, वह ठीक नहीं है। पहले एक बात को मान लेता है और फिर थोड़ी देर बाद ही नहीं मानता है । उसके अन्दर हिंसा भी बहुत है । घनश्यामदासजी ने सतीशबाबू को कहा कि मैं कल सुभाषबाबू से मिला था मुझे वह बहुत ठीक आदमी जँचता है । उसको महात्माजी से मिलाने की बात मैंने तय कर ली है । आप महात्माजी के पास जा रहे हैं तो आप उस (सुभाषबाबू) से मिल लें, मैं भी महात्माजी को लिख रहा हूँ। सुभाषबाबू को महात्माजी की तरफ़ खींचना चाहिए तो उन्होंने कहा, यह ठीक है ज़रूर ऐसा करना चाहिए, और भी बातें इसी ढंग से कहीं । अपने ऊपर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा, रास्ते मे जो बातें की और घनश्यामदासजी के साथ जो बात की उसमें बहुत फ़र्क़ था । सब जगह एक ही-सी बात होनी चाहिए । सतीशबाबू को लेकर सुभाषबाबू के यहाँ गये । वहाँ बातें हुई उन का विशेष महत्त्व नहीं। शेष में तय हुआ कि १५ को सुभाषबाबू बम्बई पहुँचेंगे और सतीश बाबू भी वहाँ आयेंगे । सतीशबाबू से दो-तीन दिन से बात चल रही थी कि अपने भी उनके साथ बापूजी के पास चलें, पर अन्दर उत्साह नहीं होता था । अपने पास कोई खास बात नहीं, ऐसे फ़ालतू जाना ठीक नहीं लगता तथा ऐसे मामले में पड़ने का भी साहस नहीं होता । बिना चाहे भी इस बार कई बड़ी-बड़ी बातें सामने आयी हैं जिनको समझने की ठीक करने की शक्ति अपने में हो ऐसा आभास नहीं मिलता पर तब भी प्रभु ऐसी बातें सामने लाता है तो अच्छे के लिए ही लाता होगा और वही शक्तिदाता शक्ति देगा । घनश्यामदासजी के पास आये–वह पत्र ले जाओ । अहमदाबाद जाने के लिए कपड़े ठीक किये । बसन्तलालजी से मिले । उन्होंने कहा, अहमदाबाद जाना चाहिए पर अपने अन्दर उत्साह नहीं था। खादी भंडार में सतीशबाबू आये, उनसे बात हुई तो पता लगा कि उनकी भी अपने को ले चलने की जैसी पहले की इच्छा थी वैसी नहीं है इसलिए नहीं जाना तय हुआ ।

१४ मार्च : सुभाषबाबू बम्बई जा रहे थे इसलिए उनसे मिलना था, मिले पर बात नहीं हो सकी । उनके बम्बई जाने के काम में अपना उद्योग है । अपने चाहते हैं कि वे महात्माजी के सपोर्टर बन कर आवें ।

१६ मार्च : खादी भण्डार गये तो मालूम हुआ कि कल जमनालालजी का तार आया था जिसमें उन्होंने अपने को सुभाषबाबू के साथ बुलाया है । पहले उन्होंने तार देर से दिया, दूसरे अपने को देर से मिला इसलिए जाना फ़िज़ूल है,

ऐसा विचार किया ।

२३ मार्च : भगत सिंह के लिए एक सभा थी । सुभाषबाबू सभापति थे, वहाँ गये । सभा समाप्त होने पर सुभाषबाबू के घर गये । सुभाषबाबू ने कहा, महात्माजी से मैं मिला, मेरा उन का सैद्धान्तिक मतभेद नहीं रहा है । बहुत बातें नहीं हो सकीं क्योंकि वह कराची के लिए रवाना हो रहे थे । पर अपने को तथा भाई बसन्तलालजी को सन्तोष था कि अपने सुभाषबाबू को महात्माजी के पास भेजने का उद्योग किया था । उस का फल ईश्वर ने अच्छा ही किया।

४ अप्रैल, दिल्ली : जमनालालजी के साथ महात्माजी के पास गये उनको थोड़ा बुख़ार हो गया था । बेचारे कितने खटते हैं दूसरा कोई भी इतनी मेहनत नहीं कर सकता। जमनालालजी बात हुई । बसन्तलाल जी ने पिकेटिंग सम्बन्धी मतभेद की बात कही और दूसरी बात बंगाल में पार्टी फ़ीलिंग की । इसमे किस तरफ और किस पार्टी के साथ मिलकर काम करना चाहिए । उन्होंने कहा, बी. पी. सी. सी तुम्हारे वर्ड को न मानेगी तो आगे जा कर वर्किंग कमेटी से ठीक करा दिया जायेगा । पिकेटिंग के सम्बन्ध में बैजनाथ जी ने काफ़ी वादविवाद किया जमनालाल जी तो अपना जो मन है उसी को रापोर्ट करते है । उन्होंने यहाँ तक कहा कि नैतिकता का खयाल करें तो पहले यह पाप अपने घर से ही निकालना चाहिए और मारवाड़ियों को पहले मारवाड़ी विलायती कपड़े के व्यापारियों के यहाँ पिकेटिंग करनी चाहिए। इतने में बापूजी अपने कमरे में आ गये । जमनालालजी के साथ उनके पास गये। जमनालालजी ने परिचय कराया वैसे तो पहले का ही परिचय था । उन्होंने कहा, पिकेटिंग ज़रूर होनी चाहिए पर शान्तिपूर्ण होनी चाहिए। मैने यंग इंडिया में पिकेटिंग के सम्बन्ध में लिखा है और पिकेटिंग के जो आर्गनाईज़र हैं उनको सब बातें समझ लेनी चाहिए । अपने कहा, आप जो लिखते हैं उस पर तो पूरा ध्यान रखते हैं, उसको छपा कर प्रचार भी करते हैं । उन्होंने कहा, यह तो ठीक है पर काम करने वालो को उसे पूरा-पूरा समझना चाहिए । केवल प्रचार से काम नहीं चलने का ।

सुभाष-सेनगुप्त के सम्बन्ध में बात हुई । सेनगुप्त के सम्बन्ध में अपने विशेष नहीं कह सकते हैं क्योंकि उन के टच में रह कर काम करने का मौक़ा नहीं मिला पर सुभाष के सम्बन्ध में काफ़ी कहा । बातें हो रही थीं कि डॉक्टर अंसारी बापू का वज़न करने को आ गये और इधर सेनगुप्त भी आ गये । बातों का सिलसिला टूट गया । सेनगुप्त से कुछ बातें कर के आ गये ।

५ अप्रैल : सुभाष बाबू के यहाँ गये । वे दो-तीन आदमियों से बातें कर रहे थे । अपने लोगों को देखते ही बेचारे अलग कमरे में आ गये । काफ़ी देर तक महात्माजी, जमनालालजी, घनश्यामदास जी, सरदार वल्लभ भाई पटेल से अपने

1. कराची कांग्रेस में सुभाषबाबू – द्रष्टव्य पृ. सं. १५२–१५६

लोगों की जो बातचीत हुई वह सब उनको बतायी । उन्होने यह भी कहा कि आप लोग महात्मा जी को कह सकते है कि कॉंग्रेस के विरुद्ध जो लीग स्थापित हुई उस को वर्किंग कमेटी का सपोर्ट बिलकुल नही मिलना चाहिए ।

४. "बंगाल कांग्रेस में गुटबन्दी"

४ जून १९३१ कलकत्ता : दिन भर ज्वर रहा। इन दो दिनो मे खाने का काम कुछ नहीं । रात मे सोये इसके पहले सुभाषबाबू आ गये । सुभाषबाबू का अपने जैसे एक साधारण आदमी के घर पर बिना बुलाये आना बहुत बोझ पड़ने वाली बात है ।

५ जून : कल रात मे सुभाषबाबू आये थे और उनसे जो बातचीत हुई थी उसकी कार्रवाई मे लगे । सुभाषबाबू से कल बहुत सी बाते हुई जिनमे मुख्य यह थी कि जिन लोगो पर महात्माजी या वल्लभभाई का विश्वास है और जिनका वर्तमान पार्टी फीलिंग मे कोई सम्बन्ध नहीं है ऐसे लोगो से दो-चार पत्र महात्माजी को या सरदार वल्लभभाई को लिखवाया जाये । जीवनलालजी से एक पत्र लिखवाया जाये। अपने बाहर जाने की इच्छा और शक्ति नहीं थी पर यह काम करना जरूरी था। जीवनलालजी के पास गये उनको सब बाते समझायीं। जीवनलालजी ने कहा, मै तो इस विषय मे कुछ भी नहीं जानता हूँ । बात तो उनकी ठीक थी इसलिए अपने उनको दबाया नहीं । वहीं रास्ते मे गगनबिहारी मेहता मिल गये, कुछ देर उनसे इस विषय मे थोड़ी बाते होती रही फिर आनन्दजी हरिदासजी के पास गये और उनसे बाते की । सुभाषबाबू को सब बाते कहकर आये, अभी भी चेष्टा तो चल रही है देखे क्या होता है । सुभाषबाबू थोड़ा घबराये हुए है । उनको तो अपने आप पर विश्वास करना चाहिए ।

६ जून समिति की ऑफिस मे गये । काम ठीक ढग पर हो रहा है । छह हजार से ज्यादा प्रतिज्ञा-पत्र सही हो गये है । बिरादरी भोज की पिकेटिग मे गये ।

७ जून समिति की ऑफ़िस से सतीशबाबू के पास गये । सुभाषबाबू पर उनका बिल्कुल भी विश्वास नहीं है और सेनगुप्त की तरफ झुकाव है । वे आज बम्बई जा रहे है । आल इडिया चरखा सघ की मीटिग है । वे महात्माजी को सुभाषबाबू के विरोध मे शायद कुछ कहे। देखे क्या होना है ।

१९ जून : दक्षिण कलकत्ता के कई कार्यकर्ता आये थे अपने को सुभाष बाबू की पार्टी मे सही करने के लिए कहते है । सुभाषबाबू से प्रेम होते हुए भी

अपने ने सही नहीं की और ये लोग बहुत शान्ति के साथ गये। प्रफुल्ल घोष और अन्नदा चौधरी के साथ बात की। कई जिलों में काम करने का ठीक किया गया।

१९ जुलाई : सुभाषबाबू का फ़ोन आया उनसे मिलने गये। मोटर खादी फेरी मे चली जाती है अपने काम में नहीं आती है। घूमना तो बहुत पड़ता ही है। पैसे खर्च करना ठीक नहीं पर जरूरत के मौके पर खर्च हो ही जाता है। सुभाषबाबू के यहाँ जल्दी जाना था। सुभाषबाबू के यहाँ से भाड़े की विराट् सभा थी उसमे गये। भाड़े का आन्दोलन चलाने वालो मे दमदार आदमी कोई नहीं है नहीं तो आन्दोलन बहुत जल्द सफल होना। आन्दोलन के संचालक अपने को भी कहते है कि तुम लोग इस आन्दोलन मे भाग लो। अपने भाग ले, ऐसी इच्छा भी होती है क्योंकि आजकल भाड़े के कारण बहुत से ग़रीब आदमियो को कष्ट उठाना पड़ता है। पर इन लोगों में जानकर कष्ट उठाने वाले दिखाई नहीं देते और कोई भी काम कष्ट उठाये बिना नहीं हो सकता।

२० जुलाई : सभा के प्रबन्ध का भार बसन्तलालजी को सँभला कर खादी फेरी मे गये। महाराष्ट्र निवास में अणे साहब के पास गये तो वहाँ की हालत विचित्र थी। सुभाषबाबू, शरतबाबू, किरणशंकर राय, सेनगुप्त, सुरेश मजुमदार, ज्योतिष घोष, अमर दत्त, हेमन्त बोस और उन लोगो के 'बैरिस्टर' तथा जिलों के प्रधान-प्रधान बंगाल के प्राय सभी मुख्य लोग वहाँ जुटे थे। लड़ाई कैसी प्यारी चीज है, इसमे लोग किस प्रकार लगते है। यह लोग बंगाल के मुख्य आदमी है। बंगाल की भलाई-बुराई का इन पर भार है और इनकी यह हालत है कि सारी शक्ति परस्पर के झगड़ों मे लगा रहे है। यहाँ काम किस प्रकार हो सकता है यहाँ तो सेनगुप्त, सुभाषबाबू की हार-जीत का सवाल है। चाहे सुभाषबाबू कितने भी अच्छे हो पर यह उनको शोभा नहीं देता। इतने त्यागी और वीर स्वभाव के सुभाषबाबू मुफ़्त में इस झगड़े मे पड़े नहीं तो सब सेनगुप्त के लिए छोड़ देते और अपने काम करते। पर बंगाल की राजनीति ही दूसरी है। ज़िलो से आये बहुत लोग थे। सबसे मिलना-जुलना हुआ। इतने वर्करों से एक साथ मिलने का मौक़ा नहीं मिलता। अणे साहब तो बहुत अटके हुए और बहुत घिरे हुए थे, बोलने तक की फ़ुरसत नहीं थी।

कुछ देर ठहरने के बाद उनसे बात हुई तो उन्होने कहा कि मुझे बड़ा दुख है कि मै नहीं जा सकता। अपने कहा, हम लोगों ने पत्रों में और सब तरह से लोगों को खबर दे दी है, न चलने से अच्छा नहीं होगा। तब उन्होंने कहा, अच्छा चलूँगा लेकिन कब चलूँगा ऐसा नहीं बोल सकता। तब बिड़लाजी को फ़ोन किया उनसे बात करने के लिए उठकर आये और चलना स्वीकार किया। उपस्थिति अच्छी थी। ठीक साढ़ सात बजे कार्यवाई शुरू की गयी। अणे का भाषण अच्छा

हुआ । भाषण समाप्त होने वाला था कि वर्षा आ गयी तो अणे साहब ने अपना भाषण समाप्त कर दिया । वर्षा से लोग इधर-उधर होने लगे । घनश्यामदासजी सभा को समाप्त करना चाहते थे पर अपनी इच्छा थी कि उनका भाषण अवश्य हो । उनसे कहा तो पहले वे नटे इतने हो-हल्ले में भाषण नहीं हो सकता पर ज़्यादा कहने पर राजी हो गये । जितनी देर बोले वह बहुत ही सुन्दर बोले । लोगों ने उनके भाषण की प्रशंसा की तथा प्रभाव पड़ा । मीटिंग समाप्त होने पर स्त्रियों को पहुँचाया ।

२३ जुलाई : सुभाषबाबू से मिले । चुनाव के झगड़े तथा अणे साहब के बारे में बातचीत हुई । कुछ निराश मालूम होते थे । वास्तविक बात यह है कि इन लोगों की नीति सत्य की नहीं है । गड़बड़ करते है और वह खुलती है घबराते हैं । अपने ऊपर तो यह छाप है कि सुभाषबाबू जनरल में अच्छे आदमी हैं ।

१९ अगस्त : भागीरथजी को ले कर सुभाषबाबू के यहाँ गये । काफ़ी देर तक बातचीत हुई । **केवल बंगाल, आसाम बाढ़ के सम्बन्ध में बातें हुई** । भागीरथ जी देवता आदमी है, वे सबको अच्छा समझने वाले हैं । उन्होंने (भागीरथजी) कहा कि सोसाइटी आपके साथ मिलकर काम करे इसमें हमे कोई आपत्ति नहीं पर कमेटी के मेम्बरों से पूछना होगा और मैं आपको रूपयों की मदद तो कराऊँगा ही । सुभाषबाबू के पास भागीरथ को ले जाने से सुभाषबाबू के कार्य को लाभ हुआ है । जीवनलालजी गुजराती के पास गये । वे महात्माजी राउंड टेबल में जायेंगे, ऐसी आशा नहीं रखते है और लड़ाई शीघ्र आरम्भ हो ऐसा भी नहीं जँचता, पर राउंड टेबल के बाद ही देखा जायेगा । उनका कहना था कि अभी ग्रामों में काम किया जाना चाहिए । विद्यालय गये, विदेशी वस्त्र बहिष्कार समिति गये । काम तो ठीक चल रहा है । भोर में सुभाषबाबू से जो बात हुई थी उसके सम्बन्ध में रात भागीरथजी के घर पर चार-पाँच आदमी मिले । सोसाइटी सुभाषबाबू के साथ मिल कर उन के नाम से काम करे । यह काम रामकुमार जी, तुलसीराम जी को जँचा इसलिए सुभाषबाबू से कह दिया जाये कि हम आप लोगों के साथ हैं पर काम अलाहिदा ही करेगे ।

५ दिसम्बर : साढ़े तीन बजे ब्रह्मपुर पहुँचे । **ब्रह्मपुर कान्फ्रेंस** का साढ़े सात बजे झण्डा उत्सव था, उसमे गये । नारीमान के हाथ से उद्घाटन था लेकिन वह आये ही नहीं । लोग खड़े-खड़े निराश हो गये, कितने ही चले भी गये । महिला स्वयं-सेविकाओं का दल थककर बैठ गया, तब कहीं नारीमान साहब साढ़े आठ बजे के बाद पधारे । हमारे जो नेता हैं उन की यह हालत है तब पब्लिक को क्या दोष दें । नारीमान ने बंगाल की प्रशंसा की और नये आर्डिनेंस की निन्दा की । दोपहर कान्फ्रेंस में गये । बंगाल के सब जिलों से कार्यकर्ता आये थे । बाहर से राजेन्द्रबाबू और नारीमान साहब आये थे । स्वागत समिति के सभापति मौलाना

अब्दुल समद का भाषण बहुत ही सुन्दर और काम की बातों का था। सभापति श्री हरदयाल नाग बेचारे बहुत ही बूढ़े और सात्त्विक आदमी है, पूज्य महात्माजी के अनुयायी हैं.। उनका भाषण दूसरे आदमी ने पढ़ा, वह साधारण था। स्वागत समिति का प्रबन्ध कुछ भी नहीं था। ब्रह्मपुर के लोगों का कोई अनुराग नहीं था। अपने को तो यहाँ आना और रहना व्यर्थ मालूम होने लगा। अपने यहाँ ख़ास इसलिए आये थे कि जिले के लोगों से मिलकर विदेशी वस्त्र रोकने के सम्बन्ध में बातें करेंगे। प्रफुल्लबाबू से बात होने पर यह हुआ कि यह हो नहीं सकता है। कौन कहाँ ठहरा है, इसका पता नहीं लगता।

६ दिसम्बर : मुर्शीदाबाद देखने गये। करीब चार बजे लौटे और कान्फ्रेंस में गये। उपस्थिति कल से अधिक थी। अणे साहब भी आज आ गये थे। कई प्रस्ताव पास हुए। मुख्य प्रस्ताव तो बंगाल की स्थिति तथा चटगाँव, ढाका, हिजली के अत्याचारों का बदला चुकाने के लिए ब्रिटिश माल का बायकाट पर था। दुख की बात तो यह है कि पार्टी स्पिरिट अभी ज्यों की त्यों है। जब यह रहेगी तब तक हिजली, चटगाँव का क्या बदला चुकाया जा सकता है? आज का मुख्य प्रस्ताव कौन उपस्थित करे यह सवाल पैदा हो गया। यह प्रस्ताव सुभाषबाबू द्वारा उपस्थित होना आवश्यक था। इसके लिए उनके मन में दर्द भी था। यहाँ तो सवाल यह था कि सुभाषबाबू बड़े हो जायेंगे तो हमारा क्या होगा, इसलिए उर्मिलादेवी द्वारा प्रस्ताव उपस्थित कराया गया। सुभाषबाबू किसी प्रस्ताव पर कुछ नहीं बोले। और बोलने वालों में लाल मियाँ तथा मौलाना सीराजी का लड़का था जिसने अहिंसा का प्रस्ताव रखा। दोनों के भाषण अच्छे हुए। राजेन्द्रबाबू बंगला में बोले।

५. विदेश से वापसी पर गिरफ्तारी

४ दिसम्बर, १९३४ कलकत्ता : दमदम हवाई जहाज़ के अड्डे पर सुभाषबाबू आने वाले थे, वहाँ गये। बाहर बहुत लोग इकट्ठा हो गये। रास्ते में पुलिस का प्रबन्ध था, किसी को भीतर नहीं जाने दिया जाता था। अपने तथा बसन्तलालजी ने पहले से तजवीज की थी कि एक एरोड्रोम क्लब के मेम्बर के साथ भीतर गये। ऐसे ही और भी कई लोग पहुँचे थे पर शेष में प्रायः सब को हटा दिया गया। पौने चार बजे ठीक उनका एरोप्लेन आया। तलाशी आदि होने के बाद पुलिस ने उन्हें उतारा, किसी से मिलने नहीं दिया। पुलिस अपनी मोटर में बिठाकर उनको

घर ले गयी । मोटर चली तब अपने लोगों की और सुभाषबाबू की आंखें मिलीं। प्रणाम किया । पुलिस ने सब मोटरों को रोक दिया जिसमें सुभाष बाबू की मोटर का कोई पीछा नहीं कर सके ।

१७ मार्च, १९३७ : कलकत्ता सवा नौ बजे बसन्तलालजी का टेलीफोन आया, सुभाषबाबू छूट गये हैं यह संवाद बड़ा हर्षदायक और सुखमय है । उनका स्वास्थ्य निहायत खराब हो गया । कल उनसे मिलेंगे ।

६. रिहाई

१८ मार्च : बसन्तलालजी के साथ सुभाषबाबू से मिलने गये । कई लोग उनसे मिलने आये थे । डी. एल. राय के लड़के प्रसिद्ध गायक श्री दिलीपकुमार राय भी आये थे, सुभाषबाबू के क्लास के साथी है, दोनों ने इंग्लैड के केम्ब्रिज कॉलेज में साथ-साथ शिक्षा पायी । सुभाषबाबू ऊपर से आये, सर्वप्रथम उनसे ही मिले। उन दोनों मित्रो का मिलन देखकर एक प्रकार का विशेष अनुभव हुआ । दोनों आदमी एक दम लिपट गये और ऑख से आँख मिलाना मुश्किल हो गया । दोनों फूट-फूट कर रोने लगे । कई देर तक उनकी हिचकी बँधी रही । यह दृश्य एक विचित्र सा था । अपनी ऑखें भी गीली हो गयीं । इसके बाद अपने को भी गले लगाकर मिले और भी बहुत से लोग आये थे, उन सबसे भी इसी प्रकार मिले। स्वास्थय तो बहुत खराब हो गया है, कमजोर अधिक हो गये हैं । विशेष बातें तो नहीं हो सकीं, फिर मिलने का तय किया ।

२३ मार्च : बसन्तलालजी के साथ सुभाषबाबू से मिले, अभी उनकी तबीयत अच्छी नहीं है । इसलिए वे ज़्यादा काम नहीं कर सकते । आगे किस तरह काम करना होगा यह सब बातें थोड़े रूप में हुई ।

७. सुभाषबाबू का सार्वजनिक स्वागत

३ अप्रैल : सुभाषबाबू के यहाँ गये । छह तारीख को बंगला कॉंग्रेस कमेटी की तरफ़ से सुभाषबाबू का सार्वजनिक स्वागत होने का प्रबन्ध हो रहा है, उसी दिन उन्हें दस हज़ार रुपये की थैली दी जाये, इसपर विचार करने के लिए अपने

कई लोगो को बुलाया था। समय इतना कम है कि उसमे कोशिश नहीं की जा सकती। बगाल के लोग कुछ देना नहीं चाहते केवल मारवाड़िया से आशा करते है। इसलिए अपने लोगो ने अभी कुछ भार नहीं लिया है।

६ अप्रेल . शाम को बगाल की तरफ से सुभाष बाबू के सार्वजनिक स्वागत मे गये। भीड़ तो खूब हो गयी था पर बन्दोबस्त अच्छा नही था। व्यवस्था करने वाले ठीक नही थे। बम्बई के लोगो को देखने का काम पड़ा, वे ज्यादा अच्छे प्रबन्धक है। सुभाषबाबू अपने परिवार के लोगो के साथ आये। जनता ने उन की जय के साथ हार्दिक स्वागत किया। उन्होने छोटा-सा लिखित व्याख्यान दिया। ऐसे बंगाली भावुक जाति है पर सुभाषबाबू तो बहुत ही भावुक है, व्याख्यान देने खड़े हुए तो उन की ऑखो से ऑसुओ की धारा निकलने लगी, कई बार रुकना पड़ा और रुंधे कण्ठ से बोलते रहे। सुभाषबाबू के प्रति अपनी अच्छी भावना और श्रद्धा पहले से ही है। उन के साथ थोड़ा काम करने का मौका भी मिला। वे वीर है, त्यागी है, अपूर्व देशभक्त है पर अनुभवी नहीं है विचारक नहीं है। एक बात सबसे खराब है वह यह कि निज मे वे महत्त्वाकांक्षी है। बगाल के लोगो मे बहुत से गुण होते हुए यह दोष प्राय पाया जाता है। इसी कारण इतने त्यागी और कार्यकर्ताओ के रहते हुए तथा स्वतन्त्रता के यज्ञ मे इतना अधिक आहुतिया डालने पर भी आज बगाल अपना स्थान अग्रणी नहीं रख सका। सुभाषबाबू का व्याख्यान देशभक्ति पूर्ण और अपने आप को देश माता पर अर्पण करने की भावना से भरा हुआ था। उस का स्वागत बहुत अच्छा हुआ।

८. "हरिपुरा कांग्रेस डेलिगेटो का चुनाव"

२४ जनवरी, १९३८ आज सुभाषबाबू एरोप्लेन से जाने वाले है, उनके घर गये। वे अपने से गले लग कर मिले। स्वास्थ्य पहले से बहुत अच्छा लगा। प्रसन्न भी खूब दीखते थे। कुशल-समाचार की बात हुई, थोड़ी सी और भी बात हुई। फिर मिलने की बात करके अपने आ गये तथा वे ऊपर अपनी मॉं के पास गये।

२६ जनवरी : स्वतन्त्रता दिवस के उत्सव मे बड़ा बाजार गये। वहॉं से स्व शरत् चन्द्र चटर्जी के श्राद्ध मे गये।

२८ जनवरी · इस बार हरिपुरा कॉंग्रेस के डेलीगेटो के चुनाव मे प्राय सभी जगह गोलमाल हुई बताते है। पर बगाल मे जो कुछ हुआ तथा अपने साथ जो

हुआ उस का अपने को मालूम है और उसका मन पर काफ़ी असर पड़ा है । अपने डेलीगेट तो चुन लिये गये पर जिन कार्रवाइयों से चुने गये वे अपने को पसन्द ही नहीं बल्कि अपने लिए दुखद थीं । पार्टीबाज़ी के कारण न्याय को ख़ासकर जिनके हाथ में काँग्रेस की बागडोर रहती है वे बिलकुल भुला देते हैं । काँग्रेस का प्रभाव बढ़ा है, वह त्यागी और सच्चे लोगों के कष्ट सहने से बढ़ा है । पर काँग्रेस की ताकत को अपने क़ब्ज़े में रखने के लिए आज वे ही लोग लालायित हैं जो देश की पुकार के, उसके काम नहीं आते । कहते दु:ख होता है कि आज काँग्रेस की सत्ता उन्हीं लोगों के हाथ में है और उन्हीं के हाथ में जा रही है। कई बार इच्छा होती है कि राजनीति गन्दी चीज़ है । सिवा छल-कपट के इस में आज कुछ भी नहीं रह गया है । अपने इस प्रपंच से अलग हो जायें पर मन नहीं मानता और फिर इस अड़ंगे में जाना पड़ता है । मन में शान्ति नहीं है । काम करना चाहते है । गाँवो में जाकर काम करने, मूक सेवा करने की सामर्थ्य नही दीखती । शहरो मे राजनीतिक काम करना हो तो ऐसे लोगों के साथ काम करना पड़ता है जिन को न्याय-अन्याय का विचार नहीं । पार्टीमेन हो कर रहे बग़ैर गुज़र नही । यदि पार्टीमेन न बने तो कॉंग्रेस में जगह नही और कॉंग्रेस में न रहें तो कांग्रेस का काम जैसे करना चाहते है, कर नही सकते । ऐसी स्थिति है कि न तो करने मे सुख मालूम होता है और न ही छोड़ने मे । एक बात और भी दुःख की है वह निज की है कि एक प्रकार की महत्वाकांक्षा मन में हो गयी है कि अपन भी सब लोगो के साथ बड़े बने रहें । कॉंग्रेस के पदो पर आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मे अपने रहे । ये सब बाते भी अपने को दु:ख ही देती है । इस मे सेवा का भाव सोचने पर कम मालूम होता है, निज की महत्त्वाकांक्षा ज़्यादा मालूम होती है । पर जब साथ के लोगो को वैसा करते देखते है, उनका समाज मे, जनता मे मान होता दीखता है, देश के बड़े-बड़े नेता आदि उन की पूछ करते है तब अपना मन भी उस तरफ़ चला जाता है । यह एक प्रकार की कमज़ोरी ही कही जायेगी, जिस वातावरण में रहते है, जिन लोगों के साथ काम करना पड़ता है, उसके अनुसार ही विचार बनते है और उसका प्रभाव मन पर पड़ता ही है । मनुष्य मनुष्य ही है, वह हर हालत मे बड़ा बनना चाहता है । जिन लोगो के बीच वह रहता है उनके साथ मान से और बड़ा बनकर रहने की इच्छा उसमें स्वाभाविक ही होती है चाहे वह मिले या न मिले । इन सब बातों से ऊपर उठना ही सच्ची मनुष्यता है पर इसका प्रयत्न करना कठिन है और प्रयत्न करते हुए भी उसमे सफलता तो ईश्वर की कृपा से ही मिलती है । अपने सोचते और चाहते हैं कि इन प्रपचो मे न पड़े । चाहे जो काम करें उसमें मान की इच्छा क्यों करें ? मान चाहे मिले या न मिले । अपने अपनी जान में मान मिलने की कोशिश नहीं करते पर यदि तह के अन्दर जाकर विचारा जाये तो उस में मान मिलने की भावना

काम कर रही है ऐसा मालूम होता है। अपने सोचने तो यह है कि अपने कोई पद के लिए कोशिश करते है तो इसीलिए करते है कि इसमे अपने ज़्यादा काम कर सकेंगे और उससे देश का ज़्यादा भला होगा। एक प्रकार की अशान्ति और विकलता अनुभव होने लगती है। क्या करे, वश तो कुछ भी नही।

३१ जनवरी : ए. आइ. सी. सी. का चुनाव है। अपने भी खड़े है इसलिए काफी झंझट है। गीता-रामायण का पाठ नहीं कर सके। इस बार चुनाव मे काफी दिक्कतें है। अपना पोजीशन बड़ा ही गोलमाल है। यहाँ जिस पार्टी के हाथ मे कांग्रेस है, उनका ही जोर है, वे तो अपने को खादी पार्टी का समझते है और मदद नहीं करते। खादी वाले अपने को साम्यवादी कहते है, साम्यवादी कहते है कि आप लोग तो वैसे पूंजीपति है और सब पार्टियों के साथ मेल रखते है तथा हम लोगों का अभी खूब ज्यादा प्रभाव भी नहीं [illegible]। अपने लोगों को [illegible] समर्थन किसी का नहीं मिलता और अपनी [illegible] नाजुक बन जाती है। अपने अपनी समझ से जो लोग देश का काम करते है और [illegible] है उनको शक्ति के अनुसार सहायता करते है। [illegible] है। [illegible] मालूम होता है [illegible] अपना [illegible] नहीं। सुभाषबाबू मे कई बातों का प्रेम है। [illegible] के साथ [illegible] का सम्बन्ध ज्यादा [illegible] गया है। [illegible] अपने लोगों [illegible] के लिए खूब ही प्रेम का परिचय दिया। [illegible] के आपस में [illegible] कि वहाँ बहुत बड़ी गोलमाल हुई। कुछ साम्यवादी तथा [illegible] शामिल [illegible] लिया। जिन [illegible] मे वोट [illegible] रहे थे [illegible] दिया [illegible]। [illegible] ने ऐसा [illegible] किया इसके [illegible] शामिल है पर लोगों का कहना है कि इसमे परस्पर [illegible] ही कारण है। गोलमाल करने वालों का कहना था कि बंगाल में राजबन्दी [illegible] कष्ट पा रहे है। [illegible] जेल मे अनशन के कारण एक बन्दी की मृत्यु भी हो चुकी है। उसकी तरफ कांग्रेस का ध्यान नहीं है। सुभाषबाबू भी आगे और उपद्रव करने वालों से [illegible] उनको शान्त किया। उन लोगों ने अपने आचरण के लिए माफी भी माँगी। बंगाल की स्थिति बहुत बिगड़ी हुई है [illegible] एक खूब जोरदार नेता की जरूरत है। सुभाषबाबू त्यागी, देशभक्त है पर जो नेता मे होना चाहिए वह उनमे नहीं है।

८ फ़रवरी : टाउन हॉल मे ढाका जेल मे अनशन कर रहे राजबन्दियों के लिए सुभाषबाबू के सभापतित्व मे मीटिंग थी। वहाँ बोलना पड़ा, सुभाषबाबू ने कहा इसलिए। अपना टाउन हॉल मे पहले-पहल [illegible]। आजकल शरीर कमजोर

है फिर ज़रा वहाँ बोलने में हिचक भी थी इसलिए छाती में धड़कन सी हुई पर बोल ठीक से सके ।'

१२ फरवरी : ए. आई. सी. सी. का चुनाव था इसलिए बी. पी. सी. सी. के ऑफिस में गये । अपने और बसन्तलालजी के चुने जाने की आशा है । रुपये तो जरूरत और ताक़त से अधिक खर्च हो गये हैं । हरिपुरा काँग्रेस[1] में जाने के लिए जी ललचाता है, भागीरथ जी आदि सलाह देना तो दूर रहा, जाने के विरोधी हैं (तबीयन की खराबी की वजह से) ।

१४ फरवरी, १९३८ : ए. आइ. सी. सी. के मेम्बर चुन तो लिये गये । काँग्रेस देश की सर्वमान्य, आजादी का आन्दोलन करने वाली मुख्य संस्था है पर इसमें जैसे लोग शामिल हैं और जिन तरीकों से काम लिया जाता है वह बहुत ही अनुचित है । इसका कारण यही होगा कि ज़्यादा बड़ी संस्था होने से सब तरह के लोग इसमें घुस आते हैं । पर सबसे बड़ी बात तो यह है कि देश का काम करने वाले क्यों इतने नीचे उतर आते हैं ? यह देखकर दुःख होता है । अपने इस क्षेत्र में आ गये है, अब न तो हटा जाता है और न ऐसे लोगों के साथ काम करने में सन्तोष होता है ।

९ : हरिपुरा से वापसी

१० मार्च : राष्ट्रपति सुभाषबाबू आने वाले थे । उन का शाही स्वागत था । साढ़े सात बजे गाड़ी आयी । स्टेशन पर जितनी भीड़ होनी चाहिए थी उतनी नहीं हुई । वहाँ से उनका जुलूस बी. पी. सी. सी. ले जाया गया । रास्ते में कई जगह स्वागत हुआ पर जुलूस छोटा होने की वजह से अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा । शाम को सुभाषबाबू, अपने और बसन्तलाल जी के साथ घूमने गये । एक घण्टे से भी ज्यादा घुमते रहे । बंगाल की राजनीति, हिन्दुस्तान की राजनीति और काम किस तरह किया जाये आदि खूब बातें हुईं ।

१२ मार्च : पैरेडाइज़ सिनेमा में सुभाषबाबू ने एक नये फ़िल्म का उद्घाटन किया । फ़िल्म अच्छा था, साथ में थोड़ा सा काँग्रेस का दृश्य भी दिखाया गया था । कल बवासीर का आपरेशन होगा ।

अपनी तो यही विनती है कि प्रभु हर हालत में खुश रखो, सदा सत्य का मार्ग दिखाओ, इस गरीब दुखी देश का कल्याण करो । बल दो, अपने को इस

१. हरिपुरा कांग्रेस में नेताजी विशेष द्रष्टव्य पृ. सं. १८२–१८६

विराट् रूप देश की सेवा की जा सके। ओम् तत्सत, ओम् नत्सत, ओम् तत्सत, शान्ति, शान्ति, शान्ति,

१. कांग्रेस सभापति का चुनाव

२० जनवरी १९३९ कलकत्ता –सुभाषबाबू से मिलने गये और फिर प्रफुल्लचन्द्र घोष से मिले। बगाल की राजनीतिक अवस्था और दलबन्दी के बारे मे बातचीत की। अपने लोगो को ऐसी स्थिति मे बड़ी मुश्किल होती है, जिस के विरोध मे वोट देते है वही नाराज हो जाता है इससे तो यह इच्छा होनी है कि इस बखेड़े से हट जाये और अपना कोई शान्तिपूर्ण काम करे। इस बार कॉग्रेस के सभापतित्व का सवाल जरा टेढ़ा हो गया है। सुभाष बाबू यदि खड़े रहे और पट्टाभि भी खड़े रहे तो काफी दिक्कत और कम्पीटीशन होगा। सुभाषबाबू सभापति बनने की इच्छा तो खूब रखते है, देखे, क्या होता है। और पूज्य महात्माजी ने उन्हे जिस तरह आशीर्वाद दिया है, आज उन्होने जो लिखा है और जिस तरह प्रचार आदि काम हो रहा है, उसे देखते ईश्वर इस आन्दोलन को सफल अवश्य करेगा।

२४ जनवरी सुभाषबाबू से अपना काफी मेल है। उनका त्याग,वीरता आदि गुण अपने को उनके प्रति श्रद्धा रखने के लिए कहते है पर उनका विवेक, उनकी बुद्धि अपने को आकृष्ट नहीं करती। वह जिस तरह देश की बागडोर अपने हाथ मे रखने की अनुचित कोशिश करते है और छोटे छोटे मामलो को ले कर बड़ी से बड़ी बाते अपनी इच्छा के अनुसार ही हो, यह चाहते है या कोशिश करते है, यह उनके बड़प्पन के लायक नहीं है। इस बार सभापति पद को ले कर वह लड़ रहे है। इस मामले मे बसन्तलालजी से अपना मतभेद होने का अन्देशा है। बसन्तलालजी से अपना अधिक से अधिक प्रेम है साथ ही पच्चीस वर्ष से ज्यादा का साथ है और ईश्वर की कृपा से मतभेद नहीं हुआ है। अब यही प्रार्थना है कि ईश्वर अपने दोनो को सच्चा मार्ग दिखाये। सभापति के मामले पर जमनालालजी की सुभाषबाबू से काफी बाते हुई। सुभाषबाबू अभी तक राजी नहीं हो सके और अब बहुत कम उम्मीद है कि वह हटेगे।

२६ जनवरी झण्डा उत्सव मे गये। शाम स्वतन्त्रता दिवस की सभा मे गये। सुभाषबाबू ने पौन घण्टे से ज्यादा व्याख्यान दिया। आमतौर पर आज के दिन व्याख्यान नहीं हुआ करते है। स्वतन्त्रता का सकल्प ही पढ़ा जाता है।

२९ जनवरी आज कॉग्रेस सभापति का चुनाव है। बहुत वर्षो से चुनाव बिना प्रतिद्वन्द्विता के होता रहा। इस बार सुभाषबाबू ने वर्किंग कमेटी के खास

मेम्बरों की बात नहीं मानी, खासकर महात्मा जी और जवाहरलाल जी की भी इच्छा के विरुद्ध खड़े हो गये। कई लोगों ने उन को समझाया भी पर वह अटल रहे। अपने भी सुभाषबाबू को प्रतिद्विन्द्विता से हट जाने के लिए कहने वालों मे से है और अपनी समझ में वह गलती कर रहे है। ऐसा करके वह देश या निज का भला नहीं करते हैं। उनके जो वक्तव्य निकलते हैं, उन की दलीलें बिल्कुल नहीं जँची और अपनी यह भी पक्की धारणा थी कि सुभाषबाबू निश्चित हार जायेंगे और उनको बहुत कम वोट मिलेंगे पर उनको वोट ज़्यादा मिले। खासकर बंगाल मे उनको बहुत ही ज़्यादा वोट मिलेंगे, यह नहीं सोचा गया था। बंगाल मे सुभाषबाबू को चार सौ चार वोट मिले और पट्टाभि को केवल उन्नासी। इसका खास कारण यह हो सकता है कि बंगाल में जो लोग सुभाषबाबू को सभापति बनाने के विरोधी थे, वे भी उनके विरोध मे जाने का साहस नहीं कर सके या उचित नहीं समझा। दूसरा कारण थोड़ी प्रान्तीय प्रवृत्ति भी है ही, तीसरी बात यह है कि जनता बहुत सोच कर थोड़े ही काम करती है, जो गरम बोलता है उसके पक्ष में हो जाती है। यह चुनाव सुभाषबाबू ने जीत लिया पर अपनी निगाह मे इसका परिणाम अच्छा नहीं है।

अपने इस बार भी ए.आई.सी.सी. के लिए खड़े हो गये और कोशिश भी करनी पड़ी। मन का जरा अच्छा भी नहीं लगा पर खड़े हो गये तब वोटों का जुगाड़ करना जरूरी मालूम होने लगा और करने की इच्छा नहीं थी। वैसे भाग्य तो मानते है पर ऐसे मामला मे भाग्य भी बहुत हुआ करता है। देखा जायगा जो होगा सो हो जायगा। सुभाषबाबू ने अपने चुन जाने मे बहुत मदद की जिसकी अपने को आशा नही थी। सुभाष अपने साथियों का जैसा ख्याल रखता है वैसा बहुत कम आदमी रखते है। अपने उसके पूरे साथी नहीं पर अपने को साथ रखना चाहता है। उसकी देशभक्ति, त्याग, साहस अपने को प्यारी लगती है पर उनकी कार्यपद्धति अपने स्वभाव के साथ मेल नहीं खाती इसलिए बड़ी मुश्किल रहती है। न उसके पूरे साथी हो सकते है और न विरोधी ही। शाम को शरदबाबू, सुभाषबाबू के बड़े भाई के लड़के के विवाह की पार्टी मे गये और खादी भण्डार, सेवा सदन जा कर घर आये, बहुत थकावट मालूम होती थी।

९ फ़रवरी आज मित्रों की मीटिंग में रामकुमार जी ने अपने और बसन्तलाल जी पर आरोप किया कि इन लोगों ने मित्रों की निश्चित नीति के विरुद्ध काम किया और आगे से हम लोगों की क्या नीति रहेगी, इस पर विचार होना चाहिए। इस बार राष्ट्रपति-चुनाव में बसन्तलाल जी ने सुभाषबाबू को वोट दिया और अपने उदासीन रहे किसी को वोट नहीं दिया। रामकुमार जी का कहना था कि अपने मित्रों के संगठन में गाँधी जी के सिद्धान्तों के अनुसार चलने की नीति है। यह ठीक है पर अपनी जान तथा दूसरे मित्रों की राय में भी अपने लोग महात्मा जी के सिद्धान्तों के विरुद्ध नहीं गये हैं। हाँ, सुभाषबाबू को वोट न देकर पट्टाभि

को वोट देते तो गांधीजी की इच्छा के अनुकूल होता पर अपने लोगो ने बंगाल के बहुमत के खिलाफ जाना उचित नही समझा । पूज्य महात्माजी ने दूसरे दिन पट्टाभि की हार को अपनी हार बनाया तथा अपने को थोड़ा दुःख सा हुआ । उदासीन न रहकर पट्टाभि को वोट देना चाहिए था । महात्माजी के सिद्धान्तो के प्रति अपनी श्रद्धा है, उनके ऊपर चलने की इच्छा है । कोशिश करते है पर अपने में जितनी कमजोरी है वह तो है ही तो भी यह कैसे समझा या माना जाये कि अपने महात्मा जी के सिद्धान्तो के प्रतिकूल चलते है । रामकुमार जी को बहुत समझाया पर वे अपनी बात पर अड़े रहे और उन्होंने मित्रा की मीटिंग से इस्तीफा दे दिया । उनका यह काम अपनी निगाह मे ठीक नहीं है खैर जो हो अपनी तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह अपने को सन्मार्ग पर चलने की बुद्धि और बल दे । अपनी जो भूल हो, उन का ज्ञान अपने को कराये और उनको स्वीकार करने का साहस प्रदान करे ।

१७ फ़रवरी : सुभाषबाबू के सभापतित्व को लेकर जो स्थिति पैदा हो गयी है वह बहुत ही गड़बड़ है । वर्किंग कमेटी के पुराने मेम्बरो मे प्रायः सभी इस्तीफा दे देंगे, नये मेम्बर जिम्मेवारी को कहाँ तक संभाल सकेंगे । आपस की जो चर्चा चली है उससे तो यही मालूम होता है कि इस स्थिति मे देश का बहुत बड़ा नुकसान होगा । कांग्रेस मिनिस्ट्री भी टूट जायेगी और यदि आन्दोलन शुरू किया तो महात्माजी के नेतृत्व के बिना उसे संभालना मुश्किल हो जायगा । वर्तमान स्थिति मे गांधी जी आन्दोलन चलाना स्वीकार नहीं करते क्योंकि कांग्रेस मे जिस तरह की गन्दगी पैदा हो गया है उससे महात्मा जी का आन्दोलन चल नहीं सकता कारण महात्मा जी का आन्दोलन तो सत्य और न्याय का आन्दोलन है । आज सुभाषबाबू वर्धा से लौटे है । उन की बात मालूम हुई तब से मन मे बहुत अशान्ति और दुःख हो रहा है । ईश्वर इस अभागे देश के लिए क्या विधान बना रहे है, पता नहीं । इसमे देश मे दुःख, दारिद्रय, अज्ञान भरा पड़ा है इस समय परस्पर की एकता निहायत जरूरी है । अभी तो काले बादल घिर रहे है, ईश्वर इन्हीं मे प्रभात का सूर्य प्रकट करेगा ।

२३ फ़रवरी : आजकल सुभाषबाबू बीमार है । गये हुए थे इसलिए देख नहीं सके । सुभाषबाबू से अपना विचार नहीं मिलता पर वे त्यागी, वीर, देशभक्त है । ईश्वर उन को जल्दी आरोग्य प्रदान करे । आज वर्किंग कमेटी के सब सदस्यो ने इस्तीफा दे दिया और जवाहरलाल जी ने जो वक्तव्य दिया है वह बहुत ही ज्यादा कड़ा है । सुभाषबाबू ने ग़लती तो बहुत बड़ी की है । पर इस कार्रवाई से उन को बीमारी के समय चोट न लगे ।[1] देश की परिस्थिति निहायत जटिल हो गयी है । इधर यह देशी राज्यो के आन्दोलन की स्थिति खूब बढ़ती जा रही है ।

---

१ त्रिपुरी कांग्रेस मे सुभाषबाबू और उनके इस्तीफे के विस्तृत कारणो पर पृ. स. १८६-१९५ ध्यातव्य है ।

११. त्रिपुरी कांग्रेस के बाद

२२ मार्च, १९३९ कलकत्ता– भाई बसन्तलालजी से देश में राजनीतिक मतभेद और सुभाषबाबू, ख़ासकर बंगाल के लोगों ने जो तरीक़ा अख़्तियार किया है, इस हालत में अपने लोग किस पक्ष के साथ रह सकते हैं या किस पक्ष के साथ रहना चाहिए, इस पर विचार किया। सुभाषबाबू को फिर से सभापति चुनने को ले कर भाई बसन्तलालजी से अपना थोड़ा मतभेद चला। वे सुभाषबाबू का मोह या प्रेम जो कहिए छोड़ना नहीं चाहते थे। अपने को सुभाषबाबू की कार्रवाई ठीक नहीं मालूम होती थी। त्रिपुरी काँग्रेस में अपने सुभाषबाबू के विरोध में वोट दिया। अपने लिए बसन्तलालजी से मतभेद हो जाये और बैर बना रहे तो इससे ज़्यादा दुःख की कोई बात नहीं हो सकती। उस हालत में अपने लिए बहुत ज़्यादा कुछ सोचने का, चिन्ता करने का समय आ जाये। पर ईश्वर को अनेक धन्यवाद है कि उसकी कृपा से आज की बात से वे सब आशंकाएँ दूर हो गयी। उन्होंने कहा कि राजनीति में अपने पूज्य महात्माजी के विचारों पर चलने की कोशिश करने वाला मैं हैं और उनका जो पक्ष होगा उसी के साथ रहेंगे। बंगाल और सुभाषबाबू का सवाल उसके सामने नहीं रहेगा।

२२ अप्रैल : श्रद्धानन्द पार्क में सुभाषबाबू के लिए मीटिंग थी। सुभाषबाबू अपने स्वभाव के अनुसार पौन घण्टे लेट आये और लाउडस्पीकर ख़राब था इसलिए यों ही बैठ रहे। बहुत देर बाद लाउडस्पीकर ठीक हुआ तब मीटिंग हुई। यह है बंगाल के लोगों की व्यवस्था और प्रधान नेताओं की हालत। अपने ख़याल मे सुभाषबाबू ने अपने व्याख्यान म कोई ख़ास बात नहीं कही। जो हो आजकल अपना मन बंगाल के लोगो के साथ बहुत ही विक्षिप्त सा हो गया है। कल बी पी. सी. सी. की जनरल मीटिंग है, उसमें कई प्रश्न आने वाले हैं। भाई बसन्तलाल जी उड़ीसा गये है। अपना यह सन्देह बढ़ता जा रहा है कि बसन्तलालजी सुभाषबाबू के सामने विरोध में आना नहीं चाहते और उनके पक्ष में जा नहीं सकते, ऐसी हालत में मौक़ा बचाते रहना ठीक समझते है।

२३ अप्रैल : एक बजे बी.पी.सी.सी. की मीटिंग थी, खूब लम्बी चली, वार्षिक मीटिंग और चुनाव हुआ। सुभाषबाबू सर्वसम्मति से सभापति चुने गये। पदाधिकारियों और कार्यकारिणी का चुनाव बाद में होगा। इसमें सब दलों के लोगों को लेने की बात है पर इसका भी भार सुभाषबाबू पर ही है।

१२. सभापति पद से इस्तीफा

२९ अप्रैल, १९३९ : आज ही ए. आई. सी. सी की मीटिंग शुरू होगी, वातावरण बहुत ही क्षुब्ध था। लोग यह जानने को उत्सुक थे कि पूज्य महात्माजी और सुभाषबाबू के बीच क्या तय हुआ। सब की चाह थी कि किसी तरह परस्पर मिल-जुलकर काम हो, पूज्य महात्माजी की बात सुभाषबाबू स्वीकार कर लें। मीटिंग चार बजे शुरू होने वाली थी। नेता लोग पण्डाल में पधारे पर सुभाषबाबू नहीं आये, उनका फ़ोन आया कि मीटिंग पाँच बजे शुरू होगी। प्रायः जानकार लोगों को मालूम हो गया कि समझौता नहीं हो सका और सुभाषबाबू इस्तीफा देंगे। पाँच बजे सुभाषबाबू आये, मीटिंग का कार्य आरम्भ हुआ, लोगों से देर हो जाने के लिए क्षमा माँगी और अपना एक वक्तव्य दिया जिसमें नयी वर्किंग कमेटी न बना सकने के कारण तथा सैद्धान्तिक मतभेद बताकर राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र देने की बात कही। इससे सभी को दु:ख हुआ। त्यागपत्र पर विचार हो इसके लिए उपस्थित लोगों में कांग्रेस के सबसे पुराने सभापति सरोजिनी नायडू ने अध्यक्षा का आसन ग्रहण किया। जवाहरलाल जी ने सुभाषबाबू से त्यागपत्र लौटाने की प्रस्ताव द्वारा अपील की, समर्थन श्री जयप्रकाश नारायण ने किया। दो-तीन सज्जनों ने जवाहरलाल जी के प्रस्ताव के विरोध मे बड़ा बेढगा रुख़ लिया और सुभाषबाबू को बधाई दी और कहा कि जब तक सुभाषबाबू की बात पुराने लोग न मान ले तथा सिद्धान्त को स्वीकार न करें तब तक इस्तीफ़ा नहीं लौटाना चाहिए। बगाल के लोगों में बहुत उत्तेजना थी, वे समझते थे कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, ऐसी स्थिति में अधिवेशन कल तक के लिए स्थगित हुआ। जब लोग बाहर निकलने लगे तो बगाल के लोगों ने गोविन्दवल्लभ पन्त तथा आचार्य कृपलानी आदि के प्रति दुर्व्यवहार किया, शेम-शेम चिल्लाना और जूता दिखाना, रास्ता घेर लेना, आदि किया। यह निहायत बेजा हुआ।

३० अप्रैल : सुभाषबाबू ने इस्तीफ़ा वापस लेने का प्रस्ताव नहीं माना। शेष में दु:ख के साथ इस्तीफ़ा स्वीकार किया गया। सर्व-सम्पति से राजेन्द्रबाबू सभापति चुने गये। श्रीमती नायडू ने बड़ी बुद्धिमता और तत्परता के साथ कार्यवायी का संचालन किया। राजेन्द्रबाबू तुरंत मंच पर आ गये और अपना व्याख्यान शुरू कर दिया। बंगाल के लोगों ने शेम-शेम तथा दूसरे नारे लगा बहुत ही ज़्यादा बाधा डाली, बीच मे सुभाषबाबू को शान्त रहने के लिए अपील भी करनी पड़ी पर उसका भी विशेष प्रभाव नही पड़ा। राजेन्द्रबाबू अपने स्थान पर डटे रहे, अपना व्याख्यान चालू रखा राजेन्द्रबाबू ने कहा, सुभाषबाबू के इस्तीफ़े का और समझौता न हो सकने का हम सबको काफ़ी दु:ख है, ऐसी स्थिति में सभापति का पद लेने में मुझे कोई ख़ुशी नहीं पर कर्तव्य व ज़िम्मेवारी के कारण लेना पड़ रहा है।

२५ अगस्त बी पी सी सी की मीटिंग तीन घण्टे चली। सुभाषबाबू पर विश्वास प्रकट किया गया, वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव की निन्दा की गयी तथा उसे फिर विचार करने के लिए कहा गया।

३० अगस्त बी पी सी सी की जनरल मीटिंग में, चार घण्टे चली। बहुत विवाद हुआ, पार्टीबाजी, दलबन्दी का बाजार गरम है। राजनीति आज तो गन्दी चीज मालूम होती है, देश-सेवा का सवाल नहीं, अपने अधिकार का सवाल हो गया है। भीषण चालाकी, बेईमानी आदि होती है। इस वातावरण में बैठे रहने और काम करने में निहायत कष्ट का अनुभव होता है। जिन लोगों का बहुमत होता है वे न्याय का खून कर मनमानी करना चाहते हैं। अल्पमत वालों के प्रति ज़रा सी भी सहानुभूति या विश्वास का भाव नहीं दिखाया जाता। सब प्रस्ताव सुभाषबाबू की पार्टी के ही पास हुए क्योंकि उनका बहुमत था। सभा शेष होने पर जाते समय विरोधी पार्टी के नेता किरणशंकर राय [illegible] पर हल्की सी मार भी पड़ी। यह स्थिति अच्छी नहीं [illegible] समझा।

१७ दिसम्बर [illegible] कांग्रेस का ये [illegible] काम करने अपने लिए [illegible] वर्किंग कमेटी और [illegible] विरोध [illegible] जोर है [illegible] कांग्रेस की [illegible] है। [illegible] कांग्रेस का काम करना [illegible] नहीं। [illegible] और रचनात्मक कामों में [illegible] लगाना है। कार्यकर्ता [illegible] बाजारों की तेजी मन्दी में [illegible] लोग लगे हुए हैं। [illegible] अपने [illegible]।

२३ दिसम्बर [illegible] इस समय जैसी विषम अवस्था है, [illegible] हो [illegible] रहा है। मुसलमानों के सवाल को लेकर ऐसी समस्या [illegible] कर दी गयी है [illegible] मुश्किल है मुसलमानों का सवाल तो एक पेचीदा सवाल है [illegible] और जो लोग कम संख्या में हैं वे भी [illegible] जा रहे हैं। ऐसा [illegible] है कि सारे देश का सवाल तो सवाल ही नहीं केवल अल्पसंख्यकों का [illegible] सवाल है।

१३ देश के नेतृत्व में आपसी संघर्ष

७ जनवरी १९४० कांग्रेस पर एक तरफ हिन्दू सभा, दूसरी तरफ मुसलिम लीग हमला कर रहे हैं वे तो कर ही रही है। कांग्रेस के भीतर जो कई दल हैं वे कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व का विरोध कर रहे हैं और महात्मा जी से नेतृत्व करने का भी अनुरोध करते हैं, उनके कार्यक्रम में विश्वास नहीं करते, उनके कार्यक्रमों का विरोध भी करते हैं और कांग्रेस का नेतृत्व लेने तथा सँभालने की

क्षमता और शक्ति भी अपने मे नहीं समझते । ये दल चाहते है कि कॉग्रेस का नेता उनके दल के सिद्धान्तो और विचारो के अनुसार हो, यह कैसे सम्भव हो सकता है ? जो नेता होगा उस के आदेशानुसार यदि न चला जावे तो वह कैसे काम कर सकता है । उसकी जगह दूसरा नेता आवे पर जब तक जनता उस पर विश्वास न करती है तब तक दूसरा नेता आ ही कैसे सकता है । भिन्न भेद भाव वाले दल से ऐसे लोग भी काफी संख्या मे आ जाते है जो जिम्मेदार नहीं, केवल बात और गरमागरम कार्यक्रम की बाते कह कर भ्रम पैदा करते है । और जिन लोगो पर इनका थोड़ा प्रभाव होता है उनको लेकर काफी गड़बड़ी पैदा करते है ।

यह एक सुन्दर सुयोग प्राप्त हुआ था कि युद्ध के कारण अंग्रेज जो प्रजातन्त्र न्याय और छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता की दुहाई देते है, लड़ाई मे हिन्दुस्तान का हार्दिक सहयोग पाने के लिए कॉग्रेस यानि देश के साथ समझौता करने और बिना तकलीफ और बड़ा बलिदान किये देश आगे बढ़ जाता और हमारा सवाल बहुत कुछ तय होता पर अभी देश का दुर्भाग्य बदला नहीं है इसे अपने पापो और फूट, अपनी परिस्थिति का फल भोगना बाकी है । आज देश की स्थिति पर विचार करते है तब दुःख होता है ग्लानि होती है और निराशा होने लगती है ।

९ जनवरी : बगाल मे कॉग्रेस की जो स्थिति हो गई है उसके सुधरने का कोई ढंग नहीं दिखता है । सुभाषबाबू और शरतबाबू ने जो ढंग अख्तियार कर रखा है उसमे वर्किंग कमेटी क्या करे ? बगाल के साथ समझौता हो या उस को अलग कर दिया जावे यह लोग वर्किंग कमेटी का निर्णय तो मानते ही नहीं, उल्टे धमकाते है, या तो इस वर्किंग कमेटी के सभापति अपने निर्णय को बदल नहीं तो बगाल को अपने आत्मसम्मान की बरदाश्त न करने के लिए हमे कहना पड़ेगा । देखे क्या होना है । यह लक्षण अच्छे नहीं ।

१७ जनवरी : वारधा मे कल से वर्किंग कमेटी की मीटिंग है उस मे बगाल प्रान्तीय कॉग्रेस कमेटी पर विचार होने वाला है । शरतबाबू भी जा रहे है । सुना है कि समझौते की कोशिश होगी । भाई के साथ समझौता हो जाये तो बगाल मे कॉग्रेस का काम आगे बढ़े और आज़ादी की लड़ाई मे बड़ी मदद हो पर बगाल की खासकर सुभाषबाबू के कारण जो स्थिति पैदा हो गयी है उस मे सच्चाई के साथ समझौता होना मुश्किल है और यो ही समझौता होगा तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा ।

२७ जनवरी : घर पर झण्डोत्सव कर बड़ाबाजार गये, वहाँ कॉग्रेस कमेटी के उत्सव तथा दूसरी संस्थाओ के उत्सव मे गये । एक बजे झण्डोत्सव मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियो की ओर से मनाया गया । चौदह लड़कियों ने खादी पहनने की प्रतिज्ञा की । फिर कॉग्रेस की सभा में गये, बड़ी अच्छी सभा थी । इतनी बड़ी सभा इधर कई वर्षो से नहीं हुई । लोगो मे उत्साह था । बंगाल प्रान्तीय कॉग्रेस की ओर से जो सभा की गई थी उस मे १९३० की पुरानी प्रतिज्ञा पढ़ी गयी और बड़ाबाजार की सभा मे नयी प्रतिज्ञा । बगाल प्रान्तीय कमेटी तो वर्किंग कमेटी के आदेशों को अमान्य करने पर तुली हुई है । **आज के वक्तव्य में सुभाषबाबू**

ने यहाँ तक कह दिया कि गांधी जी के नेतृत्व में काँग्रेस क्या करेगी, इसलिए उस के आदेशों को मानने की प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिए । जो हो सुभाषबाबू जो कहते हैं वह अपनी समझ में नहीं आता और अपनी समझ में देश भी उन की बात नहीं मानता । बड़ाबाजार की सभा में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद साहब भी आये थे । उनका भाषण बड़ा गम्भीर और प्रभावोत्पादक था । इस बार स्वतन्त्रता दिवस का उत्सव बडे समारोह और उत्सव के साथ सम्पन्न हुआ । झण्ड़ों की बिक्री, सभाएं तथा जुलूस आदि सभी बातें अच्छी थीं । झण्ड़ों की इतनी ज़्यादा बिक्री शायद पहले कभी नही हुई । काँग्रेस के प्रति जनता में काफी श्रद्धा और आदर है । खास बात तो यह है कि देश में जागृति तो हो गयी है पर अनुशासन नहीं आया है और संगठन नहीं हो सका है इसलिए दिक़्क़तें बढ़ी हैं और जागृति का दुरुपयोग हो रहा है । परस्पर में संघर्ष होने लगा है, इस से परेशानी होती है पर अब देश बहुत दिनों तक पराधीनता को बरदाश्त नहीं कर सकता ।

१४. सुभाषबाबू लापता

२८ जनवरी, १९४१ : पन्द्रह मील दूर फालता नाम के बड़े गाँव में सत्याग्रह किया । यहाँ लोग ज़्यादा थे और लम्बी जगह थी इसलिए देर ज़्यादा लगी । लोगों ने सुना भी । असर तो होना ही है । आज के काम से भी सन्तोष मिला ।

सुभाषबाबू अचानक किसी से कुछ कहे बिना घर से गायब हो गये है, पता नहीं यह क्या बात हुई पर यह आश्चर्य में डालने वाली तथा दु:खद है । जो हो ईश्वर सुभाष बाबू को जहाँ कहीं हों वहाँ सुखी रखें । गायब होने का कारण समझ नहीं आता। ईश्वर जो करता है भले के लिए ही करता है पर सुभाष बाबू का यों गायब होना सामान्य बात नहीं । वे भावुक तो बहुत है न मालूम क्या हुआ, इधर बीमार भी थे । उनका माथा तो ख़राब नहीं हो गया ? यदि वे ठीक होश में है तो निश्चय ही । कोई न कोई काण्ड होगा । सुभाषबाबू के विचार बदल जायें और गाधीजी की तरफ़ झुक जायें तो कितना अच्छा हो। उनका और देश का भला हो पर ऐसी आशा कम है । वे सच्चाई से कभी गांधीजी के भक्त नहीं रहे। ईश्वर की लीला को कौन जानता है वे अरविन्द (घोष) बाबू की तरह हो जाय या उनके यहाँ ही चले जाये । दो-एक दिन में कुछ तो पता चलेगा ही।

१७ जून, १९४२ कलकत्ता : आज सुभाषबाबू बर्लिन रेडियो से बोले । अँगरेजी में बोले । जो कुछ उन्होंने कहा उसमें अपने को खास बात मालूम नहीं हुई । पर बहुत दिनों बाद सुभाषबाबू की आवाज सुनी, यह ख़ुशी थी । सुभाषबाबू से अपना नज़दीक का सम्बन्ध कई वर्षों तक रहा है उनके आज के विचारों के ढंग से अपना मेल नहीं बैठता तो भी उनके प्रति पूरा आकर्षण तो है ही ।

स्मृतिकण

कणशः क्षणशश्चैव सौमनस्यं हि कीर्तयेत

चरित्र-चित्रण और समाज दर्शन की इस छोटी-सी किताब में श्री सीतारामजी ने अपने संस्कारी जीवन में से कुछ स्मृति-कण इकट्ठा किये हैं। पाठकों को अनुभव होगा कि ये कण मिश्री कण के जैसे पहलूदार, चमकीले, स्वादिष्ट और पौष्टिक हैं। इनमें श्री सीतारामजी ने गांधीजी और कवि रवीन्द्रनाथ से लेकर जेल के भोले कैदी रामलाल और घूरे के घर में रहने वाली अभागिनी किन्तु सात्विक हरिजन माता तक के अनेक संस्मरण दिये हैं। श्री जमनालालजी के बारे में श्री सीतारामजी ने जो कहा है, वही सीतारामजी के स्वभाव में भी पाया जाता है। "उन्होंने किसी के अवगुणों को देखा, तो उसकी उपेक्षा ही की है। मैंने उनके मुँह से किसी की निन्दा नहीं सुनी। वे कहते थे कि 'किसीके अवगुणों की वजह से हमें उनसे नाराज़ नहीं होना चाहिए। हमारे दिल में अगर उनकी भलाई करने की भावना हो, और उनके द्वारा देश-समाज की जो भी सेवा बन सके, वह लेनी हो, तो उनको आदर से और प्रेम से ही अपनी ओर खींचना होगा। निन्दा करके तो हम उन्हें खो ही देंगे।"

मैं भी कह सकता हूँ कि सीतारामजी के और मेरे १५-२० बरस के परिचय में मैंने उनको कभी किसी की निन्दा करते नहीं सुना। हर एक आदमी का जो विशेष गुण हो, उसीको ले लेना और उसका कीर्तन करके गुणदरिद्री समाज मे सज्जनता की वृद्धि करना यही सीतारामजी का व्रत-सा दीख पड़ता है।

हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात गांधी जी ने बहुत की। हमारे समाज पर उसका प्रभाव असाधारण पड़ा है। लेकिन गांधीजी की इस नसीहत का अधिक-से-अधिक प्रभाव मैने सीतारामजी पर ही देखा। मुसलमानों के खिलाफ़ जो बातें कही जा सकती है, वे सब उन्होंने कइयों के मुँह से अनेक बार सुनी हैं। उनमें से अनेक बातों को स्वीकार करते हुए भी सीतारामजी की दृष्टि में तनिक भी फर्क नहीं पड़ा। हर समाज में होते हैं ऐसे सच्चे और अच्छे सज्जन; मुसलमान-समाज में भी काफी तादाद में हैं, उनकी बातें करके उन्होंने फिर से अपनी ही दृष्टि को हृदय की श्रद्धा से मज़बूत किया है।

सीतारामजी के मन में मुसलमानों के प्रति जो भ्रातृ-भाव है, वह केवल शाब्दिक नहीं है। संकट के समय, कई बार, इन्होंने उनकी मदद की है। जब और लोग कलकत्ता के मुसलमान-मोहल्ले में जाने में जान का खतरा मानते थे, सीतारामजी ने बिना किसी हिचकिचाहट के वहाँ जाकर उनसे दोस्ती की है।

श्री सीतारामजी कांग्रेस की सेवा बड़ी एकनिष्ठा से करते आये ह । कहने की जरूरत नहीं कि इस सिलसिले में उन्होंने कारावास का काफी अनुभव किया है। अपने स्वभाव के अनुसार सीताराम जी ने वहाँ भी गुनहगारों के बीच मानवता का दर्शन किया है ।

साहित्यिक होने का दावा सीतारामजी ने कभी नहीं किया है । लेकिन साहित्य सम्राट रवीन्द्रनाथ के वे प्रीतिपात्र अवश्य बने । हिन्दी की सेवा उन्होंने काफ़ी की है और हिन्दी-साहित्य का परिशीलन भी । इस परिशीलन की सुगन्धि उनके हरएक निबन्ध में पाई जाती है–'घूरे का घर', 'दो चित्र', 'दो दृश्य', 'दो लड़कियाँ', रामलाल आदि प्रकरणों में रेखाचित्रण की मार्मिकता, स्वाभाविकता और संयम– ये तीनों गुण उनकी साहित्य-शक्ति का अच्छा परिचय देते हैं । ख़ास खूबी यह है कि वर्णन या कथन में कितना कहना चाहिए, क्या छोड़ देना चाहिए और कहाँ ठहर जाना चाहिए, इन बातों की सूक्ष्म अभिरुचि और वास्तव वर्णन में आवश्यक संयम की नज़ाकत यहाँ पर उच्चकोटि की पाई जाती है ।

और इसमें आश्चर्य ही क्या ? तुलसीकृत रामायण जैसे ग्रन्थराज का जो विचार-पूर्वक नित्य पठन करते हैं, उनमें साहित्य-शक्ति आप-ही-आप प्रकट होती है । रामचरितमानस मे से किसी प्रसंग का वर्णन जब सीतारामजी करने लगते हैं, तब तुलसीदासजी के विचारों के साथ और शब्द-योजना के औचित्य के साथ उन्हें तन्मय होते मैंने देखा है ।

सीतारामजी के स्वभाव मे ऐसे विविध पहलू हैं । लेकिन उनका पूरा व्यक्तित्व प्रकट होता है मातृ-जातिकी सेवामें । बालिका-विद्यालय तो मानो उनकी दूसरी प्यारी पन्ना ही है । मातृ-सेवा-सदन उनकी प्राणप्रिय संस्था है । वहाँ की दुःखी माताओं से और उनके सम्बन्धियों से जब वे बातें करते हैं, तब उन सबको ऐसा अनुभव होता है कि मानो अपने ही कुटुम्ब के किसी बड़े से हम बातें कर रहे हैं । बालिका-विद्यालय की छोटी-छोटी लड़कियों के सिर पर जब वे हाथ रखते हैं, तब उनकी आँखों में पिता की धन्यता और माता का वात्सल्य–दोनों झलक उठते हैं । स्वाभाविक ही था कि जालन्धर के लाला देवराजजी और पूना के महर्षि कर्वे जैसे मातृ-जातिके भक्त सीतारामजी के उपास्य-देव बन गये ।

इस छोटी-सी किताब में प्रभावशाली या छटादार व्यक्तित्ववाले कइयों के मार्मिक स्वभाव-वर्णन हम पाते हैं । लेकिन मैंने तो यहाँ शुरू से आखिर तक श्री सीतारामजी का खुशबूदार व्यक्तित्व ही पाया ।

मिश्री-मिठाईका गाँव,
मढ़ौरा (बिहार);
११-१-५०

– काका कालेलकर

निवेदन

मेरे इन कुछ लेखों का संग्रह हिन्दी-जगत की सेवा में रखते मुझे काफी संकोच और भय-सा लगता है। मुझे पता नहीं, यह संग्रह लोगों को कैसा लगेगा। पर मैं यह जानता हूँ कि यह लेख लिखने के लिए नहीं लिखे गये। किसी समय कोई बात या दृश्य सामने आया, उसका जो प्रभाव मेरे मन पर पड़ा, उसको उसी तरह अंकित कर दिया गया। इसमें कोई साहित्यिकना तो हो ही कैसे सकती है। हाँ, भावना या भावुकता शायद रही हो।

यह लेख समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। मुझे न तो यह पता रहा है कि किस पत्र में कब मेरा लेख छपा, न कभी मैंने उनकी कटिंग ही रखी और न मैं कभी यह सोच ही सका कि लेखों का कोई संग्रह कभी प्रकाशित कराना है। तब भी संयोगवश यह संग्रह प्रकाशित हो रहा है।

बात यह थी कि 'विशाल भारत' में मेरे दो-तीन लेख निकले, तो उनकी प्रशंसा दो-चार मित्रों ने की। इसके बाद मेरी डायरी का बहुत ही छोटा-सा हिस्सा भी 'विशाल भारत' में छपा। इस पर बहन महादेवीजी की सूचना मिली कि तुम्हारे संस्मरण मैं हिन्दी साहित्यकार संसद की ओर से प्रकाशित करना चाहती हूँ। तो मेरे मन में गुदगुदी होने लगी कि मैं भी पाँच सवारों में अपना नाम लिखा सकता हूँ। पर मेरे पास तो 'विशाल भारत' के लेखों के सिवा और कोई लेख था ही नहीं। हाँ, डायरी तो मैं बीस वर्ष से ज़्यादा से लिखता आ रहा हूँ। महादेवीजी ने यह सुझाया कि डायरी एक अलग पुस्तक के रूप में छपनी चाहिए और जो लेख लिखे हैं, वे अलग। पर सवाल था लेखों के संग्रह का। इस काम का भार श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' ने लिया। वे मुश्किल से यह लेख-संग्रह कर पाये। इसलिए मैं उनका आभार मानता हूँ।

यह कहानी तो इन लेखों के प्रकाशन की हुई। समय-समय पर मैंने जो कुछ लिखा है, वह मैं संग्रह कर सकता, तो यह पुस्तक बड़ी हो सकती थी। तब भी जो कुछ प्राप्त हो सका, उसको बटोरकर आप महानुभावों की सेवा में उपस्थित किया है। मेरे लिए यह खुशी और सौभाग्य की बात है कि मैं पूज्य काकासाहब का आशीर्वाद और बहन महादेवीजी का प्रोत्साहन पा सका। अब यह जो कुछ है, वह आपके सामने है। कुछ दिनों बाद ही यह पता लगेगा कि यह संग्रह हिन्दी जगत को कैसा बुरा-भला लगा। मेरे सामने तो इतना ही सवाल है कि इन छोटे-छोटे कणों में जिन उपेक्षित, पददलित आदमियों के अन्दर जो सच्ची आदमीयत

मुझे नज़र आई, जिसने मुझे आकर्षित किया तथा जिन भावनाओ ने मेरे मन पर एक स्थायी असर पैदा किया, यदि पाठको मे से किसी के मन पर वह असर पैदा हो सकेगा, तो मै यह मानूँगा कि यह सग्रह छपना ठीक हुआ, नही तो व्यर्थ के भी कई काम हम करते रहते है, उसी तरह का एक यह भी किया गया।

यह स्मृति के कण स्मृति की स्थाई-जैसी चीज़ आज भी बने हुए है, जब कि इन घटनाओ को कई वर्ष बीत गये है। इसलिए ऐसा मानना चाहिए कि चाहे मै उन घटनाओ या दृश्यो का शायद वैसा वर्णन न कर सका होऊँ, जैसा मुझ पर प्रभाव डाले हुए है। यह तो मेरी लिखने की कमी मानी जा सकती है। पर वे आत्माएँ, वे व्यक्ति, वे घटनाएँ निश्चित रूप से छोटे होते हुए भी बड़े है। जो बड़े है, जिनमे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पूज्य गाधीजी, प्रोफेसर कर्वे और जमनालालजी है, वे इतने महान, इतने बड़े है कि उनकी महानता का माप करना या बखान करना भी मेरी शक्ति के बाहर की बात थी। जो छोटे है, वे इतने छोटे और इतने उपेक्षित तिरस्कृत, दलित है कि उनके अन्दर की मानवता को पहचानना भी मुश्किल काम है। इसलिए इन कणो को तो कण ही कहा जा सकता है। कण बड़ा हो तो कण ही कैसे रह सकता है ? इसलिए बहुत छोटे है, मानो लेखन-कला या साहित्य की दृष्टि से तो बात इनके बारे मे मै सोचना ही नही। सिर्फ वही बात जो ऊपर कही गई है कि छिपी मानवता के या युग-पुरुषो की विशेषता के दर्शन यदि कुछ भी इन कणो मे किसी को मिल सके तो यह अपने आप सार्थक हो जावेगे। जैसे भगवान अंशुमाली के आगमन से पहले उषा की लालिमा ही पकज के मुख को विकसित करने लगती है, वैसे ही यदि मानव के विकास मे हमे इन साधारण मनुष्यो मे छिपी मानवता के दर्शन हो सके, तो हमारी मानवता भी विकसित होगी। नहीं तो और तो क्या, 'छमहि सज्जन मोरि ढिठाई'।

–सीताराम सेकसरिया

१. गांधीजी

पूज्य गांधीजी का शरीर आज इस मानव-जगत् मे नहीं है, पर क्या गाधीजी जैसे लोगो की कभी मृत्यु होती है ? वे अपने विचारो, सिद्धान्तों और कार्यो के रूप में सदा विद्यमान रहते हैं। ऐसे लोगो से मानव-जाति अनन्त काल तक प्रेरणा प्राप्त किया करती है।

गाधीजी अपने युग की सर्वश्रेष्ठ विभूति थे। हमारा देश ही नहीं, संसार का सारा मानव-समुदाय गांधीजी के निधन मे विकल हो उठा था। इतिहास में खोजने पर इतने बड़े महापुरुष का पहले कभी आविर्भाव हुआ हो, ऐसा नहीं लगता। क्या वजह थी गांधीजी के इतने बड़े होने की, इतने महान होने की। यदि गांधीजी के जीवन की खिड़कियों में झाँकें, तो पता लगेगा कि उनका बाल्य-काल मे लेकर दक्षिण-अफ्रीका में वकालत करने जाने तक का जीवन एक साधारण जीवन है। उसमे कोई खास प्रतिभा या विशेषता नज़र नहीं आती। तो फिर क्या यह महापुरुष अचानक किसी चमत्कार से इतना बड़ा बन गया ? गांधीजी चमत्कारो मे विश्वास नहीं करते थे। उन्होने बहुत बार कहा है कि मै एक साधारण आप जैसा ही आदमी हूं। आप, जो कुछ करें, अपनी बुद्धि के आधार पर करे, मेरे कहने से नहीं। तो भी ऐसे बहुत लोग थे, जो यह मानते थे कि अमुक बात गाधीजी ने कही है इसलिए हमे करनी ही चाहिए। बहुत बार देखा गया है कि देश के बड़े से बड़े नेता एक चीज़ का विरोध कर रहे है। पर गांधीजी ने जब कहा कि यह काम तो होना ही चाहिए। यदि देश के नेता मेरा साथ न देगे, तो मै अकेला ही इस काम को करूंगा। ऐसे अवसर पर देश के सारे नेता उनके साथ हो गये। जो लोग हिन्दुस्तान की राजनीतिक हलचलों को नज़दीक से देखते रहे है, उनके सामने ऐसे उदाहरण हैं, जब गांधीजी के कारण ही आन्दोलन शुरू हुआ और रुका रहा या बन्द हो गया। इसकी वजह इनका प्रभाव ही हो, मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि गांधीजी की सत्यनिष्ठा इतनी तीव्र थी कि वह दूसरे आदमियों को भी उनके कहे अनुसार सोचने के लिए बाध्य करती थी।

गांधीजी के जीवन का आधार सत्य था। इस सत्य का सूक्ष्म-दर्शन उनको सात वर्ष की अवस्था में अपने पिताजी के साथ हरिश्चन्द्र नाटक देखते समय हुआ था। इसके बाद जीवन में कभी झूठ न बोलो, इस सत्य के आधार पर गांधीजी का जीवन संचालित हुआ। आगे जाकर इस सत्य के प्राप्त करने के साधनों में अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि जो सत्य प्राप्त करने के साधन हैं, वे सभी आते गये।

गांधीजी के जीवन के विकास का एक क्रम है। उसकी एक पद्धति है। शायद वह एक शास्त्र है, जिसको गाधीजी हर आदमी के जीवन मे उतारना चाहते थे। गाधीजी का सत्य क्रियात्मक सत्य है। वह बछड़े को ज़हर का इन्जेक्शन दिलाते वक्त भी सत्य था, बन्दरों को मरवाते वक्त भी सत्य था और उनके अपने शरीर पर से गुज़रने वाले साँप को न मारने मे भी सत्य था।

गांधीजी ने अपने जीवन के करीब पचास वर्ष लोक-सेवा मे बिताये। गांधीजी इतने लम्बे अर्से तक देश-सेवा, समाज-सेवा, मानव-सेवा करते रहे। वे राजनीतिक पुरुष नही थे। वे तो एक सत्यशोधक थे, सत्याग्रही थे। इस सत्य-शोधन मे जो बातें उनके सामने आई, उनको वे अपनी सत्य-प्राप्ति का साधन बनाते गए। उनके जीवन को जिन्होने नज़दीक से देखा है वे जानते है कि कागज़ के छोटे-से टुकड़े को भी वे किस तरह सँभालकर रखते थे। पानी पीते या हाथ धोते, तो एक भी बूँद पानी व्यर्थ न चला जाय, इसका ख्याल रखते; पर ज़रूरत होती, तो प्राय रोज़ ही पानी का टब भराकर उसमे पन्द्रह-बीस मिनट बैठकर सोया करते। ऐसे ही समय के एक-एक क्षण का वे हिसाब रखा करते। एक क्षण भी उनका व्यर्थ नही जाता था, एक क्षण भी खाली नही रहता था। वे भोजन करते समय, घूमते समय, स्नान करते समय, यहाँ तक कि शौच होते समय भी कुछ-न-कुछ काम किया करते थे। यह तो बहुत लोग जानते है कि बापू ने उनका पत्र सडास (पाखाने) मे पढ़ा है। इसी तरह यह सब काम जीवन के ऐसे अग बन गये थे, जैसे चाँद, सूरज, तारे, पृथ्वी अपनी गति से चलते रहते है और उनमे कभी ज़रा एक क्षण के सौवे हिस्से की भी गड़बड़ी नही होती। उनका जीवन सत्य-स्वरूप था।

एक बार एक प्रसिद्ध साधक ने पूछा – 'बापू, हम लोग जो चाहते है कि जीवन को सत्य बनावे, सो चेष्टा करने पर भी सफल नही होते और बिना कारण हमसे असत्य आचरण हो जाता है या असत्य बोल दिया जाता है। हम जब सोचते है, तो अपने अन्दर सुख-भोग की इच्छा नही दीखती। साथ ही लालच भी नही दिखाई देता। हम काम करते हुए इसलिए डरते है कि कही हमसे झूठ आचरण तो नही हो जायेगा। आप इतना काम करते है, इतनी चीज़ों को, इतने कार्यो को सँभालते है, उसमें आपसे यह सत्य कैसे निभता है ?" तो उन्होने कहा था– "आज तो मेरी यह स्थिति है कि मै जो करूँ, वही मुझे सत्य जान पड़ता है। जो असत्य है, वह मुझसे होगा ही नहीं। मै जो कुछ करता हूँ, जो कहता हूँ, वह सब सत्य के लिए है, यानी परमात्मा के लिए है और सत्य ही परमात्मा है।"

इस तरह गांधीजी के जीवन की प्रत्येक क्रिया सत्य-रूप हो गई थी। वे सत्य को ज़्यादा-से-ज़्यादा पहचान सके थे और उसमें ओतप्रोत हो गये थे। हमारे देश की हरएक समस्या को उन्होंने गति दी है, हर दिशा में उनकी महान देन है।

स्वाधीनता का आन्दोलन करना उनके जीवन का उद्देश्य नहीं हो सकता था, यह तो अपने-आप उनके जीवन की एक महान चीज़ बन गया; क्योंकि सत्य का शोधक देश की पराधीनता, मानव का उत्पीड़न, शोषण और अपमान का जीवन कैसे बर्दाश्त करता। दक्षिण- अफ्रीका में जब सत्याग्रह का दर्शन उनको अचानक एक घोड़ागाड़ी के कोचवान के हाथ से मार खाते समय हुआ, तो उसमें कोई राजनीति थोड़े ही थी। उसमें थी मनुष्य के अधिकार-रक्षा की बात। किसी को कष्ट दिये बिना, किसी का बुरा चाहे बिना, अन्याय का प्रतिकार कैसे किया जा सकता है, अपने अधिकार की रक्षा कैसे की जा सकती है और मानव के अन्दर की भलाई को कैसे जागृत किया जा सकता है, यह उस घटना ने गांधीजी को बता दिया था।

जैसे किसी शुष्क वट-बीज के अन्दर विशाल वट-वृक्ष छिपा रहता है, उसी तरह एक छोटी-सी घटना में गांधीजी का महान सत्याग्रह छिपा हुआ उनको दिखाई दिया था, और वे आगे जाकर आहिस्ता-आहिस्ता एक महान सत्याग्रही बने। उनके जीवन की हर छोटी-से-छोटी घटना उनके जीवन की एक महान घटना है। वे कभी अपने जीवन के कार्यों में छोटे-बड़े का विचार नहीं किया करते थे। वे यह भी कहते थे कि प्रभु के काम में छोटा-बड़ा माननेवाला मैं कौन ? जिस समय जो काम वह मुझसे लेना चाहता है, वही मेरे लिए बड़ा है। हाँ, हम लोग बराबर यही सोचा करते है कि गांधीजी ने इस बार जो काम किया, वह महान काम था, अथवा यह काम उनके जीवन का सबसे बड़ा काम है। पर कुछ ही दिनों बाद वे फिर इतना बड़ा काम कर डालते थे, इतना बड़ा कदम उठा लेते थे कि पिछले कुल काम उस काम के सामने छोटे दिखाई देने लगते। पर दरअसल उनके जीवन में अपने कार्यों में कोई छोटा-बड़ा काम था ही नही। कोढ़ी परचुरे शास्त्री के मालिश करना और वाइसराय से हिन्दुस्तान की समस्या पर विचार करना उनके लिए एक ही था। यही कारण है कि वे हमारे जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर सके। मानव-जीवन के जितने क्षेत्र हो सकते है, सबमें उन्होंने काम किया है। हमारे देश की जितनी समस्याएँ है, सबको उन्होने सुलझाने मे गति दी है।

गाधीजी के जीवन की इतनी घटनाएँ हैं कि उन पर जितना भी लिखा जाय, वह कम है। देश के बहुत से विद्वानों, साधकों और उनके नजदीक आये हुए लोगों ने उन पर लिखा है; पर अभी इतना बाक़ी है कि जो लिखा गया, वह उसकी तुलना में कुछ भी नहीं। उन्होंने खुद भी हमें कम लिखकर नहीं दिया। आज तो वे उस साहित्य में विचारों के द्वारा ही हमारे सामने है, जो चालीस वर्ष तक उन्होंने हमको दिया है। दक्षिण-अफ्रीका के 'इण्डियन ओपिनियन में उन्होंने पहले-पहल लिखना शुरू किया और 'हिन्द-स्वराज्य' के रूप में उनकी पहली रचना हमारे सामने आई। आज से चालीस वर्ष पहले लिखी गई 'हिन्द-स्वराज्य' में जो विचार उन्होंने व्यक्त किये हैं, आज भी उनकी विचारधारा की वही भित्ति थी। उनका

राम-राज्य कहो, स्वराज्य कहो, वह वैसा ही था, जिसकी झाँकी 'हिन्द-स्वराज्य' में मिलती है ।

गांधीजी में एक ऐसी पैनी दृष्टि थी, जिससे वे हर बात की गहराई को समझ लेते थे । देश में जो समस्याएँ थीं, उनको वे पूरी तरह समझ गये थे और उनको सुलझाने के जितने भी प्रयत्न हो सकते थे, उन्होंने सब किये । रचनात्मक कार्य उनके सिद्धान्तो का आधार था । उन्होंने एक बार कहा था–"हमें कहा जाता है कि हम विनाश करते है । हमें सृजन करने का, रचना करने का मौक़ा ही कहाँ दिया जाता है । हम तो रचना ही करना चाहते है ।" वे तो रचनात्मक कार्यो के द्वारा ही स्वराज्य प्राप्त करने की बात कहते थे । उन्होने कहा था–"तुम मुझे खादी दो, मै तुम्हें स्वराज्य दूँगा ।" इसका क्या अर्थ हो सकता है ? खादी या चर्खा तो प्रतीक ही है, असली स्वराज्य तो हमारी रचनात्मक शक्ति मे छिपा हुआ है । आज हमें जो स्वराज्य मिला है, वह यदि गांधीजी के रचनात्मक कार्यो द्वारा ही मिलता, तो आज की यह भीषण परिस्थिति, आज की भयंकर मार-काट और यह पद-प्रतिस्पर्धा, यह चरित्र की दुर्बलता देखने को न मिलती । इसलिए उन्होने कहा था कि आज का स्वराज्य मेरी कल्पना का स्वराज्य नही ! मुझे तो राम-राज्य के लिए जूझते रहना है ।

वे तो सचमुच जूझ ही गये; पर राम-राज्य का उनका स्वप्न सच्चा करने का काम तो अब देशवासियो पर आ पड़ा है । वे हमारे बापू थे, हमारे राष्ट्रपिता थे, हमारी स्वतन्त्रता के स्रष्टा थे । उनके चले जाने से जो व्यथा भारत के मानस में भर गई है, उसका कोई उपचार नही । उनका इस तरह जाना या उनको इस तरह हमसे हरण करना एक बहुत बड़ी घटना है जिसका उदाहरण इतिहास मे नही मिल सकता । गांधीजी जैसा महापुरुष पैदा भी नही हुआ और उनके जैसी मौत भी किसी की नही हुई । वे जीवन से भरे-पूरे गए । जीवन के आखिरी क्षण तक वे जीवन की ज्योति का प्रकाश फैलाते-फैलाते गए । गांधीजी को खोकर मानव-जाति आज अपने को इतनी क्षतिग्रस्त समझती है कि उसकी पूर्ति नही हो सकती ।

गांधीजी कितने लोगों के जीवन का सहारा थे । वे हज़ारो व्यक्तियो के जीवन की गहराई मे उतरे थे । वे उन हजारों कार्यकर्ताओ के हर तरह के प्रेरक थे, हर तरह के सहायक थे, हर तरह से उनके अपने थे । वे जब कभी कोई कठिनाई आती, बापू की गोद में जाकर सो जाया करते थे और बापू के पास से अपनी कठिनाई का हल पा लिया करते थे । न जाने कितनी बहनें और कितने भाई आज बापू के अभाव में अपने को अनाथ अनुभव कर रहे हैं । जो स्नेह, जो विश्वास, जो वात्सल्य बापू ने दिया, वह अब कहाँ और किसके पास मिल सकता है ? उनके चले जाने के बाद जो जिम्मेदारियाँ उन कार्यकर्ताओं पर आई हैं, बापू की आत्मा उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का आशीर्वाद दे, यही प्रार्थना है ।

(जून, १९४८)

२. मगनलाल भाई

महात्मा गांधीजी आज संसार में शायद सबसे पख्यात व्यक्ति हैं। लेकिन दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के पहले गांधीजी को बाहर के लोग तो क्या हिन्दुस्तान के लोग भी नहीं जानते थे। पर गांधीजी में देश की नब्ज पहचानने की जैसी अद्भुत शक्ति है, उसी तरह उन्हें अपूर्व सहायक भी मिले। जब वे मोहनदास गांधी थे, तब उनको कस्तूरबा मिलीं, दक्षिण अफ्रीका के फीनिक्स-आश्रम में मगनलालभाई का वास्तविक व्यक्तित्व उन्हें दिखाई दिया।

स्व. मगनलालभाई गांधीजी के चर्खा, खादी, ग्रामोद्योग और आश्रम आदि के कामों में उनकी उद्भावना शक्ति और सहायक थे। दक्षिण अफ्रीका में फीनिक्स आश्रम का निर्माण और हिन्दुस्तान आने पर साबरमती-सत्याग्रह-आश्रम को संगठित करना तथा १९२१ के आन्दोलन के बाद चर्खे का प्रचार और सुधार मगनलालभाई का ही काम था। खादी-उद्योग के वे सर्वश्रेष्ठ टेक्नीशियन थे। पर १९२७ में ही मगनलालभाई की मृत्यु हो जाने के कारण सर्वसाधारण तक उनके कार्यों की महत्ता नहीं पहुँच सकी। लेकिन फिर भी गाँवों की कत्तिन बहनें मगन-चर्खे के नाम से मगनलालभाई को जानती हैं। एक बार घूमते हुए स्व मगनलालभाई के सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा—"लोग मुझे महात्मा कहते हैं; लेकिन जो महात्मा था और जिसने मुझे महात्मा बनाया, वह तो आज मेरे और आपके सामने नहीं है।" मगनलालभाई की मृत्यु पर गांधीजी ने उनकी विधवा पत्नी को पत्र लिखा कि—"तुम विधवा हो गई हो, पर मैं भी विधवा हो गया।"

३. बापू की कुटिया

सेवाग्राम गये, कई आश्रमवासियों से बातचीत हुई। बापू जिस कुटिया में रहते हैं, वहाँ गये। यह एक छोटी सी घास-फूस और पत्तों की कुटिया, जिस की दीवारें बाँस और मिट्टी की बनी हैं, बैठने का आँगन भी कच्ची मिट्टी का है, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई भी साधारण कोठरी जैसी है, इस में संसार का महापुरुष रहता है, कैसा यह महान् है जिसको देख कर, जिसकी सामग्री देख कर एक प्रकार का कौतूहल और आश्चर्य होता है, जिसके पास निज की सम्पत्ति कुछ नहीं, जो इस

भयानक सर्दी मे भी एक साधारण कथरी और चद्दर ओढ़ कर अपना काम चलाता है, जिसकी निजी आवश्यकताएँ कहने मात्र को ही है, जो देखने में सुन्दर नहीं, एक ठिंगना सा दुबला-पतला आदमी जिस के मुँह के सब दाँत गिर गये हैं, पोपला मुँह, गड़ी-सी छोटी आँखें तथा तिरछी नाक और चौड़ा ललाट है, ऐसा यह दुनिया को चकित करने वाला जिसकी कोई क्रिया, कोई बात, कोई हलचल सत् उद्देश्य से खाली नहीं है, यह महान विभूति हिन्दुस्तान के बापू, संसार के महापुरुष महात्मा गांधी की ओर आज संसार की दृष्टि लगी हुई है ।

इस आश्रम में अच्छे से अच्छे हिन्दुस्तान के लोग तो आते ही हैं, दुनियां के बड़े आदमी भी आते हैं, उन सब को इस छोटी सी कुटिया में ही जाना पड़ता है, कुटिया में न तो कोई फ़रनीचर है, न कोई सज-धज, आँगन में मोटे घास की चटाई बिछी है और पूज्य बापूजी के लिखने के लिए एक छोटी सी डेस्क है। बापू तो बहत्तर वर्ष के हो गये, काफ़ी बुड्ढे है, इसलिए उनको सहारे की जरूरत रहती है इसलिए पीछे की ओर एक काठ सा लगा है जिस पर आराम कुरसी के जैसी कपड़े की गद्दी सी भी लग रही है । एक छोटी दो फ़ुट चौड़ी और चार फ़ुट लम्बी गद्दी पर गांधीजी बैठते हैं । सामने चटाई पर महादेवभाई काम करते हैं, बग़ल में थोड़ी दूर पर राजकुमारी अमृतकौर बैठती है । यह अमृतकौर राजकुमारी है, यूरोप में शिक्षा प्राप्त की है, बचपन या जवानी का बहुत हिस्सा वहीं बिताया, शिमला में रहा करती हैं पर बापू की भक्ति मे पागल होकर यहाँ सेवाग्राम में बैठ कर बापू की चिट्ठी-पत्री और लिखने-पढ़ने के काम में मदद करने में अपने को धन्य मानती है ।

जो लोग मिलने आते हैं, बहुत बार उनको बड़ी तगी से बैठना पड़ता है । बात यह है कि गांधीजी के प्रत्येक काम में रहने-सहने, भोजन, मकान, सामग्री सभी चीजों में इस बात की छाप झलकती है कि वह दरिद्रनारायण की पूजा करते हैं । हमारा देश ग़रीब है, दरिद्री है । हम शान-शौक़त से कैसे रह सकते हैं, ये सब बातें जो ग़रीबों की या यों कहें गांधीजी जैसे महापुरुष के त्याग, अपरिग्रह की चीज है, यहाँ पर सफ़ाई-सुथराई, नियमितता, अथक परिश्रम तथा प्रत्येक वस्तु को ठीक से सजा कर, सँभाल कर रखने की क्रिया बराबर बिना ढिलाई के होती है । वास्तव में गांधीजी का जीवन एक महान् शिक्षा-मन्दिर है। यह अद्भुत है, चमत्कारी है, पवित्र है, महान् है । ऐसे गान्धी को बार-बार नमस्कार। अपने वहाँ देर तक बैठे रहे, जो लोग मिलने आते थे उनकी बात सुनते रहे। गांधीजी से बात करने की अपेक्षा अपने को उनके पास बैठ कर जो लोग बात करते हैं वह सुनने में ज़्यादा आनन्द आता है ।

४. व्यापारी फेडरेशन की मीटिंग में गांधीजी

हर साल का अधिवेशन वाइसराय के सभापतित्व मे हुआ करता है इस वर्ष महात्माजी के सभापतित्व में हुआ । उपस्थिति बहुत अच्छी थी । खास कर बम्बई, कलकत्ता के प्रधान व्यापारी उपस्थित थे जिनमे प्रायः लोग करोड़पति थे । पुराने एसेम्बली हॉल मे अधिवेशन किया गया था । पहले इस साल के सभापति लाला श्रीराम जी का भाषण हुआ वह अँगरेजी मे था । लोग कहते थे कि अच्छा था। इस के बाद महात्माजी क़रीब चालीस मिनट हिन्दी मे बोले वह तो अद्वितीय वाणी थी । उन्होंने सभापति के अँगरेजी भाषण की शिकायत की । यह भी कहा कि हमे तो हमारी सभ्यता की रक्षा करनी है दूसरे लोग जैसे अँगरेज ही मान लो व रहे तो हम उनको बहुत खुशी से रख सकेगे पर उनको हमारी सभ्यता को अपनाना होगा । वे हमारे भाई हो कर रहे मालिक हो कर नहीं । उन्होने व्यापारियो को कांग्रेस मे ज्यादा भाग लेने को कहा । यहा तक कहा कि व्यापारी चाहे तो कांग्रेस की सेवा कर के कांग्रेस को ले ले । हम लोग तो चाहते है कि कांग्रेस को आप लोग अपनावे। मै तो यह भी कहूंगा कि हमारी कॉंग्रेस मे अंगरेज भी आवे और कॉंग्रेस में तो बहुत अंगरेज मित्र आये भी उन्होने कॉंग्रस का सभापतित्व भी किया और अब सी एफ ऐन्डूज जैसे अँगरेज़ आज भी सेवा कर रहे है । हिन्दी भाषा पर उन्होने काफी जोर दिया । भाषण का प्रभाव तो अपूर्व था क्योंकि महात्माजी को धन्यवाद देने का भार सर पुरुषोत्तमदास पर था । वे हिन्दी नही जानते थे इसलिए हिन्दी मे ही श्री घनश्यामदास जी ने महात्माजी को धन्यवाद दिया । पूज्य महात्माजी को व्यापारियो की ओर से विश्वास दिलाता हूँ कि हम लोग आपके साथ है, कॉंग्रेस के साथ है । हो सकता है कि हम लोग कांग्रेस मे कोई एक्टिव पार्ट न लें पर आप विश्वास करिए कि हमारा दिमाग, मन और रोम-रोम आपकी सफलता चाहता है । आपकी सेवा करना हम धर्म समझते है । लेकिन एक बात मै आपको कहूँगा न मालूम क्या कारण है कॉंग्रेस के लोग हम व्यापारियों की ओर सशक दृष्टि से देखते है । कैपिटलिस्ट शब्द ऐसा हो गया है जिसको घृणा की दृष्टि से देखा जाता है और यह शब्द व्यापारियो के लिए उपयोग में लाया जाता है चाहे कोई कितना बड़ा जमींदार हो वह कैपिटलिस्ट नहीं । इसलिए हम लोग सेवा करेगे पर कोई अधिकार नही चाहेंगे । घनश्यामदास जी के शब्दों से महात्माजी के प्रति असीम श्रद्धा और प्रेम टपक रहा था ।

५. व्यावहारिक अपरिग्रह

तारीख २ अक्टूबर को पूज्य महात्माजी की जन्म-तिथि है। इस दिन जगह-जगह महात्माजी के विचारों और उनके बताए हुए रचनात्मक कार्यक्रमों की लोग चर्चा करेंगे। खादी-प्रचार, चर्खा-यज्ञ और अस्पृश्यता-निवारण आदि कार्यो द्वारा महात्मा जी की जन्म-तिथि मनायेंगे। इस अवसर पर महात्माजी के एक खास सिद्धान्त, जिसको हमारे साम्यवादी भाई तथा और भी लोग अव्यावहारिक कहते हैं, अथवा व्यावहारिक नहीं मानते, उसकी चर्चा करना अप्रासंगिक न होगा।

महात्माजी ने कई बार कहा है कि धनी लोग अपने-आपको धन का मालिक न समझकर उसका ट्रस्टी समझे। हमारे साम्यवादी भाई कहते है कि यह असम्भव है। हमको तो पूँजीवाद को नष्ट करके उसकी जगह समाज मे धन की समानता की स्थापना करनी है। वे इस बात पर विश्वास नहीं करते कि कोई आदमी अपनी इच्छासे धन को छोड़कर–अर्थात धन का व्यक्तिगत मालिक बनकर जो सुख उठाया जा सकता है, उसको त्यागकर, उस सुख को–समूचे समाज के लिए दे सकता है। मेरे खयाल मे महात्माजी के साम्यवाद और हमारे सोशलिस्ट भाईयो के साम्यवाद में यह भी एक मौलिक अन्तर है। लेकिन मै अपनी आँखों से देखे हुए दो-एक उदाहरण देना चाहता हूँ, जिनसे मालूम होगा कि आज भी–जब कि समाज आदर्श-स्थिति को नही पहुचा है–ऐसे लोग समाज में है, जिनका जीवन यह बतलाता है कि महात्माजी का यह सिद्धान्त व्यावहारिक हो सकता है।

गुजरात के श्री जीवराम कल्याणजी एक अच्छे व्यापारी और धनी आदमी थे। उनके जीवन पर महात्माजी के विचारों का प्रभाव पड़ा। और उन्होने अपनी सारी सम्पत्ति महात्माजी को देनी चाही। परन्तु महात्माजी इसके लिए राजी नही हुए और कई एक वर्ष तक उनसे साधना करने के लिए कहा। वे साबरमती-आश्रम में महात्माजी के निकट सम्पर्क में कई दिनों तक रहे। उनके जीवन से यह पता लग गया कि वे सम्पत्ति मे मोह नही रखते। तब महात्माजी ने उनके इच्छानुसार कार्य में उस सम्पत्ति को, जो कई लाख की थी, लगाने का भार ले लिया, और वे एक राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता के रूप में उड़ीसा, जहाँ के कठिन जीवन से ऊबकर पहले बहुत से कार्यकर्त्ता लौट आए थे, काम करने के लिए भेज दिये गये। वहाँ वे १०-१२ वर्ष तक महात्माजी के आदेशानुसार खादी, अस्पृश्यता-निवारण, गो-सेवा आदि का कार्य करते रहे। वहाँ पर रहते समय वे कई भयानक बीमारियों से पीड़ित हुए, और महात्माजी ने चाहा कि वे वहाँ से लौट आवें। लेकिन वे अपनी धुन के इतने पक्के थे कि जिन कामों को उन्होंने हाथ में लिया था, उन्हे

पूरा करके महात्माजी की कठिन परीक्षा मे उत्तीर्ण होना चाहते थे। अभी हाल ही मे उनकी अवस्था ज़्यादा खराब हो जाने के कारण वे अपने प्रान्त गुजरात मे चले गए और वहीं रह रहे है।

इसी तरह से एक दूसरे सज्जन माधोजी भाई, जो रग के एक बहुत बड़े व्यापारी थे, जिनका लाखो का कारोबार था और जो वर्षो विदेश मे रहते आये थे, अपना सारा कारोबार छोड़कर महात्माजी के कार्यक्रम पर विश्वास करके उनके बताए कार्यो मे जुट गये। इसी तरह मे और न मालूम कितने लोग है, जिन्होने महात्माजी से कह रखा है कि आप जितने रुपये जब चाहे, हम से ले सकते है। इससे मालूम होता है कि लोगो मे न्याय की, समानता की भावना है। यदि इस भावना को बढ़ाया जाय, तो समाज मे एक दिन ऐसी स्थिति आ सकती है कि लोग धन का आज जितना आदर करते है और उसके ऊपर अपना प्रभुत्व न्याय-अन्याय द्वारा स्थापित करना चाहते है, यह बात न रहे। हमारा इतिहास तो इन बातो से भरा पड़ा है कि बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा अपने सारे राज-पाट को एक वचन के लिए छोड़ देते थे। महात्माजी चाहते है कि लोगो के अन्दर विवेक का विकास हो, लोग न्याय और सत्य को अपनावे। कानून या जोर-जबरदस्ती से जो चीज पैदा की जाएगी वह कानून का डर मिटने पर स्वय मिट जाएगी, या जिस ताकत के द्वारा वह पैदा की गई है उससे ज्यादा दूसरी ताकत पैदा होकर वह उसको मिटा देगी और स्वय उसकी मालिक बन बैठेगी। इसलिए आदर्शस्थिति तो वही होगी, जिसको मनुष्य न्याय के लिए स्वय स्वीकार करेगा। और महात्माजी यही चाहते है। जैसे-जैसे मनुष्य का विकास होता जाता है, वैसे-वैसे यह सब भावनाएँ उसके अन्दर प्रस्फुटित होती जाती है। इन भावनाओ को आज वह कार्य का रूप नहीं दे रहा है, इससे यह नहीं जान लेना चाहिए कि किसी दिन भी मनुष्य आदर्शावस्था को पहुँच ही नहीं सकेगा। विकास का सिद्धान्त हमे यही बतला रहा है कि एक दिन अवश्य ही मानव वहाँ पहुच जायगा, जहाँ महात्माजी हमको ले जाना चाहते है।

प्रकीर्ण लेख[1]

१. जे. एम. सेनगुप्त की अंतिम यात्रा

२३ जुलाई, १९३३ : कलकत्ता– श्री जे. एम. सेनगुप्त का, जो राँची में नज़रबन्द थे, अचानक खून का दबाव बढ़ कर हार्ट फ़ेल हो गया, सुनते ही मन में एक प्रकार का सन्नाटा सा छा गया। ईश्वर की क्या इच्छा है। देश के अच्छे-अच्छे आदमी उठते जा रहे हैं। प्रत्येक दो वर्ष पर एक न एक अच्छा योद्धा हम लोगों के बीच से चला जाता है। बंगाल तो आज बहुत दु:खित हो गया है। देशबन्धु के अभाव की पूर्ति न होने पर भी अपनी आँखें सेनगुप्त की ओर लगा रख थीं। सुभाषबाबू तो सिपाही हैं, वीर हैं वह भी निर्वासित कर दिये गये हैं। पता नहीं यह ज़ालिम सरकार उन को आने देगी कि नहीं। आज बंगाल अनाथ है। और कोई विशिष्ट पुरुष ऐसा नजर नहीं आता जो बंगाल की राजनीतिक डोर सँभाल सके। सोचा, अपने को क्या करना चाहिये। भाई बसन्तलालजी को फ़ोन किया, पता लगा कि सेनगुप्त के घर पर कलकत्ता के सब लोग एकत्रित हो रहे हैं। बसन्तलालजी के साथ वहाँ गये। प्रोग्राम बना, कार्य का भार बांटा गया। एक बजे बड़ा बाजार के कार्यकर्ताओं की मीटिंग थी वहां गये और किस तरह बड़े बाज़ार में शव का स्वागत किया जाये। अपने तथा भाई बसन्तलालजी पर इस बात का भार था कि चार मन चन्दन, एक मन घी, पाँच सेर कपूर पहुँचा दें। हिसाब लगाने पर मालूम हुआ कि सब सामान के क़रीब तीन सौ रुपये लगेंगे। कोशिश की कि कोई दाता ऐसे ही देने वाला मिल जाये तो बड़ा अच्छा हो। अमरतला में एक दुकानदार खराऊमुरार जी के यहाँ गये, बेचारे बड़े सज्जन हैं, बहुत प्रेमपूर्वक बैठाया और कहा, जितना आप को चाहिए ले जाइए। उन्होंने चार मन चन्दन, जिस के दाम २१६ रुपये होते हैं तथा पाँच सेर कपूर भी मँगा दिया। उन की वृत्ति तथा काम देख कर बड़ी ही प्रसन्नता हुई।

२४ जुलाई के सुबह पाँच बजे से ही हावड़ा की ओर जाने वाली भीड़ का ताँता लगा हुआ था। शव हावड़ा टाउन हॉल लाया गया। वालेंटियरों का काफ़ी

१. स्मृतिकण के अनेक लेख "बीता युग : नई याद" में संग्रहित है। अतः अन्य कुछ महत्त्व के लेख उनकी डायरी से यहां प्रस्तुत हैं।

प्रबन्ध होने पर भी भीड़ को सँभालना मुश्किल था। विद्यार्थियो ने, जो बाड़े आदि बाँधे गये थे सब को तोड़ दिया। भीड़ एकदम भीतर घुस आयी इसलिए उसी समय जुलूस निकालना पड़ा इसलिए जो समय दिया गया था उस से पहले जुलूस चला। नर-समुद्र सा दीख रहा था। सभी रास्ते मनुष्यो से भरे थे। मकानों के बरामदे और छत मनुष्यो से लदे थे। लोग फूल आदि बरसा रहे थे। स्त्रियाँ भी काफी थी पर जितना अपने चाहते थ उतनी नही। भगवानदेवी और पन्ना हरीसन रोड से जुलूस मे सम्मिलित हुई। केवड़ातल्ला का दृश्य विचित्र था। जिस जगह दाह-क्रिया की व्यवस्था थी वहा तक पहुँचना बहुत मुश्किल था। कड़ाई भी बहुत थी, बाँसो के बाड़े बाँधे गये थे। जिन को जाने दिया जाना था उनको भी बहुत तकलीफ होती थी। अपने को रोक दिया फिर प्रमुख लोगो ने देखा तब भीतर ले गये पर शेष को बिल्कुल रोक दिया और सभ्यता का व्यवहार भी नहीं किया। अपने को क्रोध आ गया और बेचारे वालेंटियरो को धमका दिया फिर दूसरे लोग जमा हो गये और वालेन्टियर भाइ माफी माँगने लगे। अपने को अपनी भूल पर दुःख होता था। भीतर अधिकांश नेता कलास मे लगे थे बाहर भीड़ का अन्दाज करना मुश्किल था। लोग वृक्षो मन्दिर के शिखर तक चढ़ गये थे। साढ़े चार बजे जुलूस केवड़ातल्ला पहुचा था। जो लोग सुबह पाँच बजे से शव के साथ थे वे कहते थे, हम ही उसे चिता पर रखेगे। इतने आदमी भीतर नही आ सकते थे। बहुत समझाने के बाद भी सभी लोग भीतर आ गये और करीब साढ़े पाँच बजे अग्नि संस्कार हुआ। घर आये। बहुत थकावट मालूम होती था। पन्ना और भगवानदेवी तो और भी ज्यादा थक गयी। सैकड़ो आदमी बेहोश हो गये। कितनी ही स्त्रिया बेहोश हो गयी। लोग इतना पानी देते थे पर तो भी जल-जल की माँग सुनाई पड़ती थी।

२. दीनबन्धु ऐंड्र्यूज के अंतिम दर्शन

आज के समाचार पत्र मे बहुत दुःखद समाचार पढ़ा कि सी एफ ऐंड्र्यूज का स्वर्गवास हो गया। वह एक विशेष आदमी तो, सच्चे अँगरेज थे। उनके हृदय मे दया और प्रेम का स्रोत बहता था। वह एक बार अपने यहाँ आये थे। अपने ऊपर कृपा रखते थे। उनके देहावसान से एकदम हृदय भर आया। ऐंड्र्यूज साहब के दर्शन करने गये। नर्सिंग होम से उन्हे कैथलिक चर्च ले जा रहे थे। जिस बक्स मे बन्द कर उन्हे ले जाया गया उस की सफ़ाई और उस का ढग

एक खास तरह का था। चार बजे प्रार्थना थी। उनके शव को अच्छी तरह पुष्पों से सजाया गया। चार बजे चर्च में प्रार्थना थी। गिरजा में लार्ड बिशप ने प्रार्थना करायी फिर उनको पार्क सरकस की कब्र में दफ़नाने के लिए ले चले। लार्ड बिशप साथ चले। सुना है कि लार्ड बिशप किसी के शव के साथ नहीं जाया करते पर ऐंड्रयूज साहब के प्रति उन की खास श्रद्धा थी। उनके दफ़नाने की क्रिया भी देखी। अपने पहले-पहल अँगरेज़ की मृत्यु के शव के साथ गये, मन में दु:ख था, ऐंड्रयूज साहब की आकृति उभर रही थी।

३. 'मुंशी प्रेमचन्द

स्वर्गीय मुंशी प्रेमचन्द जी के सम्बन्ध में हंस का प्रेमचन्द स्मृति अंक निकला है वही आजकल पढ़ रहे हैं। इससे मालूम होता है कि प्रेमचन्द जी जितने बड़े समझे जाते हैं उससे वह बहुत बड़े थे और कोरे साहित्यिक ही नहीं थे, महान् विचारक तथा अन्तर्निरीक्षक भी थे और बड़े सादे, सरल, सीधे और आनन्दी जीव थे। अपने ने उनके सब ग्रंथ प्रायः पढ़े हैं और जब भी कोई उनकी लिखी चीज़ निकलती थी उसको पढ़े बिना अपने को चैन नहीं पड़ता था। प्रेमचन्दजी की भाषा, उनके भाव तथा उनकी वर्णन करने की शक्ति अपने को मोहित करती थी। प्रेमचन्द से अपना प्रत्यक्ष नहीं हो सका, अब तो उनसे न मिलने का बहुत अफ़सोस है पर उनके जीवनकाल में कोई मौक़ा ही नहीं आया। हिन्दी संसार ने उनका यथोचित आदर नहीं किया और आज अफ़सोस ही रह गया। उसी तरह अपनी बात है पर अब क्या किया जाये। अपने पास यदि काफ़ी रुपया होता तो प्रेमचन्द जी का कोई उज्ज्वल स्मारक ज़रूर खड़ा करते। देखें कौन माई का लाल इस काम को करता है वैसे तो प्रेमचन्दजी अपने ग्रन्थों के कारण ही स्थायी हो सकते हैं। कोई भी मनुष्य क्या कर सकता है पर बुद्ध जैसे महापुरुष के धर्म के प्रचार के लिए भी अशोक जैसे सम्राट् की ज़रूरत पड़ी ही।

४. सप्तधारा और चेरापूंजी

शिलांग से दो मील पर एक झरना है जिसका हिन्दी नाम सप्तधारा है, अँगरेज़ी नाम गन फाल है, वह देखने गये । एक ऊँचे पहाड़ पर एक बड़ा झरना है वह थोड़ा नीचे आ कर दो भागों में बँट जाता है जिस की तीन तीन धाराएँ हो जाती है । निहायत सुन्दर दृश्य मालूम होता है, ठण्डे ठण्डे फव्वारे उड़ कर देखने वालों को लगते है । बहुत आनन्द आया । एक ऊँची सी चट्टान पर बैठ कुदरत का नज़ारा देखते रहे । किसी कवि ने एक भजन में गाया है 'शंकर तेरी जटा में बहती गंगा है ।' अपने को यहाँ ऐसा मालूम होता था कि शायद शंकर की जटा के कुछ बाल टूट गये है और इस झरने के रूप में झर रहे है । बड़ा अच्छा लगा । यह ईश्वर का चमत्कार नहीं तो और क्या था । दूसरा ऐसा कौन बना सकता है । बराबर इसे जारी रख सकना क्या किसी मनुष्य का काम है ? ऐसी छोटी-बड़ी सभी चीजों में व रोम रोम में रमने वाला प्रभु ही तो विद्यमान है नहीं तो इस झरने में क्या है ।

चेरापूँजी गये । सारा रास्ता पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है, बहुत गहरे खड्डे है और ऊँचे ऊँचे पहाड़ है । आस पास हरे भरे वृक्ष और बीच बीच में झरनों का कलकल बहुत ही सुहावना मालूम होता है । पहाड़ों पर बादल इस तरह आकर बैठ जाते है मानो निराश्रय मनुष्य ने किसी सहृदय मनुष्य का आश्रय पा लिया हो । बादल पहाड़ों के शिखरों को सफेद सुन्दर मुकुट पहना देते है । करीब बारह बजे चेरापूँजी पहुँचे यहाँ संसार में सब से ज्यादा वर्षा होती बतायी जाती है । यहाँ एक पहाड़ से बड़े झरने गिरते है जिसका नाम मासमी फाल है । पहाड़ पर से गिरने वाले झरने बहुत अच्छे लगते है । एक पहाड़ पर बैठकर सब ने भोजन किया । थोड़ी दूर जाकर चेरापूँजी नाम की गुफा है, वह देखने गये । रास्ता बड़ा खराब है । लोग इस गुफा की तारीफ करते है पर अपने को कुछ पसन्द नहीं आयी ।

५. कोणार्क मन्दिर

कोणार्क मन्दिर देखने गये । रास्ते मे कई छोटे-छोटे ग्राम आये । उड़ीसा ग़रीब प्रान्त है पर इस तरफ़ के गाँव थोड़े अच्छे दिखाई देते थे । मन्दिर बहुत प्राचीन

मालूम होता था । आज तो वह खण्डहर के रूप मे है । अगर वर्तमान सरकार बचे हुए स्थान की रक्षा का प्रबन्ध नहीं करती तो आज यह प्राचीन कारीगरी का द्योतक स्थान नष्ट हो जाता । मन्दिर खूब ही ऊँचा और विशाल है, रथ के आकार पर बनाया गया है । मुख्य हिस्सा नष्ट हो चुका है । मन्दिर के चारो ओर नाना तरह के चित्र बने हुए है, जो उस समय की कला और समृद्धि के सूचक है । मन्दिर सारा पत्थर का बना हुआ है । बहुत बड़े मोटे पत्थर बहुत ऊँचे चढ़ाये गये है । आज इस विज्ञान के युग मे क्रेन आदि यन्त्रो के सहारे भी इन पत्थरो का इतना ऊँचा चढ़ाया जाना साधारण बात नहीं समझी जा सकती। इस मन्दिर को सूर्य का मन्दिर बताया जाता है पर विशेष हिस्सा टूट जाने की वजह से पूरा मालूम नहीं हो पाता पर सूर्य की, घोड़े पर सवार एक मूर्ति मन्दिर के एक भाग मे शिखर पर आज भी है तथा भगवान बुद्ध की जैसी मूर्तियाँ भी कई है । पत्थर पर कारीगरी का काम तो सैकड़ो वर्षो बाद भी देखने लायक है। चारो ओर नृत्य कला आदि के चित्र है वे भी दर्शनीय है । वर्तमान सरकार ने बचे हुए स्थान को नये पत्थरो से बन्द कर सुरक्षित कर दिया है । ऊपर जाने के लिए चारो ओर सीढ़ियां मन्दिर के साथ बनी हुई मालूम होती है । मन्दिर का सिंहद्वार तथा सभा-मण्डप प्राय नष्ट हो चुका है तब भी उसकी विशालता और वैभव प्रकट करता है । उस समय की सभ्यता विलासप्रियता तथा समृद्धि आदि के चित्र मन्दिर के चारो ओर अंकित है । कई जगह बीभत्स अश्लील चित्र भी है जिन से मालूम होता है कि उस समय कामुकता भी पराकाष्ठा तक पहुंच गयी थी । मन्दिर का मुख्य प्रवेश द्वार तो टूट जाने की वजह से बन्द कर दिया गया है पर उसके ऊपर काले पत्थर पर हाथ का काम किया थोड़ा सा पत्थर आज सैकड़ो वर्ष बाद भी कारीगरी की सराहना प्रत्येक दर्शक से कराये बिना नहीं रह सकता । आज भी वह काफी चमक रहा है और मन को मुग्ध करने वाला है। टूटी मूर्तियो को एक स्थान मे दिखाने के लिए सजा कर रखा गया है, इनमे कई देवताओ की मूर्तियाँ है तथा साथ-साथ अश्लील चित्र भी है । समुद्र का दृश्य भी सुन्दर दिखाई देता है, समुद्र करीब दो मील है । बिलकुल थक गये, लौटने तक की इच्छा नहीं थी पर क्या करते ? गाड़ी से पुरी रवाना हुए, स्टेशन पर पुरुषोत्तमदासजी टण्डन से मुलाक़ात हुई ।

६. मुस्लिम माता

मुसलमान लड़कियो का एक स्कूल देखने गये। स्कूल अच्छा था पर मुसलमान समाज मे परदा प्रथा का बहुत ज़ोर है इसलिए छोटी बच्चियो के सिवाय क्या देख सकते थे। पर सबसे बड़ी बात यह देखने को मिली कि ६५ ७० वर्ष की एक बूढ़ी माँ अपने को आशीर्वाद देते हुए सामने आयी और उसने उर्दू मिश्रित सुन्दर हिन्दी मे धर्म की और मुसलमान धर्म की अनेक बाते कहीं, स्कूल की स्थिति समझायी। उनके कहने का ढग तथा भाषा प्रभाव डालने वाली थी। वहाँ जो अध्यापिकाएं थीं उनको वह आर्डर देती थीं, अमुक तरह का भजन सुनाओ अमुक तरह का खेल दिखाओ आदि। मुसलमान समाज आज बहुत पिछड़ा समाज है, धार्मिक कट्टरता अधिक है पर तो भी कुछ कम हो रहा है। लड़कियाँ भी पढ़ने लगी है यह शुभ चिह्न है। अपने लड़कियो को मिठाई दी और उस माता ने अपने को इलायची, पान दिया, कहने लगी कि आप को शरबत और चाय तो दे नहीं सकते क्योकि आप हमारे हाथ का कैसे खायेगे, अपने कहा माताजी मै तो आप के हाथ की बनी रोटी खाऊँगा। वह बहुत खुश हुई, कहने लगीं अल्लाह आप को सलामत रखे। बेटा हम लोगो मे यह भेदभाव है उस को मिटाने की बड़ी जरूरत है। इस माता को देख कर सुख और आश्चर्य हो रहा था कि मुसलमान समाज मे इतनी बूढ़ी स्त्री के ऐसे विचार है।

प्रभु की जब इच्छा होगी तब ही हिन्दू और मुसलमानो मे सद्भाव होगा। उस दिन देश का मगल होगा। सात या नौ करोड़ मुसलमानो को हिन्दू देश से निकाल नहीं सकेगे इस को कट्टर मुसलिम विरोधी भी स्वीकार करते है फिर रोज की लड़ाई क्यो? अपनी समझ मे हिन्दू मुसलमानो के प्रति ज्यादा अविश्वास रखते है और उनकी भलाई की भावना बहुत कम रखते है। मुसलमान कम सख्या मे है, उनमे शिक्षा नहीं है, पैसा नहीं है। व्यापार उनके हाथ मे नहीं है। बहुत-से आदमी घृणित जीवन व्यतीत करते है। उनके मौलाना उनको बराबर हिन्दुओ के प्रति बहकाते रहते है। उन मौलानाओ की रोटी इसी पर चलती है, ये मौज करते है। जब तक अन्धविश्वास रहता है मनुष्य स्वय विचार करने की शक्ति नहीं पाता। इसलिए यह लोग मनुष्य मे विचार-शक्ति पैदा हो, इसके विरोधी है। जब हिन्दू मुसलमानो को निकाल नहीं सकते तब उनको शिक्षा देकर उनका अन्धविश्वास हटाना, मौलाना लोगो के हाथ से निकालना उनका काम है लोग कहते हैं कि उनको शिक्षा दे कर भी क्या होगा, उनमे जो शिक्षित है वे भी ऐसे ही हिन्दू विरोधी है लेकिन एक बात यह है कि आदमी जैसे वातावरण मे रहता है

वैसे ही उसके विचार बनते हैं। दूसरी बात यह कि हरेक आदमी में कमज़ोरी रहती है खास कर सामजिक कमज़ोरी तो अधिकांश आदमियों में रहती है। मुसलमान समाज में वह मुसलमान आदर नहीं पा सकता जो कट्टर विचारों का न हो, हिन्दू विरोधी न हो। समाज में अभी ऐसे ही ज्यादा आदमी हैं इसलिए समाज में अपमानित होने के डर से या दूसरे कारणों से सुर में सुर मिलाते हैं पर मन से ऐसा नहीं चाहते। यदि समाज अच्छी तरह भलाई-बुराई का ज्ञान करले तो समाज के अधिकांश भाग की मनोवृत्ति बदल जाये। शिक्षा, ज्ञान तथा धनाभाव हटाने पर अपना तो पूरा विश्वास है कि इस देश में अच्छे दिन आ सकते हैं और हिन्दू-मुसलमान परस्पर में मेल से रह सकते है पर सब प्रभु की इच्छा पर ही निर्भर है। वह चाहेगा तब सब कुछ हो जायेगा, कुछ भी देर नहीं लगेगी।

□ □ □

गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा के
नवीन प्रकाशन

			मूल्य
१.	काकासाहब कालेलकर ग्रंथावली (१५ खण्डों मे)	(गुजराती)	७५०/– रुपये
२.	काका कालेलकर ग्रंथावली (कुल ११ खण्डों में से ४ खण्ड प्रकाशित)	(हिन्दी)	१४०/– (प्रत्येक खण्ड)
३.	लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जन्म शताब्दी ग्रंथ		१२५/–
४.	जीवनलीला – लेखक काकासाहब कालेलकर (भारत की नदीयों, प्रपातों, सरोवरों एवं नदों का वर्णन)	पेपरबेक	५०/–
		पुस्तकालय संस्करण	१००/–
५.	बापू की झांकियाँ – ले. काकासाहब कालेलकर		२०/–

प्रकाशनाधीन

१. स्त्री-पुरुष सहजीवन का सौरभ – ले. काकासाहब कालेलकर

२. सीताराम सेकसरिया जन्मशताब्दी ग्रंथ